एक ठग का कबूलनामा

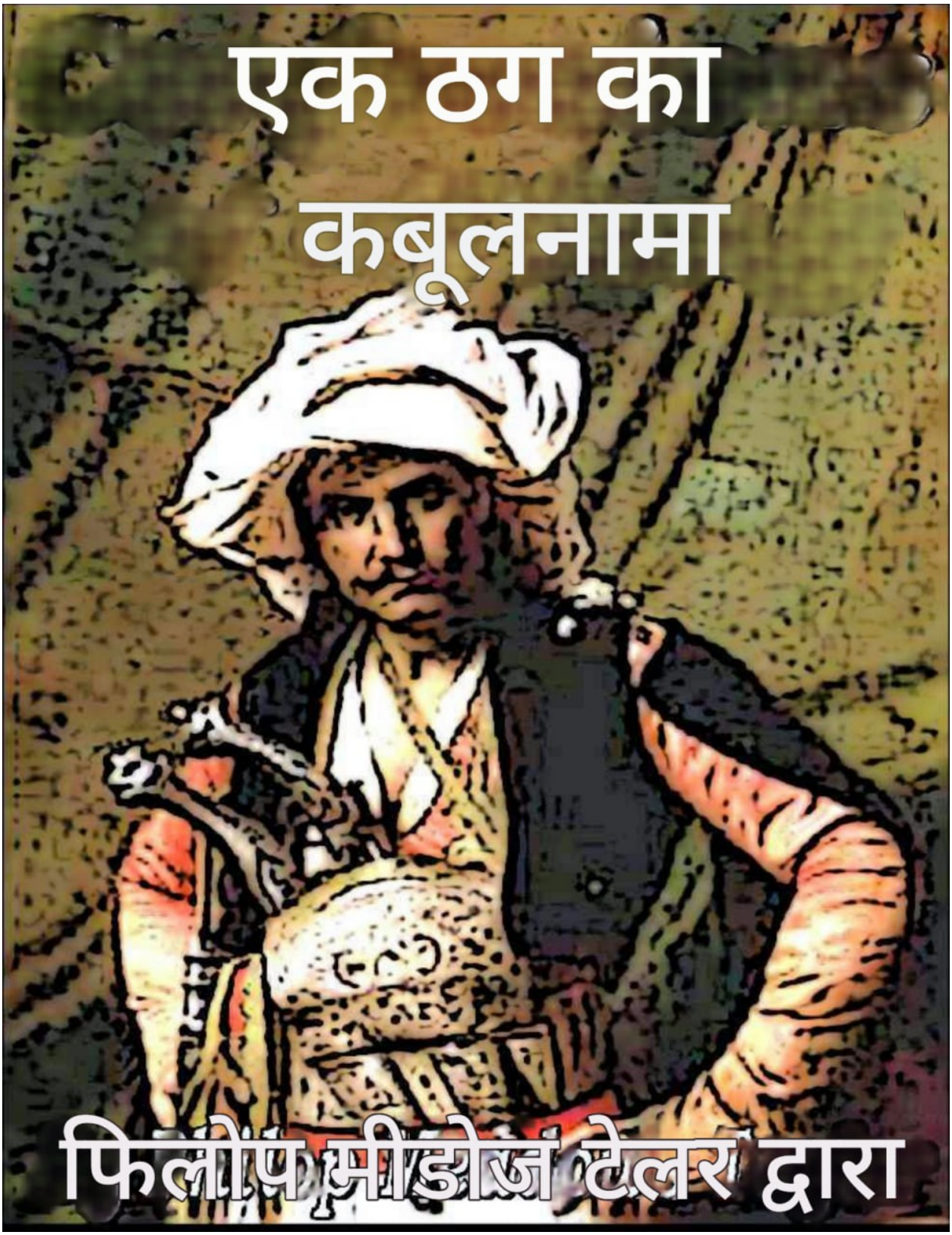

फिलीप मीडोज टेलर द्वारा

एक ठग का कबूलनामा

द्वारा

फिलिप मीडोज टेलर

विषयसूची
परिचय
खंड I
अध्याय 1
अध्याय II
अध्याय III
अध्याय IV
अध्याय V
अध्याय VI
अध्याय VII
अध्याय VIII
अध्याय XIX
अध्याय दस
अध्याय ग्यारह
अध्याय बारह
अध्याय XIII
अध्याय XIV
खंड II
अध्याय XV
अध्याय XVI
अध्याय XVII
अध्याय XVIII
अध्याय 19
अध्याय XX
अध्याय 21
अध्याय XXII
अध्याय 23
अध्याय XXIV
अध्याय पच्चीस
अध्याय XXVI
अध्याय XXVII

अध्याय 28
अध्याय XXIX
अध्याय XXX
अध्याय 31
अध्याय 32

खंड III

अध्याय 33
अध्याय 34
अध्याय 35
अध्याय 36
अध्याय 37
अध्याय 38
अध्याय 39
अध्याय XL
अध्याय 11
अध्याय 42
अध्याय 43
अध्याय 44
अध्याय XLV
अध्याय XLVI
अध्याय XLVII
अध्याय XLVIII

माननीय महोदय को
जॉर्ज, लॉर्ड ऑकलैंड, जी.सी.बी.,
भारत के गवर्नर-जनरल, जो उन लोगों पर सख्ती से मुकदमा चला रहे हैं
प्रशंसनीय उपाय
ठगी के दमन के लिए,
जिसकी शुरुआत स्वर्गीय
लॉर्ड विलियम कैवेंडिश बेंटिंक,
जी.सी.बी. और जी.सी.एच.
उनके पूर्ववर्ती;
ये खंड
अनुमति से और अत्यंत सम्मान के साथ समर्पित हैं

परिचय

आगे के पन्नों में वर्णित अपराध की कहानी, अफसोस की बात है! लगभग पूरी तरह से सच्ची है; इसमें जो भी काल्पनिक अंश हैं, उन्हें केवल घटनाओं को जोड़ने और अमीर अली के कारनामों को उसके भयावह पेशे की प्रकृति के अनुसार जितना संभव हो उतना रोचक बनाने के लिए जोड़ा गया है।

मेरी मुलाकात इस व्यक्ति से सन् 1832 में हुई थी। वह उन मुखबिरों में से एक था जिन्हें सागर से निज़ाम के क्षेत्रों में भेजा गया था, और जिनके चौंकाने वाले खुलासों ने देश में ऐसी सनसनी पैदा कर दी थी जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। मैंने उनकी बातें अत्यंत रुचि से सुनी हैं, ऐसी रुचि जो मैं अपने पाठकों के मन में जगाने की शायद ही उम्मीद कर सकता हूँ; और मैं आगे की कहानी की पुष्टि में केवल इतना ही कह सकता हूँ कि, अपने स्वयं के इकबालिया बयानों के अनुसार, जिनकी पुष्टि उसके साथी मुखबिरों के बयानों से भी हुई है और जो आधिकारिक रिकॉर्ड में दर्ज हैं, वह सात सौ उन्नीस लोगों की हत्या में प्रत्यक्ष रूप से शामिल था। उसने एक बार मुझसे कहा था, 'अरे! महोदय, अगर मैं बारह साल जेल में न रहता, तो मरने वालों की संख्या एक हज़ार होती!'

ठग्गी प्रथा इतनी व्यापक कैसे हो गई, और भारत की जनता को इसके बारे में पता भी नहीं चला, जबकि इसके प्रचारक उनके बीच लगातार मेलजोल रखते थे, यह बात अंग्रेज़ जनता के उस बड़े हिस्से के लिए अत्यंत आश्चर्य का विषय होगी, जो पूर्वी समाज की विशिष्ट संरचना से परिचित नहीं है। इसे अपनी सीमित व्याख्या में समझाना कठिन होगा, फिर भी यह इतना आवश्यक है कि मैं इसे अनदेखा नहीं कर सकता। भारत जैसे विशाल महाद्वीप में, जो प्राचीन काल से ही कई राज्यों में बंटा हुआ है, जहाँ अनेक राजकुमार और सरदारों के अधिकार क्षेत्र हैं—जिनमें से प्रत्येक अपने राज्य में असीमित और निरंकुश शक्ति रखता है, जिनके शासन व्यवस्थाएँ अत्यंत शिथिल और अक्षम हैं, और जो अपने सभी पड़ोसियों से शत्रुता रखते हैं या उनसे ईर्ष्या करते हैं—यह समझा जा सकता है कि महाद्वीप के प्रमुख मार्गों पर यात्री के लिए कोई सुरक्षा नहीं हो सकती; उसकी सुरक्षा के लिए कभी कोई सामान्य संधि नहीं की गई; और न ही किसी एक राज्य में कोई सरकार, चाहे वह कितनी भी सशक्त हो, या पुलिस व्यवस्था, चाहे वह कितनी भी सतर्क हो, सभी राज्यों पर लागू हो सकती है।

जब यह भी ध्यान में रखा जाता है कि भारत में सार्वजनिक परिवहन कभी अस्तित्व में नहीं रहा (सड़कों की कमी और स्थानीय लोगों की आदतें और रीति-रिवाज दोनों ही इसके उपयोग के विरुद्ध थे)—कि यात्राएँ, चाहे कितनी भी लंबी हों, पैदल या घोड़े पर ही करनी पड़ती थीं—कि जो लोग पहले एक-दूसरे से अपरिचित थे, वे आपसी सुरक्षा और साथ के लिए एक साथ जुड़ जाते थे—कि यहाँ तक कि प्रमुख सड़कें (कंपनी सरकार द्वारा सैन्य उद्देश्यों के लिए निर्मित सड़कों को छोड़कर) केवल लोगों के निरंतर आवागमन से बने रास्ते हैं, जो अक्सर जंगलों, पर्वतीय और निर्जन क्षेत्रों को काटते हैं, जहाँ कुछ ही गाँव और कम आबादी है—और यह कि विभिन्न गाँवों के बीच कभी कोई बस्तियाँ नहीं होतीं, जो अक्सर कई मील दूर होते हैं—तो यह आसानी से स्वीकार किया जा सकता है कि हर प्रकार के लुटेरों के लिए यात्रियों को अपना शिकार बनाने का हर प्रलोभन और अवसर मौजूद था। तदनुसार, लुटेरे हमेशा से ही अनेक नामों से अस्तित्व में रहे हैं, जो अपने उद्देश्यों को

प्राप्त करने के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग करते हैं; कुछ लोग हथियारों से खुलेआम और हिंसक हमले करके, तो कुछ छोटी-मोटी चोरियाँ करके और भेस बदलकर ऐसा करते हैं। इन सबसे ऊपर, हाल के वर्षों में यह पता चला है कि ठग सबसे अधिक संख्या में, सबसे एकजुट, अपने भयानक कामों में सबसे गुप्त और परिणामस्वरूप सबसे खतरनाक और विनाशकारी हैं।

यात्री अक्सर अपने रास्ते में आने वाले कस्बों से दिनभर के राशन की खरीद के अलावा कोई संपर्क नहीं रखते। वे कभी-कभी उनमें प्रवेश तो करते हैं, लेकिन अपने तंबू गाड़ लेते हैं या आसपास के पेड़ों के नीचे सो जाते हैं; इसलिए किसी व्यक्ति की एक गाँव से दूसरे गाँव की यात्रा की जानकारी प्राप्त करना लगभग असंभव है। लोगों के कबीलों, जातियों और व्यवसायों में फैले होने के कारण चोरों और ठगों को भेष बदलने में सबसे अधिक सुविधा मिलती है; विनिमय दर बचाने के लिए देश के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में सोने और चांदी के रूप में भारी मात्रा में धन भेजा जाता है; गहने और कीमती पत्थर भी अक्सर दूर-दराज के इलाकों में ऐसे लोगों के माध्यम से भेजे जाते हैं जो जानबूझकर साधारण और दयनीय रूप धारण करते हैं, और हर किसी को यात्रा के दैनिक खर्चों के लिए अपने पास पैसे रखने पड़ते हैं। देशी राजकुमारों के क्षेत्रों में सीमा शुल्क अधिकारियों की असीमित खोज शक्ति से किसी भी सामान को छिपाना लगभग असंभव है, और न ही उनके अधीनस्थों द्वारा ठगों या किसी भी प्रकार के लुटेरों को दी जाने वाली जानकारी से बचाव करना संभव है।

हाल ही में हुई जांच से यह पता चला है कि भारत के हर हिस्से में कई वंशानुगत भूस्वामियों और गांवों के प्रमुख अधिकारियों का पीढ़ियों से ठगों के साथ निजी संबंध रहा है। वे ठगों को हत्या करने में मदद करते रहे हैं, उनके जघन्य कृत्यों को बिना किसी दंड के होने देते रहे हैं और खतरे में होने पर उन्हें शरण भी देते रहे हैं। इन सेवाओं के बदले में ठग उनकी कमाई का कुछ हिस्सा लेते थे या उनके घरों पर कर लगाते थे, जिसे ठग खुशी-खुशी चुका देते थे। लगभग हर गांव में (और शहरों में इनकी संख्या अधिक है) कई साधु, फकीर और धार्मिक भिक्षु रहते हैं। इन लोगों की झोपड़ियां और घर, जो गांवों की दीवारों के बाहर होते हैं और हमेशा किसी उपवन या बगीचे से घिरे होते हैं, ठगों के मिलने-जुलने या छिपने की जगह बन गए हैं। वहीं, फकीर अपने पाखंडी वेश में यात्रियों को छाया और साफ पानी का निस्वार्थ भाव दिखाकर अपने बगीचों में बुलाते हैं। मैंने जिन सुविधाओं का उल्लेख किया है, और सैकड़ों अन्य सुविधाएं जिनका वर्णन करना लगभग असंभव होगा, लेकिन जो लोगों की आदतों से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं और उनसे उत्पन्न होती हैं, उनके कारण ठग्गी पूरे भारत में व्यापक रूप से फैली और प्रचलित है।

ठगी की उत्पत्ति पूरी तरह से मिथकों और अस्पष्टता में खो गई है। कर्नल स्लीमैन का अनुमान है कि इसकी उत्पत्ति मुस्लिम जनजातियों से हुई, जिन्होंने मुगलों और तातारों के भारत पर आक्रमण के बाद भी लंबे समय तक देश को लूटा। हिंदू इसे अपनी देवी भवानी से जोड़ते हैं; और निश्चित रूप से यह तथ्य कि मुसलमान और हिंदू दोनों उनकी शक्ति में विश्वास करते हैं और हिंदू रीति-रिवाजों का पालन करते हैं, यह साबित करने के लिए पर्याप्त है कि ठगी की प्रथा हिंदू मूल की थी। हालांकि इसकी बहुत पुरानी परंपराएं मौजूद हैं, अकबर के शासनकाल तक भारत के किसी भी इतिहास में इसके उल्लेख नहीं मिलते हैं, जब इसके कई अनुयायियों को

पकड़कर मौत के घाट उतार दिया गया था। उस समय से लेकर 1810 तक, हालांकि देशी राजकुमारों ने समय-समय पर अपराधियों को पकड़ा और उन्हें फांसी दी, मेरा मानना है कि यह ब्रिटिश सरकार या अधिकारियों के लिए अज्ञात था। उसी वर्ष, अपने घरों से लौटते समय सेना के कई जवानों के लापता हो जाने से कमांडर-इन-चीफ को सैनिकों को ठगों से सावधान करने का आदेश जारी करना पड़ा। 1812 में, लेफ्टिनेंट मॉन्सेल की ठगों द्वारा हत्या के बाद, श्री हालहेड एक मजबूत टुकड़ी के साथ उन गांवों की ओर बढ़े जहां हत्यारों के रहने की जानकारी थी, लेकिन उन्हें प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। पता चला कि ठग सिंधूस के परगन्नाहों के कई गांवों में बसे हुए थे और पीढ़ियों से सुरक्षा के लिए सिंध सरकार को सालाना बड़ी रकम देते आ रहे थे। उस समय अनुमान लगाया गया कि अकेले उन गांवों में ही नौ सौ से अधिक ठग थे। श्री हालहेड की टुकड़ी के प्रति ठगों के प्रतिरोध के कारण अंततः वे तितर-बितर हो गए और निस्संदेह उन्होंने अपने इस धंधे को देश के दूर-दराज के हिस्सों में फैला दिया, जहां शायद पहले यह अज्ञात था।

यह अजीब लगता है कि 1816 तक ठगी को दबाने के लिए कोई उपाय नहीं किए गए; क्योंकि ठगों की प्रथाओं के बारे में सबको पता था, इसका सबसे पुख्ता सबूत डॉक्टर शेरवुड द्वारा मद्रास के साहित्यिक जर्नल में प्रकाशित एक लेख में मिलता है, जिसमें दक्षिण भारत के ठगों की रस्मों और प्रथाओं का सटीक वर्णन किया गया है। ऐसा माना जा सकता है कि उस समय उन्हें इतना क्रूर समझा जाता था कि उन पर विश्वास करना मुश्किल था, और वे अविश्वासी या अनदेखे रह गए थे; लेकिन यह निश्चित है कि उस समय से लेकर 1830 तक, भारत के लगभग हर हिस्से में, विशेष रूप से बुंदेलखंड और पश्चिमी मालवा में, मेजर बोर्थविक और कैप्टन वार्डलो और हेनली द्वारा ठगों के बड़े गिरोहों को पकड़ा गया था। कई ठगों पर यात्रियों की हत्या का मुकदमा चला और उन्हें फांसी दी गई, लेकिन इस पर जनता का ध्यान बहुत कम गया। इस व्यवस्था पर कभी कोई प्रहार नहीं किया गया—अगर वास्तव में कभी इसके पूर्ण और व्यापक संगठन पर संदेह हुआ भी हो, या अगर संदेह हुआ भी हो, तो उस पर विश्वास किया गया हो।

उस वर्ष और उससे कुछ वर्ष पहले तक, ठगों की गुस्ताखी चरम पर पहुँच चुकी थी और सरकार इस भयंकर और लगातार बढ़ती बुराई के प्रति उदासीन नहीं रह सकती थी। कई प्रतिष्ठित सिविल अधिकारियों—श्रीमान स्टॉकवेल, स्मिथ, विल्किंसन, बोर्थविक और अन्य—का ध्यान इस विषय की ओर आकर्षित हो गया था। पकड़े गए कुछ ठगों को इस शर्त पर जीवनदान दिया गया कि वे अपने साथियों, जिनमें कुख्यात नेता फेरिंगिया भी शामिल था, का नाम उजागर करेंगे।

नेरबुद्दा नदी के किनारे बसे प्रांतों में राजनीतिक प्रतिनिधि कैप्टन (अब कर्नल) स्लीमैन के लिए इस व्यक्ति के चौंकाने वाले खुलासे बिल्कुल अप्रत्याशित थे, और उस सक्षम अधिकारी ने लगभग इन खुलासों पर विश्वास ही नहीं किया था; लेकिन जिस वन में वह डेरा डाले हुए था, वहीं से सड़ी-गली अवस्थाओं में कम से कम तेरह शवों की खुदाई और उसी स्थान पर और उसके आस-पास अन्य कब्रों को खोदने की पेशकश से गवाह की कहानी पूरी तरह से पुष्ट हो गई; उसकी सूचना पर कार्रवाई की गई, और ठगी करने के उद्देश्य से राजपूताना में इकट्ठा हुए बड़े गिरोहों को गिरफ्तार कर मुकदमे के लिए लाया गया।

इसी काल से ठग्गी प्रथा को दबाने की व्यवस्था सही मायने में शुरू हुई मानी जा सकती है; लगभग हर गिरोह से एक या अधिक मुखबिरों को भर्ती किया गया; और जब उन्हें पता चला कि उनके जीवित रहने का एकमात्र मौका सही जानकारी देने में ही है, तो उन्होंने स्पष्ट रूप से अपने साथियों की निंदा की, और उनके बयानों की पुष्टि उनके पीड़ितों के शवों को बताए गए स्थानों से खोदकर निकाले जाने से हुई।

इस तरह ठग्गी पूरे भारत में सक्रिय रूप से प्रचलित पाई गई। शुरुआत में इसकी जानकारी केवल मध्य प्रांतों तक ही सीमित थी, लेकिन जैसे-जैसे दूर-दराज के इलाकों से लोगों को पकड़ा जाने लगा, उन्होंने अपने से परे अन्य लोगों द्वारा लगभग हर दिन की जाने वाली हत्याओं की जानकारी दी: धीरे-धीरे दायरा बढ़ता गया और अंततः पूरे महाद्वीप में फैल गया—और हिमालय की तलहटी से लेकर केप कोमोरिन तक, कच्छ से लेकर असम तक, पूरे भारत में शायद ही कोई ऐसा प्रांत बचा हो जहाँ ठग्गी का प्रचलन न रहा हो—जहाँ मुखबिरों के बयानों की पुष्टि शवों को कब्र से निकालकर न की गई हो!

उस दौर (1831-32) में भारत में मौजूद कुछ ही लोग इस खोज से देश के हर कोने में मचे हंगामे को कभी भूल पाएंगे: कई जिलों के मजिस्ट्रेटों ने इसे पूरी तरह से नकार दिया, क्योंकि वे यह मानने को तैयार नहीं थे कि यह चुपचाप विनाशकारी प्रणाली उनकी जानकारी के बिना काम कर सकती थी। मैं कर्नल स्लीमैन की अपनी ही विलक्षण और उत्कृष्ट कृति की प्रस्तावना से निम्नलिखित अंश उद्धृत कर रहा हूँ।

'जब मैं 1822, 1823 और 1824 में नरबुद्दा घाटी के नर्सिंगपुर जिले का सिविल प्रभार संभाल रहा था, तब कोई भी सामान्य डकैती या चोरी मेरी जानकारी के बिना नहीं हो सकती थी, और न ही जिले में कोई ऐसा सामान्य डाकू या चोर था, जिसके चरित्र से मैं मजिस्ट्रेट के रूप में अपने कर्तव्य निर्वहन के दौरान परिचित न हुआ हो; और यदि उस समय किसी ने मुझे बताया होता कि मेरे न्यायालय से चार सौ गज से भी कम दूरी पर स्थित कुंडेली गाँव में पेशेवर हत्यारों का एक गिरोह रहता है, और सागर और भोपाल जाने वाली सड़क पर मुझसे केवल एक पड़ाव दूर स्थित मुंडेसुर गाँव के विशाल जंगल पूरे भारत में सबसे बड़े भीलों, या हत्या के स्थानों में से एक हैं; अगर मुझे पता होता कि हिंदुस्तान और दुखुन के बड़े-बड़े गिरोह इन उपवनों में इकट्ठा होते थे, हर साल कई दिनों तक यहीं रहते थे और इनसे होकर गुजरने वाली और इनसे निकलने वाली सड़कों पर अपना घिनौना धंधा चलाते थे, और यह सब उन दो जमींदारों की जानकारी और मिलीभगत से होता था जिनके पूर्वजों ने ये उपवन लगाए थे, तो मैं उसे मूर्ख या पागल समझता, लेकिन यह बात बिल्कुल सच थी; मुंडेसुर के उपवनों में सौ यात्रियों के शव दफन हैं, और जब मैं जिले का मजिस्ट्रेट था, तब कुंडेली गांव और उसके आसपास हत्यारों का एक गिरोह रहता था, और उन्होंने पुणे और हैदराबाद शहरों तक अपनी लूटपाट फैला रखी थी।

उपरोक्त घटना के समान ही, ठगों की गतिविधियों के दुस्साहसी स्वभाव को दर्शाने वाला एक और तथ्य यह था कि हिंगोली छावनी में, उस जिले के ठगों का सरदार, हरी सिंह, एक प्रतिष्ठित व्यापारी था, जिसके साथ मेरा और कई अन्य लोगों का लेन-देन रहा था। एक बार उसने जिले के सिविल प्रभारी अधिकारी, कैप्टन रेनॉल्ड्स से बंबई से कुछ कपड़े लाने के लिए अनुमति मांगी, जिसके बारे में वह जानता था कि वे अपने मालिक के साथ

रास्ते में हैं, जो हिंगोली से कुछ ही दूरी पर स्थित एक कस्बे का व्यापारी है। उसने उस व्यक्ति, उसके सेवकों और पशुपालकों की हत्या कर दी, प्राप्त अनुमति का उपयोग करके माल को हिंगोली ले आया और उसे छावनी में खुलेआम बेच दिया; और यह बात कभी उजागर नहीं होती, यदि उसने अपनी गिरफ्तारी के बाद इसे स्वीकार न किया होता और इसे एक मजाक के रूप में गर्व से न मनाया होता। इस व्यक्ति और उसके गिरोह ने छावनी के बाज़ार में, मुख्य गार्ड से मात्र सौ गज की दूरी पर, अनेक लोगों की हत्या कर दी और उन्हें पहरेदारों की पंक्ति से मुश्किल से पाँच सौ गज की दूरी पर दफना दिया! मैं स्वयं इन कई अभागी कब्रों (जिनमें से प्रत्येक में कई शव थे) को खुलवाते समय उपस्थित था, जिन्हें गवाहों ने एक-एक करके, बड़े निर्मम भाव से, वहाँ मौजूद लोगों को दिखाया, जब तक कि हम घृणा से भर नहीं गए और आगे की खोज बंद कर दी। वह स्थान नदी से जुड़ने वाली एक छोटी जलधारा का सूखा मार्ग था, जो एक खाई से अधिक चौड़ा या गहरा नहीं था; यह एक पड़ोसी गाँव की सड़क के निकट था, जो छावनी से ग्रामीण इलाकों की ओर जाने वाले मुख्य मार्गों में से एक था।

जब इस भयानक प्रथा का पता चला और इसे सख्ती से कुचलने की आवश्यकता महसूस हुई, तो मुखबिरों की रिपोर्टों और आरोपों की जांच के लिए नियुक्त किए गए अधिकारियों ने सर्वोच्च सरकार में इस मामले में रुचि जगाने के लिए भरपूर प्रयास किए और सौभाग्य से सफल भी हुए। गवर्नर-जनरल लॉर्ड विलियम बेंटिंक और सर्वोच्च परिषद ने इस मामले को गंभीरता से लिया और उन जिलों में उपायों के क्रियान्वयन की निगरानी के लिए उच्च कोटि के बुद्धिमान अधिकारियों को नियुक्त किया गया जहां ठगी का प्रचलन पाया गया था। अधिकांश देशी राजकुमारों ने ठगी के आरोप में गिरफ्तार होने वाले या मुखबिरों द्वारा सूचित किए जाने वाले अपने नागरिकों पर अपना दावा छोड़ दिया; और यद्यपि कई क्षेत्रों में जमींदारों और गांवों के पोटैलों ने ठगों को संरक्षण दिया और उनकी गिरफ्तारी का विरोध किया, फिर भी इस प्रथा को कुचलने की योजनाएँ अत्यंत सफल रहीं। जैसे ही संदेह पैदा हुआ, पुरुषों का कोई भी समूह पुलिस और उनके साथ सभी प्रमुख सड़कों और मुख्य शहरों में तैनात मुखबिरों की कड़ी निगरानी के बिना देश में किसी भी दिशा में यात्रा नहीं कर सकता था।

इन उपायों की सफलता निम्नलिखित तालिका से और अधिक स्पष्ट हो जाएगी, जो विभाग के महाअधीक्षक कैप्टन रेनॉल्ड्स ने मुझे कृपापूर्वक उपलब्ध कराई थी।

1831 से 1837 तक, कुल मिलाकर,

पेनांग आदि को भेजा गया, 1059

फांसी दी गई 412

कठोर श्रम के साथ आजीवन कारावास 87

जमानत राशि जमा न करने पर कारावास 21

विभिन्न अवधियों के लिए कारावास 69

मुकदमे के बाद रिहा किया गया 32

जेल से फरार 11
जेल में मृत्यु हो गई _36
1727
अनुमोदकों की संख्या 483 थी
दोषी ठहराया गया लेकिन सजा नहीं सुनाई गई 120
विभिन्न स्थानों पर जेल में बंद, अभी तक मुकदमा नहीं चला 936
3266
उपरोक्त के अतिरिक्त, कैप्टन रेनॉल्ड्स ने उल्लेख किया कि जिस समय उन्होंने यह लिखा था, उस समय भारत के विभिन्न हिस्सों में 1800 से अधिक कुख्यात ठग खुलेआम घूम रहे थे, जिनके नाम ज्ञात थे: इनके अलावा कितने और ठग मौजूद थे, इसका अनुमान लगाना असंभव है।
ठग्गी प्रथा के अस्तित्व में आने से पहले या आंशिक रूप से रोके जाने से पहले भारत में मानव जीवन और संपत्ति का कितना व्यापक विनाश हुआ होगा! इन निर्दयी हत्यारों के हाथों प्रतिवर्ष कितने हज़ारों लोग मारे गए होंगे! यह कल्पना भी भयावह है; क्योंकि मराठा और पिंडारी युद्धों के पूरे अशांत काल में उनका धंधा फलता-फूलता रहा; और 1831 तक उनकी हत्या की इस व्यापक प्रणाली पर कोई गंभीर रोक नहीं लगी थी: और इसके व्यापक रूप से सामने आने के बाद, परिवारों द्वारा विभाग के अधिकारियों से अनगिनत और मार्मिक आवेदन किए गए कि उन्हें उन स्थानों के बारे में कुछ जानकारी दी जाए जहाँ उनके लापता रिश्तेदारों को मार डाला गया था, ताकि उन्हें मृतकों के लिए अंतिम संस्कार करने का कष्टदायक संतोष मिल सके— यह दर्शाता है कि इस बुराई ने समाज को कितनी गहराई से प्रभावित किया था।
और ठगी का अस्तित्व केवल निम्नलिखित पृष्ठों में वर्णित रूप में ही नहीं रहा है: इनके लिखे जाने के बाद, इसके कई अन्य रूप भी सामने आए हैं, और यह पाया गया है कि गंगा नदी पर इसका व्यापक रूप से अभ्यास किया जाता है। यहाँ नावों में रहने वाले लोग नदी में आने-जाने के दौरान यात्रियों को बहला-फुसलाकर अपने साथ ले जाते हैं और उनकी हत्या कर देते हैं। लेकिन सबसे घिनौने अपराध वे लोग करते हैं जो अपने बच्चों की खातिर उनके माता-पिता की हत्या कर देते हैं, ताकि उन्हें घरेलू गुलाम के रूप में बेच सकें या फिर उन्हें वेश्यावृत्ति में धकेलने के लिए नाचने वाली महिलाओं को सौंप सकें।
भारत के सभी क्षेत्रों, जिनमें देशी राजकुमारों के राज्य भी शामिल हैं, में ठगी प्रथा के दमन हेतु केवल अठारह अधिकारी अधीक्षक और एजेंट के रूप में नियुक्त हैं; इनमें से कई अधिकारियों को इस पद के अत्यधिक कार्यभार के अतिरिक्त अन्य नागरिक और राजनीतिक कर्तव्यों का भी निर्वाह करना पड़ता है। किसी भी मानचित्र को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत के कितने विशाल प्रांत या विभाग प्रत्येक अधिकारी के अधीन हैं। क्या प्रत्येक अधिकारी के लिए अपने अधीन प्रत्येक क्षेत्र पर वह गहन ध्यान और निगरानी रखना संभव है जो इस विनाशकारी प्रथा को समाप्त करने के लिए अत्यंत आवश्यक है (क्योंकि इसमें कोई संदेह नहीं है कि जहाँ कहीं भी कोई प्रशिक्षित ठग मौजूद होता है, वहाँ भारतीय आबादी में व्याप्त आलसी और

दुराचारी लोगों में से उसे अपने साथ शामिल होने के लिए कई लोग मिल जाते हैं), यह बात भारत सरकार ही भली-भांति ज्ञात है। यह आशा की जाती है कि आर्थिक कारणों से आवश्यकता पड़ने पर अन्य अधिकारियों की नियुक्ति में कोई बाधा न आए।

मैंने जो इकबालिया बयान दर्ज किए हैं, वे किसी की भयावह और अपराध की कहानियों के प्रति विकृत रुचि को संतुष्ट करने के लिए प्रकाशित नहीं किए गए हैं; इन्हें ठगों की हरकतों को यथासंभव पूरी तरह से उजागर करने और इंग्लैंड की जनता को इस विषय से वर्तमान समय की तुलना में अधिक परिचित कराने के लिए लिखा गया था, हालांकि कर्नल स्लीमैन के मूल्यवान और रोचक कार्य पर एडिनबर्ग रिव्यू में प्रकाशित एक सक्षम लेख द्वारा इस विषय पर कुछ ध्यान आकर्षित किया गया है।

मुझे आशा है कि प्रस्तुत कृति का स्वरूप ठगों के अंधविश्वासों और रीति-रिवाजों के मात्र विवरण की तुलना में अधिक आकर्षक और अधिक रुचिकर प्रतीत होगा; जबकि मूल निवासियों के रीति-रिवाजों और आदतों के चित्रण तथा स्थानों और दृश्यों के वर्णन की सटीकता के लिए मैं केवल भारत में पंद्रह वर्षों के निवास और यहाँ के निवासियों के साथ निरंतर और घनिष्ठ संपर्क के अनुभव का ही आश्वासन दे सकता हूँ।

यदि ये ग्रंथ किसी भी तरह से ठगी के दमन में जन जागरूकता बढ़ाने में योगदान देते हैं, या यदि इनके अध्ययन से किसी भी अधिकारी में मानवता के इस नेक कार्य में अपना योगदान देने का दृढ़ संकल्प उत्पन्न होता है, तो मेरा समय व्यर्थ नहीं जाएगा।

लंदन, जुलाई, 1839 एम. टी.

खंड I

अध्याय 1

ठग द्वारा पाठक के लिए परिचय,
और उनके इतिहास में एक ऐसी घटना जो उसके भविष्य के करियर का निर्धारण करता है

साहब, आप मुझसे मेरे जीवन का वृत्तांत पूछते हैं; आप इसे समझ जाएंगे, क्योंकि आप मेरे देशवासियों की विशेष आदतों से परिचित हैं; और यदि, जैसा कि आप कहते हैं, आप इसे अपने लिए जानना चाहते हैं, तो मुझे पूरा वृत्तांत बताने में कोई संकोच नहीं है; क्योंकि यद्यपि मैंने यूरोपियों की सेवा स्वीकार की है, मेरे मामले में दासता की, फिर भी मैं अपने द्वारा किए गए अनेक साहसिक कारनामों को याद करके गर्व और हर्षोल्लास से भर उठता हूँ। वास्तव में, अक्सर उन्हें याद करके मेरा मन प्रसन्न हो जाता है, और अक्सर मैं फिर से अपने आप को उन वीर आत्माओं के समूह का नेता बनने की कामना करता हूँ, जो कभी मेरे आज्ञाकारी थे, और उनके साथ जहाँ भी मेरी इच्छा या लूट की आशा मुझे प्रेरित करती, मैं उनके साथ घूमता।
लेकिन वो समय बीत चुका है। साहब, जीवन हर किसी को प्रिय है; आपके नियमों के अनुसार जो जीवन छिन गया है, उसे बचाने के लिए मैंने अपने पुराने सभी साथियों को त्यागने का कठोर वचन लेकर आपकी सेवा में स्वयं को समर्पित कर दिया है, और आप भली-भांति जानते हैं कि मैं यह सेवा कैसे करता हूँ। मेरे दल के सभी सदस्यों में से, और उन लोगों में से भी जिनसे संयोगवश मेरा संपर्क हुआ, अब कुछ ही लोग छुपकर रह गए हैं; कई न्याय के मंदिर में बलिदान हो चुके हैं, और जो अब टूटे हुए, भटकते हुए और एक स्थान से दूसरे स्थान पर पीछा किए जा रहे हैं, उनके बारे में आपके पास ऐसी जानकारी है जिससे उन्हें शीघ्र ही पकड़ा जा सकेगा। फिर भी ठग्गी, जो लोगों के मन को इतनी गहराई से प्रभावित करने में सक्षम है, नष्ट नहीं हो सकती! ज़रा उन सैकड़ों, बल्कि हजारों लोगों को देखिए जिन्होंने इस पेशे के कारण कष्ट झेला है; क्या आपके कैदियों की संख्या घट रही है? नहीं! इसके विपरीत, वे बढ़ रही हैं, और हर उस ठग्गी से जो फांसी पर मरने के बजाय आजीवन कारावास का विकल्प चुनता है, आपको ऐसे अन्य ठग्गियों के बारे में पता चलता है जिनके बारे में

मुझे भी जानकारी नहीं थी, और देश के उन हिस्सों में भी ठग्गी का प्रचलन जारी है जहां इसकी सबसे कम आशंका है और हाल तक इसका पता भी नहीं चला था।

मैंने कहा, "अमीर अली, यह बात बिलकुल सच है; आपका पुराना धंधा आज भी खूब फल-फूल रहा है, पर यह ज़्यादा दिन नहीं चलेगा। लोग जंगली जानवरों की तरह पकड़े जाने और फांसी पर लटकाए जाने के खतरे से तंग आ जाएंगे; या फिर कई लोगों के लिए इससे भी बुरा, काला पानी में भेजे जाने के खतरे से। सरकार जहां भी ठगों के होने का पता चलता है, वहां उनका इतनी सख्ती से पीछा करती है कि भारत में ऐसी कोई जगह नहीं बचेगी जहां आप अपना धंधा कर सकें।"

साहब, आप गलत हैं; आप ठगों के धंधे की उमंग और रोमांच को नहीं जानते। मेरी समझ से तो ऐसा लगता है कि जब तक कोई ठग जीवित रहता है, वह अपने आस-पास और ठगों को इकट्ठा करता रहता है; और मैं आपको अपने जीवन के बारे में जो बताऊंगा, उससे आप मेरी बात की सत्यता का अंदाजा लगा लेंगे।

आप में से कितने अंग्रेज़ खेल-कूद के दीवाने हैं! आपके दिन-महीने इसी रोमांच में बीतते हैं। एक बाघ, एक तेंदुआ, एक भैंसा या एक सूअर, उसे मारने के लिए आप अपनी पूरी ताकत लगा देते हैं—यहाँ तक कि उसका पीछा करते हुए अपनी जान भी जोखिम में डाल देते हैं। एक ठग का खेल कितना ऊँचा होता है! उसका शिकार तो इंसान होता है: बचपन से बुढ़ापे तक, वह हर उम्र में अपने साथी प्राणियों को निर्दयी और अचूक रूप से नष्ट करने की कसम खाता है!

आह! तुम तो बड़े ही घिनौने बदमाश हो, मैंने कहा: मुझे रोज़ाना सामने आ रही हत्याओं के रिकॉर्ड से यह तो पता है कि तुम कितने बुरे हो। लेकिन अपनी कहानी शुरू करो; मैं उन घिनौनी घटनाओं को सुनने के लिए तैयार हूँ जो मेरी कल्पना से परे हैं।

अमीर अली ने कहा, "यह बिल्कुल वैसा ही होगा जैसा आप सोच रहे हैं, और मैं कुछ भी नहीं छिपाऊंगा; बेशक आप चाहते हैं कि मैं अपनी कहानी उस समय से शुरू करूं जब तक मुझे याद है।"

बिल्कुल; मैं आपकी जीवनी इंग्लैंड में रहने वालों की जानकारी के लिए लिख रहा हूँ, जो निस्संदेह आप जैसे इतने प्रसिद्ध व्यक्ति के बारे में हर छोटी-बड़ी बात जानना चाहेंगे।

तो साहब, चलिए शुरू करते हैं; मुझे सबसे पहले जो याद है, और कुछ साल पहले तक वह बहुत धुंधली सी है, वह होल्कर के इलाके में स्थित एक गाँव की है, जहाँ मेरा जन्म हुआ था। मेरे माता-पिता कौन थे, यह मुझे नहीं पता; मुझे लगता है कि वे संभ्रांत रहे होंगे, क्योंकि मैं हमेशा सोने-चांदी के गहने पहनता था और मेरे आस-पास नौकर रहते थे। मुझे एक लंबी, गोरी महिला की धुंधली सी याद है, जिसे मैं माँ कहता था, और एक बूढ़ी औरत की भी, जो हमेशा मेरी सेवा करती थी और शायद मेरी दाई थी; साथ ही एक बहन की भी, जो मुझसे छोटी थी, लेकिन जिससे मुझे बहुत प्यार था। मुझे इसके अलावा और कुछ याद नहीं है, जब तक कि वह घटना नहीं घटी जिसने मुझे वह बनाया जो मैं आज हूँ, और जो मेरे मन में एकदम अंकित है।

घर में असामान्य हलचल और कपड़ों व अन्य आवश्यक वस्तुओं की पैकिंग देखकर मुझे लगा कि हम घर से निकलने वाले हैं। मेरा अनुमान सही निकला, क्योंकि हम अगली सुबह ही घर से निकल पड़े। मेरी माँ और मैं

एक डमी में सवार हुए, बूढ़ा चम्पा मेरे टट्टू पर सवार था और मेरे पिता अपने बड़े घोड़े पर सवार थे। हमारे पड़ोसियों के कई बेटे हमारे साथ थे; वे सभी हथियारबंद थे, और मुझे लगता है कि वे हमारे अंगरक्षक थे। अपने गाँव से निकलने के तीसरे या चौथे दिन, दिन भर की पैदल यात्रा के बाद, हम हमेशा की तरह उस कस्बे के बाज़ार में एक खाली दुकान में ठहरे जहाँ हमने विश्राम किया था। मेरे पिता अपने काम से चले गए और मेरी माँ, जो बार-बार मना करने के बावजूद बाहर नहीं निकल सकती थीं, अंदर के एक कमरे में लेट गईं और सो गईं। चूंकि चुम्पा खाना बनाने में व्यस्त था और जुवान परिवार के सभी लोग रास्ते से हट गए थे, इसलिए मुझे खाली समय मिल गया और मैं अपनी माँ के सभी आदेशों को भूलकर गली में कुछ अन्य बच्चों के साथ खेलने चला गया। हम सब खूब मस्ती कर रहे थे, तभी एक सुंदर अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने मुझसे बात की और पूछा कि मैं कौन हूँ—मैं अपने आस-पास के फटेहाल बच्चों से अलग दिख रहा था, क्योंकि मैंने अच्छे कपड़े पहने थे और मेरे पास चाँदी और सोने के कुछ गहने थे। मैंने उन्हें बताया कि मेरे पिता का नाम यूसुफ खान है और मैं, मेरी माँ और वह इंडोर जा रहे हैं।

'अरे, तो फिर,' उसने कहा, 'तुम वही लोग हो जिनसे मैं कल रास्ते में मिला था: तुम्हारी माँ बैलगाड़ी पर सवार होती है, है ना?'

'बिल्कुल नहीं!' मैंने गुस्से से जवाब दिया, 'वह पालकी में बैठती है, मैं उसके साथ जाता हूँ, पिताजी बड़े घोड़े पर सवार होते हैं, और हमारे साथ चुम्पा और कई जवान भी होते हैं। क्या आपको लगता है कि मेरे पिताजी जैसा पठान मेरी माँ को बैल पर बैठने देगा, जैसे किसी किसान की पत्नी बैठती है?'

"अच्छा, मेरे प्यारे बच्चे, जैसा तुम कहते हो वैसा ही होगा, और एक दिन तुम भी एक बड़े घोड़े की सवारी करोगे, और मेरी तरह तलवार और ढाल धारण करोगे। लेकिन क्या तुम्हें कुछ मिठाई पसंद नहीं आएगी? देखो, हुलवाई के यहाँ जुलेबी कितनी ललचा रही हैं; मेरे साथ आओ, हम कुछ खरीदते हैं।"

एक बच्चे के लिए उस प्रलोभन का विरोध करना बहुत मुश्किल था, और जिस दुकान पर हम ठहरे थे, उसकी ओर भयभीत होकर देखने के बाद, मैं उस आदमी के साथ हुलवाई के घर चला गया।

उसने मुझे ढेर सारी मिठाइयाँ खरीदकर दीं और घर जाकर उन्हें खाने को कहा; मैंने उन्हें अपनी कमर पर बंधे रुमाल में बाँध लिया और घर की ओर चल पड़ा। इस घटना ने मेरे साथ खेल रहे कुछ फटेहाल बच्चों का ध्यान आकर्षित कर लिया था, जो मेरी लाई हुई जुलेबों को ललचाई निगाहों से देख रहे थे; और जैसे ही मुझे मिठाई देने वाला आदमी थोड़ी दूर गया, उन्होंने मुझ पर पत्थर और मिट्टी से हमला कर दिया, यहाँ तक कि उनमें से एक अधिक साहसी ने मुझे पकड़ लिया और मुझसे मेरा इनाम छीनने की कोशिश की। मैंने जितना हो सका संघर्ष किया; लेकिन बाकी बच्चों ने मुझे चारों ओर से घेर लिया, और मुझे अपना खजाना सौंपने के लिए मजबूर होना पड़ा। इतने से भी संतुष्ट न होकर, एक बड़े लड़के ने मेरे गले में पहनी हुई माला छीनने की कोशिश की, जिस पर मैं पूरी ताकत से चिल्लाने लगा। मेरे शोर ने मेरे एक परिचित का ध्यान आकर्षित किया, जो दौड़कर आया और जल्दी ही लड़कों के झुंड को भगा दिया, और मुझे अपनी देखरेख में लेकर हमारे घर

ले गया, जहाँ उसने मुझे चुम्पा के हवाले कर दिया; साथ ही मैंने उसे झगड़े के बारे में बताया और उसे चेतावनी दी कि वह मुझे फिर कभी अपनी नजरों से ओझल न होने दे।

मैं फूट-फूटकर रो रहा था, और मेरी माँ ने एक अजीब सी आवाज़ सुनकर मुझे अपने पास बुलाया। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या हुआ है, तो मैंने उन्हें अपनी कहानी सुनाई और बताया कि जिसने मुझे बचाया है, वह चुम्पा से बात कर रहा है। उन्होंने पर्दे के पीछे से, जो एक पर्दे की तरह लगाया गया था, चुम्पा को संबोधित किया और उनका धन्यवाद किया; और कहा कि मेरे पिताजी घर पर नहीं हैं, लेकिन अगर वे एक-दो घंटे में फिर आएँ, तो उन्हें घर पर पाएँ, और उन्हें पूरा विश्वास है कि वे भी अपने बच्चे की रक्षा करने वाले को धन्यवाद देने में प्रसन्न होंगे। उस व्यक्ति ने कहा कि वह शाम को आएगा, और चला गया। मेरे पिताजी थोड़ी देर बाद लौट आए, और मुझे खूब पिटाई पड़ी, जिसके लिए मेरी माँ ने मुझे हुलवाई की मिठाइयाँ खिलाकर दिलासा दिया, जो मेरी मुसीबत का कारण थीं, और मैं यह भी कह सकता हूँ कि मेरी वर्तमान स्थिति का कारण भी वही थीं। आप देखिए, साहब, कैसे भाग्य छोटी-छोटी बातों से अपना अंजाम निकाल लेता है।

शाम होते-होते मेरा एक परिचित, एक और आदमी के साथ आया। उनकी बातचीत का ज़्यादातर हिस्सा मेरे बारे में ही था; लेकिन फिर बातचीत दूसरे विषयों पर भी चली गई, जिनमें से एक में मुझे याद है कि सबसे पहले 'ठग' शब्द का इस्तेमाल हुआ था। उनकी बातों से मुझे यह भी पता चला कि हम जहाँ थे और इंडोर के बीच सड़क पर बहुत से ठग थे, और वे मेरे पिताजी को उनसे सावधान कर रहे थे। उन आदमियों ने बताया कि वे सैनिक थे, जिन्हें इंडोर से किसी काम से भेजा गया था; और क्योंकि उनके साथ उनके बहुत से आदमी थे, इसलिए उन्होंने हमारे साथ चलने की पेशकश की। मेरा दोस्त मेरे प्रति बहुत दयालु था, उसने मुझे अपने हथियारों से खेलने दिया और अगले दिन मुझे अपने घोड़े पर आगे ले जाने का वादा किया। मैं इस बात से बहुत खुश था, और उसके दयालु और मिलनसार स्वभाव से भी; लेकिन मुझे दूसरे आदमी का रूप-रंग पसंद नहीं आया, जो देखने में बदसूरत था—उसके बारे में मैं आपको आगे और विस्तार से बताऊंगा।

अगली सुबह हमने अपनी यात्रा शुरू की: हमारे दो परिचित और उनके साथी गाँव के बाहर एक आम के बाग में हमसे मिले, जहाँ उन्होंने डेरा डाला हुआ था, और हम अपनी यात्रा पर निकल पड़े। इस तरह हमने दो दिन तक यात्रा की, और मेरे दोस्त ने मुझे अपने घोड़े पर आगे ले जाने का अपना वादा निभाया; वह खुद भी घोड़े से उतरकर आगे चलता था, और मुझे काठी पर ही रहने देता था; और क्योंकि घोड़ा शांत स्वभाव का था, मैं सूरज की तेज गर्मी तक सवारी का आनंद लेता था, जब मुझे मेरी माँ के साथ गाड़ी में बिठा दिया जाता था।

तीसरे दिन मुझे याद है कि जब वे साथ-साथ चल रहे थे, तो मेरे दोस्त ने मेरे पिता से कहा,

'यूसुफ खान, तुम अपने उन बेचारे जवानों को अपने साथ इंडोर क्यों ले जा रहे हो? जिस पड़ाव पर हम अब पहुँच रहे हैं, वहाँ से उन्हें वापस क्यों नहीं भेज देते? मैं और मेरे आदमी तुम्हारी पूरी सुरक्षा करेंगे; और चूंकि तुम भी मेरी ही सेना में हो, इसलिए बाकी यात्रा के लिए खुद को और अपने परिवार को मेरी सुरक्षा में सौंपने में कोई हर्ज नहीं है; इसके अलावा, सड़क का खतरनाक हिस्सा, वह जंगल जिसमें हम पिछले दो दिनों से थे,

बीत चुका है, और हमारे सामने खुला मैदान है। उनमें सिर्फ ठगों और चोरों का डर था, और वे अब बहुत पीछे छूट गए हैं।'

'यह बात सही है,' मेरे पिता ने उत्तर दिया; 'मुझे पूरा यकीन है कि लड़के लंबी वापसी यात्रा के एक हिस्से से उन्हें बचाने के लिए मेरे आभारी होंगे, और वे पहले ही लगभग पचास या साठ दल हमारे साथ आ चुके हैं।'

स्टेज पर पहुँचते ही मेरे पिताजी ने लड़कों से कहा कि उन्हें वापस लौटना होगा, जिससे वे बहुत प्रसन्न हुए। दोपहर के करीब उनके जाने पर मैंने अपने पुराने साथियों और खेल के दोस्तों को कई शुभकामना संदेश दिए। मुझे याद है कि मैंने अपनी छोटी बहन को एक पुराना, फटा हुआ रुपया दिया था और उससे कहा था कि वह इसे बाकी ताबीजों और सिक्कों के साथ अपने गले में लटका ले, ताकि उसे मेरी याद आती रहे।

साहब, मुझे वह फिर मिल गया; लेकिन, अरे! किन परिस्थितियों में!

अपनी कहानी के इस हिस्से में, अमीर अली कंपकंपाते हुए प्रतीत हुए; उनके शरीर में एक तीव्र ऐंठन दौड़ गई, और कुछ समय बाद ही वे बोले; अंततः उन्होंने बोलना फिर से शुरू किया:

साहब, नौकर से कहिए कि मेरे लिए थोड़ा पानी ले आए—मैं बहुत ज्यादा बोलने से प्यासा हो गया हूँ।

नहीं, मैंने कहा, तुम्हें प्यास नहीं लगी है, तुम्हें पानी मिल जाएगा।

उसे लाया तो गया, पर उसने मुश्किल से ही उसे चखा—फिर से उसके शरीर में सिहरन दौड़ गई। वह उठा और कमरे में इधर-उधर चलने लगा, उसके हाथों की बेड़ियाँ खटकने लगीं। उसके चेहरे के हाव-भाव देखना भयावह था। अंत में उसने कहा, साहब, यह कमजोरी है। मैं इसे छिपा नहीं सका; मैंने सोचा भी नहीं था कि कहानी के इतने शुरुआती दौर में ही मैं इतना भावुक हो जाऊँगा; लेकिन यादें इतनी तेज़ी से मुझ पर हावी हो गईं कि मैं उलझन में पड़ गया और बहुत बीमार महसूस करने लगा। अब यह सब खत्म हो गया है—मैं आगे बढ़ता हूँ।

मैंने कहा, ऐसा करो।

जुवान परिवार को गए कुछ घंटे हो गए थे और अब शाम हो चुकी थी। मेरा मित्र हमारे घर आया और मेरे पिता को बताया कि आगे दो छोटे पड़ाव हैं और अगर वे चाहें तो उन्हें एक में पूरा किया जा सकता है, क्योंकि इससे इंडोर तक की दूरी कम हो जाएगी; लेकिन हमें बहुत जल्दी, सूर्योदय से काफी पहले निकलना होगा और सामान ढोने वालों को भेड़ का वादा करके आसानी से चलने के लिए राजी किया जा सकता है, क्योंकि जिस गाँव में वह जाने का प्रस्ताव कर रहा था, वहाँ का पोटैल उसका मित्र होने के कारण भेड़ मुफ्त में दे देगा। मेरे पिता को मुफ्त में भेड़ लेने की बात सुनकर कुछ गुस्सा आया और उन्होंने कहा कि उनके पास न केवल भेड़ खरीदने के लिए, बल्कि हमें जल्दी पहुँचाने पर उन्हें उपहार देने के लिए भी पर्याप्त धन है।

'खैर,' मेरे दोस्त ने कहा, 'तो यह और भी अच्छा है, क्योंकि हम सिपाही लोगों के पास अपनी भुजाओं के अलावा शायद ही कुछ और होता है।'

'सच है,' मेरे पिता ने जवाब दिया; 'लेकिन तुम जानते हो कि मैंने अपने गाँव की सारी संपत्ति बेच दी है और उस पैसे को हमारी सेवा में मदद के लिए लाया हूँ। वास्तव में, यह एक अच्छी खासी रकम है।'

और मेरे पिता इस विचार पर मुस्कुरा दिए।
'क्या! तुम्हारे पास एक हजार रुपये हैं?' मैंने पूछा, धन के बारे में मेरी धारणा इससे आगे नहीं बढ़ पाती थी।
'और अगर यह इससे अधिक हो तो?' उसने कहा और बात वहीं खत्म हो गई; लेकिन मुझे अब भी याद है कि मेरे दोस्त ने अपने साथी के साथ इशारे किए थे।
तब यह तय किया गया कि हम आधी रात के आसपास, चंद्रमा के उदय होने के साथ ही शुरुआत करेंगे। हमें तय समय पर नींद से जगाया गया; और जब सबने मिलकर एक पाइप पी ली, तो हम चल पड़े। मैं अपनी माँ के साथ डौली में थी। चाँद निकल चुका था; लेकिन जहाँ तक मुझे याद है, रोशनी बहुत कम थी और हल्की बारिश हो रही थी, जिसकी वजह से हमें बहुत धीरे चलना पड़ रहा था। कुछ कदम चलने के बाद, डौली उठाने वालों ने उसे नीचे रख दिया और कहा कि वे अंधेरे और कीचड़ में आगे नहीं जा सकते, और उन्होंने उजाला होने तक इंतजार करने का प्रस्ताव रखा। मेरे पिताजी का उनसे ज़ोरदार झगड़ा हुआ; और चूंकि मैं अब पूरी तरह जाग चुकी थी और बारिश भी रुक गई थी, मैंने उनसे डौली से बाहर निकालने और अपने दोस्त के साथ सवारी करने की अनुमति देने की विनती की। वह हमेशा की तरह आसानी से नहीं माने; फिर भी जब डौली उठाने वालों को डांट-फटकार कर आगे बढ़ने के लिए मजबूर किया गया, तो उन्होंने मुझे डौली में बिठा लिया। मैंने उनसे कहा कि कुछ सैनिक, जैसा कि मुझे लगा, वहाँ नहीं हैं। मेरी बात सुनकर पिताजी का ध्यान इस ओर गया और उन्होंने हमारे साथी से पूछा कि वे कहाँ हैं। उसने लापरवाही से जवाब दिया कि वे आगे निकल चुके हैं, क्योंकि हम अभी तक बहुत धीमी गति से चल रहे हैं, और हम जल्द ही उन्हें पकड़ लेंगे।
हम आगे बढ़े। आखिरकार हम एक नदी के गहरे तल पर पहुँचे, जिसके किनारों पर घना जंगल था। तभी मेरे मित्र ने पानी पीने का बहाना बनाकर घोड़े से उतरकर मुझे बताया कि घोड़ा मुझे सुरक्षित रूप से नदी पार करा देगा। मैंने यथासंभव उसका मार्गदर्शन किया; लेकिन नदी पार करने से पहले ही मुझे एक चीख सुनाई दी, मानो अचानक किसी के हाथापाई की आवाज आई हो। मैं घबरा गया; और यह देखने के लिए पीछे मुड़ते समय कि आवाज कहाँ से आ रही है, मेरा घोड़े पर संतुलन बिगड़ गया और मैं नदी के तल में पड़े पत्थरों पर बुरी तरह गिर पड़ा, जिससे मेरे माथे पर गहरा घाव हो गया। वह निशान आज भी मेरे माथे पर है।
मैं थोड़ी देर लेटा रहा, और उठकर देखा तो वे सभी आदमी, जो मुझे लगा कि हमसे बहुत आगे हैं, डोली को लूट रहे थे। अब मैं पूरी ताकत से चीखने लगा। उनमें से एक मेरे पास दौड़ा आया, और मैंने देखा कि वह वही बदसूरत आदमी था जिसका मैंने पहले ज़िक्र किया था। 'अरे! हम तुम्हें भूल गए थे, छोटे शैतान!' वह चिल्लाया; और मेरे गले में रुमाल डालकर उसने मुझे लगभग गला घोंट दिया। एक और आदमी जल्दी से आया—वह मेरा दोस्त था। 'इसे हाथ मत लगाओ!' उसने गुस्से से दूसरे से कहा, और उसके हाथ पकड़ लिए; दोनों में ज़बरदस्त झगड़ा हुआ, और उन्होंने अपनी तलवारें निकाल लीं। मुझे आगे कुछ याद नहीं है; क्योंकि मैं इतना डर गया था कि मैं बेहोश हो गया, और शायद गिर पड़ा।
मेरे मुँह में पानी डालकर मुझे होश आया; और सबसे पहले मेरी नज़र मेरे माता-पिता, चुम्पा और पालकी उठाने वालों के शवों पर पड़ी, जो सब अस्त-व्यस्त पड़े थे। मुझे याद नहीं कि उस समय मेरे मन में क्या भाव

थे, लेकिन वे बहुत भयानक रहे होंगे। मुझे बस इतना याद है कि मैं अपनी मृत माँ पर गिर पड़ा, जिनका चेहरा बुरी तरह विकृत हो गया था, और फिर बेहोश हो गया। पैंतीस साल बीत जाने के बाद भी, मेरी माँ का चेहरा, और विशेष रूप से उनकी आँखें, मुझे आज भी याद हैं; लेकिन मुझे इसका वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है, साहब; उनका गला घोंट दिया गया था! वह, मेरे पिता और पूरा समूह एक दुखद और असमय अंत को प्राप्त हो गया था! कई वर्षों बाद, मैंने एक बूढ़े ठग से इस घटना का पूरा वृत्तांत सुना; और मैं उसे उचित समय पर सुनाऊँगा।

जब मुझे होश आया, तो मैंने खुद को एक बार फिर अपने उस दोस्त के सामने पाया जिसने मेरी जान बचाई थी। उसने मुझे सहारा दिया और लगभग अपनी बाहों में उठा लिया, और मैंने महसूस किया कि हम अब सड़क पर नहीं थे। हम तेज़ी से जंगल पार कर रहे थे, जो हर दिशा में दूर-दूर तक फैला हुआ था; लेकिन मेरी गर्दन में इतना तेज़ दर्द था कि मैं मुश्किल से अपना सिर उठा पा रहा था। मेरी आँखें सूजी हुई और फटी हुई लग रही थीं, और उनमें बहुत दर्द भी हो रहा था। होश आने पर मुझे पूरा दृश्य याद आ गया, और मैं फिर से बेहोश हो गया। इस यात्रा के दौरान मैं कई बार इसी तरह होश में आया और बेहोश हो गया; लेकिन यह केवल क्षणिक था, बस इतना ही कि मैं देख सकूँ कि हम अभी भी तेज़ गति से आगे बढ़ रहे थे, क्योंकि पैदल चलने वाले लोग दौड़ने और चलने के बीच झूल रहे थे। आखिरकार हम रुके, और अब उजाला हो चुका था; वास्तव में, सूरज निकल चुका था। एक आदमी ने मुझे घोड़े से उतारा और ज़मीन पर बिछे कपड़े पर एक पेड़ के नीचे लिटा दिया, और कुछ समय बाद मेरा दोस्त मेरे पास आया। मैं बेहद दुखी थी, फिर भी मुझे यह महसूस हो रहा था कि मेरे माता-पिता की मृत्यु में उसका कुछ हाथ जरूर रहा होगा; और बचकाने गुस्से में मैंने उसे खूब खरी-खोटी सुनाई और मुझे जान से मारने को कहा। उसने मुझे सांत्वना देने की कोशिश की; लेकिन उसकी कोशिशें जितनी बढ़ती गईं, मैं उतनी ही ज़िद करती रही कि वह मुझे मार डाले। मुझे असहनीय दर्द हो रहा था; मेरी गर्दन और आँखों में असहनीय पीड़ा थी। मैंने उसे खूब खरी-खोटी सुनाई, और मेरे शोर ने उस बदसूरत आदमी का ध्यान मेरी ओर खींच लिया, जिसका नाम गुनेश था।

'वह बदमाश क्या कह रहा है? क्या तुम भी औरत बन गई हो?' उसने दूसरे व्यक्ति, जिसका नाम इस्माइल था, को संबोधित करते हुए क्रोध से कहा, 'तुम उसके गले में कपड़ा क्यों नहीं डाल रही हो और उसे तुरंत चुप करा रही हो—अगर तुम डर रही हो तो मुझे करने दो।'

और वह मेरे पास आया। मैं उतावला था, और मैंने उसे गालियों की बौछार कर दी और उस पर थूक दिया। उसने अपनी कमरबंद खोली और मुझे जान से मारने ही वाला था कि इस्माइल ने फिर बीच में आकर मुझे बचा लिया; उन दोनों के बीच फिर से ज़ोरदार झगड़ा हुआ, लेकिन वह मुझे उठाकर थोड़ी दूर एक दूसरे पेड़ के पास ले जाने में कामयाब रहा, जहाँ उसके कुछ साथी अपना खाना पकाने की तैयारी कर रहे थे; और मुझे उनके बीच बिठाकर, उन्हें मेरा ख्याल रखने के लिए कहकर वह चला गया। उन लोगों ने मुझे बोलने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन मैं उदास था और कुछ नहीं बोला; मेरी गर्दन और आँखों का दर्द बढ़ता ही जा रहा था, और मैं फूट-फूट कर रोने लगा। मुझे लगता है कि मैं कुछ घंटों तक इसी तरह पड़ा रहा; और

आखिरकार, पूरी तरह थककर सो गया। मैं शाम के समय जागा; और जब इस्माइल ने मुझे उठते हुए देखा, तो वह मेरे पास आया, मुझे दिलासा दिया और प्यार से सहलाया, और कहा कि अब से मैं उसका बच्चा रहूँगा; और यह वह नहीं, बल्कि दूसरे लोग थे जिन्होंने मेरे माता-पिता की हत्या की थी। मुझे याद है मैंने उनसे अपनी गर्दन के लिए कुछ करने की गुहार लगाई थी, जो सूजी हुई थी और अभी भी बहुत दर्द कर रही थी। उन्होंने मेरी गर्दन की जांच की और ऐसा लगा जैसे वे मेरी जान बाल-बाल बचने पर स्तब्ध रह गए हों।

उन्होंने मेरी गर्दन पर तेल मला और फिर उस पर पत्तों का गर्म लेप लगाया, जिससे मुझे बहुत आराम मिला और मुझे अच्छा महसूस हुआ। वे मेरे साथ ही रहे; और कुछ अन्य लोग हमारे पास बैठकर मुझे खुश करने के लिए गाने और बजाने लगे। शाम को मुझे खाने के लिए दूध और चावल दिए गए; लेकिन सोने से पहले, इस्माइल मेरे लिए चीनी और पानी का शरबत लाए, और उन्होंने कहा कि इससे मुझे नींद आ जाएगी। मुझे लगता है उसमें अफीम मिली हुई थी, क्योंकि मुझे अगली सुबह तक कुछ याद नहीं है, जब मैंने खुद को घोड़े पर उनकी बाहों में पाया और मुझे पता चला कि हम फिर से यात्रा पर हैं।

मैं उस यात्रा को छोड़ देता हूँ, क्योंकि मुझे उसका कुछ भी याद नहीं है, सिवाय इसके कि गुनेश अब हमारे साथ नहीं था, जिससे मुझे बहुत खुशी हुई; क्योंकि मैं उससे नफरत करता था और उसकी उपस्थिति सहन नहीं कर सकता था। साहब, बाद के वर्षों में भी, यद्यपि हम ठगी में साथ रहे, मेरे मन में उसके प्रति गहरी घृणा बनी रही, जो अंत तक नहीं बदली।

उस टोली में इस्माइल और सात आदमी ही बचे थे; और हम लंबी और थका देने वाली पैदल यात्रा करके उस गाँव की ओर बढ़े जहाँ उसने कहा कि वह रहता है, और जहाँ मुझे उसकी पत्नी की देखरेख में सौंपा जाना था। आखिरकार हम वहाँ पहुँच गए, और मुझे एक सुंदर युवती से एक रिश्तेदार के बच्चे के रूप में मिलवाया गया, जिसे उसने बहुत पहले गोद लिया था और अब उसे अपने घर ले आया था: संक्षेप में, मुझे औपचारिक रूप से उनके द्वारा अपने बेटे के रूप में गोद ले लिया गया, और मेरे कष्ट शीघ्र ही भुला दिए गए।

अध्याय II

जिससे यह प्रतीत होगा कि अमीर अली की जिज्ञासा अत्यधिक उत्तेजित है।

उस समय मेरी उम्र लगभग पाँच वर्ष रही होगी। साहब, आपको शायद यह अजीब लगे कि मुझे इस घटना की इतनी सारी बातें याद हैं; लेकिन कुछ वर्ष पूर्व जब मैं दिल्ली में कैद था, तब एकांत में मैं अपने जीवन की पिछली घटनाओं को याद करने और उन्हें क्रम में लगाने का प्रयास करता था। एक घटना से दूसरी घटना याद आ जाती थी—क्योंकि एकांत में, यदि मन को कुछ करने को मिल जाए, तो वह अतीत की घटनाओं के सुराग आसानी से पकड़ लेता है, चाहे वे कितनी भी पुरानी क्यों न हों, और विचार उन्हें एक-एक करके कल्पना के सामने इतनी जीवंतता से प्रस्तुत करता है जैसे कल ही घटित हुई हों—और उस कैद के दौरान मैंने एक पुराने ठग के कारनामों के बारे में सुना था, जिससे मेरी याददाश्त ने मेरी अच्छी मदद की। मुझे वे सभी तथ्य याद थे, जैसा मैंने आपको बताया है, और मैंने शायद केवल कुछ छोटी-मोटी बातें ही अपने मन से जोड़ी हैं। मुझे विशेष रूप से गुनेश के साथ हुआ वह दृश्य याद है, जो उसने बाद में मुझे बताया, और उसने मुझे बताया कि मेरे द्वारा उस पर बरसाए गए अपशब्दों से वह इतना क्रोधित था कि यदि इस्माइल के प्रतिशोध और उसकी शक्ति का भय न होता, तो वह क्रोध में आकर मेरी बलि दे देता।
लेकिन वापस मेरी कहानी पर आते हैं, अगर आप इससे ऊब नहीं गए हैं।
नहीं, मैंने कहा; मुझे इसमें दिन-ब-दिन और अधिक रुचि होती जा रही है।
अमीर अली ने आगे कहा, "इस्माइल और उनकी पत्नी ने मेरी बहुत देखभाल की। मेरे आने से गाँव वालों में काफी उत्सुकता थी, और मुझे तब से शक है कि इस्माइल को लगता था कि मैं एक दिन अपने बारे में जो जानता हूँ वो बता दूँगा; और इसी वजह से मुझे कभी भी उनकी या उनकी पत्नी की नज़रों से दूर नहीं जाने दिया गया। लेकिन फिर मैं शायद जल्दी ही सब कुछ भूल गया, या कम से कम मुझे उस घटना की इतनी धुंधली और अस्पष्ट याद रह गई कि अगर मैं किसी को बताने की कोशिश करता, तो मैं उसे समझा नहीं पाता और लोग मेरी बात पर ध्यान नहीं देते।"
इस्माइल अपने गाँव में कपड़े का व्यापार करता था, कम से कम जब वह घर पर होता था। वह रोज़ अपनी दुकान में बैठता था, उसके सामने तरह-तरह के कपड़े बिक्री के लिए रखे होते थे; लेकिन यह बात मुझे भी साफ़ दिखती थी कि वह बेचैन और परेशान रहता था। वह अक्सर कई दिनों तक घर से बाहर रहता था, उसके परिवार को पता भी नहीं चलता था कि वह कहाँ गया है; और अचानक बड़ी मात्रा में कपड़े और अन्य सामान लेकर लौट आता था, जो हमेशा बिक्री के लिए रखे रहते थे। मैं हमेशा उसकी सबसे ज़्यादा देखभाल का पात्र बना रहा, और मैं भी उसके स्नेह का जवाब देता था, क्योंकि वास्तव में वह मेरे साथ मेरे पिता से कहीं ज़्यादा अच्छा व्यवहार करता था, जो एक घमंडी और चिड़चिड़े स्वभाव के व्यक्ति थे। मेरी नई माँ ने भी मुझे कभी नाराज़ होने का मौका नहीं दिया; क्योंकि उसकी अपनी कोई संतान नहीं थी, इसलिए मैं उसका लाडला

था, और वह अपनी सारी शक्ति मुझ पर लुटाती थी। मैं हमेशा अच्छे कपड़े पहनता था, और मुझे वे सभी सुख-सुविधाएँ मिलती थीं जो एक बच्चे को चाहिए होती हैं।

मुझे लगता है कि मैं लगभग नौ साल की थी, जब मेरी दयालु संरक्षक का बुखार से निधन हो गया, उस समय इस्माइल अपने एक भ्रमण पर गए हुए थे। एक पड़ोसी मुझे उनके घर ले गया, जब तक कि वे वापस नहीं आ गए। मैं उनके उस दुख को कभी नहीं भूल सकती जब उन्होंने अपना घर वीरान पाया। मैं छोटी थी, इसलिए मैं उन्हें सांत्वना देने के लिए कुछ खास नहीं कर सकी; लेकिन वे हर शुक्रवार को जाकर उनकी समाधि पर फूल चढ़ाते थे और उनकी कब्र पर बड़े दुख से विलाप करते थे।

बेचारी मरियम! यही उसका नाम था—तुम्हारा मरना अच्छा ही हुआ; अगर तुम जीवित रहतीं, तो अब तुम्हारी क्या हालत होती! एक कुख्यात गुंडे की पत्नी होने के नाते, तुम्हारी प्रतिष्ठा पूरी तरह से धूमिल हो जाती और तुम समाज से बहिष्कृत हो जातीं!

साहब! वह इस्माइल को जानती ही नहीं थी। उसके लिए वह एक समृद्ध व्यक्ति था। उसके पास वह सब कुछ था जो वह चाहती थी, उसकी कोई भी ज़रूरत अधूरी नहीं थी; और उसकी योजनाएँ इतनी गहरी और सुनियोजित थीं कि उसे उसकी गिरफ्तारी के दिन तक यह पता ही नहीं चला होगा कि वह एक कुख्यात हत्यारे की पत्नी है!

मैं अपने जीवन के अगले चार-पाँच वर्षों को यूँ ही गुजार देता हूँ, क्योंकि मुझे उनमें कोई भी ऐसी घटना याद नहीं आती जो बताने लायक हो। इस्माइल, अपनी पत्नी की मृत्यु के तुरंत बाद, उस गाँव से चले गए जहाँ वे अब तक रहते थे, और मुरनाए कस्बे में बस गए, जो उस समय सिंधिया के अधिकार में था, और मुझे एक बूढ़े व्यक्ति के पास स्कूल में दाखिला दिलाया गया, जिन्होंने मुझे फ़ारसी पढ़ना-लिखना सिखाया।

जैसे-जैसे मैं बड़ा होता गया, मैंने देखा कि इस्माइल अक्सर रात में अपने घर पर कई आदमियों को बुलाता था, और स्वाभाविक रूप से मुझे यह जानने की उत्सुकता होती थी कि वे कौन हैं और क्यों इकट्ठा होते हैं। एक शाम जब मुझे पता था कि वे आने वाले हैं, तो मैंने हमेशा की तरह सोने का नाटक किया; लेकिन जब वे सब आ गए, तो मैं सावधानी से उठा और कमरे के उस कोने में, जहाँ वे बैठे थे, एक पर्दे के पीछे छिप गया। उनके लिए तैयार भोजन खाने के बाद, वे सब एक साथ आ गए और एक ऐसी भाषा में बातचीत करने लगे जिसे मैं केवल आंशिक रूप से समझ पाता था, और मुझे यह अजीब लगा, क्योंकि मैं हिंदुस्तानी और वहाँ की आम बोली जानता था, जो मैंने कस्बे के लड़कों के साथ रहकर सीखी थी। थोड़ी देर बाद, इस्माइल मेरे पास ही एक कोठरी में गया, और उसकी हरकत से मैं बहुत घबरा गया, क्योंकि मुझे पकड़े जाने का डर था; उसने उसमें से एक डिब्बा निकाला, जिसे उसने उस घेरे में रखा और उसे खोला। हालाँकि मैंने हमेशा उसे अमीर समझा था, मुझे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि उसमें कितना धन छिपा है; वहाँ हर तरह के सोने और चांदी के आभूषण, मोतियों की मालाएँ और अन्य कीमती वस्तुएँ प्रचुर मात्रा में थीं; ऐसा प्रतीत होता था कि उन सभी को यथासंभव समान रूप से बाँटा गया था, और प्रत्येक व्यक्ति ने एक-एक वस्तु दी थी, जबकि अपने लिए एक बड़ा हिस्सा सुरक्षित रखा था।

अंततः वे हिंदुस्तानी भाषा में बोलने लगे, जो मुझे समझ आती थी। उनमें से एक, एक वृद्ध व्यक्ति जिसकी घनी दाढ़ी थी, ने इस्माइल से कहा, 'अमीर के साथ तुम्हारा क्या इरादा है? वह लगभग जवान है; और अगर उसे हमारे समूह में शामिल करना है, तो उसे सही राह सिखाने का समय आ गया है। उसे घर में रखना बहुत खतरनाक है; वह कुछ पता लगा सकता है और तुम्हारे कुछ जानने से पहले ही भाग सकता है।'
'ओह, मुझे उससे कोई डर नहीं है,' इस्माइल ने कहा; 'वह मुझसे बहुत प्यार करता है; इसके अलावा, दुनिया में मेरे सिवा उसका कोई और रक्षक नहीं है। वह ***** का पुत्र था।'
और यहाँ फिर से इस्माइल ने उस भाषा में बातचीत जारी रखी जिसे मैं समझ नहीं पा रहा था।
हुसैन नाम के एक अन्य व्यक्ति ने कहा, 'कोई बात नहीं।' हुसैन नाम का वह व्यक्ति, जिसे मैं अच्छी तरह जानता था, क्योंकि वह इस्माइल के यहाँ कपड़े बेचने के लिए एजेंट के रूप में काम करता था, ने कहा, 'लड़का बड़ा फुर्तीला है और इतना समझदार है कि उसे इतनी बेपरवाही से हर जगह जाने देना ठीक नहीं है; अगर उसे हमारे बीच ठीक से नहीं रखा गया, तो वह एक दिन सब कुछ जान जाएगा। इसके अलावा, वह कई कामों में उपयोगी होने लायक उम्र का है और अगर उसे सीखना ही है, तो उसे हमारे पेशे की शिक्षा दी जानी चाहिए; यकीन मानिए, जितनी जल्दी वह गोर (एक प्रकार का कपड़ा) खाएगा, उतना ही उसे उसमें रुचि होगी। मैंने खुद एक लड़के को पाला है; और एक बार जब उसने काम सीख लिया, तो वह काम में एकदम माहिर हो गया और इतना कुशल हो गया कि हमारे सबसे पुराने कारीगर भी मुश्किल से उसका मुकाबला कर पाते थे।'
'खैर,' इस्माइल ने कहा, 'मुझे लगता है आप सही हैं, और मैं इस लड़के से बड़ी-बड़ी उपलब्धियों की भविष्यवाणी करता हूँ। वह अपनी उम्र से कहीं अधिक बहादुर और हट्टा-कट्टा है, और कुसरुत में उससे आगे निकलने वाले बहुत कम लोग हैं, जो मैंने उसे बचपन से सिखाया है; लेकिन उसका स्वभाव इतना दयालु और सौम्य है कि मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं उसे यह बात कैसे बताऊँ। मुझे लगभग डर है कि वह कभी राजी ही नहीं होगा।'
'छी!' एक तीसरे व्यक्ति ने कहा, जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था; 'ये दयालु लड़के हमारे लिए सबसे अच्छे हैं; इन्हें आसानी से बहकाया और मनाया जा सकता है, और इन पर भरोसा भी अधिक किया जा सकता है। बात को सही ढंग से समझाओ; उसे इस काम की महिमा और स्वर्ग के प्रति हमारी निश्चितता के बारे में बताओ। उसे उन हूरों के बारे में सब कुछ बताओ जिनका वादा हमारे पैगंबर मुहम्मद (उनका नाम सम्मानित हो) ने हमसे किया है, और उसे इंदूर के स्वर्ग के बारे में भी बताओ, जिसके बारे में तुम जानते हो कि हमें पूरा विश्वास है; एक हमारे मुसलमान होने के विश्वास से और दूसरा हमारे मुसलमान होने के दावे से। मुझे पूरा यकीन है कि वह जल्द ही मान जाएगा।'
इस्माइल ने कहा, 'मुझे लगता है कि आपने सही तरीका ढूंढ लिया है; लड़का जब भी फुर्सत का एक पल मिलता है, मस्जिद के बूढ़े और मूर्ख मूला के पास जाता है, जिसने उसके दिमाग में जन्नत की इतनी कहानियां भर रखी हैं, जो वह उसे पवित्र कुरान पढ़कर सुनाता है, कि वह कभी-कभी लगभग पागल हो जाता है, और

यही एक बात है जिस पर उसे सुधारा जा सकता है। मैं उससे बात करूंगा और मुझे पूरा यकीन है कि वह जल्द ही हमारा हो जाएगा।'
'जितनी जल्दी हो उतना अच्छा,' हुसैन ने हंसते हुए कहा; 'मुझे किसी नौसिखिए का पहला प्रयास देखना अच्छा लगता है: जब उसके हाथ में कपड़ा थमा दिया जाता है और उसे बताया जाता है तो वह हमेशा इतना भोला-भाला दिखता है—'
'चुप रहो!' बूढ़े आदमी ने चिल्लाकर कहा: 'मान लो अगर वह अब तुम्हारी बात सुन ले (और तुम पूरी बात सुनाते रहो), तो हो सकता है कि वह इस विषय पर अपना नजरिया बदल ले और चला जाए, जैसा कि मैंने पहले कहा था।'
'नहीं; इसकी कोई आशंका नहीं है,' इस्माइल ने कहा: 'लेकिन क्या तुम अपनी पदयात्रा से थक नहीं गए हो? याद रखो, हमें कल बहुत दूर जाना है, और आलिया की कसम! यह किसी अच्छे काम के लिए भी है।'
'अय!' सब उठते हुए बोले; 'चलो सो जाते हैं; यहाँ आराम करने के लिए बहुत गर्मी है; खुली हवा में हमें ठंडक मिलेगी,' और वे कमरे से बाहर चले गए।
साहब, आप यकीन मानिए कि मेरी जिज्ञासा चरम पर थी: इस्माइल कौन था? बाकी लोग कौन थे? मुझे क्या जानना था, या क्या सिखाया जाना था? मेरा दिमाग उथल-पुथल में था। उस रात मुझे नींद नहीं आई; मेरी आँखें बंद ही नहीं हुईं; ऐसा लग रहा था जैसे मुझे बुखार हो, मेरी जिज्ञासा इतनी तीव्र थी, और मैं कहूँ, सब कुछ जानने की और इस्माइल के साथ उसके हर काम में भागीदार बनने की मेरी इच्छा इतनी प्रबल थी। अब तक मुझे एक बच्चे की तरह देखा और माना जाता था; अब यह सब बदलना था। मुझे, एक साँप की तरह, अपनी पुरानी खाल उतारनी थी और एक नए और उज्ज्वल रूप में प्रकट होना था। मेरे माता-पिता कौन हो सकते हैं? बातचीत से मुझे इतना तो पता चल गया था कि इस्माइल मेरे पिता नहीं थे, और मैंने अपने पिछले जीवन के उन हिस्सों को याद करने की पूरी कोशिश की जिनसे इस विषय पर कुछ प्रकाश पड़ सके; लेकिन मेरे भीतर सब कुछ अंधकारमय था। मुझे बेचारी मरियम के अलावा कुछ याद नहीं आ रहा था, जिसे मैं माँ कहा करती थी; इसके अलावा, लाख कोशिश करने के बावजूद, मुझे कुछ याद नहीं आ रहा था। जैसा कि मैंने आपको बताया है, बाद में, और बारह वर्षों के लंबे कारावास के दौरान ही मेरी स्मृति ने मेरी सहायता की।
मस्जिद के बूढ़े मूला अब तक मेरी नज़रों में सबसे विद्वान व्यक्ति प्रतीत होते थे; उन्होंने मेरे मन में कुरान की आयतें भर दी थीं, जिनसे मैं बहुत प्रभावित हुआ था। जब वे मुझे जन्नत की शान-ग़ारी, हर सच्चे मुसलमान के हुक्म पर तत्पर रहने वाली हज़ारों हूरों के बारे में बताते, उनके सुंदर रूप, नीलम जैसी आँखें, मोती जैसे दाँत, माणिक जैसे होंठ और कस्तूरी की खुशबू जैसी साँस का वर्णन करते, रत्नों से सजे महल, अमरता और कभी न खत्म होने वाली जवानी के झरने के बारे में बताते, तो मुझे यकीन हो जाता कि ये सब मेरा नसीब है। उन्होंने मेरी कल्पना को जगा दिया था; और जब मैं ये बातें इस्माइल को सुनाया करता, तो वह भी मेरी तरह ही प्रसन्न होते और अफ़सोस जताते कि उन्होंने कभी इस पवित्र किताब का अध्ययन नहीं किया, ताकि वे इसके सुंदर वर्णनों का आनंद ले सकें; फिर भी हुसैन ने मूला को मूर्ख कहा था, और मैंने उनसे जाना कि उनका पेशा ऊँचा

है, उनके पुरस्कार मुसलमानों के पुरस्कारों से भी कहीं अधिक शानदार हैं! आखिर वे क्या हो सकते हैं? मुझे यह जानने की तीव्र इच्छा थी; और मैंने निश्चय किया कि यदि इस्माइल मुझे यह बात नहीं बताएगा, तो मैं स्वयं ही उसे इस विषय पर ले आऊंगा।

मैंने कहा, मुझे लगता है, कि उस रात मेरी आँखें कभी बंद नहीं हुईं; जब मैं सुबह उठा, तो मैंने पाया कि इस्माइल और बाकी लोग जा चुके थे। वह कुछ दिनों तक वापस नहीं लौटा। यह कोई असामान्य बात नहीं थी, बेशक; लेकिन उसकी हरकतें मुझे काफी समय से रहस्यमय लग रही थीं, और मैं उसकी बार-बार और लंबी अनुपस्थिति को उसके असली पेशे से जोड़ने से खुद को रोक नहीं पा रहा था, चाहे वह कुछ भी हो। वह केवल कपड़ा व्यापारी नहीं हो सकता था: उस मेहनत भरे धंधे में ऐसा कुछ भी नहीं था जो उसे या मुझे उन शानदार उम्मीदों की ओर आकर्षित करता, जो हुसैन और बाकी लोगों ने जाहिर तौर पर पाल रखी थीं, और जिनसे वह निश्चित रूप से परिचित था। यह इससे परे कुछ होना चाहिए, जिसे मैं समझ नहीं पा रहा था; और यह देखने के लिए कि क्या मुझे इसका कोई सुराग मिल सकता है, मैं बूढ़े मूला के पास गया।

अज़ीज़ूला, यही उनका नाम था, ने हमेशा की तरह बड़े प्यार से मेरा स्वागत किया, लेकिन उन्होंने कहा कि मैं ज़रूर बीमार हूँ, क्योंकि मेरे चेहरे पर चिंता झलक रही थी और ऐसा लग रहा था जैसे मुझे बुखार हो। मैंने कहा कि मुझे ज़ुकाम हुआ था, लेकिन अब मैं ठीक हूँ और जल्द ही ठीक हो जाएगा। मैंने मुसलमान की रोज़ाना की नमाज़ों के तौर-तरीके, मुद्राएँ और शब्द सीखे; और जब ये खत्म हो गए, तो मैंने उनसे कुरान खोलने और मेरे पसंदीदा अंशों का फिर से अर्थ समझाने का अनुरोध किया। उस बूढ़े ने चश्मा लगाया और आगे-पीछे हिलते हुए मुझे अरबी में कुरान के अंश एक-एक करके पढ़कर सुनाए और साथ-साथ उनका अर्थ भी समझाते गए। ये वही बातें थीं जो मैंने पहले भी कई बार सुनी थीं; और जब उन्होंने पढ़ना समाप्त कर दिया, तो मैंने उनसे पूछा कि क्या कुरान के कुछ और अंश भी हैं जो उन्होंने मुझसे छिपाए हैं।

'नहीं, मेरे पुत्र,' उन्होंने कहा; 'मैंने तुमसे कुछ भी नहीं छिपाया है। इस पवित्र ग्रंथ के बारे में मेरा ज्ञान वास्तव में बहुत सीमित है; लेकिन काश! तुम मेरे पूज्य गुरु, जिनकी आत्मा को शांति मिले!, द्वारा इस पर लिखी गई टीकाएँ देख और सुन पाते! उनमें उनका ज्ञान इतना गहरा था कि कुछ अध्यायों के प्रत्येक वाक्य, जिनमें वास्तविक अर्थ को अज्ञानी लोगों से जानबूझकर छिपाया गया है, एक अलग ग्रंथ बन गए थे; बल्कि, कुछ अंशों में प्रत्येक शब्द, और वास्तव में प्रत्येक अक्षर पर टिप्पणी की गई थी। लेकिन वे अब इस दुनिया में नहीं हैं, और अब उस स्वर्ग के आनंद का अनुभव कर रहे हैं जिसका मैंने तुम्हें खुलासा किया है। मैं बस इतना ही कर सकता हूँ कि तुम्हें पढ़कर सुनाऊँ, और मैं इसे बार-बार तब तक सुनाता रहूँगा, जब तक कि तुम उन भागों को कंठस्थ न कर लो जो तुम्हें सबसे अधिक रुचिकर लगते हैं, और जो इस ग्रंथ का सार हैं।'

'लेकिन,' मैंने कहा, 'क्या आपने अपने इतने लंबे अनुभव में, जो कुछ आपने मुझे बताया है, उससे परे कुछ नहीं सुना? आप निश्चित रूप से मुझसे कुछ छिपा रहे हैं, जिसे आप मेरी कम उम्र के कारण मुझे बताने से डरते हैं।'

'नहीं, बिलकुल नहीं,' बूढ़े व्यक्ति ने कहा; 'यह सच है कि हमारे धर्म के कुछ अनुयायी, सोफी और अन्य, जिनके मत शापित हैं, समय-समय पर ऐसे विधर्मी सिद्धांतों का प्रचार करते रहे हैं जो काफी हद तक विश्वसनीय लगते हैं और भोले-भाले लोगों को अपने जाल में फंसा लेते हैं; लेकिन वे अंततः विनाश की ओर ले जाते हैं, और मुझे लगता है कि अब आप अपने विश्वास में इतने दृढ़ हैं कि आप, अपनी कम उम्र में, उनके बहकावे में नहीं आएंगे।'

मैंने कहा, 'आपकी कृपा से ही मैं ऐसा कर पा रहा हूँ, और मैंने आपसे ये प्रश्न केवल यह जानने के लिए पूछे हैं कि क्या मुझे अभी और भी कुछ सीखना है; क्योंकि मुझे लगा कि या तो आप मुझे और कुछ बता नहीं सकते, या बताना नहीं चाहते। लेकिन पिताजी, मुझे बताइए कि आपके ज्ञानवर्धक निर्देशों को सर्वोत्तम रूप से लागू करने के लिए मुझे कौन सा पेशा अपनाना चाहिए?'

उन्होंने कहा, 'मूला बनो; तुम्हें बहुत कठिन अध्ययन करना पड़ेगा, लेकिन समय के साथ यह बाधा दूर हो जाएगी; और यकीन मानो, ईश्वर को अपने सेवकों के पद से बढ़कर कोई और पद या पेशा इतना प्रिय नहीं है। मैं तुम्हें अरबी की बुनियादी शिक्षा दूंगा, और जब तुम्हारे पिता देखेंगे कि तुम्हारा मन इस ओर लगा हुआ है, तो वे तुम्हारा विरोध नहीं करेंगे; बल्कि वे तुम्हें दिल्ली भेज देंगे ताकि तुम मेरी शुरू की हुई शिक्षा पूरी कर सको।'

'ठीक है, मैं इस बारे में सोचूंगा,' मैंने कहा। लेकिन मूला बनने का मेरा कोई इरादा नहीं था। मैं इस बात को छिपा नहीं सकता था कि अज़ीलूला बेहद गरीब था और बड़ी मुश्किल से जमा किए गए चंदे पर निर्भर था। इसके अलावा, इस्माइल न तो मूला था, न हुसैन, न ही उनके समूह का कोई सदस्य; और मुझे चाहे जो भी हो जाए, उनमें से एक बनना ही पड़ेगा, तभी मेरा मन शांत हो सकता था। मैं उसके पास दोबारा नहीं गया। मुझे उससे बस थोड़ी-बहुत जानकारी मिली थी, और अगर एक बार मैंने उसे अपने भविष्य के बारे में बता दिया, तो मुझे केवल अपने फायदे के लिए दिए जाने वाले उसके विचारों के समर्थन में लगातार तर्क सुनने पड़ेंगे; और चूंकि मुझे वे तर्क पसंद नहीं थे, इसलिए मैंने उससे दूर रहना ही बेहतर समझा।

काश मैं मूला बन गया होता! मेरी वर्तमान स्थिति से तो कुछ भी बेहतर होता, जो अब हमेशा के लिए ऐसी ही रहेगी। लेकिन यही मेरा भाग्य है, और मुझे ईश्वर के विधान पर शिकायत नहीं करनी चाहिए। अगर ऐसा न लिखा होता, तो क्या मेरे पिता की हत्या होती? अगर ऐसा न लिखा होता, तो क्या मैं कभी ठग बनता? बिलकुल नहीं! भाग्य का विरोध कौन कर सकता है? उसके निर्णयों को कौन टाल सकता है? फिर भी, साहब, क्या आप मुझे रिहा नहीं करेंगे और मेरा भरण-पोषण नहीं करेंगे, अगर कई वर्षों बाद आप मुझे वफादार पाएं?

मैंने कहा, "कभी नहीं! तुम बदमाश इतने खतरनाक हो कि तुम्हें दोबारा दुनिया में खुला नहीं छोड़ा जा सकता। तुम्हारी उंगलियां मिलते ही गला घोंटने के लिए खुजली करेंगी, और जल्द ही हमें अमीर अली जमादार के बारे में पता चलेगा, जिसके साथ चालीस-पचास लोग होंगे, जिन्हें पकड़ना हमारे लिए बहुत मुश्किल होगा। क्या ऐसा नहीं होगा?"

अमीर अली हंसते हुए बोला, "मुझे लगता है आप सही कह रहे हैं। कभी-कभी मुझे पछतावा होता है, लेकिन मौके इतने लुभावने होते हैं कि मैं उन्हें जाने नहीं देता। और आप जानते हैं कि मैंने 'गोर' (गरीबों का मांस) खा

लिया है, और मैं बदल नहीं सकता। मैं जैसा हूँ वैसा ही बेहतर हूँ, क्योंकि अगर आपने मुझे दोबारा पकड़ा तो आप मुझे फांसी पर लटका देंगे।"
मुझे इसमें ज़रा भी संदेह नहीं है कि हमें ऐसा करना चाहिए, अमीर अली: लेकिन अपनी बात जारी रखिए; अगर आप इस तरह भटकते रहे तो आप अपने विचारों की कड़ी भूल जाएंगे। उन्होंने अपनी बात फिर से शुरू की।
लगभग एक महीना बीत गया, और मेरे लिए इस थका देने वाले समय के बाद, इस्माइल हुसैन के साथ लौटा। मेरे पिता, जिन्हें मैं इसी नाम से पुकारूँगा, ने मेरे रूप-रंग में बदलाव देखा, जिसका कारण मैंने मूला को बताया था, और वे संतुष्ट प्रतीत हुए। लेकिन क्या मैं सच में संतुष्ट था? बिलकुल नहीं! मैं उन सभी बातों को जानने की तीव्र जिज्ञासा से व्याकुल था जो मुझसे छिपी हुई थीं। मुझे रातों को नींद नहीं आती थी, मैं उदास रहता था और ऐसे विचारों से घिरा रहता था जिनसे मैं किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाता था। एक समय मैंने अपने पिता को छोड़कर अपनी किस्मत आज़माने का निश्चय किया था; और सचमुच अपने कुछ कपड़े और थोड़े से पैसे पैक करके रात में शहर छोड़ने का संकल्प लिया था, इस बात की परवाह किए बिना कि मेरा भाग्य मुझे कहाँ ले जाएगा; लेकिन जब समय आया, तो मेरी निराशा ने मुझे इतना घेर लिया कि मैंने वह विचार छोड़ दिया और वहीं रुक गया। मैंने समय पर भरोसा किया कि वह मेरे ऊपर छाए रहस्य को सुलझा देगा, लेकिन साथ ही मैंने यह भी निश्चय किया कि मैं अपने पिता और उनके साथियों पर पहले से कहीं अधिक सतर्क रहूँगा। और मैंने उनसे अपने दिल के सबसे करीब के विषय पर बात करने के कई संकल्प लिए; फिर भी, जब भी अवसर मिले, मैं ऐसा करने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। ऐसा नहीं था कि मैं डरपोक था—स्वाभाविक रूप से मैं साहसी था—बल्कि एक रहस्यमय चेतना थी कि मुझे कुछ ऐसा सुनने को मिलेगा (जब भी मैं सुनूंगा) जो अजीब, बल्कि डरावना होगा, जिसने मुझे रोक रखा था; लेकिन यह भावना मुझ पर इतना हावी क्यों हो गई थी, यह मैं अब नहीं बता सकता, फिर भी ऐसा ही था।
एक शाम, इस्माइल ने मुझे अपने शयनकक्ष में बुलवाया। मुझे वहाँ बहुत कम ही आने दिया जाता था, और मेरा दिल डर से धड़क रहा था, मानो मुझे आभास हो रहा हो कि मेरे भाग्य का अंत निकट है। इस्माइल भी मुझे विचलित लग रहा था; उसने मुझे बैठने को कहा, और हम कुछ देर तक चुपचाप एक-दूसरे को निहारते रहे; दीवार के एक कोने में केवल एक छोटी सी तेल की बत्ती जल रही थी, जिससे कमरा बहुत अंधकारमय लग रहा था, और इस छोटी सी बात ने मेरे भीतर की उदासी को और बढ़ा दिया। मुझे लगता है कि मेरी साँसें रुक गईं; मैं इसे और सहन नहीं कर सका। मैं उठा, उसके चरणों में गिर पड़ा, और फूट-फूटकर रोने लगा। 'अमीर, मेरे बच्चे, मेरे बेटे,' उसने प्यार से और स्नेहपूर्वक कहा, 'क्या बात है? तुम्हें क्या परेशान कर रहा है? क्या किसी सुंदर स्त्री ने तुम पर जादू कर दिया है? क्या मेरे जाने के बाद तुम किसी मुसीबत में पड़ गए? बताओ, मेरे बेटे; तुम जानते हो कि दुनिया में तुम्हारे पिता से ज्यादा तुम्हें कोई प्यार नहीं करता, और हाय! अब तुम्हारी माँ भी नहीं है।'

जब मेरी भावनाओं ने मुझे बोलने की शक्ति दी, तो डरते-डरते मैंने उन्हें वही दोहराया जो मैंने उनसे और बाकी लोगों से उस यादगार रात में सुना था जिसका वर्णन मैंने पहले किया है। जब मैंने बोलना समाप्त किया, तो मैं उठ खड़ा हुआ और धड़कते दिल से बोला, 'पिताजी, मुझसे गलती हो गई; मेरी जिज्ञासा, एक लड़के की जिज्ञासा, मुझ पर हावी हो गई, लेकिन तब से मेरी भावनाएँ बदल गई हैं, क्यों, मुझे नहीं पता; मैं अब लड़का नहीं रहा, क्योंकि मुझे लगता है कि मैं कुछ भी कर सकता हूँ, और मैं आपसे केवल यही विनती करता हूँ कि आप मेरी परीक्षा लें;'—और मैंने अपने हाथ सीने पर जोड़ लिए और चुपचाप खड़ा रहा। वे स्पष्ट रूप से बहुत भावुक हो गए थे; शाम ढल रही थी, फिर भी मैं उनके चेहरे पर भावों का उतार-चढ़ाव देख सकता था, और ऐसे भाव जो मेरे लिए बिल्कुल नए थे।

अंततः उन्होंने उस चुप्पी को तोड़ा, जो मेरे लिए असहनीय हो गई थी: 'मेरे बेटे,' उन्होंने कहा, 'तुम जितना मैंने सोचा था उससे कहीं अधिक जानते हो। अब मेरे पास तुम्हें अपने जैसा बनाने के अलावा कोई विकल्प नहीं है, और तुम्हारे चरित्र के बारे में मेरा ज्ञान मुझे तुमसे बहुत कुछ उम्मीद करने के लिए प्रेरित करता है।'

'मुझ पर भरोसा करो, सिर्फ मुझ पर भरोसा करो!' मैंने जोश से कहा; 'तुम्हें कभी पछतावा नहीं होगा!'

'मैं तुम पर विश्वास करता हूँ,' उसने कहा; 'और अब मैं जो कहने जा रहा हूँ उसे ध्यान से सुनो, क्योंकि तुम्हारा भविष्य इसी पर निर्भर करता है। एक बार जब तुम सब कुछ जान लेते हो, तो फिर कोई झिझक नहीं, दुनिया से पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं। तुम्हें एक ऐसी परीक्षा से गुजरना होगा जो तुम्हारे साहस की चरम सीमा तक परखेगी: क्या तुम इसे पार कर पाओगे? क्या तुममें इसे सहने का साहस है?'

'मैं हिम्मत करता हूँ,' मैंने चिल्लाकर कहा, क्योंकि मैं लापरवाह था।

वह कुछ क्षणों के लिए सोच में डूबा हुआ प्रतीत हुआ, और फिर बोला, 'आज रात तो नहीं, लेकिन मैं आपसे शपथ लेता हूँ कि अधिकतम तीन दिनों में मैं आपसे कुछ भी नहीं छिपाऊँगा।'

मैं निराश था, फिर भी आशा से भरा हुआ था, और उन्होंने मुझे आराम करने के लिए विदा कर दिया। इस्माइल ने अपना वादा निभाया; लेकिन साहब, उस समय मेरे मन पर जो असर हुआ, उसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता: क्या मैं उसकी कहानी सुनाने की कोशिश करूं? मैं इसलिए हिचकिचा रहा हूं क्योंकि उसकी कहानी की शुरुआत उसने मुझे अपने जीवन का संक्षिप्त विवरण देकर की, जिससे मुझे अपनी कहानी से भटकने का डर है—फिर भी आपको उसमें बहुत रुचि होगी।

मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है, अमीर अली, मैंने कहा; और जब आप अपने खुद के कारनामे पूरे कर लेंगे तो आप इस पर वापस लौट सकते हैं।

आप सही कह रहे हैं, साहब, मैं अभी इसे छोड़ रहा हूँ, सिवाय उनके अंतिम शब्दों के; जिनमें अन्याय सहने और बदला लेने की उनकी कहानी ने मुझे दुनिया से नफरत करने पर मजबूर कर दिया और ठग्गी को ही एकमात्र पेशा और भाईचारा मान लिया जिसमें मुझे ईमानदारी की उम्मीद थी। वे शब्द ये थे, और वे मेरी स्मृति में अमिट रूप से अंकित हैं।

अब तक, मेरे पुत्र, मैंने तुम्हारे मार्गदर्शन के लिए अपने जीवन की कुछ घटनाओं का वर्णन किया है, और मुझे इसमें कुछ और जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। अब यह उल्लेख करने की शायद ही आवश्यकता है कि मैं एक ठग हूँ, उस गौरवशाली पेशे का सदस्य हूँ जो प्राचीन काल से आलिया द्वारा अपने अचूक उद्देश्यों के लिए चुने गए कुछ चुनिंदा लोगों को सौंपा गया है। इसमें हिंदू और मुसलमान दोनों भाईचारे के रूप में एकजुट होते हैं: उनमें कभी भी कुकर्म नहीं होता: यह इस बात का पुख्ता प्रमाण है कि हमारा पेशा ईश्वरीय अधिकार द्वारा धन्य और स्वीकृत है। क्योंकि, मेरे पुत्र, इस पृथ्वी पर तुम्हें सच्चा विश्वास कहाँ मिलेगा, सिवाय हमारे बीच? संसार के साथ अपने सभी व्यवहारों में मुझे कहीं भी सच्चा विश्वास नहीं दिखता; इसमें प्रत्येक व्यक्ति निरंतर अपने पड़ोसी को छल और धोखा देने का प्रयास करता है: और मैं इसकी निर्ममता से दूर होकर अपने सत्य की ओर मुड़ता हूँ, जिसका चिंतन करना मेरी आत्मा को शांति प्रदान करता है। हममें से सबसे निचले से लेकर सबसे ऊंचे तक, सभी एक ही उत्साह से प्रेरित हैं; हम जहाँ भी जाएँगे, हमें वही भाईचारा मिलेगा; और यद्यपि उनके रीति-रिवाज और तौर-तरीके कई मायनों में भिन्न हो सकते हैं, फिर भी उनके हृदय एक हैं, और सभी ठग्गी के महान उद्देश्य और लक्ष्य को एक ही भावना से प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। हम जहाँ भी जाते हैं, हमें अपने घर खुले मिलते हैं, और उन जनजातियों में भी हमारा गर्मजोशी से स्वागत होता है जिनकी भाषा हम हिंदुस्तानी नहीं जानते; फिर भी उनके पहचान के संकेत हमारे जैसे ही होते हैं, और आपको बस उनके बीच रहकर मेरी बातों की सच्चाई का अनुभव करना होगा, जैसा कि मैंने किया है। क्या यह ईश्वर की सहायता के बिना संभव है? मानवीय हित इतने परस्पर विरोधी हैं, और हमारे देश की सामाजिक स्थिति इतनी पतित है, कि मैं मानता हूँ कि ऐसी भावना ईश्वरीय इच्छा के बिना संभव नहीं है। शुरुआत में आपको इस पेशे के प्रति कुछ अरुचि महसूस होगी, लेकिन यह जल्द ही दूर हो जाएगी, क्योंकि मिलने वाले पुरस्कार इतने शानदार हैं कि हम उन्हें प्राप्त करने के लिए अपनाए गए साधनों पर एक पल के लिए भी विचार नहीं कर सकते। इसके अलावा, यह भाग्य है, - धन्य आलिया का विधान! और कौन इसका विरोध कर सकता है? यदि वह हमें इस कार्य में नेतृत्व प्रदान करता है, तो वह हमें दृढ़ और साहसी हृदय, ऐसा संकल्प देता है जिसे कोई भी विरोध पराजित नहीं कर सकता, और ऐसी लगन देता है जो आज तक अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में कभी असफल नहीं हुई। मेरे पुत्र, मैं तुम्हें ऐसा ही बनाना चाहता हूँ; तुम मेरे संरक्षण में उच्च पद पर तुरंत प्रवेश करोगे, ऐसा पद जिसे प्राप्त करने के लिए अन्य लोग वर्षों का परिश्रम करते हैं; तुम्हें कभी अभाव का सामना नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि मेरी सारी संपत्ति तुम्हारे साथ साझा की जाएगी। दृढ़ रहो, साहसी रहो, चतुर रहो, वफादार रहो; इससे अधिक की आवश्यकता नहीं है। ये ठगों के सर्वोच्च गुण हैं, और वे गुण हैं जो हमारे समुदाय में सम्मान और आदर सुनिश्चित करते हैं, और निश्चित सफलता और उच्च पद की ओर ले जाते हैं। जहाँ तक मेरी बात है, मैं तो बस तुम्हें अपने दल का मुखिया बनते हुए देखना चाहता हूँ, सेवानिवृत्त होते हुए, और शांति से अपने शेष वर्ष बिताते हुए, इस्माइल के साहसी और उद्यमशील पुत्र अमीर अली की प्रशंसा सुनकर संतुष्ट होते हुए देखना चाहता हूँ! तब तक मैं तुम्हारा संरक्षक और शिक्षक रहूँगा।

अध्याय III

फाल्सटाफ। वह कोई अकड़ू नहीं है, मेज़बान; वह एक सीधा-सादा धोखेबाज है;
आप उसे एक पिल्ले ग्रेहाउंड की तरह कोमलता से सहला सकते हैं।
अगर किसी बरबरी मुर्गी के पंख
किसी भी प्रकार के प्रतिरोध की स्थिति में पीछे हट जाना।
हेनरी चतुर्थ, द्वितीय अंक, चतुर्थ दृश्य: 'मेरे पिता,' मैंने कहा, 'आपको और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है, मैं आपका हूँ, आप मेरे साथ जो चाहें करें; आपसे यह कहानी सुनने से बहुत पहले, मैंने हुसैन, आप और कुछ अन्य लोगों के बीच मेरे बारे में हुई बातचीत सुन ली थी, जिससे मुझे बहुत दुख हुआ; क्योंकि मुझे डर था कि आप मुझ पर भरोसा नहीं करेंगे, और यह बात मेरे मन पर भारी पड़ी। वास्तव में यही उस दुख और उदासी का कारण था जिसका आपने उल्लेख किया है, और मैं आपके सामने अपने दिल की बात कहने और आपसे मुझे अपने बीच स्वीकार करने की विनती करने का अवसर चाहता था। मैं अब बच्चा नहीं हूँ, और आपकी कहानी ने मेरे भीतर नई भावनाएँ जगा दी हैं जिन्हें अभी मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता; लेकिन मैं आपकी तरह प्रसिद्धि पाना चाहता हूँ, और उस पेशे का सदस्य बनना चाहता हूँ जिसमें आपने सच्चे विश्वास और भाईचारे को एकमात्र अस्तित्व बताया है। अभी तक मैंने इस झूठी दुनिया को नहीं देखा है, और निश्चित रूप से आपने जो कहा है उससे मेरा मन इससे दूर होता जा रहा है।' मैंने तुम्हारे अलावा दूसरों से भी यही सुना है कि तुम निर्दयी और भ्रष्ट हो, और मुझे ऐसा लगता है मानो आलिया ने मुझे यश प्राप्त करने के लिए चुना है; यश केवल तुम्हारे पदचिन्हों पर चलकर ही प्राप्त किया जा सकता है, और देखो, मैं तुम्हारे पीछे चलने के लिए तैयार हूँ, जहाँ भी तुम मुझे ले जाना चाहो। तुम्हारे सिवा मेरा कोई मित्र नहीं है, गाँव के युवाओं में भी मेरी कभी कोई जान-पहचान नहीं रही; क्योंकि जब मैंने उन्हें अपने पिता के मार्ग पर चलते देखा, और जो मुझे नीच और दयनीय लगे, तो मेरा मन उनके विरुद्ध उठ खड़ा हुआ, और मैंने उन्हें त्याग दिया। मेरा एकमात्र मित्र बूढ़ा मूला है, जो मुझे अपने जैसा बनने और कुरान पढ़ने में दिन व्यतीत करने के लिए प्रेरित करना चाहता है; लेकिन उसके पेशे में कोई उत्साह नहीं है, हालाँकि यह एक पवित्र पेशा है, और इसलिए यह मुझे न तो प्रेरित करता है, न ही सक्रिय कार्य की उस प्यास को बुझाने की कोई आशा देता है जो मुझे तृप्त कर रही है। मैं एक सैनिक बनना चाहता हूँ, और सिंधीया की सेवा में किसी एक दल में शामिल होकर अविश्वासी फिरंगियों के विरुद्ध लड़ना चाहता हूँ; लेकिन यह भी बीत चुका है, और अब मेरी एकमात्र इच्छा है कि मैं एक ठग बनूँ और दुनिया भर में आपका अनुसरण करूँ, मेरे पिता। मैं आपको निराश नहीं करूँगा; मेरी प्रसिद्धि की प्यास इतनी तीव्र है कि मृत्यु के सिवा कोई भी चीज इसे बुझा नहीं सकती।
'ईश्वर करे कि यह तुमसे दूर रहे,' इस्माइल ने भावुक होकर कहा। 'तुम ही मेरे जीवन का एकमात्र सहारा हो, जिसमें अब तुम्हारे विचारों और कर्मों के विकास से मिलने वाले सुख के सिवा कोई सुख नहीं है। मुझे पता है, मेरे पुत्र, तुम मुझे निराश नहीं करोगे। तुम मेरी समृद्धि देख रहे हो, पर मेरी शक्ति का तुम्हें कोई अंदाज़ा नहीं

है; हिंदुस्तान के इस हिस्से में हर ठग मेरी सत्ता को मानता है, और एक सप्ताह की सूचना पर हज़ारों लोगों का दल मेरे किसी भी आदेश का पालन करने के लिए तैयार रहेगा। कुछ ही दिनों में, दशहरा के त्योहार पर, यह तुम्हें सिद्ध हो जाएगा; हम सब इकट्ठा होंगे, कम से कम उतने लोग जितने साल के शुरुआती कार्यों के लिए ज़रूरी होंगे, जो असाधारण पैमाने पर किए जाएंगे, क्योंकि हमने होल्कर और सिंधी के फिरंगी लोगों के साथ युद्धों से उत्पन्न मौजूदा उथल-पुथल का लाभ उठाने का निश्चय किया है। हम बहुत काम और एक रोमांचक मौसम की उम्मीद कर रहे हैं, और लंबे समय तक निष्क्रियता के बाद लोग काम के लिए बेचैन हैं।' मैं तुम्हें श्योपूर ले चलूँगा, जिसे हमने मिलने की जगह के रूप में चुना है, क्योंकि वहाँ का ज़मींदार हमारा मित्र है और कई तरह से हमारी मदद करता है। मैं तुम्हें अपने साथियों से मिलवाऊँगा और तुम्हें पारंपरिक तरीके से ठग के रूप में दीक्षा दी जाएगी।'

इस प्रकार, साहब, हमारी बातचीत समाप्त हुई: रात बीत चुकी थी, और मैं सोने चला गया। मैं कई दिनों से जैसा था, उससे बिल्कुल अलग होकर। मैं उठा और पाया कि मेरी सारी ऊर्जा और जोश मुझमें लौट आया था; जहाँ कुछ दिन पहले मैं प्रेम में डूबी लड़की की तरह घूम रहा था, वहीं अब मैं सिर ऊँचा करके, सीना तानकर, एक मर्द की तरह महसूस कर रहा था। यह सच था कि मैं अभी भी लड़का ही था, केवल अठारह वर्ष का, लेकिन मैंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया; कुछ साल, मैंने सोचा, और इंशाल्लाह! मैं कुछ बनूँगा। साहब, आपको यह बताने के लिए कि मुझमें कितना उत्साह था, मैं आपको निम्नलिखित घटना सुनाता हूँ। मैं पहले भी कार्रवाई में शामिल हो सकता था, लेकिन मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं वह साहसिक कार्य करूँगा जो मैंने तब किया, वह भी उन लोगों की उपस्थिति में जो पेशे से सैनिक थे, लेकिन खतरे के समय पीछे हट गए।

मेरे पिता से हुई बातचीत के एक-दो दिन बाद, जैसा कि मैंने बताया है, एक बाघिन अपने शावक के साथ हमारे गाँव के पास के एक छोटे से जंगल में आ गई; पहले दिन जब उसे देखा गया तो उसने एक चरवाहे को मार डाला, दूसरे दिन एक और आदमी को जो उसके शव की तलाश में गया था, और तीसरे दिन उसने गाँव के मुखिया, जो सर्वमान्य व्यक्ति थे, को बुरी तरह घायल कर दिया और रात में उनकी मृत्यु हो गई। विचार-विमर्श के लिए निर्धारित स्थान पर ग्रामीणों की एक आम सभा हुई और यह निर्णय लिया गया कि सभी सक्रिय पुरुष एक साथ मिलकर बाघिन पर उसके ठिकाने पर हमला करें। अगली सुबह हम सब भोर से पहले ही इकट्ठा हो गए। एक विशालकाय, बड़ी मूंछों और दाढ़ी वाला पठान हमारे नेता बनने के लिए आगे आया; वह अपने हथियारों के कारण लगभग हिल भी नहीं पा रहा था। उसकी कमर में दो तलवारें थीं, जिनमें विभिन्न आकारों और आकृतियों के कई खंजर भी थे; एक लंबी, सीधी दोधारी तलवार उसके बाएं कंधे पर लटकी हुई थी, जिसका सिरा लगभग जमीन को छू रहा था; उसकी पीठ पर एक ढाल भी थी, और उसके दाहिने हाथ में जलती हुई माचिस वाली बंदूक थी। जैसे ही हम उसके पास पहुँचे, उसने मेरे पिता से बात की।

'सलाम अलैकुम! इस्माइल साहब,' उन्होंने कहा, 'क्या आप जैसे शांत स्वभाव के व्यक्ति हमारे साथ आ रहे हैं, और साहब जादा भी?'

'जी हां, खान,' मेरे पिता ने उत्तर दिया, 'ऐसी जरूरत के समय में सभी भले लोगों का यह कर्तव्य है कि वे अपनी पूरी कोशिश करें; कौन जानता है, अगर उस जानवर को मारा न जाए, तो कहीं कोई और उसका भोजन न बन जाए?'

'इंशाल्लाह!' खान ने अपनी मूंछें मरोड़ते हुए और खुद को देखते हुए कहा, 'हमने तय कर लिया है कि यह दरिंदा आज मरेगा। मेरी बेहतरीन तोप से कई बाघ मारे जा चुके हैं, और यह दरिंदा क्या है कि बच जाए? इसकी बहन अपवित्र हो जाए; बस यही डर है कि यह हमें यह साबित करने का मौका नहीं देगा कि हम इंसान हैं, कुत्ते नहीं।'

मेरे पिता ने कहा, 'जहाँ तक उस बात का सवाल है, हमें जोखिम उठाना ही होगा; लेकिन खान, तुम अपने साथ इतने सारे हथियार लेकर कैसे चलोगे? अगर वह अचानक बाहर आ गई तो तुम भाग भी नहीं पाओगे।'

'भाग जाओ!' खान चिल्लाया; 'क्या हमारी दाढ़ियाँ किसी दरिंदे के हाथों अपवित्र होंगी? आज सुबह तुम क्या सोच रहे हो कि दिलदार खान ने अपने जीवन में कभी किसी बात से मुंह मोड़ा होगा? बस इसे बाहर आने दो, मैं कहता हूँ, और तुम देखोगे कि हथियारों का क्या उपयोग होगा! इसे अकेले ही खत्म करने का जिम्मा मुझ पर छोड़ दो: पहले मैं इसे अपनी बंदूक से मारूंगा; यह घायल हो जाएगा; फिर मैं इस तरह इस पर हमला करूंगा,' उसने लंबी तलवार निकालते और लहराते हुए कहा, साथ ही वह गोल-गोल घूमने लगा और हर संभव दिशा में कूदने लगा।

'लो!' उसने हांफते हुए कहा, 'लो! क्या इससे काम खत्म नहीं हो जाता? मैं तो इस तरह के मामलों में माहिर हूं, और दिलदार खान के लिए बाघ को मारना तो बच्चों का खेल है! मैं तो उसे पूंछ समेत खा सकता हूं।'

'लेकिन मेरे साथ आइए, और जब नाटक शुरू हो, तो दिलदार खान के रास्ते में कोई न आए,' उसने वहां मौजूद लोगों से कहा, 'क्योंकि, इंशाल्लाह! मैं आप जैसे अज्ञानी लोगों को यह दिखाने वाला हूं कि एक अकेला आदमी बाघ को कैसे मार सकता है।'

मेरे पिता ने मुझसे कहा, 'मैं जानता हूँ कि खान सबसे बड़ा कायर है; लेकिन चलो देखते हैं कि वह क्या करता है, क्योंकि मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं उसे शेरनी के सामने उछलते-कूदते देखने के लिए उत्सुक हूँ।'

'अलिया की कसम!' मैंने कहा, 'अगर वह ऐसी हरकतें करता है, तो वह दरिंदा निश्चित रूप से उसे खा जाएगा।'

मेरे पिता ने कहा, 'यह हमारा कोई सरोकार नहीं है; यह भाग्य का मामला है; लेकिन मैं इस बात पर पूरा भरोसा कर सकता हूँ कि वह कभी भी उसके एक तीर की दूरी के भीतर नहीं जाता।'

हम सब दिलदार खान के नेतृत्व में निकल पड़े। दिलदार खान अब भी अपनी लंबी तलवार लहराते हुए, बाएं हाथ में बंदूक पकड़े, बीच-बीच में अपनी मूंछों को सहलाते रहते थे, जो उनके होठों से ऊपर की ओर उठी हुई थीं और लगभग उनकी आंखों तक पहुंचती थीं। हम जल्द ही जंगल में पहुंच गए, और उसमें प्रवेश करते ही मुझे लगा कि खान में डर के लक्षण दिखाई दे रहे हैं।

उन्होंने कहा, 'आखिरकार यह जानवर एक पैंथर ही होगा, और दिलदार खान के लिए खुद को मुसीबत में डालना उचित नहीं है। देखो, लड़कों,' उन्होंने हममें से कुछ से कहा, 'मैं यहीं इंतजार करूंगा; अगर यह सचमुच बाघ निकला तो मुझे बता देना, मैं आकर उसे मार दूंगा।'
लेकिन इसके खिलाफ हम सबने विरोध किया और कहा कि उसके बिना सब कुछ गड़बड़ हो जाएगा; और कुछ आनाकानी के बाद वह फिर आगे बढ़ा।
मेरे पिता ने कहा, 'मैंने तुम्हें बताया था कि क्या होगा; लेकिन देखते हैं कि वह इस मामले का अंत कैसे करेगा।'
हम आगे बढ़ते रहे जब तक कि हमें एक झाड़ी के पास कुछ हड्डियाँ, फटे हुए कपड़े और मारे गए दुर्भाग्यशाली लोगों में से एक का सिर नहीं मिला, जिससे यह स्पष्ट रूप से साबित हो गया कि जानवर ज्यादा दूर नहीं था, और इन्हें देखकर खान ने भय के नए लक्षण दिखाए।
उन्होंने कहा, 'लोग कहते हैं कि यह एक पुर्रत बाग है, एक ऐसा राक्षस जिसमें उस पागल फकीर, शैतान के बेटे शाह याकूब की अपवित्र आत्मा प्रवेश कर चुकी है, और यह गोलियों से अप्रभावित है। हम शैतान से मुकाबला करके अपनी जान क्यों जोखिम में डालें?'
'नहीं, खान,' गांव के एक उद्दंड और दिलेर युवक ने कहा, 'आप मजाक कर रहे हैं, भला किसने सुना है कि कोई महिला पुर्रुत बाग हो? इसके अलावा, हम पचास शाह याकूबों की दाढ़ियाँ जला देंगे।'
'शांति बनाए रखो!' खान चिल्लाया, 'अनादर मत करो; क्या हम सब नहीं जानते कि पुर्रुत बाग बनाए जा सकते हैं? माशाल्लाह! क्या मैंने असीरगढ़ के पास एक ऐसा बाग नहीं देखा था, जिसे एक फकीर ने बनाया था और देश में फैला दिया था, क्योंकि उसे हर गाँव से एक कुंवारी लड़की नहीं दी जा रही थी?'
'यह कैसा था?' हममें से एक दर्जन लोगों ने एक साथ पूछा, और एक पल के लिए असली बाघिन को भुला दिया गया।
'वाह!' खान ने एक हाथ से अपनी मूंछें सहलाते हुए और दूसरे हाथ से अपनी कमरबंद दबाते हुए कहा, 'वाह! अरे, इसका सिर तो किसी भी दूसरे बाघ से दुगुना बड़ा था, और हर दांत एक हाथ लंबा था, और आंखें कोयले जैसी लाल थीं, जो रात में मशालों जैसी दिखती थीं; और इसकी कोई पूंछ नहीं थी, और...'
लेकिन तभी थोड़ी दूरी से एक जोरदार दहाड़ सुनाई दी, जिससे वह और हमारी हंसी दोनों रुक गईं; और एक पल बाद ही, बाघिन और उसका अधविकसित शावक अपनी पूंछ हवा में लहराते हुए हमारे पास से तेजी से गुजरे।
'खैर, खान,' उस लड़के ने कहा, 'यह किसी भी हालत में पुर्रुत बाग नहीं है; क्या तुमने उस बड़ी वाली की पूंछ नहीं देखी, उसने उसे तुम्हारे सामने कैसे हिलाया?'
उसने कहा, 'मैं यह मानता हूँ कि पूंछ हो या न हो, इसमें उस दुष्ट याकूब की शापित आत्मा समाई हुई है, उसकी कब्र को कोई न सताए! और मेरा इससे कोई लेना-देना नहीं है; शैतान को मारने की कोशिश करना व्यर्थ है; अगर वह चाहे, तो एक ही साँस में हम सबको नरक में भेज सकता है।'

'नमुर्द! नमुर्द! कायर! कायर!' हममें से कुछ लोग चिल्लाए; 'तुम गांव में तो बहादुर थे; अब कैसे हो?'
'मुझे नामुरद कौन कहता है?' खान दहाड़ा; 'मेरे पीछे आओ और देखो कि मैं नामुरद हूँ या नहीं,' और वह आगे बढ़ा, लेकिन उस दिशा में नहीं जिधर बाघिन गई थी।
'यह सही तरीका नहीं है,' कुछ लोगों ने चिल्लाकर कहा, और अंत में वह मुड़ गया।
मेरे पिता ने कहा, 'यह तो बच्चों का खेल है; चलो, अगर हमें कुछ करना है तो बेहतर होगा कि हम पूरी लगन से काम शुरू करें।'
और हम उसी दिशा में आगे बढ़े जिधर वह जानवर गया था।
यह एक खुले मैदान की ओर जाता था, जिसके एक तरफ एक बड़ी चट्टान थी, जिसके चारों ओर कुछ बहुत घनी झाड़ियाँ थीं।
'वह वहीं है, इस पर भरोसा रखो,' एक बूढ़े शिकारी ने कहा; 'मैंने अपने जीवन में इससे अधिक संभावित स्थान कभी नहीं देखा।'
हम सभी चट्टान और झाड़ियों से लगभग तीस कदम की दूरी पर थे, और दिलदार खान को उनके इतने करीब होना बिल्कुल भी पसंद नहीं था।
उसने धीमी आवाज़ में हम सभी से कहा, 'मैं निवेदन करता हूँ कि इन दरिंदों में से इतनों को मारने के बाद, मैं जानता हूँ कि इनसे कैसे निपटना है; और क्योंकि मैं दल में सबसे अधिक हथियारों से लैस हूँ, मैं उस झाड़ी के पास अपनी स्थिति ग्रहण करूँगा, जहाँ से होकर रास्ता जाता है; जब उसे भगा दिया जाएगा, तो वह वहाँ आ जाएगी, और फिर आप देखेंगे कि दिलदार खान उसका कैसा स्वागत करेगा। इंशाअल्लाह! मैं अपनी तलवार की नोक उसके सामने करूँगा, और वह उस पर दौड़ेगी, फिर मैं अपने तेघा के एक ही वार से उसे मार डालूँगा।'
हम सभी ने उस दिशा में देखा जिधर उसने इशारा किया था, और वाकई वहाँ एक झाड़ी थी, जो गाँव की ओर जाने वाले रास्ते पर लगभग दो सौ कदम की दूरी पर थी।
'वह तो बिल्कुल नहीं,' मेरे पिता ने कहा; 'अरे बेटा, तुम उस जानवर को वहां से कभी नहीं देख पाओगे।'
'मुझ पर भरोसा रखो,' खान ने कहा और चला गया।
मेरे पिता ने आगे कहा, 'मैंने तुम्हें बताया था कि क्या होगा; जैसे ही वह जानवर को देखेगा, वह जितनी तेज़ी से हो सके सड़क पर भाग जाएगा। लेकिन चलो,' उन्होंने आदमियों से कहा, 'चूंकि खान को लगता है कि वह वहाँ नीचे ज़्यादा काम आएगा, मैं तुम्हें आगे ले चलता हूँ, और हम देखेंगे कि क्या इस आदमखोर को बाहर निकाला जा सकता है।'
हमें तुरंत तीन समूहों में बाँट दिया गया। एक समूह झाड़ियों के दोनों ओर गया, और दूसरा समूह एक चक्कर लगाकर चट्टान के पीछे और संभव हो तो उस पर चढ़ गया, ताकि अगर वह दिखाई दे तो ऊपर से उसे गोली मार दी जाए; अगर न दिखाई दे तो कम से कम पत्थर फेंककर उसे भगा दिया जाए। व्यवस्थाएँ जल्दी ही पूरी हो गईं, और यद्यपि हम सभी झाड़ियों से कुछ ही गज की दूरी पर थे, बाघिन का कोई निशान नहीं था। उसने

हमारे पास आने या हमारी तैयारियों पर कोई नाराजगी नहीं दिखाई, क्योंकि वह पहले भी परेशान हो चुकी थी, और ज़ाहिर है कि उसे उसके शरणस्थल से आसानी से नहीं भगाया जा सकता था। मैं एक तरफ के समूह के साथ था, और मेरे पास तलवार और एक हल्की ढाल के अलावा कोई हथियार नहीं था; वास्तव में मैं एक दर्शक की तरह ही गया था। हमने कुछ मिनट इंतजार किया, और चारों ओर भेजे गए समूह में से एक व्यक्ति चट्टान की चोटी पर दिखाई दिया; उसके तुरंत बाद तीन और लोग आ गए।
उनमें से एक ने चिल्लाकर कहा, 'क्या तुम सब तैयार हो? मैं इस पत्थर को नीचे गिरा दूंगा।'
'बिस्मिल्लाह! इसे दूर करो!' मेरे पिता चिल्लाए।
उनमें से तीन ने अपनी पूरी ताकत लगाकर उसे धकेला, और अंत में वह चट्टान की सतह पर लुढ़क गया, और गर्जना करते हुए नीचे गिरकर हज़ार टुकड़ों में बिखर गया। कुछ पल के लिए तीव्र चिंता और सस्पेंस का माहौल छा गया, लेकिन कोई बाघिन पीछे नहीं आई।
मेरे पिता चिल्लाए, 'कोशिश करो कि क्या तुम उसे देख नहीं पा रहे हो; अगर तुम उसे देख पा रहे हो, तो गोली चला दो; हम सब तैयार हैं।'
सभी व्यक्ति चारों ओर नीचे देखने लगे, लेकिन कुछ नहीं बोले। अंत में उनमें से एक को एक विशेष स्थान की ओर इशारा करते हुए देखा गया, मानो वह दूसरों को कुछ दिखा रहा हो।
'अलिया की कसम!' मेरे पिता ने कहा, 'वह उसे देख रहा है; सावधान रहो; वह तुम्हारे सोचने से पहले ही दौड़कर आ जाएगी।'
हर आदमी ने अपनी माचिस फूंकी और मजबूती से पैर जमा लिए। अंत में चट्टान पर खड़े एक आदमी ने अपनी बंदूक उठाई और गोली चलाई; जवाब में एक भयानक गर्जना हुई जिससे आसमान गूंज उठा, और एक शावक बाहर भागा, जो जाहिर तौर पर बुरी तरह घायल था, क्योंकि कुछ ही गज आगे आने पर वह लेट गया और भयानक रूप से दहाड़ने लगा; वह लगभग अधेड़ था और एक डरावनी आवाज निकाल रहा था। हमारे दल के एक आदमी ने उस पर गोली चलाई, लेकिन गोली लगने के बाद भी वह हिला तक नहीं।
मेरे पिता ने कहा, 'अब हमें बहुत मुश्किल काम करना होगा; वह बेहद हिंसक और क्रोधित होगी; यहाँ रहना बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं है; लेकिन अपने निशाने पर ध्यान रखना, मेरे बच्चों, और वह हम तक कभी नहीं पहुँच पाएगी; मेरा निशाना कभी नहीं चूका, लेकिन गोली जानलेवा नहीं भी हो सकती है; इसलिए अपना ध्यान रखना।'
मेरे पिता ने चट्टान पर खड़े आदमियों को फिर से एक और टुकड़ा ऊपर खींचने के लिए कहा। किनारे पर एक बहुत बड़ा टुकड़ा था। कई बार धकेलने के बाद वह टूट गया, और पहले वाले की तरह ही, ज़ोरदार आवाज़ के साथ चूर-चूर हो गया। यह सफल रहा, बाघिन हमारी तरफ दौड़ी और एक पल के लिए रुक गई। मैंने पहले कभी बाघिन नहीं देखी थी, और मैं उसकी भव्यता की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सका। वह वहाँ खड़ी थी, उसकी पूंछ सीधी थी, उसका सिरा बस इधर-उधर हिल रहा था, अपनी भयानक चमकदार आँखों से हम पर घूर रही थी, मानो यह तय नहीं कर पा रही थी कि वह क्या करेगी, और अपने पास पड़े शावक के

शरीर पर ध्यान नहीं दे रही थी। हम सब एकदम सन्नाटे में थे, हर आदमी ने अपनी बंदूक कंधे पर रखी हुई थी। मेरे पिता ने गोली चलाई, और फिर दूसरों ने; मैं सब कुछ साफ़-साफ़ देख सकता था, क्योंकि मेरे पास बंदूक नहीं थी। मेरे पिता की गोली चलने पर वह लड़खड़ा गई, ज़ाहिर है गोली उसे लगी थी; लेकिन बाकी गोलियाँ चूक गईं, और वह एक और ज़बरदस्त दहाड़ के साथ सीधे हमारे दल की ओर दौड़ी; लेकिन हमारी चीख और हथियारों के लहराने से वह मुड़ गई और धीरे-धीरे सरपट दौड़ते हुए उस झाड़ी की ओर चल पड़ी जहाँ दिलदार खान ने अपना ठिकाना बना रखा था।

'या आलिया!' मेरे पिता चिल्लाए, 'वह कायर है, उसे मार डाला जाएगा! अब वह किसी को नहीं बख्शेगी! क्या किया जा सकता है?'

इस समय तक दूसरी तरफ से उसे एक झलक मिल गई थी, और सारी बंदूकें चल पड़ीं; उसे फिर से गोली लगी होगी, क्योंकि वह रुकी, मुड़ी, गुर्राई और अपने दांत दिखाए, लेकिन फिर से आगे बढ़ी। मुझे लगता है कि दिलदार खान को पता ही नहीं चला होगा कि वह उसकी तरफ आ रही है, क्योंकि वह झाड़ी के पीछे छिपा हुआ था और जो कुछ भी हुआ, उसे देख नहीं सका। 'वह बच सकता है,' मेरे पिता ने कहा; 'संभव है, लेकिन बहुत कम; क्या किया जा सकता है?' किसी ने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन एक पल बाद ही मैंने अपनी तलवार निकाली और उस क्रोधित दरिंदे के पीछे पूरी रफ्तार से चल पड़ा।

'अमीर अली, मेरे बेटे! वापस आ जाओ, तुरंत वापस आ जाओ! या आलिया, वह भी मर जाएगा!' मेरे पिता ने आशंका से व्याकुल होकर कहा।

लेकिन मैंने उनकी बात नहीं मानी, और उस टोली में से किसके पास मेरी जैसी फुर्ती थी? फिर भी उनमें से कुछ मेरे पीछे आ गए। दौड़ते हुए मैंने देखा कि बाघिन कमजोर और बुरी तरह घायल थी, लेकिन फिर भी वह तेजी से दौड़ रही थी। मैंने उसे झाड़ी के पास जाते देखा, और बेचारा दिलदार खान उसके पीछे से निकलकर उसके रास्ते में खड़ा हो गया, बाहें फैलाए, मानो डर से लकवाग्रस्त हो गया हो। अगले ही पल वह दौड़ते हुए झुक गई और उस पर झपटी; वह उसके नीचे था, और वह बेरहमी से उसके शरीर को नोंच रही थी। इससे मैं रुका नहीं; मैंने अपने पीछे वालों की चीखें सुनीं कि मैं मुड़ जाऊं, लेकिन मैं नहीं मुड़ा। मुझे नहीं लगता कि मैंने खतरे के बारे में सोचा भी था; अगर सोचा भी था, तो उत्तेजना ने उसे दबा दिया। एक और छलांग ने मुझे उस जानवर के करीब ला खड़ा किया, जिसका सिर नीचे था, और वह अपने नीचे के शरीर को कुतर रही थी। मैंने उस पर एक ही वार किया, जो, ईश्वर की कृपा से! सफल रहा; वार उसकी गर्दन के पिछले हिस्से में गहराई तक धंस गया, और मुझे लगा जैसे वह मर गई हो; मैं एक तरफ हट गया, और एक पल के लिए देखता रहा। वह सचमुच मर चुकी थी, और उसके अंग कांपते हुए उसके नीचे पड़े आदमी के शरीर पर पड़े थे। बेचारा कायर! घायल होने के बावजूद, अगर उसमें उसे बचाने की थोड़ी भी सूझबूझ होती, तो वह उसके पीछे नहीं जाती; लेकिन उसने भागने का सोचा था, और उस जानवर को देखकर उसकी चेतना सुन्न हो गई थी। हालांकि सब कुछ एक पल में ही हो गया, साहब, मुझे अब याद आता है, उसकी आंखें फटी हुई थीं, और उसकी बाहें उठी हुई और फैली हुई थीं, मानो वह जानवर को गले लगाने की कोशिश कर रहा हो। कायर!

अगर वह झाड़ी के पीछे रहता, तो वह सुरक्षित था, और उसके गुजरते ही उसे गोली मार सकता था; लेकिन वह वहां पड़ा था, एक भयानक दृश्य, उसका चेहरा बुरी तरह कटा-फटा था, और उसके पेट के घावों से खून बह रहा था! वह पूरी तरह मर चुका था। मेरे पिता तुरंत आए; उन्होंने मुझे गले लगाया, और फूट-फूट कर रोने लगे।

'मेरे बेटे, तुमने अपनी जान कैसे जोखिम में डाली?' उन्होंने कहा; 'तुम उस बेचारे के लिए इतनी बेधड़क अपनी जान कैसे दे सकते हो?' उन्होंने लाश की ओर इशारा करते हुए कहा; 'क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था कि वह कायर था? फिर भी मुझे तुम पर गर्व है, मेरे बेटे, और तुमने हम सबको शर्मिंदा कर दिया है। देखो!' उन्होंने पूरी सभा से कहा, 'आज एक लड़के ने हम सबको कलंकित कर दिया है; तुममें से कौन इतना सटीक और गहरा घाव कर सकता था? देखो! ब्लेड हड्डी में धंस गया है, और आधा हड्डी के आर-पार हो गया है। माशाल्लाह! यह एक बहादुर लड़का है!' और मेरे पिता ने फिर से मुझे अपने सीने से लगा लिया।

मेरे एथलेटिक अभ्यासों के प्रशिक्षक, बूढ़े बेनी सिंह ने कहा, 'मैं निवेदन करता हूँ कि मेरे अच्छे प्रशिक्षण के लिए कुछ प्रशंसा मुझे भी मिलनी चाहिए। मैंने हमेशा आपसे कहा था, इस्माइल साहब, कि साहिब ज़ादा अपने पिता के योग्य होंगे; उनकी संपत्ति बढ़ती रहे और वे हज़ार वर्ष जीए! जी हाँ,' उन्होंने मुझसे कहा, 'मैंने आपको वह कट कई बार सिखाया है; आप देख रहे हैं कि आप दौड़ रहे थे और आपने अपने बाएँ हाथ पर कट लगा लिया; ऐसा कर पाना कुछ ही लोगों के बस में होता है, लेकिन आपने यह हुनर सीख लिया है और आपको बस थोड़ा अभ्यास करने की ज़रूरत है, आप मेरे जितने अच्छे तलवारबाज़ बन जाएँगे। शायद,' उन्होंने हँसते हुए मुझसे आगे कहा, 'आज आपके गुरु का हृदय प्रसन्न हो; ऐसे शुभ आरंभ के साथ, साहिब ज़ादा पुराने राजपूत को याद करेंगे।'

मेरे पिता ने कहा, 'यह मुझे याद दिलाता है कि मुझे तुम्हें एक उपहार देना है; आज दोपहर मेरे पास आना। इंशाअल्लाह! हम दयालुता के लिए आभारी होना जानते हैं, और इसका फल हमें अवश्य मिलेगा।' और जब वह आया तो उसे एक सुंदर उपहार मिला।

लेकिन मुझे यह अवश्य कहना चाहिए कि उनके मार्गदर्शन में मैं सभी मर्दाना अभ्यासों में अत्यधिक निपुण हो गया था; मैं बंदूक चला सकता था, भाला फेंक सकता था, कुश्ती कर सकता था, हर प्रकार की तलवार, सीधी या टेढ़ी, एकधारी या दोधारी, लंबी या छोटी, का सटीक उपयोग जानता था, और इन सभी अभ्यासों में गाँव का, और मैं कह सकता हूँ कि आसपास के क्षेत्र का भी, कोई भी लड़का किसी भी तरह से मुझसे प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता था।

उस रात मेरे पिता ने मुझसे कहा, 'अमीर, मेरे बेटे, कल तुम मेरे साथ श्योपूर चलो। मुझे तुम्हें यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि आज के तुम्हारे पराक्रम से तुम्हारे भावी साथियों की नज़रों में तुम्हारा कितना सम्मान बढ़ेगा। मैंने कल हमारे प्रस्थान की सूचना और आज की घटना का संक्षिप्त विवरण पहले ही भेज दिया है, बस इतना ही कि वे नायक को देखने के लिए उत्सुक हों; और मैंने कोई भी ऐसी बात नहीं बताई है जिससे वे मुझसे और अधिक जानने के लिए बेताब हों। अब तक मेरे दल के कई लोग तुम्हें संदेह की नज़र से देखते रहे हैं;

और यदि मैं जमादार न होता, तो मुझे बहुत पहले ही तुम्हारे बारे में अपने इरादे उन्हें स्पष्ट करने पड़ते। इसलिए मैं इस घटना को विशेष रूप से सौभाग्यशाली मानता हूँ; क्योंकि यह जानकर कि तुम्हें सबके सामने लाया जाएगा, वे तुम्हारा और अधिक गर्मजोशी और सम्मान के साथ स्वागत करेंगे, क्योंकि तुमने पुराने सैनिकों की उपस्थिति में, जिन्होंने कई कठिन लड़ाइयाँ देखी हैं, अपनी वीरता का अकाट्य प्रमाण दिया है।'
मैंने कहा, 'यह ईश्वर की इच्छा थी; अन्यथा मुझ जैसे लड़के में ऐसा करने की शक्ति कैसे आ सकती थी?'
'अब तुम बच्चे नहीं रहे,' मेरे पिता ने उत्तर दिया; 'आज तुमने, या अगर मैं गलत नहीं हूँ, तो बचपन की हर बची-खुची भावना को त्याग दिया है; यह परिवर्तन अचानक हुआ है, लेकिन यह पूर्ण है, और यह स्थायी रहेगा, या अगर मैं गलत नहीं हूँ।'
मैंने उत्तर दिया, 'तुम नहीं हो; मैं पहले जैसा नहीं रहा; आज मैंने पहली बार खून बहते देखा है; मुझे लगता है कि यह आखिरी बार नहीं होगा।'

अध्याय IV

प्रथम हत्यारे। अब तुम कैसा महसूस कर रहे हो?
दूसरा हत्यारा। विश्वास है, मेरे भीतर अभी भी कुछ अंतरात्मा बची है।
रिचर्ड तृतीय, अंक I, दृश्य iv
दूसरा हत्यारा।
मैं एक हूँ, मेरे स्वामी।
जिसे दुनिया के घिनौने प्रहार और थप्पड़ झेलने पड़ते हैं
मैं इतना क्रोधित हो गया हूँ कि दुनिया को नीचा दिखाने के लिए मैं जो कुछ भी करता हूँ, उसकी परवाह नहीं करता।
मैकबेथ, तीसरा अंक, पहला दृश्य।

बाघ के साथ हुए उस भयानक अनुभव के अगले दिन, मैं अपने पिता के साथ गाँव से निकल पड़ा। हम घोड़ों पर सवार होकर चले और उसके चार दिन बाद सुबह श्योपूर पहुँचे, जहाँ से महान अभियान शुरू होना था। यहीं पर मुझे ठगों के गिरोह में शामिल किया जाना था, और मैं अपने इस दीक्षा समारोह का बड़ी बेसब्री से, और शायद कुछ भय के साथ भी, इंतज़ार कर रहा था, क्योंकि मुझे नहीं पता था कि मुझे किन रस्मों से गुज़रना होगा। हम मोइदीन के घर में ठहरे, जहाँ कई अन्य ठग नेता भी थे; और आराम करने के बाद, मेरे पिता ने मुझे उस सभा में अपने साथ चलने को कहा, जहाँ आगे की योजनाओं पर निर्णय लिया जाना था। मुझे दस सदस्यों के सामने पेश किया गया, जो विभिन्न गिरोहों के जमादार थे। मेरे पिता के प्रति दिखाए गए सम्मान और आदर से मैं समझ गया कि उन्हें पूरे गिरोह का मुखिया माना जाता था; मुझे मिले स्वागत से मैं प्रसन्न हुआ; और बाघ के साथ हुई घटना में मेरे आचरण ने, जिसके बारे में मेरे पिता ने विस्तार से बताया था, मुझे उनके बीच तुरंत उच्च स्थान दिला दिया।

दशहरा उत्सव के दो दिन शेष रहते हुए, मेरा राज्याभिषेक उस दिन के लिए स्थगित कर दिया गया; क्योंकि ठगों और वास्तव में सभी वर्गों द्वारा इसे विशेष रूप से शुभ माना जाता है। आप जानते ही होंगे कि इस दिन सभी महान कार्य सेनाओं द्वारा प्रारंभ किए जाते हैं, और इसी प्रकार हम ठग भी करते हैं; क्योंकि वर्षा विराम से यह आशा मिलती है कि वर्षा से यात्रा में कोई बाधा नहीं आएगी; और इसके बाद सुहावना मौसम बना रहता है, जिससे दल आराम से यात्रा कर सकता है और यात्रियों से मिलने की संभावना बढ़ जाती है, जो मौसम में सुधार का लाभ उठाकर लंबी यात्राएं शुरू करते हैं। सबसे बढ़कर, यह दिन हमारी संरक्षिका और देवी भवानी के लिए विशेष रूप से पवित्र है। फिर भी, एक मुसलमान होने के नाते, मैं उस समय यह नहीं समझ पा रहा था कि दशहरा उत्सव को इतना सम्मान क्यों दिया जाता है, या वास्तव में इसे मनाया ही क्यों जाता है; और मैंने इस विषय पर अपने संदेहों के समाधान के लिए अपने पिता से अनुरोध किया।

उन्होंने कहा, 'इसे पूरी तरह समझने के लिए यह आवश्यक है कि मैं आपको हमारे पेशे की दैवीय उत्पत्ति में हमारी आस्था की एक रूपरेखा दूं, जो हिंदुओं के धर्म से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है, और जिनसे हम मुसलमानों ने ठगी की कला सीखी है।'

मैंने कहा, 'यह तो वाकई आश्चर्यजनक है; आप अविश्वासियों के विश्वास और पैगंबर मुहम्मद के विश्वास के बीच किसी भी तरह का संबंध कैसे स्थापित कर सकते हैं?'

मेरे पिता ने कहा, 'मैं इस समस्या का हल निकालने का दावा तो नहीं कर सकता; लेकिन चूंकि उनका धर्म हमारे धर्म से कहीं अधिक प्राचीन है और निःसंदेह उसका उद्गम दिव्य है, इसलिए उसमें कई ऐसे बिंदु हैं जिनका पालन सच्चे धर्म का अनुयायी बिना किसी अपराध के कर सकता है, बशर्ते वह उनके सभी रीति-रिवाजों और प्रथाओं में शामिल न हो। वास्तव में, यह असंभव है, क्योंकि कोई भी हिंदू नहीं बन सकता; लेकिन जैसा कि मैंने तुम्हें पहले बताया था, ठगी आलिया के अपने उद्देश्यों की पूर्ति का एक साधन है; और चूंकि इसका पालन करने की परंपरा हमें सदियों से चली आ रही है, और जो लोग इसके लिए बुलाए जाते हैं, उनका भाग्य यही होता है, इसलिए चाहे कोई चाहे भी हो, इससे बचना संभव नहीं है; और इसके प्रत्यक्ष परिणाम स्वरूप, हिंदुओं के साथ इसका पालन करने में कोई पाप नहीं है, जिनसे इसकी उत्पत्ति हुई है। क्या तुम मेरी बात समझ रहे हो?'

'बिल्कुल,' मैंने कहा; 'मैंने यह सवाल इसकी उपयुक्तता पर सवाल उठाने के लिए नहीं पूछा था, बल्कि केवल यह जानने के लिए पूछा था कि हम मुसलमान हिंदू त्योहारों को कैसे मानते और मनाते हैं।'

मेरे पिता ने कहा, 'दशहरा ही एकमात्र ऐसा त्यौहार है जिसका पालन किया जाता है; इसका कारण यह है कि यह वर्ष का सबसे उपयुक्त समय होता है जब हम अपने कार्यों को शुरू करते हैं, और सभी हिंदू ठग इसे हमेशा पवित्र मानते आए हैं; लेकिन मुझे आपको ठगी की उत्पत्ति के बारे में बताना होगा, ताकि आप स्वयं अंदाजा लगा सकें कि यह कितनी प्राचीन है, और उस समय ईश्वरीय आदेश द्वारा दिए गए निर्देशों का कितनी अच्छी तरह पालन किया गया है। हिंदुओं के अनुसार, संसार की शुरुआत में, एक सृजनात्मक और एक संहारक शक्ति विद्यमान थी, दोनों ही सर्वोच्च सत्ता से उत्पन्न हुई थीं। परिणामस्वरूप, ये दोनों एक दूसरे की निरंतर शत्रुता में थीं, और आज भी हैं। सृजनात्मक शक्ति ने पृथ्वी को इतनी तेजी से आबाद किया कि संहारक शक्ति उसके साथ तालमेल नहीं रख सकी, और न ही उसे ऐसा करने की अनुमति दी गई; बल्कि उसे अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए हर संभव उपाय करने की अनुमति दी गई थी।' अन्य लोगों के साथ-साथ, उनकी पत्नी देवी, भवानी या काली (जैसा कि उन्हें इन और कई अन्य नामों से जाना जाता है) ने एक मूर्ति का निर्माण किया, जिसमें उन्होंने उस अवसर पर जीवन की सांस डालने का वरदान प्राप्त किया। यह कार्य पूरा होते ही, उन्होंने अपने कुछ अनुयायियों को एकत्र किया, जिन्हें उन्होंने ठग नाम दिया। उन्होंने उन्हें ठगी की कला सिखाई; और इसकी प्रभावकारिता को सिद्ध करने के लिए, उन्होंने अपने हाथों से उनके सामने उस मूर्ति को नष्ट कर दिया, जैसा कि हम आज करते हैं। उन्होंने ठगों को असाधारण बुद्धि और धूर्तता प्रदान की, ताकि वे मनुष्यों को मृत्यु के जाल में फंसा सकें, और उन्हें संसार में भेज दिया, उनके परिश्रम के पुरस्कार के

रूप में उन्हें उन लोगों से प्राप्त लूट का माल दिया जिन्हें उन्होंने मृत्युदंड दिया था; और उन्हें शवों के निपटान की चिंता न करने का आदेश दिया, क्योंकि वह स्वयं उन्हें पृथ्वी से विदा करेंगी। युगों-युगों तक वह अपने भक्तों को मानवीय नियमों से बचाती रही, और वे सर्वत्र निष्ठावान पाए गए: परन्तु संसार की बढ़ती भ्रष्टता के साथ-साथ उनमें भी बुराई प्रवेश कर गई; और अंत में, बाकियों से अधिक साहसी और जिज्ञासु एक गिरोह ने एक यात्री की हत्या करने के बाद, शव को चुपचाप छोड़ने की पुरानी प्रथा का पालन करने के बजाय, यह देखने का निश्चय किया कि उसका क्या किया जाता है। उन्होंने सोचा कि वे सड़क के किनारे झाड़ियों में छिपकर सुरक्षित हैं, और देवी के आने की प्रतीक्षा करने लगे। परन्तु कौन मनुष्य देवत्व की दृष्टि से बच सकता है? देवी ने उन्हें शीघ्र ही देख लिया और अपने समक्ष बुलाया। उनके भव्य और भयानक रूप से भयभीत होकर, और उनके प्रतिशोध के भय से, उन्होंने भागने का प्रयास किया; परन्तु उन्होंने उनके कदम रोक दिए, और उनके विश्वासहीनता के लिए उन्हें भयानक ढंग से फटकारा।

“तुमने मुझे देखा है,” उसने कहा, “और एक ऐसी शक्ति का अवलोकन किया है जिसे आज तक किसी भी मनुष्य ने तत्काल विनाश के बिना नहीं देखा है; लेकिन मैं तुम्हें इससे बख्श रही हूँ; हालाँकि, अब से मैं तुम्हारी रक्षा वैसे नहीं करूँगी जैसे पहले करती थी। जिन्हें तुम नष्ट करोगे, उनके शवों को मैं अब नहीं हटाऊँगी, और तुम्हें उन्हें छिपाने के लिए स्वयं उपाय करने होंगे। यह हमेशा कारगर नहीं होगा, और अक्सर सांसारिक शक्तियों द्वारा तुम्हारा पता चल जाएगा, और यही तुम्हारा दंड होगा। तुम्हारी बुद्धि और चालाकी अभी भी तुम्हारे पास है। मैं भविष्य में तुम्हें मार्गदर्शन के लिए शकुनों द्वारा सहायता करूँगी; लेकिन मेरा यह आदेश संसार के अंतिम काल तक तुम्हारे लिए अभिशाप रहेगा।”

ऐसा कहकर वह गायब हो गई और उन्हें उनकी मूर्खता और अहंकार के परिणामों पर छोड़ गई; लेकिन उसकी सुरक्षा कभी वापस नहीं ली गई। यह सच है कि हमारे हाथों मारे गए लोगों के अवशेष कभी-कभी मिल जाते हैं, और ऐसे उदाहरण भी सामने आए हैं जब इस खोज से ठगों की गिरफ्तारी हुई है, कम से कम मैंने तो यही सुना है; लेकिन अपने जीवनकाल में मैंने कभी ऐसा कोई मामला नहीं देखा, और मेरा दृढ़ विश्वास है कि ऐसे मामले जानबूझकर उन लोगों को दंडित करने के लिए होने दिए गए हैं जिन्होंने किसी न किसी तरह से हमारी रक्षक को नाराज किया है, उनके बलिदानों और शकुनों की उपेक्षा करके। इसलिए आप देख सकते हैं कि उन नियमों का पालन करना कितना आवश्यक है जिन्होंने सदियों से हमारे समुदाय का मार्गदर्शन किया है, और जिन्हें बदलने से ईश्वर की नाराजगी मोल ली जा सकती है; और न ही हमारे धर्म में ऐसा कुछ है जो इसे मना करता हो। हम अपने पैगंबर के पवित्र उपदेशों का पालन करते हैं; हम दिन में पांच बार नमाज पढ़ते हैं; हम अपने धर्म के सभी नियमों का पालन करते हैं; हम किसी मूर्ति की पूजा नहीं करते; और अगर सदियों से, जब से हमारे पूर्वजों ने भारत पर आक्रमण किया है, हमने जो कुछ किया है, वह पैगंबर को नापसंद होता, तो निश्चित रूप से हमें बहुत पहले ही उनकी नाराजगी का कोई न कोई संकेत मिल गया होता। हमारी योजनाएँ विफल हो गई होतीं, हमारे प्रयास व्यर्थ हो गए होते; हम एक दयनीय जीवन जी रहे होते; और बहुत पहले ही ठगी और उसके हिंदू अनुयायियों से अपना संबंध तोड़ चुके होते।

मैंने कहा, 'मैं आश्वस्त हूँ; क्योंकि आपका वर्णन अद्भुत है। आपने सचमुच कहा है कि हम ईश्वर की विशेष कृपा में हैं; और इतने पुराने समय से चली आ रही और बिना किसी विचलन के पालन की गई किसी भी प्रथा की उपयुक्तता पर सवाल उठाना पाप होगा। मैं मानता हूँ कि मुझे काफिरों के साथ यह खुला संबंध आपत्तिजनक लगा था, क्योंकि मेरे शिक्षक, बूढ़े मूला के वर्णन से मुझे यह विश्वास हो गया था कि वे दुराचार और कुटिलता की निम्नतम अवस्था में डूबे हुए हैं; लेकिन वह या तो अज्ञानी रहे होंगे, या एक कट्टर बूढ़ा मूर्ख।'
मेरे पिता ने कहा, 'मैं इससे अधिक कुछ नहीं कहूंगा कि तुम हिंदुओं के समाज में घुल-मिल जाओगे, वे सभी उच्च जाति के होंगे, और तुम उन्हें किसी भी मुसलमान की तरह वफादार और मित्रता के योग्य पाओगे; कम से कम मेरा अनुभव तो यही रहा है।'
दशहरा के दिन ठग के रूप में मेरे राज्याभिषेक का समारोह शुरू हुआ। मुझे नहलाया गया और नए कपड़े पहनाए गए जो कभी ब्लीच नहीं किए गए थे। मेरे पिता, जो गुरु या आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर रहे थे और जिन्हें समारोहों के संपूर्ण निर्देशन का जिम्मा सौंपा गया था, मेरा हाथ पकड़कर मुझे ले गए। मुझे एक कमरे में लाया गया, जहाँ उस टोली के नेता, जिन्हें मैंने पहले देखा था, कमरे के बीचोंबीच बिछे एक साफ सफेद कपड़े पर बैठे हुए थे। फिर मेरे पिता उनकी ओर बढ़े और उनसे पूछा कि क्या वे मुझे ठग और भाई के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार हैं, जिस पर उन सभी ने उत्तर दिया, 'हाँ, हम तैयार हैं।'
फिर मुझे सबके साथ खुले में ले जाया गया, तब मेरे पिता ने अपने हाथ और आँखें आकाश की ओर उठाकर ऊँची आवाज़ में कहा, 'हे भवानी! जगत की माता! हम तुम्हारे भक्त हैं, अपने इस सेवक को स्वीकार करो—इसे अपनी सुरक्षा प्रदान करो—हमारे लिए, यह एक शगुन है जो हमें तुम्हारी सहमति का आश्वासन दे।'
हमने कुछ देर इंतजार किया; और आखिरकार, हमारे सिर के ऊपर एक पेड़ से, छोटे पेड़-उल्लू की तेज चहचहाहट सुनाई दी।
'जय भवानी! भवानी की विजय हो!' सभी नेताओं ने एक साथ पुकारा; और मेरे पिता ने मुझे गले लगाते हुए कहा,
'मेरे बेटे, खुश रहो; यह बहुत ही शुभ संकेत है। हमने शायद ही ऐसी उम्मीद की थी: तुम्हारा चयन पूर्ण रूप से हो गया है।'
फिर मुझे कमरे में वापस ले जाया गया, और हमारे पेशे के पवित्र प्रतीक, कुल्हाड़ी को एक सफेद रुमाल पर मेरे दाहिने हाथ में रख दिया गया। मुझे उसे अपनी छाती तक उठाने के लिए कहा गया; और फिर मुझे एक शपथ, एक भयानक शपथ, बताई गई, जिसे मैंने दोहराया, अपना बायां हाथ हवा में उठाते हुए, और उस देवी का आह्वान किया जिसकी सेवा में मैं स्वयं को समर्पित कर रहा था। मैंने पवित्र कुरान पर भी वही शपथ दोहराई, जिसके बाद मुझे खाने के लिए पवित्र गुड़ का एक छोटा टुकड़ा दिया गया, और मेरा दीक्षा समारोह पूरा हुआ। मेरे पिता ने समारोह के सफल समापन पर सभा की बधाई प्राप्त की, और फिर उन्होंने मुझसे इस प्रकार कहा।

'मेरे पुत्र, तूने वह पेशा अपनाया है जो सर्वोपरि है और ईश्वर को सर्वमान्य है। तूने निष्ठावान, साहसी और गुप्त रहने की शपथ ली है; तू हर उस मनुष्य का नाश कर देगा जिसे संयोगवश या तेरी चतुराई से तेरे अधिकार में लाया जाए, सिवाय उनके जिन्हें हमारे धर्म के नियमों द्वारा वर्जित किया गया है, जो अब तेरे लिए पवित्र हैं। ये कुछ विशेष संप्रदाय हैं जिन पर हमारा अधिकार नहीं है और जिनका बलिदान हमारी दिव्य संरक्षिका को स्वीकार्य नहीं है; ये हैं धोबी, भाट, सिख, नानुक-शाही, मुदारी फुकीर, नर्तक, संगीतकार, भुंगी, तैली, लोहार, बुर्रे और अपंग या कुष्ठ रोगी। इन अपवादों को छोड़कर, संपूर्ण मानव जाति तेरे विनाश के लिए खुली है, और तुझे उनके विनाश के लिए हर संभव उपाय नहीं छोड़ना चाहिए (परन्तु हमेशा उन शकुनों पर निर्भर रहना चाहिए जिनसे हमें मार्गदर्शन मिलता है)। अब मैंने अपना वचन समाप्त कर दिया है: तू ठग बन गया है।' और तुम्हारे पेशे का जो कुछ भी शेष भाग होगा, वह तुम्हें हमारे गुरु द्वारा दिखाया जाएगा, जो आवश्यक अनुष्ठानों के तहत तुम्हें इसके विवरण में निर्देश देंगे।'

मैंने कहा, 'बस इतना ही काफी है; मैं मृत्यु तक आपका हूँ; और मैं केवल यही प्रार्थना करता हूँ कि मुझे जल्द ही आपके प्रति अपनी निष्ठा साबित करने का अवसर मिले।'

इस प्रकार मैं एक ठग बन गया: यदि मैंने अपना करियर अन्य और सामान्य परिस्थितियों में शुरू किया होता, मेरा अर्थ है, यदि मुझे मेरे पिता जैसे शक्तिशाली और सम्मानित व्यक्ति द्वारा इस पेशे से परिचित न कराया गया होता, तो मैं सबसे निचले स्तर पर ही होता; और यदि मैं सक्रिय, बुद्धिमान और साहसी साबित होता, तो समय के साथ मैं उच्चतम स्तर तक पहुँच सकता था। लेकिन ऐसा नहीं हुआ; और यद्यपि मैं स्वयं नेता बनने के लिए बहुत छोटा था, मैं बाकियों से ऊँचा पद रखता था, और मुझे वह व्यक्ति माना जाता था और सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था जो भविष्य में मेरे पिता की जगह लेगा, जब भी वे सक्रिय रोजगार से सेवानिवृत्त होना चाहें।

ठग सरदारों ने जिस बात पर विचार-विमर्श करने के लिए सभा लगाई थी, वह मेरे पिता की योजना थी। योजना के अनुसार, उनके और दो अन्य नेताओं (जिनमें से एक हुसैन था) के नेतृत्व में एक बड़ा दल दुखुन की ओर जाने वाले मुख्य मार्ग से निकलेगा; उन्हें नागपुर तक एक साथ आगे बढ़ना था, जहाँ से मेरे पिता को हैदराबाद जाना था; और बाकी लोग अलग-अलग हो जाएंगे, एक दल औरंगाबाद जाएगा, फिर खानदेश होते हुए, बूरहानपुर से इंदौर जाएगा और वापस शिवपुर आएगा; दूसरा दल भी औरंगाबाद जाएगा, लेकिन वहाँ से पुणे जाएगा; उसके बाद, यदि संभव हो, तो सूरत तक जाएगा और वहाँ से अपने घर लौटेगा; लेकिन यदि बारिश का मौसम बहुत आगे बढ़ चुका हो, तो उन्हें बूरहानपुर पहुँचकर किसी भी तरह घर लौटना था; अंत में, हम सभी को अगली बरसात के मौसम की शुरुआत में शिवपुर में मिलना था।

इसका कोई विरोध नहीं हुआ; बल्कि इसका भरपूर समर्थन किया गया, क्योंकि इस्माइल के व्यक्तिगत मार्गदर्शन में यह अभियान निश्चित रूप से सफल होगा, और कई वर्षों से दुखुन में ऐसा कोई अभियान नहीं चलाया गया था। अन्य दल हिंदुस्तान में बनारस तक और सागर एवं नर्मदा देश से होते हुए विभिन्न दिशाओं में

आगे बढ़ेंगे—उनकी प्रगति उन परिस्थितियों पर निर्भर करेगी जिनका अभी अनुमान नहीं लगाया जा सकता था।

इस प्रकार योजना बनाई गई, लेकिन कुछ ही दिनों के भीतर हमने अपनी यात्रा शुरू कर दी: हमारे साथ साठ आदमी थे, हुसैन के साथ पैंतालीस और दूसरे जमादार, जिसका नाम गौस खान था, के साथ तीस; कुल मिलाकर एक सौ पैंतीस लोग थे।

अपनी यात्रा शुरू करने से पहले, शकुनों का अध्ययन करना आवश्यक था; और चूंकि ये अनुष्ठान कुछ विचित्र हैं, इसलिए मैं आपको उनके बारे में बताऊंगा, यह ध्यान रखते हुए कि इनके बिना कोई भी अभियान, चाहे छोटा हो या बड़ा, शुरू नहीं किया जा सकता है।

जिस सुबह हमें अपने-अपने गंतव्यों के लिए विदा होना था, सारी तैयारियाँ पूरी हो चुकी थीं। हम गाँव से थोड़ी दूर सड़क पर चुने गए एक स्थान पर पहुँचे, और पूरा दल वहाँ उपस्थित था। भूद्रिनाथ, जो अत्यंत बुद्धिमान और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे और धार्मिक अनुष्ठानों के संचालन में पारंगत थे, ने पूर्व विधिवत अभिमंत्रित पवित्र कुल्हाड़ी उठाई हुई थी, और उनके साथ मेरे पिता और तीन अन्य जमादार भी थे। मेरे पिता, पूरे दल के नेता के रूप में, अपने मुँह में एक डोरी से बंधी पानी से भरी लोटा दाहिनी ओर लटकाए हुए थे। यदि वह लोटा गिर जाती, तो उनके लिए कितना बुरा अपशगुन होता! उस वर्ष या अगले वर्ष तक उनकी मृत्यु को कोई नहीं टाल सकता था।

हम धीरे-धीरे आगे बढ़े, जब तक कि हम निर्धारित स्थान पर नहीं पहुँच गए, और वहाँ मेरे पिता खड़े थे। उन्होंने अपना चेहरा दक्षिण दिशा की ओर किया, जिस दिशा में हमें जाना था, और अपना बायाँ हाथ अपनी छाती पर रखकर, श्रद्धापूर्वक अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं, और ऊँची आवाज़ में भवानी से यह प्रार्थना की:

'ब्रह्मांड की माता! हमारी संस्था की रक्षक और संरक्षिका! यदि यह अभियान आपको प्रसन्न करे, तो हमें अपनी सहायता प्रदान करें और हमें अपनी स्वीकृति का शगुन दें!'

वह चुप रहा, और सभी ने जोर से प्रार्थना दोहराई।

अब सभी लोग शकुनों के लिए बेचैन थे: समूह में सन्नाटा पसरा हुआ था, इतनी तीव्र उत्सुकता थी कि लोग सांस भी नहीं ले पा रहे थे। हमने काफी देर तक इंतज़ार किया, शायद आधा घंटा: कोई नहीं बोला; और वहाँ मौजूद सभी लोगों की श्रद्धापूर्ण चुप्पी में कुछ बेहद प्रभावशाली था। आखिरकार, बाईं ओर का शगुन, यानी पिल्हाऊ, दिखाई दिया: एक गधे ने रेंका, और लगभग तुरंत ही दाईं ओर से एक गधे ने रेंका, जो थिबाऊ था। इससे बेहतर और क्या हो सकता था! ऐसा शगुन वर्षों से नहीं देखा गया था, और इससे अपार सफलता और शानदार लूट का वादा था। भवानी की प्रशंसा में ज़ोर-ज़ोर से नारे लग रहे थे; और हर कोई अपने साथी की ओर मुड़कर उसे इस शुभ अवसर पर बधाई दे रहा था।

मेरे पिता सात घंटे तक उसी स्थान पर बैठे रहे, इस दौरान यात्रा की सारी तैयारियां कर ली गईं। समय समाप्त होते ही वे उठे और हम गुनेशपुर जाने वाले सबसे नज़दीकी रास्ते पर चल पड़े।

जिस स्थान पर हम शाम को रुके, वहाँ भूद्रिनाथ को थिबाओ और पिल्हाओ की आवाज़ सुनाई दी। वह अपने साथ निशान (कुल्हाड़ी) लिए हुए था, जिसे अब पवित्र किया जा चुका था और जिसे खुशी कहा जाता था। इन शुभ संकेतों ने अभियान और उसके नेताओं में और अधिक आत्मविश्वास पैदा किया। अगली सुबह जब हम पहली छोटी नदी के पास से गुज़रे, तो सभी लोग बैठ गए और अपने साथ लाए गए गुड़ और दाल को सबने बाँटा। आगे बढ़ते हुए, फिर से शुभ संकेत दिखाई दिए और सभी ने कहा कि हमें जल्द ही भरपूर लूट मिलेगी। मेरे लिए यह सब अजीब और समझ से परे था; लेकिन शकुनों में सबका अटूट विश्वास और अनुष्ठानों का नियमित रूप से संपन्न होना, मुझे उनकी आवश्यकता का गहरा एहसास दिलाता था; हालांकि, मुझे यह कहते हुए शर्म आती है कि जैसे-जैसे मुझमें आत्मविश्वास बढ़ा, मैंने उन्हें मूर्खतापूर्ण समझा; जब तक कि भवानी द्वारा भेजी गई विपत्ति ने मुझे होश में नहीं लाया और मुझे पश्चाताप करने पर मजबूर नहीं किया।

कुछ दिनों में हम गुनेशपुर पहुँच गए, और अभी तक हमें कोई रोमांचक घटना नहीं मिली थी। शहर पहुँचते ही, ठगों के चंगुल में यात्रियों को फँसाने का काम करने वाले सोथाई या फुसलाने वालों को शहर में भेज दिया गया, जबकि हम बाहर एक आम के बाग के नीचे छिपे रहे। वे दिन भर लगभग अनुपस्थित रहे; और जब वे लौटे तो उनसे उत्सुकतापूर्वक जानकारी माँगी गई। इस काम पर भेजे गए दो लोग हिंदू थे, एक का नाम भूद्रिनाथ था, जिसका ज़िक्र मैंने पहले किया है, जो एक ब्राह्मण था, और दूसरा निचली जाति का व्यक्ति था, जिसका नाम गोपाल था; लेकिन दोनों ही बेहद विनम्र और समझाने-बुझाने वाले स्वभाव के थे, और मुझे बताया गया कि वे अपने उद्देश्य में शायद ही कभी असफल होते थे। मैं भी बाकी लोगों की तरह शहर में उनके कारनामों को सुनने के लिए बहुत उत्सुक था, और सभा में अपने पिता के साथ बैठ गया।

भूद्रिनाथ ने हमें बताया कि वह पूरे बाज़ार में बिना किसी सफलता के घूम चुका था, तभी एक सम्मानित वृद्ध व्यक्ति ने उसका ध्यान एक बुनेया की दुकान की ओर आकर्षित किया, जिसका बुनेया से गंभीर विवाद चल रहा था। वह उसके पास गया, और व्यापारी द्वारा किसी प्रकार की जबरन वसूली के प्रयास से क्रोधित उस वृद्ध व्यक्ति ने तुरंत उससे बात की और उससे इस सौदे का गवाह बनने का अनुरोध किया, साथ ही यह भी कहा कि वह उस व्यक्ति को उसकी बेईमानी के लिए कोतवाल के समक्ष पेश करेगा।

'वह बूढ़ा आदमी बहुत बदतमीज़ और गाली-गलौज करने वाला था,' भूद्रिनाथ ने आगे कहा; 'कुछ कहा-सुनी के बाद, मैंने धमकियों और समझाने-बुझाने के बल पर मामला सुलझा लिया। बूढ़ा आदमी मुझसे बहुत खुश लग रहा था; और स्वाभाविक रूप से, दुकान से निकलने के बाद, हमारी बातचीत इस बारे में शुरू हुई कि मैं कहाँ जा रहा हूँ और मैं कौन हूँ। मैंने इसका फायदा उठाकर उसे यकीन दिलाया कि यह शहर किसी यात्री के लिए एक रात के लिए भी सुरक्षित नहीं है, और मुझे पता चला कि वह नागपुर के राजा की सेवा में एक फारसी मूत्सुद्दी या लेखक था, जहाँ वह अपने बेटे के साथ यात्रा कर रहा था।'

मैंने उसे रास्ते में मौजूद चोरों और बदमाशों के बारे में बताकर जितना हो सके डरा दिया, और खुद को यात्रियों का एक समूह बताया जो दुखुन जाते हुए नागपुर जा रहे हैं और एक-दूसरे की सुरक्षा के लिए साथ हैं; और यह भी बताया कि हम हमेशा गांवों के बाहर ही विश्राम करते हैं, क्योंकि इतनी बड़ी संख्या में होने पर वे

सबसे सुरक्षित स्थान होते हैं। मेरे प्रस्ताव से वह इतना प्रभावित हुआ कि मैंने उसे शहर छोड़ने के लिए तुरंत मना लिया, और मैं सफल भी हो गया। मैंने गोपाल को, जो हमारे साथ आ गया है, उसे रास्ता दिखाने और उसका सामान पैक करने में मदद करने के लिए छोड़ दिया है, और मुझे पूरा विश्वास है कि वे सूर्यास्त से पहले यहाँ पहुँच जाएँगे।' 'बारीक आलिया!' मेरे पिता ने कहा; 'भूद्रिनाथ, तुम्हारा चेहरा हमारी आँखों में चमक रहा है; और मुझे पूरा विश्वास है, लड़कों,' उन्होंने सुनने वालों के समूह से कहा, 'कि बूढ़े खायेत के पास बहुत सारा धन और गहने हैं, और उसकी लूट हमें नागपुर तक पहुँचाने में मदद करेगी;' इसलिए यदि वह अपनी मर्जी से हमारे पास नहीं आता है, तो हमें उसे रास्ते में रोकना होगा, और वह भी अगले मार्च में। थोड़े समय में ही इसका फैसला हो जाएगा; और यदि वह नहीं आता है, तो तुममें से कुछ लुघाई लोगों को भील या दफन स्थल तैयार करने के लिए जाना होगा।'

लेकिन हमें इस परेशानी से मुक्ति मिल गई; क्योंकि खायेत सूर्यास्त के समय हमारे शिविर में आ गया, जैसा कि उसने कहा था, और शिविर की सीमा पर मेरे पिता और दो अन्य जमादारों ने उसका स्वागत किया। उसकी शालीनता ने मुझे अत्यंत प्रभावित किया; वह स्पष्ट रूप से सुसंस्कृत व्यक्ति था और दरबारों और उच्च समाज में रहा था। अपनी महिलाओं की सुरक्षा के लिए अपनी यात्रा गाड़ी के चारों ओर तंबू की दीवारें लगाकर सोने की व्यवस्था करने के बाद, वह और उसका बेटा, एक बुद्धिमान और सुंदर दिखने वाला युवक, उस स्थान पर आए जहाँ मेरे पिता और अन्य नेताओं ने अपने कालीन बिछाए थे; और दल के कई लोग वहाँ एकत्रित हो गए, जिससे वहाँ आम बातचीत शुरू हो गई।

साहब, भला कौन बता सकता था कि उनके आस-पास मौजूद लोगों के इरादे क्या थे! मेरे लिए यह आश्चर्यजनक था। मैं जानता था कि उनकी मृत्यु उसी रात होनी थी, क्योंकि हमारे शिविर में आने और सोने की व्यवस्था करते समय ही यह तय हो गया था। मैं यह भी जानता था कि उनकी और उनके साथ वालों की कब्र के लिए जगह तय कर दी गई थी; क्योंकि मैं अपने पिता के साथ वहाँ गया था और देखा था कि काम शुरू हो चुका था; और फिर भी वहाँ मेरे पिता, हुसैन, गौस खान और कई अन्य लोग बैठे थे। लोग आपस में बातें कर रहे थे और कहानी सुना रहे थे, और बूढ़ा व्यक्ति अपने साथ आए लोगों की संगति से बहुत प्रसन्न था।

उन्होंने भूद्रिनाथ से कहा, 'मैं आपका आभारी हूं कि आप मुझे उस अपवित्र गांव से बाहर ले आए; सचमुच यहां सज्जनों की संगति में कुछ आनंद है, जिन्होंने दुनिया देखी है: वहां मैं लुटेरों के निरंतर भय में रहता और रात भर एक पल भी नहीं सो पाता, जबकि यहां मुझे सतर्क रहने की भी जरूरत नहीं है, क्योंकि खान साहब ने मुझे आश्वासन दिया है,' (अपने पिता की ओर इशारा करते हुए) कि मेरी अच्छी तरह देखभाल की जाएगी।'

'अय!' मेरे पीछे बैठे एक बूढ़े गुंडे ने दबी आवाज़ में गुर्राते हुए कहा, 'उसका अच्छे से ख्याल रखा जाएगा, मैं इसका पूरा ध्यान रखूंगा।'

मैंने कहा, 'कैसे?'

उसने एक इशारा किया, जिससे मुझे पता चला कि वह उन भुट्टोटों या गला घोंटने वालों में से एक था जिन्हें चुना गया था।

उन्होंने आगे कहा, 'मुझे उससे पुरानी दुश्मनी है, और अब वह समय आ गया है जब मैं इसका बदला ले सकता हूं।'
'मुझे बताओ यह सब कैसे हुआ,' मैंने धीमी आवाज में कहा, क्योंकि उस आदमी के चेहरे पर बोलते समय एक क्रूर भाव था।
'अभी नहीं,' उसने कहा, 'मैं कैसे बता सकता हूँ? मैं तुम्हें कल रात मुजलिस में मिलूंगा: वह आदमी बृज लाल है, सबसे बड़ा बदमाश, जिसने हम ठगों से कहीं ज़्यादा हत्याएं और दुराचार किए हैं। लेकिन उसका घड़ा भर चुका है, उसकी सांसें उसके मुंह में आ चुकी हैं; मेरे एक बार दबाने से ही उसकी सांसें रुक जाएंगी और फिर कभी वापस नहीं आएंगी।'
मैंने कहा, 'और वह लड़का, वह सुंदर, नेक लड़का—निश्चित रूप से उसे बख्श दिया जाएगा।'
'मुझे लगता है कि वह सब कुछ बता देगा जो उसने देखा है,' उस आदमी ने कहा; 'हमें पहले ही स्थान पर पकड़वा देगा! नहीं, नहीं, मीया, हम बेहतर जानते हैं, और तुम भी एक दिन जान जाओगी।'
और वह घूमकर उस बूढ़े आदमी के ठीक पीछे बैठ गया, जिस पर वह ऐसे मुड़ा जैसे उस पर किसी ने अतिक्रमण कर लिया हो।
'शांत बैठो, शांत बैठो,' मेरे पिता ने कहा; 'यह तो बस एक साथी है: इस तरह के खुले शिविर में हर किसी को शाम की मुजलिस की बातचीत सुनने का सौभाग्य प्राप्त होता है, और आमतौर पर हमें अपने बीच कोई न कोई ऐसा मिल ही जाता है जो किसी कहानी से शाम को खुशनुमा बना देता है, जब तक कि रात को आराम करने का समय नहीं हो जाता।'
तो वह बूढ़ा गुंडा चुपचाप बैठा रहा: मैं उसे अपने घातक हथियार, रूमाल से खेलते हुए देख सकता था, कभी उसे एक हाथ से खींचता तो कभी दूसरे हाथ से; और मैं उस समूह को तब तक देखता रहा जब तक मेरा दिमाग उत्तेजना से, या यूँ कहूँ कि तीव्र पीड़ा से फिर से चकरा नहीं गया। वहाँ वह बूढ़ा बैठा था: उसके बगल में उसका नेक दिखने वाला बेटा: उनके पीछे उनके विनाशक, बस संकेत की प्रतीक्षा कर रहे थे; और वह बूढ़ा खतरे से इतना बेखबर लग रहा था, मेरे पिता के सौम्य, विनम्र व्यवहार से इतना विचलित और बातचीत में इतना मग्न हो गया था कि उसे क्या संदेह हो सकता था? कि वह उन्हीं के हाथों में है जिनसे उसकी मृत्यु होने वाली है? आह, नहीं! और जैसे-जैसे मैं देखता रहा, मेरा कितना मन हुआ कि मैं उससे चिल्लाकर कहूँ कि भाग जाओ! अगर मुझे यह पता न होता कि मेरी अपनी मृत्यु तुरंत बाद होगी, तो मैं ऐसा कर देता। फिर भी इसका कोई फायदा नहीं होता। मैंने अपनी आँखें उनसे हटा लीं; लेकिन वे अनायास ही उसी जगह लौट आईं। पीछे खड़े आदमियों की हर हरकत घातक अंत की प्रस्तावना प्रतीत हो रही थी। अंततः मैं अपनी भावनाओं की तीव्रता को और सहन नहीं कर सका: मैं उठा और जल्दी से जाने लगा, तभी मेरे पिता मेरे पीछे आ गए।
'तुम कहाँ जा रहे हो?' उसने कहा; 'मैं चाहता हूँ कि तुम यहीं रहो; यह तुम्हारा दीक्षा संस्कार है; तुम्हें इसे देखना होगा और पूरी प्रक्रिया से गुजरना होगा।'
मैंने कहा, 'मैं तुरंत लौट जाऊंगा; मैं बस एक-दो कदम ही चल सकता हूं; मैं बीमार हूं।'

'कमजोर दिल वाले!' उसने धीमी आवाज में कहा: 'देखो, ज्यादा देर मत रुकना, यह तमाशा जल्द ही खत्म हो जाएगा।'
सभा से एक-दो चक्कर दूर जाने पर मुझे फिर से होश आ गया, और मैं लौटकर अपनी पुरानी जगह पर, ठीक उस बूढ़े आदमी और उसके बेटे के सामने बैठ गया। या आलिया! साहब, मुझे अभी भी लगता है कि वे वहीं हैं (और ठग ने उंगली से इशारा किया), बाप-बेटा; और बेटे की बड़ी-बड़ी आंखें मेरी आंखों में देख रही हैं, जैसे मेरी निगाहें उन पर टिकी हुई हैं।
अमीर अली को देखकर ऐसा लग रहा था मानो उसने उन्हें देख लिया हो और वह बेतहाशा घूर रहा था, लेकिन अपनी आंखों पर हाथ फेरते हुए वह फिर से बोलने लगा।
ताजूब! उसने कहा, अद्भुत! मुझे लगा जैसे वे दोनों मुझे देख रहे थे; लेकिन मैं बूढ़ा और मूर्ख होता जा रहा हूँ। खैर, साहब, जैसा कि मैंने कहा, मैं उन्हें देखता रहा, इसलिए मुझे अब भी आश्चर्य होता है कि उन्हें इसमें कुछ भी असाधारण नहीं लगा और उन्होंने इस पर ध्यान नहीं दिया। लेकिन नहीं: बूढ़ा व्यक्ति नागपुर राजा द्वारा अंग्रेजों के साथ किए जा रहे कुछ समझौतों का वर्णन करता रहा और अपने भाइयों के विरुद्ध उनसे संधि करने के लिए मुझे दोषी ठहराता रहा, तभी मेरे पिता ने पुकारा, 'तंबाकू लाओ!' यही संकेत था! पलक झपकते ही ठग ने बूढ़े व्यक्ति के गले में अपना रुमाल डाल दिया, दूसरा उसके बेटे के गले में, और पल भर में वे पीठ के बल मौत की पीड़ा से तड़पते हुए गिर पड़े। उनके गले से एक अस्पष्ट गड़गड़ाहट के अलावा कोई आवाज नहीं निकली; और जैसे ही भुट्टोटे परिवार ने अपना घातक चंगुल छोड़ा, कुछ क्षणों बाद, जो लोग इस उद्देश्य की प्रतीक्षा कर रहे थे, उन्होंने शवों को उठाया और उन्हें पहले से तैयार कब्र में ले गए।
'अब बाकी लोगों की बारी,' मेरे पिता ने धीमी आवाज में कहा: 'तुममें से कुछ लोग नौकरों पर टूट पड़ो; ध्यान रखना कि कोई शोर न हो; बैलगाड़ी चालक और बाकी लोगों से आसानी से निपटा जा सकता है।'
कुछ लोग खायेत द्वारा चुने गए स्थान की ओर दौड़े और एक पेड़ के नीचे खाना पका रहे निर्लज्ज गाड़ी चालक और अन्य नौकरों को घेर लिया। मैंने हाथापाई देखी और सुनी, लेकिन वे सब चीखने से पहले ही मर चुके थे।
'आओ!' मेरे पिता और हुसैन ने मुझे बांहों से पकड़कर जल्दी से अपने साथ ले जाते हुए कहा, 'आओ और देखो कि उन्होंने क्या किया है।'
मैं गया, या यूँ कहूँ कि मुझे घसीटकर हमारे शिविर के एक किनारे ले जाया गया, जहाँ कुछ फीट गहरी एक खाई थी, जिसके तल में एक गड्ढा खोदा गया था, और जिसके किनारे आठ शव पड़े थे। पिता और पुत्र, उनकी दो पत्नियाँ, बैलगाड़ी चालक, दो पुरुष नौकर और एक बूढ़ी औरत; साथ ही एक नौकरानी, जो उन महिलाओं के साथ बाड़े में थी। शव लगभग नग्न थे, और अस्त-व्यस्त ढेर में पड़े होने के कारण एक भयावह दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे, जो खाई के किनारे से मुश्किल से दिखाई दे रहे थे।
'क्या वे सब यहाँ हैं?' मेरे पिता ने पूछा।
'हां, खोदावुंड,' लुघाई समुदाय के एक व्यक्ति ने कहा, जिसे मैं जानता था।

'तो फिर इन्हें भी अंदर डाल दो!' मेरे पिता चिल्लाए; और उन्हें जल्दी से उनके अंतिम विश्राम स्थल पर रख दिया गया, एक का सिर दूसरे के पैरों के ऊपर, ताकि वे एक दूसरे के करीब लेट सकें।
लुघा ने कहा, 'हमें इन्हें खोल देना चाहिए, क्योंकि जमीन ढीली है और ये फूल जाएंगे।'
उनके पेट में गहरे घाव किए गए और मिट्टी को उन पर जल्दी से भर दिया गया; उसे दबाकर समतल कर दिया गया, और कुछ ही क्षणों में किसी को पता नहीं चल पाया कि उस जगह के नीचे आठ इंसानों को छिपा दिया गया था। हम उससे मुंह मोड़कर चले गए और सभी आराम करने लगे।
साहब, क्या मैं आपको बता सकता हूँ कि मैंने वह रात कैसे बिताई! मैं जो भी चाहता, पिता और पुत्र मेरे सामने प्रकट हुए; बूढ़े की आवाज़ मेरे कानों में गूँज रही थी, और पुत्र की बड़ी-बड़ी आँखें मानो मुझ पर टिकी हुई थीं। मुझे ऐसा लगा जैसे हज़ारों शैतान मेरी छाती पर बैठे हों, और मुझे नींद नहीं आ रही थी। यह इतना निर्मम, इतना अकारण कृत्य था कि मैं किसी भी तरह से इसे चुपचाप देखता रहने को भी स्वीकार नहीं कर पा रहा था। फिर भी मेरे पिता, जिनसे मैं बहुत प्यार करता था, और हुसैन भी, इसमें शामिल थे। लेकिन यह सब काफी नहीं था; मैं खुद को शांत नहीं कर पा रहा था। मैं अपने छोटे से तंबू के नीचे से रेंगकर निकला, और खुली हवा में बैठ गया। चाँद हमेशा की तरह चमक रहा था, जैसे कभी-कभी वह गुजरते बादलों के नीचे से निकल आता था, और ठंडी हवा मेरे जलते चेहरे को छूकर मुझे सुकून दे रही थी। मैंने उसे आकाश में धीरे-धीरे चलते हुए देखा, जब तक कि वह बादलों से घिर नहीं गई। फिर बारिश की कुछ तेज़ बूँदें, मानो उस दृश्य पर रो रही हों, मुझे वापस तम्बू के नीचे ले गईं। मैं अपने पिता के पास रेंगकर गया, जो गहरी नींद में सो रहे थे, और उन्हें बाहों में भरकर सो गया। मैं तब तक नहीं जागा जब तक नमाज़ का समय नहीं आ गया। तब मेरे पिता ने मुझे सुबह की प्रार्थना में शामिल होने के लिए जगाया।
हमने अपने कालीन बिछाए, और मैंने उसके साथ वही प्रक्रिया दोहराई; लेकिन मेरे विचार उस बूढ़े व्यक्ति और उसके बेटे और पिछली रात की घटना के साथ जुड़े हुए थे।
जैसे ही यह सब समाप्त हुआ, हमने अपने घोड़ों पर काठी कसी और एक लंबी यात्रा पर निकल पड़े; क्योंकि गुनेशपुर से यथासंभव दूर जाना आवश्यक था, ताकि हम पर कोई संदेह न हो सके।
कुछ समय बाद हम पड़ाव पर पहुँच गए, और एक आदमी को कस्बे में एक रुपये सवा रुपये की गुड़ या दरदरी चीनी खरीदने के लिए भेजा गया: इसका उद्देश्य क्या था, यह मैं समझ नहीं पा रहा था, लेकिन जब मैंने अपने पिता से पूछा तो मुझे जल्द ही पता चल गया।
उन्होंने कहा, 'यह तुपुनी लोगों का बलिदान है, जिसमें हम सभी पिछली रात आपने जो देखा, उससे मिलती-जुलती किसी भी घटना के बाद शामिल होते हैं; यह एक अत्यंत गंभीर अनुष्ठान है, और इसकी कभी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए।'
वह व्यक्ति चीनी लेकर लौटा, और जगह चुने जाने पर, खुशी के वाहक भूद्रिनाथ को उनके लिए बिछाई गई चादर पर पश्चिम की ओर मुख करके बैठाया गया। सभी श्रेष्ठ पुरुष और प्रतिष्ठित भूत-टोटे उनके दोनों ओर बैठ गए, और उसी दिशा में देखने लगे जिस दिशा में वे देख रहे थे। फिर मेरे पिता ने चादर के पास जमीन में

एक छोटा सा गड्ढा खोदा, जिस पर पवित्र कुल्हाड़ी, चीनी का ढेर और भेंट के रूप में चांदी का एक सिक्का रखा गया। फिर मेरे पिता ने गड्ढे में थोड़ी सी चीनी डाली: उन्होंने अपने हाथ जोड़कर आकाश की ओर उठाए और प्रार्थना करते हुए जोर से कहा,

'शक्तिशाली और परम पूज्य देवी! जिन्होंने युगों से अपने भक्तों को अपनी सुरक्षा प्रदान की है, और जिन्होंने विशेष रूप से जूरा नैग और खुदीक बनवारी को उनकी आवश्यकता के समय एक लाख साठ हजार रुपये दिए, हम आपसे उसी प्रकार हमारी सहायता करने और हमारी इच्छाओं को पूरा करने की विनती करते हैं!'

आस-पास मौजूद सभी लोगों ने श्रद्धापूर्वक यह प्रार्थना दोहराई, और मेरे पिता ने हाथ में पानी लेकर उसे कुल्हाड़ी पर छिड़का और गड्ढे में डाल दिया; फिर उन्होंने चीनी के टुकड़े लिए और बारी-बारी से सभी ठगों को दिए, जिन्होंने चुपचाप उसे खाया: फिर उन्होंने थोड़ा पानी पिया, और चीनी का ढेर बाकी बचे लोगों में बाँट दिया गया, जिन्होंने भी चुपचाप श्रद्धापूर्वक अपना-अपना हिस्सा खाया; सिवाय मेरे, क्योंकि मैंने अभी तक किसी का गला नहीं घोंटा था, इसलिए मैं बाकी लोगों के साथ इसे खाने के योग्य नहीं था। हालाँकि, मेरे पिता ने अपने लिए एक हिस्सा मेरे लिए बचाकर रखा था, जिसे उन्होंने मुझे खिलाया। मेरे निगलने के बाद उन्होंने कहा,

'तुमने वह घिनौना पदार्थ खा लिया है, और अब तुम हृदय से ठग बन गए हो; यदि तुम हमें त्यागने की इच्छा भी करो तो नहीं कर सकते, क्योंकि पवित्र किए जाने पर उसमें इतनी शक्ति होती है, जैसा कि तुमने मनुष्यों के हृदयों पर उसका प्रभाव देखा है। यदि किसी को भी उसका एक टुकड़ा मिल जाए और वह उसे खा ले, चाहे उसका पद या स्थिति कुछ भी हो, वह निश्चित रूप से ठग बन जाएगा; वह इससे बच नहीं सकता, उस पर उसका प्रभाव अदम्य होगा।'

मैंने कहा, 'यह तो वाकई अद्भुत है; क्या ऐसी बातें पहले भी ज्ञात हैं?'

'अगर मेरे पास समय होता तो मैं सैकड़ों उदाहरण बता सकता था,' उसने जवाब दिया; 'लेकिन हुसैन से पूछो, या किसी से भी, वे सभी आपको यही बात बताएंगे।'

शाम को, जब हमेशा की तरह सभी लोग इकट्ठा हुए, तो मेरे पिता ने मेरी कायरता के बारे में मुझे फटकार लगाई, जैसा कि उन्होंने इसे कहा था।

'यह बिल्कुल ठीक नहीं है, मेरे बेटे,' उसने कहा; 'तुम, जिसने इतनी बहादुरी से बाघ का सामना किया, तुम्हें इस तरह के बचकाने खेल से पीछे नहीं हटना चाहिए; तुम्हें एक आदमी बनना होगा, बेहतर व्यवहार करना होगा, और याद रखना होगा कि तुमने खून पिया है।'

'अरे भाई!' हुसैन ने कहा; 'साहिब-ज़ादा से इस तरह बात मत करो; याद रखो, तुम भी पहले कोई बेहतर नहीं थे: क्या तुम्हें वह मामला याद नहीं है, और मुझे गुनेश्या को यह समझाने में कितनी मुश्किल हुई थी कि तुम सच में अच्छे इंसान हो? साहब-ज़ादा को बस एक-दो और मामले देखने दो, और वो बिल्कुल बदल जाएँगे, वो काम में शेर बन जाएँगे। मुझे डर नहीं है, मेरे बेटे,' उन्होंने मेरी ओर मुड़कर मेरी पीठ थपथपाते हुए कहा; 'तुमसे बुरे लोग भी अच्छे से शुरुआत करके कायर बन गए, और अंत में कब्र खोदने और जासूस बनने के

लायक ही रह गए। बूढ़े हुसैन कभी किसी के बारे में गलत नहीं थे, और तुम, इंशाअल्लाह! अपने पिता से भी आगे निकल जाओगे। बस उन्हें,' उन्होंने फिर मेरे पिता से कहा, 'एक-दो और मामले देखने दो, और फिर खुद कोशिश करके देखो: तब तुम्हें पता चल जाएगा कि मैं सही हूँ या गलत।'

'सब ठीक है,' मेरे पिता ने कहा; 'मानो मेरे बेटे, मेरा इरादा तुम्हें डांटने का नहीं था, बल्कि मुझे डर था कि तुम्हारे अंदर जो भावनाएँ उमड़ रही हैं, वे तुम पर हावी हो जाएँगी: अपने आस-पास के लोगों के प्रति दयालु रहो, अपने रिश्तेदारों से स्नेह रखो, गरीबों पर दया करो, जरूरतमंदों को दान दो; लेकिन याद रखो कि तुम एक ठग हो, और तुमने कसम खाई है कि आलिया जिसे भी तुम्हारे रास्ते में लाएगी, तुम उसका निर्दय विनाश कर दोगे।'

मैंने कहा, 'मुझे फटकार लगी है, और आपके शब्द मेरे दिल में उतर गए हैं: अब आपको मेरे बारे में कभी यह नहीं कहना पड़ेगा कि मैं अपने कर्तव्य से विमुख हुआ। जब भी आपको उचित लगे, मैं रूमाल लेने के लिए तैयार हूँ।' और विषय बदलने के लिए मैंने कहा, 'मैं निवेदन करता हूँ कि मोहम्मद भुत-तोते ने मुझे उस व्यक्ति का इतिहास बताने का वादा किया था जिसकी कल रात मृत्यु हो गई, और मैं उनसे अपना वादा पूरा करने का आग्रह करता हूँ।' 'वाह!' एक दर्जन लोग चिल्लाए; 'मोहम्मद कहानी सुनाने में माहिर है, हमें सुनाओ।'

मोहम्मद ने अपने मुंह में बड़ी मात्रा में पान के पत्ते और तंबाकू भरकर, उसे अपने दांतों के बीच कई बार चबाया, और फिर लाल लार का भरपूर स्राव करने के बाद, अपनी एड़ियों पर बैठ गया, और मेरे पिता को संबोधित करते हुए, जहाँ तक मुझे याद है, उसने इस प्रकार कहा।

'मेरा जन्म बोरी में हुआ था, जो नागपुर क्षेत्र का एक छोटा सा गाँव है: जैसा कि आप सभी जानते हैं, मेरे पिता ठग थे, और मेरी पीढ़ियाँ भी पीढ़ियों से यही काम करती आ रही थीं। उनके कारनामों की कहानियाँ हमारे परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही हैं, और वे बताने लायक हैं, लेकिन उनका मेरी कहानी से कोई लेना-देना नहीं है। वे समृद्ध थे, और उन्होंने इतना पैसा बचा लिया था कि नागपुर की अदालत में हमारे गाँव के पटेल पद (मुख्य मजिस्ट्रेट) और ज़मीनों के लिए एक बड़ी रकम दे सकें; फिर भी उन्होंने ठगी का अपना पेशा जारी रखा। जैसा कि आप में से कई लोग जानते हैं, मेरे दादा कासिम, अपनी मृत्यु के बाद से ठगों के सबसे कुख्यात सरदारों में से एक थे; और मेरे पिता, जो उस समय युवा थे, उनकी संपत्ति और पद के उत्तराधिकारी बने। उन्होंने लंबे समय तक इसे अपने पास रखा, और किसी ने भी उनके दावे को चुनौती नहीं दी।'

लेकिन उनकी समृद्धि स्थाई नहीं थी। मुझे वह दिन अच्छी तरह याद है जब दरबार के पेशकार के आदेश पर कुछ सैनिक उन्हें "राजमहल" में लाने के आदेश के साथ गाँव पहुँचे। मेरे पिता ने उनसे इस अचानक बुलावे का कारण जानने की व्यर्थ कोशिश की, क्योंकि वे सरकार को नियमित रूप से कर अदा करते थे; और जब तर्क-वितर्क से कोई लाभ नहीं हुआ, तो उन्होंने दल के नेता को रिश्वत देकर अपनी अनुपस्थिति को छिपाने का प्रयास किया। लेकिन सब व्यर्थ रहा; उन्हें उनके साथ जाना पड़ा, और मेरे आग्रह पर वे मुझे भी अपने साथ ले

गए। मैं उस समय एक युवक था, शायद वहाँ के साहिब-ज़ादा की उम्र का ही। लंबी यात्राओं के बाद हम नागपुर पहुँचे, और वहाँ पहुँचते ही हमें एक घिनौनी जेल में डाल दिया गया, हमारे पैरों में लोहे की बेड़ियाँ ठूँस दी गईं, और हमें सामान्य सुख-सुविधाओं से भी वंचित कर दिया गया। हमारे पास न तो पौण था, न तंबाकू, न साफ कपड़े, हमें किसी से मिलने की अनुमति नहीं थी, और हमें सबसे घटिया और बेस्वाद भोजन दिया गया। इस तरह हमने चार लंबे महीने बिताए। मेरे पिता ने यह जानने के लिए व्यर्थ ही विनती की कि उन पर क्या आरोप लगाया गया है या आरोप किसने लगाया है; और अपने परिवार और मित्रों को अपनी स्थिति के बारे में बताने के उनके प्रयास भी व्यर्थ ही रहे। हम अपनी एकांत जेल में बैठकर इस दुर्भाग्य के कारण के बारे में अटकलें लगाते-लगाते थक गए, पर कोई सफलता नहीं मिली। अंततः, एक दिन वह दुष्ट बृज लाल, जिसकी कल रात मेरे हाथों मृत्यु हुई, सैनिकों के साथ हमारी जेल में आया। मेरे पिता ने खुद को मृत मान लिया और सोचा कि उनकी मृत्यु का समय आ गया है; लेकिन संभलकर उन्होंने बृज लाल को पहचान लिया और तुरंत उसे गालियों और अपशब्दों से भर दिया।

जब उन्होंने अपनी बात समाप्त कर ली, तो बृज लाल ने गंभीर दृष्टि से उन्हें देखते हुए कहा, "पटेलजी! शायद अब आप कृपा करके सरकार को अपने गाँव में रहने वाले व्यापारी जयसूखदास की संपत्ति का विवरण देंगे, जिसके बारे में आप भली-भांति जानते हैं कि मुझे कुछ वर्ष पहले भेजा गया था। आपको वह स्वागत और सत्कार भी याद होगा जो आपने मुझे दिया था, जिसके लिए, ईश्वर की कृपा से, मैं अब यह देखने का प्रयास करूंगा कि क्या मैं कुछ वापस दे सकता हूँ।"

"तू झूठा है, और नीच कुल का कमीना है!" मेरे पिता चिल्लाए, "तू मेरे मुख से एक शब्द भी नहीं सुनेगा: किसी योग्य व्यक्ति को कासिम पटेल से बात करने के लिए भेज, वह जो जानता है बता देगा; लेकिन तुझे एक शब्द भी नहीं, तू कुत्ता और कुत्ते का बच्चा है।"

“देखते हैं,” उस नीच दुष्ट ने कहा; और अपने साथ मौजूद सैनिकों को इशारा करके, मेरे बेचारे पिता को पकड़ लिया गया; और उनके सिर पर राख से भरी घोड़े की नाक की थैली बाँध दी गई, और उनकी पीठ पर तब तक ज़ोर से पटका गया जब तक कि उन्हें गर्म धूल साँस में लेने के लिए मजबूर नहीं किया गया, जिससे वे लगभग मर ही गए। यह कई बार दोहराया गया, हर बार जब उन्होंने बृज लाल को वह नहीं बताया जो वह जानना चाहता था। अंत में प्रकृति सहन नहीं कर सकी, और वे बेहोश हो गए। फिर वह दुष्ट जेल से निकला, विशेष रूप से यह आदेश देते हुए कि पानी न दिया जाए। लेकिन इसमें उसके घिनौने इरादे नाकाम हो गए; क्योंकि सौभाग्य से सुबह के पानी में से कुछ बचा हुआ था, और मेरे पिता के चेहरे पर छिड़कने और उनके मुँह में एक घूँट पानी डालने के बाद, वे इतना ठीक हो गए कि उठकर बैठ गए और थोड़ा और पानी पिया, जिससे उन्हें होश आ गया।

अध्याय V

जहां बूढ़ा गुंडा अपनी कहानी का अंत करता है

“बेटा, मुझे लगा था कि मैं मर ही जाऊँगा,” मेरे पिता ने अंत में कहा; “और देखो उस दुष्ट का कितना निर्दयी हृदय होगा जो एक बूढ़े आदमी के साथ ऐसा व्यवहार करता है। उस पर और उसके परिवार पर मेरा श्राप हो! वह कुछ समय के लिए तो फलेगा-फूलेगा, लेकिन इस और उसके सभी दुष्ट कर्मों का दंड अंततः उसे भुगतना पड़ेगा।”

मैंने कहा, "मुझे बताओ, तुम्हारे बीच क्या झगड़ा है, और वह किस कारण से तुम्हें इस तरह सता रहा है?"

“सुनो,” उसने उत्तर दिया, “और तुम जान जाओगे। कुछ वर्ष पहले, जब तुम छोटे थे, गाँव के प्रमुख सहूकर जयसूखदास का निधन हो गया। अपनी मृत्यु शैय्या पर उन्होंने मुझे बुलवाया और अपने परिवार को मेरी देखरेख में सौंपते हुए, एक मुसलमान और वफादार के रूप में मुझसे विनती की कि मैं उन्हें इस बृज लाल से बचाऊँ, जिसे उन्होंने नागपुर के सार्वजनिक दरबार में जूते से पिटवाया था, क्योंकि बृज लाल ने उनकी प्रतिष्ठा को धूमिल करने के इरादे से उन पर घोर निंदा की थी। वास्तव में बृज लाल ने उन पर राजस्व का कुछ हिस्सा हड़पने का आरोप लगाया था; क्योंकि जयसूख न केवल हमारे गाँव का, बल्कि आसपास के गाँवों का भी राजस्व भुगतान का माध्यम था, जो एक वर्ष में लगभग एक लाख रुपये तक पहुँच जाता था। सौभाग्य से, जयसूख का चरित्र इतना ऊँचा था कि इस जैसे नीच व्यक्ति के आरोपों से उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचा, और उसने जो कहा था उस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। लेकिन बृज लाल के मन से वह अपमान कभी नहीं निकला। मैंने इस बात पर बहुत सोचा और अपने पुराने दोस्त को बर्बाद करने की हर संभव कोशिश की; दरबार में उसके शक्तिशाली शत्रु होने के कारण, वह हमेशा किसी झूठे आरोप में लूटे जाने या जेल में डाले जाने के निरंतर भय में रहता था। अंततः उसकी मृत्यु हो गई; और हमारी अंतिम मुलाकात में उसने मुझसे विनती की कि मैं उसकी पत्नी और परिवार को उनके गहनों और जितना पैसा मैं इकट्ठा कर सकूँ, उसके साथ उनके देश मारवाड़ भेजने में जरा भी देर न करूँ। मैंने ऐसा जितनी जल्दी हो सके, अपने लोगों की सुरक्षा में किया, ताकि रास्ते में कहीं वे दूसरे ठगों से न मिल जाएँ।

"उनके जाने के एक सप्ताह भी नहीं बीता था कि बृज लाल और एक अन्य मूटसुद्दी अपने मालिक नारायण पंडित पेशकार का आदेश लेकर आए, जिसमें जयसूख के परिवार और सामान को जब्त करने के लिए कहा गया था। आदेश मौखिक था, और यह एक बहुत ही असामान्य परिस्थिति होने के कारण, मैंने परिवार के बारे में कोई भी जानकारी देने या मृतक के सामान का हिसाब देने से साफ इनकार कर दिया। बृज लाल ने धमकी देना शुरू कर दिया, और अंत में मेरे साथ बहुत ही अभद्र भाषा का प्रयोग करने लगा, जिस पर मैंने उसे अपने जूते से पीटा, उसे गाँव से बाहर निकलवा दिया, और गाँव की सीमा से बाहर ले जाते समय सभी आवारा लड़कों ने उस पर कीचड़ और पत्थर फेंके।"

"मैंने बृज लाल के बारे में फिर कभी कुछ नहीं सुना, लेकिन मैं जानता था कि वह दरबार में मेरा दुश्मन था, क्योंकि एक पड़ोसी के दुर्व्यवहार और अत्याचारों के खिलाफ मैंने जो कई शिकायतें की थीं, उनके बावजूद मुझे न्याय नहीं मिला। उस पड़ोसी ने न केवल मेरी सीमाओं का अतिक्रमण किया था, बल्कि कई बार काटी गई फसल भी छीन ली थी। यह परेशानी अंततः इतनी बढ़ गई कि मैंने न्याय पाने के लिए दरबार में एक प्रतिनिधिमंडल भेजने का फैसला किया। लेकिन यह व्यर्थ रहा; बृज लाल ने खुलेआम मेरे लोगों का विरोध किया, और ऐसा लग रहा था कि वह बहुत लोकप्रिय और शक्तिशाली हो गया था: मुझ पर खुलेआम हमारे गाँव के पटेल पद का अतिक्रमण करने का आरोप लगाया गया, बृज लाल ने एक व्यक्ति को असली पटेल का वंशज बताकर खड़ा कर दिया, और उसे इतना समर्थन और सहयोग दिया कि मेरे लोग बहुत भयभीत और पूरी तरह से पराजित होकर मेरे पास लौट आए।"

"उस समय से, मेरे बेटे, लगभग पाँच साल पहले से, नागपुर में मेरे दोस्तों के माध्यम से मुझ तक पहुँचने वाली खबरों से मैं लगातार चिंतित रहा हूँ। मुझे हत्या के खतरे से सावधान रहने, गाँव में किसी भी अजनबी को न आने देने और पर्याप्त सुरक्षा के बिना कहीं भी न जाने की चेतावनी दी गई है। हालाँकि, जैसा कि आप जानते हैं, इससे हमारे पेशे में कोई बाधा नहीं आई है, जिसका मैंने पालन करना नहीं छोड़ा है; लेकिन अन्य मामलों में मैं सतर्क रहा हूँ। इन सबके बावजूद, हम पूरी तरह से उसके हाथों में हैं, और ईश्वर करे आलिया हमें उससे बचाए!"

'कुछ दिनों तक हमारे उत्पीड़क ने हमसे दोबारा मुलाकात नहीं की; लेकिन आखिरकार वह फिर आया, और मेरे बेचारे पिता को फिर से कई तरह से प्रताड़ित किया गया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ: उन्होंने कुछ भी नहीं बताया।'

“तुम मुझे मारने की हिम्मत मत करना, तुम तो कायर हो,” उसने बृज लाल से कहा; “और इंशाल्लाह! अगर मैं एक बार इस घिनौनी कैद से बाहर आ गया, तो तुम देखोगे कि एक सच्चा मुसलमान अपने लिए क्या कर सकता है। और मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि सावधान रहो।”

'बृज लाल ने मेरे पिता की नपुंसक धमकियों पर हंसते हुए हमें फिर से छोड़ दिया।'

'हम लगभग तीन महीने तक कैद में रहे, जब एक दिन हमारे गार्ड के सैनिकों में से एक, मेरे पिता के वादों से प्रभावित होकर और वास्तव में हमारे मामले में हुए अन्याय से व्याकुल होकर, मेरे पिता द्वारा तैयार की गई एक याचिका को एक साहूकार तक पहुंचाने के लिए सहमत हो गया, जिससे वह परिचित था, जो उस समय हमारे गांव के वित्तीय मामलों का प्रबंधन करता था और नागपुर शहर में रहता था।'

हमारी स्थिति के बारे में सुनकर वे अत्यंत आश्चर्यचकित हुए और हमें मुक्त कराने के लिए तुरंत जुट गए। लेकिन यह आसान काम नहीं था; बृज लाल दरबारी मंत्री के करीबी थे, और हमारे मित्र के सभी प्रयास विफल रहे। अंततः उन्होंने हमारा मामला नागपुर के प्रमुख साहूकार के समक्ष रखा, जो एक प्रभावशाली व्यक्ति थे, और वे स्वयं हमारी ओर से मंत्री से मिलने गए। हमें बताया गया कि अगले दिन हमें दरबार में उपस्थित होना है और हमारे विरुद्ध लगाए गए आरोपों का उत्तर देना है; और निर्धारित समय पर हमें उस घर में ले जाया

गया जहाँ पेशकार रहते थे, और जहाँ वे उनके समक्ष लाए गए विभिन्न मुकदमों और मामलों की सुनवाई करते थे।

नारायण पंडित उस समय युवा थे, लेकिन उनसे संपर्क रखने वाले सभी लोग उनका बहुत सम्मान करते थे। उन्हें न्यायप्रिय माना जाता था और वे निर्णय देने से पहले धैर्यपूर्वक दोनों पक्षों की बात सुनते थे। लेकिन हमारे कट्टर शत्रु बृज लाल उनके गुप्त सलाहकार थे और उन्होंने इतने सहज तरीके से व्यवहार किया कि उनके अत्याचार कभी उजागर नहीं हुए।

बृज लाल ने मेरे पिता पर आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि राज्य के कानूनों के अनुसार, साहूकारों और अन्य धनी व्यक्तियों की संपत्ति का हिसाब सरकार को तब देना चाहिए जब उनकी कोई पुरुष संतान न हो। यह सर्वविदित था कि जयसूखदास धनी थे; उनकी दो या तीन बेटियाँ थीं, लेकिन कोई पुत्र नहीं था; और सरकार के हिसाब-किताब होने तक उन्हें संपत्ति के एक रुपये को भी छूने का कोई अधिकार नहीं था। उन्होंने यह भी कहा कि मेरे पिता बोरी के असली पटेल नहीं थे, और मूल कब्जेदार के वंशज ने उस पद और जमीन पर दावा किया जो उस समय मेरे पिता के कब्जे में थी। बृज लाल ने पंडित से यह कहते हुए अपना निवेदन समाप्त किया, "हे ब्रह्मा के अवतार! मैं इस व्यक्ति के हाथों हुए दुर्व्यवहार का वर्णन नहीं करूँगा। मैं दो बार उसके गाँव गया, और दोनों बार मेरा इतना अपमान हुआ कि याद आते ही मेरा रक्त खौल उठता है। वहाँ जाने का मेरा उद्देश्य केवल सरकार की भलाई था; और यदि मैंने तब शिकायत की होती, तो मेरे स्वामी का क्रोध इस व्यक्ति पर उतरता और वह और उसका परिवार नष्ट हो जाते। परन्तु मैंने अपने दुःख को अपने भीतर दबा लिया, और जब उसने बार-बार मेरे समक्ष आने से इनकार किया और जयसूखदास के सामान के बारे में भेजे गए संदेशों का तिरस्कार किया, तब मुझे एहसास हुआ कि सरकार की गरिमा को उसने धिक्कार कर लिया है, और मैंने उसकी गिरफ्तारी और कारावास का आदेश दिया।"

“या आलिया! आलिया!” मेरे पिता चिल्लाए; “मालिक! यह सब झूठ है; मैं आलिया को गवाह बनाकर कहता हूँ कि मैंने सरकार के किसी भी आदेश का उल्लंघन नहीं किया, जब भी वह मुझे विधिवत भेजा गया हो। क्या उस नीच के जन्म से पहले मैंने सरकार का नमक नहीं खाया? और वह कौन होता है जो मेरे मालिक उसे राज्य के इतने बूढ़े सेवक को अपने सामने अपमानित करने देता है? यदि मुझे अनुमति हो, तो मैं अपने मालिक के सामने यह प्रस्तुत करूँगा कि मैं दोषी नहीं हूँ, बल्कि इस शैतान को आपके दास के साथ किए गए इस व्यवहार के लिए कड़ी सजा मिलनी चाहिए।”

पंडित ने कहा, "हम आपकी बात कल सुनेंगे, और इस बीच आपके लिए यह उचित होगा कि आप अपने बचाव में जो कहना चाहते हैं उसका एक विवरण तैयार कर लें, ताकि उसका वर्णन अधिक संक्षिप्त और आसानी से समझा जा सके।"

तब मेरे पिता ने विनती की कि उन्हें चोर की तरह कैद न किया जाए, और उन्होंने अपने दो सहोकरों को ज़मानत के तौर पर पेश किया कि जब भी उन्हें बुलाया जाए वे हाज़िर हो जाएँगे। बृज लाल के इस विरोध के बावजूद कि कोई भी ज़मानत हमें बाँध नहीं सकती, उनकी बात मान ली गई और हम अपने दोस्तों के साथ

चले गए; मेरे पिता जब उनके पास से गुज़रे तो अपनी मूंछें घुमाते हुए और तिरछी नज़रों से उन्हें देखते हुए बार-बार 'इंशाल्लाह' और 'माशाल्लाह' बुदबुदाते रहे, जिसका बृज लाल ने घोर द्वेष और घृणा भरी नज़रों से जवाब दिया।

शाम के दौरान बृज लाल के पूरे आचरण का फारसी में एक लेखा-जोखा तैयार किया गया; और हम उसे दरबार में इस उम्मीद के साथ ले गए कि हमारे साथ किए गए उसके अनुचित व्यवहार के लिए उसे हमारे सामने अपमानित किया जाएगा। लेकिन हमें निराशा ही हाथ लगी। याचिका नारायण पंडित ने पढ़ी और उन्होंने मामले में फैसला सुनाया; जिसमें यह था कि बृज लाल ने मेरे पिता को कैद करने में अपनी शक्ति का अत्यधिक दुरुपयोग किया था, उसने जैसूख और उसके परिवार को सताने में गलत काम किया था, क्योंकि खातों की जांच करने पर उसके खिलाफ कोई दावा नहीं बनता था।

दूसरी ओर, मेरे पिता ने बृज लाल को गाँव से बाहर निकालकर उसके साथ दुर्व्यवहार किया था; राज्य के प्रति अनादर दिखाया था, क्योंकि उन्होंने उस एजेंट को आसानी से हिसाब नहीं दिया था जिसके पास हिसाब मांगने का अधिकार था, और इतने लंबे समय तक उसके बार-बार दिए गए आदेशों का विरोध किया था।

मेरे पिता जवाब देने ही वाले थे कि उनके मित्र साहूकार ने उन्हें रोक दिया। उन्होंने कहा, "युद्ध से आधी जान बचाकर निकलना, बिल्कुल न मरने से बेहतर है। चुप रहो: सोचो कि तुम बच गए हो, जो बहुत कम लोग कर पाते हैं, उस नीच बदमाश द्वारा तुम्हारे चारों ओर बिछाए गए जाल से, और शुक्रगुजार रहो।"

'मेरे पिता को बृज लाल के साथ जो किया था उसके लिए केवल मामूली जुर्माना देना पड़ा। उन्होंने इसे अपनी जीत मान लिया और इस तरह मामला समाप्त हो गया।'

'मैं उस सलाह को कभी नहीं भूलूंगा जो बूढ़े साहूकार ने मेरे पिता को दी थी, जब कुछ दिनों तक उनके साथ रहने और उनके खर्चे पर मेहमाननवाजी पाने के बाद, हम अपने गांव के लिए रवाना होने वाले थे।'

“पटेलजी!” उसने कहा, “मैं बृज लाल को भली-भांति जानता हूँ; वह अपना बदला कभी नहीं छोड़ेगा; आपने देखा है कि वह अपने संरक्षक के सामने गाय की तरह व्यवहार करता है, लेकिन उससे दूर होते ही वह दिल और व्यवहार से शेर बन जाता है; और उसने इतना प्रभाव प्राप्त कर लिया है कि कोई भी उसका विरोध करने की हिम्मत नहीं करता। आप वास्तव में उसके चंगुल से बच निकले हैं; लेकिन यदि आपके मामलों को हमारे सेठ ने अपने हाथ में न लिया होता, तो आप उस दयनीय कैद में तब तक रहते जब तक कि आपकी मृत्यु से उसकी घृणा शांत न हो जाती, क्योंकि वह आपको निरंतर यातना और दुर्व्यवहार का शिकार बनाता।”

"शुक्र आलिया!" मेरे पिता ने कहा, "कम से कम अब मैं सुरक्षित तो हूँ।"

“अत्यंत सावधानी के साथ,” साहूकार ने कहा; “उसके दूत तुम जहाँ भी जाओगे, तुम्हें घेर लेंगे, और उनसे बचने के लिए तुम्हें अत्यंत सतर्क और सावधान रहना होगा। हे पटेल, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि मेरी बात को अनसुना मत करना, वरना तुम्हें पछतावा होगा।”

“मैं ऐसा नहीं करूँगा,” मेरे पिता ने कहा; “तुम्हारे शब्द मित्रवत हैं, और मैं उन्हें कृतज्ञतापूर्वक शरबत की तरह ग्रहण करता हूँ। लेकिन अगर बृज लाल मोहम्मदजी पटेल तक पहुँचना चाहता है तो उसके हाथ लंबे और शक्तिशाली होने चाहिए।”

कुछ ही दिनों बाद, हमने विदा ली और घर लौट आए; लेकिन, जैसा कि भविष्यवाणी की गई थी, कुछ महीनों में गाँव के आसपास अजनबी लोग दिखाई देने लगे; और मेरे पिता ने, आश्चर्य की बात है, घर पर रहने के लिए हमारी सभी प्रार्थनाओं को अनसुना कर दिया, खासकर शाम ढलने के बाद; उन्होंने हमारी बात नहीं सुनी, जिन लोगों को हमने देखा था उन्हें मुसाफिर कहा, और बहादुरी दिखाने के लिए देर रात तक घर से बाहर रहे। हालाँकि, मेरी माँ अंततः इन अनजान लोगों के बार-बार आने से इतनी चिंतित और भयभीत हो गईं कि उन्होंने मुझसे विनती की कि मैं दिन में कभी भी अपने पिता का साथ न छोड़ूँ, और हमेशा शाम को उन्हें खेतों से अपने साथ घर ले आऊँ। मैंने लंबे समय तक ऐसा किया; लेकिन एक रात, एक मनहूस रात—काश मैंने उस रात से पहले वाले दिन का सूर्योदय न देखा होता!—गन्ने के खेत में अगले दिन की कटाई की व्यवस्था करने में देरी होने के कारण, हमें घर लौटने में देर हो गई: कुछ दूर तक पड़ोसी गाँव के कुछ लोग हमारे साथ आए, लेकिन वे हमारे गाँव से लगभग आधा कदम दूर हमसे अलग हो गए; और शेष मार्ग (यदि हम सीधे रास्ते पर चलते) असुरक्षित माना जाता था, और यदि संभव हो तो सूर्यास्त के बाद उस मार्ग से कोई नहीं जाता था। मैंने दूसरा मार्ग लेने का प्रयास किया; लेकिन बूढ़े व्यक्ति ने उसे देख लिया और तीखे स्वर में कहा, "यह मार्ग नहीं है, उस मार्ग पर हमें एक घंटा और लग जाएगा।" मेरे पास उसे उस मार्ग से रोकने का कोई कारण नहीं था जिससे मैं बचना चाहता था, हालाँकि एक अस्पष्ट सी अनुभूति थी कि हमारे सामने वाले मार्ग में खतरा है, जिसके कारण मैंने दूसरा मार्ग लेने का प्रयास किया था। लेकिन, मेरे मित्रों, कौन अपने भाग्य से बच सकता है? यदि आलिया की इच्छा है कि मृत्यु ही होनी है, तो मानवीय दूरदर्शिता का क्या लाभ? हम आगे बढ़े, और जल्द ही बाड़ वाले खेतों में पहुँच गए, जहाँ ऊँची-ऊँची मिल्क-बुश की झाड़ियों के बीच से रास्ता घुमावदार था। रास्ता मुश्किल से दिखाई दे रहा था, लेकिन हम सड़क के हर एक इंच से परिचित थे। अचानक, जैसे ही हम आगे बढ़े, मुझे लगा कि सड़क को पार करती हुई एक झाड़ी में मुझे एक झिलमिलाहट दिखाई दी, मानो किसी बंदूक की तीली की चमक हो।

मैंने अपने पिता से कहा, "देखो! हम रास्ते में फंस गए हैं, झाड़ी के पीछे लोग हैं; देखो, वहाँ तीन जलती हुई माचिसें हैं!"

"तुम मूर्ख हो," वह चिल्लाया, "ये तो जुगनू हैं: क्या तुम डर रहे हो? क्या मेरा बेटा कायर हो गया है?"

उनके मुंह से शब्द निकले ही थे कि हमारे पास तीन तेज धमाकों की आवाज आई। मेरे पिता बिना कुछ बोले मुंह के बल गिर पड़े, और मुझे अपनी पीठ में ठंडक और सुन्नपन महसूस हुआ, साथ ही तेज दर्द और पैर में भी वैसा ही दर्द। मैं बीमार पड़ गया, कुछ कदम लड़खड़ाया और फिर गिर पड़ा; लेकिन मैं बेहोश नहीं हुआ था। तीन आदमी झाड़ियों से बाहर निकले और तलवारें खींचे हमारी ओर दौड़े। यह देखकर कि हम दोनों में

से कोई नहीं हिला, उनमें से एक ने मुझे पीठ के बल पलट दिया और मेरे चेहरे की ओर देखा। मैंने अपनी आंखें बंद कर लीं, क्योंकि मैं जानता था कि अगर मैंने उन्हें खोला तो मैं एक पल भी जीवित नहीं रह पाऊंगा।
"यह वह आदमी नहीं है," मेरे ऊपर खड़े व्यक्ति ने कहा; "हम उन्हें ढूंढ नहीं पाए।"
एक और सामने आया।
"यह लगभग उतना ही अच्छा है," उसने कहा, "यह छोटा शैतान बेटा है: पिता, यकीन मानिए, दूसरा है; आकर देख लीजिए।" और वे मुझे छोड़कर चले गए।
वे मेरे बेचारे पिता के पास गए, लेकिन मैं देख नहीं सका कि उन्होंने क्या किया। मुझे लगता है कि उन्होंने उनकी जाँच की होगी, क्योंकि उनमें से एक ने कहा, "अल्हम्दुलिल्लाह! हम सफल हो गए; इससे हमारे मालिक की नज़र में हमारी इज़्ज़त चमकेगी। और सोचो, इतने लंबे इंतज़ार के बाद इतनी आसानी से सफलता मिल गई! बूढ़ा कुत्ता लोमड़ी की तरह चौकन्ना था।"
“आप मुझे धन्यवाद दे सकते हैं,” दूसरे ने कहा, जो अभी तक बोला नहीं था: “अगर मैं गन्ने के खेत तक उसका पीछा न करता और घर लौटने का उसका सबसे नज़दीकी रास्ता न खोजता, तो हम बहुत देर तक व्यर्थ ही उसका इंतज़ार करते रहते, जिससे मैं बुरी तरह थक चुका था। चलो,” उसने आगे कहा, “हमें रुकना नहीं चाहिए, इलाका बहुत गर्म हो जाएगा। मधु हमें नागपुर तक ले जाने में मदद करेगा, और जितनी जल्दी हम उसके पास पहुँचेंगे उतना ही अच्छा होगा; मेरे जानने वाले सभी घोड़े तैयार हैं।”
मुझे फिर कुछ सुनाई नहीं दिया। मैं बीमार और कमजोर महसूस कर रही थी, और काफी देर तक लगभग बेहोश पड़ी रही: घावों का दर्द असहनीय था, और मैं दर्द से तड़प रही थी; रात भी भयानक रूप से ठंडी थी, और मेरा शरीर इतना अकड़ गया था कि मैं हिल भी नहीं पा रही थी। मैंने अपने बेचारे पिता के शरीर तक जाने की कोशिश भी की, जो मुझे पीठ के बल लेटा हुआ मुश्किल से दिखाई दे रहा था; लेकिन हिलना-डुलना मेरे लिए नामुमकिन था। मैं लेटी रही और कराहती रही। मुझे पास ही कुछ लोगों की आवाजें सुनाई दीं, और मैंने पूरी ताकत से चिल्लाया, लेकिन उन्होंने मुझे नहीं सुना। बाद में मुझे पता चला कि गोलियां चलाई गईं, जो हमें संकेत देने के लिए थीं; लेकिन मैं उनका जवाब नहीं दे सकी: मैं क्या कर सकती थी, जब मैं एक कुचले हुए सरीसृप की तरह पड़ी थी? मेरी चेतनाएं आती-जाती रहीं, मानो मैं मर गई थी, और फिर से जीवित हो गई थी।
हे मेरे दोस्तों, मैं उस रात की पीड़ा का वर्णन कैसे करूँ! आखिरकार कुछ लोग मशाल लिए मेरे ऊपर खड़े थे, और उन्होंने मुझे बेहोशी से जगाया। मैंने उन्हें तुरंत पहचान लिया कि वे गाँव के कुछ मजदूर थे; उन्होंने हर गली में मेरी तलाश की थी, और आखिरकार मुझे ढूंढ लिया। मुझे नहीं पता था कि उन्होंने क्या कहा या क्या किया; लेकिन मेरे पिता का शव देखकर वे विलाप करने लगे, और मुझे एक कंबल में लपेटकर गाँव ले गए, और मुझे मेरे पिता के घर के दरवाजे पर रख दिया: हाय! अब वे मेरे पिता नहीं रहे।
मेरे मित्रों, आप सबने उस स्त्री का दुःख देखा होगा जब मृत्यु घर में दस्तक देती है और पिता, भाई या पुत्र को छीन लेती है; आप सब जानते हैं कि स्त्रियों की चीखें और कराहें हृदय को कैसे भेद देती हैं और पुरुषों के जिगर को पिघला देती हैं। मेरे पिता का शव आने तक कोई रोना नहीं था—कोई चीख नहीं थी; मेरी माँ एक

कोने में बैठी खुद को आगे-पीछे झुला रही थी, धीमी आवाज़ में मेरे पिता का नाम पुकार रही थी और बीच-बीच में अपनी छाती पीट रही थी; मेरी बहन मेरी देखभाल कर रही थी और मेरे मुँह में पानी डाल रही थी, क्योंकि मैं अभी भी बोलने में असमर्थ थी, लेकिन अपने आस-पास हो रही हर बात से पूरी तरह अवगत थी। गाँव की कुछ बूढ़ी औरतें मेरी माँ के पास बैठी थीं, घर में सीटी बजाती ठंडी हवा में काँप रही थीं और आपस में फुसफुसाकर बातें कर रही थीं। दीवार में बने एक आले में एक छोटा सा दीपक था, जिसकी टिमटिमाती रोशनी से कभी एक समूह तो कभी दूसरा दिखाई देता था, जिससे पूरे समूह की परछाइयाँ मेरे ऊपर, चारों ओर और मेरे ऊपर उछलती रहती थीं, यहाँ तक कि मेरे विचलित मस्तिष्क को ऐसा लगने लगा कि वे शैतानों की एक सेना हैं जिन्हें समय से पहले मुझे यातना देने के लिए भेजा गया है।

"बहन," मैंने कहा, "मेरी माँ को बुलाओ, मुझे लगता है मैं मर रही हूँ;" क्योंकि उस समय मुझे पहले से कहीं अधिक कमजोरी महसूस हो रही थी।

"नहीं, नहीं! आपको मरना नहीं चाहिए; आपको अभी हमें छोड़कर नहीं जाना चाहिए," स्नेही लड़की ने कहा; "यह तो बस एक घाव है; नाई आ रहा है और वह गोली निकाल देगा; और हुकीम द्वारा सिकाई की जा रही है: आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे।"

जैसे ही उसने यह कहा, मशालों की तेज रोशनी से बाहर का पूरा इलाका जगमगा उठा; और तुरंत बाद, मेरे बेचारे पिता का शव लिए चार आदमी धीरे-धीरे घर की ओर चलने लगे। मैंने हिम्मत जुटाकर दीवार के सहारे बैठने की कोशिश की, और शव को, जो खून से लथपथ था, लाया गया और नीचे रख दिया गया। मुझे यह नहीं कहना चाहिए कि नीचे रख दिया गया, क्योंकि शव को उठाने वाले लोग उसे धीरे से नीचे रखने की तैयारी कर रहे थे, तभी कंबल का एक कोना फिसल गया, और शव ज़मीन पर ज़ोर से गिर पड़ा, जिससे एक भयानक, धीमी सी आवाज़ आई, जिसकी गूंज मेरी हर नस में सिहरन पैदा कर गई।

एक पल के लिए सन्नाटा छा गया; लेकिन जब खून से लथपथ चेहरा सबके सामने आया, तो भयानक शोर मच गया। मेरी माँ के नेतृत्व में सभी बूढ़ी औरतें लाश के पास दौड़ीं और दिल दहला देने वाली चीखें मारने लगीं; जिन्होंने लाश उठाई थी, वे भी चीखने लगीं और उनकी चीख बाहर तक पहुँच गई, जहाँ जमा भीड़ ने भी उनका साथ दिया, यहाँ तक कि विलाप के शोर से आसमान गूंज उठा। मैंने अपनी आवाज़ सुनाने की व्यर्थ कोशिश की। लेकिन अचानक शोर थम गया, और गाँव के काज़ी ने अंदर आकर सन्नाटा छाने का आदेश दिया। उन्होंने लाश पर एक नज़र डाली और फिर मुझे बुलाया। "यह किसने किया है?" उन्होंने कहा; "तुम्हें किस पर शक है? हमें बताओ, अपनी आत्मा की कसम खाकर बताओ, इससे पहले कि उन्हें पकड़ने में बहुत देर हो जाए, चाहे वे कोई भी हों।"

"एतारे के पटेल महद्दू," मैंने कहा; "लेकिन उन बदमाशों के पास घोड़े हैं, वे इससे पहले ही जा चुके हैं, उन्हें भेजने का कोई फायदा नहीं है।"

"किसके पास घोड़े हैं? कौन-कौन गया है, क्या तुमने यही कहा?" उसने अधीरता से चिल्लाते हुए कहा: "कुछ देर के लिए इकट्ठा हो जाओ, और हमें यह बताने की पूरी कोशिश करो कि यह सब कैसे हुआ, कैसे घटित हुआ।"
'मुझमें लगभग कोई ताकत नहीं बची थी, लेकिन मैंने पूरी घटना का संक्षिप्त विवरण दिया।'
"अलिया की कसम, यह तो खुद महदू का काम है," एक ने कहा, "और हम सुबह होने से पहले उसके गांव को जला देंगे।"
"यह रीम खान का किया-धरा है," दूसरे ने चिल्लाकर कहा।
'राइम खान मेरे पिता का बहनोई था, और उनके बीच घोर शत्रुता थी।'
“कौन रीम खान का नाम लेता है?” मेरी माँ चिल्लाई, “उसकी जीभ जलकर सड़ जाए! उसका अंत ऐसा ही हो!” उसने लाश की ओर इशारा करते हुए कहा; और फिर से वह चीखने-चिल्लाने और विलाप करने लगी।
मेरे पास खड़े एक व्यक्ति ने कहा, "क्या तुमने उस महिला की बात सुनी? अगर रीम खान संदेह से मुक्त होता, तो वह इस तरह से गाली-गलौज नहीं करती।"
“चुप रहो!” मैंने पूरी ताकत से कहा; “मैं जानता हूँ कि इसका रचयिता कौन है, कम से कम मुझे इस पर पूरा शक करने का पूरा हक है। इसमें महदू पटेल का कोई हाथ नहीं है, वह कायर है; रहीम खान, भले ही वह उस बूढ़े से नफरत करता था, ऐसा कभी नहीं कर सकता था और न ही इसकी योजना बना सकता था; नहीं, यह इनमें से कोई नहीं है; यह वह व्यक्ति है जिस तक हम जैसे गरीब लोग कभी उसकी ऊँचाई से नहीं पहुँच सकते, वह व्यक्ति जिसे केवल आलिया की खुशी ही उस स्थिति में ला सकती है; मेरा मतलब है बृज लाल, वह शापित, निर्दयी।” बोलते-बोलते मैं थक गया और बैठ गया।
“किसने बात की?” मेरी माँ ने सिर उठाते हुए कहा: “मैंने अपने बेटे की आवाज़ सुनी!”
"मैं यहाँ हूँ, मेरी माँ," मैंने कहा; और वह मेरी ओर मुड़ी।
"अरे यहाँ! अरे जीवित! कायर! क्या तू अपने पिता को उनके ही घर में खून से लथपथ लाश के रूप में देखने आया है? तू कहाँ था कि तू उनके साथ नहीं मरा? क्या मैंने तुझे चेतावनी नहीं दी थी कि उस जिद्दी बूढ़े आदमी को कभी मत छोड़ना, जो हर सलाह को अनसुना करने और रात में खुद को खतरे में डालने पर तुला रहता है?"
“मैं अभी तुम्हें जवाब नहीं दे सकता, मेरी माँ,” मैंने कहा, “पर मैं उसके साथ था; देखो, मैं भी गिर गया था: हालाँकि मैं तब मरा नहीं, मुझे लगता है कि मैं जल्द ही मर जाऊँगा।” मैंने अपनी बनियान खोली और उसे वह छेद दिखाया जो गोली से बना था, जिसमें से रुक-रुक कर काले खून की एक-दो बूँदें रिस रही थीं; उसने उसे देखा और मेरे पैरों में गिर पड़ी।
“तुम कायर नहीं हो!” वह सिसकते हुए बोली, “तुम कायर नहीं हो! तुमने अपने पिता की रक्षा में अपना खून बहाया है, और मैं बस यही कह सकती हूँ कि यह आलिया की इच्छा और उसका भाग्य है। भला कौन अपने

भाग्य से बच सकता है? लेकिन दोनों को खोना बहुत मुश्किल है। पति और पुत्र, पति और पुत्र, और मैं एक बूढ़ी औरत!"
और वह मुझसे दूर चली गई, और शव के पास अपनी जगह पर फिर से बैठ गई।
एक-एक करके पड़ोसी हमें छोड़कर चले गए; बृज लाल का नाम सुनते ही सब चुप हो गए; और देखते ही देखते शव के पास सिर्फ मेरी बहन और मैं ही रह गए। मेरे दोस्तों, वह तो बस एक बच्ची थी, लेकिन वह मेरे पास बैठी रही और मेरे कंधे और पैर पर गर्म पानी से सिकाई करती रही, जब तक कि जमा हुआ खून पिघल नहीं गया और मुझे आराम नहीं मिला। काश, रोशनी बुझ जाती! पर उन्होंने मेरी बात नहीं सुनी। मैंने तब से मृत्यु के कई रूप देखे हैं, लेकिन मैंने कभी भी ऐसा कुछ नहीं देखा जिसकी तुलना मैं अपने पिता के उस रूप से कर सकूँ जो मुझे आज भी याद है। उनके चेहरे की बनावट सिकुड़ी हुई थी, होंठ कसकर बंद थे, उनके ऊपर और नीचे के दांत दिख रहे थे; उनकी आंखें खुली हुई थीं, क्योंकि वे बंद नहीं हो सकती थीं; और तेज रोशनी, जो कभी ऊपर उठती कभी नीचे डूबती, हवा के कारण हिलती-डुलती थी, ऐसा लग रहा था मानो उनके चेहरे हिल रहे हों और बड़बड़ा रहे हों, उन पर वह भयानक भाव था। मैं उनसे अपनी नज़रें नहीं हटा पा रही थी और सुबह होने तक उन्हें देखती रही।
पास के एक गाँव में अनुपस्थित नाई थोड़ी देर बाद आया और उसने मेरे घावों की जाँच की। एक गोली मेरे कंधे में घुसकर गर्दन तक पहुँच गई थी। उसने कुछ देर तक चिमटे से घाव को टटोला और मुझे असहनीय दर्द देने के बाद आखिरकार गोली को पकड़कर बाहर निकाल लिया। तब मुझे थोड़ी राहत मिली: खून खूब बह रहा था; पैर का घाव केवल मांस को भेद रहा था, और कुछ अफीम लेने के बाद मैं जल्दी ही सो गया और जब जागा तो दर्द तो था, लेकिन पहले से बेहतर महसूस कर रहा था।
'इस समय तक मेरे पिता का दफन हो चुका था, और मेरे मन में केवल एक ही शत्रु होने का अहसास रह गया था, और वह भी ऐसा शत्रु जो अपने शिकार के बेटे से भी बदला लेने से पीछे नहीं हटेगा।'
बूढ़े काज़ी कुछ भी सुझाव नहीं दे सके, हत्यारों को सज़ा दिलाने के लिए कोई उपाय नहीं सुझा सके। इसलिए, जैसा उन्होंने कहा, हम धैर्य की चटाई पर बैठ गए, पश्चाताप की पाइप पीने लगे और अपनी पीड़ा को जितना हो सके भुलाने की कोशिश करने लगे। एक साल तक सब कुछ सुचारू रूप से चलता रहा। मुझे अपने पिता के अधिकारों का उत्तराधिकारी मान लिया गया था, तभी एक दिन बृज लाल द्वारा मेरे पिता के विरोध में असली पटेल के रूप में स्थापित किया गया व्यक्ति सशस्त्र लोगों के एक दल के साथ गाँव में आया और उसे पदस्थापित करने के आदेश दिए। गाँव वाले इस अत्याचार का विरोध करने में असमर्थ थे, और मुझे नए आए व्यक्ति के सामने अपने सभी दावे छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। इस समय तक मेरी बहन अपने ससुर के घर जा चुकी थी, और मैंने अपनी माँ को उसके पीछे भेज दिया, क्योंकि मेरा कोई घर नहीं रह गया था। मैं दुखी मन से गाँव छोड़कर यह देखने गया कि क्या मेरे पिता के मित्र, साहूकार, दरबार में मेरे लिए कुछ कर सकते हैं। लेकिन वे भी बदल गए थे, जैसा कि शायद मुझे उम्मीद थी, और उन्होंने कुछ नहीं किया।

उन्होंने कहा, 'बृज लाल इतना शक्तिशाली था कि उससे छेड़छाड़ करना असंभव था; और उन्होंने मुझे न्याय की सारी उम्मीदें छोड़ देने की सलाह दी, क्योंकि मेरे पास मौजूद अपर्याप्त सबूतों के आधार पर उस पर हत्या का आरोप साबित करने का प्रयास निश्चित रूप से मेरे विनाश का कारण बनेगा। न ही उन्होंने मेरे खोए हुए अधिकारों को वापस दिलाने में मेरी मदद की; इसलिए मैं बेसहारा और मानो दुनिया में अकेला पड़ गया था। मेरे पास बस एक ही सहारा था: मैंने ठगों के पहले गिरोह में शामिल हो गया, हालाँकि मैंने पहले कभी यह पेशा नहीं अपनाया था, और तब से मैं दुनिया में अकेला और दयनीय जीवन जी रहा हूँ। मेरी माँ का निधन बहुत पहले हो चुका है। मेरी बहन अभी भी जीवित है और उसके कुछ बच्चे हैं; वह खुश है और उसे अतीत की कोई याद नहीं है। मैं कभी-कभी उससे मिलने जाता हूँ और वह स्नेह और दया के साथ मेरा स्वागत करती है। मेरे दोस्तों, आप लोगों के अलावा, इस दुनिया में वही एकमात्र व्यक्ति है जो मेरी परवाह करती है। वह मुझे होल्कर की सेवा में एक सिपाही मानती है और वह कभी भी इसके विपरीत नहीं जानेगी। आलिया की जय हो!' लेकिन, मेरे शत्रु की मृत्यु मेरे ही हाथों हुई है, और मैं संतुष्ट हूँ, क्योंकि मैंने अपना बदला ले लिया है। मेरे मित्रों, आपमें से कुछ लोग मेरा समय आने पर मुझे मेरी कब्र में दफनाएँगे, और वह समय अधिक दूर नहीं है। मैं अब तक उस कर्म के लिए जी रहा हूँ जो मैंने कल रात किया था। भविष्य में मेरे लिए कोई उत्साह नहीं है, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उस बूढ़े ठग को कितनी जल्दी दफना दिया जाता है। यही मेरी कहानी है, जैसी है वैसी ही; यदि मैंने आपका ध्यान आकर्षित किया है, और साहिबजादे को प्रसन्न किया है, तो मेरी मंशा पूरी हो गई है, और मैं संतुष्ट हूँ।

पूरी सभा उस बूढ़े व्यक्ति की कहानी से स्तब्ध और प्रभावित हो गई, और सभी ने उसके दुर्भाग्य के लिए उसे सांत्वना दी। लेकिन मुझे उनमें विशेष रुचि थी, क्योंकि वे मुझे इस बात के लिए और भी अधिक आश्वस्त कर रही थीं कि हमारे सभी कार्यों में आलिया का हाथ था, यहाँ तक कि मेरे पिता के इतिहास से भी अधिक। दोनों ही चौंकाने वाले उदाहरण थे, लेकिन ठग का उदाहरण विशेष रूप से चौंकाने वाला था। ऐसा लग रहा था मानो बृज लाल को हमारे हाथों में, बल्कि उसी के हाथों में सौंप दिया गया हो, जिस पर उसने इतना अत्याचार किया था, ताकि वह येहुनूम की शाश्वत अग्नि में जाने से पहले ही पृथ्वी पर अपना दंड भुगते। 'अब से,' मैंने मन ही मन कहा, 'कोई भी अमीर अली के बारे में यह नहीं कह पाएगा कि जब व्यक्तिगत प्रयास की आवश्यकता थी तो वह पीछे हट गया। मैं अपने पिता का अनुकरण करूँगा, और देश जानेगा और महसूस करेगा कि मैं उसकी दुष्टता पर एक कोड़ा हूँ। कोई भी मुझसे नहीं बच पाएगा; मैं अपनी ली गई शपथ का पूरी तरह पालन करूँगा, पूरी मानव जाति के साथ निरंतर युद्ध करूँगा, और, इंशाल्लाह!' वे देखेंगे कि क्या अमीर अली अपने सैनिकों को ऐसे कार्यों की ओर अग्रसर नहीं कर सकते जो वर्तमान समय के किसी भी कार्य से कहीं अधिक श्रेष्ठ हों और उन परंपराओं के समकक्ष हों जिनकी परंपराएं आज भी हमारे बीच मौजूद हैं।

उस दिन से मैंने अपने आप को उस टोली के गुरु, या शिक्षक, के अधीन कर लिया—एक बूढ़ा ठग जो उम्र से कमजोर हो चुका था, लेकिन हमारे समूह के सभी लोगों की यादों में सबसे कुशल भुट्टोटे, या गला घोंटने वालों में से एक माना जाता था। वह एक हिंदू, एक राजपूत था; और यद्यपि उसका शरीर सूखा और सिकुड़ा हुआ

था, फिर भी उसकी लंबाई, चौड़े कंधे और मजबूत नसें, जो मांस की कमी के कारण और भी विकसित हो गई थीं, यह आसानी से देखा जा सकता था कि वह अपार शक्ति और सामर्थ्य का व्यक्ति रहा होगा; और इसके अलावा, यदि रुमाल के उपयोग में उसकी महान निपुणता पर विचार किया जाए, तो उसकी श्रेष्ठ वीरता की कहानियों पर आसानी से विश्वास किया जा सकता था। मैंने अब तक उसके साथ ज्यादा मेलजोल नहीं रखा था, और एक-दूसरे के प्रति विनम्र व्यवहार के अलावा, हम एक-दूसरे को बहुत कम जानते थे; इसलिए मैंने अपने पिता से विनती की कि वे मुझे उनके पास ले जाएं, मुझे उनकी देखरेख में सौंप दें और उनसे अनुरोध करें कि वे मुझे भुट्टोटे की प्रथा में पूरी तरह से दीक्षित करें।

मेरी ओर से किए गए इस सहज प्रस्ताव से वह प्रसन्न हुआ, मेरी इच्छाओं को तुरंत मान लिया और मुझे तुरंत हुसैन और रूप सिंह, उस बूढ़े ठग की देखरेख में छोड़ दिया, जिसका मैंने पहले उल्लेख किया है और जो हुसैन के दल से संबंधित था।

मेरे पिता ने कहा, 'कुछ दिनों के लिए मैं तुमसे नहीं मिलूंगा; तुम उनके साथ रहोगी; और जब तुम मेरे पास वापस आओगी, तो मैं तुम्हारा स्वागत इस रूप में करूंगा कि तुम अगले काम में भाग लेने के लिए तैयार और इच्छुक हो।'

जिस दिन हमने गंभीरता से अपना काम शुरू किया, उसके अगले दिन रूप सिंह ने मेरे ऊपर मंत्रोच्चार किया। मैंने चार दिनों तक मांस नहीं खाया, बल्कि दूध के सिवा कुछ नहीं पिया। पवित्र कुल्हाड़ी को अनेक बलि चढ़ाई गईं; हर शगुन पर नज़र रखी गई, और जब मैं अपनी दैनिक पदयात्रा के बाद पेड़ों के नीचे बैठता था, तो शायद ही कोई पक्षी उस पर बैठता था, लेकिन उससे कोई न कोई निष्कर्ष निकाला जाता था; और सुबह पदयात्रा शुरू करते समय विभिन्न जानवरों और पक्षियों के प्रकट होने पर विशेष ध्यान दिया जाता था और उन्हें नोट किया जाता था। स्वाभाविक रूप से, मैं अपने लिए और मेरे साथ किए गए सभी कार्यों के अर्थ को लेकर बहुत जिज्ञासु था; लेकिन बूढ़े गुरु ने मुझे कुछ नहीं बताया।

उन्होंने कहा, 'मेरे पुत्र, जब मैं तुम्हारी उम्र का था, तब ये अनुष्ठान मेरे लिए किए गए थे, ताकि मैं निर्भीक और कठोर हृदय वाला, सक्रिय और चतुर बन सकूँ, जिससे मैं अपने रास्ते में आने वाले सभी को अपने जाल में फंसा सकूँ और अपने शत्रुओं से बच सकूँ; ताकि मैं भाग्यशाली बनूँ और प्रसिद्धि प्राप्त कर सकूँ। इन सभी में मैं कभी असफल नहीं हुआ। जिन दो अन्य लोगों पर मैंने ये अनुष्ठान किए हैं, वे तेजी से जमादार बनने की ओर अग्रसर हो रहे हैं, उनका कौशल और साहस ऐसा है; और तुम भी वैसे ही बनोगे; इसलिए कोई प्रश्न मत पूछो। इस बात से संतुष्ट रहो कि सब कुछ ठीक चल रहा है और मेरी पूर्ण संतुष्टि के अनुसार है, क्योंकि मैंने एक भी अशुभ संकेत नहीं देखा है।'

पांचवीं सुबह, मेरे हाथ में रूमाल थमा दिया गया; और स्नान करने, सुगंधित तेलों से लेप लगाने और माथे पर सिंदूर लगाने के बाद, भवानी के भक्त के रूप में, मुझे भुट्टोटे घोषित किया गया।

'एक बात मैं भूल गया था,' बूढ़े आदमी ने हंसते हुए मुझे कपड़ा देते हुए कहा, 'और शायद यही सबसे महत्वपूर्ण बात थी। मैंने तुम्हें इसका इस्तेमाल करना नहीं सिखाया है, और मेरे पास खुद का एक खास हुनर है, जो आसानी से दूसरों को भी सिखाया जा सकता है। तुम इसे जल्दी सीख जाओगे।'

उसने कपड़ा लिया, उसके एक सिरे पर एक बड़ी गांठ बांधी और उसमें चांदी का एक टुकड़ा जड़ दिया; उसने इस टुकड़े को अपने बाएं हाथ में पकड़ रखा था, जबकि दूसरा सिरा उसके दाहिने हाथ में था, और दोनों हाथों के बीच लगभग उतनी ही जगह थी जितनी किसी व्यक्ति की गर्दन को घेर सकती थी: दोनों बंद हाथों की हथेलियां ऊपर की ओर थीं।

'अब,' उसने कहा, 'ध्यान से सुनो; और जब तुम पीछे से कपड़ा फेंको और उसे कसकर पकड़ लो, तो अचानक अपनी उंगलियों के पोरों को गर्दन में घुमाओ, और दोनों तरफ जहाँ भी सबसे सुविधाजनक हो, ज़ोर से झटका दो। यदि कुशलतापूर्वक किया जाए, तो तुरंत मृत्यु हो जाएगी।'

मैंने कपड़ा लिया और उसे वैसे ही पकड़ा जैसे उसने निर्देश दिया था, लेकिन उसे यह पसंद नहीं आया।

'इसे मुझे वापस दे दो, ताकि मैं तुम्हें तुम्हारी गर्दन पर और अधिक सटीक रूप से दिखा सकूं,' उसने कहा।

'बिल्कुल नहीं,' मैं हंसते हुए बोला; 'आप सोच सकते हैं कि मैं एक यात्री हूँ, और बिना इरादे के भी मुझे पल भर में नीचे गिरा सकते हैं; लेकिन मैं इस विधि को पूरी तरह से समझता हूँ।'

'तो फिर इसे मुझ पर आजमाओ, अमीर अली; मैं तुम्हारे हाथों की स्थिति से देख लूंगा कि तुम्हें इसके बारे में कुछ पता है या नहीं।'

मैंने उसकी बात मान ली; बूढ़े आदमी ने अपना सिर हिलाया और हँस पड़ा।

'ऐसा कभी नहीं चलेगा; तुम इस तरह किसी बच्चे को नहीं मार सकते,' उसने कहा: 'जब तुम मेरे हाथों को अपनी गर्दन के चारों ओर महसूस करोगे, तब तुम्हें समझ आएगा।'

इसलिए मैंने यथासंभव विनम्रता से समर्पण कर दिया, हालाँकि मुझे यह विचार बिल्कुल पसंद नहीं था। उसकी ठंडी, पसीने से तर हथेलियाँ मेरी गर्दन पर महसूस करते ही मेरा खून जम गया। लेकिन उसने मुझे चोट नहीं पहुँचाई, और मुझे अपनी गलती का एहसास हो गया। मैंने उसे वैसे ही आजमाया जैसे उसने मुझे कई बार सिखाया था, और अंत में मुझे परिपूर्ण घोषित कर दिया गया।

'अब तुम्हें सिर्फ अभ्यास करना है, अमीर अली,' उसने कहा।

'इंशाल्लाह! रूप सिंह,' मैंने उत्तर दिया, 'हमें इसकी कोई कमी नहीं होगी। एक शुरुआत हो गई, और मुझे बाकी की कोई चिंता नहीं है। जैसे एक बाघ, जो एक बार इंसान का खून चख ले, तो मुमकिन हो तो दूसरा खून नहीं पीता और उसे पाने के लिए हर जोखिम उठाता है, वैसे ही मुझे लगता है कि मेरे साथ भी ऐसा ही होगा।'

और ऐसा ही हुआ। साहब! मैंने खुद को पहचाना—मैंने सच कहा था।

अध्याय VI

इसमें पाठक को यह जानकारी मिलेगी कि अमीर अली ने अपने पहले आदमी को कैसे मारा था।

नागपुर तक की हमारी यात्रा के शेष भाग में कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं हुआ, सिवाय कुछ अकेले यात्रियों की मृत्यु के, जो उस दल के एक छोटे से हिस्से के हाथों मारे गए थे, जिन्हें उस सड़क के समानांतर चलने वाली दूसरी सड़क पर भेजा गया था जिस पर हम चल रहे थे; और चूंकि मुझे उनके बारे में कोई विशेष जानकारी नहीं है, इसलिए मैं आपको, साहब, सीधे नागपुर में हमारे शिविर में ले चलता हूँ।

शहर के बाहर एक बड़ा तालाब था, जिसके किनारे पर गिरोह के अधिकांश सदस्य डेरा डाले हुए थे। मेरे पिता और कुछ अन्य लोग लूटी हुई संपत्ति को नकदी में बदलने के उद्देश्य से शहर में रुके। यह कोई कठिन काम नहीं था, क्योंकि बृजलाल की संपत्ति आसानी से बिकने योग्य थी, इसलिए हमें शहर के कई सुनारों और साहूकारों में से जल्द ही खरीदार मिल गए।

एक सहौकर से बातचीत के दौरान, मेरे पिता ने casually बताया कि वे अपने गाँव से कुछ आदमियों को लेकर हैदराबाद जा रहे हैं, और उन्हें उम्मीद है कि उन्हें वहाँ अपने भाई के अधीन नौकरी मिल जाएगी, जो उस समय के शासक राजकुमार सिकंदर जाह की सेवा में था। सहौकर ने तुरंत हमारे साथ चलने का प्रस्ताव रखा और कहा कि अगर मेरे पिता और उनके आदमी रास्ते में उनकी रक्षा करेंगे तो उन्हें अच्छा खासा इनाम मिलेगा; क्योंकि उन्होंने कहा कि वे काफी समय से ऐसे किसी सम्मानित व्यक्ति की सुरक्षा में जाने का अवसर तलाश रहे थे जो अपने कई अनुयायियों के साथ हैदराबाद जा रहा हो।

उस समय, साहब, देश की अस्थिर स्थिति और युद्धों की अनेक अफवाहों के कारण, गाँव में खाली बैठा कोई भी सम्मानित व्यक्ति, जो कुछ साथियों को अपने नेता के रूप में साथ चलने के लिए मना लेता था, हिंदुस्तान या दुखुन के किसी भी दरबार में उपस्थित होने पर सैनिक के रूप में रोजगार पाने के लिए आश्वस्त रहता था। सिंधी, होल्कर, पेशवाह, वास्तव में हर राजकुमार के पास एक बड़ी सेना होती थी जिसे अच्छा वेतन मिलता था; और किसी अन्य व्यवसाय को अपनाने की तुलना में उनके साथ सेवा करना बेहतर था। नागपुर जाते समय रास्ते में हमें ऐसे कई गिरोह मिले थे, इसलिए हमारी टोली कोई असामान्य या संदिग्ध नहीं लग रही थी, खासकर मेरे पिता के नेतृत्व में, जो एक सैनिक की तरह दिखते थे, हमेशा सुसज्जित और सजे-धजे रहते थे, एक बढ़िया घोड़े पर सवार होते थे, और किसी शहर में रहने या यहाँ तक कि वहाँ से गुजरने के अवसरों पर, उनके साथ हमेशा कुछ ठग अंगरक्षक के रूप में होते थे; और उनका रूप-रंग निश्चित रूप से वही था जो उन्होंने साहूकार के सामने खुद को बताया था।

मेरे पिता सहोकर की शर्तें तुरंत मान गए और एक-दो दिन बाद ही उन्होंने सहोकर की सेवा में हाजिर होने और हैदराबाद तक उसकी सुरक्षा करने का वचन दे दिया। मेरे पिता ने मुझे बताया कि उस दिन हुई गुप्त बैठक में सहोकर ने उन्हें बताया कि वह काफी खजाना, कुछ कीमती गहने और कुछ व्यापारिक सामान ले जा रहा है, जिससे उसे हैदराबाद में अच्छा मुनाफा होने की उम्मीद है। इतना ही नहीं, उसने उन्हें यह भी

दिखाया कि वह क्या-क्या ले जा रहा है; और साहब, आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि इतने बड़े खजाने की निश्चितता से हमारे शिविर में कितनी खुशी फैल गई थी।

हमारे दल को यथासंभव सैनिकों जैसा दिखाने के लिए, मेरे पिता ने जिनके पास हथियार, तलवारें और ढालें नहीं थीं, उनके लिए बंदूकें, तलवारें और ढालें खरीदीं और उन्हें बाँट दीं। वास्तव में, जब सभी लोगों को जाँच के लिए बुलाया गया, तो वे देखने में बहुत ही आकर्षक थे; क्योंकि इस अभियान को एक अत्यंत साहसिक कार्य माना गया था, इसलिए इसमें केवल सबसे युवा और सबसे तंदुरुस्त लोगों को ही चुना गया था। उन्हें साहूकार के साथ हुए समझौते के बारे में बताया गया था, उन्हें यथासंभव सैन्य और रौबदार रूप धारण करने की चेतावनी दी गई थी, और संक्षेप में, यात्रा के उस हिस्से के दौरान सैनिकों की तरह व्यवहार करने के लिए कहा गया था, जब उन्हें साहूकार के अंगरक्षक के रूप में रहना था।

यह शाम का समय था, और रात भर शिविर में खूब मौज-मस्ती का माहौल रहा; सामने दिख रहा, बल्कि लगभग उनकी पहुँच में आ चुका माल ही उन्हें खुश करने के लिए काफी था। शहर से कुछ नर्तकियों को बुलाया गया, और रात का अधिकांश समय उनके गीतों को सुनते हुए बीता।

हम दिनभर बेसब्री से साहूकार का इंतज़ार करते रहे, और ठीक सूर्यास्त के समय वह एक छोटी सी गाड़ी में हमारे शिविर में आया। उसके साथ एक-दो नौकर और दो-तीन छोटे टट्टू थे, जिन पर उसका तम्बू और सामान लादा हुआ था, और दस बैल अपने सारथियों सहित थे। कुल मिलाकर, उसमें आठ लोग थे, जिनमें वह भी शामिल था।

ऊमराओटी की यात्रा के दौरान हमारी उससे बहुत कम मुलाकात हुई; मेरे पिता और हुसैन कभी-कभी शाम को उसके तंबू में उसके साथ बैठते थे, और मेरी भी उससे मुलाकात हुई। वह एक लंबा-चौड़ा, भारी-भरकम आदमी था, और मैं सोचने लगा कि क्या वह मेरे पहले परीक्षण के लिए एक अच्छा विषय नहीं होगा। मैंने अपने विचार अपने पिता को बताए, और वे मुझसे बहुत प्रसन्न हुए।

उन्होंने कहा, 'मेरा इरादा तुम्हें उसका भुट्टोटे नियुक्त करने का था; वह इतना मोटा है कि कोई प्रतिरोध नहीं कर सकता, और वह तुम्हारे लिए आसान काम होगा, जिसने अभी तक अपनी क्षमता का प्रदर्शन नहीं किया है।'

इसलिए उस समय से मैंने उसे अपना पहला शिकार मान लिया।

मैं प्रतिदिन अपने प्रशिक्षक के पास जाकर अपने पेशे के बारे में नई जानकारी प्राप्त करता था और उनके बताए हर तरीके से कपड़े को संभालने का अभ्यास करता था। एक दिन उन्होंने एक अकेले यात्री को हमारे शिविर में लाने का प्रस्ताव रखा ताकि मैं पहले उस पर अपना हाथ आजमा सकूँ; लेकिन मैंने इसका विरोध किया, क्योंकि मुझे अपनी क्षमताओं पर पूरा भरोसा था और मैंने साहूकार को चुना था, इसलिए मैंने ठान लिया था कि वही पहला व्यक्ति होगा जिस पर मैं यह काम करूँगा।

मैं अपनी यात्रा का संक्षिप्त विवरण दे रहा हूँ, क्योंकि रास्ते में कुछ भी उल्लेखनीय घटित नहीं हुआ। हम कस्बे में पहुँचे और बाज़ार में ठहरे। मैं वहाँ की अपार समृद्धि और ऐश्वर्य को देखकर आश्चर्यचकित रह गया; परन्तु

आश्चर्य की कोई बात नहीं थी, क्योंकि यही वह स्थान था जहाँ हिंदुस्तान का सारा माल और निर्मित वस्तुएँ दुखुन में वितरित करने के लिए लाई जाती थीं, और जहाँ दक्षिण से मसाले, औषधियाँ और व्यापार की अन्य वस्तुएँ आती थीं, जिन्हें हिंदुस्तान के विभिन्न भागों में भेजा जाता था।

शहर साहूकारों के घरों और बड़ी-बड़ी दुकानों से भरा हुआ प्रतीत होता था; और बाजारों में वे सभी वस्तुएं प्रदर्शित थीं जिनके बारे में मैंने कभी सुना था, साथ ही बंबई में रहने वाले यूरोपीय लोगों की कई अन्य वस्तुएं भी थीं जिन्हें मैंने पहले कभी नहीं देखा था; और मैं हर दिन अपने पिता के साथ घूमता था, जो कुछ भी देखता था उसकी प्रशंसा करता था और उस पर आश्चर्य करता था।

साहूकार को कुछ दिनों के लिए इस स्थान पर अपने काम के चलते रुकना पड़ा, जिसके बाद हम फिर से रवाना हुए। उनके दल में तीन और लोग शामिल हो गए, जो कपड़ों से लदे कुछ बैलों को खींच रहे थे। हमने सुना था कि ये कपड़े सबसे कीमती किस्म के थे, बनारस के बने हुए, जो अपनी समृद्धि और सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हैं। इस अतिरिक्त दल से हमारी योजनाओं में कोई बाधा नहीं आई, क्योंकि साहूकार के हमारे साथ आने के कारण हुसैन का दल अभी भी वहीं था; और वास्तव में, अगर वह नहीं भी होता, तो मेरे पिता के दल के लोग बिना किसी परेशानी के पूरे दल को सुरक्षित कर लेते।

ऊमराओटी से मुंगलूर तक तीन पड़ाव हैं, और 'वहाँ,' मेरे पिता ने कहा, 'मैं इस मामले को खत्म करने के लिए जगह तय करूँगा। अगर मुझे ठीक से याद है, तो वहाँ से कुछ ही दूरी पर कुछ छोटी पहाड़ियाँ और खाइयाँ हैं, जो हमें शवों को छिपाने के लिए बेहतरीन अवसर प्रदान करेंगी। और तुम, हुसैन, अपने आदमियों में से पता कर लो कि कौन उस इलाके को जानता है, क्योंकि लुघाई लोगों के साथ किसी ऐसे व्यक्ति को भेजना आवश्यक होगा जो उस इलाके को जानता हो।'

जब हम अपने पहले पड़ाव, बाउम नामक गाँव पहुँचे, तो हमने पूछताछ की और पता चला कि तीन लोग पूरे रास्ते से भली-भांति परिचित थे और एक खास जगह की सिफारिश करने ही वाले थे, जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए। मेरे पिता और हुसैन ने उनसे गहन पूछताछ की; और उन्होंने एक ऐसी जगह का स्पष्ट वर्णन किया जो इस उद्देश्य के लिए बिल्कुल उपयुक्त प्रतीत होती थी, इसलिए उस जगह को तुरंत चुन लिया गया और उन लोगों को अतिरिक्त इनाम देने का वादा किया गया यदि वे मेहनत करेंगे।

अब मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि मेरा समय आ गया है; कि कुछ ही घंटों में मैं बाकी लोगों के साथ अपना स्थान ग्रहण कर लूंगा, और उनके बराबर होने का अपना अधिकार स्थापित कर लूंगा।

शायद यह कमजोरी थी, साहब, लेकिन उस समय से मैंने सहौकर की नज़र से यथासंभव बचने की कोशिश की। रास्ते में एक-दो बार उसे देखा; लेकिन अनायास ही मेरे अंदर एक सिहरन दौड़ गई, और मूर्ख की तरह, मुझे लगभग यही लगा कि काश मैं अपने गाँव वापस चला जाता। लेकिन पीछे हटना बहुत देर हो चुकी थी; मुझे अपनी प्रतिष्ठा बनानी थी, और अपने पिता, जो मुझसे सबसे अधिक प्रेम करते थे, का सम्मान सुरक्षित करना था। पीछे हटना असंभव था, और ज़रा सी भी कायरता दिखाना मेरे लिए हमेशा के लिए अपमान का कारण बन जाता। इसलिए मेरे पास अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के अलावा कोई चारा नहीं था; और सच कहूँ

तो, जब सहौकर मेरे सामने नहीं था, तो मुझे अपना कर्तव्य निभाने में कोई संकोच नहीं हुआ, बल्कि इसके विपरीत, वही इच्छा जागृत हुई जो पहले मेरे अंदर खुद को विशिष्ट साबित करने की थी।
हम मुंगलूर पहुँच गए। यह एक बड़ा शहर है, जो मुसलमानों से भरा हुआ है और प्राचीन संत मीर हयात कलुंदुर के मकबरे के लिए प्रसिद्ध है। उनकी समाधि को विशेष श्रद्धा से देखा जाता है, और हमने अपने अभियान की सफलता के लिए प्रार्थना करना अत्यंत आवश्यक समझा। तदनुसार, मेरे पिता, मैं, हुसैन और कुछ अन्य मुसलमान समाधि पर गए, और वहाँ उपस्थित मूलाहों द्वारा निर्देशित सभी रस्मों का पालन करने के बाद, हम उनमें से दो से बातचीत कर रहे थे, तभी मेरे पिता द्वारा हुसैन को किए गए एक इशारे से, जिसे उन्होंने पहचान लिया, हमें पता चला कि वे ठग थे! मैंने सोचा, यह कितना अजीब है; यहाँ हमारे धर्म के पवित्र सेवक भी हैं, हमारे जैसे ठग भी। लेकिन उनसे कुछ बातचीत के बाद, मुझे समझ आया कि मेरे पिता उन्हें हल्के में लेते थे।
जब हम मंदिर की सीढ़ियों से उतरकर बाहरी प्रांगण में आ रहे थे, जहाँ कई लोग दिनभर के लिए ठहरे हुए थे, तब मेरे पिता ने हुसैन से कहा, 'ये लोग गुंडे तो नहीं हो सकते, और हमें लोगों को इनसे जान-पहचान करने से सावधान करना चाहिए। मुझे नहीं लगता कि वे अब हमारी तरफ ध्यान देंगे, लेकिन अगर उन्हें पता चल जाए कि हमारे साथ कौन है, तो शायद वे ध्यान दें।'
'आप सही कह रहे हैं,' हुसैन ने कहा; 'शायद बेहतर होगा यदि उन लोगों को यह बता दिया जाए कि हमारे साथ कौन है।'
उन्हें तदनुसार चेतावनी दी गई: और यह पता चला कि हमने सही किया था, क्योंकि बाद में हमें पता चला कि मूला लोग बहुत जिज्ञासु थे, और वे समझ नहीं पा रहे थे कि हम बिना किसी उद्देश्य के इतनी दूर कैसे आ गए और इतनी दूर कैसे जा रहे थे; और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि यदि हमने ऐसा न किया होता और अपने इरादों का खुलासा न किया होता या उनसे सहायता न मांगी होती, तो वे या तो हमें ग्राम अधिकारियों के हवाले कर देते, या लूट के माल में इतना हिस्सा मांग लेते, जिसे हम मना करने की हिम्मत नहीं कर सकते थे, जिससे हमारा हिस्सा काफी कम हो जाता।
नमाज़ पढ़ने के बाद हम अपने ठहरने की जगह पर लौट आए और वहाँ हमने साहूकार जनजाति का एक आदमी हमारा इंतज़ार करते हुए पाया। उसने बताया कि उसका मालिक उस शाम अपने एक दोस्त के साथ वहीं रुकेगा, गाँव के बाहर हमारे शिविर में नहीं आएगा, लेकिन मेरे पिता ने कुछ आदमियों को उसके साथ सुरक्षा के लिए छोड़ दिया है; और वह रात में जल्दी निकल जाएगा, क्योंकि उसने कुछ दूरी पर स्थित बस्सिम कस्बे तक जाने का निश्चय कर लिया है, जहाँ उसका एक और दोस्त है, जिससे वह मिलना चाहता है; और यह इतनी लंबी यात्रा है, इसलिए हमें जल्दी निकलना होगा, ताकि बीच रास्ते में किसी गाँव में रुककर आराम करने का समय मिल सके।
मेरे पिता को गाँव में आदमियों को भेजने का विचार पसंद नहीं आया, कहीं गाँव के ठग उन्हें ठग न पहचान लें; फिर भी उन्हें मानना ही पड़ा, और रात होते ही कुछ आदमियों को भेज दिया गया, ताकि उनके पहचाने

जाने की संभावना न के बराबर हो। इस बीच, कब्र खोदने वालों के दल ने, जो हमसे पहले जाने वाले थे, सारी तैयारियाँ कर लीं, और सूर्यास्त होते ही वे भी निकल पड़े। चौदह लोग, जिनमें दो परिचित भी शामिल थे, उस जगह से चले गए। उन्हें अपनी तय की गई जगह का पूरा भरोसा था, और उन्होंने पहाड़ियों का वर्णन करते हुए कहा कि वे ऊँची ज़मीन के खड्डों में बदलने से बने छोटे-छोटे टीले मात्र हैं; और अगर उन्हें ठीक से याद है, तो रास्ता बहुत पथरीला था, और कई छोटी-छोटी धाराओं से होकर गुजरता था, जिनके किनारे घनी झाड़ियों से घिरे थे, और इनमें से किसी भी धारा में, जहाँ पानी न हो, वहाँ भील या कब्र तैयार की जानी चाहिए। उन्हें आगे कुछ आदमियों को तैनात करने के लिए भी कहा गया था ताकि वे सूचना दे सकें, और हम सभी अपनी-अपनी जगह ले सकें, और संकेत मिलते ही आगे बढ़ सकें।

अब यह बात सबको पता चल चुकी थी कि साहूकार की बागडोर अकेले मुझे सौंपी जाएगी, और बहुत से लोग यह देखने के लिए मेरे चारों ओर जमा हो गए कि मैं अपनी पहली परीक्षा के लिए कितना उत्साहित हूँ; सभी ने मेरा हौसला बढ़ाया, और मैं मानता हूँ कि इससे मुझे बहुत आत्मविश्वास मिला। जैसे-जैसे समय नज़दीक आता गया, मेरा मन उस काम के लिए वैसे ही तड़प रहा था जैसे किसी युवा और बहादुर सिपाही का अपनी चमकीली तलवार की पहली चमक देखने का इंतज़ार करता है। मेरे पिता चुपचाप मेरी इस स्थिति से संतुष्ट थे; उन्होंने कुछ नहीं कहा, लेकिन जब वे मुझे प्यार से देखते थे तो उनकी आँखों में खुशी झलकती थी, और मुझे लगा कि मुझे उन्हें निराश नहीं करना चाहिए।

पूरा दल इस मामले की गंभीरता से विशेष रूप से प्रभावित प्रतीत हो रहा था, क्योंकि वे समूह बनाकर बैठ गए थे, और यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति को ठीक-ठीक पता था कि उसे क्या करना है और उसके साथी के लिए क्या निर्धारित है, फिर भी वे सब आपस में चर्चा करते हुए प्रतीत हो रहे थे, जब तक कि वे एक-एक करके अलग नहीं हो गए, और प्रत्येक व्यक्ति थोड़ी देर आराम करने के लिए लेट गया, इससे पहले कि वह समय आ जाए जो उसे सक्रिय, बल्कि घातक संघर्ष में शामिल कर देगा - मेरे पिता और हुसैन भी, मेरे अलावा सभी। मैं अपने छोटे से तंबू के बाहर बैठा था, तभी रूप सिंह मेरे पास आया।

बैठते हुए उसने कहा, 'बाबा! आप कैसा महसूस कर रहे हैं? क्या आपका दिल मजबूत है और आपका खून ठंडा है?'

मैंने कहा, 'दोनों ही बातें सही हैं; कोई भी मेरे दिल को नहीं बदल सकता; और मेरे हाथ को छूकर देखो, क्या मेरा खून गर्म है?'

'नहीं,' बूढ़े व्यक्ति ने उसे अपने हाथों में लेते हुए कहा; 'ऐसा नहीं है, न ही यह कांप रहा है; यह जैसा होना चाहिए वैसा ही है। मैंने कई लोगों को अपनी पहली परीक्षा की तैयारी करते देखा है, लेकिन किसी को भी तुम्हारे जितना शांत और स्थिर नहीं देखा; लेकिन यह सब तुम्हारे ऊपर पढ़े गए पवित्र मंत्रों और तुम्हारे द्वारा संपन्न अनुष्ठानों का परिणाम है।'

'शायद ऐसा ही हो,' मैंने कहा; 'लेकिन मुझे लगता है कि उनके बिना भी मैं लगभग वैसा ही होता।'

‘अब भवानी तुम्हें क्षमा करे, अभिमानी बालक,’ उसने उत्तर दिया; ‘तुम उनकी शक्ति नहीं जानते; क्या मुझसे अधिक अभिमानी कोई हो सकता है? जन्म से राजपूत और सबसे शुद्ध गोत्र का? क्या मैंने बचपन से ही जंगली जानवरों को नहीं मारा था, या उन्हें मारने में मदद नहीं की थी? लेकिन जब मुझे एक आदमी दिखाया गया, और उसे मारने के लिए केवल रुमाल मेरे हाथों में दिया गया, तो मैं सचमुच कांप उठा; और लंबे समय तक मैं ऐसा करने की हिम्मत नहीं कर पाया। लेकिन,’ रूप सिंह ने आगे कहा, ‘तुम्हें एक और रस्म निभानी है, जिसे किसी भी हालत में नहीं छोड़ना चाहिए; जाओ, अपने पिता हुसैन और भूद्रिनाथ को बुलाओ, ताकि वे उपस्थित रहें।’

हम सब जल्द ही इकट्ठा हो गए, और गुरु आगे-आगे पास के एक खेत में चले गए। वे रुके और जिस दिशा में हमें जाना था, उस ओर मुड़कर उन्होंने प्रार्थना की मुद्रा में हाथ उठाए और पुकार कर कहा, 'हे काली! महा काली! यदि हमारे साथ चल रहा यात्री तेरे इस नए भक्त के हाथों मारा जाए, तो हमें थिबाओ की कृपा प्रदान कर!'

हम सब चुपचाप खड़े रहे; और यह जानकर आश्चर्य हुआ कि इतनी देर रात भी दाहिनी ओर एक गधे ने रेंककर आवाज़ निकाली। गुरु अत्यंत प्रसन्न हुआ।

'देखो!' उसने दूसरों से कहा, 'क्या कभी किसी भक्त की प्रार्थना इतनी पूर्ण रूप से स्वीकार की गई है? शगुन लगभग प्रार्थना के तुरंत बाद ही प्रकट हुआ।'

'शुक्र आलिया!' मेरे पिता ने कहा, 'अब सब कुछ पूरा हो गया है; वह आगे बढ़ेगा और विजय प्राप्त करेगा। अब बस तुम्हें शादी की रस्म पूरी करनी है।'

'वापस लौटने पर मैं ऐसा करूँगा,' गुरु ने कहा; और जब हम अपने शिविर में पहुँचे, तो उसने मेरा रूमाल लिया, और पहले से बंधी हुई गाँठ को खोलकर उसमें चाँदी का एक टुकड़ा रख दिया। मुझे वह रूमाल देते हुए उसने कहा,

'इस पवित्र हथियार को ग्रहण करो; इस पर भरोसा रखो; काली के पवित्र नाम से, मैं इसे तुम्हारी इच्छा पूरी करने का आदेश देता हूँ।'

मैंने इसे अपने दाहिने हाथ में प्राप्त किया और सावधानीपूर्वक इसे अपनी कमरबंद में रख लिया, ताकि यह मुझसे खो न जाए और आवश्यकता पड़ने पर यह उपयोग के लिए तैयार रहे।

हम कुछ देर तक बातचीत करते रहे, और फिर थोड़ी देर आराम करने के लिए अपने-अपने चटाइयों पर लेट गए, तभी गांव से हमारा एक आदमी आया और उसने हमें बताया कि साहूकार आगे बढ़ने की तैयारी कर रहा है, और उसने हमें चेतावनी देने के लिए उसे भेजा है।

हमने तुरंत अपने साथियों को जगाया और अपने पशुओं पर सामान लादकर सड़क के किनारे रुक गए, ताकि उसके आने का इंतज़ार कर सकें। वह जल्द ही आ गया और हम सब एक साथ आगे बढ़ गए।

रात खूबसूरत थी, सड़क शानदार थी, और हम पूरे जोश के साथ आगे बढ़ रहे थे। जो लूट हमें मिलने वाली थी, और जिस चतुराई से हमने शुरू से ही इस पूरे मामले को संभाला था, वह इसे एक उत्कृष्ट अभियान साबित

करेगा, एक ऐसा अभियान जिसका जिक्र करने में हममें से हर कोई गर्व महसूस करेगा, और जो न केवल देश में, बल्कि हिंदुस्तान के ठगों के असंख्य गिरोहों में भी सनसनी पैदा करेगा, विशेषकर उन गिरोहों में जिनसे हमें अपने अभियान के अंत में फिर से मिलना था।

हम लगभग दो कदम आगे बढ़े ही थे कि आगे चल रहे लोगों में कुछ फुसफुसाहट हुई और उसके तुरंत बाद एक जासूस हमारी ओर आता हुआ दिखाई दिया। मेरे पिता ने उसे पहचान लिया, वह उन्हीं लोगों में से एक था जिन्हें उन्होंने आगे भेजा था।

'भिल्ला मंजेह?' [क्या तुमने गड्ढा साफ कर दिया है?] उसने उत्सुकता से पूछा।

'मंजे!' उस आदमी ने कहा; 'यह साफ हो गया है, और सब तैयार है। देखो, ये छोटी पहाड़ियाँ? जैसा कि मैंने तुम्हें बताया था, इनसे एक छोटी सी धारा बहती है; और हमने एक अनोखा भील बनाया है, जमादार साहब। आप कहेंगे कि हमने अच्छा काम किया है।'

'और यह कितनी दूर हो सकता है?' मेरे पिता ने पूछा।

'लगभग आधा दर्रा पार करने के बाद,' उस आदमी ने कहा: 'यहाँ से थोड़ी दूर पर सड़क पथरीली हो जाती है, और दर्रे के ऊपर पहुँचने तक ऐसी ही रहती है - इसका फायदा उठाएँ;' और वह दूसरों के साथ चल पड़ा।

सभी सैनिकों को चुपचाप अपनी-अपनी जगह पर रहने की चेतावनी दी गई, और प्रत्येक सैनिक, या आवश्यकतानुसार दो सैनिक, अपने निर्धारित साथी के पास खड़े हो गए। आगे जानबूझकर अवरोध लगाकर, साहूकार के बैलों को उनके सेवकों सहित उस गाड़ी के पास लाया गया जिसमें वह सवार था, और सभी को एक जगह इकट्ठा करके सुरक्षित करना आसान हो गया। इन तैयारियों ने मुझे फिर से सतर्क कर दिया, और मैंने रूमाल को कसकर पकड़ लिया, हर पल यह सोचते हुए कि संकेत दिया जाने वाला है; लेकिन हम अभी भी धीमी गति से रेंगते रहे, क्योंकि सड़क संकरी थी और कंटीली झाड़ियों से घिरी हुई थी; और आगे के सैनिक यथासंभव धीमी गति से आगे बढ़ रहे थे, जिससे हम अपनी सही जगह पर बने रहे, और हर पल उस स्थान पर पहुँचने की प्रतीक्षा करते रहे।

जैसे ही हम छोटी पहाड़ियों के पास पहुँचे, जंगल काफी घना हो गया, और चाँदनी में तो वह और भी घना दिखाई दिया। हम कई ऐसी जगहों से गुज़रे जहाँ मुझे लगा कि काम को अंजाम देना ज़्यादा फ़ायदेमंद हो सकता था। लेकिन मैं गलत था, क्योंकि लुघा परिवार ने एक बेहतरीन जगह चुनी थी।

सामने से एक आदमी आया, मेरे पिता से कुछ फुसफुसाया और फिर आगे बढ़ गया: इससे मेरी चिंता और बढ़ गई। हम एक छोटी सी घाटी पार करके एक किनारे पर चढ़े और नीचे मुझे वह जगह दिखाई दी जिसके बारे में मुझे पूरा यकीन था कि वही वह जगह है। छोटी नदी के किनारे ऊँचे और ढलानदार थे, घनी झाड़ियों से ढके हुए थे जिन पर लताएँ लिपटी हुई थीं। कुछ ऊँचे पेड़ लगभग नदी के तल पर मिल रहे थे, जिसमें पानी की एक पतली सी धारा मुश्किल से दिखाई दे रही थी, जो चाँद की किरणों के कारण घने पत्तों से छनकर चाँदी के साँप जैसी लग रही थी। मैंने सोचा, वहाँ सौ चोर छिपे हो सकते हैं; और भला उस यात्री का क्या होगा जो इतनी आसानी से ऐसी जगह पर पकड़ा जा सकता है?

मेरे पिता ने 'हूशियारी!' (सावधानी!) कहकर मुझे मेरे विचारों से जगाया। यह तैयारी का संकेत था। वे गाड़ी के किनारे गए और साहूकार को बताया कि हम नदी तक पहुँच गए हैं, और नदी का किनारा इतना ढलान वाला और तल इतना पथरीला है कि उन्हें गाड़ी से उतरकर दूसरी तरफ जाना होगा, अगर संभव न हो तो। इतना ही काफी था: वह व्यक्ति गाड़ी से उतर गया और गाड़ी को ढलान से सुरक्षित नीचे जाते देख खुद भी नीचे आने की तैयारी करने लगा।

अब सारा दृश्य मेरे सामने था। बैल और उनके सारथी, ठगों के साथ, छोटी सी नदी के किनारे अव्यवस्थित समूह में थे; पुरुष चिल्ला रहे थे और अपने पशुओं को आगे बढ़ा रहे थे; लेकिन यह स्पष्ट था कि हर आदमी के पास एक ठग था जो संकेत की प्रतीक्षा कर रहा था। वे हमसे कुछ ही फीट नीचे थे, और नदी इतनी संकरी थी कि सभी के लिए उसके तल में खड़े होना मुश्किल था, खासकर जब गाड़ी तल तक पहुँच जाती थी। ऊपर, मेरे पिता, हुसैन और मैं, साहूकार, उसका एक नौकर और कई अन्य ठग खड़े थे।

मैं बेसब्री से इशारे का इंतज़ार कर रहा था; मैंने घातक रूमाल को कसकर पकड़ लिया, और मेरा पहला शिकार मुझसे बस एक कदम दूर था! मैंने उसके पीछे जाने का फैसला किया क्योंकि एक तरफ रहना बेहतर था, और देखा कि दूसरा ठग भी एक नौकर के साथ ऐसा ही कर रहा है। साहूकार सड़क की ओर एक-दो कदम बढ़ा—मैंने सहज ही उसका पीछा किया—मैं उसे इतनी ध्यान से देख रहा था कि मुझे अपने हिलने का भी एहसास नहीं हुआ। 'जे काली!' मेरे पिता ने चिल्लाया: यह इशारा था, और मैंने उसका पालन किया! पलक झपकते ही कपड़ा उसकी गर्दन के चारों ओर लिपट गया—जैसे मुझमें अलौकिक शक्ति आ गई हो—मैंने उसकी गर्दन मरोड़ दी—वह एक पल के लिए छटपटाया और गिर पड़ा। मैंने अपनी पकड़ नहीं छोड़ी, मैं उसके ऊपर घुटनों के बल बैठ गया और कपड़े को तब तक खींचता रहा जब तक मेरे हाथ में दर्द नहीं होने लगा: लेकिन वह हिला तक नहीं—वह मर चुका था! मैंने अपनी पकड़ छोड़ी और तुरंत खड़ा हो गया: मैं उत्तेजना से पागल हो गया था!—मेरा खून खौल रहा था और मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं सौ और लोगों का गला घोंट सकता था, वास्तविकता इतनी आसान, इतनी सरल थी। मेरी कलाई के एक ही मोड़ ने मुझे उन लोगों के बराबर ला खड़ा किया था जो वर्षों से इस पेशे में थे—मैंने इस काम में पहला स्थान प्राप्त कर लिया था, क्योंकि मैंने मुख्य शिकार को मार डाला था! मुझे पूरे गिरोह की प्रशंसा मिलेगी, जिनमें से कई लोगों ने मुझे बचपन में एक बच्चे की तरह समझा था।

मेरे पिता ने मुझे मेरी तल्लीनता से जगाया।

उन्होंने धीमी और दयालु आवाज़ में कहा, 'तुमने अच्छा किया है; इसका फल तुम्हें जल्द ही मिलेगा; अब मेरे पीछे आओ, हम कब्र पर चलते हैं। इससे पहले शवों को इकट्ठा कर लिया गया है, और मुझे खुद यह देखना है कि उनका उचित अंतिम संस्कार हो। इस काम को लेकर शोर होगा, और जिस रास्ते पर हम अभी चल रहे हैं, उससे निकलने में हमें काफी मशक्कत करनी पड़ेगी।'

मैं उसके पीछे-पीछे गया। हम नदी के तल में उतरे और एक आदमी हमें कब्र तक ले गया; अन्य लोग साहूकार का शव लिए हुए पीछे-पीछे आ रहे थे। हम नदी के तल पर थोड़ी दूर तक चले; और एक छोटे नाले के मुहाने के पास, जिसका तल सूखा था, कई आदमी खड़े थे।
'कब्र?' मेरे पिता ने पूछा।
एक ने कहा, 'यह ऊपर है; आपको रेंगना पड़ेगा, और वहां बहुत कांटे हैं।'
'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता,' उसने जवाब दिया; और हम उस जगह में प्रवेश कर गए।
छोटी नदी के किनारे शायद दो या तीन गज ऊँचे थे, और नदी का तल इतना संकरा था कि एक साथ केवल दो ही व्यक्ति चल सकते थे। ऊपर लताएँ और पेड़ घने थे, और किनारे इतने घने थे कि ऊपर से नीचे उतरना असंभव था। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए, जगह की उलझन बढ़ती गई, यहाँ तक कि हर कदम पर चुभने वाले काँटों से अपने कपड़ों को छुड़ाना ज़रूरी हो गया। कुछ ही क्षणों में हमें आवाज़ें सुनाई दीं, और झाड़ियों के बीच से बने एक छेद से लगभग चारों हाथों-पैरों के बल रेंगते हुए हम कब्र तक पहुँचे।
वहाँ केवल एक ही नाला था; वह नदी की लगभग पूरी चौड़ाई में फैला हुआ था; वह बहुत गहरा था और उसके दोनों सिरों पर मिट्टी, या कहें रेत, बिखरी हुई थी। लुघाई जनजाति के लोग वहाँ बैठे जंगल से काटी गई लकड़ियों को तेज़ कर रहे थे; लेकिन उस जगह के अँधेरे में वे मुश्किल से दिखाई दे रहे थे, क्योंकि ऊपर घने जंगल से चाँदनी की किरणें केवल आंशिक रूप से ही अंदर आ पा रही थीं। वे अपने कबीले की स्थानीय बोली में धीमी आवाज़ में बातें कर रहे थे, जो मुझे नहीं आती थी: मेरे पिता उनसे, या कहें उनके नेता से बात कर रहे थे।
उन्होंने कहा, 'तुमने सूझबूझ दिखाई है, और जब हम वितरण करेंगे तो हम तुम्हारे बारे में अच्छा सोचेंगे: यह एक ऐसी कब्र है जिसे सियार भी नहीं खोज सकता। मैं फिर कहता हूँ, पीर खान, तुमने यह काम ठीक से किया है, और यह अच्छा हुआ कि मैंने इसे देख लिया ताकि मैं तुम्हारे बारे में तुम्हारी योग्यता के अनुसार बोल सकूँ: लेकिन तुम्हें जल्दी करनी होगी, रात ढल रही है।'
'यह काम पूरा हो गया है, खोदावुंड,' उस व्यक्ति ने उत्तर दिया; 'हम बस एक और शव की प्रतीक्षा कर रहे हैं जिसके आने की बात कही जा रही है, और फिर तुरंत ही शव को भर दिया जाएगा।'
जब वह बोल रहा था, तभी तीन आदमी साहूकार का शव लेकर आए और उसके भारी वजन को लेकर उस पर चिल्लाने लगे।
उन्होंने कहा, 'यह उनकी आदत है; उनसे बात मत करो; केवल देखो कि वे क्या करते हैं; क्योंकि तुम्हें सब कुछ देखना होगा, ताकि तुम अपने कर्तव्यों से पूरी तरह परिचित हो सको।'
मैं चुप रहा। शव को किनारे तक घसीटकर पानी में फेंक दिया गया, साथ ही उस नौकर का शव भी, जिसे साहूकार के पास ही मार डाला गया था: उनके पेट में चीरे लगाए गए और नुकीले डंडे उनमें ठोंक दिए गए।
मेरे पिता ने कहा, 'अगर ये सावधानी न बरती जाती, तो ज़मीन फट सकती थी और सियार लाशों को बाहर खींच ला सकते थे; लेकिन इस तरह से यह असंभव है।'

जब सब काम पूरा हो गया, तो एकत्रित किए गए पत्थरों की मात्रा शवों पर डाली गई, उसके बाद कांटे डाले गए, और पूरे को रेत से ढक दिया गया, जिसे सावधानीपूर्वक चिकना किया गया।

'मुझे लगता है इतना काफी है, जमादार साहब,' पीर खान ने कहा; 'अब हम यहाँ से जा सकते हैं। ऐसा संभव नहीं है कि कोई यहाँ सेठजी या उनके लोगों को ढूंढने आए, और साहिबजादा ने देख लिया है कि हमने कितनी चतुराई से अपना काम किया है।'

मैंने कहा, 'बस करो, अगर कभी जरूरत पड़ी तो मैं खुद लुघा की तरह अभिनय करना सीख लूंगा।'

मेरे पिता ने मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया। मैं थोड़ी देर रुका और देखा कि उस जगह पर सूखी रेत डाली गई है, फिर मैं दूसरों के साथ आगे बढ़ गया। हमने झाड़ियों में जो गड्ढा बनाया था, उसे बड़ी सावधानी से बंद कर दिया गया; और एक झाड़ी की शाखा टूटकर सबसे पीछे चल रहे व्यक्ति द्वारा घसीटने से नाले की सूखी रेत में बने सभी पदचिह्न मिट गए।

अध्याय VII

एक नया रोमांच, जो एक असामान्य प्रस्तावना साबित होता है
एक शाम के मनोरंजन के लिए

बाकी लोग, बैलगाड़ी और लदे हुए बैलों के साथ, हमसे कुछ दूर आगे निकल चुके थे, जब हम उनसे मिले। हम कुछ दूर तक घने जंगल से गुज़रे, और उससे निकलकर हम एक बंजर, खाली मैदान में आ गए, जहाँ जगह-जगह झाड़ियाँ बिखरी हुई थीं। हम सब इकट्ठा हुए, आग जलाई, हुक्का पिया, और हर कोई अपनी-अपनी उपलब्धि सुनाने लगा, और लूटे गए माल को जल्दी से बाँटने की उम्मीद में खुश होने लगा।

आगे की योजना बनाना आसान नहीं था, क्योंकि बासिम से आगे निकलना ज़रूरी था, जहाँ साहूकार के दोस्त थे और शहर में उसकी गाड़ी और बैलों को पहचाना जा सकता था। मेरे पिता ने सलाह दी कि सुबह होने तक यात्रा करें, फिर सड़क के एक किनारे पर यथासंभव दूर हट जाएँ; वहाँ यथासंभव देर तक रहें, और फिर बासिम से आगे बढ़ें। इस पड़ाव पर भी लूट का बड़ा बंटवारा होना था, कम से कम उतना जितना बांटा जा सकता था; और हुसैन के दल को हमसे अलग होकर अपनी राह पर यथासंभव आगे बढ़ना था, उस दिशा में जो उन्हें बताई गई थी। तदनुसार, हम फिर से चल पड़े, और कुछ गाँवों से गुजरने के बाद सूर्योदय के समय सड़क से कुछ दूरी पर, पेड़ों के एक झुरमुट के पास रुके, जहाँ पानी का एक कुआँ था। मार्च के बाद, खाना पकाने से पहले, सभी लोग इकट्ठा हुए; और पर्याप्त मात्रा में गोर लाने के बाद, तुपुनी की रस्म अदा की गई, जैसा कि मैंने पहले बताया है। अब मुझे अन्य भुट्टोटों के साथ कंबल पर बैठने का अधिकार प्राप्त था: मैं उनके बराबर था! समारोह समाप्त हुआ, मैंने अपने पिता के निर्देशानुसार अपने रूमाल की गाँठ खोली और उसमें से चाँदी का सिक्का निकालकर कुछ रुपयों के साथ अपने गुरु को भेंट किया, साथ ही आदरपूर्वक उनके पैर भी छुए। यह मेरे दीक्षा समारोह का अंतिम भाग था। मैं भुट्टो बन चुका था, मैंने अपने साथी को मार डाला था, और मैं स्वयं को अपने सभी साथियों के बराबर मानता था।

इसके बाद मेरे पिता और हुसैन ने हमारे पिछले अभियान का सारा माल लूटकर लाया। यह बहुत ही शानदार था: सोने-चांदी की अच्छी खासी मात्रा थी; लेकिन सबसे कीमती चीजें वे गहने थे जिन्हें साहूकार हैदराबाद बेचने के लिए ले जा रहा था, और बैलों पर लिपटे हुए कपड़े और जटाएं थीं: ये सभी बेहतरीन किस्म के थे। इनका वितरण अत्यंत जटिल था और सभी को संतुष्ट करना असंभव था; इसके अलावा, पुरुषों में बाँटने पर मोतियों और हीरों का मूल्य काफी कम हो जाता। इसलिए यह तय किया गया कि साहूकार के नकद धन, खाना पकाने के बर्तन और अन्य सामान, साथ ही सबसे कम मूल्यवान वस्त्रों को, प्रत्येक दल के पुरुषों की संख्या के अनुपात में, लगभग दो बराबर भागों में बाँटा जाए; मेरे पिता को आभूषणों की जिम्मेदारी सौंपी गई, जिन्हें वे हैदराबाद में सर्वोत्तम मूल्य पर बेचेंगे, साथ ही सबसे मूल्यवान वस्त्रों की भी; और इनसे प्राप्त धन को तब तक नहीं बाँटा जाएगा जब तक हम अपने निर्धारित मिलन स्थल पर वापस नहीं पहुँच जाते।

तीन हज़ार पाँच सौ रुपये से अधिक की नकद राशि के बंटवारे से प्रत्येक व्यक्ति को अच्छी-खासी रकम मिली, जो कम से कम कुछ समय तक उसका गुजारा करने के लिए पर्याप्त थी, खासकर इसलिए क्योंकि पहले लूटे गए माल का हिस्सा लगभग खर्च नहीं हुआ था; हर कोई यथासंभव मितव्ययी जीवन जी रहा था, और ऐसा लग रहा था कि सभी इस बात को लेकर होड़ में लगे थे कि आम बंटवारे में किसे सबसे बड़ा हिस्सा मिलेगा। इतना ही नहीं, कई लोगों ने तो मामूली से मामूली विलासिता की चीजों से भी खुद को वंचित कर लिया था, और यह देखना आम बात थी कि कोई व्यक्ति घी के बिना या केवल शुद्ध पानी पीकर ही अपनी रोटी खा रहा हो।

लेकिन भूद्रिनाथ, जो दल के सबसे कुशल सदस्यों में से एक था, मेरी कही बातों का बिल्कुल अपवाद था। वह कद में छोटा, हट्टा-कट्टा और फुर्तीला था, और जमादार बनने की ख्वाहिश रखता था, और यह ख्वाहिश जायज़ भी थी। मैंने पहले भी उसका ज़िक्र पवित्र कुल्हाड़ी के वाहक के रूप में किया है। वह हम सब में सबसे साहसी था और उसने कई छोटे-छोटे अभियान चलाए थे, जिनमें उसने अपने सभी साथियों को संतुष्ट किया था।

उस आदमी को खाते देखना बड़ा आश्चर्य था। वह हर दिन, जब भी उसे मिलता, दो सेर आटे से बनी रोटियाँ, एक चौथाई सेर घी और एक बड़ा बर्तन भरकर एक सेर से ज़्यादा दूध पी जाता था। ऐसा लगता था मानो एक आदमी रोटियाँ पकाकर और बैठकर उन्हें चट कर जाएगा; लेकिन एक-एक करके सारी रोटियाँ गायब हो जाती थीं, और साथ में वह इतना पानी पीता था कि किसी भी आम आदमी का पेट भर जाता। लेकिन रोटी के ढेर के अंत में, यह साफ़ दिख रहा था कि उसके जबड़े ठीक से काम नहीं कर पा रहे थे, और उसका फूला हुआ पेट देखना लगभग कष्टदायक था: वह पहले एक तरफ, फिर दूसरी तरफ लेटता; फिर उठता और गले से नीचे की ओर जमा हुआ खाना नीचे की ओर सहलाता, और फिर बची हुई रोटी को खत्म करने की कोशिश करता, और कई कोशिशों के बाद कभी-कभी कामयाब भी हो जाता।

मैंने अक्सर देखा है कि जब भूद्रिनाथ ढेर सारी रोटियाँ खा रहे होते हैं, तो उनके सामने दो या दो से अधिक गाँव के कुत्ते बैठे रहते हैं, बड़ी लालसा से उन्हें देखते रहते हैं, इस उम्मीद में कि खाते समय उन्हें भी एक टुकड़ा मिल जाए, और हर निवाले को उनके अतृप्त मुँह में जाते हुए देखते और ईर्ष्या करते रहते हैं: पर व्यर्थ! कभी-कभी जब और खाने के सारे प्रयास विफल हो जाते हैं, तो भूद्रिनाथ आखिरी दो-तीन रोटियाँ उनके बीच बाँट देते हैं; लेकिन अक्सर खाने की इच्छा ही हावी हो जाती थी। ऐसा लगता था मानो वह कुत्तों की उम्मीदों पर खरा उतरने ही वाले हों, बल्कि वह एक टुकड़ा तोड़कर हाथ में इस तरह रखते जैसे उन्हें दे रहे हों: कुत्ता उनकी ओर बढ़ता, लेकिन वह मनचाहा टुकड़ा भी बाकी टुकड़ों की तरह गायब हो जाता, और वह अपनी उम्मीद भरी जगह पर लौट जाते, और फिर से देखने लगते जो अक्सर निराशा में ही समाप्त होता।

हम अक्सर भोजन के उनके अत्यधिक सेवन पर उनका मजाक उड़ाते थे; लेकिन वह कहा करते थे कि मेरे द्वारा बताए गए दैनिक भत्ते से कम कुछ भी उन्हें संतुष्ट नहीं कर सकता, या उन्हें अपना कर्तव्य निभाने में सक्षम नहीं बना सकता।

शाम होते-होते हमारा पड़ाव समाप्त हो गया। दोस्तों को एक-दूसरे को गले लगाते और आपसी सफलता की कामना करते हुए देखा गया। अंत में वे सभी चले गए: हमने पास ही स्थित एक ऊँची पहाड़ी की चोटी से उन्हें देखा और फिर हम भी चल पड़े।

बस्सिम जाने वाली पक्की सड़क छोड़कर हम बाईं ओर मुड़ गए, और चूंकि वह किसी बड़े कस्बे की ओर जाती हुई लग रही थी, इसलिए हमने उसका अनुसरण किया, ताकि कोई हमें देख न ले और साथ ही नए रोमांच का भी अनुभव कर सकें। चांदनी रात में हम लगभग पूरी रात सफर करते रहे, एक सुनसान इलाके से गुज़रते हुए, जो कई जगहों पर घने जंगलों से ढका हुआ था, और हम किसी गांव में केवल रास्ता पूछने या हुक्का जलाने के लिए आग लेने के लिए ही गए। वास्तव में, हमें अक्सर ऐसा करने से भी रोका गया। ऐसा प्रतीत होता था कि वहां लुटेरों का व्यापक भय था, और दीवारों और फाटकों पर आमतौर पर हथियारबंद लोग तैनात रहते थे, क्योंकि हमारे आने की सूचना कुत्ते दे देते थे। लेकिन हमसे यह नहीं पूछा गया कि हम कौन हैं या कहां जा रहे हैं, हालांकि शायद हमारी संख्या देखकर किसी को शक हो सकता था।

इस तरह, और यह जाने बिना कि हमने जो रास्ता चुना है वह हमें कहाँ ले जाएगा, हम कुछ दिनों तक यात्रा करते रहे; और चूंकि हमने जानबूझकर मुख्य सड़कों से परहेज किया था, इसलिए यह उम्मीद नहीं थी कि हमें किसी तरह का रोमांच मिलेगा, या कोई यात्री मिलेगा जिसे हम अपने साथ शामिल कर सकें। आखिरकार हम उस सड़क से चौड़ी सड़क पर आ गए जिस पर हम चल रहे थे; और चूंकि हमने अपने पिछले काम से जुड़े सभी खतरों को बहुत पीछे छोड़ दिया था, हमने उस पर चलने का फैसला किया, इस उम्मीद में कि यह हमें हैदराबाद या उसकी दिशा में किसी बड़े गाँव की ओर ले जाएगी, जहाँ से हम किसी अच्छी तरह से चलने वाली सड़क पर पहुँचकर अपना काम जारी रख सकें। जैसा कि हुआ, हमने पूरे मौसम के लिए भी अच्छा खासा माल इकट्ठा कर लिया था; लेकिन मुश्किल से दो महीने ही बीते थे, और निष्क्रिय रहकर हैदराबाद तक जाना हमारे लिए संभव नहीं था।

कुछ घंटों तक सड़क हमें आगे ले जाती रही, फिर बड़े-बड़े आम के बाग दिखाई दिए, जिनमें कहीं-कहीं हिंदू मंदिरों के सफेद शिखर झांक रहे थे, जिससे हमें आगाह हुआ कि हम किसी महत्वपूर्ण स्थान के करीब पहुँच रहे हैं। वह स्थान उमरखेर कस्बा निकला, जो एक समृद्ध स्थान था और चारों ओर गेहूं और अन्य प्रकार के अनाजों की भरपूर खेती से घिरा हुआ था।

मेरे पिता ने कहा, 'अगर हमें यहाँ कुछ शिकार नहीं मिला तो यह हमारी ही गलती होगी। शहर के दूसरी तरफ डेरा डाले होने के कारण, सोथाई लोगों को बाज़ारों से सावधानीपूर्वक गुज़रना होगा, और आज शाम तक हमें इतना माल मिल सकता है जिससे यहाँ रुकने का हमारा खर्च निकल जाए।'

सोथा का कर्तव्य वह था जिसे मुझे भी सीखना पड़ा: पुरुष भुट्टोटे के कर्तव्य से भी अधिक सोथा में उत्कृष्टता प्राप्त करने पर गर्व करते थे; क्योंकि इसके लिए अत्यंत चतुराई, छल-कपट की क्षमता, चरित्रों और वेशों को बनाए रखने की कुशलता, मीठी वाणी और विनम्र व्यवहार की आवश्यकता होती थी। भूद्रिनाथ इन सभी गुणों का उत्कृष्ट संयोजन थे; जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, वे कद में छोटे, हट्टे-कट्टे और फुर्तीले व्यक्ति थे, लेकिन

बेहद आकर्षक और मिलनसार स्वभाव के थे। उनका यह निरंतर दावा था कि उन्होंने कभी भी किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं चुना जिसे उन्होंने अपने हाथों से गला घोंटकर न मारा हो।
हम कस्बे से गुजरे और खुद को हिंदुस्तान के व्यापारी बताया; और जब टोल कलेक्टर ने कपड़ों के गट्ठे रोके तो मेरे पिता ने उन्हें तुरंत दिखा दिया और खुशी-खुशी उन पर लगने वाला शुल्क चुका दिया, जिससे हमारी बात सच साबित हुई, अधिकारियों ने हमारे साथ अच्छा व्यवहार किया और हमें डेरा डालने के लिए एक बढ़िया जगह दिखाई।
'अब अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन लो,' भूद्रिनाथ ने कहा, 'और मेरे साथ शहर चलो। याद रखो, तुम्हारे पिता व्यापारी हैं, तुम उनके अंगरक्षक जमादार हो, मैं तुम्हारा एक सम्मानित व्यक्ति हूँ; हम पीर खान को अपने साथ ले जाएँगे, जो लुघा होते हुए भी एक उत्कृष्ट सोथा है, और जब वह सज-धज कर हथियारबंद होता है तो एक सम्मानित व्यक्ति होता है: और अगर हमें कोई साथ न मिले तो हमारी मुश्किल बढ़ जाएगी।'
हमारा भोजन जल्दी ही पक गया और हमने उसे खा लिया। सावधानीपूर्वक कपड़े पहनने के बाद हम रोमांच की तलाश में शहर की ओर चल पड़े। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि अनुभवी सैनिक अपने लक्ष्य को देखते हुए कितनी बेपरवाही से आगे बढ़ रहे थे; क्योंकि मेरे लिए इसमें उतना ही रोमांच था जितना कि मैंने पहले से सीखे और अभ्यास किए हुए कामों में। मैं स्वीकार करता हूँ कि हमारा पहनावा उल्लेखनीय था। मैं अपने कपड़ों और हथियारों की वजह से बहुत ध्यान आकर्षित कर रहा था, जो मेरे द्वारा अपनाए गए रूप के अनुरूप अत्यंत समृद्ध थे। साहब, मेरा चेहरा तब अब की तुलना में कहीं अधिक गोरा था, मूंछें अच्छी तरह से विकसित थीं, और मेरा शरीर, हालांकि शायद थोड़ा दुबला था, भविष्य की शक्ति और सामर्थ्य का वादा करता था। अपने साथियों की तुलना में, मैं खुद को उनसे रूप-रंग में श्रेष्ठ महसूस कर रहा था; और मेरे थोड़े से क्षम्य घमंड ने मुझे एक ऐसा आभास और शान दी जो मेरे द्वारा चुने गए सैन्य पेशे के लिए अनुपयुक्त नहीं थी।
हम कस्बे में दाखिल हुए और चौरी की ओर बढ़े, जहाँ कोतवाल और कुछ सम्मानित लोग बैठे थे, और हमेशा की तरह कुछ हथियारबंद लोग उनके चारों ओर तैनात थे। जब हम उनके पास से गुज़रे तो हमें अंदर आने का न्योता दिया गया और बड़े ही आदरपूर्वक हमारा स्वागत किया गया। मुझे सम्मान की सीट पर बैठाया गया, जबकि भूद्रिनाथ कुछ दूरी पर अपनी जगह पर बैठ गए। एक बेतरतीब बातचीत शुरू हुई। मेरे पिता का नाम पूछा गया, वे कहाँ जा रहे थे, व्यापार के लिए क्या लाए थे; हम कौन थे, और संक्षेप में हमारी यात्रा का उद्देश्य क्या था, जो कि उन्होंने बताया कि कम से कम हिंदुस्तान से एक सुनसान सड़क से आ रही थी। जिस लहजे में यह सवाल पूछा गया, वह मुझे इतना संदिग्ध लगा कि एक पल के लिए मुझे लगा कि हम पर शक किया जा रहा है, और मैं जवाब देने की कोशिश कर ही रहा था कि भूद्रिनाथ ने मुझे रोक दिया।
उन्होंने प्रश्न पूछने वाले व्यक्ति को संबोधित करते हुए कहा, 'मैं यह बताता हूँ कि हम नागपुर नामक उस अपवित्र लोगों के निवास स्थान पर भटक गए थे। या तो हमें धोखा देने के इरादे से, या (ईश्वर ही जानता है कि ऐसा हो सकता है, मैंने ऐसी बातें सुनी हैं) शायद हमें लूटने के इरादे से, जिन लोगों से हमने जानकारी मांगी, उन्होंने हमें बताया कि सबसे अच्छा और सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाला मार्ग इसी स्थान से होकर

जाता है; और वास्तव में जिस नगर में आप रहने का सौभाग्य प्राप्त कर रहे हैं, वह अत्यंत सुंदर और उपजाऊ स्थान है, और स्पष्ट रूप से एक अत्यंत बुद्धिमान शासक के हाथों में है, जो अपनी प्रजा की रक्षा करता है। हे जमादार साहब, क्या मैंने सच नहीं कहा?'

'हाँ,' मैंने कहा, 'आपने सही कहा है; और अब तक हमें जो दयालुता देखने को मिली है, उससे पता चलता है कि राज्यपाल के सेवक अपने स्वामी के योग्य हैं। वास्तव में, ऐसे हाथों में नगर का समृद्ध और सुंदर होना आश्चर्य की बात नहीं है; और कोतवाल की वाणी इतनी मधुर है कि हम उस महान व्यक्ति की दूरदर्शिता से बहुत प्रभावित हैं जिसने उन्हें चुना है।'

कोतवाल ने कहा, 'आपकी कृपा कभी कम न हो; आपका दास इन प्रशंसाओं के योग्य नहीं है; वह तो सबसे तुच्छ है। यदि स्वामी उस परोपकारी को देख पाते, जिसके सानिध्य में वे निवास करते हैं, तो वे निश्चित रूप से कहते कि हैदराबाद का दरबार हिंदुस्तान के किसी भी दरबार से तुलनीय है, क्योंकि इसने उत्कृष्टता का ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया है।'

मैंने कहा, 'अच्छा, हमें आपके इस संरक्षक के चरणों में नज़ूर करने में अत्यंत प्रसन्नता होगी, और निःसंदेह हम उनमें एक आदर्श कुलीन व्यक्ति को देखेंगे, एक ऐसा नमूना जो हमें दुखुन की राजधानी में देखने को मिल सकता है। हमें कब उनसे मिलने की अनुमति मिल सकती है?'

'शाम को, नमाज़ के बाद,' हमारे परिचित ने उत्तर दिया; 'तभी इन गरीब नास्तिक किसानों को न्याय मिलता है, और दरबार नर्तकियों के एक समूह की उपस्थिति और दिव्य संगीत से जीवंत हो उठता है, जिन्हें मेरे स्वामी शहर से अपने साथ लाए हैं।'

मैंने कहा, 'हम आएंगे; और मैं आपसे निवेदन करता हूं कि आप अपने स्वामी को सूचित कर दें कि हमने उनसे मिलने का आपका निमंत्रण स्वीकार कर लिया है; बल्कि, हम उन्हें अपना सम्मान अर्पित करने के इच्छुक हैं।'

मेरे बोलते ही एक सभ्य दिखने वाला बुजुर्ग व्यक्ति चौरी में दाखिल हुआ; वह हिंदू था और व्यापारी जैसा लग रहा था। उसने कुछ दबंग लहजे में आराम करने के लिए जगह मांगी और कहा कि अगर उसे तुरंत जगह नहीं मिली तो वह जाकर कस्बे के मुखिया से शिकायत करेगा।

उस व्यक्ति के व्यवहार से बूढ़े कोतवाल का मनोबल जागृत हो गया और उसने स्पष्ट शब्दों में घोषणा कर दी कि जब तक उससे विनम्रतापूर्वक न पूछा जाए, वह एक इंच जमीन या खाली दुकान भी नहीं देगा।

'देखिए, सज्जनों,' उसने हमसे कहा; 'मैं आप लोगों से हमारे बीच फैसला करने को कहता हूँ; मैं पैगंबर की कसम खाता हूँ, मुझे उसकी ज़रा भी परवाह नहीं है; मैंने उससे कहीं बेहतर बीस हज़ार लोग देखे हैं; और अगर वह शिकायत करने जाता है, तो उसे जाने क्यों दें; उसे कोड़े मारकर यहाँ से भगा दिया जाएगा। उसके जैसे लोग हर दिन सैकड़ों की संख्या में आते हैं, और भला कौन उनकी देखभाल करने की जहमत उठाएगा?'

बूढ़े व्यापारी ने कहा, 'तुम और तुम्हारा मालिक शैतान के ही अंश हो सकते हो। जब से मैंने निज़ाम के इलाके में कदम रखा है, मेरे साथ ऐसा ही बर्ताव किया जा रहा है। लेकिन यह तो सिर्फ़ सुनी-सुनाई बातें हैं; एक भी

रात ऐसी नहीं गुज़री जब चोरों का डर सताता न रहा हो; और भगवान जाने, अगर मुझे कोई सुरक्षा मिलती, तो मैं तुम्हारे अमीर के ज़नाना में सोने की बजाय तुम्हारी इन घटिया दीवारों के बाहर सोना ज़्यादा पसंद करता। तुम्हारे मालिक बदमाश हैं: मुझे कल दिए गए दाम से लगभग दुगने दाम पर अनाज देने से मना कर दिया जाता है; मुझे रात में पनाह नहीं दी जाती। भगवान के नाम पर, मैं क्या करूँ? सज्जनों,' वह हम सब से चिल्लाकर बोला, 'मैं क्या करूँ?'

जब मैं बोलने ही वाला था, तभी भूद्रिनाथ ने जवाब दिया, और मुझे आश्चर्यचकित करते हुए उसने गुस्से से जवाब दिया।

'तुम क्या चाहते हो? हे असंतुष्ट व्यक्ति! मुझे लगता है कि तुम्हें कोई जगह दी गई है, और तुमने उसे पर्याप्त नहीं समझा; या तुम अफीम के नशे में हो? या यात्रा के बाद भूख ने तुम्हारा मिजाज बिगाड़ दिया है? जाओ, बाजार जाओ; शुक्र मनाओ कि तुम्हें कोई भी जगह मिल सकती है; और अगर कोई तुम्हें आश्रय न दे, तो सड़क पर लेट जाओ; याद रखो कि तुमसे पहले भी कई बेहतर लोग ऐसा कर चुके हैं।'

वह आदमी स्तब्ध खड़ा रह गया: उसने पहले हमारी ओर देखा, फिर कोतवाल और उसके आदमियों की ओर, जबकि कोतवाल के साथियों में उसकी हार पर खुशी के भाव दौड़ रहे थे: 'वाह!' 'शानदार लोग!' 'इसे तो गाँव से निकाल देना चाहिए,' इत्यादि। अंत में, बिना कुछ कहे, उसने अपनी पगड़ी फेंक दी और पूरी ताकत से चिल्लाते हुए बाहर भाग गया।

हम सब ज़ोर से हंस पड़े। मैंने कोतवाल से कहा, 'यह तो बड़ा अजीब आदमी है; मुझे लगता है कि आपको ऐसे लोग अक्सर परेशान करते होंगे; लेकिन इसे वापस बुला लीजिए, हम इसे शर्मिंदा कर देंगे, और मैं आपसे विनती करूंगा कि इसे रहने के लिए जगह दें।'

'जैसी आपकी इच्छा,' उसने उत्तर दिया; 'आपके हस्तक्षेप के बिना मैं उसके बारे में परेशान नहीं होता। मुझे ऐसे कई लोगों से निपटना पड़ता है। एक दिन कोई आता है और कहता है कि उसे हर कोई ठग रहा है; दूसरा कहता है कि उसे खाने को कुछ नहीं मिल रहा, जबकि शायद दोनों ही इतने कंजूस हैं कि खरीद भी नहीं सकते; तीसरा कहता है कि उसके पास रहने की जगह नहीं है, जबकि वह दुकानदार द्वारा अपनी दुकान के इस्तेमाल के लिए माँगी गई मामूली रकम भी नहीं देता। फिर, तीसरा शहर में मिलने वाली हर स्वादिष्ट चीज़ चाहता है, और वह इसलिए क्रोधित है क्योंकि उसे वो नहीं मिल रही; जबकि अगर वो सारी चीज़ें उसके सामने हों, तो भी वो एक भी नहीं खरीद सकता। संक्षेप में, महोदय, यात्रियों की सनक, मूर्खता और मैं कहूँ तो अत्याचार का कोई अंत नहीं है, और जो मुझे, शायद, अलौकिक शक्ति वाला समझते हैं, और सोचते हैं कि मेरे पास जिन्न हैं जो उनकी हर मूर्खतापूर्ण इच्छा पूरी कर सकते हैं।'

मैंने कहा, 'आपकी स्थिति वाकई आसान नहीं है, और हर किसी को खुश करना असंभव है; लेकिन देखिए व्यापारी आ रहा है;' और वह अंदर चला गया।

कोतवाल ने कहा, “अरे, अपनी पगड़ी उठा लो, और क्रोधित मत हो; तुम बच्चे नहीं हो जो भले लोगों से झगड़ा करो; क्या तुमने कभी यात्रा नहीं की है कि इस तरह क्रोधित होकर हमारी दाढ़ियों पर धूल फेंक रहे हो? ईश्वर

के नाम पर, अपनी पगड़ी उठा लो; और तुममें से कोई जाकर देखे कि उस भले आदमी को रहने की जगह मिल जाए।"

वह आदमी एक पल के लिए असमंजस में दिख रहा था, फिर उसने पगड़ी उठाई और नाराज़ होकर अपने साथ आए व्यक्ति के साथ बाहर चला गया। भूद्रिनाथ ने मुझे इशारा किया और हम विदा हो गए। हम मुश्किल से बाहर निकले ही थे कि उसने कहा, 'वह आदमी हमारा है; अब देखो मैं उससे कैसे निपटता हूँ। मुझे पूरा यकीन है कि उसके साथ कुछ ही लोग हैं, और उसे आसानी से निपटा दिया जाएगा।'

हमने उस पर और उसके सेवक पर नज़र रखी और उसे एक जर्जर सी दिखने वाली झोपड़ी पर कब्ज़ा करते हुए देखा, जिसमें असंतोष के कई लक्षण दिखाई दे रहे थे। हम जानबूझकर वहीं रुके रहे, जब तक कि हमने यह नहीं देखा कि वह अकेला है, और फिर हम उसके पास गए।

'राम! राम! सेठजी,' भूद्रिनाथ ने उन्हें संबोधित करते हुए कहा; 'ये कैसी जगह है जहाँ इन्होंने आपको रखा है, सूअरों के लेटने लायक भी नहीं! वो बदमाश कोतवाल, अपनी मीठी बातों के बावजूद, पक्का धूर्त है, मैं कसम खाता हूँ; और मैंने सुना है,' उन्होंने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए आगे कहा, 'कि उसने कई चोरों को काम पर रखा हुआ है, जिनका काम रात में यात्रियों के सिर के नीचे से उनके थैले छीन लेना है, और जब बेचारा आदमी सुबह शिकायत करने जाता है तो उसे पीट-पीटकर गाँव से बाहर निकाल दिया जाता है। क्या हमने ऐसा नहीं सुना, जमादार साहब?'

'जी हां, बिलकुल,' मैंने कहा; 'क्या आपको वह आदमी याद नहीं है जो हमसे कुछ दूर वाले गांव में मिला था और जिसने हमें उमरखेर के चोरों से सावधान किया था, और बताया था कि उसका सारा सामान लूट लिया गया था और फिर उसे मुश्किल से एक चिथड़ा देकर वहां से निकाल दिया गया था? तभी मैंने बाहर डेरा डालने का फैसला किया, जहां हमारे अपने पहरेदार होंगे, और जहां अगर हमें लूटा जाता है, तो यह हमारी अपनी गलती होगी।'

'भगवान मेरी मदद करें! मैं बर्बाद हो गया हूँ!' व्यापारी चिल्लाया; 'मुझे नहीं पता कि क्या करूँ;' और उसने मुट्ठी बांधकर अपना सिर पीटना शुरू कर दिया। इन थैलों में मेरी सारी दौलत है; मैं अत्याचार से बचने के लिए सूरत से भागा था, और लगता है कि जितना दूर भागता हूँ उतना ही बुरा बर्ताव झेलता हूँ। दो रात पहले की बात है—नींद न आने के कारण आँखें फटी रह गईं, और जब और बैठ नहीं सका तो लेट गया और आँखें बंद कर लीं—तभी मेरे थैले छीनने की कोशिश की गई; और जब मैं जागा, तो चोर मेरे दो खाना पकाने के बर्तन और मेरे कपड़े छीन ले गए। मैं क्या कर सकता था? अगर मैं उनके पीछे भागता, तो कोई और मेरे थैले लेकर भाग जाता; इसलिए मैं चुपचाप बैठा रहा और मदद के लिए चिल्लाता रहा। गाँव वाले जल्दी ही मेरे पास इकट्ठा हो गए, और जब मैंने उन्हें सब कुछ बताया, तो एक बदमाश, जो खुद को पटेल कहता था, ने मुझे अपने गाँव को बदनाम करने के लिए गालियाँ दीं; और मुझे सचमुच फाटकों के बाहर धकेल दिया गया, और अंधेरे में अपना रास्ता खोजने के लिए छोड़ दिया गया, इस क्षणिक भय के साथ कि मेरा पीछा किया जाएगा, और शायद मुझे लूट लिया जाएगा और मार डाला जाएगा। ओह, मेरा दुर्भाग्य!' वह चिल्लाया; 'यह मुझे कहाँ

नहीं ले जाएगा! मैं कितना मूर्ख था कि मैंने अपना देश छोड़ दिया, और इस जंगली देश में मिले अभागे दरिंदों का शिकार बन गया।'

'खैर,' भूद्रिनाथ ने सहानुभूति भरे स्वर में कहा, 'तुम्हारे साथ बहुत बुरा बर्ताव हुआ है, और तुम्हें यहाँ के हकीम से शिकायत करनी चाहिए; सुना है कि वह एक न्यायप्रिय व्यक्ति हैं, भले ही उनके अधीन लोग चोर और बदमाश हों।'

'नहीं, नहीं, नहीं!' वह आदमी चिल्लाया; 'जाओ और शिकायत करो! और अपना आखिरी रुपया भी गंवा दो! वह बड़ा आदमी एक नज़ूर मांगेगा, और हर आश्रित एक मांगेगा; अगर मैंने मना करने की हिम्मत की, तो मेरी हालत अभी से भी बदतर हो जाएगी। नहीं, नहीं! मुझे अभी तक लूटा नहीं गया है, और भगवान की कृपा से, अगर मैं इस शहर से निकल सका, तो मैं उसी रास्ते पर जा रहे कुछ सम्मानित लोगों के समूह में शामिल हो जाऊंगा।'

भूद्रिनाथ मेरी ओर मुड़ा और मुझे कुछ कदम किनारे ले गया। उसने कहा, 'चारा फंस गया है; हमारा जाल अब उसे जकड़ चुका है; तुम्हें इसे कसकर खींचना होगा।'

'कैसे?'

'उसे हमारे शिविर में आमंत्रित करके; मैं यह प्रस्ताव रखूंगा, और तुम पहले तो असहमति जताने का नाटक करोगे, और फिर कुछ समझाने-बुझाने के बाद मान जाओगे। समझे?'

'हाँ, मैं करता हूँ;' और हम वापस मुड़ गए।

जब मैं मुँह फेरकर दूसरी तरफ मुड़ा, तब भूद्रिनाथ ने फिर उससे बात की। उन्होंने कहा, 'सेठजी, आप एक बदकिस्मत आदमी हैं, और अगर हम आपको इस जगह से नहीं निकालेंगे तो यकीनन आपका सब कुछ लूट लिया जाएगा। आपको हमारे शिविर में आकर ठहरना होगा; यानी, अगर जमादार साहब इजाज़त दें तो: लेकिन सच तो यह है कि हम बहुत सावधान हैं, और किसी को भी पास नहीं आने देते, क्योंकि हम बनारस से हैदराबाद एक व्यापारी को ले जा रहे हैं, जिसके पास बहुत सारा सामान है।' बेचारा रोते हुए बोला, 'भगवान के लिए! अपने माता-पिता के लिए! अपने बच्चों के लिए, मेरे लिए सिफारिश कीजिए! मुझे यहाँ लूटे जाने और मारे जाने से बचाइए।' ऐ! जमादार साहब,' उसने मुझे कपड़े से पकड़ते हुए कहा, 'आप मेरे पिता और माता हैं; आपका एक शब्द, और मैं सुरक्षित हूँ, और मेरा बेचारा माल अपने गंतव्य तक पहुँच जाएगा।' भगवान जाने, अगर रास्ते में मुझे कुछ हो गया तो मेरा घर उजाड़ हो जाएगा, मेरे मालिक मेरी पत्नी और बच्चों को छीन लेंगे। जमादार, तुम मुझे इससे बचा सकते हो; तुम मुझे इन भयों से बचा सकते हो, जो मुझे सबसे ज्यादा दुखी करते हैं और मेरी आत्मा को खा रहे हैं!

'अरे! भले आदमी!' मैंने ज़मीन पर थूकते हुए कहा, 'इतने दीन मत बनो। इंशाअल्लाह! ईश्वर की कृपा से मैं एक व्यापारी के सरदार की रक्षा कर सकता हूँ, और तुम तो इतने गरीब हो कि सोच भी नहीं सकते। उनके नाम पर हमारे साथ चलो, हम तुम्हारा ख्याल रखेंगे; हम खुद हैदराबाद जा रहे हैं, और तुम नौकरों के बीच रह सकते हो; पीर खान, कृपया इस आदमी को हमारे पास ले आओ।'

पीर खान वहीं रहे और हम अपने शिविर में लौट आए। रास्ते में हमने तय किया कि उनकी मृत्यु शाम होने से पहले या गोधूलि बेला होते ही हो जानी चाहिए, और फिर हम शहर जाकर हकीम के संध्या दरबार में शामिल होंगे।

कुछ ही समय में हमने व्यापारी और पीर खान को एक अन्य व्यक्ति के साथ दो भारी बोझ से लदे टट्टुओं को हमारे शिविर की ओर ले जाते हुए देखा।

'आओ, यह तो मेरी उम्मीद से कहीं ज्यादा है,' मेरे पिता ने कहा, 'ये दो हैं; और दो अच्छी तरह से लदे हुए टट्टुओं से कुछ न कुछ अच्छा जरूर मिलेगा: हम यह उम्मीद नहीं कर सकते कि यह पिछले काम जितना लाभदायक होगा, लेकिन इससे काफी कुछ हासिल हो सकता है।'

वे लोग पास आए और व्यापारी को मेरे पिता के सामने पेश किया गया।

उन्होंने मुझसे कहा, 'आपकी दयालुता के कारण ही मेरे पास सब कुछ है, और यदि इन बेचारे थैलों को भी आपके द्वारा संरक्षित शेष माल के साथ रहने की अनुमति दे दी जाए, तो यह आपकी कृपा को और बढ़ा देगा और ये थैले सुरक्षित रहेंगे।'

'ज़रूर,' मैंने जवाब दिया, 'आप अपने जानवरों को उतार सकते हैं; और सामान का ढेर भी है, आप अपने थैले उसके ऊपर रख सकते हैं।'

उस टोली के आदमियों का व्यवहार देखना उत्सुकता जगाने वाला था; ऐसा लग रहा था मानो उन्हें सहज ज्ञान था कि उन्हें किस उद्देश्य से शिविर में लाया गया था। उनके व्यवहार में जरा भी बर्बरता नहीं थी, जैसा कि शायद उम्मीद की जा सकती थी; इसके विपरीत, हर कोई अजनबियों के प्रति अत्यंत विनम्र और ध्यानपूर्वक था; एक ने टट्टुओं को रगड़ने की पेशकश की, दूसरे ने खाना पकाने के लिए जगह बनाने की, तीसरे ने शहर से घास लाने की, या उनके भोजन के लिए जो कुछ भी आवश्यक हो, लाने की पेशकश की। थोड़ी ही देर में हमने व्यापारी के चेहरे पर चिंता और घबराहट के भाव को प्रसन्नता में बदलते देखा, और शाम होने से बहुत पहले ही दोनों आदमी ठगों के एक समूह में शामिल हो गए, उनकी कहानियाँ सुन रहे थे और खुद भी अपने कारनामों का बखान कर रहे थे। उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि क्या तैयारियाँ चल रही थीं, और कुछ ही घंटों में वे जीवितों में गिने जाने से परे हो जाएँगे।

अध्याय आठ

इसमें पाठक को यह जानकारी मिलेगी कि अमीर अली ने शाम कैसे बिताई।

इसी बीच, हमेशा की तरह मेरे पिता के तम्बू में परामर्श हुआ और हमें अलग-अलग भूमिकाएँ सौंपी गईं। भुट्टोटे का कार्य मुझे सौंपा गया और व्यापारी का काम मेरे हाथ में दे दिया गया। अब मेरे मन में पहले जैसी कोई झिझक नहीं थी; मैं बस अपने कौशल को निखारने और इस विशेष हुनर को पूरी तरह से विकसित करने के लिए उत्सुक था। मेरे सामने वे लोग थे जिन्हें मैं सबसे अधिक सम्मान देता था, और उनके बराबर या उनसे आगे निकलना ही मेरी एकमात्र महत्वाकांक्षा थी। मैंने उत्कृष्टता प्राप्त करने का दृढ़ निश्चय कर लिया था, और इस पूरी प्रक्रिया का उत्साह मेरे लिए एक शक्तिशाली प्रेरणा साबित हुआ। इस मामले में भी मैंने एक शोथ (पुरुष) के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी; और मुझे इस बात पर गर्व होने लगा कि मैंने भूद्रिनाथ जैसे पूर्णतः निपुण व्यक्ति का साथ दिया था।

हमने शाम की नमाज के तुरंत बाद उन आदमियों को मौत के घाट उतारने पर सहमति जताई।

हमारे शिविर में लगभग बारह वर्ष का एक लड़का था, जो ठगों में से एक का पुत्र था। वह बहुत सुंदर गाता था और उसका पिता सारंगी पर उसका साथ देता था। हमारी यह प्रथा थी कि नमाज़ के बाद एक शाम हम उस लड़के को बुलाते और उसके गीतों का आनंद लेते। वह इतना अच्छा गाता था कि अक्सर हमसे अच्छी खासी रकम वसूल लेता था। इस अवसर पर उसे बुलाया गया और जब उसने गाना शुरू किया, तो व्यापारी को संदेश भेजा गया कि वह भी हमारे भोज में शामिल हो। वह आया, और उसका नौकर भी। नौकर एक हट्टा-कट्टा, मूंछों और मूंछों वाला व्यक्ति था, और उसकी बोली से मैंने अनुमान लगाया कि वह मैवार का राजपूत है, जहाँ के निवासी कुलीन और वीर होते हैं। जब वह अपनी जगह पर बैठा, तो मैंने उसे देखा और मन ही मन ठान लिया कि व्यापारी की जगह उसे ले लूँगा। भूद्रिनाथ का पद उसे सौंपा गया था; और जब मैंने अपनी और उसकी क्षमताओं पर विचार किया, तो मुझे यकीन हो गया कि अगर उसे इसके योग्य समझा जाता है, तो मैं उससे श्रेष्ठ हूँ, भले ही मुझे ऐसा न समझा जाता हो। एक और विचार आया, और मेरा निर्णय पक्का हो गया; मैंने भुद्रिनाथ के सामने अदला-बदली का प्रस्ताव रखा।

'जैसी आपकी मर्ज़ी,' उसने दबी आवाज़ में कहा, 'लेकिन सामने वाला तो बहुत ही ताकतवर है; ये मेवारी राजपूत तोते की तरह फुर्तीले हैं, और सच कहूँ तो मुझे उससे निपटने का ज़िम्मा मिलने का ख्याल भी बिल्कुल पसंद नहीं आया; लेकिन कोई चारा नहीं है, और अगर मैं नाकाम भी हो गया तो बीस और लोग हैं जो उसे खत्म कर देंगे। लेकिन क्या तुम खुद को उसके काबिल समझते हो?'

'हां, मुझे उससे डर नहीं लगता; इसके अलावा, मुझे अपनी प्रतिष्ठा बचानी है, और थोड़ा जोखिम उठाने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है।'

'जैसी तुम्हारी इच्छा,' उसने उत्तर दिया; 'लेकिन तुम्हें यह बात अपने पिता को जरूर बतानी होगी।'

मैंने वैसा ही किया। व्यापारी लड़के के गीत में इतना मग्न था कि उसने हमारी ओर ध्यान ही नहीं दिया, और नौकर भी आनंद से झूम रहा था, क्योंकि वह गीत उसके अपने देश का था।
'क्या तुम यह कर पाओगे? कोशिश मत करो,' मेरे पिता ने कहा; 'वह आदमी हथियारबंद है, और उसकी कमर में एक खंजर है; मुझे तलवार से डर नहीं लगता, लेकिन खंजर खतरनाक चीज होती है, और तुम घायल हो सकते हो।'
'और मान लीजिए कि मैं ऐसा करता,' मैंने जवाब दिया, 'तो क्या आपको लगता है कि उस बात का डर मुझे रोक देगा? नहीं, नहीं! मैंने यह जिम्मेदारी खुद ली है, और मैं आपकी अनुमति से इसे पूरा करूंगा।'
'जैसा तुम चाहो, मेरे बेटे, मैं तुम्हारा विरोध नहीं करूंगा; तुम्हें नाम कमाना है, और जोखिम उठाना तुम्हारा सही कदम है: मैं तुम पर कड़ी नजर रखूंगा, और जरूरत पड़ने पर तुम्हारी मदद करने के लिए तैयार रहूंगा।'
सामान्य वाक्यांश, 'पान लाओ' (पान लाओ), संकेत था; और जैसे ही मैंने और भूद्रिनाथ ने अपनी जगह बदली, मुझे लगा कि नौकर हमें कुछ संदेह भरी निगाहों से देख रहा है; मुझे लगा कि उसने अपनी कमरबंद में रखी कटार को ढीला किया; शायद यह मेरा वहम था, फिर भी उसने खतरे को जरूर भाँपा होगा। वह खड़ा हुआ और हमारी ओर देखा: और जब मैंने उसके बलिष्ठ शरीर को देखा, जो कमर से नीचे नंगा था, उसकी छाती बालों से ढकी थी, और उसकी मजबूत भुजाएँ थीं, तो एक पल के लिए मुझे लगा कि मैंने अपनी ताकत को ज़्यादा आँका था; लेकिन पीछे हटना कायरता होती। एकमात्र योजना थी उस पर खड़े-खड़े ही हमला करना; मैं उसकी ओर बढ़ा, और अपने पिता पर एक तीखी नज़र डाली, जिससे मेरा इरादा था कि जैसे ही मैं अपनी जगह ले लूँ, वह संकेत दे दें; वह मुझे समझ गए। मैं अपनी जगह पर पहुँच गया था, वह आदमी अभी-अभी मेरी ओर मुड़ा था और मेरे रास्ते से हटने के लिए कहा था, और मैं उसे आगे बढ़ने से मना कर ही रहा था कि संकेत मिल गया।
क्या मैं एक पल देर से पहुँचा था, या उसने अपने मालिक के अंजाम की एक झलक देख ली थी? या वास्तव में उसे शक हो गया था कि सब कुछ ठीक नहीं है, कि वह खतरे में है? मुझे नहीं पता; लेकिन जैसे ही मैंने उसके गले में कपड़ा डाला, उसने अपना खंजर निकाल लिया: अगर मैं अपनी पकड़ ढीली कर देता तो मेरी तुरंत मौत हो जाती, वह खंजर मुझमें घोंप देता; और उसने इतना संघर्ष किया कि मेरी पूरी ताकत के बावजूद, वह लगभग अपना दूसरा हाथ अपने गले और कपड़े के बीच डालने में कामयाब हो गया। यह सब इतनी जल्दी हुआ कि मैं इसे शब्दों में बयां नहीं कर पा रहा हूँ। मेरा खतरा मंडरा रहा था, लेकिन किस्मत से एक गुंडे ने खंजर पकड़े हुए हाथ को पकड़ने की कोशिश की; इससे उसका ध्यान एक पल के लिए मुझसे हट गया: आधा दम घुटते हुए भी, उसने ज़बरदस्त कोशिश की, जिससे मैं लगभग गिरते-गिरते बचा, और उस बदकिस्मत आदमी तक पहुँचकर उसने हथियार उसके दिल में घोंप दिया!
वह आदमी कराहते हुए ज़ोर से गिरा और हम दोनों पर खून की बौछार हो गई; लेकिन इस घटना ने मुझे और मज़बूत पकड़ दे दी थी, मैं अपनी उंगलियों के पोर का इस्तेमाल कर पा रहा था, और भला मेरी ताकत के

आगे कौन बच सकता था? राजपूत ने मरते समय ज़बरदस्त संघर्ष किया, लेकिन मैंने अपनी पकड़ नहीं छोड़ी; मेरे पिता मेरी ओर दौड़े।
'रस्सी कहाँ है?' वह चिल्लाया; 'वह इस तरह नहीं मरेगा; रस्सी कहाँ है? इसे उसके गले में डालो, और तुममें से दो लोग इसे खींचो।'
'नहीं, नहीं!' मैंने कहा, 'वह लगभग मर चुका है; मुझे अकेला छोड़ दो, यह काम मेरा है, कोई दखल नहीं देगा।' सौभाग्य से, उस आदमी को मुंह के बल गिराने के बाद, मैं उसकी पीठ पर घुटने टेकने में सक्षम हो गया, और वह जल्द ही अपनी कटार चलाने की क्षमता खो बैठा। अंत में, पहले के सभी झटकों से ज़्यादा तेज़ एक झटका लगा, और वह बेजान होकर गिर पड़ा—वह भी मर चुका था—मेरा दूसरा शिकार!
मैं हांफते और थके-हारे उठा; और अपने सामने पड़े शव को देखकर मुझे सचमुच लगा कि खतरा टल गया था—कि मैं एक जानलेवा संघर्ष से बच निकला था, और मेरी कला ने ताकत पर विजय प्राप्त कर ली थी। शव के लगभग बगल में ही उस व्यक्ति का शव पड़ा था जिसने मेरी सहायता की थी, जिसे गंभीर चोट लगी थी। सभी लोग मुझ पर इतने ध्यान केंद्रित थे कि उन्होंने बेचारे पीड़ित को नज़रअंदाज़ कर दिया था; वह ज़मीन पर मुंह के बल पड़ा कराह रहा था।
मैंने कहा, 'भगवान के लिए, उसे पलट दो, घाव उसके पेट में है: क्या उसके लिए कुछ नहीं किया जा सकता?' कुछ लोगों ने उसे पलटने की कोशिश की, लेकिन यह स्पष्ट था कि उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी; घाव और मुंह दोनों से खून की धारा बह रही थी। उसने बोलने की कई कोशिशें कीं, लेकिन व्यर्थ; उसकी लगभग तुरंत ही मृत्यु हो गई। जब मैं संघर्ष में लगा हुआ था, तो मुझे कई बार लगा कि राजपूत का खंजर मुझ तक पहुँच गया है, क्योंकि मैंने अपने शरीर को उससे यथासंभव दूर करके उससे बचने का प्रयास किया; लेकिन उत्तेजना इतनी तीव्र थी कि मुझे घाव का एहसास ही नहीं हुआ, अगर कोई घाव था भी तो। फिर भी, अब जब मैंने अपना हाथ अपनी बगल में रखा, तो अपने वस्त्र पर लगे खून से मुझे पता चला कि मैं घायल था; मेरे पिता ने भी खून देखा।
'भगवान की कृपा से! वह घायल हो गया है!' वह चिल्लाया। 'मेरे बेटे, मेरे बेटे, क्या मैंने तुम्हें चेतावनी नहीं दी थी? क्या मैंने तुम्हें उस राजपूत से सावधान रहने के लिए नहीं कहा था? तुम उसका मुकाबला नहीं कर सकते थे, मेरे बेटे; और अब तुम घायल हो गए हो, और क्या किया जा सकता है?' और मेरे पिता अपनी भावनाओं से लगभग अभिभूत होकर बैठ गए।
मुझे लगा कि ये घाव तो बस मामूली खरोंचें हैं, और मैंने जल्दी से अपनी बनियान खोली। 'देखो,' मैंने घाव दिखाते हुए कहा, 'मैंने कहा था कि वह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुंचाएगा; और ये क्या हैं? झाड़ी का एक कांटा भी इससे गहरा और दर्दनाक घाव कर सकता था।'
'शुकुर खोदा!' मेरे पिता ने कहा; 'तुम्हें चोट नहीं लगी है;' (और घावों को देखकर बूढ़े की आँखों से आँसू बहने लगे;) 'लेकिन उस भयानक दृश्य के बाद मुझे सबसे बुरे की आशंका थी। ऐ मोहम्मद! तुम एक वफादार सेवक थे।'

व्यापारी और राजपूत के शवों से तुरंत कपड़े उतारे गए और उन्हें उस कब्र में ले जाया गया जो उनके लिए बहुत पहले तैयार की गई थी; यह एक छोटे से तंबू के अंदर बनाई गई थी, जहाँ मेरे पिता, मैं और कुछ अन्य लोग सोए थे, और जहाँ किसी की नज़र नहीं पड़ती थी। इस अवसर पर लुघा परिवार की तत्परता और सूझबूझ ने मुझे सबसे ज़्यादा प्रभावित किया। मैंने अपने मामूली घावों पर पट्टी बाँधी थी और अपने शरीर पर लगे खून को साफ़ करने के लिए स्नान किया था, तभी मैं कब्र देखने गया, यह सोचकर कि वह अभी भी खुली होगी। मैं पूरी तरह से चकित रह गया—मिट्टी के हिलने का कोई निशान नहीं था; जहाँ गड्ढा खोदा गया था, उसे अच्छी तरह से दबाकर मिट्टी से लेप कर दिया गया था; और, सिवाय इसके कि वह गीला था, कोई यह नहीं बता सकता था कि उसे किसी इंसान ने छुआ था। फिर मेरे पिता और मेरे सोने के कालीन को उस जगह पर बिछा दिया गया।

मैंने भूद्रिनाथ से कहा, 'अब चलो हम अपने सबसे अच्छे कपड़े पहनकर हकीम से मिलने चलते हैं। क्या आप भी आएंगे, मेरे पिता?'

'नहीं, बेटा, मुझे यहाँ सबको शांत रखने के लिए बहुत काम है: किसी न किसी को तो यहाँ रहना ही होगा; और तुम और भूद्रिनाथ अपने मनोरंजन के हकदार हो, तो जाओ और उसका आनंद लो। और यहाँ,' उसने कुछ ठगों से कहा, 'अपनी ढालें और तलवारें लो, और मेरे बेटे के साथ चलो; और ध्यान रखना कि तुम रात भर सैनिकों की तरह दिखो, ठगों की तरह नहीं।'

कुछ ही देर में छह या आठ लोग तैयार हो गए, साफ कपड़े पहने हुए और हथियारों से लैस; और इस समय तक, चाँद निकल चुका था, और कोतवाल द्वारा शाम के दरबार के लिए निर्धारित समय होने के कारण, हम शहर की ओर चल पड़े।

सचमुच, हमने अपने चुने हुए सबसे सुंदर वस्त्र पहने हुए थे, जिससे हम न केवल सैनिक बल्कि आकर्षक पुरुष भी लग रहे थे। हममें से प्रत्येक ने अपनी पगड़ी को बड़े सलीके से बांधा हुआ था; और मेरी पगड़ी, जो सबसे कीमती सोने के कपड़े की बनी थी और मेरी ठुड्डी के नीचे से कई बार गुजरती थी, मेरे चेहरे को और भी खूबसूरत बना रही थी, जिससे मुझे एक विशेष रूप से योद्धा जैसा रूप मिल रहा था। मेरे हथियार भी अत्यंत उत्तम थे; एक तलवार जिसका मूठ सोने से जड़ा हुआ था, उसका म्यान गहरे लाल मखमल से ढका हुआ था, और उस पर चांदी का एक खुला हुआ पैटर्न वाला हैंडल लगा था, जो लगभग आधे हिस्से को ढके हुए था। मेरी कमरबंद, जो एक कश्मीरी शॉल थी, में एक पेशकुब या चाकू था, जिसका हैंडल सोने से जड़ा हुआ अगेट का था, और एक छोटा सा जुम्बेआ या अरबी खंजर था, जो सोने और चांदी से अत्यधिक अलंकृत था। मेरे पास गैंडे की खाल से बनी एक ढाल भी थी, जो सिलहट में बनी थी और हिंदुस्तान की सुंदर शैली में चित्रित और सोने से मढ़ी हुई थी, जिसके उभरे हुए हिस्से चांदी के थे, जिन पर सुंदर नक्काशी और अलंकरण किया गया था। मेरी पोशाक उत्तम मलमल की थी, जिससे मेरे शरीर की आकृति बेहद खूबसूरती से उभर कर आ रही थी; और सोने के कपड़े से बनी कीमती पतलून ने मेरी पोशाक को एक साथ सुरुचिपूर्ण बना दिया, और यह न

केवल देखने वाले को मेरे उत्तम स्वाद से प्रभावित करने के लिए, बल्कि उसे यह विश्वास दिलाने के लिए भी उपयुक्त थी कि मैं उच्च पदस्थ न सही, लेकिन सम्माननीय व्यक्ति हूं।
भूद्रिनाथ और पीर खान का रूप-रंग मेरे मुकाबले कुछ कम दिखावटी था; लेकिन वे अच्छे और सच्चे पुरुष प्रतीत होते थे, और मेरे जैसे व्यक्ति के मुकाबले काफी अच्छे थे।
अतः हम शहर की ओर चल पड़े और फाटक पार करके कोतवाल की चौरी पर पहुँचे, जहाँ हमें उनसे या किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने की आशा थी जो हमें दरबार का मार्ग बता सके। संयोगवश, कोतवाल वहीं थे; और यात्रियों की देखभाल का अपना काम छोड़कर, वे हमारा परिचय कराने के लिए हमारे साथ चले।
हम कुछ गलियों से गुज़रे, बंधे हुए मवेशियों और मराठा कस्बे की तमाम बुराइयों के बीच से रास्ता बनाते हुए, और अंत में एक सभ्य दिखने वाले द्वार पर पहुँचे, जिसके चारों ओर कई सैनिक खड़े और आराम कर रहे थे। हमारे मित्र कोतवाल ने हमें उनके बीच से गुज़ार दिया; और दो खुले आंगनों को पार करने के बाद, हम उस स्थान पर पहुँचे जहाँ दावत और सभा चल रही थी। एक सुंदर दिखने वाले वृद्ध व्यक्ति ने हमसे पूछा कि हम कौन हैं, जिस पर कोतवाल ने हमारी ओर से उत्तर दिया कि हम नुवाब साहब को प्रणाम करने आए सम्मानित व्यक्ति हैं; जिस पर मैंने कहा कि हमने उनके महान नाम और आतिथ्य सत्कार के बारे में बहुत कुछ सुना है, इसलिए हमने सोचा कि उन्हें प्रणाम किए बिना और इतने आदरणीय व्यक्ति से परिचित हुए बिना उनके कस्बे से गुज़रना असभ्य होगा।
'आपका स्वागत है,' बूढ़े व्यक्ति ने कहा; 'नुवाब साहब को अजनबियों को देखकर बहुत प्रसन्नता होती है, चाहे वे कहीं से भी आए हों; और इंशाअल्लाह! आपको इस कष्ट को उठाने का कोई पछतावा नहीं होगा।'
'इसके विपरीत,' मैंने उत्तर दिया, 'हम इसे कष्ट नहीं समझते, बल्कि एक ऐसा सम्मान समझते हैं जो हम जैसे गरीब लोगों को शायद ही कभी मिलता है। लेकिन कृपया हमें ईश्वर के समक्ष ले चलें।'
हम कुछ सीढ़ियाँ चढ़कर हॉल में पहुँचे, जहाँ नुवाब कई लोगों से घिरे बैठे थे। उनके सामने नृत्य करती महिलाओं का एक समूह था, जो अपने आकर्षण का प्रदर्शन कर रही थीं और फारस और हिंदुस्तान के गीतों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर रही थीं। हमारे मार्गदर्शक ने हमें एक क्षण रुकने के लिए कहा; और नुवाब के पास जाकर, उन्हें कुछ शब्द कहकर हमारे आने की सूचना दी।
'खामूश!' (चुप रहो!) नुवाब चिल्लाया, और एक दर्जन आवाजों ने इसे दोहराया; 'अजनबियों को अंदर आने दो।'
हमें अंदर जाने का आदेश दिया गया, और हमने अपने जूते उस सफ़ेद कपड़े के किनारे पर रख दिए जो कमरे के उस हिस्से पर बिछा था जहाँ से नुवाब का मुसनूद (प्रवेश कक्ष) जाता था। हमें देखकर उन्होंने विनम्रतापूर्वक अभिवादन किया; और मैं आगे बढ़ा, और अपने कंधों पर ढीले-ढाले ढंग से डाले हुए कढ़ाईदार दुपट्टे में अपनी तलवार की मूठ लपेटकर उसे नज़ूर के रूप में प्रस्तुत किया।

'कुबूल हूआ,' बूढ़े सज्जन ने उस पर हाथ रखते हुए कहा; 'यह स्वीकार किया गया है; हमारे पास बैठ जाइए। इंशाल्लाह! हमें आपका आना बहुत अच्छा लगा, और हम इस साधारण दरबार में आपका हार्दिक स्वागत करते हैं।'

शिष्टता के चलते मैंने इस शिष्टाचार का विरोध किया और कहा कि मैं इतना विनम्र व्यक्ति हूँ कि स्वयं को इतना सम्मान देने की अनुमति नहीं दे सकता; लेकिन वह मानने को तैयार नहीं थे, इसलिए मैं अत्यंत सम्मानपूर्वक मुद्रा में बैठ गया, अपनी एड़ियों को अपने नीचे रखते हुए; और अपनी तलवार और ढाल को उनके सौंदर्य को प्रदर्शित करने के सर्वोत्तम तरीके से अपने सामने रखते हुए, मैं नुवाब की ओर मुड़ा, जो मेरी उपस्थिति को निहारते हुए प्रतीत हो रहे थे।

'माशाल्लाह!' उसने मुझसे कहा, 'तुम तो बड़े बहादुर नौजवान हो: अब मुझे बताओ कि तुम कौन हो, और ये सम्मानित लोग कौन हैं जो तुम्हारे साथ हैं।'

मैंने उत्तर दिया, 'मैं आपकी सेवा में निवेदन करता हूँ कि मैं एक साधारण सिपाही हूँ, जन्म से सय्यद हूँ; मेरे साथ कुछ साथी हैं, जिनके लिए और अपने लिए मैं हैदराबाद जा रहा हूँ। मैं हिंदुस्तान से आया हूँ: मेरे पिता, जो हमारे शिविर में हैं, एक व्यापारी हैं और माल लेकर शहर जा रहे हैं। ये लोग,' मैंने भूद्रिनाथ और पीर खान की ओर इशारा करते हुए कहा, 'मेरे दो साथी हैं; और बाकियों से श्रेष्ठ होने के कारण, मैंने इन्हें आपके समक्ष नज़ूर प्रस्तुत करने का साहस किया है।'

'ज़रूर, मीर साहब; हमें अच्छे और तगड़े दिखने वाले जवानों को देखकर बहुत खुशी होती है। ऐसा कोई भी जवान मुझ जैसे पुराने सिपाही की आँखों का तारा होता है। उन्हें आगे लाया जाए,' उन्होंने एक सेवक से कहा; और दोनों आगे बढ़कर आवश्यक अभिवादन किया और अपनी तलवारों के मूठ उसी तरह पेश किए जैसे मैंने किए थे।

परिचय समारोह समाप्त होने के बाद, संगीतकारों और नर्तकियों से कार्यक्रम फिर से शुरू करने का अनुरोध किया गया, और मुझे कमरे और मेरे सामने के दृश्य का जायजा लेने के लिए कुछ क्षण का अवकाश मिला। तीन बड़े लकड़ी के मेहराबों से होकर कमरा उस आंगन में खुलता था जिसे हम पार कर चुके थे; और उनके बीच अंग्रेजी लाल कपड़े के बड़े-बड़े पर्दे लगे थे, जिन्हें जरूरत पड़ने पर नीचे किया जा सकता था। कमरा काफी ऊंचा था, और जहां हम बैठे थे उसके पीछे की दीवारें सुंदर नक्काशीदार प्लास्टर से सजी थीं। ऊपर, एक तरफ, घनी जालीदार एक छोटी सी गैलरी थी, जहां से ज़नाना में बैठे लोग नीचे हो रही हर गतिविधि को बिना देखे देख सकते थे। हमारे सामने नर्तकियां अपनी खास लय में नाच रही थीं और गा रही थीं, साथ ही अपने इशारों से अपने गीतों के प्रेम भरे बोलों को व्यक्त कर रही थीं। उनके बगल में नर्तकियों का एक और समूह बैठा था, अपनी बारी का इंतजार कर रहा था, और दोनों ही शानदार ढंग से सजी-धजी और गहनों से लदी हुई थीं।

नुवाब हुसैन यार जंग बुहादूर, एक आकर्षक, दुबला-पतला बूढ़ा सिपाही, अपने व्यवहार में विनम्र और शिष्ट था। वह दुखुन के रईसों का एक उत्कृष्ट उदाहरण था; हालाँकि शायद दिल्ली के रईसों की तरह उतना

शालीन नहीं था, फिर भी उसकी उपस्थिति सम्मान का पात्र थी; उसकी तेज और पैनी नज़र, और दाहिने गाल पर घाव का निशान, यह दर्शाता था कि उसने युद्ध के मैदान देखे थे और युद्ध से भलीभांति परिचित था। उसका वस्त्र ढाका के सादे मलमल का था; लेकिन उसके गले में मोतियों की एक माला, जिसे वह माला की तरह धारण करता था, और कालीन पर उसके सामने पड़ी सुंदर तलवार, किसी भी सामान्य व्यक्ति को यह प्रमाणित कर देती थी कि वह एक उच्च पदस्थ और प्रतिष्ठित व्यक्ति था।

उन्होंने मुझे इधर-उधर देखते हुए देखा और मुझसे इस प्रकार कहा:

"हम यहाँ बहुत तंगहाल स्थिति में हैं, नौजवान; लेकिन क्या किया जा सकता है? सरकार का कर्तव्य निभाना ही होगा, और हम अपना घर-बार साथ लेकर नहीं चल सकते। फिर भी, जंगल में होने के बावजूद हमने इस जगह को जितना हो सके उतना ठीक-ठाक बना लिया है; और पैगंबर की कृपा से हम अपने साथ सुंदर आँखों और मधुर आवाज़ वाली लड़कियों को लाए हैं, और मनोरंजन की कोई कमी नहीं है। बताइए, हमारे चुनाव के बारे में आपका क्या विचार है? वह ज़ोरा बैठी है, हैदराबाद में सुंदरता और मधुर आवाज़ के मामले में उसकी कोई तुलना नहीं है: दूसरी, जो अभी गा रही है, उसे हमने यहाँ आते समय रास्ते में पा लिया था; लेकिन, इंशाल्लाह! थोड़े ही समय में वह दूसरी लड़की की अच्छी साथी बन जाएगी, और हम उसे अपने साथ शहर ले जाएँगे, ताकि अपने परिचितों को आश्चर्यचकित कर सकें।"

अपना नाम सुनकर नर्तकी ज़ोरा मुड़ी और मेरी ओर देखा। मैं उसकी सुंदरता से तुरंत मोहित हो गया। वह उतनी गोरी नहीं थी जितनी मैंने पहले अपने पेशे की कुछ नर्तकियों को देखा था; लेकिन अगर वह उतनी गोरी नहीं भी थी, तो उसके चेहरे की बनावट सुगठित और आकर्षक थी; और उसकी हिरण जैसी बड़ी-बड़ी आँखें जब पूरी तरह से मेरी ओर घूमीं, तो मानो मुझे भेद रही हों। यह एक पल भर की नज़र नहीं थी, बल्कि एक ऐसी नज़र थी जो धीरे-धीरे मुझ पर टिकी रही और फिर हटी नहीं। मैं उस समय युवा और शर्मीला था, और मैं सचमुच शर्मिंदा हो गया। उसने यह देखा और मुड़कर अपनी एक साथी की ओर मुस्कुराई।

'आओ,' नुवाब मुस्कुराते हुए बोला, 'मेरी तुवैफों का दिल मत चुराओ। तुम खतरनाक दिखते हो; और अगर मैं गलत नहीं हूँ तो तुम्हारा वह सुंदर चेहरा बहुत नुकसान पहुंचाएगा। मुझे हिंदुस्तान की खबर बताओ: खबर है कि उस तरफ युद्ध चल रहा है, और मराठा और पिंडारी हथियार जमा कर रहे हैं।'

मैंने उत्तर दिया, 'क्यों, ऐसी खबरें तो हैं। हमने सुना है कि सिंधी या होल्कर में सेवा मिल सकती है, और वे तथा फिरंगी जल्द ही युद्ध में उतरेंगे; लेकिन हमने दुखुन में अपनी किस्मत आजमाना बेहतर समझा; क्योंकि हमने सुना था कि दोनों ही ओर से हम जैसे सशस्त्र सैनिकों को बहुत कम वेतन दिया जा रहा है, क्योंकि वे मुख्य रूप से फ्रांसीसी जनरलों के अधीन सैनिकों पर निर्भर हैं, और उन्हीं के द्वारा उंग्रेज फिरंगी का मुकाबला किया जाना है।'

“अरे,” बूढ़े नुवाब ने कहा, “न्यायपूर्ण युद्ध का ज़माना बीत रहा है, और यूरोपियों के आविष्कार हिंद के वीर पुरुषों की बहादुरी को तेज़ी से पीछे छोड़ रहे हैं। पता नहीं इसका अंजाम क्या होगा! हैदराबाद में भी फिरंगियों ने इस कदर कब्ज़ा कर लिया है कि पता नहीं उन्हें कभी खदेड़ा जा सकेगा या नहीं। और वे

तेलंगाना के बेचारे काफिरों को पंक्तिबद्ध होकर लड़ने और अद्भुत युद्ध कलाबाज़ियाँ दिखाने का प्रशिक्षण देते हैं; लेकिन आलिया की शक्ति महान है, और वे आलिया के चहेते हैं।"
मैंने कहा, 'लेकिन एक तसल्ली की बात यह है कि फ्रांस और हंगरी के लोग एक-दूसरे के कट्टर दुश्मन हैं; और अगर लड़ाई होती है, तो ईश्वर की कृपा से दोनों में से कोई एक हार जाएगा। तब सच्चे विश्वासियों के लिए जागने और अपने देश को दोनों के जुए से मुक्त करने का समय होगा।'
'तुम तो किसी नौजवान, उतावले लड़के की तरह बातें कर रहे हो: ऐसा हो ही नहीं सकता। हम हैदराबादवासी अंग्रेज फिरंगियों के इतने ऋणी हैं कि उन्होंने हमें मराठों की मांगों और हैदर अली और टीपू के अत्याचारों से मुक्ति दिलाई है, इसलिए हम उनसे झगड़ा नहीं कर सकते; और वैसे भी मुझे संदेह है कि हम उनके खिलाफ कुछ कर भी पाते। टीपू का पतन हुआ और उसने अपना किला बनवाने में फ्रांसीसियों की सलाह ली थी। भगवान मेरी रक्षा करे! अंग्रेजों के सामने तो वह सिर्फ मिट्टी की दीवार थी।'
'क्या तुमने इसे तब देखा था?' मैंने पूछा।
'जी हाँ, बिल्कुल,' उसने कहा, 'मैंने सब कुछ देखा; और अगर तुमने भी देखा होता, तो तुम भी हैरान रह जाते कि कैसे सिपाही बटालियनें अपने अधिकारियों के नेतृत्व में, बंदूकों और माचिस की आग के बीच से बिल्लियों की तरह किले की दीवार पर चढ़ गईं, जबकि ये आग हमारे सिपाही कहे जाने वाले लोगों को भूसे की तरह बिखेर देती। सचमुच वे कुछ-कुछ इंसानों जैसे हैं; और अगर हम भारत के लोग उनकी तरह लड़ते, तो क्या वे एक इंच भी ज़मीन पर कब्ज़ा कर पाते? इंशाल्लाह! नहीं कर पाते; लेकिन पछताने का कोई फायदा नहीं। और अब सिकंदर जाह ने अंग्रेजों के साथ संधि कर ली है, और एक हिजड़े की तरह अपने ज़नाना में बैठा है, उन्हें अपनी और अपने देश की देखभाल करने के लिए छोड़कर।'
मैंने कहा, 'तो आपको लगता है कि मुझे शहर में नौकरी मिलने का कोई मौका नहीं है?'
'बिल्कुल नहीं,' उसने कहा; 'मुझे लगता है कि आप इस बारे में काफी आश्वस्त हैं। आप जैसे प्रतिभाशाली व्यक्ति के लिए बहुत से अवसर हैं, और आपका व्यक्तित्व कुछ सैन्य अधिकारियों को पसंद आएगा। इंशाल्लाह! आपको यहाँ जगह मिल सकती थी, लेकिन मेरी सूची भरी हुई है; और आप अपने साथियों से अलग होने वाले नहीं हैं?'
'नहीं,' मैंने कहा, 'मैं ऐसा नहीं कर सकता; बेचारे लोग परदेस में भूखे मर जाएंगे; और उन्हें इकट्ठा करने के बाद, मुझे उन्हें शहर ले जाने का अपना वादा पूरा करना होगा।'
'अब तुम्हें मेरा गर्व, ज़ोरा, नाचते हुए देखना होगा,' नुवाब ने कहा। 'इंशाअल्लाह! अगर वह तुम्हारा दिल दर्द से न भर दे, जैसा कि उसने कई लोगों का किया है, तो तुम्हारा दिल बहुत कठोर होगा।'
अब तक गा रहे समूह को बैठने के लिए कहा गया, और ज़ोरा खड़े होने के लिए तैयार हो गई। उसके टखनों के लिए घंटियाँ लाई गईं और उसने उन्हें बाँध लिया। उसके साथ संगत करने वाले संगीतकारों ने अपने वाद्ययंत्रों को सुर मिलाया, और एक संक्षिप्त वादन के बाद वह खड़ी हो गई। अगर बैठे हुए उसकी सुंदरता ने मुझे मोहित कर लिया था, तो अब वह कितनी अधिक भव्य लग रही थी! वह लंबी नहीं थी, लेकिन उसकी

आकृति अत्यंत सुगठित थी, जैसा कि उसकी विशेष पोशाक से पता चलता था, जो उसकी बाहों के नीचे से इतनी ढीली थी कि उसके टखनों तक उसका पूरा शरीर ढका हुआ था; लेकिन वह पोशाक अत्यंत समृद्ध थी। यह गहरे बैंगनी रंग के जालीदार कपड़े से बना था, जिस पर सुनहरे कपड़े की पट्टियाँ बारी-बारी से बनी थीं; इसका निचला हिस्सा घुटनों तक चौड़े सुनहरे कपड़े से सजा था, जिस पर सुनहरे धागे और मोतियों की सुंदर कढ़ाई थी। उसने अपने चारों ओर बेहद ही नज़ाकत से हल्के मलमल और चाँदी के रंग का, अपने कपड़े के रंग जैसा ही एक दुपट्टा लपेटा हुआ था; वह इतना पतला था कि जब वह हिलती थी, तो ऐसा लगता था मानो हवा में उड़ रहा हो। उसके सिर पर लिपटे दुपट्टे का रंग, उसकी त्वचा के विपरीत, उसे असलियत से कहीं ज़्यादा गोरा दिखा रहा था, और उसकी बड़ी कोमल आँखें और भी ज़्यादा चमकीली और आकर्षक लग रही थीं।

संगीतकारों ने अपना नियमित वादन शुरू किया, और उसके साथ ही ज़ोरा की एक सहेली, एक सुंदर लड़की, ने नृत्य की धीमी चालें शुरू कर दीं। कुछ चक्कर लगाने के बाद वह अपनी जगह पर लौट आई, और ज़ोरा स्वयं, बादलों से निकलते पूर्णिमा के चाँद की तरह, धीमी और सुंदर गति से हमारी ओर बढ़ी। साहब, मैं उसके अद्भुत नृत्यों का वर्णन कैसे करूँ! हर मोड़ पर उसका रूप और भी निखरता गया, और मैं तब तक देखता रहा जब तक मेरा मन पूरी तरह मंत्रमुग्ध नहीं हो गया। लेकिन जब उसने गाना शुरू किया तो मैं कितना प्रभावित हुआ! धीमे और तेज़ दोनों तरह के नृत्य करने के बाद, वह रुकी; और उसके पीछे मौजूद एक संगीतकार द्वारा बजाई गई एक छोटी सी धुन के बाद, उसने भावपूर्ण ग़ज़ल गाना शुरू कर दिया।

मुझे वह बहुत प्रिय थी। मैं तब तक सुनता रहा जब तक कि मेरा मन नहीं हुआ कि मैं उनके चरणों में गिर जाऊं और उन्हें स्वर्ग से आई परी मानकर उनकी पूजा करूं। मेरी आत्मा उन मधुर ध्वनियों से इतनी लीन हो गई थी कि मैं अपने आसपास की हर चीज से बेखबर हो गया था।

अंततः वह चुप हो गई; और नुवाब, जो मुझे ध्यान से देख रहा था, ने मुझसे पूछा कि मैं उस गायिका और उसके नृत्य के बारे में क्या सोचता हूँ।

'यह कितना अद्भुत है,' मैंने उत्तर दिया; 'उसके आकर्षण के आगे मेरा जिगर पानी बन गया है। यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि मैं उसके प्रभाव में नहीं रहता, वरना मैं हमेशा के लिए खो जाता। मैं शोहरत और अपने पेशे को त्यागकर उसके चरणों में लेटकर सपनों में खो सकता था।'

नुवाब ने कहा, 'तुम एक नासमझ लड़के की तरह बातें करते हो, और ऐसी कल्पनाओं में मत बह जाओ; कई लोग इनके कारण हमेशा के लिए बर्बाद हो चुके हैं। उसके जैसी औरतें लालची और धन की लोभी होती हैं, जैसा कि हमें समुद्र के बारे में बताया जाता है, जो उसमें डाली गई हर चीज को निगल जाता है, और उसकी सतह पर क्षणिक लहर के अलावा कोई निशान नहीं छोड़ता।'

मैंने पूछा, 'क्या वे प्यार नहीं कर सकते? क्या वे पूरी तरह से स्वार्थी हैं?'

'बिल्कुल। हाय! नौजवान, मैंने इसे जाना और महसूस किया है; लेकिन चलिए मनोरंजन का विषय बदलते हैं; मेरे पास कुछ दुर्लभ भैरूपी हैं, जो कुछ दिन पहले हिंदुस्तान से आए हैं। मैंने उन्हें केवल एक बार सुना है,

और हंसते-हंसते मेरे पेट में दर्द होने लगा था। आप निस्संदेह उनकी शैली से भलीभांति परिचित होंगे; फिर भी यह मेरे लिए कुछ नया है: उन्हें पेश किया जाएगा।'

मैंने कहा, 'नुवाब, आपकी कृपा और बढ़ती रहे; सचमुच आप अपने दीन सेवक पर बहुत कृपा करते हैं, जिसके वह बिलकुल अयोग्य है। फिर भी, जहाँ कहीं भी उसका भाग्य उसे ले जाए, वह हुसैन यार जंग बुहादूर के अच्छे नाम और आतिथ्य का प्रचार करने में कोई कसर नहीं छोड़ेगा, यही एकमात्र प्रतिफल है जो वह इसके लिए दे सकता है।'

'मुझे उम्मीद है कि तुम खूब तरक्की करोगे,' उसने जवाब दिया; 'तुम्हारे जैसे दिखने वाले नौजवानों को दोस्त बनाने में शायद ही कभी असफलता मिलती है। लेकिन देखो, भैरूपिया आ रहे हैं; देखते हैं कि उन्होंने हमारे लिए क्या नया मनोरंजन तैयार किया है; मुझे पूरा यकीन है कि कुछ न कुछ हंसी-मजाक जरूर होगा।'

वे तीन थे; और अपने चेहरों को हास्यास्पद भावों में बिगाड़ते हुए, जिससे पूरी सभा एक साथ ठहाकों से गूंज उठी, उनमें से एक आगे बढ़ा और बोला कि जिस देश से वह आया है, वहाँ एक नुवाब नाम का एक बहुत बुद्धिमान व्यक्ति था, जिसने अपने देश पर अभूतपूर्व शासन किया और युद्ध में विजयी रहा; और यह कि यदि हूज़ूर चाहे, तो उसके दास उसकी कुछ रोमांचक कहानियाँ सुनाने के लिए तैयार हैं।

नुवाब ने कहा, 'आगे बढ़ो, हम उपस्थित हैं; ध्यान रखना कि कुछ भी अशोभनीय न हो, क्योंकि तुम खानुम की उपस्थिति में हो।'

'अस्तफेराल्ला!' (भगवान न करे!) सभी ने पर्दे की ओर अभिवादन करते हुए कहा; 'हम पर खानुम की कृपा बनी रहे, और आलिया उन्हें दीर्घायु और संतान प्रदान करें। इंशाल्लाह! हम उनकी दृष्टि में कृपापात्र होंगे, और सोने से जड़े अपने वस्त्र लेकर जाएंगे।'

उन्होंने शुरुआत की: एक आदमी, जो बच्चों की तरह अजीबोगरीब कपड़े पहने हुए था, नुवाब का रूप धारण कर रहा था। कहानी उसके बचपन से शुरू होती है, कैसे उसे ज़नाना में दुलार किया जाता है; और बाकी दो लोग महिलाओं के कपड़े पहन लेते हैं, एक उसकी माँ और दूसरी उसकी आया। युवा नुवाब को खूब लाड़-प्यार मिलता है, वह बिगड़ जाता है, उद्दंड हो जाता है, और उसे शैतान के वश में घोषित कर दिया जाता है; एक मूला को बुलाया जाता है, और जादू की सहायता से तैयार किए गए मंत्र और चमत्कारी औषधियाँ दी जाती हैं। वह बड़ा बच्चा चीखता-चिल्लाता है, अपनी माँ और आया को सभा से बाहर निकाल देता है, अपने आस-पास सबको अस्त-व्यस्त कर देता है; और इस सब से, खासकर तुवायफों के बीच, जो अफरा-तफरी और शोर मचता है, वह हंसी का माहौल बन जाता है, जिस पर हम सब दिल खोलकर हँसते हैं।

कुछ ही क्षणों में वे पुरुष फिर प्रकट हुए और दूसरा अध्याय शुरू हुआ। वह बच्चा अब युवक बन चुका था, और उग्र एवं अनियंत्रित। स्त्रियाँ, शराब, घोड़े और हथियार उसके सुख थे: सब कुछ भूलकर वह अय्याशी में डूब गया, अपने माता-पिता को नाराज़ कर दिया, कर्ज में डूब गया, धोखेबाजों और परजीवियों से घिर गया, जिन्होंने उसकी सारी संपत्ति लूट ली; और उसने वेश्याओं और व्यभिचार में अपना जीवन व्यतीत कर लिया: और यहीं दूसरे भाग का अंत होता है।

उसके पिता की मृत्यु हो जाती है—अब वह नुवाब है; वह एक प्रतिष्ठित परिवार का मुखिया है, उसके अधीन सैनिक और सैनिक हैं, और उसे अपने क्षेत्र का प्रबंधन करना है। वह तुरंत अपने पुराने साथियों को निकाल देता है, अपने सभी करीबी लोगों को, अच्छे और बुरे, सभी को त्याग देता है, और अपने पिता को लूटने वाले बदमाशों के एक नए समूह के साथ मिल जाता है—सफेद दाढ़ी वाले, जो दुष्टता में माहिर हैं। उसका एक पड़ोसी सरदार से झगड़ा होता है, और दोनों युद्ध की तैयारी करते हैं।

सैनिकों का वर्णन इस प्रकार किया गया है: वे पहाड़ों को खा जाते हैं और नदियों का पानी पी जाते हैं; और स्वयं नुवाब को दूल्हे की तरह अपनी दुल्हन से मिलने जाते हुए, गरजते बादल से बिजली की तरह, या अपनी सीमाओं को तोड़ती नदी की तरह, भयानक, अजेय, जिसकी एक झलक के सामने मनुष्य शेर की तरह कांपते हैं! उसका घोड़ा और हथियार—घोड़ा भारी-भरकम, फुर्तीला, चौड़े और बड़े पैरों वाला, हिरण की तरह फुर्तीला और पैंथर की तरह साहसी। हथियारों में वह तलवार भी शामिल है, जिसे उसके पिता ने चलाया था और जिसने भैंस की खाल को चीर दिया था और सबसे मोटी रजाई को भी फाड़ दिया था।

वह आगे बढ़ता है और लड़ाई शुरू हो जाती है; घुड़सवार आक्रमण करते हैं और नुवाब और उसका शत्रु आमने-सामने आते हैं (दोनों एक-एक व्यक्ति की पीठ पर सवार हैं)। वे लड़ते हैं; एक के बाद एक तलवारें (लकड़ी की) चकनाचूर हो जाती हैं। एक घोड़ा मारा जाता है; वह नुवाब का घोड़ा है! वह भी मारा जाता है! वह अपने शत्रु की दया पर है! नहीं, वह फिर से खड़ा होता है; लड़ाई फिर से शुरू होती है; काफी देर तक संदेह बना रहता है; सेवकों द्वारा नए हथियार दिए जाते हैं; अंत में वह विजयी होता है। आलिया अकबर! विजय प्राप्त हुई, शत्रु पराजित हुआ।

इसके बाद कैदियों को यातनाएं दी जाती हैं, और ज़नाना की लूटपाट की जाती है।

एक दासी सुंदर, छोटी, कोमल काया वाली, हिरणी जैसी आँखों वाली, रूम की सुंदरियों या इंग्लैंड की पौराणिक सुंदरियों के समान सुंदर थी। वह उसके चरणों में गिर पड़ी: वह मोहित हो गया। उसने उसे जीत लिया, और निकाह संपन्न हुआ। वे कुछ समय तक सुखपूर्वक रहे; लेकिन पड़ोसी की बेटी की सुंदरता की खबर उस तक पहुँच गई। उसका दिल आग से जल उठा; उसका पुराना प्यार उपेक्षित रह गया। उसने विवाह का प्रस्ताव रखा; प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया; दुल्हन घर लौटी, और प्रतिद्वंद्वी पत्नियों के बीच भयंकर ईर्ष्या शुरू हो गई। ज़नाना के झगड़ों का वर्णन किया गया; और पर्दे के पीछे से आती हंसी की चीखों से यह विश्वास करना आसान था कि सब कुछ कितनी स्वाभाविक रूप से वर्णित और अभिनय किया गया था।

नुवाब अधेड़ उम्र में पहुँच चुके हैं; अब वे एक परिवार के मुखिया हैं, एक सम्मानित व्यक्ति हैं, एक धार्मिक व्यक्ति हैं, जो मूलाहों से घिरे हुए हैं, जो उनकी चापलूसी करते हैं और उनके पूर्व साथियों का स्थान हथिया चुके हैं। वे पहले की तरह ही व्यभिचारी हैं; लेकिन यह बात किसी को पता नहीं है; उन्हें एक न्यायप्रिय और नेक इंसान माना जाता है, और उनके दरबार और उनके फैसलों का वर्णन किया जाता है। सुलेमान की तुलना उनसे कैसे की जा सकती है? या हातिम ताई या ज्ञानी लोकमान? और उनके गुणों की प्रत्येक गणना पर सभा ने ज़ोरदार तालियाँ बजाईं और अपनी निगाहें असली नुवाब की ओर उठाईं जो दर्शक बनकर बैठे थे।

फिर से नुवाब को बूढ़े और कमजोर, बीमारियों से क्षीण, नीम-हकीमों से घिरे हुए दिखाया गया है, जिनसे वे जवान और तंदुरुस्त होने के नुस्खे मांगते हैं। उनका ज़नाना पहले से कहीं अधिक स्त्रियों से भरा है, जो उनके घमंड को बढ़ाती हैं, उन्हें बताती हैं कि वे पहले की तरह ही जवान हैं, फिर भी उनसे बेवफ़ा हैं; लेकिन उनका एक बेटा है जो अपने पिता से भी बढ़कर होने का वादा करता है, जो रूप में मेजनून और शौर्य में रूस्तुम है, जिसके सामने उसके पिता के शत्रु हवा के सामने अनाज से भूसे की तरह बिखर जाते हैं।

बूढ़ा नुवाब दिन-ब-दिन कमजोर और चिड़चिड़ा होता जा रहा है। उसकी कल्पनाओं और इच्छाओं का वर्णन बड़े ही हास्यास्पद ढंग से किया गया है; और जैसे-जैसे अंतिम समय निकट आता है, वह स्वर्ग की सत्तर हूरों और सच्चे विश्वासियों के हिस्से में आने वाली शाश्वत युवावस्था के प्रति आश्वस्त होकर अपनी अनंत नींद में सो जाता है।

यह सब हो जाने के बाद, वे वादा की गई उदारता को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़े।

'अच्छा, मीर साहब,' नुवाब ने मुझसे कहा, 'आपको यह कैसा लगा? क्या इन लोगों ने अच्छा काम किया है या बुरा?'

'उल-हम्द-उल-इल्ला!' मैंने कहा; 'आलिया की रचनाएँ अद्‌भुत हैं, और निश्चित रूप से ये लोग उसी की विशेष कारीगरी हैं। मैंने इस जाति के कई लोगों को पहले भी देखा है, लेकिन इन जैसे कभी नहीं।'

नुवाब ने कहा, 'उन्हें अच्छा इनाम मिलेगा; और भले ही हमने पूरी कहानी पर हँसी उड़ाई हो, इसमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है, और बहुत व्यंग्य भी है। काश, आने वाली पीढ़ी के कई लोग इससे सबक ले सकें; वे और भी बुद्धिमान और बेहतर इंसान बन सकते हैं।'

'आमीन,' मैंने उत्तर दिया; 'मेरे स्वामी की टिप्पणी बिल्कुल सही है। जब मैंने इसे सुना तो मुझे व्यंग्य समझ नहीं आया; लेकिन अब मुझे यह समझ आ रहा है, और यह बिल्कुल सही है।'

रात काफी ढल चुकी थी; और जाने की अनुमति मांगते हुए मैं उठ खड़ा हुआ। मैं तुवैफों के पास से गुजर रहा था, तभी एक बूढ़ी औरत ने मेरी आस्तीन पकड़कर जल्दी से कहा, 'अगर तुम मौका तलाश रहे हो, तो एक और है जो मौका चाहती है: छुपकर रहना, तुम्हें मुझसे और जानकारी मिलेगी।' मेरा खून खौल उठा; मैंने चुपके से उसके हाथ में एक सिक्का थमा दिया और वहां से चला गया।

अध्याय 9

जिसमें अमीर अली सौदेबाजी में माहिर साबित होता है, और उसकी प्रेमिका के सफल होने की संभावना है।
मैंने कहा कि मेरा खून खौल रहा था: क्या ऐसा हो सकता है कि इतनी सुंदर स्त्री, जो हैदराबाद के रईसों और धनवानों के साथ रही हो, उसे मुझमें कुछ पसंद आ जाए, जो दरबारी माहौल से बिल्कुल अनजान था, अभी तो एक लड़का ही था, शिष्टाचार और व्यवहार में भी अपरिष्कृत था? क्या ऐसा हो सकता है कि मेरे पहनावे और रूप-रंग से उसने मुझे अमीर समझ लिया हो, कि मैं अपनी सारी दौलत उस पर लुटा दूंगा? ये सारे विचार मेरे मन में चल रहे थे, और हम लगभग अपने शिविर तक पहुँच चुके थे, बिना अपने साथियों से एक शब्द भी बोले। तभी भूद्रिनाथ ने चुप्पी तोड़ी।

'ये क्या बात है, मीर साहब?' उसने कहा; 'तुम्हारी ज़बान क्यों बंद है? रात के मनोरंजन के बाद क्या तुम्हारे पास बात करने के लिए कुछ नहीं बचा, उस खूबसूरत कुंचिनी के बारे में कुछ कहने को नहीं? आलिया की कसम! हालांकि यह मुसलमानी कसम है, मैं लगभग इंद्र का स्वर्ग छोड़कर मुसलमान बनने को तैयार हो जाता, अगर मुझे यकीन होता कि मुहम्मद के स्वर्ग में मुझे उसके जैसी हूरों का साथ मिलेगा। और सोचो, वह उस बूढ़े ऋषि नुवाब की है, और इस घटिया मराठा गाँव में दफ़न है, जबकि अगर वह वहाँ होती तो हैदराबाद के आधे रईस उसके कदमों में होते! आलिया की कसम! मैं फिर कहता हूँ, उसे उस बूढ़े व्यभिचारी से दूर करने की कोशिश करना फ़ायदेमंद होगा, और यह चर्चा का विषय होगा, न केवल रास्ते में उसकी संगति, बल्कि हमारी शाम के मनोरंजन में उसका अनूठा योगदान भी।'

मैंने लापरवाही से जवाब दिया, 'क्यों, जैसा कि आप कहते हैं, वह लड़की बेहद खूबसूरत है, और निस्संदेह सूअरों के इस ठिकाने में असहज महसूस कर रही होगी; फिर भी उसे यहाँ से निकालना आसान काम नहीं होगा, और जब हम उसे ले आए तो हम उसके साथ क्या करेंगे?'

'मैं यह देखने की कोशिश करूंगा कि उसका हमारे साथ आना कोई इतनी बड़ी मुश्किल तो नहीं है,' उसने जवाब दिया; 'और आप जानते हैं कि अगर बाद में कोई पीछा किया जाता है, तो उसके और उसके बाकी लोगों के लिए आसानी से इंतजाम कर दिए गए हैं।'

'अब तो तुम एक निर्मम गुंडे की तरह बोल रहे हो,' मैंने क्रोधित होकर जवाब दिया, (क्योंकि मैं चाहे जितना भी इनकार करूँ, मैं इस बात से अछूता नहीं रह सका कि उस नर्तकी ने मुझे बहुत आकर्षित किया था,) 'और मैं तुम सबको छोड़कर किसी भी तरह से वापस हिंदुस्तान लौट जाना पसंद करूँगा, बजाय इसके कि उसके सिर के एक बाल को भी नुकसान पहुँचे।'

'मैंने तो बस मजाक किया था, मीर साहब; आप जानते हैं कि मैं स्त्रियों से झगड़ा नहीं करता, सिवाय तब जब वे मेरे सामने मेरे पेशे के उचित और वैध पालन में आती हैं। नहीं, अगर हमें वह लड़की मिल भी जाती है, तो वह न्यायसंगत तरीके से ही मिलेगी; और आपके पिता अनेक मामलों में भले ही रूढ़िवादी हों, लेकिन उन्हें अच्छे गीत और संगीत इतने पसंद हैं कि वे हमें उसे अपने साथ रखने से मना नहीं करेंगे; इसलिए मेरी बातों

पर ध्यान न दें, और अपने बेचारे दोस्त के प्रति अपने गुस्से को मन में दबाकर सो न जाएं, अगर आपका कोई दोस्त है भी तो।'

मैंने कहा, 'मैं नाराज़ नहीं हूँ, हालाँकि जब आपने उसका ज़िक्र किया तो मुझे ज़रूर गुस्सा आया। बाकी बातों पर हम सुबह विचार करेंगे, और अगर हम पिताजी को यह समझाने में कामयाब हो जाएँ कि लड़की अपनी मर्ज़ी से आ रही है, तो मुझे किसी आपत्ति की उम्मीद नहीं है; लेकिन हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि वह पहले जाए, और इस काम के लिए मेरे पास एक सुराग है जो मेरी मदद कर सकता है।'

'कैसे? क्या उसने तुमसे कुछ कहा?' उसने उत्सुकता से पूछा।

'नहीं,' मैंने कहा; 'उस भीड़ में वो ऐसा कैसे कर सकती थी? लेकिन तुम जानती हो कि मैं फ़ारसी समझता हूँ, मेरे शिक्षक बूढ़े मूला की बदौलत, और तुम नहीं समझती; और उसके गाए आखिरी दुख भरे गीत के बोल और उसके बोलने के अंदाज़ से, मुझे लगता है कि वो कैद और अपने साथी से तंग आ चुकी है। तुम पुरानी कहावत तो जानती ही हो, "कुबूतुर बु कुबूतुर, बाज़ बु बाज़"—कबूतर कबूतरों से और बाज़ बाज़ से संभोग करते हैं।'

'खैर,' भूद्रिनाथ ने कहा, 'उसके हिसाब से तो वह मेरी बजाय आपकी तरफ ज्यादा देखेगी; और आप जानते हैं कि मैं ब्राह्मण हूँ; इसलिए मैं उसे और इस मामले को आपके भरोसे छोड़ता हूँ: जब भी मैं काम आ सकूँ, मदद करने के लिए तैयार हूँ। इंशाअल्लाह! जैसा कि आप लोग कहते हैं, हम उस बूढ़े की दाढ़ी को कोने का पत्थर बना देंगे और उसका मजाक उड़ाएंगे।'

'आमीन!' मैंने कहा, 'हम हर हाल में कोशिश करेंगे, और कल इस विषय पर मैं आपको और जानकारी दूंगा।'

फिर हम रात के लिए अलग हो गए; और मुझे खुशी थी कि पीर खान और बाकी लोग हमसे काफी पीछे थे, इसलिए वे हमारी बातचीत का कोई भी हिस्सा नहीं सुन पाए। मैं मानता हूँ कि जब मैं सोने के लिए लेटा, तो मैं अपनी योजना की सफलता की दिली कामना कर रहा था, हालाँकि अभी तक इसे योजना कहना मुश्किल था; और हालाँकि मैंने कुछ हद तक इससे जूझने की कोशिश की थी, मैं उस नर्तकी के आकर्षण से बच नहीं पाया था; और उस बूढ़ी औरत की बातों के बाद तो इसमें आश्चर्य की कोई बात ही नहीं थी।

सुबह की नमाज़ के तुरंत बाद, टोली के मुखिया लोग उस व्यक्ति के थैलों को खुलवाने के लिए इकट्ठा हुए, जिसकी मृत्यु पिछली शाम को हुई थी। मेरे पिता सभा की अध्यक्षता कर रहे थे, और एक-एक करके उन्हें सामान के ढेर से निकाला गया। हमें सचमुच एक अनमोल वस्तु मिली थी; और इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं थी कि उनकी देखभाल में उस व्यक्ति को कितनी चिंता हुई थी, जिसके वे थैले थे। प्रत्येक थैले में, पुराने कपड़ों, चिथड़ों और पुराने तांबे के बर्तनों के बीच, कीमती पत्थरों, मोतियों, छोटे हीरों, माणिक और पन्नों से भरे छोटे बक्से छिपे हुए थे, और दो बक्सों में रत्नों से जड़े आभूषणों के सेट थे; और विशेष रूप से दो, बाजूबंद (बाजूबंद) और सिरपेश (पगड़ी का आभूषण), बेहद शानदार थे।

मेरे पिता, जिन्हें इन मामलों का अच्छा खासा अनुभव था, ने पूरे माल की कीमत कम से कम पंद्रह हजार रुपये बताई और गिरोह को दो विकल्प दिए: या तो वे पूरे माल को बराबर-बराबर हिस्सों में बाँट लें, या फिर

हैदराबाद पहुँचने तक इंतज़ार करें, जहाँ इसे आसानी से नकद में बेचा जा सकता था। कुछ विचार-विमर्श के बाद, पहले वाले माल की तरह ही दूसरा विकल्प चुना गया।

मुझे पता था कि रास्ते में हमारे पास पैसों की कमी हो सकती है, खासकर अगर हमें कोई और अमीर यात्री न मिले, इसलिए मैंने प्रस्ताव रखा कि मैं अपने दो आभूषणों में से एक नुवाब को बेच दूं, और चूंकि मेरी उनसे जान-पहचान हो चुकी थी, इसलिए मैं उसे खुद उनके पास ले जाऊं। प्रस्ताव मान लिया गया, और मुझे उम्मीद थी कि शायद संयोग से मेरी मुलाकात उस बूढ़ी औरत से हो जाए जिसने पिछली रात मुझसे बात की थी, और मैं उससे मिलने का इंतजाम कर सकूं, जिससे हमें आगे की योजनाओं में मार्गदर्शन मिल सके; इसलिए दोपहर के करीब मैंने भूद्रिनाथ को अपने साथ चलने के लिए बुलाया, और हम महल की ओर चल पड़े, जिसे गांव वाले महल कहते थे।

वैसे हमारी मुलाकात हमारे मित्र कोतवाल से हुई; लेकिन मैंने उन्हें बीच में ही रोकते हुए कहा, 'फिर मिलेंगे, कोतवाल जी,' क्योंकि ऐसा लग रहा था कि हमारी कहानी लंबी खिंचने वाली है, 'फिर मिलेंगे, मेरे मित्र, हम आपसे मिलने जरूर आएंगे; लेकिन अभी हमारा काम बहुत जरूरी है, और दोपहर हो चुकी है इसलिए हमें अंदर आने से मना किए जाने का डर है, इसलिए कृपया हमें क्षमा करें।'

'बिल्कुल,' उसने कहा, 'मैं आपको रोकूंगा नहीं, और मैं आज शाम आपके शिविर में उपस्थित होकर आपके आगे के आदेश प्राप्त करने में कोई चूक नहीं करूंगा।'

आगे बढ़ते हुए भूद्रिनाथ ने कहा, 'इसका मतलब है कि वह उपहार की उम्मीद कर रहा है। इन प्रतिष्ठित व्यक्तियों का मैंने कई वर्षों तक अध्ययन किया है।'

'हाँ,' मैंने कहा, 'हमें उसे अच्छी तरह से भुगतान करना चाहिए, और अगर कुछ भी होता है तो वह सबसे पहले हमारी प्रशंसा करेगा; लेकिन क्या आपको किसी बात की आशंका है?'

'मैं नहीं,' उसने कहा; 'काश हम हमेशा इतनी ही सुरक्षा के साथ अपना काम कर पाते और उसके लिए इतना ही अच्छा वेतन पा पाते; लेकिन हम यहाँ नुवाब के द्वार पर खड़े हैं।'

हमारे अनुरोध पर एक सेवक ने नुवाब को हमारे नाम बता दिए, और थोड़ी देर बाद हमें फिर से उनके सामने पेश किया गया, और पिछली रात की तरह ही हमारा उसी विनम्रतापूर्वक स्वागत किया गया। कुछ संक्षिप्त बातचीत के बाद, मैंने अपनी यात्रा का उद्देश्य बताया।

मैंने कहा, 'खोदावुंद, मेरे पिता बुखार और सर्दी के कारण आपके चरणों में अपना नज़ूर प्रस्तुत करने में असमर्थ रहे हैं, और उन्हें आशा है कि आप उनकी इस कथित लापरवाही को क्षमा कर देंगे। उनकी ओर से मैं आपके निरीक्षण के लिए एक दुर्लभ आभूषण लाया हूँ, जिसे देखकर उन्हें आशा है कि आप प्रसन्न होंगे; और इसे खरीदकर आप न केवल उनकी आर्थिक सहायता करेंगे, बल्कि यह आभूषण एक योग्य व्यक्ति की संपत्ति बन जाएगा।'

ऐसा कहकर मैंने पगड़ी का आभूषण निकाला और उसके सामने रख दिया। वह उसकी सुंदरता और कीमती पत्थरों की चमक से स्पष्ट रूप से बहुत प्रभावित हुआ, और उसे हर संभव स्थिति में घुमाकर, ताकि उस पर सही रोशनी पड़े, उसने आह भरते हुए उसे नीचे रख दिया।

'यह सचमुच सुंदर है, और स्वयं बुंदुगन अली की पगड़ी के योग्य है; लेकिन,' उन्होंने कहा, 'मैं इसे खरीदने के लिए बहुत गरीब हूँ; इसका मूल्य बहुत अधिक होना चाहिए।'

मैंने कहा, 'निस्संदेह, मेरे दादाजी ने इसके लिए अच्छी खासी कीमत चुकाई होगी; लेकिन समय बदल गया है, और हम अपनी पारिवारिक संपत्ति को चाहे जो भी कीमत मिले, खुशी-खुशी बेच देते हैं। इस मामले में, आपके दास का इरादा इस बेजोड़ आभूषण की कीमत लगाने का बिल्कुल नहीं है; फिर भी मुझे लगता है कि यह मेरे स्वामी के माथे पर इतना शोभा देगा कि उन्हें इसे पाने का ऐसा सुनहरा अवसर नहीं गंवाना चाहिए, ताकि वे एक दिन इसे अपने राजकुमार के दरबार में प्रदर्शित कर सकें।'

'तुमने सही कहा; और अगर हो सके तो मैं इसे महल में दिखाऊंगा और देखूंगा कि मेरे घरवालों को यह कैसा लगता है। इंशाअल्लाह! वे इसे पसंद करेंगे, और फिर हम देखेंगे कि क्या हम इस बारे में कोई समझौता कर सकते हैं।'

'बिल्कुल,' मैंने कहा; 'एक समय ऐसा भी था जब हमारे परिवार के लिए मेरे स्वामी के समान शक्ति और पद वाले व्यक्ति को ऐसी थाली भेंट करना कोई बड़ी बात नहीं थी; लेकिन जैसा कि मैंने कहा, हमारी स्थिति इतनी गिर गई है कि हम अब ऐसी चीजों के हकदार नहीं हैं जिन्हें पहनने की हिम्मत हम नहीं करते।'

नुवाब ने रत्न लिया और अपने ज़नाना में चले गए: वे काफी समय तक अनुपस्थित रहे, लेकिन उनके लौटने पर उनके चेहरे से पता चल गया कि इसे स्वीकार कर लिया गया था।

उन्होंने इस पर हज़ार तरह से विचार किया है और पाया है कि इसके साथ सौभाग्य जुड़ा हुआ है: वैसे मुझे किसी सौभाग्य की आवश्यकता नहीं है; लेकिन आप जानती हैं कि बूढ़ी औरतें कैसी होती हैं,' उन्होंने कहा। 'और अब मैं कीमत पूछूंगा: आप जानती हैं कि हम हैदराबाद के रईसों के पास बहुत धन नहीं है, और आपको अपनी मांग में संयम बरतना चाहिए।'

मैंने कहा, 'क्यों, इसे देखने वालों की राय से मैं बहुत प्रसन्न हूँ, और बस इतना ही कह सकता हूँ कि मेरे दादाजी (उनकी स्मृति अमर रहे!) ने इस रत्न के लिए इतनी बड़ी रकम चुकाई थी कि मैं उसका जिक्र करने से भी डरता हूँ। मेरे स्वामी को विशेष रूप से इसके उत्कृष्ट जल का अवलोकन करना चाहिए। मैंने कहा, उन्होंने अपने जीवन के लंबे समय में एक-एक करके ये पत्थर एकत्र किए थे, और अकेले इन पत्थरों की कीमत ही छह हजार रुपये थी; इनके चारों ओर का सोना कुछ अधिक है; लेकिन मेरे पिताजी खुद को भाग्यशाली समझेंगे यदि इसके लिए उन्हें पाँच हजार रुपये मिल जाएँ।'

नुवाब ने आह भरते हुए कहा, 'यह तो बहुत ज्यादा है! मेरे पास पांच हजार रुपये कहां से आएंगे कि मैं इस तरह की तुच्छ चीज पर खर्च कर दूं? मेरे मित्रों, इसे देखकर तो मुझे प्रसन्नता हुई है, लेकिन इसे खरीदना मेरे

बस की बात नहीं; मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं। फिर भी रुकिए; मुझे इसे किसी जौहरी से मूल्यांकित करवाने दीजिए, शायद तब हम किसी समझौते पर पहुंच सकें।'
मैंने कहा, 'बिल्कुल; मैंने अपने स्वामी से कीमत बताते समय कोई झूठ नहीं बोला है; लेकिन जौहरी को इसे देखने दीजिए; हो सकता है वह कम कीमत तय करे; और हमें तुरंत नकदी की इतनी सख्त जरूरत है कि शायद हम कुछ कम कीमत पर भी मान जाएं।'
तदनुसार जौहरी को बुलाया गया और वह थोड़ी देर में आ गया। उसे गहना दिखाया गया; और उसके चेहरे पर प्रशंसा के भाव देखकर मैं समझ गया कि हमने उसका अधिक मूल्य नहीं लगाया था। उसने उसे प्रकाश में देखा और चश्मा लगाकर हर संभव तरीके से उसकी जांच की। अंत में वह लौटा और नाक से चश्मा उतारकर हमसे उसकी कीमत पूछी। मैंने उसे कीमत बता दी।
उन्होंने कहा, 'जब यह बनाया गया था, तब निस्संदेह इसकी कीमत उतनी ही थी जितनी आप बता रहे हैं, क्योंकि ये पत्थर दुर्लभ किस्म के हैं; फिर भी, हम सब जानते हैं कि लोग अब पहले की तरह पैसा खर्च नहीं कर सकते, और सब बातों को ध्यान में रखते हुए, शायद इस समय चार हजार रुपये बहुत ज्यादा नहीं होंगे, बल्कि एक उचित कीमत होगी।'
'यह बहुत कम है; हमें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अन्य वस्तुएँ बेचकर ही संतोष करना होगा: अतः नुवाब साहब,' मैंने कहा, 'आपकी कृपा के लिए हार्दिक धन्यवाद देते हुए, हम प्रस्थान की अनुमति चाहते हैं;' और मैंने रत्न उठाया और उठ खड़ा हुआ।
'रुको,' उसने कहा; 'मैं तुम्हें तीन सौ रुपये और देता हूँ: चार हज़ार तीन सौ, यकीनन यह काफी होगा।'
मैंने जवाब दिया, 'इसे पाँच सौ कर दीजिए, और यह आपका हो जाएगा।' दोनों पक्षों के बीच काफी मोलभाव के बाद, कीमत चार हज़ार चार सौ पचास तय हुई। इसमें से दो हज़ार पाँच सौ नुवाब के कोषाध्यक्ष ने नकद दिए, और बाकी की रकम, मेरे अनुरोध पर, हैदराबाद गाँव के एक साहूकार ने तैयार कर दी। नुवाब को फिर से धन्यवाद देने के बाद, हमने उनसे हमेशा के लिए विदा ली।
घर लौटते समय, नुवाब के कुछ सैनिकों के साथ, जो पैसों से भरे थैले ले जा रहे लोगों को सुरक्षा दे रहे थे, मैंने अपने साथी से कहा, 'सुबह का काम बुरा नहीं है। इन सिक्कों को देखकर मेरे बूढ़े पिता का दिल खुश हो जाएगा; और ये उन लोगों में बाँटने के लिए काफी होंगे जिन्हें पैसों की सचमुच जरूरत है, और शहर पहुँचने तक उनका गुजारा आराम से चलेगा, भले ही हमें आगे कोई और कीमती खजाना न मिले।'
“सचमुच, तुम अपनी चतुराई और अच्छे व्यवहार पर खुद को बधाई दे सकते हो; क्योंकि इनके बिना तुम इस मामले को इस तरह नहीं संभाल पाते,” उसने कहा। “अब अगर मैं, हालांकि मैं तुमसे कहीं ज्यादा उम्रदराज ठग हूं, यह कोशिश करता, तो शायद एक विश्वसनीय कहानी न होने के कारण असफल हो जाता। उस बूढ़े ने तुम्हारे दादाजी की कहानी को ऐसे मान लिया जैसे वह उतनी ही सच हो जितनी कि हम सब यहाँ हैं। भगवान की कसम, तुम तो वाकई एक अनोखे लड़के हो!”

'ये बातें बुद्धि को तेज करती हैं; और यद्यपि मैं किसी दुर्भाग्यशाली यात्री को आपकी तरह धोखा नहीं दे सकता, लेकिन आप देख सकते हैं कि संकट की घड़ी में मैं कुछ काम आ सकता हूँ, भुद्रिनाथ।'
उन्होंने कहा, 'समय आने पर सब ठीक हो जाएगा; इसके बाद भी मैं तुमसे निराश नहीं हूं; और अगर तुम मेरे काम में मेरा साथ दोगे, तो मुझे लगता है कि तुम जल्द ही मुझसे आगे निकल जाओगे।'
मैंने जवाब दिया, 'देखते हैं; लेकिन हमारा काम अभी पूरा नहीं हुआ है; हम उस बूढ़ी औरत से नहीं मिले हैं।'
'हा! तो वह योजना अभी भी तुम्हारे दिमाग में है,' वह चिल्लाया; 'मैं गारंटी देता हूँ कि तुमने कल रात कुंचिनी का सपना देखा होगा, और तुम्हारा युवा दिल आग से जल रहा है।'
'नहीं,' मैंने हंसते हुए कहा, 'बिल्कुल ऐसा नहीं है; लेकिन मुझे कुछ उम्मीद है, और मैं कुछ समय बाद कोतवाल की चौरी पर वापस जाऊंगी, और शायद वह बुढ़िया बाजार में हो और मुझे देख ले।'
'क्या मैं आपके साथ चलूँ?' उसने पूछा।
'नहीं,' मैंने कहा; 'मुझे लगता है इससे काम बिगड़ जाएगा; मैं अकेला जाऊँगा; मेरे अलावा किसी और की मौजूदगी से, अगर मैं उससे मिलूँ तो, वह मुझसे बात करने से हिचक सकती है।'
'जैसा आप चाहें,' उसने कहा; 'चूंकि आप इस मामले को अंत तक ले जाने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं, इसलिए आपके सफल होने की संभावना मुझसे कहीं अधिक है; और इसके अलावा आप मुख्य व्यक्ति हैं, जबकि मैं केवल एक एजेंट हो सकता हूं।'
इस प्रकार बातचीत करते हुए हम तम्बुओं तक पहुँचे; और सैनिकों और धनवाहकों को एक अच्छा उपहार देकर विदा करने के बाद, मैंने थैलों को अपने पिता के तंबू में रखवाया, जो सो रहे थे; मैंने उन्हें उनके सामने रखा और उन्हें जगाकर थैलों की ओर इशारा किया।
नींद से जागने पर बड़बड़ाते हुए उसने अपनी आंखें मलीं; लेकिन थैलियों को देखकर उसकी आंखें तुरंत ही मोहित हो गईं, और मैं उसकी हैरानी पर दिल खोलकर हंसे बिना नहीं रह सकी, क्योंकि उसने एक-एक करके थैलियों को उठाया और उनके अंदर क्या है, इसका अनुमान लगाने लगा।
'अरे, मेरे बेटे! अमीर अली, ये सब तुम्हें कहाँ से मिला? हर एक में पाँच सौ रुपये होने चाहिए! एक, दो, तीन, चार, पाँच,' उन्होंने गिनते हुए कहा; 'दो हज़ार पाँच सौ! नामुमकिन! मेरे बेटे, तुम क्या कर रहे थे? मेरा दिमाग चकरा गया है। ये सब तुम्हें कहाँ से मिला?' 'जी पिता जी, बिल्कुल सही कहा आपने; हर एक में लगभग पाँच सौ रुपये हैं। ये उस गहने की कीमत है जो आपने मुझे बेचने के लिए दिया था, जिसकी कीमत हमारी उम्मीद से कहीं ज़्यादा थी। मैंने अंदाजे से पाँच हज़ार रुपये माँगे थे, और मैं आपके लिए चार हज़ार चार सौ पचास रुपये लाया हूँ, जो मुझे मिल सके: ये दो हज़ार रुपये के नोट हैं, और बाकी थैलों में हैं।'
'जितना तुम कमा सकते थे, उतना कमा लो, बेटा!' मेरे पिता ने कहा; 'तुमने तो कमाल कर दिया। माशाल्लाह! हम सचमुच बहुत अमीर हो गए हैं; यह मेरी उम्मीद से कहीं अधिक है।' और, उनकी आँखों से आँसू बहने लगे, उन्होंने मुझे गर्मजोशी से गले लगा लिया।

मैंने कहा, 'चूंकि मैंने अच्छा काम किया है, इसलिए मुझे बदले में एक कृपा की भीख मांगनी है, जिसे मुझे उम्मीद है कि मेरे पिता प्रदान करेंगे; और यह एक ऐसा मामला है जिसे मैं उनकी अनुमति के बिना सुलझाने का साहस नहीं कर सकता।'
मेरे पिता ने कहा, 'बोलते रहो; मैं तुम्हें किसी भी बात से मना नहीं कर सकता।'
मैंने आगे कहा, 'क्यों, एक बेहद खूबसूरत तुवैफ है, जो बुलबुल की तरह गाती है और हैदराबाद तक हमारे साथ चलने को उत्सुक है। आपसे बात किए बिना मैं इसकी अनुमति देने की हिम्मत नहीं कर सका।'
बूढ़े आदमी का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। 'एक तुवैफ!' उसने कहा; 'क्या तुम्हें याद नहीं है, मेरे बेटे, मैंने तुम्हें उसके जैसी महिलाओं से सावधान रहने के लिए जो चेतावनी दी थी, और तुमने उन्हें इतनी जल्दी भुला दिया कि मौका मिलते ही उनकी संगति में चले गए?'
मैंने कहा, 'मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि न तो मैं उन्हें भूला हूँ और न ही मैं उनकी संगति में गया हूँ। मैंने उन्हें कल रात नुवाब के दरबार में देखा था, लेकिन उनसे बात तक नहीं की।'
तो फिर तुम्हें कैसे पता चला कि वह यहाँ से जाना चाहती है?
मैंने कहा, 'मैंने यह बात उससे जुड़ी एक बूढ़ी औरत से सुनी है, जो मुझे पूरा यकीन है कि शाम से पहले यहाँ आ जाएगी।'
मेरे पिता ने सिर हिलाया। उन्होंने कहा, 'मैं तुम पर अविश्वास नहीं करता, मेरे बेटे; लेकिन मुझे तुम्हारे युवा हृदय और उग्र स्वभाव पर संदेह है: यह एक ऐसा खतरा है जिसका सामना करना बहुत कठिन है; क्योंकि एक बार अगर तुम हमारे साथ हो गए, तो वह तुम्हें अपने जाल में फंसा लेगी, और फिर पिता, कर्तव्य और पेशा सब भुला दिए जाएँगे, और मैं तुम्हें खो दूँगा, मेरे बेटे, जो मुझे मार डालेगा।'
'हे पिता, कृपया ऐसा न सोचें,' मैंने कहा; 'आपको जिस खतरे का डर है, वैसा कुछ नहीं है; वह हमारा पीछा करेगी, और हम उसे बहुत कम ही देख पाएंगे, सिवाय इसके कि हम अपनी यात्रा की उदास शामों में उसके गीत सुनने की इच्छा करें। और कृपया मेरी यह विनती मान लें; यह एकमात्र विनती है जो मैंने कभी की है, और शायद मैंने अब तक जो किया है, उसके लिए मैं कुछ पाने का हकदार हूं।'
'हाँ, बिल्कुल,' उसने उत्तर दिया; 'इसके अलावा कुछ भी होता तो मैं बिना किसी आपत्ति के सहर्ष स्वीकार कर लेता: परन्तु मुझे तुझ पर पूरा भरोसा है, मेरे पुत्र, इसलिए जैसा तू चाहे वैसा कर, मैं इस मामले में तेरा विरोध नहीं करूँगा।'
अब तक तो कोई आपत्ति नहीं थी; फिर भी मेरा मन बेचैन हो रहा था क्योंकि मुझे याद आ रहा था कि मैंने उससे यह बात छुपाई थी कि वह नुवाब के वेतन और सेवा में है, और उसके साथ उसका संबंध हम सभी के लिए मुसीबत खड़ी कर सकता है; लेकिन मैंने सोचा, औरतें बहुत बुद्धिमान होती हैं; और अगर वह सचमुच उससे दूर जाना चाहती है, तो वह खुद ही उपाय कर लेगी।
जैसे ही मुझे मौका मिला, मैं बाज़ार के लिए निकल पड़ा; दुकानों की कतार में घूमते हुए और अपनी ज़रूरत की चीज़ें खरीदते हुए, मैं चौरे की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर चढ़ गया और जल्द ही कोतवाल से बातचीत

करने लगा। उसने मुझे कस्बे की गपशप सुनाई और अपनी शक्ति और प्रभाव का बड़ा एहसास दिलाने की पूरी कोशिश की। कई बार तो मेरा मन हुआ कि मैं उसे अपनी योजना बता दूं और मदद के लिए उसे रिश्वत भी दे दूं; लेकिन मैंने खुद को रोक लिया, इस डर से कि कहीं वह मेरा पैसा लेकर बाद में धोखा न दे दे। लेकिन हुआ यह कि मेरी प्रतीक्षा ज़्यादा देर तक नहीं चली, क्योंकि मैंने नीचे बाज़ार में उस बुज़ुर्ग महिला को देखा, जो कस्बे के उस द्वार की ओर तेज़ी से जा रही थी जिससे मैं अंदर आया था; इसलिए मैंने उस सम्मानित कोतवाल से विदा ली और उससे शाम को शिविर में आने का अनुरोध किया ताकि उसकी विनम्रता और प्रयासों के लिए उसे इनाम दिया जा सके।

हालांकि, गली में पूरी तरह उतरने से पहले ही मैं उस बूढ़ी औरत को अपनी नजरों से ओझल कर चुका था; और जिस दिशा में वह गई थी, उसी दिशा का अनुसरण करते हुए, मैंने उसे फाटक के ठीक आगे पकड़ लिया।

मैंने कहा, 'माँ, क्या मैं वही हूँ जिसे आप ढूंढ रही हैं?'

'हे मेरे जान! क्या आखिरकार मैंने तुम्हें पा लिया, मेरे राजकुमार? कल रात से ही तुमसे मिलने की मेरी कोशिशें कभी नहीं रुकीं; मैंने तुम्हें महल में प्रवेश करते देखा, लेकिन मेरे बूढ़े अंगों ने इतनी तेज़ी से तुम्हारा पीछा करने की हिम्मत नहीं की।' और उसने अपने हाथ मेरे सिर पर रख दिए और अपनी उंगलियों के हर जोड़ को कनपटी पर दबाकर चटका दिया।

'क्या हम यहां निगरानी से सुरक्षित हैं?' उसने आगे कहा, 'क्योंकि मुझे तुमसे बहुत कुछ कहना है, और वह भी जल्दी में।'

'यहाँ नहीं,' मैंने उत्तर दिया; 'मैं वहाँ हमारे तंबुओं की ओर जा रहा हूँ, और आप मेरे पीछे आ सकते हैं; मैं उनके पास आपका इंतजार करूँगा।'

मैं आम के पेड़ के नीचे सुरक्षित खड़ा था, जहाँ किसी की नज़र मुझ पर नहीं पड़ रही थी। तभी एक बूढ़ी औरत लंगड़ाते हुए मेरे पास आई। हाँफते-हाँफते वह बैठ गई। जब उसकी साँस थोड़ी संभली, तो उसने अपने शरीर पर लिपटे कपड़े का एक कोना खोला और मुझे एक छोटी सी अंगूठी भेंट की।

'यह,' उसने कहा, 'उसी का संदेश है जिसे तुम जानते हो: और हे मेरी जान, आलिया के प्रेम में! उसके लिए प्रयास करो: वह इस जगह मर रही है, और उस अभागे नुवाब की मनमानी के सारे अत्याचार झेल रही है। एक दिन वह नुवाब की कृपा और दया से भरी होती है, दूसरे दिन ईर्ष्या या क्रोध में आकर वह उसे हर सुख-सुविधा से वंचित कर देता है, उसे एक सुनसान कमरे में बंद कर देता है, और मुझे भी उसके पास जाने नहीं देता। हे मेरे पुत्र, तुम युवा और साहसी हो; तुम उसे इस हालत में नहीं रहने दोगे, जो हैदराबाद का मोती है, जिसने राजकुमारों और रईसों का दिल जीता है। आलिया के लिए प्रयास करो, और वह मुक्त हो जाएगी, और तुम्हारे साथ दुनिया के अंत तक जाएगी। उसने तुम्हें देखा है, और तुम्हारी सुंदरता उसके दिल में उतर गई है और उसके जिगर को खा रही है; और इस और उसके पिछले कष्टों के कारण, वह आज पागलपन की स्थिति में है, यहाँ तक कि मैं भी उसे शांत नहीं कर पा रही हूँ।'

'मैं तैयार हूँ, माँ,' मैंने कहा: 'यह सच है कि मुझे उनके गीतों के अलावा उनसे कभी कोई शब्द सुनने का सौभाग्य नहीं मिला; लेकिन मैं उन्हें समझ सकती हूँ; और एक गीत उन्होंने गाया था जो तब से मेरे कानों में गूंज रहा है। बताइए, क्या उसका मुझसे और उनसे कोई संबंध था?'
'तुमने सही अनुमान लगाया,' उसने उत्तर दिया; 'मैंने उससे इसे गाने के लिए कहा था, इस उम्मीद में कि शायद इसे समझा जा सके, और आलिया की कृपा से यह व्यर्थ नहीं गया: लेकिन समय तेजी से बीत रहा है, मेरे बेटे, और क्या किया जा सकता है?'
मैंने कहा, 'नहीं, मैं आपसे ही सुनना चाहता हूँ, क्योंकि मुझे नहीं पता कि आगे क्या करना है; न तो मैं इस शहर को जानता हूँ, न ही उस घर को जहाँ वह रहती है, तो मैं क्या सलाह दे सकता हूँ? मैं इस मामले में असहाय हूँ, फिर भी पूरी कोशिश करने को तैयार हूँ।'
'सुनो,' बूढ़ी औरत ने कहा; 'मैं तुम्हें उस जगह का वर्णन करती हूँ, और तुम्हें मेरे पीछे आकर उसे बाहर से देखना होगा, ताकि तुम रात में उसे पहचान सको। वह जिस जगह पर अभी है, और जहाँ वह शायद आज रात सोएगी, वह गली की ओर ज़नाना की दीवार के कोने पर बना एक छोटा सा टाइलों का मकान है। उसमें ज़मीन से कुछ दूरी पर दो खिड़कियाँ हैं, लेकिन इतनी ऊँची नहीं कि अगर कोई बाहर से उसकी मदद करे तो वह बाहर न निकल सके। उसके भागने का कोई और रास्ता नहीं है; क्योंकि उसके लिए ज़नाना से होकर और फिर खुले आंगनों से होकर निकलना असंभव होगा, जो सैनिकों से भरे हुए हैं। बताओ, क्या तुम यह जोखिम उठाने की हिम्मत करोगे; या कायर, नामर्द बनोगे, जो एक औरत के लिए, और वह भी इतनी सुंदर औरत के लिए, एक बूँद खून बहाने से भी पीछे नहीं हटेगा?'
मैंने कहा, 'मैं कायर नहीं हूँ, भले ही मेरे पास गर्व करने लायक कोई वीरतापूर्ण कारनामे न हों। मैं जोखिम स्वीकार करता हूँ, और आलिया से प्रार्थना करता हूँ कि वह हमारी रक्षा करे! क्या आस-पास कोई सैनिक हैं?'
'नहीं,' उसने कहा, 'बिल्कुल नहीं; खतरा सिर्फ गांव के द्वार पर है, जिसकी हमेशा पहरेदारी होती है। आप इसे कैसे पार करेंगे?'
मैंने कहा, 'अगर बस इतना ही है, तो मुझ पर भरोसा रखिए; इंशाल्लाह! सुबह हम सब नुवाब की दाढ़ी पर खूब हँसेंगे। लेकिन बताइए, आप हमारे साथ आने का क्या इंतजाम करेंगे?'
'अरे, मैंने तो पहले ही इसका इंतजाम कर लिया है। मुझे अपनी मालकिन के विभिन्न बहाने या ज़रूरतों के आधार पर रात के किसी भी समय बाहर जाने की पूरी छूट है; और मैं आधी रात को भी बाहर निकलकर आपसे कहीं भी मिल सकती हूँ जहाँ आप तय करें।'
मैंने कहा, 'यह अच्छा है; अब आओ और मुझे वह जगह दिखाओ।'
वह मुझे उस फाटक से ले गईं जिससे हम अभी-अभी गुज़रे थे, और एक संकरी गली में मुड़कर उन्होंने मुझे रास्ते में आने वाले विभिन्न घुमावों को ध्यान से देखने के लिए कहा, जो मैंने किया। अंत में हम दो ऊँची दीवारों के बीच एक गली में पहुँचे, जिनमें से एक नुवाब का ज़नाना था; और आगे बढ़ते हुए, हम अंततः एक छोटे से टाइल वाले घर के नीचे पहुँचे, जो उनके द्वारा दिए गए विवरण से बिल्कुल मेल खाता था।

'यही वह जगह है,' उसने कहा; 'और वह खिड़की है जहाँ से उसे नीचे उतरना होगा। जैसा कि आप देख रहे हैं, यह बहुत ऊँची नहीं है, और उसे बाहर निकलने में ज्यादा कठिनाई नहीं होगी।'
मैंने जवाब दिया, 'मुझे तो कोई समस्या नहीं दिखती, अगर उसका दिल मजबूत हो। उससे कहो कि वह अपनी चादरें एक साथ बांधकर नीचे गिरा दे; हम नीचे होंगे, और ध्यान रखना कि वह आसानी से जमीन पर पहुंच जाए।'
'मैं करूंगी,' उसने कहा; 'और अब चलो! हमें देखा जा सकता है, और अगर ऐसा हुआ तो आलिया हमारी मदद करेगी!'
'वह हमें देख रही है!' मैं चिल्लाया; 'क्योंकि खिड़की से एक हाथ बाहर निकला हुआ है।'
'यह वही है!' बूढ़ी औरत ने कहा; 'और ओह! यह जानकर उसे कितनी खुशी हुई होगी कि ऐसे लोग हैं जो उसकी सेवा करने के लिए उत्सुक और तत्पर हैं! अब, मेरी प्यारी चिड़िया, तुम्हें पिंजरे में नहीं रहना पड़ेगा, चाहे वह सोने का ही क्यों न हो। लेकिन जाओ, मेरी आत्मा, जाओ! यहाँ मत ठहरो; उसकी एक मुस्कान आज बहुत महंगी है, और आज रात तुम्हें हजारों मुस्कानें मिलेंगी, हाँ, उसके आशीर्वाद के साथ भी।'
मैंने कहा, 'मैं जाता हूँ; लेकिन नर्स, असफल मत होना; अपनी जान की खातिर यह सुनिश्चित करना कि सब ठीक हो; तुम्हें हमसे उसी मोड़ पर मिलना होगा जहाँ से हम आखिरी बार गुजरे थे।'
वृद्धा ने सहमति में सिर हिलाया, और मैं जितनी जल्दी हो सके वहाँ से निकल गया, हालाँकि मैं अपनी प्रेमिका की एक झलक, एक मुस्कान पाने के लिए दुनिया भर की दौलत कुर्बान कर देता। तंबुओं तक पहुँचते ही मैंने भूद्रिनाथ को बुलाया, उन्हें अपनी सफलता के बारे में बताया और उन्हें वर्तमान योजना विस्तार से समझाई। वे प्रसन्न हुए और उन्हें इसमें कोई आपत्ति नहीं दिखी।
उन्होंने कहा, 'हालांकि, मुझे एक बात का प्रतिनिधित्व करना है, जिसे आप चाहें तो कर सकते हैं या नहीं कर सकते हैं, यह आपकी इच्छा पर निर्भर है।'
'यह क्या है? बताओ।'
'क्यों,' उसने जवाब दिया, 'हालांकि जैसा कि आप कहते हैं, शहर से बाहर निकलना काफी आसान होगा, लेकिन मुझे नहीं लगता कि शहर में प्रवेश करना इतना आसान होगा।'
'अलिया की कसम! तुम सचमुच सही कह रही हो,' मैंने कहा; 'मेरी योजना में मदद करने के लिए तुम क्या सलाह दे सकती हो?'
उसने जवाब दिया, 'देखो, द्वार पर पहरा है; मैंने कल रात आधी रात से पहले अंदर जाने की कोशिश की, क्योंकि मुझे अपना एक काम निपटाना था और वह सुंदरी मेरा इंतज़ार कर रही थी; लेकिन द्वार पर खड़े कमीनों (उनकी बहनों पर लानत हो!) ने कसम खाकर कहा कि मैं चोर हूँ, और काफी देर तक गाली-गलौज करने के बाद उन्होंने आखिरकार मेरे मुँह पर द्वार बंद कर दिया, और मुझे बहुत ही खराब मूड में वापस लौटना पड़ा। इसलिए मेरी सलाह है कि हम रात होने से पहले अंदर चले जाएँ और एक भुट्टेरा की दुकान में ठहर जाएँ, जिससे मेरी थोड़ी-बहुत जान-पहचान हो गई है; अगर हम रात में उसके यहाँ से चले जाएँ तो उसे

कुछ शक नहीं होगा, क्योंकि मैंने आज उसे अपनी कल रात की बदकिस्मती के बारे में बताया था, और उसी ने मुझे शाम को उसके यहाँ आने का प्रस्ताव दिया था, ताकि मैं बाद में जहाँ चाहूँ जा सकूँ। तो तुम क्या कहते हो? क्या हम उसके यहाँ जाएँ या अपनी सूझबूझ से अंदर जाने का सबसे अच्छा तरीका ढूँढ़ें?'

मैंने कहा, 'तुम्हारी योजना अच्छी है, और पिछली रात की तुम्हारी बदकिस्मती के लिए मैं तुम्हारा शुक्रगुजार हूं; अगर ऐसा न होता तो हम शायद जाकर फाटक से अपना सिर टकराते रह जाते और कुछ हासिल नहीं होता; हम दीवार फांदकर भी जा सकते थे, और मुझे आश्चर्य है कि तुमने इसके बारे में क्यों नहीं सोचा।'

'मैंने किया था,' उसने जवाब दिया, 'और मैं इसे करने के बारे में असमंजस में था; लेकिन किसी ने मुझे देख लिया होगा, और मुझे चोर समझकर, मुझे गोली मारने में जरा भी संकोच नहीं किया होगा, जैसे कि मैं कोई कुत्ता हूँ; इसलिए मैं वहाँ से भाग गया।'

मैंने कहा, 'तुम्हारे पास अद्भुत विवेक है; मेरा उग्र स्वभाव मुझे किसी मुसीबत में डाल देता, जबकि तुमने अपने चिड़चिड़ेपन को खा लिया।'

'और अब मैं तुम्हारी सेवा में तत्पर हूँ,' उसने जवाब दिया। 'तो आज रात हम अंदर ही सोएंगे, जिससे मुझे खुशी है, और हम दूसरे द्वार से निकलेंगे; थोड़ा घूमकर जाना पड़ेगा, लेकिन इस द्वार पर खड़े लोगों का सामना करने से बेहतर है; मुझे शक है कि वे मुझे जानते हैं, या मेरी आवाज़ पहचान लेंगे, क्योंकि मैं इतना गुस्से में था कि उसे छिपा नहीं सका।'

मैंने कहा, 'हम करेंगे,' और अब मुझे अंदर जाकर खाना खाना चाहिए, क्योंकि मैंने सुबह से उपवास किया है, और खाली पेट कोई भी काम करना ठीक नहीं होता।'

शाम की प्रार्थना के बाद भूद्रिनाथ और मैं शहर में गए; और ऐसा करना अच्छा ही हुआ, क्योंकि द्वार पर मौजूद लोग उन्हें अच्छी तरह जानते थे, और उन्होंने पिछली रात की उनकी असफलता के बारे में अच्छे स्वभाव से उनसे मजाक किया।

'आज रात तुम हमसे पहले आ गए हो, मेरे दोस्त,' एक साथी ने कहा; 'और तुम बुद्धिमान हो, क्योंकि अगर तुम बाद में आते तो हम पहले की तरह तुम्हारे मुंह पर दरवाजा बंद कर देते।'

'आप थोड़ा और सभ्य व्यवहार कर सकते थे,' भूद्रिनाथ हंसते हुए बोले। 'मुझे लगता है, हालांकि आपने मुझे अंदर नहीं आने दिया, लेकिन अगर मैं किसी को अपने साथ ले आऊं तो आप मुझे बाहर जाने देंगे?'

'वैसे, यह आदेशों के बिल्कुल खिलाफ तो नहीं है, लेकिन आपको टोल देना होगा; इसलिए, अगर आप अपने साथ पैसे नहीं लाए हैं, तो बेहतर होगा कि आप वहीं रहें।'

'शायद मुझे कुछ मिल जाए, कम से कम इतना तो मिल ही जाएगा कि जरूरत पड़ने पर आपके हुक्के कुछ दिनों तक भरे जा सकें।' भुद्रिनाथ ने वक्ता से कहा।

'सहमत हैं,' सभी साथियों ने कहा; 'वाह, बढ़िया सौदा है! कुछ रुपये में तुम जिसे चाहो ले जा सकती हो, नुवाब का हरम भी, हालांकि खबरों के अनुसार उसमें कुछ खास नहीं है।'

मैंने पूछा, 'आपका वुघिरा, आपका अधिकारी कौन है?' तभी एक आदमी आगे आया और बोला, 'मैं ही हूँ, महाराज, और मैं एक ईमानदार व्यक्ति के कामों को भी उतनी ही आसानी से अनदेखा कर सकता हूँ जितना किसी और को।'
'बशर्ते इसके लिए आपको भुगतान मिले,' मैंने कहा।
'बेशक,' उसने हंसते हुए कहा; 'हम खुशकिस्मत हैं जब संयोग से आप जैसे सज्जन हमारे रास्ते में आ जाते हैं।'
मैंने कहा, 'ये लो पांच रुपये, इनसे अपना मनोरंजन करो; और ध्यान रखना कि नशे में धुत न हो जाओ, वरना सारा दोष हम पर आ जाएगा।'
'आपकी कृपा बढ़ती रहे!' सभी ने एक स्वर में कहा; 'हम आपके परम पूज्य सेवक हैं।'
'अब तुम यहाँ से कैसे निकलोगे?' जब हम आगे बढ़े तो भुद्रिनाथ ने पूछा।
मैंने कहा, 'इस रास्ते से नहीं, अगर संभव हो तो, क्योंकि इस मामले को लेकर हंगामा हो जाएगा; और अगर हम यहाँ से बाहर गए तो इससे हमारी खोज का सुराग मिल जाएगा। हम पहले दूसरे द्वार से कोशिश करेंगे।'
उन्होंने कहा, 'मैं शर्त लगा सकता हूँ कि एक घंटे में वे सब नशे में धुत हो जाएँगे, और तब हम अपने लिए द्वार खोल सकते हैं; लेकिन यहाँ भुट्टेरा की दुकान है, और उन कबाबों की खुशबू बहुत ही स्वादिष्ट है; कभी-कभी मुझे लगता है कि काश मैं ब्राह्मण न होता, ताकि मैं भी उन्हें आपकी तरह खा पाता।'
'आह,' मैंने कहा, 'आपके लिए ऐसा कहना अच्छा है; लेकिन शायद वे कभी न कभी बहुत लुभावने साबित हुए होंगे।'
'हे कृष्ण! मैं कसम खाता हूँ कि तुम मेरे साथ अन्याय कर रहे हो,' वह चिल्लाया; 'मैं ब्राह्मण हूँ और रहूँगा; तुम जानते हो कि मेरा धर्म मुझे बताता है कि मैं दुखदायी मानवता के हर स्तर से गुज़रते हुए क्रमिक रूप से परिवर्तित हुआ हूँ, और अब जब मैं शिखर पर पहुँच गया हूँ, तो मैं इतना मूर्ख नहीं हूँ कि कुछ कबाबों के लिए फिर से नीचे उतरकर सारा कष्ट सहूँ।'
'आप सही कह रहे हैं,' मैंने कहा; 'फिर भी मैं इन्हें चखूँगा; मैं अपने तम्बू में जब चाहूँ तब नहीं खा पा रहा था, लेकिन इनकी खुशबू ने मेरी भूख बहुत बढ़ा दी है।' और थोड़ी ही देर में मेरी उंगलियाँ खिचड़ी और कबाब से भरे एक धुएँदार बर्तन में थीं, जो मिर्च के तीखेपन से भी ज़्यादा तीखे थे।
जब मैंने अपना काम पूरा कर लिया, तो मैंने कहा, 'मित्र भुट्टेरा, निश्चित रूप से स्वयं शैतान कभी-कभार तुम्हारी दुकान पर आता होगा, क्योंकि पीतल का मुँह रखने वाले के अलावा कोई और मांस के उन टुकड़ों को नहीं खा सकता।'
उस व्यक्ति ने कहा, 'क्षमा करें, मैं व्यापार के सिलसिले में बाहर गया हुआ था, और मुझे संदेह है कि मेरी बेटी ने, जैसा कि आप कहते हैं, उनमें बहुत अधिक मिर्च डाल दी होगी; लेकिन मैं अपने स्वामी के लिए एक प्याला शरबत बना सकता हूँ, जो स्वर्ग में सच्चे विश्वासियों द्वारा पिए जाने वाले शरबत की एक घटिया नकल होगी, और इससे उनका मुँह ठंडा हो जाएगा।'

'और अगर आप चाहें तो एक हुक्का भी दे दीजिए,' मैंने कहा, 'तो मुझे ज्यादा आराम महसूस होगा।'

अध्याय X

चाहे तुम सो जाओ या जाग जाओ, हे सुंदर स्त्री!
गाओ मेगन, ओह गाओ मेगन! अब उड़ान भरने का सबसे उपयुक्त समय है।
और तुम्हारा प्रेमी तुम्हें मुक्त करने के लिए इंतजार कर रहा है।
पुराना गीत

मैंने भुट्टेरा को कुछ देर अपने घर के अंदर चहल-पहल करते सुना और यह देखकर प्रसन्न हुआ कि वह मुझे प्रसन्न करने के लिए इतना प्रयास कर रहे थे। थोड़ी देर में शरबत तैयार हो गया और उसमें मिलाए गए गुलाब जल की ठंडक ने मेरे मुँह की जलन को शांत कर दिया। इससे मैं हुक्का का आनंद ले सका, जो नुवाब द्वारा दिए गए हुक्के से कम खर्चीले उपकरण में भी उतना ही स्वादिष्ट होता: उसकी मनमोहक सुगंध ने मुझे शांत किया और अब तक मेरे अंदर व्याप्त उत्तेजना को कम कर दिया।

'आप सहज प्रतीत हो रहे हैं,' भुद्रिनाथ ने कहा।

मैंने उत्तर दिया, 'मैं ऐसा ही हूँ; और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि आप अपने ब्राह्मणवादी विश्वास के बावजूद मुझसे ईर्ष्या करते हैं।'

'शायद मैं करता हूँ,' उसने कहा; 'पर मैंने कभी मांस और उन अन्य चीज़ों का स्वाद नहीं चखा है जिन्हें आप इतना महत्व देते हैं, इसलिए मैं उनका सही आकलन नहीं कर सकता, और मुझे उनकी परवाह भी नहीं है: बल्कि, मांस का विचार ही, उसे कच्चे रूप में देखना, खून, उसके साथ निकलने वाला कचरा, ये सब मुझे घृणित लगते हैं; और मुझे बहुत संदेह है कि अगर मैं मुसलमान बन जाऊँ, तो क्या मैं कभी उसे खा पाऊँगा। छी! यह विचार ही भयानक है।'

मुझे उसकी झुंझलाहट पर ज़ोर से हंसी आ गई, और वह नाराज़ नहीं हुआ। 'लेकिन,' मैंने कहा, 'हम सही समय पर कैसे उठेंगे? एक घंटा पहले या एक घंटा बाद, हमारा सारा काम बर्बाद हो जाएगा।'

'मैं भी यही सोच रहा था,' उसने जवाब दिया; और भुत्तेरा की ओर मुड़कर उसने पूछा कि वह कितनी देर तक जागा रहा: 'क्योंकि,' उसने आगे कहा, 'मेरे दोस्त और मुझे आधी रात के आसपास एक छोटा सा काम करना है। अगर हम सो जाते हैं तो क्या हम आप पर भरोसा कर सकते हैं कि आप हमें जगा देंगे?'

'ज़रूर,' उस आदमी ने कहा; 'मैं आधी रात के बाद तक अपनी दुकान बंद नहीं करता, क्योंकि कभी-कभी यात्री आ जाते हैं, और बेचारे भूखे लोग सबसे पहले भुट्टेरा की दुकान पर ही आते हैं, और अगर वहाँ उनके लिए कुछ गरमागरम न हो तो मेरा क्या होगा!'

मैंने उसे कुछ रुपये फेंकते हुए कहा, 'कबाबों की कीमत के अलावा ये थोड़ा सा अतिरिक्त है, ताकि तुम जागते रहो।'

उन्होंने कई सलाम और शुभकामनाओं के साथ पैसे लिए, और मेरा हुक्का खत्म हो चुका था, और मुझे नींद आ रही थी, इसलिए मैं लेट गया और सो गया, लेकिन ज्यादा देर नहीं। जैसा कि अक्सर होता है, उत्तेजना ने

नींद पर काबू पा लिया, और मैं घबराकर जाग गया कि कहीं मैं ज्यादा सो तो नहीं गया; हालांकि ऐसा नहीं था। चारों ओर देखा तो भुट्टेरा केक पकाने में व्यस्त थे, जबकि उनकी छोटी बेटी आग पर कबाब सेंक रही थी; उन्होंने मुझे देखा और कहा, 'आप जल्दी जाग गए, साहब, अभी भी एक घंटा बाकी है; बेहतर होगा कि आप फिर से सो जाएं; देखिए मेरे पास काम है जो मुझे इससे ज्यादा देर तक जगाए रखेगा, क्योंकि कुछ यात्री आ गए हैं, और मैं उनके भूखे पेट भरने के लिए जितना कर सकता हूं उतना ही कर पा रहा हूं।'

मैंने कहा, 'मैं अब और सो नहीं सकता; मैं तरोताजा हो गया हूँ, और एक-दो हुक्का और मुझे जाने के समय तक जगाए रखेंगे।'

'मैं तुम्हें समझता हूँ,' उसने कहा; 'तुम नौजवान जोशीले हो और हमेशा रोमांच की तलाश में रहते हो; लेकिन यह स्वाभाविक ही है: मैं उस नौजवान के लिए एक कौड़ी भी नहीं दूंगा जिसमें तुम्हारे जैसा जोश न हो।'

मैंने कहा, 'आपकी तरक्की हो; लेकिन मुझे एक और हुक्का दीजिए, क्योंकि पहले वाले ने सचमुच मेरे मुंह में एक सुखद स्वाद छोड़ दिया है।'

वह थोड़ी देर के लिए अपने घर के अंदर चला गया और फिर उसे लेकर लौट आया।

'अब,' उसने कहा, 'यदि पहली वाली आपको पसंद आई, तो आप इससे भी संतुष्ट होंगे; यह एक चुनिंदा नुस्खे से तैयार की गई है, और मैं इसे केवल आप जैसे उच्च वर्ग और रुचि वाले लोगों को ही देता हूँ: यह आम लोगों के लिए महत्वहीन होगी।'

जैसा कि उन्होंने कहा, यह स्वादिष्ट था; और मेरी संतुष्टि के लिए मेरी पाइप कई बार फिर से भरी जा चुकी थी, तभी उन्होंने मुझे बताया कि मेरा वांछित समय आ गया है।

उसने कहा, 'वह तारा आधी रात से कुछ समय पहले घरों के ऊपर उगता है, इसलिए अपने साथी को जगाओ; तुम्हारा इंतजार किया जा रहा होगा।'

मैंने वैसा ही किया; भूद्रिनाथ जल्द ही जाग गया और मेरे साथ चलने को तैयार हो गया। हमने अपने मेज़बान से विदा ली और सुनसान हो चुकी गलियों से होते हुए तय स्थान की ओर चल पड़े।

उसने मुझसे कहा, 'हम तो बिल्कुल दो चोरों की तरह हैं; अगर गांव के पहरेदार हमें पकड़ लें तो क्या होगा? हम बहुत मूर्ख दिखेंगे।'

मैंने कहा, 'मुझे इसमें कोई खतरा नहीं दिखता।' मेरे मुंह से ये शब्द निकले ही थे कि हमने गश्ती दल को अपने सामने वाली गली में आते देखा। हमारे पास ही एक खुला गेट था, और अंदर घुसकर हम बड़े दरवाजों के पीछे छिप गए। हालांकि, हमें देख लिया गया था, और जब वे लोग वहां से गुजरे, तो उनमें से एक ने कहा कि उसे यकीन है कि उसने दो आदमियों को वहां छुपकर बैठे देखा था।

'बकवास,' दूसरे साथी ने कहा, 'तुम हमेशा अंधेरे में ही आदमियों को देखते हो। चलो! अभी आधी रात ही हुई है, और मुझे नींद आ रही है; हम थोड़ा और आगे जाएंगे और फिर दुफ्रा को पीटेंगे; अगर कोई चोर आसपास होगा तो वह भाग जाएगा।'

एक ज़ोरदार जम्हाई ने उसके कथन की सत्यता का अच्छा प्रमाण दिया और वे आगे बढ़ गए। जैसे ही हम अपने छिपने के स्थान से बाहर निकले, तुरही और बिगुल बजने लगे, और कस्बे के दूसरी ओर से भी आवाज़ें आईं; और फिर सब कुछ फिर से मौत की तरह शांत हो गया, सिवाय इसके कि गाँव का एक कुत्ता चाँद की ओर देखकर अपनी कर्कश आवाज़ में भौंका।

मैंने कहा, 'अब कोई खतरा नहीं है; चलो, हम उस जगह के करीब हैं।'

कुछ कदम और आगे बढ़ने पर हम उस कोने पर पहुँच गए जहाँ उस बूढ़ी औरत ने कहा था कि वह हमारे आने का इंतजार करेगी, और वहाँ हमें वह मिल गई, जिससे हमें बहुत खुशी हुई।

'आप लोगों के आने पर आपको मेरा आशीर्वाद प्राप्त हो,' उसने कहा; 'मुझे लगा था कि रात कभी खत्म नहीं होगी, और मैं यहां कुछ घंटों से इंतजार कर रही थी।'

मैंने कहा, 'क्या सब कुछ तैयार है? क्या वह तैयार है?'

'हाँ, बिल्कुल; मैं यकीन दिला सकती हूँ कि उसके लिए भी समय उतना ही धीरे-धीरे बीता है जितना मेरे लिए; और सुनो,' बूढ़ी औरत ने कहा, 'उसने एक अनोखी तरकीब सोची है, जिससे संदेह दूर हो जाएगा:' और वह दिल खोलकर हँसी।

'आलिया की कसम, चुप रहो!' मैंने कहा; 'अगर हमें सुना या देखा गया तो हमारा काम तमाम हो जाएगा।'

'वैसे भी, चिंता करने लायक कुछ खास नहीं है, क्योंकि एक तरफ यह घर वीरान है, और दीवार के अंदर, दूसरी तरफ, नुवाब का बगीचा है, जहां रात में कोई नहीं ठहरता।'

'तो मुझे बताओ उसकी योजना क्या है; क्या हम उसमें सहायता कर सकते हैं?'

'अरे नहीं,' महिला ने कहा; 'यह तो उसका अपना ही जुगाड़ है, और वह भी बड़ा अनोखा। मैं अभी उसके पास आई ही थी कि उसने मुझे खून से भरी थैली लाने को भेज दिया। मुझे समझ नहीं आया कि उसे इसकी क्या ज़रूरत थी, लेकिन मैं गई और ले आई, हालाँकि मुझे यह बहाना बनाकर एक बकरी का बच्चा मरवाना पड़ा कि अचानक मांस की ज़रूरत है। खैर, मेरे लौटते ही उसने थोड़ा सा खून अपने बिस्तर पर डाल दिया, चादरों को तहस-नहस कर दिया, अपने कपड़े के टुकड़े फाड़कर कमरे में बिखेर दिए, साथ ही अपने सिर के कुछ सुंदर बाल भी तोड़कर इधर-उधर फेंक दिए, और संक्षेप में कहें तो पूरे कमरे को ऐसा बना दिया जैसे उसे चोट लगी हो और उसे बाहर निकालने के लिए हाथापाई हुई हो। आह, यह तो एक अनोखा तरीका था! और सबसे अच्छी बात यह है कि दूर रहने वाले एक नुवाब पर शक किया जाएगा, जो उसे छुड़ाने की कोशिश कर रहा है (और इस विषय पर उन दोनों के बीच बहुत झगड़े भी हुए हैं), और किसी को यह नहीं लगेगा कि वह अपनी मर्जी से भाग गई है।'

'यह अद्भुत है,' मैंने कहा; 'और, हालांकि महिलाओं की बुद्धि एक कहावत है, फिर भी, आलिया की कसम! यह एक ऐसा उदाहरण है जिसे किताब में लिखा जाना चाहिए; लेकिन हम यहां व्यर्थ ही देरी कर रहे हैं।'

'तो फिर आओ,' बूढ़ी औरत ने कहा; 'बस कुछ ही कदम और हैं।'

हम खिड़की के नीचे बैठ गए, जिसमें तेज रोशनी जल रही थी; और बूढ़ी औरत ने धीमी लेकिन तीखी खांसी की, तभी खिड़की पर एक आकृति दिखाई दी; खिड़की खुली; और वह वही थी!
'क्या वह यहाँ है?' एक धीमी, मधुर आवाज ने कहा, जिससे मेरे अंदर रोमांच दौड़ गया।
'जी हां, महोदया, आपका सबसे विनम्र दास यहां उपस्थित है, और आलिया के खातिर आपसे शीघ्रता की प्रार्थना करता है; समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं है।'
'मैं तुरंत आपके पास आती हूँ,' उसने उत्तर दिया।
मैंने कहा, 'ऐसा करो; लेकिन जल्दी करो, वरना हम खो जाएंगे।'
वह खिड़की से हट गई, और कुछ क्षण बाद फिर प्रकट हुई और एक बक्सा और एक बंडल नीचे रख दिया। मैंने उन्हें खोला, और उसने चादर ऊपर खींच ली।
'अब,' उसने कहा, 'मैं आ गई हूँ; लेकिन इस चादर का क्या करूँ? नीचे उतरने से पहले मुझे इसे अंदर की तरफ बांधना होगा।'
मैंने कहा, 'यह काम मुझ पर छोड़ दो, मैं बस नीचे आ जाऊँगा।'
कपड़ा बांधने में कुछ और पल लगे, फिर वह चबूतरे पर कदम रख दी। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था, कहीं वह गिरकर खुद को चोट न पहुँचा ले और हमें कोई देख न ले; लेकिन मैं और भूद्रिनाथ उसके नीचे खड़े हो गए ताकि गिरने पर उसे पकड़ सकें। हालाँकि इसकी ज़रूरत नहीं पड़ी, क्योंकि वह पल भर में ज़मीन पर आ गई और मैंने उसे अपने सीने से लगा लिया!
'बाकी काम अधूरा नहीं छोड़ना चाहिए,' मैंने कहा; और चादर पकड़कर खिड़की से अंदर चला गया। कमरा छोटा था, और मैंने सरसरी नज़र से देखा तो ऐसा लग रहा था मानो वहाँ हिंसा और खून-खराबा हुआ हो। कपड़े इधर-उधर बिखरे पड़े थे, फर्श और बिस्तर खून से सने थे, और फटे हुए कपड़ों के टुकड़े इधर-उधर पड़े थे, जिससे ऐसा लग रहा था मानो जानबूझकर हिंसा की गई हो। मैं एक पल भी नहीं रुका, चादर खोलकर नीचे फेंक दी और खिड़की से बाहर निकलकर ज़मीन पर गिर गया। मुझे ज़ोर का झटका लगा, लेकिन शिकायत करने का समय नहीं था। हमने जल्दी से सलाह-मशविरा किया कि किस द्वार से बाहर निकलें, भूद्रिनाथ ने फिर से उसी द्वार को चुना जिससे हम अंदर आए थे। हालाँकि, हम सबने उनकी बात नहीं मानी, और बुढ़िया के मार्गदर्शन में हम दूसरे द्वार से बाहर निकल गए। सुनसान गलियों में हमें कोई नहीं मिला, और आलिया की कृपा से द्वार पर पहुँचकर हमने देखा कि खिड़की खुली थी और उसका रखवाला गहरी नींद में सो रहा था, उसके सिर के नीचे ढाल और बगल में तलवार थी। हम दबे पांव उसके पास से गुजरे, कहीं हमारे कदमों की आहट से वह जाग न जाए; और बाहर निकलकर हम दीवारों की छाया में तेजी से चलते रहे जब तक कि हम उस मैदान तक नहीं पहुँच गए जहाँ हमारा शिविर था।
जब हम चारों ओर तैनात पहरेदारों की पहुँच में आ गए, तो अब तक मुझसे चिपकी हुई वह सुंदरी अचानक बेहोश हो गई। उसके लिए पानी लाना पल भर का काम था, और उसके मुँह में थोड़ा पानी डालने के बाद वह संभल गई।

'मैं खुशी से अभिभूत हो गई थी,' उसने मेरे चरणों में गिरते हुए कहा; 'सचमुच, अगर आप जानते कि कल दोपहर से मैं कितनी बेचैन थी, तो आप मेरी बात पर यकीन कर लेते। एक पल तो मैं अपनी घृणित गुलामी से मुक्ति की उम्मीद से बहुत खुश थी, और फिर जैसे-जैसे रात बीतती गई और मैं घंटों को गिनने की कोशिश करती रही, मुझे कभी-कभी लगता था कि समय बीत गया है और मेरी तैयारियाँ महज़ एक मज़ाक थीं। और अब खुद को आज़ाद और आपके साथ पाकर—आह! मेरे स्वामी, यह अत्यधिक खुशी है—मेरा दिल खुशी से फटने वाला है।'

मैंने उसे गोद में उठाया और प्यार से सहलाया, फिर उसे एक पेड़ के नीचे बिठाकर, अपना हाथ उसके चारों ओर डाल दिया, और हम सुंदर चांदनी में चुपचाप बैठे रहे; वह बोल नहीं सकती थी, और मैं उसके विचारों के प्रवाह को भंग नहीं करना चाहता था, चाहे वे कुछ भी हों।

हम वहां कितनी देर बैठे रहे, यह मैं बता नहीं सकता; तभी एक बूढ़ी औरत ने आकर हमें टोक दिया। उसने कहा, 'यह समय मौज-मस्ती का नहीं है; मेरी मालकिन को आराम की जरूरत है; और मुझे लगता है, महोदय, अगर आप सुबह होने से पहले हमें आगे ले जाने का कोई उपाय ढूंढ लें, तो हम पीछा करने वालों से बच निकलेंगे और आप हमारा पीछा कर सकते हैं।'

मैंने कहा, 'तुम सही कह रहे हो, और इसकी देखभाल की जाएगी।'

सौभाग्य से साहूकार की गाड़ी बिकी नहीं थी, और यद्यपि वह अभी भी उसके सामान से लदी हुई थी, फिर भी उसमें दोनों महिलाओं के लिए पर्याप्त जगह थी।

मैं भूद्रिनाथ के पास गया, जो रात भर काम करने के बाद गहरी नींद में सो रहा था; जब वह पूरी तरह से जागा, तो उसे समझ आ गया कि उसकी सेवाओं की फिर से आवश्यकता है।

'क्या, और काम!' उसने कहा। 'अच्छा, मीर साहब, मैं तैयार हूँ; क्या काम है?'

मैंने कहा, 'तुम्हें इतनी जल्दी जगाना और इस मामले को आगे बढ़ाने के लिए कहना मेरे लिए बहुत बुरा है; क्योंकि आलिया, जो मेरे दिल की बात जानती है, वही जानती है कि आज रात तुम्हारी मदद के लिए मैं तुम्हारा कितना आभारी हूँ।'

'ऐसा मत कहो, मेरे युवा मित्र,' वह हंसते हुए बोला; 'थोड़े से मनोरंजन और रोमांच के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूँ।'

मैंने जवाब दिया, 'क्यों, आपको पता होना चाहिए कि बुढ़िया ने यहाँ से तुरंत भागने की सलाह दी है; इसलिए आपको और कुछ आदमियों को सूर्योदय से पहले निकलने के लिए तैयार रहना होगा; और चूंकि मैंने उसके लिए बूढ़े साहूकार की गाड़ी तैयार कर दी है, इसलिए आप कल यहाँ से आसानी से आठ या दस घोड़े ले जा सकेंगे, और अगले दिन भी उतने ही घोड़े ले जा सकेंगे, जब तक हम नहीं आ जाते, तब तक आपको रुकना होगा। याद रखें कि आप फिलहाल मुसलमान हैं, और उसकी रक्षा और सुरक्षा उसी तरह करनी होगी जैसे किसी मुसलमान की पत्नी की।'

उन्होंने कहा, 'मैं समझता हूं, और मैं अपने दायित्व का ईमानदारी से निर्वाह करूंगा।'

मैंने जवाब दिया, 'मैं आपकी बात पर विश्वास करता हूँ; और अब रास्ते की बात करें तो, मैं अभी तय नहीं कर पाया हूँ कि कौन सा रास्ता लूँ। मैंने सुना है कि यहाँ से हैदराबाद जाने के लिए दो रास्ते निकलते हैं।'
'रुको,' भूद्रिनाथ ने कहा; 'मुझे लगता है पीर खान दोनों को जानता है। मैं जाकर उसे ले आता हूँ; तुम जानते हो कि वह मेरे साथियों में से एक है।'
वह गया और उस आदमी को लेकर लौट आया।
उन्होंने कहा, 'मैंने उसे सब कुछ समझा दिया है, अब सुनो उसे क्या कहना है।'
पीर खान ने कहा, 'मैं निवेदन करता हूँ कि मैं दोनों रास्तों से परिचित हूँ, पर पूर्णतः नहीं; फिर भी मुझे लगता है कि मीर साहब की सलाह सबसे अच्छी है, क्योंकि दूसरा रास्ता सुनसान और वीरान है, और उस पर बहुत कम यात्री चलते हैं। पीछा किए जाने की संभावना के लिए हमें अपने भाग्य पर भरोसा करना चाहिए, जिसने हमें अब तक बिना किसी दुर्घटना के यहाँ तक पहुँचाया है, और इंशाअल्लाह! आगे भी हमारा साथ देगा।'
'अच्छा, पीर खान,' मैंने कहा, 'आपको ही मार्गदर्शक बनना होगा; आप ही एकमात्र व्यक्ति हैं जो इस रास्ते के बारे में कुछ जानते हैं, और मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि यदि आप दृढ़ और वफादार बने रहे तो निर्मूल में आपसे मिलने पर मैं आपको एक अच्छा उपहार दूंगा।'
'आपकी कृपा और बढ़े, मीर साहब,' उन्होंने कहा; 'परन्तु इनाम की बात छोड़ दें तो आप भली-भांति जानते हैं कि हममें से ऐसा कोई नहीं है जो कल या किसी भी समय आपके लिए अपना खून न दे दे। परन्तु आइए, भूद्रिनाथ, क्योंकि हमें जल्द ही निकलना है, तो बेहतर होगा कि मैं अपने आदमियों को इकट्ठा कर लूँ और तैयार हो जाऊँ।'
मैं तम्बू में लौटा, जहाँ मैंने ज़ोरा और बुढ़िया को अपनी चादरों में लिपटे हुए, आग जलाकर खुद को गर्म करते हुए पाया। मैंने उन्हें संक्षेप में भागने की आवश्यकता बताई और कहा, 'अफ़सोस! मैं अब आपके साथ नहीं आ सकता; हमने इस विषय पर विचार-विमर्श किया है और यह तय किया है कि आपसी सुरक्षा के लिए हमें फिलहाल अलग होना पड़ेगा। आलिया, जो मेरे दिल की बात जानती है, जानती है कि मेरे आपसे दूर रहने के दौरान मेरा दिल चिंता और बेचैनी से जल उठेगा; क्योंकि हे देवी, जान लो कि जब से मैंने तुम्हें दरबार में पहली बार देखा है, तुम्हारी सुंदरता ने मेरी आत्मा को मोह लिया है, और जैसे तब मैं इस विचार से निराश हो गया था कि तुम कभी मेरी नहीं हो सकतीं, वैसे ही अब तुमसे अलग होने का दुख भी बहुत गहरा है।'
वह कुछ देर चुप रही; लेकिन अंत में अपना घूंघट हटाकर, अपना सुंदर चेहरा फिर से मेरे सामने प्रकट करते हुए, उसने अपना हाथ मेरे हाथ में रख दिया। उसने कहा, 'मुझे तुम पर भरोसा है; अब मुझे तुम्हारे सिवा किसी बात का डर नहीं है; मैं बिना कुछ कहे चली जाऊंगी, क्योंकि मैं समझती हूं कि हमारा अलग होना कितना जरूरी है; फिर भी, मेरे प्रिय, मुझे यकीन दिलाओ कि तुम ज्यादा देर तक दूर नहीं रहोगे, और मैं संतुष्ट हूं।'
मैंने कहा, 'मैं दोहराता हूँ, ज़्यादा से ज़्यादा दो दिन; हम कल शाम या अगली सुबह आपका पीछा करेंगे; और एक बार जब हम चलना शुरू कर देंगे, तो मैं तब तक आगे बढ़ता रहूँगा जब तक मैं आपको पकड़ न लूँ, जहाँ हम मेरे पिता और बाकी लोगों का इंतज़ार करेंगे।'

'हम किस रास्ते से जाएंगे?' बूढ़ी औरत ने पूछा।
मैंने कहा, 'निर्मूल की कसम; यह मार्ग से हटकर है, इसलिए हमने इसे चुना है; यह संभव नहीं है कि नुवाब के लोग, यदि वह किसी को भेजता भी है, तो उस दिशा में जाएंगे।'
'आप सही कह रहे हैं,' उसने जवाब दिया; 'वे नहीं उड़ेंगे। लेकिन मैं कल उसे देखने के लिए बहुत कुछ दे दूंगी, जब इस सुंदर पक्षी के उड़ने का समय पता चलेगा।'
मैंने कहा, 'हमें क्या फर्क पड़ता है, सिवाय उसकी बूढ़ी दाढ़ी पर हंसने के? जैसे ही खबर फैल जाएगी, मैं कस्बे में चला जाऊंगा, और जब हम दोबारा मिलेंगे तो आपको सारी खबर मिल जाएगी।'
'अब मुझे चलने का आदेश दो,' भूद्रिनाथ ने कहा और फिर तम्बू में प्रवेश करते हुए बोला, 'मैं चलता हूँ। फिलहाल मेरा नाम जुमल खान है, रास्ते में इसी नाम से मेरी तलाश करना।'
'ईश्वर आप सबकी रक्षा करे! मेरे मित्र, आप पर एक अनमोल जिम्मेदारी है,' मैंने कहा, 'काश मैं अभी भी आपकी जगह ले पाता।'
महिलाएं जल्द ही तैयार हो गईं, और मैंने उन्हें आराम से अपनी गाड़ी में बैठे देखा।
'अब मैं चलता हूँ,' भूद्रिनाथ चिल्लाया: 'गाड़ी चलाओ; और तुममें से कुछ लोग इसके आसपास रहो, मानो यह किसी भले आदमी का जन्नत हो।'
'अलिया हाफ़िज़!' मैंने कहा, 'और पैगंबर आपको सही राह दिखाएँ!' वे आगे बढ़ गए; मैं उन्हें देखता रहा, जब तक कि सड़क के एक मोड़ ने उन्हें मेरी नज़रों से ओझल नहीं कर दिया, और मैं अपने तम्बू में चला गया, जहाँ लेटते ही मुझे नींद आ गई।
मेरे पिता ने मुझे जगाया, जो उस तम्बू में आए जहाँ मैं लेटा हुआ था; वे मुझसे नाराज़ लग रहे थे क्योंकि मैं पूरी रात बाहर था, जैसा कि उन्होंने कहा, किसी बेकार, बल्कि अनुचित काम में; 'लेकिन,' उन्होंने कहा, 'सुबह की नमाज़ का समय हो गया है, और उसके बाद मैं सुनूँगा कि तुम क्या कर रहे थे।' मैं उनके साथ अपने शिविर के किनारे तक गया, जहाँ हमने अपने कालीन बिछाए और भोर के लाल रंग के सामान्य रूप से प्रकट होने का इंतज़ार किया; जब वह रूप समाप्त हो गया, तो वे बैठ गए और मुझसे पूछना चाहा कि मैंने क्या किया था: 'मुझे किसी बात का डर नहीं है,' उन्होंने कहा, 'लेकिन मुझे बताओ।'
तो मैंने रात की सारी घटनाएँ बताईं और एक कड़े व्याख्यान, ढेर सारी सलाह और फटकार के लिए तैयार था। लेकिन इस बार मुझे सुखद निराशा हुई; गुस्सा होने के बजाय, वह पूरी बात पर दिल खोलकर हँसे और ज़ोरा को रास्ते से हटाने के हमारे इंतज़ाम की सराहना की।
सूरज अभी निकला ही था कि कस्बे से शोरगुल सुनाई दिया और हमें साफ-साफ पता चल गया कि भेद खुल गया है। पूरा इलाका हलचल में था; लोग फाटकों से बाहर निकलकर समूहों में इकट्ठा हो गए और हमारे शिविर की ओर इशारा करने और उनके हाव-भाव से यह स्पष्ट हो गया कि हम ही संदिग्ध थे; और जैसा कि हमने अनुमान लगाया था, लगभग बीस घुड़सवार और कुछ पैदल सैनिक हमारे सबसे नज़दीकी फाटक से निकले और सीधे हमारी ओर आ गए। उन्होंने हमारे छोटे से शिविर को घेर लिया और उनमें से एक-दो जो

दल के नेता प्रतीत हो रहे थे, घोड़े पर सवार होकर आए और अधिकारिक लहजे में हमारे नेता से मिलने की मांग की।
मैंने पहले ही अपने पिता से यह व्यवस्था कर ली थी कि वे व्यापारी के रूप में अपनी भूमिका निभाते रहेंगे और मुझे दल के जमादार के रूप में आगे करेंगे; और चूंकि वे जानते थे कि मैं नुवाब के दरबार में उस भूमिका में उपस्थित हुआ था और उसे बखूबी निभाया था, इसलिए उन्होंने मेरी विनती सहर्ष मान ली थी।
मैंने कहा, 'आप मुझ जैसे तुच्छ व्यक्ति में ही नेता को देख सकते हैं; और नुवाब साहब की इतनी जल्दी क्या मांग हो सकती है? क्या उनका यह तुच्छ सेवक कुछ ऐसा कर सकता है जिससे यह साबित हो सके कि वह उसके साथ किए गए इस दयालु व्यवहार से कितना प्रभावित है?'
उस व्यक्ति ने घमंडी लहजे में कहा, 'जब तक तुम्हारे शिविर की तलाशी नहीं हो जाती, तब तक तुम्हें हमारे कैदी बनकर संतुष्ट रहना होगा; एक अजीब घटना घटी है और तुम पर संदेह है।'
'किस बात का?' मैं स्तब्ध होकर बोला; 'मुझ पर किस बात का संदेह हो सकता है? लेकिन शिविर आपके सामने है, महोदय; आप इसे अवश्य तलाशी लें। शायद,' मैंने कड़वाहट से कहा, 'आपके शहर में लूटपाट हुई हो, और इस असभ्य देश में सम्मानित लोगों पर संदेह होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।'
'शांति बनाए रखें!' उस व्यक्ति ने पुकार कर कहा, 'हमें अपना कर्तव्य निभाना चाहिए; और मैं तो दिखावे के लिए ही सही, यह देखकर प्रसन्न होऊंगा कि आपने नुवाब के आतिथ्य का प्रतिफल विश्वासघात से नहीं दिया।'
मैंने कहा, 'मैं तो अवाक हूँ, हालाँकि मैं आपकी बातों से पूरी तरह चकित हूँ; लेकिन आप उस जगह की तलाशी जरूर लें, और शायद बाद में आप कृपा करके इस रहस्य को मेरे सामने सुलझा देंगे।'
वह मेरे साथ मेरे तम्बू तक आया और घोड़े से उतरकर मेरे साथ तम्बू में प्रवेश किया, उसके दो-तीन आदमी भी उसके पीछे-पीछे आए। तम्बू में मेरे सोने के समय इस्तेमाल किए गए कालीन और गद्दे के अलावा कुछ नहीं था, कुछ खाना पकाने के बर्तन और दूर कोने में रखे लूटे हुए सामान के कुछ गट्ठे भी नहीं थे।
नुवाब पार्टी के नेता अजीम खान ने कहा, 'वह यहां नहीं है, चलिए दूसरे तम्बू में चलते हैं।'
मैं उनके साथ गया और अपने पिता को सलाम करते हुए उनसे कहा कि नुवाब के लोग उनके तम्बू की तलाशी लेना चाहते हैं, जैसे उन्होंने मेरे तम्बू की तलाशी ली थी, और आगे कहा, 'उनका विरोध मत करना, कहीं ऐसा न हो कि नुवाब को हम पर शक करने का कोई ठोस कारण मिल जाए।'
'बिल्कुल नहीं,' मेरे पिता ने कहा; 'यह तम्बू है, और मैं नुवाब का गुलाम हूँ; यह संभव नहीं है कि मुझ जैसे बूढ़े आदमी ने यहाँ महिलाओं को छिपा रखा हो।'
इसलिए, मेरे तम्बू की तरह ही उसके तम्बू की भी तलाशी ली गई, और बाद में सैनिकों के अस्थायी आवरण की भी; लेकिन कुछ भी नहीं मिला, और दल स्पष्ट रूप से निराश हुआ।
'हम गलत रास्ते पर हैं, और मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया था,' अज़ीम खान ने नेता से कहा; 'पक्का यकीन मानो, जैसा कि मैंने नुवाब को बताया था, यह उस बदमाश शेफी खान का काम है: हम सब जानते हैं कि वह

नूरसी के हकीम के लिए काम करता है, जो उस लड़की को पाना चाहता था, और बेहतर होगा कि हम यहां समय बर्बाद करने के बजाय उसके पीछे पड़ें।'
'एक लड़की!' मैं चिल्लाया; 'यह तो सचमुच बहुत आश्चर्यजनक है; आलिया की खातिर मेरी जिज्ञासा शांत कीजिए; आखिर यह सब क्या है?' मैंने नेता से कहा, 'अरे बाप रे, यह तो गंभीर मामला लगता है, मुझे तो हंसी आ रही है कि मेरे छोटे से शिविर में एक लड़की की तलाश की जा रही है—शायद कोई गुलाम, जो भाग गई हो या अपने प्रेमी द्वारा अगवा कर ली गई हो; साहब, बताइए क्या हुआ है?'
'जो भी बात तुम्हें हंसी की लगे, वह हमारे लिए हंसी की बात नहीं है,' नेता ने कहा; 'अपने आदमियों को ऐसी जगह भेज दो जहां से वे सुन न सकें, और तुम्हें पूरी कहानी पता चल जाएगी।'
'यहाँ से चले जाओ!' मैंने अपने उन आदमियों से चिल्लाकर कहा, जो मेरे चारों ओर जमा हो गए थे; 'यह कहानी तुम्हारे सुनने लायक नहीं है।'
उस आदमी ने कहा, "मामला ये है: कल रात तक नुवाब के ज़नाना में एक बेहद खूबसूरत और हुनरमंद नर्तकी थी; लेकिन आज सुबह उसका कमरा खाली मिला, हर जगह हिंसा के निशान थे, उसके बिस्तर की चादरों पर खून था, और उसके कुछ बाल और कपड़े कमरे में बिखरे पड़े थे। रात में कोई शोर नहीं हुआ, शहर के द्वार हमेशा की तरह बंद और पहरेदार थे, और लगता है ये शैतानों का काम है कि ये सब हुआ, और हमें पता नहीं किसने हमारी दाढ़ियों पर गंदगी फेंकी। नुवाब पागलों की तरह बड़बड़ा रहा है और गालियां दे रहा है, उसका ज़नाना पूरी तरह अस्त-व्यस्त है; और सबसे बुरी बात ये है कि वो हम सबको धमकी दे रहा है कि अगर हम या तो उस लड़की को वापस नहीं लाए या तीन दिनों के अंदर उसके बारे में कोई खबर नहीं दी, तो वो हम सबको निकाल देगा।"
'आलिया की रक्षा!' मैं और मेरे पिता दोनों चिल्लाए, 'यह तो बहुत ही असाधारण बात है। और क्या आपको जरा भी शक नहीं है कि किसने आपका इस तरह अपमान किया है?'
उस आदमी ने कहा, 'क्यों, शुरू में आप पर शक किया गया क्योंकि आप अजनबी थे और एक बड़ा समूह थे, और हमें आपके शिविर की तलाशी लेने के लिए कहा गया था; लेकिन यहाँ हमें सामान के गट्ठों के अलावा कुछ नहीं मिला: और वास्तव में आप उसे ले जाने वाले लोग नहीं हैं, क्योंकि मुझे संदेह है कि आपने उसे कभी देखा भी था।'
मैंने कहा, 'मुझे पूरा यकीन है कि वह उन महिलाओं में से एक थी जो पिछली रात दरबार में मौजूद थीं, जब मैं नुवाब से मिलने गया था।'
'संभवतः,' उसने जवाब दिया; 'क्या जिन्हें तुमने देखा वे सुंदर थे?'
मैंने कहा, 'वे दोनों ही ऐसे थे: एक लंबा और गोरा था, दूसरा कद में छोटा और उतना गोरा नहीं था, लेकिन बहुत सुंदर था।'

'वही लड़की थी,' उस आदमी ने कहा; 'मैंने उसे खुद एक-दो बार देखा है, जब भी मुझे रात में अंदर जाने का मौका मिला। लेकिन मैं यहाँ अपना समय बर्बाद कर रहा हूँ और मुझे वापस जाना होगा; आप इस बात पर भरोसा रख सकते हैं कि मैं इस मामले में आपको किसी भी संदेह से पूरी तरह बरी कर दूंगा।'
मैंने कहा, 'आपकी सकारात्मक राय का निश्चित रूप से उचित महत्व होगा; और मैं आपसे निवेदन करता हूं कि आप नुवाब को हमारी संवेदनाएं पहुंचाएं और उनसे कहें कि यदि हमें अनुमति मिली तो हम उनसे मिलकर अपनी संवेदना व्यक्त करेंगे।'
'मैं आपका संदेश पहुंचा दूंगा,' उसने कहा; 'लेकिन मुझे लगता है कि आपको अंदर नहीं आने दिया जाएगा, क्योंकि वह वास्तव में बहुत दुखी है, शायद लड़की के खोने से ज्यादा अपमान के कारण। मैं अब चलता हूं।'
उन्होंने हमें सलाम किया और घोड़े पर सवार होकर चले गए; कुछ देर बाद नुवाब का एक सेवक एक विनम्र संदेश और कुछ फल लेकर आया और बताया कि उनके स्वामी को हमसे न मिल पाने का अफसोस है और उन्हें हमारे शिविर की तलाशी लेने की मजबूरी का भी खेद है। हमने उन्हें एक उपहार देकर विदा किया और अपनी संवेदनाएँ दोहराईं, जिन्हें उन्होंने पहुँचाने का वादा किया। 'और अब,' मैंने अपने पिता से कहा, 'यहाँ हमारे लिए और नहीं रह सकता; हमें जाना होगा। दोपहर में पैदल यात्रा करने का आपका क्या ख्याल है?'
'यह अच्छा है,' उसने कहा; 'हम जाएंगे: आदमियों को तैयार रहने के लिए कह दो।'

अध्याय XI

सर राल्फ। क्या! क्या वह पकड़ा गया है?
लड़का। जी हाँ, महोदय, बिल्कुल आसानी से;
जब मैंने उसे चारा दिया, तो उसने इसके बारे में कभी सोचा ही नहीं।
लेकिन उसने उसे अनियंत्रित रूप से निगल लिया।
पुराना खेल
हम दोपहर में निर्मूल की ओर जा रहे थे, और चूंकि हमें नुवाब और उसकी परेशानी के बारे में कोई खबर नहीं मिली थी, इसलिए हमारी चिंता कुछ कम हो गई थी; लेकिन नुवाब के लोगों के चले जाने के बाद जब तक हम कस्बे में रुके रहे, मुझे लगातार डर सताता रहा कि कहीं कोई मौका उन्हें हमारे बारे में सुराग न दे दे। भुट्टेरा शायद हमारे कारनामों के बारे में कुछ बता दे; क्योंकि हालांकि उसे हमारा मकसद नहीं पता था, फिर भी उसके साथ इतने कम समय तक रुकना (क्योंकि उसने यह जरूर सोचा होगा कि हम किसी औरत के पीछे हैं) और ज़ोरा के गायब हो जाने से, वह यह मान सकता था, और यह स्वाभाविक भी था, कि हम उसे अगवा कर ले गए हैं। सौभाग्य से कोई बुरा नतीजा नहीं निकला, और उमरखैर से निकलने के तीसरे दिन हम निर्मूल पहुँच गए।
जैसे ही मैं कस्बे में दाखिल हुआ, मैंने भुद्रिनाथ को एक दुकान में देखा, सड़क की ओर पीठ करके बैठा हुआ, एक भले दिखने वाले आदमी से बातचीत कर रहा था, जो देखने में मुसलमान लग रहा था। उसने मेरी तरफ ध्यान नहीं दिया, लेकिन जब मैंने उसका नाम पुकारा, तो वह झट से उठा और मुझे घोड़े से उतरने में मदद करते हुए मुझे गले लगा लिया।
'क्या वह सुरक्षित है?' मैंने धीमी आवाज़ में पूछा, ताकि उसका कोई परिचित मेरी बात न सुन ले।
'वह है,' उसने उत्तर दिया; 'तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है; और वह तुम्हें दोबारा देखने के लिए बहुत बेताब है।'
साहब, मैंने अपनी प्रियतम को फिर से देखने और उन्हें एक बार फिर अपने हृदय से लगाने में एक पल भी नहीं गंवाया। वे पहले से भी अधिक सुंदर थीं; और मेरी देरी के लिए कुछ स्नेहपूर्ण फटकार लगाने और मेरी अनुपस्थिति में उनके द्वारा झेली गई चिंताओं और यात्रा की थकान के बारे में बताने के बाद, हम उस आनंद और सुरक्षा की भावना में डूब गए, जिसे केवल वही लोग जानते हैं जिन्होंने प्रेम किया है और संदेह या खतरे की परिस्थितियों में एक-दूसरे से विदा हुए हैं। उनके साथ कुछ समय बिताने के बाद मैं भूद्रिनाथ से मिल गया।
'जब मैं आया तो आप किससे बात कर रहे थे?' मैंने पूछा।
'क्यों,' उसने कहा, 'अब तक मुझे जो जानकारी मिली है, उससे मुझे शक है कि उसके पास यहाँ से जल्द से जल्द भागने के कोई ज़रूरी कारण हैं; दूसरे शब्दों में, वह किसी राजस्व मामले में ज़रूरत से ज़्यादा धन का दुरुपयोग कर रहा है, और उसकी सुरक्षा भागने पर निर्भर करती है। मैंने उससे कहा था कि मैं तुम्हारा और तुम्हारे साथियों का इंतज़ार कर रहा हूँ, और अगर वह हमारे साथ मिल जाए तो उसके पास भागने का अच्छा मौका होगा; देखो,' भूद्रिनाथ ने आगे कहा, 'कि जब एक बार मेरी नज़र किसी पर पड़ जाती है, तो उसे मुझसे

बचने देना मेरे सिद्धांतों के खिलाफ है; अब, जैसा कि मामला है, हमें उस आदमी को पकड़ना ही होगा—पहला, जैसा कि मैंने कहा, मेरे सिद्धांतों के कारण, और दूसरा, उस धन के कारण जो निश्चित रूप से उसके पास है: क्या तुम समझते हो?'

'बिल्कुल,' मैंने हंसते हुए कहा; 'आपका तर्क प्रशंसनीय है; इसलिए मैं पूरे दिल से आपके प्रयासों का समर्थन करूंगा। अब हम आगे कैसे बढ़ें?'

'क्यों,' भूद्रिनाथ ने कहा, 'यह तय करना थोड़ा मुश्किल है, क्योंकि मुझे नहीं पता कि वह कहाँ रहता है; लेकिन उसने जल्द ही मेरे पास आने का वादा किया है, और मुझे पूरा विश्वास है कि वह ज्यादा देर तक दूर नहीं रहेगा।'

मैंने कहा, 'हमें धैर्य की चादर बिछाकर उस पर बैठना होगा, जब तक कि वह प्रकट न हो जाए; इस बीच मुझे खाने से मना करने का कोई कारण नहीं दिखता।'

खैर, साहब, मैं परदे के अंदर गया, जहाँ मेरा स्वादिष्ट भोजन मेरा इंतज़ार कर रहा था, और ज़ोरा और मैं जल्दी ही गरमागरम खिचड़ी और बेहतरीन करी में मशगूल हो गए। जब मैं खाने में मग्न था, मैंने भूद्रिनाथ और उनके परिचित के बीच अभिवादन की आवाज़ सुनी, और जब मेरी तीव्र इच्छाएँ शांत हो गईं, जिन्हें सहन करना बहुत कठिन था, तो मैं भी उनके साथ शामिल हो गया।

'यह मेरा भाई है, जिसके बारे में मैंने तुमसे बात की थी,' भूद्रिनाथ ने मुझे उससे मिलवाते हुए कहा; 'जैसा कि तुम देख रहे हो, वह अब मुझसे आगे निकल आया है, और हम साथ-साथ यात्रा करेंगे। उसके सभी सैनिक शहर के बाहर डेरा डाले हुए हैं, लेकिन चूंकि वह मेरे साथ अधिक सहज महसूस करता है, इसलिए तुम उसे यहां देख रहे हो।'

हमने एक-दूसरे को नमस्कार किया और विषय की ओर उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए, मैंने भुद्रिनाथ से पूछा कि हमें कब शुरू करना चाहिए।

मैंने कहा, 'मैं देरी नहीं कर सकता; नर्से में रुकना बहुत असुविधाजनक था, और अगर ऐसा न होता तो हम अब तक काफी आगे निकल चुके होते।'

उस आदमी ने मुझे घूरकर देखा और अंत में भूद्रिनाथ से कहा, 'जब तुम कहते हो कि यह सज्जन तुम्हारा भाई है, तो तुम ज़रूर मज़ाक कर रहे होगे; अरे, तुम तो बहुत बड़े हो, और तुम्हारे चेहरे-मोहरे तो बिल्कुल भी मिलते-जुलते नहीं हैं।'

उसने जवाब दिया, 'हम सगे भाई नहीं हैं, बल्कि चचेरे भाई हैं; आप जानते हैं कि चचेरे भाई आमतौर पर खुद को भाई कहते हैं।'

'लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है,' उसने कहा, 'कि वह तुम्हारे आदमियों का जमादार है, न कि तुम, जो सबसे बड़े हो?'

'अरे, यह तो बहुत लंबी कहानी है, और इसमें आपकी रुचि नहीं होगी,' भूद्रिनाथ ने कहा; 'बस इतना ही काफी है कि वह बड़ी शाखा का पुत्र है, जिसने अपनी पहली पत्नी को खोने के बहुत बाद विवाह किया; इसलिए,

परिवार और मेरी सहमति से, उसे नेता घोषित किया गया, हालांकि उसे यह स्वीकार करना होगा कि मैं उसका सलाहकार हूं।'
मैंने अपनी गरिमा पर शर्मिंदगी जताने का नाटक किया और यह स्वीकार किया कि हालांकि मैं नाममात्र के लिए श्रेष्ठ था, फिर भी मैं अपने चचेरे भाई के बिना बिल्कुल भी काम नहीं चला सकता था।
'खैर,' उस व्यक्ति ने कहा, 'आपके देश में तो अजीबोगरीब रीति-रिवाज हैं, लेकिन हर जगह वे अलग-अलग हैं। यहाँ आपकी परिस्थितियाँ बिल्कुल उलट होंगी; इसलिए मुझे लगता है कि मुझे आपसे ही बात करनी चाहिए, जमादार साहब; मुझे यकीन है कि आपके चचेरे भाई ने मेरे बारे में आपको सब कुछ बता दिया होगा?'
मैंने कहा, 'उसे कम से कम उतना तो पता है जितना आपने उसे बताया है; लेकिन हम दोनों यहाँ मौजूद हैं, और आप एक से जो कहते हैं वह दूसरे से भी उतना ही संबंधित होता है; इसलिए मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप बिना किसी संकोच के बोलते रहें।'
उस व्यक्ति ने कहा, 'मैं अतीत की बातों में नहीं पड़ना चाहता; इतना कहना ही काफी है कि मेरे पास इस जगह से निकलकर हैदराबाद जाने का हर कारण है; वहाँ मैं अपने शत्रुओं से सुरक्षित रहूँगा। इसलिए मैं आपके साथ चलने का प्रस्ताव रखता हूँ, बशर्ते आप मुझे रास्ते में सुरक्षा और छुपने की गारंटी दें।'
मैंने कहा, 'हम ऐसा करने के लिए तैयार हैं; लेकिन आप मानेंगे कि हमें कुछ जोखिम उठाना पड़ेगा; क्योंकि रास्ते में सुरक्षा और छुपने के अलावा, जरूरत पड़ने पर हमें आपकी रक्षा भी करनी होगी; और इन सब के लिए कुछ मुआवजा भी चाहिए।'
'यह सच है, और मैं सौदेबाजी करने की स्थिति में नहीं हूं, इसलिए आपको अपनी शर्तें खुद बतानी होंगी।'
'मुझे लगता है आप उदार हैं,' मैंने जवाब दिया, 'और आप हमें भी वैसा ही पाएंगे। शायद डेढ़ सौ रुपये आपको बहुत ज्यादा न लगें?'
'ऐसा नहीं है; आधा पैसा मैं अभी दे दूंगा, और बाकी आधा पैसा हम पहुंचने पर दूंगा।'
मैंने कहा, 'सहमत हूँ, यह संतोषजनक है; और अब बताइए कि आप यात्रा कैसे करने का इरादा रखते हैं। यदि मुझे अनुमति हो, तो मैं एक ऐसा तरीका सुझाऊँगा जिससे पकड़े जाने की संभावना निश्चित हो।'
'यह क्या है?' उसने उत्सुकता से पूछा।
'तुम्हें एक गाड़ी किराए पर लेनी चाहिए या खरीदनी चाहिए, और कम से कम कुछ मील तक उसमें यात्रा करनी चाहिए; मेरे भाई के पास उसका ज़नाना है, और तुम्हें कोई ढूंढ नहीं पाएगा; कोई भी उस गाड़ी की तलाशी लेने की हिम्मत नहीं करेगा जिसमें महिलाएं हों।'
'अलिया की कसम, यह तो एक अनोखी योजना है!' उस आदमी ने कहा; 'मुझे आश्चर्य है कि यह मेरे दिमाग में कभी नहीं आई। फिर भी मेरे पास कोई गाड़ी नहीं है; और बिना अपनी उड़ान का सुराग दिए एक गाड़ी कैसे प्राप्त करूं—'

'इस बारे में चिंता मत करो,' भूद्रिनाथ ने कहा; 'हमें पैसे दे दो—लगभग सौ रुपये काफी होंगे—मैं जाकर एक खरीद लूंगा और जो भी अतिरिक्त खर्च होगा उसका हिसाब तुम्हें दे दूंगा।'
उस आदमी ने कहा, 'और मेरे ऊंट, घोड़े और नौकरों का क्या किया जा सकता है?'
मैंने पूछा, 'वे कितने हैं?'
'मेरे पास दो ऊंट और दो घोड़े हैं; और मेरे पास तीन या चार नौकर हैं, जिन्हें मैं अपने साथ ले जाना चाहता हूं।'
मैंने कहा, 'तो फिर उन सबको रात में हमारे शिविर में भेज दो; वे दिखाई नहीं देंगे, और यदि आवश्यक हो तो उन्हें पैदल मार्च पर भेजा जा सकता है।'
'तुम लोग तो बहुत ही समझदार हो,' उसने कहा, 'जिस काम में मुझे कई दिन और रातों की चिंता लगी, उसे तुमने पल भर में बड़ी कुशलता से सुलझा दिया। अब मुझे साफ दिख रहा है कि समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं है; और मैं पैसे लाने और अपने लोगों को निर्देश देने जा रहा हूँ।'
इसलिए वह हमें छोड़कर चला गया।
'शाबाश,' भूद्रिनाथ ने मुझसे कहा, 'तुमने तो मानो मेरे मन की बात कह दी, और मुझे लगता है मछली ने चारा पकड़ लिया है।'
मैंने कहा, 'मुझे भी ऐसा ही लगता है; वह व्यक्ति भले ही बहुत चालाक राजस्व संग्रहकर्ता हो, लेकिन वह हम दोनों के सामने कुछ भी नहीं है; और जैसा कि वह अपने घोड़ों, ऊंटों और नौकरों के बारे में बता रहा है, वह हमारी सोच से कहीं अधिक महान व्यक्ति है: इसमें कोई संदेह नहीं कि हमें उससे अच्छी खासी रकम मिलेगी।'
मैं जल्दी से अपने पिता के पास चला गया, और भुद्रिनाथ को सब कुछ अपने तरीके से संभालने के लिए छोड़ दिया, अगर मैं उस व्यक्ति से मिलने के लिए समय पर वापस नहीं लौट पाता जिसकी हमें उम्मीद थी।
मुझे देखकर वह आश्चर्यचकित रह गया और बोला, 'मुझे नहीं लगा था कि तुम अपने प्रिय को इतनी जल्दी छोड़कर आ जाओगे; इस जल्दी मुलाकात के लिए मैं तुम्हारा आभारी क्यों हूँ?'
'नहीं,' मैंने कहा, 'पिताजी, उसका जिक्र मत कीजिए; यह मजाक जैसा लगता है, और इस समय मेरे पास ज़ोरा की देखभाल करने से भी ज्यादा काम है।'
'जी हां, बिल्कुल! और अब मुझे बताओ, मेरे बेटे, तुम्हारे मन में क्या है।'
मैंने कहा, 'भुद्रिनाथ और मैंने शहर में एक आदमी को पकड़ लिया है, जो पहले मिले किसी भी व्यक्ति जितना ही अच्छा इनाम साबित हो सकता है; और जब आज शाम आपके शिविर में दो घोड़े, कुछ ऊंट और नौकर आएं, तो उन्हें वहीं रहने दें और कल सुबह जितनी जल्दी हो सके उन्हें हैदराबाद के लिए रवाना कर दें।'
मेरे पिता ने कहा, 'मैं आपकी इच्छा के अनुसार करूंगा; लेकिन मुझे बताओ, अमीर अली, तुम यह सब क्या करने जा रहे हो? क्या तुम्हें यकीन है कि इसमें कोई जोखिम या खतरा नहीं है?'

'जहाँ तक मुझे लगता है, ऐसा कुछ नहीं है; लेकिन जो कुछ हो चुका है, उसे सुनिए और फिर तय कीजिए कि इस मामले को आगे बढ़ाना चाहिए या नहीं। अगर आपको यह पसंद नहीं आया तो हम इसे तुरंत छोड़ देंगे।' मैंने उसे सब कुछ बता दिया।

'तुम दोनों अपना काम अच्छे से कर रहे हो, और मैं इसकी बहुत सराहना करता हूँ,' बूढ़े व्यक्ति ने कहा; 'मैं अपनी ओर से ऊँट आदि ले लूँगा और आज रात ही कब्र खोदने वालों का एक दल भेज दूँगा। हम कल रात या परसों सुबह जल्दी रवाना हो जाएँगे।'

जब मैं कस्बे में घर पहुँचा तो भूद्रिनाथ वहाँ नहीं थे, और मुझे उनके लौटने का काफ़ी देर तक इंतज़ार करना पड़ा, जो शाम के करीब तक हुआ; फिर भी, मुझे अपने प्रिय साथी का साथ मिला हुआ था, और समय जल्दी बीत गया। फिर भी, उन्हें एक बैलगाड़ी और दो सुंदर बैलों के साथ लौटते देखकर मैं अत्यंत प्रसन्न हुआ। उन्होंने ये सब कुछ नर्तकियों के एक समूह से खरीदा था, और बैलगाड़ी पर महिलाओं को ले जाने वाली बैलगाड़ियों की तरह पर्दे लगे हुए थे।

जब उसे घर के अंदर लाया गया तो उसने ड्राइवर को एक छोटा सा उपहार देकर विदा कर दिया।

'वहाँ, पचानवे रुपये का सामान है, और यह गाड़ी काफी सस्ती है; अब हमारी चिंता सिर्फ उस व्यक्ति की है जो इसमें सवार होगा।'

मैंने कहा, 'वह कहाँ है? क्या आपको उसके बारे में पूरा यकीन है?'

'मुझे पूरा यकीन है, जितना किसी और पर होता है; वह अब उस जगह के हकीम से विदा लेने गया है और दिखावा करेगा कि उसका सारा काम हो गया है। उसने अपने ऊंट और आदमियों को शिविर में भेज दिया है और उन्हें सख्त हिदायत दी है कि वहां जो भी अधिकारी हो, उसका पालन करें। मैंने खुद उन्हें तुम्हारे पिता के पास जाकर उनसे निर्देश लेने को कहा है। वह स्वयं सूर्यास्त तक यहां आ जाएगा।'

'इंशाल्लाह!' मैंने कहा, 'हम सचमुच भाग्यशाली हैं; कुछ भी गलत नहीं हुआ है।'

जैसे ही हमने अपनी सारी तैयारियाँ पूरी कीं, हमारा दोस्त आ गया, और तब तक काफी अंधेरा हो चुका था, इसलिए वह बिना किसी की नज़र में आए हमारे साथ शामिल हो गया; और चूंकि हमने उसे संदेश भेज दिया था कि गाड़ी खरीद ली गई है, इसलिए वह अपने साथ कुछ कीमती सामान लाया, जैसा कि हमने अनुमान लगाया था; उसके नौकरों में से एक मोम लगे कपड़ों में सावधानीपूर्वक बंधे हुए बंडल, उसका हुक्का और उसका बिस्तर लेकर आया था।

'क्या आपको यकीन है कि आपने कुछ भी नहीं छोड़ा है?' उसने पूछा।

'बिल्कुल,' मैंने कहा; 'सब कुछ तैयार है। मैं द्वार पर गया था और पहरेदार को बता दिया है कि हमें एक लंबा सफर तय करना है और हम आधी रात के कुछ देर बाद दो गाड़ियों और अपने लोगों के साथ निकलेंगे।'

'अच्छा,' उसने कहा, 'तो ये लो तुम्हारे पैसे;' और उसने मुझे पचहत्तर रुपये गिनकर दिए।

मैंने कहा, 'अब हमें बस इतना ही चाहिए कि हमें आपका नाम पता चल जाए, जो आपने अभी तक हमें नहीं बताया है।'

उन्होंने जवाब दिया, 'फिलहाल मुझे कुमाल खान कहिए; हैदराबाद में आपको मेरा असली नाम पता चल जाएगा।'
'जैसी आपकी इच्छा,' मैंने कहा; 'निःसंदेह आपके पास हमें अपना परिचय न देने के अच्छे कारण होंगे। इस बीच, जैसा कि आप कहते हैं, कुमाल खान नाम किसी भी अन्य नाम की तरह ही चलेगा; इसलिए, खान साहब, मुझे लगता है कि हम जितनी जल्दी आराम कर लें, कल की यात्रा के लिए उतने ही तरोताजा हो जाएंगे।'
उन्होंने कहा, 'मैं कहीं भी लेट सकता हूँ; मुझे पूरा यकीन है कि मैं सो भी जाऊँगा, जो कि मेरी चिंता और घबराहट ने मुझे पिछली कुछ रातों से नहीं करने दिया था।'
उसने अपना कालीन बिछाया और खुद को उससे ढक लिया। भूद्रिनाथ ने भी उसका अनुकरण किया और थोड़ी ही देर में दोनों सो गए, जैसा कि उनकी गहरी सांसों से स्पष्ट था।
अजीब नियति है, मैंने सोचा; एक आदमी जिसके पास जीने के लिए बस कुछ ही घंटे बचे हैं, शांति से सो रहा है, और उसके बगल में एक और है जो उसे नष्ट करने में सक्रिय रूप से लगा रहेगा। कुछ ही घंटों में उनकी परिस्थितियाँ बदल जाएँगी, ओह, कितनी बदल जाएँगी! एक धरती में बेसुध पड़ा रहेगा, दूसरा जीवित रहेगा, साँस लेगा और नए शिकार खोजने के लिए अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करेगा। 'या, आलिया!' मैंने अनायास ही कहा, 'तेरे इरादे समझ से परे हैं!'
हमें तय समय पर जगाया गया और हमने प्रस्थान की तैयारी जल्दी से पूरी कर ली। मैंने ज़ोरा को उसकी गाड़ी में सुरक्षित बैठा हुआ देखा, साथ ही उसके पुराने सेवक को भी, और उसके बगल में कुमाल खान को भी उसकी गाड़ी में। मैंने दल का नेतृत्व करते हुए जल्दी ही शहर के द्वार पार कर शिविर तक पहुँच गया। वहाँ मैंने ज़ोरा की गाड़ी को आगे भेज दिया और एक आदमी को वापस आकर हमें सूचित करने के लिए कहा, यदि रास्ते में उसे तिल्लियाँ या जासूस मिलें। फिर मैंने अपने पिता को ढूँढा और उनसे पूछा कि क्या उन्होंने नौकरों और घोड़ों की देखभाल करने वालों के लिए भुट्टोटे और शुमशे (हाथ पकड़ने वाले) नियुक्त किए हैं।
उन्होंने उत्तर दिया, 'मैंने सब कुछ तय कर लिया है और हर आदमी को निर्देश दे दिए हैं: अगर सब कुछ तैयार है तो कोई कठिनाई नहीं होगी। लेकिन क्या आपको यकीन है कि कुमाल खान, जैसा कि आप उसे बुलाते हैं, निहत्था है?'
मैंने कहा, 'उसके पास तलवार है, लेकिन उससे क्या फर्क पड़ता है? भूद्रिनाथ और मैं उसे आसानी से संभाल लेंगे, और वह सावधान भी नहीं रहेगा।'
मेरे पिता ने कहा, 'तो तुम काफी पीछे रहना; अगर कोई झड़प हुई तो उसे सुनाई नहीं देगी, और जब हम पहले जासूस दल से मिलेंगे तो मैं एक आदमी को तुम्हारे पास वापस भेज दूंगा। तब तुम जो चाहो कर सकते हो; या तो उसे अपने साथ ले आओ, या फिर वहीं उससे निपट लो, जैसा तुम्हें ठीक लगे।'
'बहुत अच्छा,' मैंने कहा; 'हम परिस्थितियों के अनुसार चलेंगे।'
जब हमारे आदमी और हमारे परिचितों के नौकर मेरे पास से गुज़रे, तो मैंने मन ही मन प्रसन्नता से देखा कि सब कुछ कितनी खूबसूरती से व्यवस्थित किया गया था। उनमें से प्रत्येक के साथ एक सबसे कुशल भुट्टोटे

(एक प्रकार का नौकर) था, और ज़रूरत पड़ने पर सहायता के लिए दो अन्य भी थे: फिर भी उन्होंने खुद को इतनी बेफिक्री से रखा था कि संदेह की कोई गुंजाइश ही नहीं थी। हर कोई मेरे पास से गुज़रते हुए एक बुद्धिमान नज़र डालता था, मानो कह रहा हो, 'यह वह काम है जिसमें हमें आनंद आता है'; और मैं सचमुच रोमांचित हो गया क्योंकि पूरा दल मेरे सामने था, उनकी भुजाएँ चाँदनी में चमक रही थीं।

मैंने सोचा, यही वो खुशी है जिसके बारे में मेरे पिता ने मुझे बताया था; और जीवन की नीरस और उबाऊ दिनचर्या में भला कौन ऐसी भावनाएँ जगा सकता है? जब ये लोग मेरे अपने होंगे, तब अमीर अली का नाम खौफ और भय का कारण बनेगा; लोग इस पर आश्चर्य करेंगे: कई डरपोक महिलाओं का दिल मेरे बारे में कहानियाँ सुनकर धड़क उठेगा, और वो अपने मन में उस शख्स की छवि बना लेगी जिसके बारे में वो इतनी बहादुरी भरी कहानियाँ सुनती है। 'हाँ,' मैं ज़ोर से चिल्लाया, क्योंकि मैं खुद को रोक नहीं पा रहा था, 'वो समय आएगा, हाँ, और बहुत जल्द: अभी का काम तो उस योजना के सामने कुछ भी नहीं है जिसे मैंने सोचा है और जिसे मैं पूरा करूँगा!'

भूद्रिनाथ की आवाज ने मेरे विचारों को याद दिला दिया। उन्होंने कहा, 'नारायण और समस्त देवताओं के नाम पर, तुम क्या कह रहे हो? आओ, हम तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।'

मैंने अपने घोड़े को नदी के किनारे की ओर दौड़ाया और पलक झपकते ही उसके पास पहुँच गया। कुमाल खान ने पर्दे से अपना सिर बाहर निकाला और पूछा कि क्या हमने अपने आदमियों को इकट्ठा कर लिया है।

'जी हां,' मैंने कहा, 'मेरे चचेरे भाई, मैं और हमारे कुछ सेवकों को छोड़कर, वे सभी हमारे सामने हैं, जो आपके आसपास ही रहेंगे।'

'हाँ, बिल्कुल सही,' उसने कहा; 'अगर ये भयानक झटके मुझे सोने देंगे तो मैं सो जाऊँगा। काश मैं इस गाड़ी में बंद रहने की बजाय अपने घोड़े पर होता!'

'धैर्य रखो,' भूद्रिनाथ ने कहा; 'मुझे पूरा विश्वास है कि तुम जल्द ही इससे बाहर निकल जाओगे।'

'मैं ऐसा ज़रूर करूँगा, मेरे दोस्त,' उसने कहा, 'जब मुझमें खुद को प्रकट करने की हिम्मत होगी;' और इतना कहकर उसने पर्दे बंद कर दिए।

मैं और भूद्रिनाथ कुछ देर तक चुपचाप चलते रहे: आखिरकार हम एक ऊंचे स्थान पर पहुंचे, जो जाहिर तौर पर किसी नदी के तल की ओर जाता हुआ प्रतीत हुआ, क्योंकि मुझे लगा कि पानी चंद्रमा की किरणों में चमक रहा है। जंगल पहले से अधिक घना था, और मैं अनायास ही भूद्रिनाथ की ओर मुड़ गया।

'निश्चित रूप से यही वह जगह है,' मैंने चिल्लाकर कहा; 'हमें गाड़ी का इंतजार करना होगा,' क्योंकि हम उससे काफी आगे निकल चुके थे।

उन्होंने जवाब दिया, 'हमें ऐसा करना चाहिए; यह जल्द ही तैयार हो जाएगा।'

हमने अभी-अभी पहियों की गड़गड़ाहट की आवाज सुनी ही थी कि जिस आदमी को मैंने इसके साथ भेजा था, वह हमारे पास आ गया।

मैंने पूछा, 'क्या खबर है? क्या सारी तैयारियां पूरी हो चुकी हैं?'

'अब तक तो ऐसा ही होगा,' उस आदमी ने कहा; 'जब मैं पहले स्काउट से मिला तो मैं आपको बताने के लिए वापस आया: उन्होंने एक खूबसूरत जगह चुन ली है, और मुझे पूरा यकीन है कि दल आपका इंतजार कर रहा होगा, जिन्होंने रात के रोमांच में अपना हिस्सा पूरा कर लिया होगा।'

मैंने कहा, 'ठीक है, हमें तुम्हारी यहाँ ज़रूरत नहीं है, इसलिए तुम जा सकते हो।' लेकिन उसने रुकने की बहुत विनती की, और मैंने उसे अनुमति दे दी।

जब कुमाल खान हमारे पास से गुजरा, तो भूद्रिनाथ ने सारथी को इशारा किया; सारथी ने सहमति में सिर हिलाया: और अपने घोड़ों को पकड़ने वाले आदमियों को पास और तैयार रहने का आदेश देकर, हम बैलगाड़ी के पीछे हो लिए और ढलान से नीचे उतरने लगे। लगभग आधे रास्ते में, सड़क का किनारा ढलान में बदल गया और एक छोटी सी ऊँचाई पर पहुँच गया। मैंने उस जगह को देखा और पाया कि सारथी ने भी ऐसा ही किया था: बैलगाड़ी धीरे-धीरे रास्ते से भटक गई; एक पहिया ऊँचाई पर चढ़ गया; वह बुरी तरह झुक गई और अंत में एक भयानक धमाके के साथ नीचे गिर गई।

हम पलक झपकते ही अपने घोड़ों से उतर गए और दौड़कर ऊपर गए: कुमाल खान उसके नीचे कराह रहा था।

हमने उसे उठाया और बाहर निकाला; लेकिन वह इतना डरा हुआ या घायल था कि बोल नहीं पा रहा था। आखिरकार उसे होश आया; और उसके मुंह से निकले पहले शब्द ड्राइवर को गालियों की बौछार थे।

'देखो!' वह चिल्लाया; 'सड़क एकदम चिकनी है, एक भी पत्थर या कंकड़ नहीं है, फिर भी उस नीच माँ के बेटे को उस किनारे पर गाड़ी चलानी ही थी, और उसने लगभग मुझे मार ही डाला था।'

मैंने कहा, 'उसे उसकी लापरवाही के लिए अच्छी सजा मिलेगी; लेकिन क्या तुम्हें चोट लगी है, खान?'

'मेरी दाहिनी बांह में बहुत दर्द हो रहा है,' उसने उसे पकड़ते हुए कहा; 'काश आलिया के लिए मेरे पास सवारी करने के लिए एक घोड़ा होता, बजाय इसके कि मैं इस चिंता में और आगे बढ़ूं।'

'अब कुछ नहीं किया जा सकता,' भूद्रिनाथ ने कहा; 'अच्छा हुआ कि तुम्हारी कोई हड्डी नहीं टूटी। हम आगे से तुम्हारे करीब रहेंगे और देखेंगे कि वह आदमी ज़्यादा सावधानी से गाड़ी चलाए।'

तब तक गाड़ी सड़क पर ठीक से खड़ी हो चुकी थी और कुमाल खान का गद्दा और तकिया भी लगा दिया गया था। जैसे ही वह हमसे दूर मुड़ा और पर्दे के एक खंभे को पकड़कर अंदर जाने के लिए पहिए पर पैर रखा, मैंने उसके गले में रूमाल डाल दिया।

'यह क्या है?' बस इतना ही उसके मुंह से निकला; उसके गले से एक पल के लिए अस्पष्ट सी गड़गड़ाहट की आवाज निकली। मैंने उसकी गर्दन पर जो झटका दिया, उससे उसकी जान निकल गई होगी, क्योंकि उसने खंभे पर अपनी पकड़ ढीली कर दी और बेसुध होकर जमीन पर गिर पड़ा।

'बहुत ही सफाई और चतुराई से किया गया काम,' भूद्रिनाथ चिल्लाया; 'मैं खुद इससे बेहतर नहीं कर पाता; देखो, वह हिल भी नहीं रहा—वह लगभग मर चुका है। अब, मीर साहब, विश्वास कीजिए कि किसी व्यक्ति को जमीन पर पैर रखने से पहले ही मारा जा सकता है।'

मैंने कहा, 'मुझे ये करते हुए देखना ही होगा; ये आदमी कुछ देर तक गाड़ी से लटका रहा। लेकिन चलो,' मैंने आदमियों से कहा, 'लाश को गाड़ी में उठाओ, हमारे पास समय नहीं है।' उन्होंने लाश को गाड़ी में डाला और हम बैलों की पूरी रफ्तार से चल पड़े।

मैंने भूद्रिनाथ से कहा, 'अगर इस झटके से उसे होश आ जाए तो क्या होगा?'

'डरने की कोई बात नहीं,' उसने जवाब दिया; 'अगर वह ऐसा करता भी है, तो उसे दोबारा मारना ही पड़ेगा; लेकिन यकीन मानिए, वह मर चुका है; तुमने उसे जो झटका दिया है, उससे तो कोई भी आदमी बच नहीं पाया है—उसकी गर्दन टूट गई है। मुझे साफ दिख रहा है कि बूढ़े गुरु ने तुम्हें अच्छी तरह से सबक सिखाया है।'

मैंने कहा, 'मैं यह स्वीकार करता हूँ कि हर बार ऐसा करने पर मेरा आत्मविश्वास बढ़ता जाता है; और मुझे इस बात की परवाह नहीं होगी कि अब मेरे पास एक या दो और लोग हों जिन पर मैं अपना हाथ आजमा सकूँ।'

'नहीं,' भूद्रिनाथ हंसते हुए बोला, 'हमने जो किया है उसी से संतुष्ट रहो। देखो, हम भील पर हैं, और वहाँ सारा दल इकट्ठा है।'

हम उस जगह पर पहुंचे, और सबसे पहला सवाल मेरे पिता ने पूछा: 'क्या तुम उसे लेकर आए हो?'

'हां,' मैंने कहा; 'जिस धरती ने उसे थामे रखा था, वह गाड़ी में है।'

'क्या उसने ऐसा किया?' उसने उत्सुकता से भूद्रिनाथ से पूछा और मेरी ओर इशारा किया।

'हां, उसने ऐसा किया,' उसने जवाब दिया, 'और यह बिल्कुल उचित था: वह पूरी तरह से उसके साथ था; मैंने हस्तक्षेप नहीं किया।'

'अल्हम्दुलिल्लाह!' मेरे पिता ने कहा; 'यह एक नेक बेटा है। चलो,' उन्होंने सभी पुरुषों से कहा, 'यहाँ समय बर्बाद मत करो, बल्कि नदी किनारे की ओर तेजी से चलो; हम तुम्हारा पीछा करेंगे, और मुझे पूरा विश्वास है कि हम तुम्हें पकड़ लेंगे।'

जब मुझे लगा कि अब और कुछ नहीं किया जा सकता, तो मैं गोदावरी नदी की ओर बढ़ गया। वहाँ पहुँचकर मैंने देखा कि सभी लोग नदी पार कर चुके हैं, तो मैंने अपने घोड़े को ज़ोरा की गाड़ी पकड़ने के लिए तेज़ी से दौड़ाया; क्योंकि मुझे नहीं पता था कि मेरी अनुपस्थिति के बारे में वह क्या सोचेगी, और न ही मैं उसे इसका संतोषजनक स्पष्टीकरण कैसे दे पाऊँगा; लेकिन मुझे उम्मीद थी कि कोई बहाना मिल ही जाएगा। मैं दस-बारह के समूहों में चल रहे आदमियों के पास से गुज़रा; लेकिन फिर भी मुझे गाड़ी नहीं दिखी, हालाँकि मैंने गाड़ी के रखवालों से कहा था कि वे तेज़ न चलाएँ। मैं बेचैन हो गया और अपने घोड़े को सरपट दौड़ाने लगा। मैंने ऐसा ही किया, क्योंकि कुछ दूर जाने पर मुझे अपने सामने एक अजीब सी चीख-पुकार सुनाई दी। क्या उस पर चोरों ने हमला किया होगा? यही मेरा पहला विचार था। यह संभव था; क्योंकि सड़क संकरी थी और दोनों ओर घना जंगल था, और गाड़ी के साथ बैठे कुछ आदमियों को देखकर चोरों ने उन पर हमला कर दिया होगा। शोर और चीखें बढ़ती जा रही थीं, इसलिए मैंने अपनी तलवार निकाल ली और तैयार रहा, और कुछ ही

पलों में मैं घटनास्थल पर पहुँच गया। वहाँ वाकई हिंसा का मंजर था! चाँद अभी भी चमक रहा था, और मैं अपने सामने सब कुछ देख सकता था।
गाड़ी को मेरे द्वारा भेजे गए पाँच-छह आदमियों ने घेर लिया था, जो बहादुरी से अपना बचाव कर रहे थे: मेरी समझ से दो लुटेरे ज़मीन पर पड़े थे; बाकी मेरे आदमियों पर वार कर रहे थे, जिन्हें उन्होंने नाकाम कर दिया; लेकिन जैसे ही मैं उठा, मेरा एक आदमी गिर गया, और बाकी थके हुए लग रहे थे। मुझे लगता है कि दोनों पक्षों ने मेरे आने पर ध्यान नहीं दिया, वे अपने काम में इतने मग्न थे, और मैं देख सकता था कि 'बिस्मिल्ला!' की मेरी पुकार और एक वार, जिससे एक लुटेरा गिर पड़ा, उनके लिए उतनी ही चौंकाने वाली थी जितनी अप्रत्याशित; जबकि मेरे वफादार आदमियों ने, जिन्होंने मुझे अब साफ देख लिया था, ज़ोर से चिल्लाकर अपने विरोधियों पर नए जोश के साथ हमला कर दिया।
कुछ ही क्षणों तक हाथापाई चलती रही: मैंने अपने घोड़े से कूदकर अपनी कमरबंद से पिस्तौल निकाली और तलवार लहराते हुए मेरी ओर आ रहे एक चोर पर गोली चला दी: गोली उसके शरीर को भेद गई और वह गिर पड़ा। इस पर बाकी गिरोह के लोग मुड़कर भाग गए। हमने थोड़ी दूर तक उनका पीछा किया और उनमें से एक युवक को पकड़ लिया; बाकी लोग आसानी से भाग निकले।

अध्याय XII

यह दर्शाता है कि न्याय अक्सर किस प्रकार जल्दबाजी में दिया जाता है।

जब हम गाड़ी के पास लौटे, तो मेरा पहला काम अपनी बेचारी ज़ोरा को शांत करना था, जिसकी चीखें, बूढ़े नौकर की चीखों और झगड़ने वालों की गालियों, अपशब्दों और चिल्लाहटों के साथ मिलकर एक ऐसा शोर मचा रही थीं जिसका वर्णन करना मुश्किल है। मैंने उसे बहुत घबराया हुआ पाया, लेकिन बदमाशों को उसके पास आने नहीं दिया गया था; और जब मैंने उसे आश्वस्त किया कि मैं उसका साथ नहीं छोड़ूंगी, तो वह शांत हो गई और उसने मुझे हमले की पूरी कहानी सुनाई; कि जब वे जा रहे थे, तो चोरों ने सड़क के किनारे झाड़ियों से उन पर पत्थर फेंकने शुरू कर दिए; और अंत में, शायद उन्हें निहत्था समझकर, वे अपने छिपने की जगह से बाहर निकल आए और लड़ाई शुरू हो गई।

घायल चोर चलने में असमर्थ था, इसलिए उसे शव के साथ गाड़ी में रख दिया गया; लड़के के हाथ पीछे बांध दिए गए और उसकी गर्दन के चारों ओर एक रस्सी बांध दी गई जिसे मैंने अपनी काठी से बांध दिया। बीस आदमियों को घायल की रखवाली के लिए छोड़कर हम तेजी से आगे बढ़े।

हम सूर्योदय से पहले एक बड़े गाँव में पहुँचे; लेकिन गाँव वाले जाग चुके थे और मवेशियों के झुंड चरागाहों की ओर जाते हुए फाटकों से बाहर निकल रहे थे। हमने पुरुषों से इमली के पेड़ों के नीचे डेरा डालने का अनुरोध किया, और मेरे पिता, मैं और भूद्रिनाथ फाटकों पर गए और पाटिल या जो भी मुख्य अधिकारी हो, उससे मिलने की इच्छा व्यक्त की।

काफी देर इंतजार के बाद हमें बताया गया कि औमिल हमारा इंतजार कर रहे थे, और हमें उनके घर ले जाया गया, जहाँ वे बरामदे में बैठे थे, जिसका इस्तेमाल वे आम तौर पर व्यापारिक सौदे करने के लिए करते थे। वे हिंदू थे, जाति से खायत थे, और आम तौर पर ऐसे लोगों की तरह विनम्र और शिष्ट थे। इस अवसर पर मेरे पिता प्रवक्ता थे, और उन्होंने अपना परिचय एक व्यापारी के रूप में और हमारा परिचय अपने साथ आए लोगों के नेता के रूप में दिया—वही पुराना ऊमरखेर किस्सा—उन्होंने उन्हें हम पर हुए हमले के बारे में बताया, जिस पर वे कुछ देर के लिए पूरी तरह अविश्वास जताते दिखे।

'असंभव!' उसने कहा; 'कई सालों से यहाँ कोई राजमार्ग डकैती या डकैती का प्रयास नहीं हुआ है, जब से कुछ कुख्यात चोरों को पकड़ा गया और उनका सिर कलम कर दिया गया था: आपको अवश्य ही कोई गलतफहमी हुई होगी।'

मैंने अपने पिता से कहा, 'आपने हमारे घायल सैनिकों का ज़िक्र नहीं किया, और यह भी नहीं बताया कि हमने कई चोरों को मार गिराया है। शायद यह सज्जन हमारी बात पर तब विश्वास करेंगे जब वे उन्हें देखेंगे या उन बदमाशों के शव पाएंगे; और फिर, आप यह भूल रहे हैं कि उनमें से दो हमारी हिरासत में हैं।'

'सचमुच!' औमिल चिल्लाया, 'इससे मामला बदल जाता है; लेकिन सच्चाई यह है कि इतने सारे यात्री गाँव-गाँव तक सुरक्षा के लिए गुहार लगाते हैं और यहाँ से निर्मूल के बीच अपने साथ हुई धमकियों का ब्योरा देते हैं कि मुझे संतुष्ट करना या यह विश्वास दिलाना मुश्किल हो गया है कि वास्तव में कोई खतरा था।'
मेरे पिता ने कहा, 'हमें किसी सुरक्षाकर्मी की आवश्यकता नहीं है; हम स्वयं की रक्षा करने में सक्षम हैं, जैसा कि आपने सुना है, हमने इन चोरों को खदेड़ दिया है; हमें बस कुछ आदमियों की जरूरत है जो हमारे घायलों को ऊपर ला सकें और जिन बदमाशों को हमने पकड़ा है उन्हें न्याय मिल सके।'
मोहन लाल ने कहा, 'अगर सभी यात्री तुम्हारी तरह अपनी रक्षा करने लगें तो हमारे लिए अच्छा होगा; देश में चोरों की संख्या बहुत कम हो जाएगी, क्योंकि उनका धंधा घाटे का सौदा साबित होगा। लेकिन मुझे लगता है तुमने कहा था कि तुमने उनमें से एक को सुरक्षित बचा लिया है; वह कहाँ है? शायद हमें उससे कुछ मिल जाए।'
मैंने उस लड़के को बुलवाया और उससे गिरोह के बारे में और उनके संभावित ठिकाने के बारे में कुछ देर तक पूछताछ की; लेकिन उसने एक शब्द भी नहीं बताया और हमारे लिए अनुवादक का काम कर रहे व्यक्ति ने हताशा में उससे पूछताछ करना छोड़ दिया।
'इस तरह तो वह एक शब्द भी नहीं बोलेगा,' भूद्रिनाथ ने कहा; 'उसे कोड़े मारो। मुझे पूरा यकीन है कि इससे वह बोल ही देगा।'
'जी हां,' मोहन लाल ने कहा; 'मैं एक कोरला मंगवाने जा रहा था;' और उसने अपने एक आदमी को एक कोरला लाने के लिए बुलाया।
इसे देखकर चोर कांप उठा और उससे फिर पूछा गया कि क्या वह अपना जुर्म कबूल करेगा; लेकिन वह चुप रहा।
मोहन लाल चिल्लाया, 'उसे नीचे गिरा दो और उसकी पीठ की खाल नोच डालो।'
पलक झपकते ही उसे मुंह के बल जमीन पर पटक दिया गया, और एक हट्टे-कट्टे आदमी द्वारा चलाए गए कोड़े के हर वार से खून बहने लगा: लेकिन व्यर्थ; उसने एक शब्द भी नहीं बोला—यहां तक कि दया की भीख भी नहीं मांगी।
उसे पकड़ने वाले आदमियों में से एक ने कहा, 'इससे भी कोई फायदा नहीं है; राख से भरा एक थैला लाओ। मैं यकीन मानिए, जब उसके चेहरे पर राख डाल दी जाएगी तो वह बहुत तेजी से बोलने लगेगा।'
घोड़ों को दाना खिलाने के लिए इस्तेमाल होने वाले चमड़े के थैले को जलती हुई राख से भरकर लाया गया। उसे उसके मुंह पर बांध दिया गया और साथ ही उसकी पीठ पर ज़ोर-ज़ोर से थपथपाया गया ताकि वह सांस ले सके। ऐसा लगता है कि इसका असर हुआ; क्योंकि कुछ ही समय बाद, जिस दौरान उसे बहुत यातना दी गई होगी, उसने कुछ बुदबुदाया और थैला हटा लिया गया।
जैसे ही उस बदमाश को बोलने की शक्ति मिली, वह बोला, “तुम मुझसे गुनाह कबूल करवाना चाहते हो, पर व्यर्थ। मैं भली-भांति जानता हूँ कि मेरे लोग कहाँ गए हैं, और मैं उनके विनाश के लिए जिम्मेदार लोगों को

धिक्कारता हूँ।" और उसने मुझ पर गालियों की बौछार कर दी। "हाँ," उसने मेरी ओर इशारा करते हुए कहा, "तुमने ही मेरे पिता को मारा था, और अब जब वे मर चुके हैं, तो मैं भी मरना चाहता हूँ; तुम जब चाहो मुझे फाँसी पर लटका सकते हो।"

'हां,' मोहन लाल ने कहा, 'मैं उसे भूल गया था; उसे लाया जाए।'

मैंने उस आदमी को बुरी तरह घायल हालत में छोड़ दिया था, लेकिन मुझे उसकी जान का कोई खतरा नहीं लगा था। लेकिन जब उसे पलंग पर लिटाकर लाया गया, तो यह स्पष्ट था कि वह मर रहा था; वह मुश्किल से सांस ले रहा था और उसके गले में घरघराहट थी: इसलिए हमने उसके बारे में और चिंता नहीं की, बल्कि बेटे से कबूल करवाने की कोशिश की; कोड़े और गर्म राख का फिर से इस्तेमाल किया गया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ, और हमारे सभी प्रयासों से केवल नई गालियां और अपशब्द ही निकले।

मोहन लाल चिल्लाया, 'अब इसे बर्दाश्त नहीं किया जा सकता; इस आदमी को फांसी देनी होगी। मैं इन बदमाशों को जानता हूं, और अगर हम इसे एक साल तक भी जेल में रखें तो इससे हमें कभी कोई जानकारी नहीं मिलेगी, इसलिए देरी करने का कोई फायदा नहीं है।'

'जैसी तुम्हारी इच्छा,' मेरे पिता ने कहा; 'शायद जब उसके गले में रस्सी होगी तब वह कबूल कर लेगा।'

मोहन लाल ने उत्तर दिया, 'हम देखेंगे; लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता। मंगों को बुलवाओ।'

ये दुष्ट लोग, जो हर जगह मानवता के सबसे नीच लोग थे, जल्द ही उपस्थित हो गए, और चोर को उनके हवाले कर दिया गया।

मोहन लाल ने उससे कहा, 'देखो, तुम्हारे पास बचने का कोई मौका नहीं है; क्या अब तुम अपना अपराध स्वीकार करोगे और मेरी सेवा में लग जाओगे? मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा।'

वह लड़का हिचकिचाया, अपने पिता की ओर देखा और अनिर्णायक प्रतीत हुआ; लेकिन अपने मरते हुए पिता पर दूसरी नज़र डालते ही वह फिर से संभल गया।

'तुम मुझे चाहे जितना भी धन दे दो, मैं नहीं मरूँगा,' वह चिल्लाया, सीधा खड़ा होते हुए और गर्व से हमारी ओर देखते हुए। 'अगर वह जीवित होता और तुम्हारे अधिकार में होता, तो मैं तुम्हारी सेवा ले लेता; लेकिन अब तुम मेरी रक्षा नहीं कर सकते, और मैं अपने साथियों के हाथों मरने की बजाय तुम्हारे लोगों के हाथों मरना पसंद करूँगा, जिनसे मैं बच नहीं सकता।'

मोहन लाल ने मांग परिवार से चिल्लाकर कहा, 'इसे यहाँ से हटाओ; ध्यान रखो कि तुम अपना काम ठीक से करो।'

और महाराज, आप हमारा मामूल (प्रथागत उपहार) न भूलें।

'नहीं, नहीं,' वह चिल्लाया; 'यहाँ से चले जाओ; मैं तुम्हारी उपस्थिति से अपवित्र हो गया हूँ; अपना काम खत्म करने के बाद कोतवाल के पास जाओ, उसे आदेश मिल चुका होगा कि वह तुम्हें एक भेड़ और इतनी शराब दे जिससे तुम सब मदहोश हो जाओ।'

उन लोगों ने कई बार अत्यंत श्रद्धापूर्वक सलाम किया और अपने उस अभागे साथी के साथ चले गए।

मैंने कहा, 'उसे कहाँ फाँसी दी जाएगी? मैं उसे फिर से देखना चाहूँगा और यह कोशिश करना चाहूँगा कि क्या मैं उसे एक सभ्य इंसान बनने के लिए मना सकता हूँ।'
मोहन लाल ने कहा, 'द्वार के उस पार कहीं। मुझे खुद वह जगह नहीं पता, लेकिन मेरे लोग तुम्हें दिखा देंगे। वैसे मुझे डर है कि तुम इससे कुछ खास मदद नहीं कर पाओगे; और आखिर तुम्हें उसके बारे में क्यों परेशान होना चाहिए?'
मैंने जवाब दिया, 'कोई बात नहीं, मुझे बस इस विषय में थोड़ी जिज्ञासा है, और मैं उससे आखिरी बार मिलना चाहता हूँ।'
'मैं आपके साथ चलूंगा,' भूद्रिनाथ ने कहा; और हमने उनसे विदा ली और जल्लादों के पीछे चल दिए।
द्वार से लगभग तीर की दूरी पर दो सूखे, टेढ़े-मेढ़े और लगभग पत्तों से रहित नीम के पेड़ थे, जिनके नीचे वह समूह बैठा था जिसे हम खोज रहे थे, और उनके चारों ओर गाँव के सभी आवारा और निकम्मे लोग जमा थे। हम जल्दी से उनके पास पहुँचे और पाया कि सब कुछ तैयार था: एक शाखा पर फंदा लगा हुआ एक रस्सी लटकी हुई थी, और एक मांग पेड़ के नीचे पड़ी एक पुरानी पत्थर की मूर्ति पर बड़ी शांति से चाकू तेज कर रहा था—किसलिए, यह मेरी समझ से परे था; हालाँकि मेरा काम उनसे नहीं, बल्कि उस बेचारे से था जो मौत के इतने करीब था। उसने हमें आते हुए देख लिया था, और मुझे लगा कि वह मांगों को हमारे आने से पहले उसे मार डालने के लिए उकसा रहा था; लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया, क्योंकि उन्हें लगा कि हम उनके लिए कोई और आदेश लेकर आए हैं। मैंने लुटेरे से कहा, 'क्या तुम जीना नहीं चाहते?' मैंने कहा, 'तुम इतने छोटे हो, क्या तुम्हें जीवन से कोई प्रेम नहीं है? मैं तुम्हें फिर से सुरक्षा का वादा करता हूँ यदि तुम कबूल कर लोगे, जैसा कि तुमसे पहले करने के लिए कहा गया था।'
'मेरे हाथों को बांधने वाली रस्सियों को थोड़ा ढीला कर दीजिए,' डाकू ने कहा, 'और मैं आपसे बात करूंगा; इस समय मुझे इतना दर्द हो रहा है कि मैं बात नहीं कर सकता।'
मैंने मैंग्स से कहा, 'उन्हें ढीला करो; और तुममें से एक रस्सी को पकड़े रहो, कहीं वह भागने की कोशिश न करे।'
मेरी बात सुनकर लुटेरा हल्की सी मुस्कान के साथ बोला:
'आपने मुझमें रुचि दिखाई है, और यद्यपि मेरी वर्तमान स्थिति आपकी ही देन है, फिर भी देर-सवेर मेरा भी यही हाल होता, या मैं किसी गोली या तलवार के वार से मारा जाता; इसलिए मैं अपनी मृत्यु के लिए आपको क्षमा करता हूँ। लेकिन मैं फिर से दोहराता हूँ कि मुझे जीने की कोई इच्छा नहीं है; और मैं इतना दयनीय क्यों हूँ, आप यह नहीं सोच सकते कि मैं अपने साथियों के साथ विश्वासघात करके अपनी जान बचाऊँगा। यदि मेरे पिता जीवित होते और मोहन लाल के अधीन होते, तो मैं कुछ भी वादा कर देता; लेकिन वे मर चुके हैं; मेरे चाचा भी आपके रथ पर हुए हमले में आपके ही एक आदमी के हाथों मारे गए; और इस दुनिया में मेरे पास कौन बचा है जिसकी देखभाल करके मैं जीवित रहूँ? एक दिन में मेरे परिवार का अंत हो गया; और यही हमारा भाग्य था। फिर भी मोहन लाल के प्रति मेरी घृणा और एक मरते हुए व्यक्ति के श्राप को स्वीकार

कीजिए। उसी ने मुझे मारा है, और इसके लिए उसे भयानक दंड भुगतना पड़ेगा। और अब,' उसने मांगों की ओर मुड़ते हुए कहा, 'अपना भयानक काम करो; मुझे और कुछ नहीं कहना है।'
मैं दोबारा बोलने ही वाला था, लेकिन भूद्रिनाथ ने मुझे रोक दिया।
'इसका क्या फायदा?' उसने कहा; 'वह आदमी जिद्दी है, और यकीन मानिए, अगर उसे बख्श दिया गया तो वह अच्छे लोगों को खतरे में डालेगा, बल्कि विनाश की ओर ले जाएगा: उसे मरने दो, वह इसी का हकदार है।'
मैंग्स ने मुझसे आदेश मांगा, और मैंने उन्हें आगे बढ़ने को कहा: देरी करना स्पष्ट रूप से व्यर्थ था। डाकू को फिर से कसकर पकड़ लिया गया और ज़मीन पर पटक दिया गया, और मैंग, जिसके हाथ में वह चाकू था जिसे वह तेज कर रहा था, ने बड़ी कुशलता से उसकी एड़ी के ठीक ऊपर दोनों टांगों की नसों को काट दिया; फिर उसे उठाया गया, उसके गले में फंदा डाला गया, और एक पल में ही उसे शाखा पर खींच लिया गया, जहाँ वह मौत की पीड़ा से तड़प रहा था।
'छी!' भूद्रिनाथ ने मुँह फेरते हुए कहा, 'यह देखकर मुझे घिन आती है; यह हमारे काम से कितना अलग है, जहाँ मरने वाले को मरने से पहले शायद ही पता चलता है कि उसके गले में रूमाल बंधा है!'
मैंने कहा, 'तुम सही कह रहे हो; हमें फायदा है; लेकिन ये मांग तो दयनीय, समाज से बहिष्कृत और अभागे लोग हैं। उनसे और क्या उम्मीद की जा सकती है? अब चलो शिविर में चलते हैं; मेरे पिता वहाँ होंगे, और हम देखेंगे कि इस कुमाल खान के पास क्या है।'
जब हम वहाँ पहुँचे, तो हमने पाया कि उसके सारे सामान की जाँच हो चुकी थी। दो बक्से थे, जिनके अंदर क्या है, यह देखने के लिए हम कुछ अधीर हो गए। एक बक्सा लगभग राजस्व-संग्रहकर्ता के रूप में उसके व्यवसाय से संबंधित कागज़ों से भरा हुआ था, जिन्हें मैंने देखते ही जला दिया। लेकिन सबसे नीचे वाले बक्से में सोने से भरा एक थैला था, जिसे भूद्रिनाथ ने विजय भाव से ऊपर उठाया।
'यह बासी कागज से तो बेहतर है,' उसने उसे एक तरफ रखते हुए कहा; 'अब दूसरे बक्से की बारी है।'
उसे तोड़कर खोला गया, और वह सचमुच एक अनमोल खजाना निकला। ऊपर से ढके हुए कपड़ों को हटाने के बाद, हमारी निगाहों के सामने चांदी की कई छड़ें आ गईं।
हालांकि, डिब्बा खाली नहीं किया गया था, और कपड़ों की एक और परत के नीचे चांदी की छड़ों के समान आकार की सोने की दस छड़ें थीं।
'यही तो असली बात है,' भूद्रिनाथ ने पहला पत्ता उठाते हुए कहा; 'आलिया जानती है कि कितना कुछ है! लेकिन यह स्पष्ट है कि वह आदमी मारने लायक था; और उसने बेचारे किसानों को खूब लूटा होगा।'
सोने और चांदी की छड़ें मेरे पिता को सौंप दी गईं, ताकि उन्हें हमारे द्वारा लूटे गए अन्य सामान के साथ रख दिया जाए; और अब देखने के लिए केवल उनके पहने हुए कपड़े और उनकी कमरबंद ही बची थी। हालाँकि, उसमें ज़्यादा कुछ नहीं था।
'रुको,' भूद्रिनाथ ने कहा, 'यहाँ एक और गठरी है, जो हुमेना में थी।'

मैंने वह कागज़ उससे ले लिया और एक-एक करके साफ कागज़ की तहें खोलीं। 'अरे, यहाँ तो कुछ भी नहीं है,' मैंने कहा; 'मुझे लगता है उसने इसे लिखने के लिए रखा था।'
मेरे पिता ने कहा, 'फिर भी अंत तक चलते रहो; हमें सब कुछ देखने दो।'
तीन और तहें हटाने के बाद मुझे एक और छोटा पैकेट मिला, जो धागे से बंधा हुआ था। मैंने उसे खोलते हुए कहा, 'आखिरकार कुछ मिला तो सही! पैगंबर मुहम्मद के नाम पर विनिमय पत्र! और मुझे पूरा यकीन है कि इनकी कीमत भी होगी। क्या कोई है जो इन्हें पढ़-पढ़ सकता है?'
'मैं लिखावट पढ़ नहीं सकता,' भूद्रिनाथ ने कहा, 'लेकिन अगर ये फारसी में नहीं लिखे गए हैं तो मैं अंकों को समझ सकता हूं।'
'अरे नहीं,' मैंने कहा, 'ये नागरी या गुजराती हैं; तो अपनी कुशलता आजमाइए।'
'यह,' भूद्रिनाथ ने एक की जांच करने के बाद कहा, 'दो हजार रुपये का है: देखिए, ये आंकड़े हैं।'
मैंने बाकी बचा हुआ सामान उसे देते हुए कहा, 'मुझे लगता है आप सही कह रहे हैं; ये किसलिए हैं?'
'चार सौ के लिए एक सेकंड।'
'ज्यादा कुछ नहीं,' मेरे पिता ने कहा; 'लेकिन आगे बढ़ो।'
'तीसरा वाला तो—मुझे फिर से देखने दीजिए,' भूद्रिनाथ ने कहा; 'अरे, मैं सही हूँ, यह दो हज़ार दो सौ के लिए है; और आखिरी वाला दो सौ चालीस के लिए है।'
'यानी, मुझे देखने दो,' मैंने कहा, 'चार हज़ार आठ सौ चालीस। वाह, हमें अच्छा इनाम मिला है।'
'हाँ!' मेरे पिता चिल्लाए, 'अगर ये हमारे लिए किसी काम के होते तो हम बहुत अच्छी स्थिति में होते; लेकिन ये उस बेकार कागज से बेहतर नहीं हैं जिसे हमने जला दिया है।'
मैंने कहा, 'कैसे? अगर हम उन्हें पेश करें तो हमें पैसे जरूर मिल जाएंगे, है ना?'
मेरे पिता ने कहा, 'तुम यह नहीं सोचते कि अगर हमने ऐसा किया तो इस मामले में हमारी पहचान उजागर हो जाएगी: इसलिए इन्हें नष्ट कर दो।'
'जी हां,' मैंने कहा, 'मैं ऐसा नहीं करूंगा, बल्कि उन्हें चोरी के पैसे समझकर रखूंगा; और मुझे यकीन है कि अगर हम कुमाल खान के एजेंट होने का दिखावा करें, तो हमें वह रकम मिल सकती है।'
'जैसी तुम्हारी इच्छा,' मेरे पिता ने कहा; 'लेकिन याद रखना कि मुझसे सलाह लिए बिना तुम इस संबंध में कोई कदम नहीं उठाओगे।'
इसलिए मैंने उन्हें रख लिया, और बाद में मुझे ऐसा करने पर खुशी हुई।

अध्याय XIII

कुमाल खान का सिर कैसे काटा गया और उसे कस्बे के द्वार के पास लटका दिया गया।

चूंकि हमें अगली सुबह गांव छोड़ना था, इसलिए मैंने सोचा कि क्यों न मैं मोहन लाल से विदा ले लूं, और तदनुसार मैं शाम को उनके घर गया।

जब हम बैठ गए तो उसने कहा, 'तो तुम उस बदमाश से कुछ भी हासिल नहीं कर सके जिसे फांसी पर लटका दिया गया था; ये चोर तो शातिर बदमाश हैं, और हालांकि मैंने इस तरह से कई लोगों को फांसी पर लटकाया है, लेकिन मैं उनसे कभी कुछ भी हासिल नहीं कर पाया।'

मैंने कहा, 'मैं ऐसा नहीं कर सका; वह व्यक्ति, जैसा कि उसने कहा था, वफादार था और एक बेहतर उद्देश्य के लिए मरा।'

मोहन लाल ने कहा, 'उसके बारे में बात करने का कोई फायदा नहीं है; वह मर चुका है, और मेरी इच्छा है कि उसके सभी साथियों को भी उसी तरह फांसी पर लटका दिया जाए; लेकिन मीर साहब, आपके जाने के बाद से मैंने एक अजीब खबर सुनी है, जिसे मैं आपको बताने में संकोच नहीं करता, और शायद आप मेरी कुछ मदद कर सकें।'

मैंने कहा, 'मुझे आदेश दीजिए; मैं जो कुछ भी कर सकता हूँ, वह आपके ध्यान के बदले में तुच्छ ही होगा।'

उन्होंने कहा, "मामला यह है कि हैदराबाद में काफी प्रतिष्ठित व्यक्ति सैयद मोहम्मद अली नाम का एक व्यक्ति दो-तीन साल पहले निर्मूल के राज्यपाल को पत्र लेकर आया था, जिसमें उसने राज्यपाल को किसी भी रिक्त छोटे जिले का कलेक्टर नियुक्त करने का निर्देश दिया था। वह कुछ समय तक राज्यपाल के साथ रहा, और जब मौका मिला, तो राज्यपाल ने उसे निर्मूल से कुछ ही दूरी पर स्थित एक जिले में अपना नायब या उप-कलेक्टर नियुक्त कर दिया। हाल ही में राज्यपाल को उससे राजस्व वसूली में छूट प्राप्त करने में काफी कठिनाई हो रही थी, और एक-दो शिकायतें जो उसे निजी तौर पर मिलीं, उनसे राज्यपाल को संदेह हो गया। यह संदेह तब और बढ़ गया जब उसे पता चला कि उसने अपना सामान गुप्त रूप से भेज दिया था—कहाँ, यह किसी को नहीं पता था, और आज सुबह वह और उसके लोग अचानक गायब हो गए हैं।"

मैंने कहा, 'यह बहुत ही असाधारण है; लेकिन चूंकि मैंने इस व्यक्ति के बारे में पहले कभी नहीं सुना, इसलिए मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा है कि मैं आपके या आपके मित्र के लिए किस प्रकार उपयोगी हो सकता हूं।'

मोहन लाल ने कहा, 'यह महज संयोग है कि आप ऐसा हो सकते हैं; और मेरा आपसे निवेदन है कि आप अपनी यात्रा के दौरान उस पर नज़र रखें, और यदि वह आपको मिले, तो उसे तुरंत गिरफ्तार करके अपने लोगों की सुरक्षा में मेरे पास भेज दें, जिन्हें मैं उनकी देरी और परेशानी के लिए अच्छा इनाम देने का वादा करता हूँ। एक बात मैं आपको बताना चाहता हूँ कि उसने कई मौकों पर कुमाल खान नाम धारण किया है—मेरा मानना है कि यह नाम उसके किसी रिश्तेदार का था जिसने उसे गोद लिया था, और शायद उसने यात्रा के दौरान यह नाम अपना लिया हो।'

मैंने कहा, 'मैं इसे नहीं भूलूंगा, और अगर मैं उससे मिल जाऊं तो आप मुझ पर भरोसा रख सकते हैं कि मैं उसे पकड़ने के लिए अपनी पूरी कोशिश करूंगा; और क्या आप मुझे उसके अपराधों से संबंधित एक दस्तावेज़ दे सकते हैं, जिस पर आपकी मुहर लगी हो, ताकि मैं उसे गिरफ्तार करने के लिए एक तरह के प्रमाण के रूप में उसका इस्तेमाल कर सकूं?'

मोहन लाल ने कहा, 'ज़रूर; आपका विचार अच्छा है; मैं तुरंत एक लिखूंगा।' इतना कहकर उन्होंने दस्तावेज़ तैयार किया और मुझे सौंप दिया।

मैंने कहा, 'मैं एक साधारण विद्वान हूँ, लेकिन मुझे यकीन है कि मैं इसे समझ सकता हूँ;' और कागज़ लेकर मैंने वह पढ़ा जो उसने लिखा था, जो संक्षेप में वही था जो उसने मुझे बताया था।

'और अब मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि मुझे छुट्टी दे दें, क्योंकि मुझे अपने लोगों के बीच कुछ काम है, और दिन लगभग समाप्त हो चुका है।'

मोहन लाल ने कहा, 'मैं आपको रोकूंगा नहीं; और अगर आपको या आपके लोगों को किसी ऐसी चीज की जरूरत हो जो मेरे छोटे से गांव में उपलब्ध हो, तो बस उसे मंगवा दीजिए। मैं अपने मित्र को भी पत्र लिखकर अपनी व्यवस्था और आप पर अपने भरोसे के बारे में बताऊंगा।'

मैंने कहा, 'आपकी दयालुता के लिए धन्यवाद। अगर मुझे और कुछ चाहिए होगा तो मैं उसे मंगवाने में संकोच नहीं करूंगा। सलाम, साहब!'

'सलाम!' उन्होंने जवाब दिया; 'मैं आपके सुरक्षित और सफल सफर की कामना करता हूं।'

'अरे, अच्छे औमिल, आपके अंतिम शब्दों के लिए एक बार फिर धन्यवाद,' मैंने जाते हुए मन ही मन कहा: 'इंशाअल्लाह! यह अब तक की तरह ही सफल होगा। मुहम्मद अली को उनके कर्मों का फल अवश्य मिला; और शायद उनके लिए यही बेहतर है कि वे इस हालत में मृत पड़े हैं, बजाय इसके कि वे बुरे अंतरात्मा से त्रस्त होकर जीते और उन लोगों के हाथों में पड़ जाते जिन्हें उन्होंने धोखा दिया था, जो उन्हें यातना देकर मार डालते अगर उन्होंने उन्हें एक दयनीय जेल में कैद न किया होता जहाँ उन्हें अपने शेष दिन कष्ट सहते हुए बिताने पड़ते।'

सचमुच बहुत कुछ हो चुका है, और मेरे बूढ़े पिता यह सुनकर दिल खोलकर हँसेंगे कि मैंने कैसा व्यवहार किया है, और कैसे मैंने अपने साथ लाए कमीशन से सभी संदेहों को दूर कर दिया है, जिसका ये कागज़ात पुख्ता सबूत हैं। मुझे उनका असली नाम भी पता चल गया है, और इस सुराग से मुझे उन विनिमय बिलों का पैसा ज़रूर मिल जाएगा जिन्हें मेरे समझदार पिता नष्ट कर देते। शाबाश! अमीर अली, तुम इसी तरह आगे बढ़ते रहो, और जो भी तुमसे चालाकी या साहस में मुकाबला करेगा, वह किसका कुत्ता होगा!

जैसा कि मैंने सोचा था, मेरे पिता ने मेरे द्वारा शुरू किए गए व्यवसाय पर दिल खोलकर हँसे।

उन्होंने कहा, 'यह एक अच्छा मजाक होगा कि कुमाल खान का सिर मंगवाकर गांव के द्वार पर रख दिया जाए; तब लोग उसके बारे में निश्चिंत हो जाएंगे, और मोहन लाल के दोस्त को उस पैसे का कुछ हिस्सा लौटाना पड़ेगा जो उसने राजस्व से हड़प लिया है, इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है।'

'अलिया की कसम,' मैंने कहा, 'यह एक बेहतरीन विचार है, और मैं इसे लाने के लिए कुछ लुघाई लोगों को भेजूंगा।'
'नहीं, नहीं,' मेरे पिता ने कहा; 'मैंने तो बस मजाक किया था; अब लगभग शाम हो चुकी है, और रात के अंधेरे में उन्हें उस सुनसान सड़क पर जोखिम में डालना ठीक नहीं होगा; इसके अलावा, हमारे चलने से पहले उनका वापस आना भी मुश्किल होगा।'
'जैसी आपकी इच्छा,' मैंने कहा; लेकिन साथ ही मैंने मन ही मन उनमें से एक या दो लोगों से इसका जिक्र करने का निश्चय कर लिया।
जब मैं अपने तम्बू में पहुँचा, तो मैंने तीन साहसी लुघाई लोगों को बुलवाया। मैंने उनसे कहा, 'मेरे लड़कों, मेरे पास तुम्हारे लिए एक साहसिक कार्य है, और अगर तुम इसे करोगे तो मुझे पाँच रुपये प्रति व्यक्ति मिलेंगे।' उन्होंने कहा, 'आपके आदेश हमारे सिर और आंखों पर अंकित हैं; आपको केवल हमें आदेश देना है, और हम आपकी इच्छाओं का पालन करेंगे।'
'तो फिर,' मैंने कहा, 'मुझे कुमाल खान का सिर चाहिए: क्या आपको वह जगह पता है जहाँ आपने उसे दफनाया था? और क्या कब्र गहरी है?'
उनमें से एक हिंदू, मोतीराम नाम के व्यक्ति ने कहा, 'हमें वह जगह बिल्कुल ठीक से पता है; भला कौन सा लुघा उस जगह को भूल सकता है जहाँ उसने किसी को दफनाया हो! कब्र गहरी नहीं है, और वह सबसे ऊपर है। लेकिन हम सिर का क्या करें? और इसकी ज़रूरत क्यों है?'
मैंने उन्हें मोहन लाल की कही हुई बातें विस्तार से बताईं और दोहराया कि सिर प्राप्त करना और उसे किसी प्रमुख स्थान पर रखना कितना अच्छा मजाक होगा।
'तो,' मोतीराम ने कहा, 'अगर मैं कोई सलाह दे सकता हूँ, तो मैं सुझाव देता हूँ कि इसे उस पेड़ के नीचे रख दिया जाए जहाँ आज सुबह चोर को फाँसी दी गई थी: भला औमिल सोचेगा कि कुमाल खान अपने ही गिरोह के किसी सदस्य के हाथों मारा गया है।'
मैंने कहा, 'यह एक शानदार विचार है; इसलिए, यदि आप लौटने पर वहां कोई न पाएं, तो इसे वहीं रख दें, क्योंकि मुझे इसे देखने की कोई इच्छा नहीं है।'
तीनों ने कहा, 'यह आपकी संतुष्टि के अनुसार किया जाएगा; और हम तुरंत शुरू करेंगे।'
तो वे मुझे छोड़कर चले गए। फिर भी, उनकी अनुपस्थिति के दौरान मुझे लगातार डर सताता रहा कि कहीं उन्हें कुछ हो न जाए, और मैं अक्सर सोचता था कि काश मैंने उन्हें ऐसे काम पर न भेजा होता; लेकिन बहुत देर हो चुकी थी, और मैं उन्हें वापस नहीं बुला सकता था। आधी रात तक घंटे बेचैनी और नींद की कमी के साथ बीतते गए; और बेचारी ज़ोरा समझ ही नहीं पा रही थी कि मुझे क्या हो गया है। मैंने उससे सिरदर्द और अस्वस्थता का बहाना बनाकर खुद को अलग किया, और उसे और उस बुढ़िया को मेरे कनपटी पर चूना लगाने और अन्य घरेलू नुस्खे आजमाने दिए, जिनके बारे में उन्होंने कहा कि ऐसे मामलों में वे अचूक होते हैं: और अंत में, सोने का बहाना करके, वह लेट गई और जल्द ही सचमुच सो गई।

लगभग आधी रात हो चुकी थी जब मेरी चिंता दूर हुई, और तभी मुझे अपने तम्बू के दरवाजे पर मोतीराम की आवाज़ सुनाई दी जो मुझे पुकार रही थी। मैं उठा और बाहर गया। 'क्या सब ठीक है?' मैंने उत्सुकता से पूछा। 'सब ठीक है,' उसने कहा; 'हम सिर ले आए हैं और उसे वहीं रख दिया है जहाँ आपने बताया था। हमारा जाना अच्छा हुआ, क्योंकि हमें कब्र पर सियार का एक झुंड तेज़ी से खोदता हुआ मिला; और वे सुबह होने से पहले ही शवों तक पहुँच जाते, क्योंकि हमारे पहुँचने पर उन्होंने एक बड़ा गड्ढा खोद दिया था; लेकिन हमने उन्हें भगा दिया और ऊपर मिट्टी के ठीक नीचे ढेर सारे सूखे कांटे डाल दिए: वे दोबारा कोशिश नहीं करेंगे, और अगर वे करते भी हैं तो कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि उस जगह को कोई कभी नहीं ढूंढ पाएगा—वह जगह बहुत सोच-समझकर चुनी गई थी।'

मैंने कहा, 'तुमने अपना काम अच्छे से और बहादुरी से किया है, और तुम्हें कल सुबह तुम्हारा पैसा मिल जाएगा।' वे मुझे छोड़कर चले गए, और उत्तेजना शांत होने के बाद मैं लेट गया और गहरी नींद सो गया। अगली सुबह हम सूर्योदय से पहले उठ गए: शकुन देखे गए, जो शुभ निकले, और हम अपनी यात्रा के लिए पूरी तरह तैयार हो गए। हम जल्दी ही तैयार हो गए, और यह देखकर कि ज़ोरा अपनी गाड़ी में आराम से है और उसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, मैं उस पेड़ तक जाने के प्रलोभन का विरोध नहीं कर सका जहाँ चोर को फाँसी दी गई थी, यह देखने के लिए कि क्या वास्तव में कुमाल खान का सिर लाया गया था। इसलिए मैं दल से अलग हो गया, और जितनी तेज़ी से हो सकता था, उस स्थान की ओर भागा, जो ज़्यादा दूर नहीं था। मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन जैसे ही मैं पेड़ के पास पहुँचा, और अपनी खोज की वस्तु को चारों ओर देखा, मेरे शरीर में अनायास ही सिहरन दौड़ गई।

रात भर शांत रही हवा अचानक सुबह होते ही तेज़ हो गई, और नीम की सूखी शाखाओं से छनकर आती उसकी पहली आह में मानो एक आवाज़ थी—पिछली रात हमने जो किया था, उसका पछतावा, जिसका घिनौना सबूत मेरे सामने मौजूद था; क्योंकि उसी क्षण मेरी नज़र उस सिर पर पड़ी, जिसे सियार से बचाने के लिए पेड़ के तने के उभरे हुए हिस्से पर रखा गया था। मैं घृणा से पीछे हट गया, क्योंकि आँखें सॉकेट से बाहर निकली हुई थीं, मुँह खुला हुआ था, और चेहरे का भाव बेहद भयानक था। मैंने एक पल के लिए उसे देखा। 'यह नहीं हो सकता,' मैंने कहा; 'ये आँखें हमारा पर्दाफ़ाश कर देंगी:' इसलिए ठंडे सिर को नीचे उतारकर, मैंने आँखों को सॉकेट में धकेला और पलकें बंद कर लीं, जो मैं कर सका, क्योंकि मृत्यु की जकड़न दूर हो चुकी थी। फिर मैंने उस सिर को पेड़ के पास एक बड़े पत्थर पर रख दिया, जिस पर कोई भद्दी सी मूर्ति खुदी हुई थी, और उस जगह से निकलकर जितनी तेजी से हो सकता था, उस छोटे से पोखर की ओर भागा, जिसके पास से मैं आते समय गुजरा था, और उसमें मैंने अपने हाथों पर लगे खून को साफ किया।

'आलिया को धन्यवाद, वे फिर से पवित्र हो गए!' मैंने मन ही मन कहा, और उत्सुकता से उन्हें मिट्टी और पानी से धोया। 'मैं खुद को कितना भी बहादुर क्यों न समझूँ, और किसी भी जीवित प्राणी की परवाह न करते हुए, मैं मोतीराम और उसके लोगों के साथ नहीं जाता, उस शव को खोदकर उसके टुकड़े-टुकड़े नहीं करता—नहीं,

दिल्ली के धन के लिए भी नहीं। छी! यह विचार कितना भयानक है।' और मैं उठा, और पूरी गति से दौड़कर उस समूह तक पहुँच गया।

मेरी अनुपस्थिति पर किसी का ध्यान नहीं गया, जो अच्छी बात थी; और अपने घोड़े पर सवार होकर, मैं ज़ोरा की गाड़ी के पास खड़ा हो गया, जो आगे चल रही थी।

जब हम उस स्थान पर पहुँच गए और दिनभर आराम कर रहे थे, तभी औमिल से एक घुड़सवार एक पत्र लेकर आया, जिसे देखकर हम सब बहुत हँसे। पत्र में बताया गया था कि सिर मिल गया है और उसकी पहचान हो गई है, लेकिन साथ ही मुझसे अनुरोध किया गया था कि मैं इस घटना को गुप्त रखूँ, ताकि औमिल के मित्र, निर्मूल के शासक को, हमारे द्वारा मारे गए व्यक्ति के गबन से उत्पन्न मांग को पूरा करने के लिए समय मिल सके। यह मेरे उद्देश्य के लिए बिल्कुल उपयुक्त था, क्योंकि अब मुझे पूरा विश्वास था कि मैं बिल की राशि प्राप्त कर लूँगा।

इसके पाँचवें दिन सुबह हमें हैदराबाद पहुँचना था: अनुमानित दूरी सात किलोमीटर थी, इसलिए हमने हमेशा की तरह जल्दी प्रस्थान नहीं किया; हम चाहते थे कि दिन ढलने के बाद पहुँचें, ताकि कम से कम ध्यान आकर्षित हो, क्योंकि हमारी संख्या काफी अधिक थी। इसलिए हम तीन दलों में बँट गए, एक मेरे पिता के नेतृत्व में, एक मेरे नेतृत्व में, और तीसरा सुरफुराज खान के नेतृत्व में, जो मेरे पिता का मित्र था और जिससे हमारी मुलाकात रास्ते में हुई थी, और जिसे उसके साथियों के साथ हमारे दल में शामिल कर लिया गया था; और हमने कारवां में फिर से मिलने का निर्णय लिया, जो सभी यात्रियों का सामान्य विश्राम स्थल था, और जहाँ हमें बताया गया था कि हमें वहाँ की सराय में ठहरने की व्यवस्था मिल जाएगी। मेरा दल सबसे पहले रवाना हुआ, और मेरे पिता ने कहा कि वे सामान के साथ रुकेंगे और उसे आराम से लाएँगे, क्योंकि उन्हें विभिन्न टोल-हाउसों पर हमारे द्वारा अर्जित संपत्ति पर सामान्य कर चुकाना होगा।

इसलिए, सुबह होते ही हम निकल पड़े। सुबह सुहाना था, ठंड थी, लेकिन उतनी नहीं जितनी हमारे देश में होती है, जहाँ अक्सर ज़मीन पर पाला जमा रहता है और सूरज उगने तक घास सफ़र के दौरान ठंडी लगती है; फिर भी, एक अच्छा शॉल मेरे सामान्य कपड़ों के साथ एक अच्छा अतिरिक्त वस्त्र साबित हुआ।

सड़क के बाईं ओर स्थित कुछ पहाड़ियों पर कोहरे की चादर छा गई, जिसने हमारी दृष्टि से उनके तल पर स्थित एक विशाल तालाब को छिपा दिया; तभी हल्की हवा चलने लगी और कोहरा छंटने लगा, जिससे एक-एक करके वे विशाल चट्टानें दिखाई देने लगीं जो मैंने पहले कभी नहीं देखी थीं और ऐसा लग रहा था मानो उन्हें किसी मनुष्य ने एक दूसरे के ऊपर ढेर कर दिया हो; तेलंगाना में प्रवेश करते ही मैं इन असाधारण चट्टानों को देखकर चकित रह गया था, और अब मैंने इनके बारे में भूद्रिनाथ को बताया: उन्होंने इनकी उत्पत्ति के बारे में मेरे अनुमानों का तुरंत समाधान कर दिया।

उन्होंने कहा, "शायद आपने हमारे पवित्र ग्रंथों में से एक महाभारत के बारे में सुना होगा; उसमें देवताओं के युद्धों का वर्णन है। उनमें से एक युद्ध की उत्पत्ति राम की पत्नी सीता के जबरन अपहरण से हुई थी। उन्हें लंका (सीलोन) ले जाया गया, और वहाँ के राक्षसों या दुष्ट आत्माओं ने, शक्तिशाली सेनाओं के साथ राजा की

सहायता से, उन्हें बंदी बना लिया। उन्होंने राम का विरोध किया, और राम अपनी सुंदर पत्नी के खोने से घोर निराश हो गए, और उन्हें यह भी पता नहीं चल सका कि उन्हें कहाँ ले जाया गया था। आप जानते हैं कि हमारे वानर देवता हनुमान एक बुद्धिमान और अद्भुत प्राणी थे; आज के वानरों में केवल उनका रूप ही शेष है; बुद्धि लुप्त हो गई है, और उनमें केवल चालाकी ही बची है। लेकिन यह भी एक दुखद तथ्य है कि उनकी ही तरह मनुष्य भी पतित हो गए हैं, और हम उन दिनों के प्राणियों से उतने ही अलग हैं जितने कि आज के वानर हनुमान से अलग हैं।" खैर, जैसा कि मैं कह रहा था, राम अपनी व्याकुलता में थे तभी हनुमान उनके पास आए और उनकी दशा पर दया करके खोई हुई राजकुमारी की खोज में जाने का प्रस्ताव रखा और उसी के अनुसार प्रस्थान किया। हनुमान ने बहुत देर तक भटकते हुए अंत में उन्हें लंका में पाया, जहाँ वह उतनी ही विक्षिप्त थीं जितनी कि उन्होंने अपने स्वामी को छोड़कर गई थीं। वह शीघ्र ही यह सूचना लेकर लौटे और द्वीप पर विजय प्राप्त करने के लिए सेना एकत्रित की गई। परन्तु जब वे भूमि के अंत तक पहुँचे तो एक विकट परिस्थिति उत्पन्न हुई; उनके सामने लंका तो थी, परन्तु उनके बीच एक विशाल और उफनता हुआ समुद्र था, जिसकी गर्जना करती लहरें बड़े से बड़े साहस को भी भयभीत कर देती थीं—यहाँ तक कि प्रतापी राम भी इस जन भय से नहीं बच पाए। नावें उपलब्ध नहीं थीं, और यदि होती भी तो लाखों देवतुल्य प्राणियों की सेना को ले जाने का क्या उपयोग होता, जिनमें से प्रत्येक की ऊँचाई दस हाथ थी! राम हताश हो गए; लेकिन हुनोमन ने एक ही छलांग में नहर पार कर ली और तुरंत यह आश्वासन लेकर लौट आया कि जल्द ही एक पुल का निर्माण किया जा सकता है, और वह और उसके साथी इसके पूरा होने तक दिन-रात मेहनत करेंगे।
पलक झपकते ही बंदरों की सेना हिमालय की ओर रवाना हो गई। विशाल पर्वत और चट्टानें अपनी नींव से उखड़ गईं और इन अथक प्राणियों की टोलियों द्वारा समुद्र तट तक पहुँचा दी गईं। एक-एक करके उन्हें ऊपर से समुद्र में गिराया गया, और इन विशालकाय पिंडों के गिरने की गड़गड़ाहट का वर्णन भयानक है, पानी आकाश तक पहुँचकर तारों को बुझा रहा था! अंत में पुल बनकर तैयार हुआ, विशाल सेनाएँ उस पर से गुजरीं, देश पर विजय प्राप्त हुई, और सुंदर सीता अपने प्रिय स्वामी की बाहों में लौट आईं।
ये चट्टानें हिमालय से लाई गई चट्टानों का हिस्सा हैं, और बंदरों द्वारा रखे जाने के बाद से ये एक दूसरे के ऊपर ढेर के रूप में पड़ी हुई हैं; क्योंकि यह क्षेत्र बीच में ही पड़ता है, इसलिए यहीं पर यह सिलसिला शुरू हुआ था, और जब पुल पूरा हो गया, तो ये चट्टानें वहीं रह गईं, क्योंकि इनकी आवश्यकता नहीं थी। अपनी बात की सत्यता सिद्ध करने के लिए (और भगवान करे कि कोई इस पर संदेह न करे!) मुझे आपको बताना होगा कि पुल के अवशेष आज भी दिखाई देते हैं। कई तीर्थयात्री जिनसे मैंने बातचीत की है, जो रामिसराम गए थे, उन्होंने बताया कि वे नावों में पुल के किनारे-किनारे गए थे, और पानी के ऊपर दिखाई देने वाली चट्टानों के बिंदुओं से पुल का पता लगाया था, जो लगभग एक सीधी रेखा में एक किनारे से दूसरे किनारे तक जाती थीं, और कहीं-कहीं छोटे-छोटे द्वीप भी थे जहाँ लहरों का कोई निशान नहीं था। इसके अलावा, रामिसराम से लेकर यहाँ तक के विभिन्न हिस्सों में इसी तरह के चट्टानों के ढेर मिलते हैं, जिनकी निस्संदेह आवश्यकता नहीं थी; और आप देखेंगे कि इस क्षेत्र के उत्तर में देश के किसी अन्य भाग में इस तरह के कोई ढेर नहीं दिखाई

देते हैं। इसलिए, हमारे प्राचीन धर्म की सत्यता का इससे बड़ा कोई प्रमाण नहीं हो सकता कि ये पुख्ता गवाह दुनिया के अंत तक कायम रहेंगे और सभी अविश्वासियों और संशयवादियों को भ्रमित कर देंगे।

'माशाल्लाह!' मैंने कहा; 'यह एक अद्भुत कहानी है, और बिल्कुल सच है, क्योंकि मैंने खुद इस पुल के बारे में सुना है। हम मुसलमानों में यह मान्यता है कि बाबा आदम, जिन्हें आलिया ने सेरेंडीब के स्वर्ग में रखा था, जो लंका है, एक दिन इतने छोटे द्वीप में कैद रहने से ऊब गए; और दूर मुख्य भूमि को देखकर, उन्होंने सात-सात किलोमीटर की दूरी पर पहाड़ों को समुद्र में फेंककर पुल बनाया। जब पुल पूरा हो गया, तो वे आसानी से एक पुल से दूसरे पुल पर चले गए और इस तरह मुख्य भूमि पर पहुँच गए; लेकिन इस कार्य से आलिया अप्रसन्न हो गईं, और उन्होंने शीघ्र ही उन्हें स्वर्ग से निकाल दिया, और तब से मनुष्य भटकता आ रहा है।'

'जी हां,' भूद्रिनाथ ने कहा; 'लेकिन क्या मेरी कहानी सबसे अधिक विश्वसनीय नहीं है, खासकर जब आप इन सभी चट्टानों को इतने असाधारण ढंग से ढेर में लगे हुए देखते हैं जैसे कि बोझ ढो रहे हों? अगर किसी आदमी को पत्थरों का ढेर उठाना होता, तो वह उन्हें इसी तरह ढेर करता; और देखिए, ये अलग-अलग ढेर में हैं, जैसे इन्हें रखा गया था, कुछ बड़े, कुछ छोटे, निस्संदेह उन्हें उठाने वाले लोगों की ताकत के अनुसार।'

मैंने कहा, 'अलिया के क़ुपोद्रुत—यह ईश्वर की शक्ति है। माशाल्लाह! वे बड़े-बड़े बंदर थे; शुक्र है कि आजकल हमारे पास उनमें से कोई नहीं है, वरना वे हमें इस भूमि से भगा देते।'

अध्याय 14

अमीर अली का हैदराबाद आगमन

हम उलवाल गाँव से गुज़रे, जहाँ इमली और आम के पेड़ों के झुरमुटों के बीच से उसका सफ़ेद पैगोडा झाँक रहा था और उसका विशाल तालाब सूरज की किरणों में चमक रहा था। आगे बढ़ते हुए, चट्टानों की एक पहाड़ी पार करते ही हमें प्रसिद्ध हुसैन सागर, जिसे अक्सर सिकंदराबाद भी कहा जाता है, में सेना का शिविर दिखाई दिया। अंग्रेज़ सेना के तंबू तेज़ धूप में जगमगा रहे थे और उनके पीछे नीले पानी का विशाल विस्तार फैला हुआ था।

हमने अपनी यात्रा में कई लोगों से इस झील के बारे में बहुत कुछ सुना था, और जब हम इसके पास से गुज़रे तो तेज़ हवा चलने लगी, और सतह पर हज़ारों लहरें उठ रही थीं, जिनकी सफ़ेद चोटियाँ टूटते ही हीरों की तरह चमक रही थीं, और तटबंध के पत्थरों से टकराते हुए उनकी फुहारें हमारे चेहरों पर पड़ रही थीं। हम काफ़ी देर तक उस खूबसूरत नज़ारे को निहारते रहे, जो हम सबके लिए बिल्कुल नया था, और सोच रहे थे कि जिस समुद्र के बारे में हमने इतना कुछ सुना था, क्या वह सच में हमारे सामने मौजूद इस नज़ारे जैसा हो सकता है। साहब, मैंने तब से दो बार समुद्र देखा है; मुझे इसका वर्णन करने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि आप इस पर नाव चला चुके हैं; लेकिन जब मैंने इसे पहली बार देखा, तो मुझे लगा कि मैं इस पर गिरकर इसकी पूजा कर सकता हूँ, यह इतना असीम प्रतीत हुआ, मानो इसका किनारा आकाश को छू रहा हो, और यह एक ऐसे विस्तार में फैला हुआ था जिसे मेरी कल्पना की चरम सीमा भी समाहित नहीं कर सकती थी—मैंने सोचा, यह सभी लोगों के ईश्वर का एक उपयुक्त प्रतीक है, जिसका हर कोई ध्यान करता है, जबकि लहरों की कर्कश गर्जना, जो एक के बाद एक पहाड़ से टकराती हुई तट पर उग्र रूप से टूटती थीं, सर्वशक्तिमान की एक ऐसी वाणी प्रतीत होती थी जो सबसे निर्दयी और लापरवाह व्यक्ति में भी विस्मय और भय की भावनाएँ जगाने में विफल नहीं हो सकती थी!

हम तालाब के तटबंध को पार कर गए। अभी तक हमें शहर का कुछ भी दिखाई नहीं दिया था; लेकिन पास ही एक पहाड़ी थी, और जैसे ही हम उस पर चढ़ने लगे, मेरी बेचैनी बेकाबू हो गई। मैंने अपने घोड़े को एड़ी मारी, और चोटी पर पहुँचने से पहले ही मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं, ताकि मेरे सामने जो कुछ भी हो, वह एक झटके में मेरी आँखों के सामने आ जाए।

जब मेरा घोड़ा शिखर पर पहुंचा तो उसने अपनी गति धीमी कर दी, और उसे कुछ कदम आगे जाने देने के बाद मैंने अपनी आंखें खोलीं, और वास्तव में मेरे सामने का दृश्य शानदार था।

इसके नीचे हैदराबाद स्थित था, जिसके बारे में अनेक अटकलें लगाई जाती थीं, अनेक लोगों में वहाँ पहुँचने की तीव्र इच्छा थी—दुखुन वंश का प्रथम नगर, जिसकी प्रसिद्धि उन सभी देशों में थी जहाँ से मैं गुज़रा था। मैंने कल्पना की थी कि यह, अन्य सभी नगरों की तरह, एक मैदान के बीच में स्थित होगा, और इसका केवल एक-

आध हिस्सा ही दिखाई देगा जो घने वृक्षों के झुरमुटों से निकलता होगा: लेकिन हैदराबाद का स्वरूप बिल्कुल भिन्न था।

मैं एक हल्की ढलान की चोटी पर खड़ा था, जिसके दाहिनी ओर कुछ दूरी पर ऊबड़-खाबड़, पथरीली पहाड़ियाँ थीं, और बाईं ओर धीरे-धीरे एक मैदान में उतरता हुआ प्रतीत हो रहा था, जो क्षितिज तक लगभग निर्बाध रूप से फैला हुआ था। मेरे सामने, घाटी की हल्की ऊँचाई पर, और जहाँ मुझे नदी होने का अनुमान था, उसके पार शहर बसा हुआ था, जिसके सफेद सीढ़ीदार घर सूर्य की रोशनी में चमक रहे थे, जो मुझे दूर से लगभग पेड़ों के जंगल जैसे लग रहे थे। चार मीनार और मक्का मस्जिद अपने चारों ओर मौजूद इमारतों के बीच गर्व से खड़ी थीं; और जगह-जगह एक सफेद गुंबद, अपने चमकीले सुनहरे शिखर के साथ, किसी प्रिय या पवित्र संत की कब्र की पहचान थी, जबकि सैकड़ों छोटी मस्जिदें अपने पतले सफेद मीनारों से पहचानी जाती थीं।

शहर के आगे चट्टानी पहाड़ियों की एक और श्रृंखला फैली हुई थी, जो दाहिनी ओर की पहाड़ियों से मिलकर घाटी को उस तरफ से घेर लेती थी। शहर विशाल प्रतीत होता था; लेकिन पेड़ों की संख्या देखकर मुझे लगा कि यह मुख्य रूप से बगीचों और बाड़ों से बना है, और बाद में जब मैंने इसमें प्रवेश किया तो इसकी सड़कों को घरों से भरा हुआ और पूरे शहर को घनी आबादी वाला देखकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ।

वह सचमुच एक बेहद मनमोहक दृश्य था: सुबह की ताजगी, हवा की शुद्धता और शहर तथा उसकी इमारतों की जगमगाहट ने मेरे मन पर एक ऐसा प्रभाव छोड़ा जो कभी मिट नहीं सकता। मैंने इसे बाद में भी कई बार देखा है, और हालांकि यह हमेशा ही बेहद खूबसूरत होता है, फिर भी उस दिन जैसा प्रभाव मुझ पर कभी नहीं पड़ा। लेकिन तब मैं युवा था, जोश से भरा हुआ था, और अपनी क्षमताओं के प्रति पूरी तरह सचेत था, जो अभी विकसित हो रही थीं और मुझे विश्वास दिला रही थीं कि वे मुझे सफलता की ऊंचाइयों तक ले जाएंगी।

एक-एक करके, जैसे-जैसे ठग आते गए, हर कोई उस खूबसूरत दृश्य की प्रशंसा करता गया और सबने कहा कि राजधानी उन सभी प्रशंसाओं के योग्य है जो उन्होंने इसके बारे में सुनी थीं। कारवां तक जाने का सबसे नज़दीकी रास्ता पता करके, हम ढलान से नीचे उतरे और अनगिनत गलियों से होते हुए उस स्थान पर पहुँचे, और इस तरह हमारी यात्रा समाप्त हुई। हम इसके लिए और हमें मिली सुरक्षा और सफलता के लिए आभारी थे। हमने फिलहाल एक सराय में अपना डेरा डाला जो एक बड़ी और भव्य मस्जिद के चारों ओर थी; और अपनी सुविधा के लिए मैं एक खाली मकान की तलाश में गया और कुछ कठिनाई के बाद मुझे बगल में रहने वाले एक व्यापारी का एक छोटा सा मकान किराए पर मिल गया। उसमें केवल तीन कमरे और बरामदा था, जो दुकान थी; लेकिन यह मेरे पिता और मेरे लिए पर्याप्त था, और एक मजबूत दरवाजे वाला एक छोटा कमरा था, जिसमें हमने अपना सारा लूटा हुआ माल छिपा दिया था।

ज़ोरा अपने जन्मस्थान, यानी अपने असली घर पहुँचकर बेहद खुश थी। वह अपने रिश्तेदारों और दोस्तों से मिलने की खुशी और उनके बीच होने वाली हैरानी के बारे में ही बात कर रही थी, क्योंकि उसने कहा कि नुवाब द्वारा उसे अगवा किए जाने के बाद से वे उसे बिछड़ने जैसा समझ रहे थे। उसे इस बात का ज़रा भी

एहसास नहीं था कि उनके कब्ज़े में आते ही वह मुझसे अलग हो जाएगी। मैंने ठान लिया कि उनके पास जाने से पहले मैं अपने सारे डर उसके सामने रख दूँगी, क्योंकि मुझे पूरा विश्वास था कि मेरे प्रति उसका स्नेह ही उसके आचरण का सबसे अच्छा मार्गदर्शक होगा।

हमारे मकान मालिक, जो एक व्यापारी थे, बहुत ही विनम्र और हमारी ज़रूरतों के प्रति सजग थे। हालाँकि उनकी विनम्रता का एक बड़ा कारण यह भी था कि वे जानना चाहते थे कि हम कौन हैं और हमारा उद्देश्य क्या है। मैंने उन्हें संक्षेप में अपनी पुरानी कहानी सुनाई - मेरे पिता एक व्यापारी थे और मैं एक ऐसा सैनिक था जो नौकरी की तलाश में उनके साथ आया था। अब वे यह जानने के लिए उत्सुक थे कि मेरे पिता किस तरह का व्यापार करते थे; लेकिन हमने इस विषय पर पूरी तरह से चुप्पी साधे रखी, हालाँकि उन्होंने हमारे सामान को बेचने का प्रस्ताव भी दिया।

बाद में मेरे पिता ने मुझसे कहा, 'मुझे पता है कि हमारा सामान कीमती है, लेकिन उसकी कीमत का मुझे पता नहीं है; हमने अभी तक गठ्ठियाँ खोली भी नहीं हैं; हम कल सुबह खोलेंगे और उन्हें छाँटेंगे: फिर हम शहर में साहूकारों की दुकानों पर जाएँगे और उनसे मिलती-जुलती वस्तुओं के बारे में पूछताछ करेंगे, उनकी कीमतें पता करेंगे और इस तरह अपने सामान की कीमत का अनुमान लगा सकेंगे। अगर हम बाजार मूल्य जाने बिना उन्हें बेचेंगे, तो हम पर शक किया जा सकता है; और भले ही हमें उनकी वास्तविक कीमत न मिले, लेकिन हम निश्चित रूप से सारा सामान अच्छी कीमत पर बेच सकेंगे।'

मैं उनसे पूरी तरह सहमत था, और अगली सुबह हम गांठें खोलने के काम में जुट गए।

उनके पास वाकई कीमती सामान था—ब्रॉकेड, सोने का कपड़ा, सोने और चांदी के डिज़ाइन वाले बढ़िया मलमल के स्कार्फ, सादे मलमल और कुछ शॉल, इनके अलावा पहनने के लिए कई तरह के बढ़िया कपड़े और रेशम और टिशू बॉर्डर वाली साड़ियाँ, ये सभी नागपुर के करघों पर बनी थीं। जब हमने इन सभी और हमारे पास मौजूद गहनों को सजाकर रखा, तो वे इतने आकर्षक लग रहे थे कि हम कुछ देर तक उनकी भव्यता को निहारते रहे; और जब मैंने सारे सामान का हिसाब-किताब कर लिया, तो मेरे पिता और मैं, सुंदर कपड़े पहनकर और अपने सबसे अच्छे घोड़ों पर सवार होकर, कुछ आदमियों के साथ शहर की ओर चल पड़े।

एक पुराने लेकिन विशाल पुल को पार करते हुए, जिसके नीचे नदी बह रही थी, जो अब एक उथली धारा बन चुकी थी, हम उसके शीर्ष पर बने द्वार से अंदर गए और रास्ता पूछते हुए सीधे चौक या बाज़ार पहुँच गए, जहाँ हमें उम्मीद थी कि हमें अपने सामान के समान सामान बिक्री के लिए मिल जाएगा। गलियाँ संकरी और गंदी थीं, और शहर का भीतरी भाग निश्चित रूप से हमारी बाहरी और दूर से दिखाई देने वाली छवि से बनी अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरा; फिर भी, हाथियों की संख्या में उसकी समृद्धि के स्पष्ट संकेत थे, जिनकी पीठ पर, छतरियों वाले तंबूओं में, रईस या सज्जन अपने सशस्त्र सेवकों के साथ बैठे थे। सजे-धजे लोगों की भीड़ सड़कों पर जुलूस निकाल रही थी, और चूंकि मोहरम का त्योहार अभी शुरू ही हुआ था, इसलिए 'हसन! हुसैन! दूला! दीन! दीन!' और हमारे परिचित हजारों अन्य नारे चारों ओर गूंज रहे थे।

हम भीड़ में से जैसे-तैसे अपना रास्ता बनाते हुए आगे बढ़े, और हमारे सहायकों को अक्सर हमारे लिए रास्ता बनाना पड़ता था, जिससे वे भीड़ के उपहास और गालियों का शिकार बन जाते थे, क्योंकि लोग उन्हें उनके पहनावे और भाषा से अजनबी समझ लेते थे। एक-दो बार मैंने देखा कि हमारे आदमियों द्वारा धक्का-मुक्की या धकेले जाने पर किसी सम्मानित व्यक्ति ने अपनी तलवार पर हाथ रख लिया था, और मैंने किसी के मुंह से दबी हुई धमकी सुनी; लेकिन हम किसी तरह आगे बढ़ते रहे, और अंत में एक चौड़ी सड़क पर पहुँचे, जहाँ भीड़ कम थी; और यहाँ वह भव्य इमारत, चार मीनार, अचानक हमारी नज़रों के सामने आ गई।

'कितना भव्य!' मैंने अपने घोड़े को रोककर और बादलों को चीरती हुई प्रतीत होने वाली विशाल मीनारों की ओर देखते हुए कहा; 'केवल इसे देखने के लिए ही दिल्ली से यात्रा करना सार्थक है।'

मीनारें इमारत के चारों कोनों का निर्माण करती थीं, और उनसे विशाल मेहराबें निकलती थीं जो छत को सहारा देती थीं, जिसके ऊपर एक छोटी मस्जिद बनी हुई थी। देखने में यह पूरी इमारत का भारी भार सहन करने में सक्षम नहीं लगती थी, फिर भी यह सदियों से खड़ी थी और इसकी संरचना अक्षुण्ण थी।

मेरे पिता ने मेरी निगाहें रोकते हुए कहा, 'यह नमाज़ का समय है; और सुनो! मक्का की मस्जिद से मुअज़्ज़िन अज़ान दे रहा है; हम अब वहीं चलेंगे और उसके बाद अपना काम निपटाएंगे।'

मैंने उसका पीछा किया, और चार मीनार के पास से गुजरते हुए, हम अपनी दाहिनी ओर एक गली में मुड़े, और मस्जिद के द्वार पर अपने घोड़ों को रोक दिया।

जैसे ही हम प्रांगण में दाखिल हुए और ऊंचे रास्ते से होते हुए अंदर जाने वाली सीढ़ियों की तलहटी तक पहुंचे, मेरे मन में विस्मय और प्रशंसा का मिलाजुला भाव उमड़ आया। हमारे दोनों ओर राजकुमारों और रईसों की कब्रें थीं, जिनमें से कई भव्य और नक्काशीदार थीं; लेकिन इमारत ने ही मेरी सारी प्रशंसा बटोर ली। पांच ऊंचे और चौड़े मेहराब इमारत के अंदरूनी हिस्से का दृश्य दिखाते थे, जहां गहराई में उतने ही मेहराब दिखाई देते थे; और जहां मेहराब मिलते थे, वहां अनगिनत बिंदुओं और अलंकरणों को देखकर आंखें चकित रह जाती थीं, जो एक दूसरे में समाते हुए एक उत्कृष्ट डिजाइन और कारीगरी वाली छत को पूरा करते थे। इसकी सुंदरता में चार चांद लगाने वाली बात यह थी कि पूरी इमारत पत्थर की बनी थी, जिसे सावधानीपूर्वक चिकना किया गया था, जबकि चार मीनार और मैंने अब तक जो अन्य इमारतें देखी थीं, वे प्लास्टर की थीं।

लेकिन मेरे पास ज्यादा देर तक देखने का समय नहीं था; मुअज़्ज़िन की मधुर और उदास अज़ान समाप्त हो चुकी थी, और दोपहर की नमाज़ के लिए आए कुछ ही लोग अपनी चटाइयाँ बिछाकर नमाज़ पढ़ने लगे थे। हम भी उनके साथ शामिल हो गए, और अपनी फैली हुई कमरबंदों पर घुटने टेककर नमाज़ की रस्में अदा कीं, जबकि सभी की दुआओं की धीमी आवाज़ छत तक पहुँचकर दृश्य की गंभीरता को और बढ़ा रही थी। वहाँ मौजूद अधिकांश लोगों के लिए शायद इसमें कुछ भी नया या असामान्य नहीं था; लेकिन मैं, जो अपनी यात्रा और अपने पेशे से जुड़े खतरों से बच निकला था, ने महसूस किया कि यह बात मेरे दिल को छू गई; और एक हत्यारा होते हुए भी, हालांकि मैं अभी तक निर्दयी नहीं हुआ था, मैं कोमल हो गया, और प्रार्थना के शब्दों और पवित्र कुरान की प्रभावशाली भाषा को दोहराते हुए मेरी आँखों से तेजी से आंसू बहने लगे।

समारोह समाप्त होने पर हम उठे; और यद्यपि मैं पवित्र भवन में कुछ देर रुककर इसकी सुंदरता को और अधिक निहारने के लिए उत्सुक था, मेरे पिता ने मुझे जल्दी से वहां से ले गए, और हम चार मीनार लौट आए।
मेरे पिता ने कहा, 'यहाँ हमें वो चालाक बदमाश मिल जाएँगे। वे हमें ठगने की कोशिश करेंगे, इसमें कोई शक नहीं, क्योंकि यही उनका धंधा है; लेकिन चूंकि हम खरीदार नहीं हैं, इसलिए हम उनकी मदद से उन व्यापारियों के घर पता कर सकते हैं जो हमारे सामान का व्यापार करते हैं, और हो सकता है कि जिसे हम चुनें वह समझदार हो और हमारी संपत्ति बेचने में हमारी मदद करे।'
इमारत पर पहुँचकर हम रुक गए। इमारत का निचला हिस्सा जर्जर झोपड़ियों और दुकानों से बुरी तरह जर्जर हो चुका था, जहाँ सब्ज़ी और मिठाई बेचने वाले बैठे राहगीरों को अपना सामान बेच रहे थे। मेरे पिता ने एक सभ्य दिखने वाले, समझदार चेहरे वाले युवक को पुकारा और उससे पूछा कि वह किसी दुल्ला से कहाँ मिल सकता है, क्योंकि वह शहर में अजनबी था और कुछ कपड़े और अन्य सामान देखना चाहता था, जो उसे नहीं पता था कि कहाँ मिलेंगे।
'मैं आपकी सेवा में तत्पर हूं, महोदय,' उसने उत्तर दिया; 'मैं सबसे समृद्ध गोदामों को भली-भांति जानता हूं और आपको किसी भी गोदाम तक ले जा सकता हूं; और,' उसने आगे कहा, 'शहर में ऐसा कोई साहूकार या व्यापारी नहीं है जो आपके गरीब सेवक, मोहनो दास की संयम और विश्वसनीयता की सिफारिश न करे।'
मेरे पिता ने कहा, 'जब तक आपके अच्छे गुण साबित न हो जाएं, तब तक उनके बारे में ज्यादा न बोलो; इन मामलों में तुम्हारे कबीले की प्रतिष्ठा अच्छी नहीं है।'
'आह,' उस आदमी ने कहा, 'मेरे स्वामी को भली-भांति पता है कि (अफ़सोस, मुझे यह कहना पड़ रहा है!) हमारे कबीले के अधिकांश लोग कितने दयनीय हैं; फिर भी, उनका दास उनके जैसा नहीं होगा, क्योंकि ईमानदारी से ही उसने ऐसा व्यवहार करना उचित नहीं समझा।'
मैंने कहा, 'इसका मतलब यह है कि अगर आपके हित में हो तो आप बेईमानी भी कर सकते हैं, लेकिन चलिए, दिन तेजी से बीत रहा है, और हम अंधेरा होने से पहले इस भीड़ से बाहर निकलना चाहते हैं।'
उस व्यक्ति ने मुझे एक समझदारी भरी नज़र से देखा और कंधे उचका दिए, जिसका मतलब साफ था: मैंने जो कहा था उससे उसे यह साबित हो गया था कि हम सतर्क थे।
उन्होंने कहा, 'आप किस प्रकार की वस्तुओं की तलाश में हैं? कश्मीरी शॉल और बनारस के ब्रोकेड से लेकर सबसे साधारण वस्तु तक, सब कुछ उपलब्ध कराया जा सकता है।'
मैंने कहा, 'हमें बनारस के कपड़े चाहिए; कुछ सुंदर रूमाल और दुपुत्ते, और एक-दो पगड़ी, ताकि हम मंत्री के दरबार के लिए खुद को सजा सकें।'
दुल्लाल ने अपनी शॉल कमर पर कसते हुए कहा, 'तुम उन्हें देख लोगे। अब मेरे पीछे आओ और मुझ पर नज़र रखना, कहीं भीड़ में खो न जाओ।' इतना कहकर वह इमारत की सीढ़ियों से नीचे उतरा और हमें कुछ मुख्य गलियों से होते हुए एक सुनसान गली में ले गया, जहाँ वह एक ऐसे घर के दरवाजे पर रुका, जिसका बाहरी रूप देखने में कुछ भी खास नहीं लग रहा था।

मैंने अपने पिता से कहा, 'अगर हमने खुद व्यापारी को खोजने की कोशिश की होती, तो हमें बहुत ही निराशाजनक खोज करनी पड़ती। अच्छा हुआ कि हम इस आदमी को अपने साथ ले गए।'
मेरे पिता ने उत्तर दिया, 'मैंने सुना है कि ये व्यापारी सुरक्षा के लिहाज़ से अक्सर इन एकांत स्थानों को चुनते हैं। इस तरह के अराजक इलाके में अन्य शहरों की तरह सामान खुले में बेचना ठीक नहीं है। लेकिन ये व्यापारी जाने-माने हैं और अगर अजनबी हमारी तरह यहाँ के बेवकूफों से संपर्क करें तो उन्हें आसानी से पता चल जाता है।'
हमें घर के अंदर ले जाया गया, जहाँ एक बड़े मोटे आदमी ने हमारा स्वागत किया, जो बिल्कुल उसी साहूकार जैसा दिखता था जिसे मैंने मारा था। समानता देखकर मैं अनैच्छिक रूप से चौंक गया; लेकिन जल्द ही संभलकर और उसकी विनम्रता से आश्वस्त होकर, मैं बैठ गया, मेरे पिता भी बैठ गए, और हम जल्दी ही अपने आने के उद्देश्य पर चर्चा करने लगे।
एक-एक करके गठ्ठियाँ खोली गईं और उनके अंदर की सामग्री हमारे सामने फैला दी गई। साहूकार का भंडार अथाह और बहुमूल्य प्रतीत हो रहा था। हमने कई वस्तुएँ चुनीं और जाँची गई वस्तुओं की कीमतें पता कीं, जिनका मैंने नोट बना लिया। हमने उनसे कहा कि वे उन्हें हमारे लिए रख लें और अगले दिन भुगतान करने के लिए आएँगे। साहूकार ने हमें उन्हें साथ ले जाने के लिए ज़ोर दिया और दुल्लाल ने हमारे लिए ज़मानत देने की पेशकश की; लेकिन स्पष्ट कारणों से हमने मना कर दिया और व्यापारी से विदा ली।
दुल्लल हमारे साथ चार मीनार तक आया, जहाँ मेरे पिता ने उसकी मेहनत के लिए उसके हाथों में एक सिक्का थमाते हुए उसे बताया कि अब हमें घर का रास्ता पता चल गया है, और उसे सुबह जल्दी कारवां में आकर रुगोनाथ दास साहूकर के घर के बारे में पूछताछ करने के लिए कहा, जहाँ उसे हमारे बारे में खबर मिल जाएगी।
मेरे पिता ने कहा, 'अभी तक तो मैं संतुष्ट हूँ; जैसा कि आपने देखा होगा, हमारा सामान गुणवत्ता में उन सामानों के बराबर है जो हमने देखे थे, और उन पर लगी कीमतों से हमें अच्छी खासी रकम मिलने का संकेत मिलता है, बशर्ते हम उन्हें बेच सकें, जो कि मुझे उचित प्रबंधन करने पर कोई कठिनाई का विषय नहीं लगता।'
अगली सुबह दुलाल आया।
'क्या तुम छुपकर रह सकते हो?' मेरे पिता ने तुरंत पूछा और उसे दो रुपये फेंक दिए। वह चौंक गया और कांपने लगा।
'अगर मेरे स्वामी की यही इच्छा है,' उसने डर से लगभग दांत किटकिटाते हुए कहा, 'तो मैं कर सकता हूँ; लेकिन मैं एक गरीब आदमी हूँ, एक बहुत ही सीधा-सादा आदमी। मैं अपने स्वामी का गुलाम हूँ, और उनके पैरों पर अपनी नाक रगड़ता हूँ,' अंत में वह लगभग ज़मीन पर गिर पड़ा और अपना माथा ज़मीन पर रगड़ने लगा, क्योंकि उसने देखा कि मेरे पिता का माथा सिकुड़ रहा है और उनके चेहरे पर हमारे प्रति स्पष्ट संदेह देखकर क्रोध के भाव आ रहे हैं।

'अरे!' मेरे पिता चिल्लाए, जब वह आदमी ज़मीन पर पड़ा सिसक रहा था, 'ये क्या है? तू कितना कायर है? उठ जा! क्योंकि एक आदमी, इंशाल्लाह! जो कोई बड़ा आदमी है, तुझसे पूछता है कि क्या तू गुप्त रह सकता है, तो क्या तुझे यह सोचना ही चाहिए कि तेरा गला काट दिया जाएगा?'
'इस बारे में बात मत करो,' उस बेचारे ने आंखें बंद करते हुए और कांपते हुए कहा। 'मैं एक गरीब आदमी और एक दयनीय हिंदू हूं; मेरा गला काटकर मेरे स्वामी को क्या मिलेगा?'
'नहीं,' मेरे पिता ने कहा, 'यह बर्दाश्त से परे है; इस आदमी में एक मक्खी जितनी भी आत्मा नहीं है। इसे सड़क पर निकाल दो और चप्पल से इसके मुंह पर मारो: इसके आसपास बहुत सारे मूर्ख मिल जाएंगे।'
'क्षमा कीजिए, महोदय!' उस व्यक्ति ने कहा—अपने पेशे का जिक्र सुनकर उसे लगा कि उसे अपने काम के सिलसिले में बुलाया जा रहा है—'मेरी मूर्खता के लिए क्षमा कीजिए। मेरे स्वामी के धमकी भरे चेहरे ने मेरा जिगर पानी कर दिया था; लेकिन अब जब वे फिर से मुस्कुरा रहे हैं, तो मुझे यकीन है कि उनका कोई बुरा इरादा नहीं है।'
'तुम्हें कोई नुकसान नहीं होना चाहिए,' मेरे पिता ने कहा; 'लेकिन चूंकि तुम तर्क सुनने के इच्छुक हो, तो बैठ जाओ और सुनो कि हमें तुमसे क्या कहना है।'
'मैं गुप्त रह सकता हूँ,' दुलाल चिल्लाया; 'मेरे स्वामी को बोलने दीजिए।'
मेरे पिता ने उसे फिर से गंभीर दृष्टि से देखते हुए कहा, 'अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो तुम्हारा बुरा हाल होगा। लेकिन सुनो। मैं एक व्यापारी हूँ; मैं पहले कभी इस शहर में नहीं आया हूँ; लेकिन दिल्ली में सुना था कि कल हमने जो कीमती सामान देखा था, वैसा सामान यहाँ अच्छा बिकेगा, इसलिए मैं एक सामान अपने साथ ले आया हूँ। मुझे यहाँ के विक्रय मूल्यों का पता नहीं था, इसलिए मैंने तुम्हें कुछ सामान दिखाने के लिए कहा, ताकि मैं अपने सामान की बिक्री को नियंत्रित कर सकूँ। अब, क्या तुम मेरे लिए यह कर सकते हो?'
'ज़रूर, ज़रूर,' उस व्यक्ति ने प्रसन्नता से कहा, 'इससे आसान कुछ नहीं है। मेरे स्वामी बिक्री पर मिलने वाले मेरे विशेषाधिकारों को तो भूलेंगे नहीं?'
मेरे पिता ने कहा, 'तुम्हें हर सौ रुपये की संपत्ति के निपटान पर पांच रुपये मिलेंगे; क्या इससे तुम संतुष्ट हो जाओगे?'
'यह एक शाही प्रस्ताव है, और मेरे स्वामी की उदारता के योग्य है,' दुलाल ने कहा। 'क्या मुझे सामान देखने की अनुमति दी जा सकती है?'
'यह आवश्यक है कि आप इन्हें देखें, और ये रहे,' मेरे पिता ने उत्तर दिया; और उन्होंने उस कमरे का दरवाजा खोला जहाँ वे रखे थे, और एक-एक करके गठ्ठों में रखी वस्तुओं को दिखाया।
'यह वास्तव में एक समृद्ध भंडार है,' दुलाल ने कहा: 'आप अधिकांश कपड़े बेच तो सकते हैं, लेकिन मुझे संदेह है कि क्या आप यहां कुछ समय तक रहने का इरादा रखे बिना पूरा सामान बेच पाएंगे।'
मेरे पिता ने कहा, 'यह उन परिस्थितियों पर निर्भर करता है जिन पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं है; यदि मैं इन्हें यहाँ नहीं बेच पाता, तो जो बचेगा उसे पूना ले जाऊँगा।'

'ठीक है,' उस व्यक्ति ने कहा, 'यदि मुझे अनुमति दी जाए, तो मैं यहाँ मौजूद सभी चीजों का विवरण तैयार कर लूंगा और कल तक आपको बता दूंगा कि क्या किया जा सकता है। मैं इससे पहले ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि मुझे सभी डीलरों से मिलना होगा।'
मेरे पिता ने कहा, 'जो तुम्हें ठीक लगे वही करो, और ये लो तुम्हारे खर्चे के लिए दस रुपये। अब जाओ, और कल इसी समय फिर मिलना।'
उस व्यक्ति ने कई बार सलाम किया और विदा ली।
मेरे पिता ने कहा, 'क्या तुमने कभी इतना दयनीय नीच व्यक्ति देखा है? मैं दो कौड़ियों के लिए उसे वहीं गला घोंटकर मार डालता, ताकि ऐसे शर्मनाक कायर का अंत कर सकूँ।'
मैंने कहा, 'उसे जाने दो; वह तो बस एक हिंदू है, और उसके बारे में सोचने लायक भी नहीं है। लेकिन क्या तुम उसे वादा किए गए सारे पैसे देकर नहीं छोड़ोगे?'
'बिल्कुल नहीं,' मेरे पिता ने उत्तर दिया; 'मुझे लगता है कि आप समझ गए होंगे कि क्या करना है?'
मैंने कहा, 'बिल्कुल; उसे मेरे भरोसे छोड़ दो।'
मैं ज़ोरा के पास गया, मेरी प्यारी ज़ोरा के पास। वह अपने रिश्तेदारों से मिलने की बहुत बातें कर रही थी, और हालाँकि जब से हम आए थे, मैंने उसे टालने की पूरी कोशिश की थी, लेकिन मुझे चिंता होने लगी कि अब उसे रोकने का मेरे पास कोई बहाना नहीं बचा था। मैं उसके साथ भाग सकता था—मुझे लगता है कि मैं भाग सकता था। उसके लिए मेरा प्यार इतना गहरा था कि अगर मुझमें भागने की बात कहने का साहस होता और वह मेरे साथ चलने को तैयार हो जाती, तो मुझे पूरा विश्वास है कि मैं अपने पिता, साथियों और पेशे को छोड़कर संसार के प्रति समर्पित हो जाता।
ठग ने सोचते हुए कहा, "अगर मैंने ऐसा किया होता, तो क्या मेरी हालत अब से भी बदतर होती? क्या मुझे कभी ये शर्मनाक बेड़ियाँ पहननी पड़तीं? क्या मैं कभी खुद को हमेशा के लिए कैद और ऐसी जिंदगी जीने के लिए मजबूर करता, जिसे मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि खत्म कर दूँ, और खत्म हो जाना चाहिए, लेकिन मुझे (और इसके लिए मैं खुद को कोसता हूँ) एक नीच, कायरतापूर्ण, जीवन-मरण का कष्ट सहना पड़ रहा है! साहब, मैं आपको बताता हूँ कि मेरे लिए अच्छा होता अगर मैं तब भाग जाता,—अपराध और जुर्म से भाग जाता, जिसमें मैं रोज़ाना और गहरा डूबता जा रहा था। अपने सिपाही जैसे कद-काठी, अपने कौशल, और शस्त्र चलाने की कला से मैं सम्मानजनक सेवा प्राप्त कर सकता था; मैं सेनाओं का नेतृत्व कर सकता था, या किसी युद्ध के मैदान में एक सिपाही की मौत मर सकता था! लेकिन ऐसा लिखा नहीं था; यह मेरा भाग्य नहीं था, और मैं जो हूँ सो हूँ—खुद के लिए और उन सभी के लिए अभिशाप हूँ जिनसे मैं कभी जुड़ा रहा हूँ।"
ज़ोरा! उसे मेरी चिंता की कोई परवाह नहीं थी; अब उसकी एकमात्र आशा और चिंता अपनी माँ और बहन से मिलना थी। उसने मुझसे बार-बार विनती की कि मैं उसे भेज दूँ, और मुझे विश्वास दिलाया कि वह ज़्यादा देर तक दूर नहीं रहेगी, बल्कि उन्हें ज़रूर जाना होगा—वे उसे देखकर बहुत प्रसन्न होंगी और मुझे उसके

उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करेंगी। उनसे मिलने के बाद वह मेरे पास लौट आएगी, और हम फिर कभी अलग नहीं होंगे।
'अफ़सोस!' मैंने कहा, 'मेरी ज़ोरा, तुम जानती नहीं कि तुम क्या पूछ रही हो। क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हारी माँ और बहन के लिए तुम्हारा ये आकर्षण कोई मायने नहीं रखता? तुमने मुझसे स्वीकार किया है कि तुम अपने से जुड़ी हर किसी से कहीं ज़्यादा सुंदर और आकर्षक हो। तुम्हारी अनुपस्थिति में वे गुमनामी में डूब जाएँगी, और वे तुम्हारे लौटने का स्वागत और अधिक धन और प्रतिष्ठा के संकेत के रूप में करेंगी।'
'नहीं, ये तो कठोर शब्द हैं, मेरे प्रिय,' उसने उत्तर दिया; 'तुम भली-भांति जानते हो कि मैंने तुम्हें कभी धोखा नहीं दिया, और यह बात उतनी ही सत्य है जितनी कि मेरी आत्मा सदा के लिए तुम्हारी है। इसलिए मुझे जाने दो, मैं तुमसे विनती करती हूँ, और कुछ ही घंटों में मैं फिर तुम्हारे साथ होऊंगी, और तुम्हारे पवित्र हृदय से लग जाऊंगी।'
'ऐसा ही हो,' मैंने उदास होकर कहा, क्योंकि हालांकि मैं ऐसा सोचने की हिम्मत भी नहीं कर पा रही थी, मुझे ऐसा लग रहा था मानो यह हमारा हमेशा के लिए बिछड़ना हो। 'तो जाओ; और अगर तुम वापस नहीं लौटी, तो मैं शाम तक तुम्हारे पास आ जाऊंगी।'
एक ढकी हुई ज़नाना गाड़ी आसानी से किराए पर मिल गई, और चालक को यह पूरी तरह से समझ आ गया कि वह कहाँ जाना चाहती है, इसलिए वह अपने पुराने नौकर के साथ खुशी-खुशी उसमें बैठ गई, और मेरे दो आदमियों को अपने साथ लेकर वह मुझे छोड़कर चली गई।
वे जल्द ही लौट आए, लेकिन उन्हें कुछ भी पता नहीं था सिवाय इसके कि जब उसके रिश्तेदारों ने उसे देखा तो घर में बहुत खुशी का माहौल था। शाम होते-होते मैं अपनी बेचैनी पर काबू नहीं रख सका, और उनमें से एक को अपने साथ लेकर घोड़े पर सवार होकर उसके घर की ओर चल पड़ा।
यह लगभग एक फव्वारे के सामने स्थित था, जो चार मीनार के नीचे वाली सड़क के बीचोंबीच है, और मैं एक दिन पहले वहाँ से गुज़री थी। मुझे आसानी से अंदर जाने दिया गया; और ओह! जब मैं कमरे में दाखिल हुई, जहाँ ज़ोरा, उसकी बहन और माँ बैठी थीं, तो कितनी खुशी का ठिकाना नहीं रहा! 'वह आ गया!' मेरी प्यारी बच्ची चिल्लाई और मेरी बाहों में दौड़ पड़ी। उसने मुझे एक पल के लिए अपने सीने से लगा लिया, और फिर मुझे खुद से अलग करते हुए बोली, 'देखो, माँ!' 'उसे देखो; क्या वह वैसा नहीं है जैसा मैंने कहा था; क्या वह उतना ही सुंदर और बहादुर नहीं है?'
वह बुजुर्ग महिला मेरे पास आई और मेरे चेहरे पर हाथ फेरते हुए, अपनी उंगलियों के हर जोड़ को चटकाने लगी। उसने अपनी हथेलियों के पिछले हिस्से को अपनी कनपटी पर दबाया और इस दौरान उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे। उसने ऐसा तब तक किया जब तक कोई जोड़ चटकाने लायक नहीं था; फिर उसने मुझे अपनी बाहों में भर लिया और गले लगा लिया, और साथ ही साथ एक बच्चे की तरह रोने लगी।
मुझे लगा कि बहन ने मेरा स्वागत कुछ ठंडेपन से किया। अगर मैं कम आकर्षक होता, तो शायद वह अधिक सौहार्दपूर्ण होती; ऐसा लगता था कि उसे ज़ोरा का इतना आकर्षक प्रेमी पसंद नहीं था।

जब बूढ़ी औरत को बोलने की हिम्मत मिली, तो वह बोली, 'पैगंबर और बारह इमामों का आशीर्वाद आप पर और आपकी आने वाली पीढ़ियों पर बना रहे! कृपालु आलिया आपको अपनी सुरक्षा में रखें, और लेडी मुरियम और पवित्र मौला-अली आपको आशीर्वाद दें! आपने एक उजाड़ घर को फिर से भर दिया है, और हमारे आँसुओं को खुशी में बदल दिया है। मैं और क्या कहूँ? जब एक गाड़ी दरवाजे पर रुकी, तो किसने सोचा होगा कि यह हमारी ज़ोरा है? ज़ेनतबी तो बस यही कह रही थी कि वह नीच सुकीना है, जो सांत्वना देने आई है, जबकि असल में वह हमारी बदकिस्मती पर खुश हो रही थी, जिसने उसे बेजोड़ बना दिया था; और मैं जो भी कह रही थी—कि तभी हमें हैरानी भरी एक धीमी सी चीख सुनाई दी, और हलचल मच गई, और हम समझ नहीं पा रहे थे कि क्या सोचें; तभी हमारी खोई हुई ज़ोरा, हमारा मोती, हमारा हीरा, अंदर आ गई; और तब मुझे लगा कि मेरा बूढ़ा दिल खुशी से टूट जाएगा, क्योंकि मेरा जिगर पिघल गया था; और तब से, मीर साहब, मैंने कुछ नहीं किया, बस उसके सामने बैठी रही, उसके चेहरे को अपने हाथों से सहलाती रही, उसकी आँखों में देखती रही, ताकि मुझे यकीन हो जाए कि मैं गलत नहीं हूँ। इंशाल्लाह! कल मैं शहर के हर दरगाह पर पाँच रुपये भेजूँगी और इमाम ज़मीन के नाम पर पचास भिखारियों को मिठाई बाँटूँगी; इसके अलावा, मैं तज़िया बनवाऊँगी और ये मातम के कपड़े नहीं पहनूँगी। आह! मीर साहब, अगर आपको पता होता कि मैं दिन-रात कैसे बैठी रही और रोती रही, यहाँ तक कि मेरी हालत इतनी खराब हो गई कि मैं अपनी परछाई मात्र रह गई! मेरे सभी दोस्तों ने मुझे सांत्वना देने की कोशिश की, लेकिन व्यर्थ, मुझे कोई तसल्ली नहीं मिली।' और इस याद से उसकी आँखों से फिर से आँसू बहने लगे।

दुःख शुरू होने से पहले वह बुढ़िया कैसी थी, यह मैं नहीं कह सकता; लेकिन अपनी वर्तमान दयनीय हालत में वह अब तक देखी गई सबसे मोटी औरत लग रही थी। वह चल नहीं पा रही थी; हिलने-डुलने पर करवटें बदलती थी और अपने पैर ऐसे उठाती थी जैसे भीड़ में हाथी उठाता हो। उसे तंग पतलून में देखना कष्टदायक था; उसके हर हिलने-डुलने पर, खासकर बैठने पर, ऐसा लगता था जैसे पतलून फट जाएगी और मांस का एक टुकड़ा बाहर निकल आएगा जो अपनी कैद के खिलाफ विद्रोह कर रहा हो। उसे पेटीकोट पहनना चाहिए था; लेकिन नहीं, बुढ़िया को अपनी शान-शौकत पर गर्व था और वह अब भी अपने अंगों की सुंदरता पर गर्व करती थी, जिसके बारे में मैंने बाद में सुना कि जवानी में वे वास्तव में बेहद सुडौल थे।

हम शाम ढलने तक बातें करते और अपने कारनामों को एक-दूसरे को सुनाते रहे, और फिर मैंने प्रार्थना के लिए अपनी चटाई बिछा ली।

'अहा, वह तो अच्छा सिख है,' बूढ़ी औरत ने कहा; 'मुझे युवाओं को भक्तिभाव में मग्न देखना अच्छा लगता है; लेकिन हिंदुस्तान के कुलीन वंश में हमेशा से ऐसा ही होता आया है।'

मैं जाने की तैयारी कर ही रहा था कि सबने एक साथ विरोध किया। 'क्या! हमारे साथ रोटी और पानी पिए बिना ही हमारा घर छोड़ रहे हो?' यह सोचना भी असंभव था—मुझे रुकना ही था: खाना तैयार था; जब मैं आया, तब वे मुझे बुलाने ही वाले थे, और सबसे बड़ी बात यह थी कि मुहर्रम का नौवां दिन था, और मुझे रुकना ही था, कम से कम नल साहिब की शोभायात्रा देखने के लिए। वह पवित्र अवशेष, उस घोड़े का एक जूता जिस

पर सवार होकर पैगंबर मोहम्मद मदीना भागे थे, भव्य शोभायात्रा में ले जाया जाएगा, और मुझे फिर कभी ऐसा नज़ारा देखने का मौका नहीं मिलेगा। इन कारणों और ज़ोरा की बार-बार की विनती भरी निगाहों ने मुझे तुरंत फैसला लेने पर मजबूर कर दिया; इसलिए मैंने अपने घोड़े और उस आदमी को विदा किया, अपने पिता को यह संदेश देकर कि मैं वापस नहीं लौटूँगा, और खुद को उस रात के आनंद में डूबा दिया, जिसकी मैंने सुबह ज़ोरा से विदा लेते समय कल्पना भी नहीं की थी।

खाना बहुत बढ़िया था, और बुढ़िया का खाना बेमिसाल था। तरह-तरह की करी थीं, हर छोटी प्याली में बस एक-एक निवाला, लेकिन फिर भी इतनी कि मुँह में एक अनोखा स्वाद रह जाए, जिसे एक और लाजवाब पुलाव और मिठाई से और भी बेहतर बना दिया जाए—कई तरह के पुलाव और मिठाइयाँ—और सबसे बढ़कर, काफिरों की स्वादिष्ट शराब जिसे फ्रांसी कहते हैं, जिसे बुढ़िया ने शराब नहीं बल्कि शरबत बताया और खुद हुज़ूर सिकंदर यहोवा को भी पीने की इजाज़त दी। वाकई बहुत स्वादिष्ट थी और मन को प्रसन्न कर दिया। आखिर में, एक-दो कश लेने के बाद, उन्होंने हुक्का का मुखपत्र बड़े ध्यान से पोंछा और मुझे अपना हुक्का दिया, जिसकी खुशबू अंबरग्रीस या कस्तूरी से भी कहीं बढ़कर थी। मैं जैसे जन्नत में पहुँच गया था! मैं बेहद खुश था!

ज़ोरा ने मुझसे कहा, 'तुमने मुझे गाते हुए सुना है, जब मैं कैद में थी, और सफ़र की थकान के बाद अपने छोटे से तंबू में, जहाँ मेरी आवाज़ के लिए कोई जगह नहीं थी; अब मेरा दिल खुशी से झूम रहा है, और तुम मुझे फिर से गाते हुए सुनोगे— पैगंबर मुझे मोहरम के दौरान गाने के लिए माफ़ करें!—और तुम बताओगे कि तुम्हें कौन सा सबसे अच्छा लगा; मेरी बहन मेरे थकने तक मेरा साथ देगी, और फिर मैं उसका साथ दूंगी।'

एक सरिंगी लाई गई; ज़ीनत ने उसे सुर में लगाया और धनुष लेकर एक छोटी सी धुन बजाई। यह मेरे द्वारा सुनी गई सबसे मंत्रमुग्ध कर देने वाली ध्वनियों में से एक थी। ज़ोरा ने अपने सभी पिछले प्रयासों को पीछे छोड़ दिया था, उसे सुनना बेहद आनंददायक था; और उसकी बहन, जो वाद्य यंत्र की पूर्ण निपुणता रखती थी (एक महिला के लिए यह एक विचित्र बात थी), ने उसमें मधुरता और भाव का पूरा बल भर दिया। आप जानते हैं, साहब, यह मानव आवाज से कितनी मिलती-जुलती है; और अब, जैसे-जैसे संगत और गीत एक साथ ऊपर-नीचे होते गए, ऐसा प्रतीत हुआ मानो दो सबसे मधुर और परिपूर्ण आवाजें ऐसी धुनें बिखेर रही हों जिन्हें सुनने के लिए मानो स्वर्गदूत आकाश से उतरे हों।

लेकिन अंत में बाहर ढोल-नगाड़ों और चिल्लाने का शोर इतना बढ़ गया कि दोनों ने हताशा में हार मान ली। 'उन सब पर विपत्ति आए,' उसने कहा; 'और मैं इतनी ऊँची आवाज़ में गा रही थी कि मैं तुम्हारे लिए पूरी रात गा सकती थी! और क्या मैंने अच्छा गाया है?'

'हाँ, क्या सच में?' मैंने कहा; 'लेकिन मुझे लगता है कि तुमने जो पहला गाना मुझे सुनाया था, उमरखेर के महल में, वह मेरी याद में किसी भी दूसरे गाने से ज़्यादा समय तक बसा रहेगा जो मैंने उसके बाद सुना है।'

'या आलिया!' ज़ेनत खिड़की के पास आकर बोली; 'क्या कभी ऐसा शानदार नज़ारा देखा है! आओ और देखो; यह पल भर में बीत रहा है, और जल्द ही नज़रों से ओझल हो जाएगा।'

पहले खंड का अंत

खंड II

अध्याय पंद्रह

इसमें बताया गया है कि अमीर अली मोहरम की नौवीं रात कैसे बिताता है और कैसे वह अपनी प्रेमिका को खो देता है।

ज़ेनत की चीख सुनकर हम खिड़की की ओर खिंचे चले गए। 'जल्दी करो!' उसने कहा; 'बाहर देखो, वरना नज़रें हट जाएँगी; वे अभी-अभी चार मीनार के पास से गुज़र रहे हैं।'

हमने बाहर देखा, और नज़ारा सचमुच भव्य था। सैकड़ों लोगों की भीड़ हमारे धर्म के पवित्र प्रतीक, पुंजाह को जुलूस में ले जा रही थी; उनमें से अधिकांश सशस्त्र थे, और उनके नंगे हथियार ऊँचे बांसों पर रखी अनगिनत मशालों की रोशनी में चमक रहे थे; कुछ अन्य लोगों ने चांदी और सोने की झालरों से बने आफताबगीर धारण किए हुए थे, जिन पर झालरें लगी थीं, जो उन्हें ले जाने वालों के हिलने-डुलने से जगमगा रही थीं। लेकिन सबसे आकर्षक वस्तु स्वयं चार मीनार थी, जिसके नीचे से जुलूस गुजरा; मशालों की रोशनी ने उसे ऊपर से नीचे तक रोशन कर दिया, और मेरी निगाहें उस पर टिक गईं, मानो वह अचानक और आश्चर्यजनक रूप से अस्तित्व में आ गई हो।

जुलूस आगे बढ़ गया, और चारों ओर एक बार फिर उदासी छा गई: चार मीनार अब दिखाई नहीं दे रही थी, क्योंकि वह रोशनी से चकाचौंध हो गई थी; लेकिन जैसे-जैसे अंधेरा उसे सामान्य लगने लगा, इमारत धीरे-धीरे धुंधली और छायादार दिखने लगी, उसकी विशाल सफेद सतह किसी प्रेत जैसी लग रही थी, या मैं कल्पना कर सकता था कि वह हवा में रहने वाले उन रहस्यमय प्राणियों में से एक है, जिनके बारे में कहा जाता है कि सुलेमान-इब्न-दाऊद और अन्य विद्वानों ने उन्हें अपने अधीन रखा था और इस प्रकार उनका वर्णन करने में सक्षम थे। फिर, जब हम देख रहे थे, एक और जुलूस गुजरा, और बिजली की तरह अचानक एक चमक ने वही प्रभाव पैदा किया; इमारत का आंतरिक और बाहरी भाग दोपहर के समय से भी अधिक चमकीला लग रहा था।

मैं भावविभोर हो गया था। ज़ीनत हमें अकेला छोड़कर चली गई थी, और हम बैठे थे, मेरी बांह मेरी प्रेमिका के चारों ओर थी, जबकि वह मेरे करीब सिमटकर बैठी थी, और हम एक-दूसरे से प्यार के उन वचनों को फुसफुसा रहे थे जिन्हें केवल हमारे जैसे दिल ही गढ़ सकते हैं और बोल सकते हैं।

हम काफी देर तक इसी तरह बैठे रहे—साहब, पता नहीं कितनी देर—घंटे पल भर में बीत गए।

'देखो!' ज़ोरा चिल्लाई, 'नीचे सड़क पर उस विशाल जनसमूह को देखो; वे अब मशालें जला रहे हैं, और नल साहिब का जुलूस जल्द ही निकलने वाला है।'

मैंने इसे देखा तो नहीं था, हालांकि मुझे आवाजों की गूंज सुनाई दे रही थी; गली के अंधेरे के कारण अब तक मैं कुछ भी स्पष्ट रूप से नहीं देख पा रहा था; लेकिन जैसे-जैसे एक के बाद एक मशालें जलाई गईं और विशाल खंभों पर उठाई गईं, लोगों का विशाल जनसमूह प्रकट हुआ। हजारों लोग थे। गली इतनी भरी हुई थी कि

हिलना-डुलना असंभव था; भीड़ इतनी सटी हुई थी कि हम बेसब्री से उस समय का इंतजार कर रहे थे जब यह भीड़ शहर का चक्कर लगाने के लिए आगे बढ़ेगी।

एक-एक करके वे जुलूस जो हमने अपने सामने से गुजरते हुए देखे थे, आगे कतार में लग गए, और जैसे ही वे एक साथ मिले, हजारों मशालों, हजारों आफताबगीरों, हर तरह के झंडों और पताकाओं, सैकड़ों सजे-धजे हाथियों, जिनकी पीठ पर उनके कुलीन स्वामी, सबसे कीमती वस्त्रों में सजे हुए, अपने सशस्त्र सेवकों और भालाधारियों के साथ, कुछ स्थिर, कुछ इधर-उधर घूमते हुए, मानव जाति के विशाल जनसमूह के बीच सवार थे, के प्रभाव की भव्यता का वर्णन कौन कर सकता है!

मैंने एक हाथी पर विशेष ध्यान दिया—एक भव्य जानवर, जिस पर एक बड़ा चांदी का तंबू था, जिसमें चार लड़के बैठे थे, निस्संदेह किसी रईस के बेटे, क्योंकि उनके चारों ओर बहुत सारे सेवक थे। जानवर स्पष्ट रूप से बहुत उत्तेजित था, चाहे शोर, रोशनी और भीड़ के कारण हो या फिर किसी कारण से, मैं कह नहीं सकता; लेकिन महावत को उसे शांत रखने में बड़ी कठिनाई हो रही थी, और वह अक्सर अपने अंकूस को जानवर के सिर में ज़ोर से गाड़ देता था, जिससे वह अपनी सूंड हवा में उठाकर दर्द से दहाड़ता था। मैंने देखा कि महावत क्रोधित था, और पास के कुछ लोगों के इशारों से मैं समझ गया कि वे उसे शांत रहने की सलाह दे रहे थे; लेकिन जानवर और भी बेचैन हो गया, और मुझे डर था कि कोई दुर्घटना हो जाएगी, क्योंकि महावत उसे और भी कठोर दंड दे रहा था। अंत में, किसी दुर्भाग्यपूर्ण संयोग से, मशाल का जलता हुआ हिस्सा उस डंडे से गिर गया जिस पर वह हाथी की पीठ पर टंगी थी; वह अचानक दर्द से चीख उठा, और अपनी सूंड उठाकर भीड़ में घुस गया।

या आलिया, क्या भयानक मंजर था! सैकड़ों लोग व्यर्थ ही रास्ते से हटने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन वे और भी करीब आ गए; चीख-पुकार से हवा गूंज रही थी; लेकिन सबसे भयानक दृश्य तब था, जब पागल जानवर भीड़ में से रास्ता न बना पाने के कारण एक बेचारे को अपनी सूंड से कमर से पकड़ लिया, उसे हवा में उछालकर जमीन पर पटक दिया, और फिर घुटनों के बल बैठकर अपने दांतों से उसे कुचलकर ममी बना दिया। मैंने अनजाने में ही अपना सिर दूसरी तरफ मोड़ लिया; वह दृश्य इतना घिनौना था कि मेरे ठीक नीचे ही हो रहा था।

जब मैंने दोबारा देखा, तो वह दरिंदा, जाहिरा तौर पर संतुष्ट होकर, चुपचाप खड़ा था, और तुरंत बाद उसे भगा दिया गया; उस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति के शरीर को ले जाकर पास की एक दुकान में रख दिया गया; और फिर सब कुछ शांत हो गया।

अचानक भीड़ 'हसन! हुसैन! दीन! दीन!' के ज़ोरदार नारों से गूंज उठी, जिसकी कर्कश गर्जना विशाल नगाड़ों की थाप में घुलमिल गई। आवाज़ इतनी तेज़ थी कि कान बहरे हो रहे थे, फिर भी बेहद प्रभावशाली थी। भीड़ उत्तेजित हो गई; हर चेहरा उस द्वार की ओर मुड़ गया जहाँ से पवित्र अवशेष प्रकट होने वाला था, और एक पल में ही वह हज़ारों नीली रोशनी की अचानक चमक के बीच प्रकट हुआ। मैंने अपनी नज़र चार मीनार पर डाली। अगर मशाल की रोशनी में वह इतना चमकीला दिख रहा था, तो अब कितना अधिक चमक रहा होगा!

हल्की गंधक जैसी चमक से उसकी सफेद सतह चांदी की तरह जगमगा रही थी; हवा में ऊँचाई पर स्थित सफेद मीनारें तीव्र चमक से दमक रही थीं; और, जैसे ही यह आकाश के गहरे नीले रंग के बीच उभरा, यह मानो जिन्न की अचानक रचना प्रतीत हुआ - इतना भव्य, इतना अलौकिक - जबकि अनगिनत मशालें, आतिशबाजी की असाधारण चमक से दबकर, अपने धुएं के माध्यम से एक धुंधली और भयावह रोशनी बिखेर रही थीं, जो हवा का एक झोंका भी न होने के कारण उन पर छाया हुआ था।

अचानक चार मीनार की चोटी से अनगिनत रॉकेटों की बौछार हुई, जो आसमान में फुफकारते हुए ऊपर उठे और मीनारों की चोटियों से कहीं अधिक ऊँचाई पर लगभग एक साथ फट गए, और चमकीले नीले गोलों की बौछार के रूप में नीचे गिरे। एक पल के लिए सन्नाटा छा गया, क्योंकि हर किसी की निगाहें उनके गिरने को देखने के लिए ऊपर की ओर उठ गईं, क्योंकि इसका प्रभाव बेहद प्रभावशाली था। लेकिन फिर से शोर मच उठा, भीड़ अशांत समुद्र की लहरों की तरह इधर-उधर हिलने लगी; हर कोई चार मीनार की ओर मुड़ गया, और कुछ ही क्षणों में जीवंत जनसमूह गतिमान हो उठा।

पहले तो यह धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी, लेकिन पीछे से इतना दबाव था कि आगे वालों को दौड़ना पड़ा; हालाँकि, धीरे-धीरे यह विशाल लहर एक अधिक संयमित गति से बहने लगी और अंतहीन प्रतीत होने लगी। एक के बाद एक दल संकरी गली से गुज़रते रहे; सभी देशों के लोग, जिनमें से अधिकांश के पास मशाल की रोशनी में चमकते हुए नंगे हथियार थे, पंक्तियों में खड़े होकर धर्म के नारे लगा रहे थे; कुछ लोग पाखंडी वेश में धन्य शहीदों की मृत्यु के उन्मादी भजन गा रहे थे; कुछ अन्य अजीबोगरीब पोशाकों में समूहों में संगठित होकर, चलने के बजाय दौड़ते हुए, विचित्र और भद्दे करतब दिखा रहे थे; कुछ सिर से पैर तक विभिन्न रंगों से रंगे हुए थे; कुछ ने अपने टखनों, कंधों और कोहनियों पर घंटियाँ लटका रखी थीं, जो चलते या नाचते समय बजती थीं; कहीं-कहीं एक आदमी बाघ की तरह रंगा हुआ दिखाई देता था, जिसकी कमर के चारों ओर एक रस्सी बंधी होती थी, जिसे तीन या चार अन्य लोग पकड़े होते थे, जबकि बाघ भीड़ में बेतहाशा छलांगें और हमले कर रहा होता था, जिसका आनंद लोग जयजयकार के साथ उठा रहे थे।

कुछ लोग भेड़ों की खाल पहने हुए थे, भालुओं की नकल कर रहे थे; कुछ बंदरों की तरह विशाल पूंछों के साथ खड़े थे और अपने चारों ओर मौजूद भीड़ पर हंसते और गुर्राते हुए उन्हें चिढ़ा रहे थे। कभी-कभी कोई रईस अपने हाथी से नीचे भीड़ पर पैसे या कौड़ी बरसाता था; और नीचे खड़े लोगों की खुद को बचाने के लिए मची अफरा-तफरी और हताश कोशिशों को देखना भयावह होने के साथ-साथ मनोरंजक भी था, जिनमें से कई लोगों को गंभीर चोटें भी आई थीं। अरबों के समूह अपने जोशीले युद्धगीत गाते हुए, हवा में बंदूकें चलाते हुए और अपनी नंगी तलवारें और जुम्बिया लहराते हुए भीड़ में शामिल हो गए और पवित्र अवशेष के ठीक आगे चल पड़े, जो अंत में प्रकट हुआ।

इसे सोने के कपड़े के तकिये पर रखा गया था, जो चांदी के कपड़े की एक छोटी चंदवा से ढका हुआ था; चंदवा और उसके गहरे चांदी के झालर अनगिनत मशालों की रोशनी में चमक रहे थे। लंबे वस्त्र पहने मूला धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए मूनकिब और मुरसियास गा रहे थे। लोग मोर की पूंछ के पंखों से बनी विशाल चौरी

लहरा रहे थे, चंदवा के चबूतरे पर धूप जल रही थी, जिससे सुगंधित धुएं का बादल उठ रहा था, और जो भी किसी भी तरह से तकिये के पास पहुँच सकता था, वह मुट्ठी भर मीठे उबीर उस पर बरसा रहा था।
धीरे-धीरे सब कुछ बीतता चला गया: इसकी भव्यता का वर्णन कौन कर सकता है? ऐसा दृश्य देखकर ही उसका अनुभव किया जा सकता है! मैं कहता हूँ, अनुभव करके, साहब, क्योंकि एक पवित्र उद्देश्य के लिए एक हृदय, एक आत्मा से एकत्रित इतने विशाल जनसमूह को बिना भाव-भंगिमा के कौन देख सकता है? हम घंटों वहाँ बैठे उस दृश्य को निहारते रहे; हम मुश्किल से ही कुछ बोले, नीचे के दृश्य में हम इतने मग्न थे।
अंततः सब कुछ बीत गया, और गली सुनसान और अंधेरे में डूब गई: इधर-उधर से गुजरते हुए कुछ लोग, मनुष्यों से अधिक श्मशान की बेचैन आत्माओं की तरह लग रहे थे, और सन्नाटा कभी-कभार ही टूटता था जब कोई अकेला फकीर अपनी घंटियों की झंकार के साथ उस विशाल जुलूस में शामिल होने के लिए तेजी से आगे बढ़ता था, जिसकी गर्जना दूर से धीमी-धीमी सुनाई दे रही थी।
जैसे ही हम पीछे हटने वाले थे, कुछ लोग एक गड्ढे के चारों ओर घेरा बनाकर खड़े हो गए, जिसमें कुछ जलते हुए अंगारे थे; तभी उन पर घास के कुछ गट्ठे फेंके गए—आग और तेज़ हो गई—और अपनी तलवारें निकालकर वे आग के चारों ओर नाचने लगे, अपने हथियार लहराते हुए, और सभी कर्कश आवाज़ में शहीदों के नाम ज़ोर-ज़ोर से जप रहे थे। बीच में जलती हुई आग ने उनके उन्मादी शरीर और हाव-भाव को रोशन कर दिया, जैसे ही वे नाच रहे थे, अपने हाथों को बेतहाशा हवा में उछाल रहे थे। अब वे स्थिर खड़े हो गए, और इधर-उधर झूलने लगे, जबकि आग बुझती जा रही थी और वे लगभग दिखाई नहीं दे रहे थे। फिर से और ईंधन डाला गया, लाल लपटें उनके सिर के ऊपर तक उठ उठीं, और उनका उन्मादी नृत्य नए जोश के साथ फिर से शुरू हो गया।
रात काफी ढल चुकी थी, और चलने वाली ठंडी हवा ने हमें सोने का आगाह कर दिया। दरअसल, ज़ीनत और उसकी माँ तो बहुत पहले ही सो चुकी थीं, और हम अकेले रह गए थे।
साहब! वह आखिरी रात थी जो मैंने अपने प्रियतम के साथ बिताई थी, और हमारा सारा संवाद मेरी स्मृति में एक सुखद सपने की छाप की तरह बसा हुआ है, जिस पर मैं अक्सर मनन करना, बीते वर्षों के दृश्यों और संवादों को याद करना पसंद करता हूँ—उन वर्षों को याद करना जो रोमांच, परीक्षा, दुःख और अपराध से भरे थे।
अगली सुबह जब मैं ज़ोरा से विदा हुआ, तो मैं उसे अपने सामने स्पष्ट रूप से देख सकता हूँ; मैं फिर से उसके अटूट प्रेम के वचन सुन सकता हूँ, उसकी विनती कि मैं जल्द ही उसके पास लौट आऊँ; और सबसे बढ़कर मुझे उसकी असाधारण सुंदरता और उस पीड़ा भरी नज़र याद आती है, जिसके साथ वह मुझे एक लंबे, भावुक आलिंगन के बाद छोड़कर गई थी। ये यादें, मैं कहता हूँ, अभी भी उस मन में बसी हुई हैं जो अपराध, धोखे की आदत और दुनिया के साथ मेरे कठोर व्यवहार - जो मेरा सबसे बड़ा दुश्मन है - के कारण कठोर हो गया है; और ये यादें ताज़गी और सुकून देती हैं, क्योंकि मैंने उसके प्रति कोई अपराध नहीं किया है। मैंने उसे बचाया; वह मुझसे प्यार करती थी, और मैं भी उससे प्यार करता था; हमें बस एक लंबे समय तक साथ रहने

की ज़रूरत थी ताकि हमारा प्यार और मज़बूत हो सके, जो मृत्यु तक कायम रहता। लेकिन मैं इस तरह क्यों बोल रहा हूँ? मैं, एक दोषी अपराधी और हत्यारा, ऐसे दृश्यों और विचारों के वर्णन में क्यों उलझा हुआ हूँ? साहब, मैंने उन्हें भुला दिया है; मैं आपको और भी कठिन बातों के बारे में बताऊंगा—अपने जीवन के आगे के रोमांचों के बारे में।

मैं अपने पिता के पास लौटा: वे मेरी अनुपस्थिति से नाराज़ नहीं थे, और मैंने देखा कि मोहन दास, जो एक मंदबुद्धि व्यक्ति था, उनके साथ एक कमरे में बैठा था, और एक और साहूकार जैसा दिखने वाला व्यक्ति भी था। मोहन दास बेहद सफल रहा था: मैंने जिस साहूकार को देखा, वह एक धनी घर में सहायक था जिसे हमारे सभी सामानों की आवश्यकता थी, और वह सौदा अंतिम होने से पहले उन्हें देखने आया था। उसे सामान और गहने दोनों दिखाए गए; उसने सब कुछ पसंद किया, कहा कि वह जल्द ही उनके लिए एक प्रस्ताव लेकर लौटेगा, और सभी सामानों की सूची बनाकर चला गया। 'अब,' मोहन दास ने कहा, 'कीमत के बारे में; तुम क्या मांग रहे हो?' 'तुम मुझसे बेहतर जानते हो,' मेरे पिता ने कहा, 'इसलिए तुम बोलो, और याद रखो, जितना अधिक में वे बेचेंगे, उतना ही अधिक तुम्हें मिलेगा।'

'मैं आपकी उदारता को भूला नहीं हूँ,' दुलाल ने कहा, 'और मैं तुरंत कहता हूँ कि वस्त्रों की कीमत सोलह हजार रुपये है और गहनों की कीमत दस हजार रुपये है; लेकिन आपको तीस हजार रुपये माँगने होंगे, मुझे पूरा विश्वास है कि आपको पच्चीस हजार रुपये ही मिलेंगे।'

मेरे पिता ने कहा, 'यह बहुत कम है; लगभग इतनी ही रकम तो मुझे इन पर खर्च करनी पड़ी; और अगर मुझे कोई लाभ नहीं हुआ तो मैं अपने पहरेदारों का वेतन कैसे चुकाऊँगा? मैं पूरे के लिए पैंतीस माँगूँगा।' दुलाल ने कहा, 'ठीक है, अगर आप ऐसा करते हैं, तो मेरे लिए और भी अच्छा है; लेकिन मेरी बात ध्यान से सुनिए, आपको मेरी तय कीमत से ज़्यादा नहीं मिलेगा; हालाँकि, अगर आप मुझ पर भरोसा करेंगे और इसे मेरे विवेक पर छोड़ देंगे, तो मुझे उचित कीमत मिल जाएगी।'

'मैं करूँगा, लेकिन याद रखना, पच्चीस हज़ार तो कम से कम है।' 'ज़रूर,' दुलाल ने कहा; 'मैं आपका आदेश मानने जाता हूँ।' 'जाओ,' मेरे पिता ने कहा; 'अलिया हाफ़िज़! जल्दी लौट आना।' वह दोपहर तक लौटा, लेकिन जब लौटा तो उसके चेहरे पर खुशी थी।

कई बार अभिवादन करने के बाद, उन्होंने मेरे पिता से कहा: 'आप सचमुच भाग्यशाली हैं; आपके अच्छे भाग्य ने आपको अच्छा सौदा दिलाया है। मुझे पूरे सौदे के लिए तीस हजार छह सौ रुपये मिले हैं; इस पर हमारी लंबी बहस हुई और बहुत कुछ व्यर्थ गया; लेकिन, नारायण की कृपा हो! आपका दास सफल रहा: देखिए, यह साहूकार की स्वीकृति है।'

मेरे पिता ने वह कागज़ लिया और पढ़ने का नाटक किया; मैं उनकी गंभीरता देखकर लगभग हंस ही पड़ा, क्योंकि उन्होंने कागज़ लेकर टेढ़े-मेढ़े हिंदी अक्षरों को ध्यान से पढ़ना शुरू कर दिया, जिनमें से उन्हें एक भी अक्षर समझ नहीं आ रहा था, बल्कि कोई और भी नहीं; क्योंकि वे न तो पढ़ सकते थे और न ही लिख सकते थे। 'जी हां,' उन्होंने गंभीरता से कहा, 'यह संतोषजनक है; अब मुझे भुगतान कैसे मिलेगा?' 'सहौकर आपके

लिए भुगतान की व्यवस्था कर देगा, जैसा आप चाहें,' दुल्लाल ने कहा: 'नकदी या नोट, दोनों ही आपके लिए उपलब्ध हैं; लेकिन चूंकि सभी लेन-देन आम तौर पर छह महीने के क्रेडिट पर होते हैं, इसलिए उस अवधि का ब्याज सामान्य दर से काटा जाएगा।'
और अगर मैं बिल लेता हूँ, तो मुझे लगता है कि बनारस पहुँचने तक या जहाँ भी मैं उन्हें लेता हूँ, वहाँ तक ब्याज की अनुमति दी जाएगी?
'निश्चित रूप से।'
'अच्छा,' मेरे पिता ने आगे कहा; 'तुम साहूकार के साथ यहीं रहो, हम इस बारे में सब कुछ तय कर लेंगे, और वह जब चाहे सामान ले जा सकता है।'
इस प्रकार डुलाल वहां से चले गए।
अब वह समय आ गया था जब ताज़ियाओं को नदी के किनारे लाकर पानी में फेंका जाना था, और चूंकि कारवां उस स्थान से ज्यादा दूर नहीं था, इसलिए मैंने अपने पिता से प्रस्ताव रखा कि हम अपने घोड़े मंगवाएं और उस दृश्य को देखने के लिए वहां जाएं।
वह मान गया, घोड़े तुरंत लाए गए, और हम उस पुल तक गए जहाँ से सड़क शहर में प्रवेश करती है। पुल पर खड़े होकर हमने नीचे नदी के तल में विभिन्न और रंग-बिरंगे समूहों को देखा; हजारों लोग एकत्रित थे; नदी के किनारे और तल भरे हुए थे, इतने भरे हुए थे कि ऐसा लग रहा था मानो आप भीड़ के सिर पर चल रहे हों। दोपहर की धूप में विभिन्न ताज़ियाओं के आफताब-गीर और झिलमिलाते हुए आभूषण चमक रहे थे, पोशाकों के अनगिनत रंगों का प्रभाव मन को प्रसन्न और आनंदमय बना रहा था, और यद्यपि यह रात के जुलूस की भव्यता के सामने कुछ भी नहीं था, फिर भी देखने लायक था। ताज़ियाओं को एक-एक करके, उनके संबंधित कबीलों या मोहल्लों द्वारा लाया गया और नदी के तल में बने तालाबों में फेंक दिया गया, क्योंकि वहाँ गहरा पानी नहीं था; लेकिन उद्देश्य के लिए पर्याप्त सामग्री थी, और जैसे ही प्रत्येक चमकदार कपड़े को डाला गया, उस पर सैकड़ों छोटे-छोटे फटेहाल बच्चे टूट पड़े, जिन्होंने गहनों के लिए जल्दी से पूरे कपड़े को टुकड़ों में फाड़ दिया; और इन बचे हुए टुकड़ों पर कई बार जोरदार संघर्ष और हाथापाई हुई, जिससे आसपास खड़े लोगों को हंसी आ गई।
एक-एक करके सभी समूह थके-हारे अपने घरों की ओर लौट रहे थे; क्योंकि कई दिनों और रातों से उन्हें जगाए रखने वाला उत्साह अब समाप्त हो चुका था। कई छायादार कोनों में थका-हारा कोई व्यक्ति गहरी नींद में सोता हुआ दिखाई दे रहा था—उसके कीमती वस्त्र अभी भी उसके शरीर पर लटके हुए थे—शायद उसकी आखिरी कौड़ी भुंग की भारी खुराक में खर्च हो गई थी, जिसने पिछली रात उसे लगभग पागलपन की हद तक उत्तेजित कर दिया था, जिससे उसका दिमाग बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था और अंततः वह अपनी थकान और भूख को भूलकर बेसुध हो गया था।
मुहर्रम समाप्त हो गया: हम शाम की नमाज़ के समय तक पुल पर ही रुके रहे, फिर पास की एक मस्जिद में जाकर वहाँ जमा हुए अन्य नमाज़ियों के साथ नमाज़ अदा की। इसके बाद मैंने अपने पिता से कहा कि मैं ज़ोरा

से मिलने जाऊँगा और संभवतः पूरी रात उसके घर पर ही रहूँगा। उन्होंने मुझे काम के चलते सुबह जल्दी लौटने के लिए कहा; और यह वादा करके मैं वहाँ से चला गया।

मैं अब शांत और लगभग सुनसान सड़कों से धीरे-धीरे आगे बढ़ा: जिन कुछ लोगों से मेरी मुलाकात हुई, वे अपने-अपने घरों की ओर जल्दी-जल्दी जा रहे थे, और उनमें पहले जैसी कोई आत्मीयता या रुचि नहीं थी। मैं अब जाने-पहचाने रास्ते पर चलता रहा, और जल्द ही उस घर के पास पहुँच गया जहाँ धरती पर मेरी सबसे प्रिय चीज़ें थीं। मैंने अपना नाम पुकारा और घोड़े से उतर गया; मुझे हमेशा की तरह बुलावे की उम्मीद थी, और यह कि खिड़की से वह चेहरा मेरा स्वागत करता हुआ दिखाई देगा जिसे देखने के लिए मैं तरस रहा था। मैं अपने मन में समझ से परे देर तक इंतजार करता रहा; आखिरकार मेरा सेवक लौटा, और जैसे ही वह दहलीज से बाहर निकला, उसके पीछे दरवाजा अचानक बंद हो गया, और उसी समय खिड़कियों के दोनों फ्रेम भी बंद हो गए। मैं इसके बारे में क्या सोचता? हाय! मेरी आशंकाएँ बिल्कुल सही निकलीं। मेरे सेवक ने मुझसे बात करके मेरे विचारों को भंग कर दिया।

उसने कहा, 'उसकी माँ, जिनसे मैं मिला हूँ, ने मुझे आपको उनका सलाम देने के लिए कहा और बताया कि उनकी बेटी विशेष रूप से व्यस्त है और आपसे मिल नहीं सकती। मैंने विरोध करने का साहस किया, लेकिन बुढ़िया क्रोधित हो गईं और मुझसे कहा कि उन्होंने आपके साथ शालीनता से व्यवहार किया है और आप इससे अधिक की अपेक्षा नहीं कर सकते; और आगे उन्होंने कहा, "मेरी ओर से उसे बता देना कि वह एक समझदार व्यक्ति की तरह व्यवहार करे और ज़ोरा को भूल जाए, क्योंकि वह उसे फिर कभी नहीं देख पाएगा; उसका उसे खोजना व्यर्थ होगा, क्योंकि वह उसकी पहुँच से बाहर होगी; और मैं तो यह बेहतर समझूँगी कि वह मर जाए, बजाय इसके कि वह उसके जैसे एक साहसी व्यक्ति की साथी बने, जो, जहाँ तक मुझे पता है, उसे घर से बहला-फुसलाकर ले जाए और जब वह उससे ऊब जाए, तो उसे किसी जंगल में भूखा मरने के लिए छोड़ दे। जाओ और उसे यह बताओ और कहो कि यदि वह समझदार है तो वह उसे भूल जाएगा।"

'बस इतना ही?' मैं क्रोध से चिल्लाया; 'क्या उस बुढ़िया ने बस इतना ही कहा? मैं देखता हूँ कि क्या मैं अंदर जा सकता हूँ;' और मैं पूरी ताकत से दरवाजे की ओर दौड़ा। मैंने उसे धक्का दिया और अपनी तलवार की मूठ से उस पर प्रहार किया, वह अंदर से इतना मज़बूती से बंद था कि खुलने का नाम ही नहीं ले रहा था। मैंने ज़ोरा का नाम पुकारा—मैं बड़बड़ाया—मैंने पूरी ताकत से धमकी दी कि मैं दरवाजे पर ही खुद को मार डालूँगा, और मेरा खून उस निर्दयी बुढ़िया के सिर पर होगा। सब व्यर्थ था, एक कुंडी भी नहीं हिली, एक शटर भी नहीं हिला, और मैं घोर निराशा में बैठ गया। कुछ लोग मेरे उग्र व्यवहार को देखकर इकट्ठा हो गए थे; और जब मैंने अपने घुटनों से, जहाँ मेरा चेहरा छिपा हुआ था, ऊपर देखा, तो उनमें से एक ने कहा, 'बेचारा युवक! यह दुख की बात है कि उसकी प्रेमिका निर्दयी है और उसे अंदर नहीं आने दे रही है।'

'छी!' दूसरे ने कहा, 'वह तो भुंग के नशे में चूर है; आलिया जानती है कि उसके इतने करीब रहकर हम सुरक्षित हैं या नहीं!—उसके हाथों में हथियार हैं; हमें उसके रास्ते से हट जाना चाहिए: नशे में धुत लोगों से निपटना बहुत मुश्किल होता है, और तो और वे धर्म के लिए कलंक का कारण भी बन रहे हैं।'

मुझे शर्म आ रही थी; शर्म ने पहली बार क्रोध पर विजय प्राप्त की। मैं अपने घोड़े की ओर बढ़ा और उस पर सवार होकर धीरे-धीरे उस स्थान से चला गया। सब कुछ कितना वीरान लग रहा था! पिछली रात मैं आनंद की चरम सीमा पर था। मैंने खिड़की की ओर एक नज़र डाली जहाँ मैं उस स्त्री के साथ मधुर बातें कर रहा था जिसे अब मैं कभी नहीं देख पाऊंगा; मैंने उसके शब्दों पर विचार किया और वह जगमगाता दृश्य फिर से मेरे सामने आ गया। अब सब कुछ अंधेरा और शांत था, और मेरी भावनाओं के अनुरूप था। मैं इसी मनोदशा में घर लौटा और अपने कालीन पर लेटकर अपनी भावनाओं की कड़वाहट और व्यर्थ पछतावे में डूब गया। उस रात मैं सो नहीं पाया, इसलिए ज़ोरा के ठीक होने के लिए मेरे मन में हज़ारों योजनाएँ घूमती रहीं। एक-एक करके मैंने उन्हें व्यर्थ आशाओं से धोखा समझकर खारिज कर दिया, और उनकी जगह उतनी ही अस्पष्ट और असंतोषजनक योजनाएँ आ गईं। मैं सुबह बुखार और थकावट से उठा, और कुछ भी तय नहीं कर पाया था। केवल एक ही आशा थी, उस बूढ़ी नर्स की; अगर मैं उससे बात कर पाता, तो मुझे लगा कि मैं कुछ कर सकता हूँ, और जैसे ही मैं ज़ोरा की सेवा करने वाले लोगों में से एक को बुला सका, मैंने उसे जानकारी लेने के लिए भेज दिया।

अध्याय सोलह

भूद्रिनाथ अपने कारनामों का वर्णन करता है। दुल्लल को अंततः यह जानकर खेद होता है कि सौदा करना अक्सर आसान होता है, लेकिन तोड़ना उतना ही आसान।

मैंने कुछ दिनों से भूद्रिनाथ को नहीं देखा था, और मुझे डर था कि कहीं वह मुझे लापरवाह न समझे, इसलिए मैं उस सराय में गया जहाँ वह और उसके साथी ठहरे हुए थे।

'आह!' मुझे पास आते देख वह चिल्लाया, 'आखिरकार हमें आपके चेहरे की रोशनी देखने का मौका मिला; भवानी के नाम पर, आप कहाँ थे? मैं पिछले तीन दिनों से आपको व्यर्थ ही खोज रहा था।'

मैंने कहा, 'मुझे बताओ कि तुम क्या कर रहे थे, और उसके बाद तुम्हें मेरे कारनामों के बारे में पता चल जाएगा।'

'तो फिर,' उसने कहा, 'पहली बात तो यह है कि मैंने इस सबसे बड़े मुस्लिम शहर के आसपास के विभिन्न मंदिरों में कई पूजा-अर्चना और बलिदान किए हैं; दूसरी बात, मैंने मोहरम को देखा है और उसमें भाग लिया है; और अंत में, मैंने सात लोगों की हत्या में सहायता की है।'

'सात लोगों को मार डाला!' मैंने आश्चर्य से कहा, 'पैगंबर के नाम पर, तुमने यह कैसे किया?'

“इससे आसान कुछ नहीं, मेरे नौजवान जमादार,” उसने जवाब दिया: “क्या तुम नहीं जानते कि यह कारवां है, जहाँ रोज़ाना बड़ी संख्या में यात्री आते हैं और उतनी ही तेज़ी से दूसरे लोग जाते हैं? उन्हें बहला-फुसलाकर थोड़ी दूर तक अपने साथ ले जाना बहुत आसान है, बस यह बहाना बना लें कि हम एक ही रास्ते पर जा रहे हैं: भला कोई ठग यहाँ हमेशा के लिए रह सकता है और अच्छी कमाई कर सकता है। यहाँ के लोग (उन पर मेरी कृपा हो!) बहुत भोले हैं; और हुनूमान और उसकी सेना की बदौलत शहर में चट्टानों और ऊबड़-खाबड़ रास्तों की कोई कमी नहीं है, जो उन्हें नष्ट करने के भरपूर अवसर प्रदान करते हैं।”

'अजैब!' मैंने विस्मय से कहा, 'यह तो बहुत ही अद्भुत है; और वे कौन थे?'

'ज़रा भी असाधारण नहीं,' भुद्रिनाथ ने शांत भाव से कहा, 'अगर आप इस पर विचार करें तो; लेकिन आपके प्रश्न का उत्तर देने के लिए। पहला व्यक्ति बुनेआ था जो बीदर जा रहा था; हम उसे गोलकोंडा ले गए और कब्रों के बीच दफना दिया, और उससे हमें सत्तर रुपये और कुछ सोने के सिक्के मिले। दूसरे दो पुरुष और उनकी पत्नियाँ थीं, जिन्होंने कहा कि वे कूरुंगुल जा रहे थे: वह कहाँ है, यह भुगवान जानता है! लेकिन वह दक्षिण दिशा में कहीं है। हमने उन्हें शहर से लगभग तीन क्रॉस दूर, कुछ चट्टानों के बीच मार डाला और वहीं छोड़ दिया।'

मैंने कहा, 'यह गलत था, तुम्हें उन्हें दफना देना चाहिए था।'

'बिल्कुल गलत नहीं, मेरे दोस्त; कौन उनकी छानबीन करने की जहमत उठाएगा? इसके अलावा, हमारे पास समय नहीं था, क्योंकि दिन पूरी तरह से निकल चुका था, और हमें यात्रियों से व्यवधान का डर था; हमें दो सौ रुपये से अधिक और दो टट्टू मिले, जिन्हें मैंने तीस रुपये में बेच दिया।'

मैंने कहा, 'अच्छा, ये पाँच हो गए; और बाकी दो...'
'वे वहीं पड़े हैं,' भूद्रिनाथ ने उस जगह की ओर इशारा करते हुए कहा जहाँ एक घोड़ा बंधा हुआ था; 'वे बेचारे थे, और उन्हें बाहर निकालने की कोई ज़रूरत नहीं थी; हमें दोनों से केवल बयालीस रुपये ही मिले।'
मैंने कहा, 'यह खतरनाक काम था; तुम्हें कोई देख सकता था।'
'अरे! मुझ जैसे अनुभवी व्यक्ति से किसी को कोई डर नहीं था; सब लोग तमाशा देखने शहर चले गए और हम अकेले रह गए। मैं सोच रहा था कि क्या हमें उसी रास्ते से उनके साथ जाना चाहिए जिससे हम आए थे और जिस रास्ते से वे जा रहे थे; लेकिन सुरफुराज खान ने एक आदमी का गला घोंटकर मेरी शंकाओं और अनिश्चितताओं को दूर कर दिया और मैंने भी दूसरे का गला घोंट दिया; शवों को रात तक छिपाकर रखा गया और फिर दफना दिया गया।'
'लेकिन क्या कब्र के फटने का कोई डर नहीं है?' मैंने पूछा।
वह हँसा। 'डर! अरे नहीं, वे काफी गहरे तक छिपे होते हैं; और तुम हमारी पुरानी चालें जानते हो।'
'खैर,' मैंने कहा, 'यह तो बहुत संतोषजनक है, और मैंने इन सब चीजों को खो दिया है, मैं मूर्ख था, और इस चक्कर में मैंने अपनी प्रेमिका को भी खो दिया।'
भूद्रिनाथ बेकाबू होकर हँसा; लेकिन मेरे चेहरे की गंभीरता देखकर उसने कहा,
"कोई बात नहीं, मीर साहब, मेरी हंसी की परवाह मत कीजिए; लेकिन सच में आपके चेहरे पर इतनी उदासी छाई हुई थी कि मैं अपनी जान की कसम खाकर भी खुद को रोक नहीं पाया। हिम्मत रखिए, साहब, आपके लिए बहुत काम है; औरतें बेवफा होंगी, और नौजवान और जल्दबाज़ लड़के उनके लिए दुखी होंगे; लेकिन एक दोस्त की सलाह मानिए, अपने पेशे को ही अपना जीवन बना लीजिए, और कम से कम वो आपको कभी निराश नहीं करेगी।"
मैंने कहा, 'आपकी सलाह अच्छी है; फिर भी, जैसा कि आप जानते हैं, मेरी प्रेमिका का निधन दुखद है और मैं उसे कई दिनों तक याद करूंगा। लेकिन बताइए, आपके पास अभी क्या काम है—क्या ऐसा कुछ है जिसमें मेरी भी हिस्सेदारी हो?'
'नहीं,' उसने उत्तर दिया, 'कुछ नहीं; लेकिन अगर आपकी इच्छा हो, तो हम आज शाम बाजारों में घूमने चलेंगे, शायद हमें कोई मिल जाए।'
'बेशक मैं तुम्हारे साथ रहूंगा, क्योंकि सच तो यह है कि अगर मैं काम की उपेक्षा करूंगा तो मेरा हाथ अभ्यास से बाहर हो जाएगा। लेकिन क्या तुमने मेरे पिता को देखा है?'
'मैंने ऐसा नहीं किया है,' भूद्रिनाथ ने कहा; 'मैंने सुना है कि वह संपत्ति के काम में बहुत व्यस्त हैं, और मैं उन्हें परेशान नहीं करना चाहता।'
'तुम सही कह रहे हो, वो है,' मैंने कहा; 'लेकिन वो आज सारा काम खत्म करके पैसे ले लेगा। मुझे लगता है उसके बाद हम यहाँ ज्यादा देर नहीं रुकेंगे, और मुझे इस बात की परवाह नहीं कि हम कितनी जल्दी रवाना

होते हैं; मैं नए नज़ारों और रोमांच के लिए उत्सुक हूँ, और यहाँ हमें ज्यादा कुछ करने को नहीं मिलेगा। क्या सुरफुराज खान यहाँ नहीं है?'
नहीं; वह सात यात्रियों के एक दल के साथ पुट्टुनचेरू की ओर गया है, और अपने साथ दस या पंद्रह सर्वश्रेष्ठ पुरुषों को ले गया है; वह शायद रात से पहले वापस नहीं आएगा, अगर तब भी लौटा तो।
'वे यात्री कौन थे?'
'मैंने बुन्नियस के बारे में सुना है,' भूद्रिनाथ ने लापरवाही से कहा; 'मैंने उन्हें खुद नहीं देखा, और सुरफुराज खान इतनी जल्दी में था कि वह मुझे कोई जानकारी नहीं दे सका।'
'धिक्कार है मुझ पर!' मैंने अपनी निष्क्रियता पर नाराज़गी जताते हुए कहा; 'इन सब के बीच मैं अपना मनोरंजन करता रहा: पैगंबर की खातिर, जल्दी कुछ करो, ताकि मैं अपने अंतरात्मा से हिसाब चुकता कर सकूं, क्योंकि अपने इस व्यवहार के बाद तो मुझमें तुम्हारे सामने खड़े होने की हिम्मत ही नहीं बची है।'
'अच्छा,' उसने कहा, 'आज शाम को आना; अगर हम किसी को बहला-फुसलाकर नहीं ला सके, तो हम मनोरंजन और अभ्यास के लिए किसी की हत्या कर देंगे।'
'मैं सहमत हूँ,' मैंने कहा; 'अरे आलिया! मुझे कुछ करना ही होगा। मैं ऊँट की तरह उदास हूँ, और मेरा खून, जो कल तक खौल रहा था, अब मानो मेरे शरीर में दौड़ ही नहीं रहा है; यह असहनीय है।'
घर पहुँचकर मैंने देखा कि दुल्लाल आ चुका था, और उसके साथ साहूकार का क्लर्क, सामान ढोने के लिए कुछ कुली, साथ ही बंदूकें और जलती हुई माचिस लिए हुए लोग और तलवारें और ढाल लिए हुए अन्य लोग भी उनकी सुरक्षा के लिए आए थे। मैं उन्हें देखता रह गया।
मैंने कहा, 'सेठजी, ऐसा लगता है जैसे आप युद्ध में जा रहे हों, उन सभी भयंकर योद्धाओं के साथ; मुझे तो उनसे आधा डर लगता है।'
वे लोग हँस पड़े; और क्लर्क ने जवाब दिया,
'ये आवश्यक हैं, और ये हमेशा हमारे पास रहते हैं। अगर हमारा सामान चोरी हो जाए, बल्कि हमारी आँखों के सामने से ले जाया जाए, तो क्या हमें कोई मुआवजा मिलेगा? बिलकुल नहीं: इसलिए हम अपनी संपत्ति की रक्षा यथासंभव सर्वोत्तम तरीके से करते हैं।'
मेरे पिता ने कहा, 'अब अपना सामान लो और चले जाओ; यह अब मेरा नहीं है, और मुझे डर है कि यह मेरे घर में न रहे।'
क्लर्क ने कहा, 'ज़रूर, वे तुरंत आपके रास्ते से हट जाएंगे; और अब चलिए आपके पैसों के बारे में बात करते हैं, या क्या आप इसके बदले कुछ सामान लेना चाहेंगे?'
'बिल्कुल नहीं, बिल्कुल नहीं,' मेरे पिता ने उत्तर दिया; 'मुझे अपना सारा पैसा रुपयों में चाहिए—नहीं, रुकिए, सारा रुपयों में नहीं; मुझे पाँच हज़ार चांदी के सिक्के दीजिए और बाकी सोने में, ले जाना आसान होगा।'

'मेरा अनुमान है कि आपका मतलब पांच हजार रुपये और बाकी सोने की छड़ों से है; ठीक है, आपको वजन के हिसाब से सोना खरीदना होगा, और सबसे अच्छा मूल्य बीस रुपये प्रति तोला है; लेकिन बेहतर होगा कि आप नोट लें, और विनिमय दर अनुकूल है।'
'नहीं, नहीं; नोट नहीं,' मेरे पिता ने कहा, 'सिर्फ सोना; अगर मुझे ठीक से याद है, तो जब मैंने दिल्ली छोड़ी थी तब सोने की कीमत बहुत अधिक थी, और संभवतः आगे भी उतनी ही रहेगी; और अगर लुटेरे मुझ पर हमला करते हैं तो मेरी सुरक्षा के लिए मेरे पास पर्याप्त लोग हैं।'
'तुम मुझे और मेरे प्रतिशत को भूल गए,' दुलाल चिल्लाया।
मैंने कहा, 'चिंता मत कीजिए; यह पाँच हज़ार रुपये में से ही चुकाया जाएगा; मुझे लगता है लगभग पंद्रह सौ रुपये होंगे।' क्लर्क ने पूछा, 'आपने क्या कहा? पंद्रह सौ रुपये! किसे?' मैंने कहा, 'इस दुल्लल को; मुझे शक है कि यह बदमाश हमें धोखा दे रहा है।' 'धोखा! ज़रूर दे रहा है; अरे मोहन दास, साहब, आप क्या कर रहे थे? क्या आप पागल हो गए हैं, इतनी बड़ी रकम माँग रहे हैं?'
'अरे, यह तो मेरे स्वामी का प्रस्ताव और वादा था,' उसने कहा, 'और निश्चित रूप से अब मुझे यह मिल जाएगा; कृपया बताइए कि इसमें आपका क्या लेना-देना है?'
मेरे पिता ने पूछा, 'उसे कितना मिलना चाहिए था?' दूसरे ने जवाब दिया, 'एक प्रतिशत ही काफी है; और अगर तुमने अलग-अलग सहोकरों पर ध्यान दिया होता तो तुम इसे भी बचा सकते थे।'
मैंने कहा, 'हम अजनबी थे और उनके रहने की जगह नहीं जानते थे; इसलिए हमें इस बदमाश की मदद लेनी पड़ी, जिसने अपनी सेवाएं देने की पेशकश की।'
'क्या! क्या तुमने मुझे चार मीनार से नहीं उठाया? क्या तुमने मुझे पाँच प्रतिशत का वादा नहीं किया था और अपने माल की बिक्री के बारे में मुझे गुप्त रखने की शर्त नहीं रखी थी?' दुल्लाल चिल्लाया। 'इसकी बात सुनो,' मेरे पिता ने कहा; 'यह तो पागल हो रहा है। अब, मीर साहब, क्या यह भुर्वा भीख माँगते हुए नौकरी के लिए नहीं आया था, और जब मैंने कहा कि मैं उसे मौका दूँगा और उसकी शर्तें पूछीं, तो उसने कहा कि वह बहुत गरीब है और जो भी दिया जाएगा, वह ले लेगा; क्या ऐसा नहीं था? और अब, पुनाह-ए-खोदा, हमें इस तरह अपमानित किया जाएगा, पंद्रह सौ रुपये ठगे जाएँगे, जबकि हमारे पास देने के लिए उतनी कौड़ियाँ भी नहीं हैं, और ऊपर से हमें गंदगी खानी पड़ेगी। उसके मुँह पर जूता मारो! उस पर थूको! वह इतना अपवित्र हो जाए कि गंगा का जल भी उसे शुद्ध न कर सके! उसकी माँ, बहनें और उसके सभी रिश्तेदार मर जाएँ।'
'नहीं, मेरे प्रिय मित्र,' साहूकार के क्लर्क ने कहा, 'इतने उतावले और उग्र मत बनो, और इस तुच्छ व्यक्ति पर अपनी बातें व्यर्थ मत करो; चूंकि तुमने उसे काम पर रखा है, इसलिए कुछ न कुछ देना तो बनता है, यह रिवाज है, और अगली बार तुम्हें बेहतर समझ होगी; कहो, क्या मैं उसे एक प्रतिशत, यानी तीन सौ छह रुपये दे सकता हूँ?'

'तीन सौ छह रुपये! आलिया, आलिया! आधा पैसा मुझे कहाँ से मिलेगा?' मेरे पिता चिल्लाए, 'पैगंबर की कसम, जितना हो सके मुझे दे दीजिए; मैं आपकी कसम और आँखों की कसम खाता हूँ कि मैं एक गरीब आदमी हूँ, और सिर्फ एक एजेंट हूँ; क्या ऐसा नहीं है, मीर साहब? क्या मैं बेहद गरीब नहीं हूँ?'
मैंने उत्तर दिया, 'आप निश्चित रूप से इतनी बड़ी राशि पर एक प्रतिशत जितना पैसा देने का सामर्थ्य नहीं रखते; फिर भी, जैसा कि ऐसा ही रिवाज प्रतीत होता है, बेहतर होगा कि आप कुछ राशि, जैसे डेढ़ सौ रुपये, दे दें।'
'ज़रूर,' मेरे पिता ने कहा; 'मैं तैयार हूँ; मैं तर्कसंगत रूप से किसी भी बात से इनकार नहीं करूँगा; लेकिन इतनी बड़ी रकम—मैं इस मांग की धृष्टता पर पूरी तरह से चकित हो गया और एक मूर्ख की तरह अपना आपा खो बैठा।'
मोहन दास इस पूरे समय अपनी आंखें और मुंह खोले एक से दूसरे को देखता रहा, बोले गए हर शब्द से उसका आश्चर्य और निराशा बढ़ती जा रही थी।
अंत में वह चीखते हुए बोला, 'क्या तुम यह कहना चाहते हो कि मुझे मेरा पैसा, मेरे पंद्रह सौ रुपये नहीं मिलेंगे, जिसके लिए मैंने दिन-रात मेहनत की है? और क्या तुम यह कहना चाहते हो कि मैं पहले तुम्हारे पास आया था? क्या तुम मुझे चार मीनार से अपने साथ नहीं ले गए थे?'
'नहीं, ये रहा चार मीनार फिर से; आलिया की खातिर,' मैंने क्लर्क से कहा, 'अगर तुम सच में इस आदमी को जानते हो तो उसे चुप रहने की सलाह दो; मैं, जो एक सैनिक हूँ, उसके इस गंदे धंधे से क्या लेना-देना; वो एक धैर्यवान व्यक्ति को बार-बार उकसा सकता है, और हाथों में हथियार लिए लोग मजाक करने के लिए सुरक्षित नहीं होते;' और मैंने अपनी मूंछें मरोड़ लीं।
मैंने आपको बताया था, साहब, वह कितना कायर था: वह तुरंत जमीन पर गिर पड़ा और अपना माथा फर्श पर रगड़ने लगा।
'क्षमा कीजिए! क्षमा कीजिए!' वह चिल्लाया, 'हे वीर सज्जनों! आप मुझे जो कुछ भी देना चाहें, यहाँ तक कि दस रुपये भी, मैं सहर्ष स्वीकार करूँगा, लेकिन मुझे मत मारिए, मुझे मृत्युदंड मत दीजिए; देखिए, मैं आपके चरणों में गिरता हूँ, मैं अपनी नाक धूल में रगड़ता हूँ।'
'अरे मूर्ख!' क्लर्क हंसते-हंसते लोटपोट हो गया, क्योंकि वह मोटा था; 'अरे मूर्ख! आह, मोहन दास, काश मैंने यह देख लिया होता! नारायण के नाम पर, तुम्हारा क्या बिगाड़ेगा? क्या तुम बच्चे हो—तुम, अपनी इन मूंछों वाले? धिक्कार है तुम पर, आदमी; तुम इतने मंदबुद्धि हो, थोड़ा कम कायर बनो; उठो, निडरता से अपने पैसे मांगो, इन सज्जनों से जो कुछ भी देना चाहें मांग लो, हालांकि वास्तव में तुम अपनी इस गुस्ताखी भरी कोशिश के लायक नहीं हो।'
वह उठा और अपने बाएं पैर पर खड़ा हो गया, दाहिने पैर का तलवा पिंडली से सटाकर, हाथ जोड़कर, उसकी पगड़ी पूरी तरह से अस्त-व्यस्त थी, और उसके चेहरे पर बेहद हास्यास्पद रूप से दयनीय भाव थे।
'दस रुपये, मेरे स्वामी,' वह लड़खड़ाती आवाज में बोला; 'आपका दास दस रुपये लेगा।'

हम सब एक बार फिर खिलखिलाकर हंस पड़े; गोमाष्ट के पेट में दर्द होने लगा और उनकी आंखों से आंसू बहने लगे।
'ऐ भुगवान! ऐ नारायण!' वह हांफते हुए बोला; 'काश मैंने ये देख लिया होता; ऐ सीताराम! ये तो बहुत ही मजेदार है। दस रुपये! अरे यार,' उसने बेचारे दुल्लल से कहा, 'अभी तो तुम्हें पंद्रह सौ रुपये चाहिए थे!'
'नहीं,' मेरे पिता ने कहा, 'उसे उसका हक लेने दो; आपने डेढ़ सौ कहा था, उसे वही मिलेगा; आप, मीर साहब, इस नेक सहौकर के साथ उसकी कोठी पर जाइए और पैसे ले आइए; मुझे पूरा यकीन है कि वह आपको एक पहरेदार वापस देगा, और आप सोने-चांदी के लिए एक कुली किराए पर ले सकते हैं।'
'निश्चित रूप से, तुम्हें वे आदमी मिल जाएंगे,' गोमाष्ट ने कहा, 'और अब चलो; मुझे सोना इकट्ठा करना होगा, और हो सकता है कि इसे तौलने और तुम्हें सौंपने में देर हो जाए, और रुपये सुरफ से गिनने में भी देर हो जाए।'
जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए, दुल्लाल ने मुझसे कहा, 'तुम मुझे कोठी पर भुगतान करोगे, है ना?'
मैंने कहा, 'देखते हैं; यह पैसा मेरा नहीं है, और मैं इस विषय पर सलाह लूंगा।'
'ये तुम्हारा पैसा नहीं है! तो फिर किसका?'
मैंने कहा, 'तुम्हें किसने काम पर रखा है और तुम्हें डेढ़ सौ रुपये किससे मिलने हैं? क्या तुम मूर्ख हो? क्यों पूछ रहे हो?'
'अरे कुछ नहीं, मैं बस सोच रहा था—'
'क्या सोच रहे हो?' मैंने पूछा; 'मुझे लगता है कि तुम कोई शरारत करने की सोच रहे हो।'
'आह,' उसने कहा, 'अब तुम वैसे ही बोल रहे हो जैसे तुमने चार मीनार पर बोला था।'
मैंने रुककर उसकी ओर देखते हुए कहा, 'अलिया की कसम! अगर तुमने कभी दोबारा उस शब्द का जिक्र किया तो!'
'कभी नहीं, कभी नहीं!' वह बेचारा कांपते हुए चिल्लाया; 'मुझे मत मारो; याद रखो यह खुली सड़क है, और यहाँ हंगामा होगा; ये शब्द मेरे मुंह से अनजाने में निकल गए, ठीक उसी समय जब मैं सोच रहा था—'
'तुमने ये बात दो बार कही है, और वो भी आलिया की कसम! मुझे लगता है इसमें तुम्हारा कोई मतलब है; तुम क्या कहना चाह रही हो?'
'कुछ नहीं, कुछ नहीं,' उसने कहा; 'मैं बस सोच रहा था—'
'कुंआ!'
'मैं तो बस यही सोच रहा था कि आप एक साहसी व्यक्ति हैं, जो हिंदुस्तान के उस धनी व्यापारी के साथ आए हैं।'
'अच्छा, तो फिर इसका क्या? तुम्हें तो पहले से ही पता था।'
'क्या आप अमीर नहीं हैं?'
'नहीं, बिलकुल नहीं,' मैंने कहा, 'मैं नहीं हूँ।'

'तो फिर,' उस दुष्ट ने कहा, 'क्यों न हम दोनों खुद को समृद्ध कर लें?'
मैंने पूछा, 'कैसे?'
'पहरेदार को मना कर दो, या कुछ आदमियों को साथ ले आओ जिनके पास मैं तुम्हें ले जाऊंगा; वे तुम्हारी हर इच्छा पूरी करेंगे, हर एक के लिए पाँच रुपये लेंगे; हम पैसे लेकर भाग जाएंगे, और यहाँ पास ही चट्टानों में एक जगह है जहाँ मैंने लूटा हुआ माल छिपा रखा है—हम वहाँ जाएंगे और उसे आपस में बाँट लेंगे।'
'आप जिस जगह का जिक्र कर रहे हैं वह कहां है—क्या वह दूर है?' मैंने पूछा।
'नहीं,' उसने कहा; 'क्या तुम आओगे? मैं तुम्हें दूर से ही दिखा सकता हूँ; हमें चट्टानों पर चढ़ने की ज़रूरत नहीं है—दिन के उजाले में देखे जाने का खतरा है।'
मैं थोड़ी दूर तक उसके पीछे-पीछे गया, और उसने कारवां और बेगम बाजार के पीछे स्थित चट्टानों के एक विशाल ढेर की ओर इशारा किया।
'क्या आपको वहां चट्टान पर लगभग आधे रास्ते ऊपर एक सफेद धब्बा दिखाई दे रहा है?'
'हाँ,' मैंने कहा।
'वही जगह है,' उसने जवाब दिया; 'यह केवल मुझे और कुछ अन्य लोगों को ही पता है; जो कुछ भी मुझे मिलता है, मैं उसे वहीं रख देता हूं।'
'आपको क्या मिलेगा?'
'अरे, बहुत कम ही काफी है; कभी-कभी एक शॉल, एक जकूज़ी रुमाल, या कुछ सोना, कुछ भी चलेगा। लेकिन आप क्यों पूछ रहे हैं? क्या आप मेरी बात मानकर हमारे साथ आएंगे? हम सोलह लोग हैं; एक दूर नकली वेश में है, बाकी सब पास ही हैं और हमारे साथ चलेंगे।'
'कुत्ते!' मैंने चिल्लाते हुए उसे ज़मीन पर पटक दिया, 'कुत्ते! क्या तुझे पता है तू किससे बात कर रहा है? यहाँ कोई नहीं है,' (क्योंकि हम घरों के पीछे पहुँच गए थे,) 'और तुझे जहन्नम भेजना बहुत आसान है; मेरी तलवार का एक ही वार, और तेरी झूठी ज़बान हमेशा के लिए बंद हो जाएगी:' और मैंने आधी तलवार खींच ली। मुझे पता था इसका क्या असर होगा: उसने वही कायरता दिखाई जो पहले दिखाई थी; वह मेरे घुटनों से लिपट गया; मैंने उसे ठुकरा दिया और उस पर थूक दिया। 'साँप!' मैं अंत में उसकी दीनता से तंग आकर चिल्लाया, 'मैं तुझे छूने से भी कतराता हूँ; हिंदुस्तान का एक सयुद तेरे जैसे खेल के सामने झुकने के लिए बहुत स्वाभिमानी है; मुझे साहूकार के पास ले चलो, क्योंकि आलिया की कसम, मुझे तुझ पर भरोसा नहीं है!'
'नहीं, इस मामले में मैं ईमानदार रहा हूँ,' उस दुष्ट ने कहा; 'पैसा तो पक्का है।'
मैंने कहा, 'तुम्हारे लिए यही अच्छा होगा, वरना मैं बदला लेने की कसम खाता हूँ; आगे बढ़ो, और संभलकर चलो; अगर मैंने भागने की एक भी कोशिश देखी तो मैं तुम्हें दो टुकड़ों में काट दूँगा, चाहे वह बाज़ार के बीचोंबीच ही क्यों न हो।'
'तो मेरे पीछे-पीछे आओ,' उसने कहा; और उसने अपने अस्त-व्यस्त हो चुके वस्त्रों को समेटा, और हम फिर से भीड़ भरे बाजार में प्रवेश कर गए।

हम जल्द ही साहूकार के घर पहुँच गए, जहाँ हमारा इंतज़ार हो रहा था: पैसे और सोना बाँट दिया गया, और मुझे मेरे साथ लाई गई रसीद दे दी गई, और सैनिकों के पहरे के साथ मैं खजाना अपने पिता के पास ले गया।
'मीर साहब, दयालु मीर साहब,' जब हम अपने घर के पास पहुँचे तो दुल्लाल ने कहा, 'आप सब कुछ भूल जाएँगे; भुगवान जानता है कि मैं आपसे मज़ाक कर रहा था; मुझे ऐसे मज़ाक करना पसंद है, बल्कि मैं हमेशा से ही मज़ाकिया स्वभाव का रहा हूँ;' और वह डर के मारे हँस पड़ा। 'आप मेरा छोटा सा इनाम, मेरे डेढ़ सौ रुपये नहीं भूलेंगे, मुझे पता है आप नहीं भूलेंगे।'
'शांति!' मैंने पुकार कर कहा, 'यदि तुम एक कौड़ी पाना चाहते हो, तो क्या तुम्हें दो वफादारों के वचन पर इसका वादा नहीं किया गया है? तुम्हें एक-एक पैसा मिलेगा।'
जब पैसा हमारे तिजोरी में जमा हो गया, तो मैंने सिपाहियों को एक छोटा सा उपहार देकर विदा कर दिया। उनके जाते समय बेचारा दुलाल उन्हें ऐसे देखता रहा मानो उसे लगा हो कि उनके साथ ही उसके जीने का आखिरी मौका भी चला गया। इस तरह कहानी का अंत निश्चित हो गया।
'मुझे मेरा पैसा दे दो और मुझे जाने दो,' उसने खोखली आवाज में कहा।
मैंने कहा, 'इंतजार करो, जब तक तुम्हारे लिए गिनती पूरी न हो जाए।'
'अरे, मैं दुलालजी को भूल ही गया था,' मेरे पिता चिल्लाए; 'मैं उसका हक जरूर वसूलूंगा।'

अध्याय सत्रह

चील के घर में, मांस का ढेर। हिंदी कहावत। [पतंग के घोंसले में हमेशा मांस होता है। (मुक्त अनुवाद)]
मेरे पिता ने पैसे गिने और दुलाल को सौंप दिए; पैसे देखकर उसका चेहरा खिल उठा और उसने अनगिनत सलाम किए और धन्यवाद कहा। 'अब आपको पैसे की रसीद लिखनी होगी,' मेरे पिता ने कहा।
उस व्यक्ति ने अपनी पगड़ी से कलम निकालते हुए उत्तर दिया, 'ज़रूर, अगर मेरे स्वामी मुझे कागज़ और स्याही देंगे।'
मैंने कहा, 'ये रहे; लिखो।'
उन्होंने ऐसा ही किया, मुझे कागज़ दिया और पैसों को अपनी धोती के एक कोने में बांधकर कमरबंद में रख लिया। उन्होंने पूछा, 'क्या मुझे जाने की अनुमति है? मेरे स्वामी बेचारे दुलाल को जानते हैं और यह भी जानते हैं कि उन्होंने इस लेन-देन में ईमानदारी बरती है। जब भी मेरे स्वामी हैदराबाद लौटेंगे, वे चार मीनार पर पूछताछ करके मोहन दास के बारे में जान सकते हैं; और वह अपने संरक्षक की सेवा में हमेशा तत्पर रहेंगे।'
मैंने कहा, 'रुको, मुझे तुमसे कुछ कहना है;' और मैंने अपने पिता को वह सारी बातचीत सुनाई जिसका मैंने अभी-अभी वर्णन किया है।
'क्या ऐसा है?' उसने अपने सामने खड़े उस दयनीय प्राणी से कहा; 'क्या ऐसा है? बोलो, अभागे! मुझे अपने मुख से सत्य सुनने दो; क्या तुम मुझे लूटना चाहते थे?'
लेकिन जिस प्राणी को उसने संबोधित किया, वह मूक था; वह भय और अपराधबोध से स्तब्ध खड़ा था, उसकी आँखें उसके सिर से निकल रही थीं, उसका मुँह खुला था, और उसके पीले पड़े होंठ उसके दाँतों पर कसकर कसे हुए थे।
मेरे पिता ने आगे कहा, 'तुम इसके हकदार हो; मैंने तुम्हारे उस घिनौने चेहरे में चोरी, हत्या, धूर्तता और हर तरह की दुष्टता के कर्मों को पढ़ा; तुम्हें मरना ही होगा!'
'अरे नहीं, नहीं! मरना? मेरे स्वामी को मज़ाक करने की इच्छा हो रही है; उनके बेचारे गुलाम ने क्या किया है?' और उसने एक भयानक मुस्कान बिखेरी।
मेरे पिता ने कहा, 'जब मैंने अपनी सारी संपत्ति तुम पर सौंप दी थी, तब तुम मुझे लूट लेते; तुम मुझे एक परदेस में भूखा मरने के लिए निर्दयता से छोड़ देते; तुमने दूसरों को लूटा है और हजारों को ठगा है: कहो, क्या तुम उस दुनिया पर और अत्याचार करने के लायक हो जिसे तुम पहले ही लूट चुके हो?'
वह मेरे पिता के चरणों में गिर पड़ा; उसने उनके घुटने पकड़ लिए; वह मुश्किल से बोल पा रहा था, और अत्यधिक भय से बुरी तरह कांप रहा था। 'मैं वही हूँ जो आप कहते हैं,' वह चिल्लाया, 'चोर, हत्यारा और दुष्ट; लेकिन हे भगवान! मुझे मत मारो। मेरे स्वामी का चेहरा दयालु है—मैं मर नहीं सकता—और मेरे स्वामी के पास तलवार नहीं है, तो वह मुझे कैसे मारेंगे?' उसे अभी-अभी पता चला था कि हम दोनों निहत्थे हैं, और वह अचानक दरवाजे की ओर झपटा। 'कोतवाल को इसकी खबर लगेगी,' वह चिल्लाया; 'लोगों को बिना किसी

दंड के डराया नहीं जा सकता।' दरवाजा बंद था; उसने उसे कई बार जोर से खींचा और धकेला; लेकिन मैं उसकी पीठ के पीछे था, और वह घातक रूमाल उसके सिर पर था: वह मुड़ा और मुझे घूरा—अगले ही पल वह मेरे पैरों में मृत पड़ा था।

मेरे पिता ने हर्षोल्लास से कहा, 'देखो, उसे उसके कर्मों का फल मिल गया है, और उसके अपराधों की याद हमेशा उसके साथ रहेगी; हमने एक अच्छा काम किया है।'

'हाँ,' मैंने कहा, 'बिल्कुल अच्छा है; उसने खुद कबूल किया है कि वह हत्यारा, लुटेरा और बदमाश है—और क्या चाहिए? और इतनी कम उम्र में इतने सारे अपराध करना!'

मेरे पिता ने कहा, 'उसे यहाँ घसीटकर लाओ, मैं उसे देखना नहीं चाहता; और लुग्गेईज़ को बुलाओ; उसे रात में घर के छोटे से आँगन में दफनाना होगा; मैं इस भीड़भाड़ वाले शहर में शव को बाहर ले जाने की हिम्मत नहीं कर सकता।'

'ऐसा ही होगा,' मैंने उत्तर दिया; 'लेकिन सोचो हम कितने बड़े संकट से बच गए; अगर तुमने मुझे उस दुष्ट के साथ जाने के लिए न कहा होता, तो हम अपना सारा पैसा खो देते।'

'जी हां, मेरे बेटे, और अगर हमें वो मिल भी जाता, और अगर तुम्हें ये शक न होता कि पांच प्रतिशत बहुत ज्यादा है, तो मैं ज़रूर वो रकम चुका देता; लेकिन मैंने तुम्हारा इशारा समझ लिया, और मुझे लगता है कि मैंने उस संकेत को बखूबी पकड़ लिया। हमने उस बदमाश को उसके पैसे और उसकी जान दोनों से वंचित कर दिया है।'

'सच है,' मैंने कहा, 'यह एक अच्छा और मनोरंजक अनुभव रहा है; इसके अलावा, इससे आगे भी लाभ मिलने की उम्मीद है।'

'क्या यह चट्टान और धोखेबाज से है?'

'हां; अच्छा खासा माल मिलेगा।'

मेरे पिता ने कहा, 'अपना ख्याल रखना; हो सकता है बैंड वहां हो, और वे तुम्हारा गर्मजोशी से स्वागत करेंगे।'

मैंने कहा, 'मैं जाकर भूद्रिनाथ से सलाह लूंगा; यह साहसिक कार्य उनके और सुरफुराज खान के लिए बिल्कुल उपयुक्त रहेगा; हम कोई भी कदम जल्दबाजी में नहीं उठाएंगे।'

भूद्रिनाथ सराय में मेरा इंतजार कर रहा था।

'तो, मीर साहब,' उसने कहा, 'आप अभी भी मौज-मस्ती के मूड में हैं; आज रात कितने लोगों की जान आपकी पूजा को संतुष्ट करेगी? इस दुष्टों के घर में पुरुषों की कोई कमी नहीं है।'

मैंने कहा, 'मैं इस मूड में तो हूँ, लेकिन उस उद्देश्य के लिए नहीं जिसके लिए मैंने इसे बनाया था; मेरे दिमाग में इससे भी बेहतर योजना है।'

'हा!' उसने कहा, 'तो तुम सोथा होने का नाटक कर रहे थे; और बताओ यह खेल क्या हो सकता है?'

मैंने जवाब दिया, 'एक ऐसा काम जिसके लिए साहसी हृदय की आवश्यकता होगी, और शायद नग्न हथियार भी हों: क्या आप मेरे साथ चलने को तैयार हैं?'

'मौत तक,' भूद्रिनाथ ने कहा; 'लेकिन मैं लाख कोशिश करने पर भी नहीं समझ पा रहा कि तुम क्या कहना चाह रहे हो।'
'सुनो,' मैंने उत्तर दिया; और मैंने उसे दुलाल का पूरा इतिहास सुनाया।
'बहुत ही चतुराई से किया, सचमुच बहुत ही चतुराई से, मेरे युवा जमादार,' उसने मेरे रिश्ते के खत्म होने पर कहा; 'शुरू से अंत तक इससे बेहतर कोई नहीं कर सकता था; उस बदमाश को उसका अंजाम भुगतना ही चाहिए था; और अब मुझे लगता है कि हमें चट्टान में छिपे इन खजानों को खोजना होगा।'
'बिल्कुल,' मैंने कहा; 'अगर मुझे पता होता कि इसे सही तरीके से कैसे करना है, तो मैं आज रात ही ऐसा कर देता।'
'देखते हैं,' भूद्रिनाथ सोचते हुए बोला; 'हमें ज्यादा आदमियों की जरूरत नहीं पड़ेगी, छह-आठ दृढ़ निश्चयी लोग ही काफी होंगे। तुम और मैं, पीर खान, मोतीराम और चार अन्य काफी हैं; सुरफुराज खान का इंतजार करने का कोई फायदा नहीं, वह अब सुबह से पहले नहीं लौटेगा। लेकिन उस जगह की जानकारी कैसे प्राप्त करें, और क्या रात में कोई बदमाश वहां मौजूद है?'
मैंने कहा, 'क्या कोई नकली आदमी का रूप धारण नहीं कर सकता? एक साधारण आदमी, कुछ भी चलेगा। वह अभी ऊपर जा सकता है, क्योंकि जगह पास ही है, और एक-दो घंटे में हमें खबर ला सकता है।'
'मुझे मिल गया!' भूद्रिनाथ चिल्लाया। 'यहाँ, कोई शेखजी को मेरे पास बुलाओ।'
शेखजी आए। वे एक बूढ़े व्यक्ति थे, जिनकी लंबी दाढ़ी थी; लेकिन वे एक सक्षम व्यक्ति थे और रूमाल का इस्तेमाल करने में बेहद माहिर थे।
'शेखजी,' भूद्रिनाथ ने कहा, 'बैठ जाइए, मुझे आपसे कुछ कहना है। जरूरत पड़ने पर आप किसी धोखेबाज का रूप धारण कर सकते हैं, है ना?'
'बिल्कुल,' बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया, 'मुसलमान हो या हिंदू, मैं सभी प्रकार के लोगों से परिचित हूँ। मैं उनकी सभी बोलचाल की भाषा जानता हूँ और उनके कई वस्त्र भी मेरे पास हैं।'
'अच्छा है,' भूद्रिनाथ ने कहा; 'अब सुनो। तुम्हें तुरंत जाकर अपना वेश बदलना होगा; हमें एक योजना बनानी है;' और उसने हमारी प्रस्तावित योजना और उससे पहले की सारी बातें बताईं। 'और अब,' भूद्रिनाथ ने आगे कहा, 'तुम्हें सावधान रहना होगा, और अंधेरा होने से पहले वापस आकर हमें उस जगह के बारे में बताना होगा और यह भी बताना होगा कि क्या वहाँ कोई आदमी हैं।'
'क्या वहां रहने वाला फकीर हिंदू है या मुसलमान?'
मैंने कहा, 'मैंने चट्टान पर सफेदी में फैले हुए हाथों के निशान देखे, इसलिए वह जरूर कोई मुसलमान होगा।'
'तो फिर मुझे पता है कैसे काम करना है,' ठग चिल्लाया। 'साहिबों, मैं अब विदा लेता हूँ, और आपको निराश नहीं करूँगा। जब भी मेरी आवश्यकता होगी, मैं आपके साथ उपस्थित रहूँगा।'
'क्या वह इसे संभाल पाएगा?' मैंने भूद्रिनाथ से पूछा। 'मुझे लगता है यह एक नाजुक मामला है।'

'उससे कभी मत डरो,' भूद्रिनाथ ने कहा; 'वह एक बड़ा ही शातिर बदमाश है और भेस बदलने में माहिर है, खासकर नकली भेस में। एक बार उसने हमारे बीच मौजूद पाँच नानूक्षई नकली भेसियों को बहला-फुसलाकर हमें काफी धन लूटा था। ये नकली भेस काफी पैसा इकट्ठा करके कुआँ बनवाने जा रहे थे। इसके अलावा, वह शेर की तरह बहादुर है और तुमने उसके दूसरे कारनामे तो देख ही लिए हैं।'
जब हम बात कर रहे थे तभी सुरफराज खान अंदर आ गए।
'हमारा काम खूब चला,' उसने उल्लासपूर्वक चिल्लाते हुए कहा, 'और खूब लूट हुई है। हमने सभी आदमियों को मार डाला है, और लूटा हुआ माल हमारे साथियों के हवाले किया जा रहा है।'
मैंने कहा, 'अभी तक तो सब ठीक है; लेकिन क्या कोई नकद पैसा है, या सब कुछ सामान ही है?'
'दोनों, मीर साहब, दोनों; लेकिन मुझे लगता है कि आपको इतनी जल्दी पूछने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि जब से हम शहर में आए हैं, हमने आपका चेहरा नहीं देखा है। आपको क्या पता, हम सबको पकड़कर पुंटू लाल के घर में सुरक्षित रखा जा सकता था। मुझे ऐसा व्यवहार पसंद नहीं है।'
मुझे उनके भाषण पर बहुत गुस्सा आया और मैं गुस्से में जवाब देने ही वाला था कि तभी भूद्रिनाथ ने बीच में दखल दिया।
'शांति बनाए रखो!' उसने कहा, 'झगड़ा मत करो: यह शर्मनाक है और केवल शराबी और गांजा पीने वालों के लिए ही ठीक है; मेरी बात सुनो। सुरफुराज खान, तुम बच्चे नहीं हो, और तुम्हें अपने गुस्से को हावी नहीं होने देना चाहिए; सुनो, और देखो कि हमारे युवा जमादार ने क्या किया है, और मैं भवानी की कसम खाता हूँ कि मुझे लगता है कि वह हम सबको शर्मिंदा कर देगा।'
फिर उन्होंने मुझे वह सब बताया जो मैंने उन्हें बताया था, जिसे सुनकर सुरफराज खान का गुस्सा पल भर में शांत हो गया; वह उठे और उन्होंने मुझे गले लगा लिया।
'मैं गलत था,' उसने कहा, 'और आपको मुझे माफ करना होगा; और यह साबित करने के लिए कि मैं पहले से कहीं ज्यादा आपका दोस्त हूं, मैं आपसे विनती करता हूं कि मुझे इस साहसिक यात्रा में शामिल होने की अनुमति दें, क्योंकि, आलिया की कसम! यह एक अजीबोगरीब यात्रा होने वाली है।'
मैंने कहा, 'खुशी से; हमें लगा था कि आप समय पर नहीं पहुंचेंगे, लेकिन अब जब आप आ गए हैं तो मैं किसी भी हालत में नहीं चाहता कि आप हमारे साथ न आएं।'
'तो तुमने उन लोगों का गला घोंट दिया जिन्हें तुम बाहर ले गए थे,' भूद्रिनाथ ने कहा। 'क्या तुम्हें कोई परेशानी हुई?'
'बिल्कुल नहीं,' खान ने उत्तर दिया। 'हम उन्हें मसुलीपट्टम रोड पर ले गए और सुरूनुग्गुर के दूसरी तरफ एक जगह ढूंढी; हमने शवों को एक कुएं में फेंक दिया और दूसरे रास्ते से लौट आए। सोभान आलिया! यह एक अनोखी जगह है, और हम यहां सालों तक रह सकते हैं और हर दिन कुछ न कुछ मनोरंजन कर सकते हैं। मुझे लगता है कि मैं यहीं रुकूंगा।'

मैंने कहा, 'जब हम लूट का माल आपस में बाँट लेंगे, तब आप इसके बारे में जो चाहें कर सकते हैं। तब आप स्वतंत्र होंगे, लेकिन मुझे आपको खोने का दुख होगा।'

हम शाम ढलने तक इसी तरह बातचीत करते रहे, और फिर जिन आठ लोगों को हम पकड़ने का इरादा रखते थे, उन्हें इकट्ठा करके और यह सुनिश्चित करके कि हमारे हथियार अच्छी स्थिति में हैं, हम अपने दूत के लौटने की बड़ी चिंता के साथ प्रतीक्षा करने लगे।

अंततः वह आ गया।

'समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं है,' उसने कहा। 'मैं उस जगह गया और फकीर को पाया। वह एक तगड़ा और मजबूत नौजवान था, और पहले तो उसने मुझे नीचे उतरने की चेतावनी दी; लेकिन जब मैंने उसे बताया कि मैं भूखा और थका हुआ हूँ, कि मैं अभी-अभी हिंदुस्तान से आया हूँ, और मुझे नहीं पता कि मैं कहाँ सोऊँगा, और बारह इमामों के नाम पर रोटी का एक टुकड़ा और पानी माँगा, तो वह शांत हो गया, और उसने मुझे अपनी गुफा में आने दिया, मुझे कुछ खाना और एक हुक्का दिया, और हम कुछ देर तक मौज-मस्ती करते रहे। मैंने अपनी अफीम की डिब्बी निकाली और थोड़ी सी ली; उसे देखकर उसने भी थोड़ी सी माँगी, और इतनी ज़्यादा मात्रा ले ली है कि वह सुबह तक नहीं जागेगा। मैंने उसे गहरी नींद में सोता हुआ छोड़ दिया।'

मैंने कहा, 'वह फिर कभी नहीं जागेगा, लेकिन क्या तुमने वह जगह देखी? लूटा हुआ माल कहाँ छिपाया जा सकता है?'

शेखजी ने कहा, 'वह दो विशाल चट्टानों के बीच एक गुफा में रहता है। वहां लगभग पूरी तरह अंधेरा था, लेकिन मैंने उसके पीछे एक कोना देखा जो मिट्टी और पत्थरों से बना हुआ था, जिसके बारे में उसने कहा कि वह उसका सोने का स्थान है, और मुझे संदेह है कि लूटा हुआ माल वहीं छिपा हुआ है।'

'तो चलो,' मैंने कहा; 'एक पल भी गंवाने का समय नहीं है; अगर हम देर करेंगे तो शायद हमें बाकी गिरोह के लोग मिल जाएं। यही वह समय है जब वे सब बाज़ारों में निकलकर जो कुछ भी चुरा सकते हैं, चुरा रहे होते हैं।'

हम सभी बाहर निकले और अपने मार्गदर्शक के मार्गदर्शन में चट्टानों के नीचे दबे पांव तब तक रेंगते रहे जब तक कि हम उस संकरे रास्ते पर नहीं पहुंच गए जिससे हमें ऊपर चढ़ना था।

हमने फुसफुसाते हुए कुछ देर बातचीत की, और पाँच आदमियों को नीचे रुकने का आदेश देकर, जब तक हम उन्हें ऊपर आने के लिए न कहें, तब तक वहीं रुके रहे। इसके बाद, भुद्रिनाथ, मैं और सुरफुराज खान गुफा के मुहाने तक जाने वाले संकरे रास्ते पर रेंगते हुए आगे बढ़े, जहाँ बूढ़ा ठग हमसे पहले ही पहुँच चुका था।

'वह अभी भी सो रहा है,' उसने फुसफुसाते हुए कहा; 'लेकिन धीरे से चलना, कहीं वह जाग न जाए। वह वहीं दीपक के पास लेटा हुआ है।'

मैंने भूद्रिनाथ से कहा, 'ध्यान रखना, वह मेरा है; क्या तुम और सुरफुराज खान उसे अपने पास रखोगे?' क्योंकि मेरे सामने उस शक्तिशाली आकृति को देखकर मुझे यह सावधानी आवश्यक लगी। लेकिन वह सो रहा था; मैं उसके गले में रुमाल कैसे डालता? भूद्रिनाथ ने समस्या का हल निकाल लिया; उसने अपनी म्यान में रखी तलवार के सपाट भाग से फकीर के पेट पर ज़ोरदार प्रहार किया, और वह उठकर बैठ गया।
'यह क्या है? चोर!' वह बस इतना ही कह सका; मेरा रूमाल तैयार था, और अब यह मुझे कभी निराश नहीं करता था—वह पल भर में मर गया।
मैंने भूद्रिनाथ से कहा, 'अब दीपक को ठीक करो। तीन आदमियों को बुलाओ और बाकी को नीचे रहकर निगरानी करने दो।'
भूद्रिनाथ ने मृत फकीर के कपड़ों से एक फटा हुआ कपड़ा फाड़ा, जिसे उसने एक मोटी बाती की तरह लपेटकर तेल के बर्तन में डाल दिया; उसकी तेज रोशनी से गुफा का भीतरी भाग रोशन हो गया, और हमें सब कुछ स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा।
'यही वह दीवार है जिसकी मैंने बात की थी,' शेखजी ने कहा, 'और बेहतर होगा कि हम इसके पीछे तलाशी लें।'
हमने वैसा ही किया। एक कोने में मिट्टी के घड़ों के ढेर लगे थे, जिन्हें हमने पहले अनाज या आटा समझा, और वास्तव में जो पहले दो घड़े हमने खोले उनमें चावल और दाल थी; तीसरा घड़ा भारी लगा।
मैंने कहा, 'इसमें चावल के अलावा कुछ और भी है; इसे ध्यान से देखो।' मुँह चिथड़ों से भरा हुआ था, लेकिन जब उन्हें हटाया गया तो हमने देखा कि वह पैसों से भरा हुआ था—रुपये और पैसे आपस में मिले हुए थे।
'यह बुद्धिमानी नहीं थी,' भूद्रिनाथ ने कहा; 'शाह साहब को तांबे और चांदी को नहीं मिलाना चाहिए था, चांदी धूमिल हो जाएगी; लेकिन हम इसे साफ कर सकते हैं।'
अगला बर्तन भी वैसा ही था: आखिरी वाला सबसे अच्छा था; वह सोने-चांदी के गहनों, अंगूठियों, पायल और बाजूबंदों से भरा हुआ था। यह देखकर हम कांप उठे कि उनमें से कई खून से सने हुए थे।
'वे बदमाश!' मैंने कहा; 'उस नीच ने सच ही कहा जब उसने कबूल किया कि वह हत्यारा है; शहर उससे छुटकारा पाकर खुश है। लेकिन हमें अब और बातें नहीं करनी चाहिए। तुममें से कोई इन चीजों को बांधकर निकलने के लिए तैयार हो जाओ, जबकि हम और लूट का माल ढूंढते हैं।'
लेकिन इस कोने में और कुछ नहीं था, न ही कपड़े के गट्ठे या अन्य कोई सामान जैसा कि हमने उम्मीद की थी। हम छिपने की कोई और जगह ढूंढने लगे थे और लगभग अपनी खोज छोड़ ही चुके थे, तभी बाहर गए सुरफराज खान ने हमें आवाज़ दी।
'इधर आओ,' वह चिल्लाया; 'यहाँ एक जगह है जो संदिग्ध लग रही है।'
हम दौड़कर उस जगह पर पहुंचे और पाया कि उसने जिस छेद की खोज की थी, वह दो चट्टानों के बीच था; अंदर अंधेरा था और कोई व्यक्ति केवल अपने हाथों और घुटनों के बल रेंगकर ही अंदर जा सकता था।
मैंने कहा, 'मुझे रोशनी दो; अगर शैतान भी अंदर हो तो भी मैं उसमें प्रवेश कर जाऊंगा।'

जब मैं अंदर दाखिल हुआ तो भूद्रिनाथ ने मुझसे कहा, 'इस शैतानी गिरोह के किसी भी सदस्य से तो शैतान होना बेहतर है।'
मुझे वहां कोई नहीं मिला, और अंदर की जगह, जो इतनी नीची थी कि मैं मुश्किल से सीधा खड़ा हो पा रहा था, बंडलों से भरी हुई थी।
मैंने बाहर खड़े लोगों से चिल्लाकर कहा, 'न तो शैतान है और न ही गिरोह का कोई सदस्य यहाँ है, इसलिए तुममें से कुछ लोग जल्दी अंदर आओ और देखो कि मुझे क्या मिला है।'
मैंने और बाकी लोगों ने अलग-अलग बंडलों को खोलना शुरू किया और हम सब उसमें लगन से काम में जुट गए। मैंने अभी एक बंडल खोला ही था जिसमें मुझे पीतल के खाना पकाने के बर्तन और पानी के पात्र लगे हुए लग रहे थे। मुझे उनमें कुछ सोना और कुछ चांदी देखकर बहुत खुशी हुई, तभी बाहर से खतरे की घंटी बजी। हम सब जितनी जल्दी हो सके बाहर निकले और शोर का कारण पता लगाने गए।
जासूसों ने कहा, 'वहाँ दो आदमी हैं, जिन्हें हमने सामने वाले घरों के कोने से आते हुए और चट्टानों के तल की ओर बढ़ते हुए देखा है; वे तेज़ी से नहीं चलते हैं, और ऐसा लगता है कि वे कुछ बोझ ढो रहे हैं।'
'सिर्फ दो?' मैंने कहा, 'तो फिर उन्हें संभालना आसान है। रोशनी बुझा दो और गुफा के प्रवेश द्वार पर छिप जाओ; जैसे ही वे अंदर प्रवेश करेंगे, हम उन पर हमला कर देंगे।'
हम अभी मुहाने के पास एक चट्टान के पीछे अपनी चौकियाँ ले ही रहे थे, हमारे रूमाल तैयार थे, और दो लोगों ने अपनी तलवारें निकाल रखी थीं, तभी एक साथी ने पुकारा, 'अरे! सीन! सीन! नीचे आओ और हमें ऊपर चढ़ने में मदद करो। हम यहाँ पुलाववालों की तरह बोझ लादे खड़े हैं, और तुम्हारे पास हमें रास्ता दिखाने के लिए एक बत्ती तक नहीं है।'
मैंने कहा, 'एक शब्द भी नहीं, क्योंकि तुम अपनी जान की परवाह करते हो। उन्हें आने दो।'
दूसरे ने कहा, 'उसकी माँ अपवित्र हो जाए! वह जानवर अपनी मांद में नशे में धुत है और हमारी बात नहीं सुन रहा है। मैं इस बात का उससे हिसाब चुकता करूँगा।'
मुझे लगता है कि वह ठोकर खाकर गिर गया, क्योंकि उसने फकीर, बोझ और पत्थरों पर फिर से गालियों की बौछार कर दी; लेकिन कुछ ही क्षणों में वे दोनों चबूतरे पर पहुँच गए और अपने गट्ठे नीचे फेंक दिए, जो गिरते समय खनखना उठे।
'यह शराबी बदमाश कहाँ है?' एक लंबे-चौड़े आदमी ने कहा, जो बिल्कुल उसी आदमी के बराबर था जिसे हमने मारा था। 'हमें कोई रोशनी नहीं दिख रही है, और मुझे यकीन है कि वह दरिंदा या तो सिगरेट पी-पीकर मर गया है या फिर भुंगखाना में गया है, ठीक उसी समय जब उसकी ज़रूरत है।'
दूसरा व्यक्ति बैठ गया, जाहिर तौर पर काफी थका हुआ और हांफता हुआ।
'अंदर जाओ,' उसने कहा; 'दीवार के पीछे तुम्हें दीपक और तेल का पात्र मिलेगा। मैं एक इंच भी नहीं हिलूंगा।'

पहला वक्ता गाली-गलौज करते हुए फ़कीर के पास पहुँचा। सुरफ़ुराज़ खान और मैं उस पर टूट पड़े और उसे मार गिराया; लेकिन दूसरे ने शोर सुनकर चीख मारी और भागने की कोशिश की। पर उसकी किस्मत में यही लिखा था; उसका पैर फिसल गया, या वह अपने लाए हुए गठ्ठों में से किसी एक से ठोकर खाकर गिर पड़ा, और उठने से पहले ही चट्टान के पीछे छिपे एक आदमी ने उस पर झपट्टा मारकर उसकी गर्दन पर वार कर दिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई।

मैंने कहा, 'बस बहुत हो गया काम; हमें अब चलना चाहिए; लेकिन पहले चलो एक बार फिर उस गड्ढे में जाकर जो कुछ मिल सके, ले लें और तुममें से कोई एक देखे कि बंडलों में क्या है।'

हम फिर से गड्ढे में उतरे और हर एक ने एक-एक गठरी लेकर बाहर निकल आए। साथियों के पास जो गठरी थी उसमें केवल खाना पकाने के बर्तन और कुछ कपड़े थे, इसलिए हमने उन्हें वहीं छोड़ दिया और अपने लूटे हुए सामान से लदे हुए सराय की ओर चल पड़े।

साहब, मैं आपको बताना भूल गया था कि उस गुफा में हमें इन बदमाशों के खूनी व्यापार के कितने और सबूत मिले। कई बंडल कपड़ों के थे, और उनमें से अधिकतर खून से सने हुए थे; एक बंडल जो मैंने खोला, वह पूरी तरह से लथपथ था, और चूंकि अभी भी गीला खून मेरी उंगलियों पर चिपक गया था, इसलिए मैंने घृणा और भय के मिले-जुले भाव से उसे गिरा दिया।

अध्याय अठारह

यह फिल्म दिखाती है कि कैसे सुरफराज खान और उनके साथी एक मुश्किल में फंस गए और कैसे वे उससे बाहर निकले।

जब हम वापस लौटे तो अपनी सफलता पर खूब हँसे। यह रोमांच हम सबके लिए बिल्कुल नया था, और हमने कल्पना की कि जब लुटेरे वहाँ पहुँचेंगे तो उन्हें कितना दुख और निराशा होगी, जब वे देखेंगे कि उनका गढ़ पूरी तरह से लूटा हुआ है और उनके दोस्त दहलीज पर मृत पड़े हैं, उनका स्वागत करने और उन्हें उस शाम के अपने कारनामों के बारे में बताने के लिए तैयार नहीं थे।

सुरक्षा की दृष्टि से बेहतर जगह के तौर पर, मैंने जो गहने और चांदी के बर्तन मुझे मिले थे, उन्हें अपने घर ले जाकर तिजोरी में बंद कर दिया, ताकि बाद में उनका उचित तरीके से निपटारा किया जा सके।

कहने की ज़रूरत नहीं, मेरे पिता आनंद से अभिभूत हो गए थे, और मेरे द्वारा किया गया हर नया कारनामा उन्हें मेरे प्रति और भी प्रिय लगता था। वे मुझे ऐसे दुलारते थे मानो मैं अभी भी बच्चा हूँ।

उन्होंने उत्साहपूर्वक कहा, 'मेरे पुत्र, जब तक हिंदुस्तान में इन कारनामों का पता न चल जाए, तब तक प्रतीक्षा करो; यदि इनसे तुम्हारा पद, सूबेदार का वह पद जो कुछ ही लोगों को प्राप्त हुआ है, तुम्हें न मिले, तो मैं वास्तव में बहुत गलत हूँगा।'

मैंने उसे कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन मन ही मन ठान लिया कि इसे पाने के लिए मैं सब कुछ दांव पर लगा दूंगा। मुझे पता था कि एक बेहद सफल अभियान, भरपूर लूट और किसी कुख्यात और साहसी कारनामे के बिना मैं उस पद तक नहीं पहुंच सकता था जिसका जिक्र मेरे पिता ने किया था; लेकिन मुझे इस बात पर कोई शक नहीं था कि इसे हासिल किया जा सकता है, क्योंकि मुझसे पहले भी कई लोग इसे हासिल कर चुके थे; और मैं क्यों न करूँ, जिसका पूरा मन ऐसे कारनामों से प्रसिद्धि पाने पर तुला हुआ था जिन्हें सुनकर लोग कांप उठें?

डाकुओं की गुफा में हमारे इस कारनामे के दो दिन बाद, कारवां और आसपास के पूरे इलाके में शवों की दुर्गंध और उन पर मंडराते गिद्धों की भीड़ से अफरा-तफरी मच गई। इस हिंसक कृत्य के अपराधियों को लेकर तरह-तरह के कयास लगाए जा रहे थे, और कई लोगों का मानना था कि इसमें डाकुओं के गिरोह के कुछ सदस्यों की साजिश थी; हालांकि, सभी इस बात पर सहमत थे कि किसी अज्ञात व्यक्ति ने बड़ा नुकसान पहुंचाया था। चोरी की गई अधिकांश संपत्ति बरामद कर ली गई; इसमें कुछ कीमती सामान भी शामिल था जो कुछ समय पहले एक साहूकार से चुराया गया था और जल्दबाजी और हड़बड़ी में हमसे छूट गया था; लेकिन फिर भी, हमें काफी बड़ी लूट मिली थी। हमारे एक साथी ने, जिसे यह काम आता था, चुपके से सारा सोना-चांदी पिघलाकर धातु के टुकड़े बना दिए, जिनका वजन के हिसाब से मूल्य सात हजार रुपये से अधिक था।

लूट के माल के बंटवारे का प्रस्ताव रखा गया, जो ऊंटों, घोड़ों, बैलों, गाड़ियों और अन्य कीमती सामानों की बिक्री से लगभग पचास हजार रुपये था। सभी ठगों ने सहमति जताई कि इसे हमारे गांव में अभियान दल के लौटने तक सुरक्षित रखना बेहतर होगा। इस बीच, प्रत्येक छोटे ठग को बीस रुपये और प्रत्येक जमादार को पचास रुपये उनकी तात्कालिक जरूरतों के लिए दिए गए। मेरे पिता अब शहर छोड़ने की बात कर रहे थे; लेकिन मैंने दस दिन और रुकने की विनती की, क्योंकि मैंने भूद्रिनाथ और सुरफुराज खान के साथ मिलकर अपने गिरोह को चार भागों में बांटने की योजना बनाई थी। प्रत्येक भाग शहर के प्रत्येक तरफ तैनात होगा और अपना-अपना काम अलग-अलग करेगा। लूट का माल एक जगह जमा किया जाएगा और जब हमारा काम जारी रखने में असमर्थ होगा, तब उसे आपस में बांट लिया जाएगा।

यह योजना उन्हें पसंद आई और उसी दिन इसे अमल में लाया गया। हमने अपने मकान का मामूली किराया चुकाया और यह बहाना बनाकर कि हम शहर छोड़कर हिंदुस्तान लौट रहे हैं, कारवां छोड़कर दूसरी तरफ, मीर जूमला तालाब के किनारे एक उपनगर में डेरा डाल लिया। भूद्रिनाथ और उनके साथी रेजिडेंट के आलीशान महल के पास चुद्दार घाट बाजार में चले गए, क्योंकि यह एक प्रमुख मार्ग था और यहाँ से कई यात्री आते-जाते थे, और यहाँ से उत्तर और पूर्व दोनों ओर कई रास्ते निकलते थे। सुरफुराज खान अपने आठ आदमियों के साथ कारवां में ही रुके रहे, क्योंकि वे हमसे कम जाने-माने थे। पीर खान और मोतीराम के नेतृत्व में एक और बड़ा दल शहर से शुमशाबाद की ओर जाने वाली पश्चिमी सड़क पर तैनात हो गया, जो अपने प्रयासों से उस भरोसे को निभाने के लिए दृढ़ संकल्पित थे जो उन्हें सौंपा गया था।

हमारी योजना शानदार ढंग से सफल रही; एक भी दिन ऐसा नहीं गुजरा जब कई दलों के विनाश की खबर न मिली हो, और यद्यपि लूटा गया माल मामूली था, फिर भी यह शायद उतना ही था जितना हम उम्मीद कर सकते थे, और यह सब हमारे नए घर में इकट्ठा करके जमा कर दिया गया, जहाँ से मेरे पिता ने उन चीजों को बेच दिया जो आसानी से बिक गईं।

इन छोटी-मोटी बातों में मैं अपना हिस्सा छोड़ देता हूँ। जब मैंने अपना इलाका चुना था, तब मैंने सोचा था कि मुझे उम्मीद से ज़्यादा काम मिलेगा; मुझे बहुत कम काम मिला, जबकि मैंने इसके लिए बहुत कोशिशें की थीं, और मैं निराश हुआ। मैंने भुद्रिनाथ या सुरफुराज खान से जगह बदलने की विनती की; लेकिन वे नहीं माने; उन्होंने अपनी योजनाएँ बना रखी थीं, और क्योंकि मैंने खुद अपनी जगह चुनी थी, इसलिए मुझे किसी और जगह का कोई अधिकार नहीं था, और न ही मुझे असंतुष्ट होना चाहिए था।

हमारे अभियान शुरू करने के आठवें दिन की सुबह तड़के ही भुद्रिनाथ बहुत घबराकर मेरे पास आया। उन्होंने कहा, 'हमें भागना होगा; यह शहर अब हमारे लिए सुरक्षित नहीं है।'

मैंने हैरानी से पूछा, 'कैसे? क्या हुआ है? क्या कुछ पता चला है, या गिरोह के किसी सदस्य ने विश्वासघात करके हमारी शिकायत कर दी है?'

'मैं तुम्हें बताता हूँ,' भूद्रिनाथ ने उत्तर दिया; 'यह एक दुखद घटना है—हमारे कुछ बेहतरीन आदमी पकड़े गए हैं और कैद में हैं। तुम जानते हो कि सुरफुराज खान साहसी है, विवेक की सीमाओं को पार कर जाता है, और

इसी कारण अब तक कुछ ही लोग उसके मार्गदर्शन पर भरोसा करना पसंद करते थे; और अगर यह कमी न होती तो वह अब तक हमारे प्रमुख जमादारों में से एक होता, क्योंकि वह कई पीढ़ियों से ठग वंश का है, और उसका परिवार हमेशा से शक्तिशाली रहा है।'

'लेकिन बात ये है,' मैंने अधीरता से कहा; 'शीतान के नाम पर हमें उसके पूर्वजों से क्या लेना-देना है? आलिया की कसम! तुम तो बिल्कुल ही बुरी हो!'—

'नहीं, मैं इस पर कोई कहानी नहीं बनाने वाला था,' भूद्रिनाथ ने शांत भाव से कहा, क्योंकि कोई भी बात उन्हें क्रोधित नहीं कर सकती थी, 'इसलिए आप अपना आपा न खोएं; बल्कि सुनिए। कल शाम सुरफुराज खान ने दो सहोकरों को पकड़ लिया, जो औरंगाबाद जाने की तैयारी में थे; उसने उन्हें अपने साथ सराय में ठहरने के लिए राजी कर लिया और उन्हें अगली सुबह रवाना होना था। वे धनी प्रतीत होते थे, क्योंकि उनका सामान दो थैलों में सराय में लाया गया था और उनकी सावधानीपूर्वक रखवाली की जा रही थी। दुर्भाग्यवश, जैसे ही शाम ढली, दो-तीन अन्य व्यापारी, जिन्हें वे जानते प्रतीत होते थे, उनसे मिलने आए और उन्होंने उन्हें एक सप्ताह और रुकने और अपने साथ देश के भीतरी इलाकों की यात्रा में शामिल होने के लिए राजी कर लिया। सुरफुराज खान को अत्यंत निराशा हुई, लेकिन वे प्रस्ताव पर सहमत हो गए; लेकिन उन्होंने कहा कि रात में सराय से अपने थैले ले जाने में खतरा होगा, इसलिए उन्होंने अपने दोस्तों से कहा कि वे वहीं सोएंगे और सुबह उनसे मिलेंगे।' मैंने सुना है कि सुरफुराज खान ने उन्हें अपना इरादा बदलने के लिए हर संभव प्रयास किया, लेकिन व्यर्थ। तो आप जानते हैं कि उनके पास केवल एक ही विकल्प बचा था, जो था उन्हें सराय में ही मौत के घाट उतार देना और शवों का यथासंभव निपटान कर देना; इसके अलावा, रात में अपने थैलों को ले जाने के जोखिम से पुरुषों का डर इस बात का संकेत था कि वे थैले कीमती थे। मुझे मानना पड़ेगा, मीर साहब, यह प्रलोभन बहुत बड़ा था; यह प्रलोभन आप या मेरे लिए भी होता, तो खान के लिए कितना अधिक होता! यदि वह सुबह तक भी इंतजार करता, काम निपटाता और शवों को वहीं छोड़कर चला जाता, तो वह बड़ी मात्रा में लूट का माल लेकर आसानी से भाग सकता था, और शहर के पीछे से आकर आप या मुझसे मिल सकता था; हममें से कोई भी कारवां में उसकी जगह ले सकता था, और किसी को भी शक नहीं होता। लेकिन नहीं, उसने इस पर विचार नहीं किया; दोस्तों के जाने के तुरंत बाद ही उन आदमियों को मार डाला गया और उनके थैले लूट लिए गए: फिलहाल, हमें लूट का कुछ हिस्सा, मोतियों की दो मालाएँ मिली हैं, लेकिन सबसे कीमती मोती गायब हो गए हैं।'

'और इस मामले का पता कैसे चला? आपने यह नहीं बताया।'

'भूद्रिनाथ ने आगे बताया, 'कुछ ही देर बाद सहोकरों में से एक दोस्त एक संदेश लेकर लौटा; सुरफुराज खान ने बहाना बनाया कि वे बाहर गए हैं, लेकिन जल्द ही लौट आएंगे। वह आदमी काफी देर तक इंतजार करता रहा; लेकिन आखिरकार शक होने पर वह चला गया और बाकी लोगों के साथ लौटा, जिन्होंने अपने दोस्तों की तलाश करने पर जोर दिया। सुरफुराज खान ने शवों को आंगन में दफना दिया था, लेकिन उसके पास से कुछ ऐसी चीजें मिलीं, जिनकी बाकी लोगों ने शपथ लेकर पुष्टि की, साथ ही वे थैले भी मिले जिनमें शव रखे गए थे;

और अंत में, उन सभी को एक पहरेदार दल द्वारा शहर ले जाया गया, जिसे कहीं न कहीं से इस उद्देश्य के लिए बुलाया गया था, सिवाय उनमें से एक, हिम्मत खान, जो सुरफुराज का अपना आदमी था, जो संयोगवश अनुपस्थित था।'

मैंने कहा, 'यह वाकई एक दुखद मामला है, और मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा है कि उन्हें इस स्थिति से निकालने के लिए क्या किया जा सकता है।'

'न ही मैं,' भूद्रिनाथ ने उत्तर दिया; 'लेकिन यह बुराई शकुनों को न मानने और उन्हें मानने के बाद उन पर ठीक से ध्यान न देने के कारण होती है।'

'बकवास!' मैंने कहा; 'तुम हमेशा इन मूर्खतापूर्ण शकुनों के बारे में बकवास करते रहते हो, मानो सफलता मजबूत इरादों और चतुर योजनाओं से कहीं अधिक इन्हीं में निहित हो। मुझे इन पर विश्वास नहीं है।'

'तुम्हें एक दिन इसका पछतावा जरूर होगा,' भूद्रिनाथ ने कहा; 'यकीन मानो, तुम्हें पछतावा जरूर होगा; मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं शकुनों की अनदेखी के विनाशकारी परिणामों के सौ उदाहरण गिना सकता हूँ, और जो मैं कह रहा हूँ उसकी पुष्टि तुम्हारे पिता भी कर देंगे।'

मैंने कहा, 'पू, वह तुम्हारी ही तरह अंधविश्वासी और मूर्ख है; मेरे विश्वास की कमी पर अपना विलाप मुझसे करने के बजाय तुम उससे क्यों नहीं करते?'

उन्होंने उत्तर दिया, 'मैं ऐसा करता, लेकिन ऐसा लगता है कि उन्होंने पूरे अभियान का भार आपको सौंप दिया है और नेता एवं संचालक के रूप में अपनी भूमिका को भूल गए हैं। क्या किसी ने कभी सुना है कि पूरा दल अलग हो गया हो और प्रत्येक सदस्य बिना शगुन देखे या भवानी को कोई गंभीर बलि चढ़ाए बिना अलग-अलग रास्ते पर चल पड़ा हो?'

मैंने व्यंग्यपूर्वक कहा, 'मुझे लगा था कि तुमने वे सभी रस्में पूरी कर ली हैं जिन्हें तुम इतना ज़रूरी समझते हो; और अगर तुमने नहीं की हैं, तो हम तुम्हारे सिवा और किसकी ओर देखें, जो निशान-बुरदार हो? आलिया और उसके पैगंबर की कसम! भूद्रिनाथ, मुझे लगता है तुमने हम सबको धोखा दिया है; और,' मेरा क्रोध भड़क उठा, 'मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि मेरे पिता के बारे में तुमने जो कहा है, उससे सावधान रहो; याद रखो कि मैं उनके विरुद्ध बोले गए किसी भी शब्द का बदला लेने में सक्षम और इच्छुक हूँ, और मैं ऐसा करूँगा।'

'युवक,' भूद्रिनाथ ने गंभीरता से कहा, 'तुम भली-भांति जानते हो कि मैं व्यर्थ के झगड़ों में नहीं पड़ता, और तुम्हारे ये क्रोधित शब्द व्यर्थ हैं; मैं तुमसे विनती करता हूँ कि इन्हें अपने पास रखो, उन लोगों के लिए जो इनसे नाराज होकर तुम्हें प्रसन्न करेंगे—मेरे लिए ये तुच्छ बातें हैं। जिन शकुनों को तुम्हारे और मेरे दोनों धर्मों के ठगों ने हमारी सफलता के लिए आवश्यक माना है, उन पर तुम्हारा भरोसा न करना केवल तुम्हारी अनुभवहीनता का परिणाम है; हमने आवश्यक भेंटों की उपेक्षा की है, और देखो इसका दंड। यद्यपि अभी तो हम पर इसका हल्का प्रभाव पड़ा है, लेकिन यह कहना मुश्किल है कि कब हम सब खतरे में पड़ जाएँगे; मान लो कि पकड़े गए लोगों में से किसी को यातना दी जाती है और वह हमारा भेद खोल देता है, तो हम कैसे बच पाएँगे?'

'तो फिर आप क्या सलाह देते हैं?' मैंने कहा।

'मैं सबसे पहले भवानी को भेंट अर्पित करने का प्रस्ताव रखूंगा, और फिर बंधक बनाए गए लोगों की रिहाई के लिए ऐसे उपाय करूंगा जो भविष्य में हम सभी द्वारा तय किए जाएंगे।'
मैंने कहा, 'आप सभी रस्में पूरी कीजिए; आप और मेरे पिता जानते हैं कि इन्हें कैसे करना है; मेरी अज्ञानता आपके उद्देश्य को बिगाड़ सकती है, इसलिए मैं रस्में पूरी होने तक आपसे दूर रहूंगा।'
'आप सही कह रहे हैं, ऐसा हो सकता है, और मुझे खुशी है कि आपने आखिरकार समझदारी से बात की: आपके पिता कहाँ हैं?'
मैंने कहा, 'वह अंदर सो रहा होगा, और बेहतर होगा कि तुम उसके पास जाओ।'
साहब, बलिदान किए गए, शकुन देखे गए और शुभ घोषित किए गए। वे क्या थे, मुझे नहीं पता; उस समय मुझे इन अनुष्ठानों में इतनी कम रुचि थी कि मैं उनके पास भी नहीं गया और न ही यह पूछा कि क्या किया गया था। बाद में कई विपत्तियों के कारण ही मुझे इनका महत्व और उपयोगिता समझ में आई, जो निस्संदेह मेरे अहंकार को कम करने के लिए थीं; तब से मेरा विश्वास इन अनुष्ठानों में अडिग है, जैसा कि आप आगे जानेंगे।
मेरे पिता और भूद्रिनाथ प्रसन्न चेहरों के साथ मेरे पास लौटे। उन्होंने कहा, 'भवानी अपने थोड़े से क्रोध के बावजूद प्रसन्न है: वास्तव में, हमने किसी न किसी रूप में उसकी उपेक्षा की थी, लेकिन अब वह संतुष्ट है।'
मैंने कहा, 'चूंकि ऐसा है, तो हमें इन बेचारे लोगों के लिए कुछ करना चाहिए; लेकिन क्या करें, यह मुझे नहीं पता। आपने कब कहा था कि उन्हें पकड़ा गया था, भूद्रिनाथ?'
'लगभग आधी रात के समय।'
'अब वे कहीं न कहीं कैद में हैं, और दिन के समय उनकी रिहाई करवाना नामुमकिन है: मैं रिश्वत देने की हिम्मत नहीं कर सकता, क्योंकि लोग कहते हैं कि कोतवाल हुसैन अली खान एक नेक इंसान हैं। उन्हें उनके सामने कब पेश किया जाएगा?'
'मुझे नहीं पता,' भूद्रिनाथ ने कहा, 'पर इसका आसानी से पता लगाया जा सकता है;' और वह गली में चले गए और थोड़ी देर बाद लौट आए: 'मैंने एक बूढ़े बुनेया से यह सवाल पूछा, या यूं कहें कि कोतवाल किस समय अपना दरबार लगाते हैं, और उन्होंने मुझे बताया कि रात के पहले और दूसरे पहर में।'
'तो फिर,' मैंने कहा, 'उन्हें बलपूर्वक बचाना होगा, और मैं ऐसा करूंगा।'
'असंभव!' दोनों ने एक साथ कहा।
मैंने कहा, 'परन्तु मैं ये कर दिखाऊंगा। हिम्मत खान कहां है? उसके साथ और अपने छह सबसे अच्छे आदमियों के साथ, अगर वे मेरा साथ दें तो मैं ये कर दिखाऊंगा। क्या उनमें से कोई कोतवाल का घर जानता है?'
उन्हें बुलाया गया था, लेकिन किसी को भी इसकी जानकारी नहीं थी।
'तो फिर,' मैंने कहा, 'मैं अभी जाऊंगा और पता लगाऊंगा, और जब मेरी योजना पूरी हो जाएगी तो वापस आऊंगा।'

'मैं जाकर अपने कुछ आदमियों को ले आता हूँ,' भूद्रिनाथ ने कहा; 'मैं दोपहर तक वापस आ जाऊँगा।'
'बुद्रिनाथ, ध्यान रखना कि वे अपनी तलवारें और ढालें लेकर आएं; उनमें से कुछ स्वेच्छा से मेरे साथ चलने को तैयार हो सकते हैं।'
'मैं ऐसा एक के लिए करूंगा, मीर साहब; आपके विश्वास की कमी के बावजूद मुझे आप पर भरोसा है;' और वह हँस पड़ा।
मैंने कहा, 'मैं तुम्हें समझता हूँ; क्या तुम मुझे माफ कर दोगे?'
'ज़रूर; क्या मैंने कभी आपसे झगड़ा किया है?'
'नहीं, बिल्कुल नहीं, हालांकि आपके पास कारण था; मैं मूर्ख था।'
'अरे, ये सब क्या है?' मेरे पिता ने कहा; 'क्या तुम दोनों के बीच कोई अनबन तो नहीं हुई?'
मैंने जवाब दिया, 'यह कुछ भी नहीं है, क्योंकि आप इसका अंत देख सकते हैं; लेकिन मेरा समय बर्बाद हो रहा है, मुझे जाना होगा।'
मैं शहर में गया और आसानी से एक व्यक्ति से कोतवालों का घर पता कर लिया। वह एक लंबी, संकरी गली में था, जो देखने में किसी व्यस्त सड़क जैसी नहीं लग रही थी। यह मेरे उद्देश्य के लिए बिल्कुल उपयुक्त था, क्योंकि भीड़भाड़ वाली जगह में हम कुछ खास नहीं कर पाते। हमारे मित्रों को ले जाने वाले लोगों को अचानक घेरना बहुत आसान लग रहा था, और मुझे पूरा विश्वास था कि अगर अचानक हमला हुआ तो वे भाग जाएंगे और अपने कैदियों को उनके हाल पर छोड़ देंगे।
मैं वापस लौटा और अपने पिता के सामने अपनी जाँच-पड़ताल के नतीजे रखे। उन्हें इस काम से कोई आपत्ति नहीं थी, लेकिन मुझे इसमें जो अहम भूमिका निभानी होगी और हमारी हार की संभावना को लेकर वे काफी चिंतित थे।
लेकिन,' उन्होंने कहा, 'मेरे बेटे, ये कायरतापूर्ण विचार हैं जो अक्सर स्नेह के कारण उत्पन्न होते हैं, और अल्लाह न करे कि इनका तुम पर कोई प्रभाव पड़े: जाओ, पैगंबर के नाम पर, जिनकी सुरक्षा में मैं तुम्हें सौंपता हूँ।'
शाम होते-होते मैं, भूद्रिनाथ और छह अन्य लोग, जिनमें से दो राजपूत थे, शहर की ओर चल दिए। उन्होंने कसम खाई थी कि असफल होकर लौटने के बजाय मरना बेहतर होगा। हम अलग-अलग हो गए, लेकिन एक-दूसरे पर नज़र रखते रहे, और वे सब मेरे पीछे उस गली तक आए जहाँ कोतवाल रहते थे। वहाँ हम कुछ घंटे इधर-उधर घूमते रहे और मैं बहुत बेचैन हो गया। क्या वे कभी आएंगे? क्या उन्हें इससे पहले ही सज़ा मिल चुकी थी, दोषी ठहराया जा चुका था और जेल में डाल दिया गया था? ये सवाल मैंने खुद से हज़ार बार पूछे। दरबार लग रहा था, यह मुझे घर में आने-जाने वाले लोगों की संख्या से पता चल गया था, लेकिन फिर भी हमारे भाइयों का कोई अता-पता नहीं था।

मैं गली में लगभग इकलौती एक टुम्बोली की दुकान में बेसुध बैठा था, तभी हिम्मत खान मेरे पास आया। मैंने उसके चेहरे से समझ लिया कि उसे कोई खबर है, और वह उस छज्जे से नीचे उतरा जिस पर उस आदमी ने अपना सामान फैला रखा था, और एक अंधेरे कोने में मुड़ गया।

'वे आ रहे हैं,' उसने चिंता से हांफते हुए कहा; 'मैं गली के एक छोर पर और खोसीअल सिंह दूसरे छोर पर नजर रख रहे थे: वे मेरे छोर से आ रहे हैं, और अब लगभग आधे रास्ते तक पहुंच चुके होंगे।'

'और उनकी सुरक्षा कौन कर रहा है?' मैंने पूछा।

'ओह,' उसने कहा, 'लाइन-वालाओं का एक दस्ता, लगभग बीस सैनिक पुरानी बंदूकों के साथ; हम उनमें से सौ को काट सकते हैं।'

मैंने पूछा, 'क्या उन्होंने अपनी संगीनें तैयार कर रखी हैं?'

'उन्होंने कर तो लिया है; लेकिन उससे क्या फर्क पड़ता है? वे कायर बदमाश हैं, और तुम देखोगे कि वे भाग जाएंगे।'

'तब,' मैंने कहा, 'दौड़कर उधर स्थित भूद्रिनाथ को बताओ; उससे कहो कि वह उस तरफ से नीचे जाए, मैं इस तरफ से नीचे जाऊँगा; जब हम उनके पास पहुँचेंगे तो मैं झिरनी दूँगा।'

मेरे चारों साथी अब मेरे साथ आ गए थे, जैसा कि मैंने उन्हें निर्देश दिया था कि अगर वे मुझे किसी से बात करते हुए देखें तो वे मेरे पास आ जाएँ: भूद्रिनाथ अपने साथियों के साथ आ गया था, और खोसीअल सिंह भी, जिसने दूसरे छोर पर अपनी निगरानी छोड़ दी थी और ठीक समय पर पहुँच गया था। हमारी टुकड़ियाँ एक-दूसरे के ठीक सामने वाली गली में आगे बढ़ीं। मुझे खतरे का कोई आभास नहीं था, हालाँकि यह पहली बार था जब मैंने किसी साथी प्राणी के विरुद्ध क्रोध में तलवार उठाई थी, और मैं खुद को एक अचानक और भयंकर लड़ाई में झोंकने वाला था। हमारी ढालें देखने में तो हमारी बाहों पर ढीली और सहज लग रही थीं, लेकिन हमने उन्हें कसकर पकड़ रखा था, और हमारी तलवारें म्यान में स्वतंत्र थीं। मैंने उस दल को आते देखा; वे लापरवाही से आगे बढ़ रहे थे, और अगर मेरे साथियों के हाथ कसकर बंधे न होते, और सभी एक रस्सी से बंधे न होते, जिसे दल के नेता ने अपने हाथ में पकड़ रखा था, तो वे आसानी से भाग सकते थे। हमारे सैनिक सड़क के बीचोंबीच इकट्ठा हो गए, और जब हम आने वाले दल के करीब पहुँचे, तो मैंने ज़ोर से पुकारा, 'भाई पान लाओ!' यही संकेत था—हमारी तलवारें म्यान से निकलीं और हम सिपाहियों पर टूट पड़े। मैंने दाएं-बाएं वार किए और दो सिपाही गिर पड़े; बाकी भी उतने ही सफल रहे: मैं कैदियों की ओर दौड़ा, और अपनी तलवार और पास खड़े लोगों के कुछ ही वारों से उनके बंधन काट दिए और वे आज़ाद हो गए। जैसा कि हिम्मत खान ने कहा था, हमले के तुरंत बाद सारे सिपाही भाग गए।

'मेरे भाइयों, द्वारों की ओर भागो, वरना वे बंद हो जाएँगे!' मैंने पुकारा; 'इन संकरी अंधेरी गलियों से भागो; कोई नहीं जानेगा कि तुम कौन हो और न ही कोई तुम्हारी परवाह करेगा।'

हम सब पल भर में तितर-बितर हो गए। मैंने अपनी खून से सनी तलवार को म्यान में रखते हुए चारों ओर जल्दी से नज़र डाली और देखा कि पाँच बेचारे ज़मीन पर पड़े कराह रहे थे। बस, इतना ही काफी था: मैं भी

पास की गली में भागा, जिस द्वार से मैं अंदर आया था वहाँ पहुँचा, और मीर जूमला तालाब के किनारे पहुँचते ही नीचे बने बगीचों और बाड़ों में घुस गया, और उनसे होकर जाने वाली गलियों से जल्दी ही अपने पिता के घर पहुँच गया।

साहब, कैदियों के अंगरक्षक दल पर हमला इतना अचानक और इतनी जल्दी हुआ कि मैं आपको इसका बस एक धुंधला सा अंदाजा ही दे सकता हूँ कि यह कितनी जल्दी हुआ और खत्म हुआ: इसमें उतना समय भी नहीं लगा जितना मुझे इसे बताने में लगा है, और मैं तब से अक्सर सोचता हूँ कि शोर और अफरा-तफरी, न केवल हमारे द्वारा बल्कि उस झड़प को देखने वाले कुछ यात्रियों द्वारा भी मचाई गई, ने पूरी गली को क्यों नहीं डराया और निवासियों को हम पर हमला करने के लिए उकसाया।

सुबह तक हमारे सभी साथी अलग-अलग निर्धारित स्थानों पर मौजूद थे; लेकिन यह सोचकर कि अब हम शहर में सुरक्षित नहीं हैं, मेरे पिता ने उन सभी को हसैन सागर के शिविर में भेज दिया, जहाँ उन्होंने उन्हें प्रतीक्षा करने के लिए कहा, क्योंकि हम जानते थे कि वहाँ हमारी तलाश कभी नहीं की जाएगी।

अब हमें रोकने के लिए केवल पिछले दस दिनों में लूटी गई संपत्ति को निपटाने का काम बचा था, और उसमें से कुछ भी कीमती नहीं था; मोतियों की कुछ मालाएँ, कई शॉल और कुछ बिना तराशे हुए कीमती पत्थर ही सबसे अच्छे थे, और उन्हें जल्दी ही बेच दिया गया: सोने और चांदी को पहले की तरह पिघला दिया गया था।

अध्याय XIX

जिससे पाठक को यह पता चलेगा कि अमीर अली ने एक व्यस्त दोपहर बिताई।

अब मेरे सामने केवल दो ही मामले थे; एक तो ज़ोरा का पता लगाना, और दूसरा अपने साथ लाए गए विनिमय बिलों को भुनाने का प्रयास करना।

पहले वाले के बारे में तो मुझे बहुत कम उम्मीद थी; क्योंकि जिस दिन से मैं उसके घर गया था, तब से, हालांकि मैंने घर के आसपास लगातार पहरा लगवा रखा था, मुझे उसके या उस बूढ़ी नर्स के बारे में कुछ भी पता नहीं चल पाया था; नर्स को मैंने अच्छी खासी रिश्वत दी थी, और मैं जानता था कि अगर मेरी प्रेमिका के बारे में कोई भी जानकारी मुझे मिल सकती, तो वह जरूर देती। मैं कई बार खुद उस घर के पास से गुजरा था, इस उम्मीद में कि शायद किसी तरह ज़ोरा दिख जाए; लेकिन सब व्यर्थ था; और जिस समय की मैं अब बात कर रहा हूँ, उस समय मैं लगभग निराशा में उसे छोड़ चुका था। साहब, अगर मेरे धंधे में इतना आकर्षण न होता, तो मैं उदासीनता और दुख में डूब जाता, क्योंकि मैं उससे बहुत प्यार करता था। यही वह चीज थी जिसने मुझे खुद से बचाया, क्योंकि मैं रोमांच की तलाश में बाकियों से पीछे नहीं रह सकता था; और एक बार जब मेरे पास पूरी तरह से मेरे नेतृत्व में एक टोली हो गई, तो मैं लगातार उनके लिए काम ढूंढने और उसके बाद होने वाली विपत्तियों में खुद हिस्सा लेने में व्यस्त हो गया।

अपने साथियों को बचाए जाने के अगले दिन हमने एक बैठक की, जिसमें दल के प्रमुख सदस्य उपस्थित थे। मुझे विवरण देने की आवश्यकता नहीं है; संक्षेप में इतना कहना ही पर्याप्त है कि सभी इस बात पर सहमत थे कि हम अपनी सुरक्षा के लिहाज़ से पर्याप्त समय तक वहाँ रह चुके हैं, और अगले दिन या ज़्यादा से ज़्यादा उसके अगले दिन प्रस्थान करने का निर्णय लिया गया। उस समय दल जिस प्रकार विभाजित थे, उन्हें बारी-बारी से बीडर की ओर जाने वाले सबसे नज़दीकी रास्ते से जाना था, जो पुट्टुनचेरू से होकर जाता था; और पुट्टुनचेरू ही वह स्थान था जहाँ से हम सब एक साथ आगे बढ़ेंगे।

इसलिए मेरे पास बहुत कम समय बचा था; और जैसे ही संभव हुआ, मैंने भूद्रिनाथ और मोतीराम को अपने साथ लिया और हम शहर में चले गए। हम चार मीनार की सीढ़ियों पर बैठ गए। कोतवाल सैनिकों के साथ हुई हमारी झड़प की कहानियाँ वाकई आश्चर्यजनक थीं; दोनों पक्षों के मारे गए और घायल हुए लोगों के विवरण हास्यास्पद रूप से असंगत थे, और आप कल्पना कर सकते हैं कि हमने उन विभिन्न कहानियों को सुनकर कितना आनंद लिया, जो या तो उन लोगों से सुनी गई थीं जिन्होंने खुद को घटना का प्रत्यक्षदर्शी बताया था, या जिन्होंने इसे निर्विवाद रूप से विश्वसनीय सूत्रों से सुना था। लेकिन हमारा उद्देश्य व्यर्थ की कहानियाँ सुनकर समय बर्बाद करना नहीं था, जिनमें एक शब्द भी सत्य नहीं था, बल्कि सैयद मोहम्मद अली उर्फ कुमाल खान के सामान में मिले नोटों के लिए पैसे जुटाना था, और हम चार मीनार इसलिए गए थे क्योंकि वहाँ हमें सबसे अधिक संभावना थी कि कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाए जो उन्हें पढ़ सके और बिना किसी संदेह के बता सके कि वे किसके नाम पर लिखे गए थे।

हम बैठे-बैठे एक दयनीय, अधमरे से दिखने वाले व्यक्ति को देखकर, जिसके सिर पर पगड़ी और कान के बीच एक कलम फंसी थी, बगल में स्याही की बोतल लटकी थी और बगल में कागज का एक बंडल था, मुझे लगा कि वह हमारे उद्देश्य के लिए उपयुक्त है। मैंने उसे इशारा किया और वह उत्सुकता से हमारी ओर दौड़ा। मैंने पूछा, 'क्या तुम गूज़रेटी पढ़ सकते हो?'

'महोदय, मैं इसे न केवल पढ़ सकता हूँ बल्कि लिख भी सकता हूँ, क्योंकि यह मेरी मातृभाषा है; मेरे स्वामी के क्या आदेश हैं?'

मैंने कहा, 'बस एक हन्दी पढ़ना - कोई बड़ी बात नहीं है;' और मैंने उसे एक नोट पकड़ा दिया।

'यह आदेश है, साहब, जो नंदैर के बेरी मुल द्वारा कुमाल खान (मेरा अनुमान है कि मेरे स्वामी का यही नाम है) के पक्ष में, बेगम बाजार के गोपाल चुंद बिसन चुंद पर चार सौ रुपये के लिए, नौ दिनों के भुगतान पर जारी किया गया है।'

'क्या यह सही ढंग से बनाया गया है?' मैंने पूछा।

उस व्यक्ति ने नोट को देखा और उसे बार-बार घुमाकर उसके हर हिस्से की जांच की।

'क्या आपको इस बात का संदेह है?'

'भगवान न करे!' मैंने कहा; 'क्योंकि अगर यह गलत हुआ तो मैं और मेरे ये सम्मानित साथी बर्बाद हो जाएंगे, क्योंकि हमारे पास ऐसे और भी मामले हैं, और बड़ी रकम के।'

उस आदमी ने कहा, 'मुझे इस बिल में कुछ भी गलत नहीं दिख रहा है; लेकिन मुझे बाकी बिल भी देखने दीजिए।' मैंने उन्हें दिखा दिए।

उन्होंने कहा, 'ये सभी बातें सही हैं; आपको बस इन्हें स्वीकार करना है, और आप अपने पैसे को लेकर निश्चिंत हो जाएंगे।'

'क्या जिस कंपनी के चित्र इन पर आधारित हैं, वह सुप्रसिद्ध है?'

उस व्यक्ति ने कहा, 'उनका ग्रामीण इलाकों में हुंडी (एक प्रकार की कार) का काफी कारोबार है, और शायद इसी वजह से वे हमारे कई प्रमुख बैंकरों की तुलना में कम जाने जाते हैं, लेकिन फिर भी यह फर्म बेहद सम्मानित है।'

'आपने कहा था कि वे कहाँ रहते हैं?'

'बेगम बाजार में। यदि महाराज और महाराज चाहें तो मैं आपके साथ वहां चलूंगा।'

मैंने कहा, 'अच्छा, ऐसा ही करो; हम अजनबी हैं, और शायद हमें घर आसानी से न मिले। तुम्हें तुम्हारी मेहनत का फल मिलेगा।'

हम चार मीनार से नीचे जाने वाली एक गली के आखिर में बने एक छोटे से फाटक से शहर से बाहर निकले—मुझे लगता है इसे दिल्ली फाटक कहते हैं—और नदी पार करने के बाद बाईं ओर मुड़कर हम जल्द ही उस घनी आबादी वाले और समृद्ध उपनगर के बीच पहुँच गए जहाँ हमारे खोजी बैंकर रहते थे। मुख्य सड़क से होकर जाने वाला रास्ता लगभग पूरी तरह से अनाज की बोरियों, माल के गट्ठों, अनाज ढोने वालों के बंधे हुए

बैलों और खाली गाड़ियों से भरा हुआ था; और इन कारणों और भीड़ के कारण हमारे लिए साथ चलना मुश्किल हो रहा था। भीड़ का शोर, बाज़ार में खरीद-फरोख्त का शोर, बैल चालकों और माल उतारने वालों की गालियाँ और अपशब्द, अनाज नापने वालों की चीखें और हजारों अन्य आवाज़ों ने मिलकर ऐसा कोलाहल और अव्यवस्था पैदा कर दी थी जो मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी। फिर भी, धक्का-मुक्की करते हुए हम एक सभ्य दिखने वाले घर तक पहुँचे और हमारे साथ आए व्यक्ति ने हमें एक साझेदार से मिलवाया।

मैंने हिम्मत दिखाते हुए एक हुंडी पेश की। साहूकार एक बूढ़ा आदमी था, और उसने अपनी पगड़ी की तह से चश्मा निकालकर अपनी नाक पर लगाया और हुंडी को ध्यान से पढ़ा; फिर उसने उसे बार-बार घुमाया और बड़ी सावधानी से उसकी जांच की, और बीच-बीच में अपने चश्मे के ऊपर से बड़ी शंका भरी निगाहों से मेरी ओर देखा।

मैं मानता हूँ कि अगर मैं अकेला होता तो यह स्थिति अप्रिय होती, लेकिन मेरे साथ आए दो साथियों के साथ मुझे कोई परवाह नहीं थी; अगर हालात बदतर भी हो जाते, तो हमारे हथियार तैयार थे, और हम अपनी स्वतंत्रता के लिए उनका इस्तेमाल करते।

साहूकार ने कहा, 'मैं आपसे कुछ बातें करना चाहता हूँ, कृपया मेरे साथ अगले कमरे में चलें।' उन्होंने उस कमरे की ओर इशारा किया जो हमारे कमरे से जुड़ा हुआ था। वे उठे और मैं उनके पीछे-पीछे चला गया।

'तुम्हें यह कैसे प्राप्त हुआ?' उसने चिंता से पूछा; 'और तुम कौन हो?'

'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं कौन हूं,' मैंने जवाब दिया; 'आपके लिए इतना जानना ही काफी होगा कि मुझे उस हुंडी के लिए और इनके लिए भी पैसे मिलने वाले हैं;' और मैंने उसे बाकी चीजें दिखाईं।

'यह तो बेहद असाधारण है!' उसने उनका निरीक्षण करने के बाद कहा। 'मेरी समझ से परे है। यह बहुत अजीब है कि इन्हें किसी और ने प्रस्तुत किया है। युवक, तुम किस अधिकार से यहाँ यह धन लेने आए हो?'

'जिसके लिए वे खींचे गए थे, उसी के द्वारा,' मैंने उत्तर दिया।

'उसका नाम, और उन साहूकारों का नाम जिन्होंने उन्हें चित्रित किया?'

'कुमाल खान, और सहौकर का, बेरी मुल।'

'यह ठीक नहीं है,' साहूकार ने कहा; 'तुमने अपने काम में गलती की है, नौजवान; दराज का नाम तो कोई भी तुम्हें बता सकता था।'

'शायद इससे आपको इस विषय पर और अधिक जानकारी मिल सके,' मैंने कहा, और मैंने अपनी कमरबंद से स्यूद की मुहर निकाली।

उसने उसकी जांच की और कमरे में रखे एक बक्से से कागजों का एक बंडल निकाला। उसने उन्हें तेजी से पलटा।

'अरे, ये रहे,' उन्होंने पढ़ते हुए कहा, '"स्यूद मोहम्मद अली के वृत्तांत"; और अब, नौजवान, अगर उस मुहर में कोई छल है तो उसे आसानी से साबित किया जा सकता है, क्योंकि देखो स्वयं पूज्य स्यूद की मुहर;' और उन्होंने मुझे कागजों में से एक पर छपी छाप दिखाई।

मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं बहुत असमंजस में था, क्योंकि अगर दुर्भाग्यवश मेरे हाथ गलत मुहर लग जाती तो मेरी पहचान निश्चित रूप से उजागर हो जाती; लेकिन फिर भी मैंने अंगूठी उस आदमी की उंगली से ही ली थी, और यह संभव नहीं था कि उसके पास कोई दूसरी अंगूठी हो। हालाँकि, जैसे ही मैंने उस पर निशान देखा, मैं आश्वस्त हो गया कि यह सही निशान है।

साहूकार ने स्याही से मुहर को रगड़ते हुए और कागज के एक टुकड़े को जीभ से कुरेदते हुए कहा, 'अब सबूत का समय है। अगर तुमने छल करने की कोशिश की है, नौजवान, तो तुम्हारा पकड़ा जाना निश्चित है। क्या मैं इस पर मुहर लगा दूं?'

'बिल्कुल,' मैंने कहा; 'मैंने आपको धोखा देने का कोई प्रयास नहीं किया है। आदरणीय स्यूद ने मुझे यह मुहर इसलिए दी ताकि आप संतुष्ट हो सकें।'

उसने मुहर को कागज पर दबाया और फिर हटा लिया; छाप एकदम सही थी, और खातों के कागज पर बनी छाप से बिल्कुल मेल खाती थी।

'यह सही है,' उसने अंत में कहा; 'हालांकि मैं फारसी नहीं पढ़ सकता, लेकिन अक्षर एक जैसे दिखते हैं और आकार भी बिल्कुल सही है। इसलिए मैं अब और संदेह नहीं कर सकता; लेकिन फिर भी यह बहुत अजीब है।'

मैंने कहा, 'मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि मैं स्यूद का गोपनीय एजेंट हूँ, जिसे उसने आपसे पैसे लेने के लिए भेजा है; यदि आप भुगतान नहीं करेंगे, तो ऐसा कह दें, ताकि मैं उसे पत्र लिख सकूँ।'

साहूकार ने कहा, 'बिल्कुल नहीं; पैसा तो यहीं है। लेकिन खुद सैयद क्यों नहीं आया? बिल तो सिर्फ उसी के नाम पर देय हैं।'

'सच है,' मैंने कहा, 'वे हैं; लेकिन अगर आप उनके भरोसेमंद हैं, जैसा कि आप प्रतीत होते हैं, तो आपको पता होगा कि इस समय शहर से उनकी अनुपस्थिति के अच्छे कारण हैं, और चूंकि उन्हें पैसों की जरूरत थी, इसलिए उन्होंने इसके लिए मुझे पैसे भेजे हैं।'

और वह कहाँ है?

मैंने कहा, 'मैं आपको यह नहीं बता सकता; यह किसी को भी नहीं बताया जा सकता; आपके लिए इतना जानना ही काफी है कि उचित समय आने पर वह अपने छिपने के स्थान से प्रकट होगा।' और मैंने सच कहा, साहब, क्योंकि क्या वह न्याय के दिन नहीं उठेगा?

और अमीर अली अपनी ही शेखी पर दिल खोलकर हँसे।

साहूकार ने कहा, 'खैर, पैसे पर आपके अधिकार को लेकर कोई संदेह नहीं है। आपको यह कब चाहिए? नोट नौ दिनों के भीतर उपलब्ध हैं।'

'अब, मेरे पास समय नहीं है, मुझे सुबह निकलना होगा। आप नौ दिनों का ब्याज काट सकते हैं। लेकिन रुकिए,' मैंने आगे कहा, 'स्यूद ने मुझे बताया था कि अगर उसका आप पर कोई बकाया है तो आप उसे काट लें, और अगर आपके पास उसका कोई भी बकाया बचता है तो आप उसे मुझे दे दें।'

'अच्छा,' साहूकार ने उत्तर दिया; 'मैं देख लेता हूँ;' और वह अपनी किताबों की ओर मुड़ा। 'अरे, ये रहा हिसाब। आखिरी हिसाब लगभग एक साल पहले, सफर के पंद्रहवें दिन हुआ था, उसके पक्ष में तीन सौ बारह रुपये चार आना थे।'

मैंने कहा, 'तो और भी अच्छा है; अब मुझे पैसे दे दो और रसीद लिख दो; मैं उस पर मुहर लगाकर हस्ताक्षर कर दूंगा, जिसे मुझे अपने साथ वापस ले जाना होगा।'

साहूकार ने अंदर बैठे एक आदमी को आवाज़ दी।

'लो,' उसने कहा, 'इन गुंडों को रजिस्टर करो और इनके पैसे ले लो, और एक रसीद बना दो। तुम्हारा नाम?' उसने मुझसे पूछा।

'अमीर अली, नालायक स्यूद।'

धन की विधिवत गणना की गई, ब्याज के लिए मामूली कटौती की गई, और पूरी राशि मुझे दे दी गई। मैंने रसीद पर अपनी और साहूकार की मुहर लगा दी, और साहूकार के बहीखातों में शेष राशि विधिवत रद्द होने के बाद, विलंब करने का कोई कारण नहीं बचा था।

साहूकार ने कहा, 'तुम इतना सारा पैसा कैसे ले जाओगे? इतनी देर रात (क्योंकि शाम ढल रही थी) इतनी बड़ी रकम लेकर लोगों का बाहर निकलना सुरक्षित नहीं है।'

मैंने कहा, 'आप संतुष्ट रहें; हम तीन साहसी लोग हैं और अपने दावे का बचाव करने में पूरी तरह सक्षम हैं।'

'कम से कम मेरे दो आदमियों को तो साथ ले जाना ही बेहतर होगा, ताकि वे पैसे ले जा सकें।'

'अगर मुझे अनुमति दी जाए तो मैं कुछ सामान ले जाऊंगा,' हमारे साथ आए उस व्यक्ति ने कहा। 'भुगवान जानता है कि मैंने आज कुछ नहीं खाया है, और इन भले लोगों से मिलने से पहले मुझे यह नहीं पता था कि मुझे खाना कहां मिलेगा; और शायद मैं उनके द्वारा वादा की गई राशि से थोड़ा अधिक कमा लूं।'

'अच्छा,' मैंने कहा; 'तुम कितना भार उठा सकते हो?'

उसने उत्तर दिया, 'दो हजार रुपये, यदि मेरे स्वामी मुझे आजमाना चाहें।'

'ठीक है, तो वह थैला उठा लो।' बाकी का सामान हमने आपस में बाँट लिया और चल दिए। हम जिस रास्ते से गए थे, उसी रास्ते से नहीं लौटे, बल्कि शहर से बचते हुए अंग्रेज़ रेज़िडेंट के घर के पास से गुज़रे, उसके नीचे से नदी पार की और दूसरी तरफ़ कुछ तंग गलियों में घुस गए, जो हमारे उपनगर की ओर जाती थीं। चलते-चलते मैंने भूद्रिनाथ से रामासी भाषा में कहा, जो मैंने अब सीख ली थी, 'वह आदमी ज़िंदा नहीं रहना चाहिए; हमारा राज़ साहूकार के पास सुरक्षित है, लेकिन किसी और के पास नहीं। तुम्हारा क्या कहना है?'

'मैं आपसे सहमत हूं,' उसने कहा। 'हम शव को कुएं में फेंक सकते हैं; और मुझे लगता है कि एक कुआं पास ही है; मैंने आज सुबह वहीं स्नान किया था।'

'ठीक है,' मैंने कहा; 'जब आपको वह जगह दिख जाए तो संकेत दे देना। मैं उसके द्वारा की गई परेशानी और हमारे पैसे की ढुलाई के लिए उससे हमारे सारे हिसाब-किताब निपटा दूंगा।'

हम कुएँ के पास पहुँचे और इशारा दिया गया; मैं और मेरा शिकार दोनों तैयार थे, लेकिन उसने बहुत संघर्ष किया, क्योंकि रुपयों से भरा थैला उसके कंधों पर था, और मेरे रूमाल को उचित मौका नहीं मिला। फिर भी उसकी मृत्यु हो गई, और हमने उसे कुएँ में फेंक दिया, उसके कपड़ों में एक बड़ा पत्थर बाँध दिया ताकि वह डूब जाए।

साहब, यह अजीब बात है कि अपनी गरीबी का इतना बखान करने के बाद भी हमें उनकी कमरबंद में तैंतालीस रुपये मिले!

मेरी सफलता पर मेरे पिता की खुशी का अंदाजा आप खुद लगा सकते हैं; और मेरी चतुराई और हाजिरजवाबी के महत्व को समझने के लिए, उन्होंने मुझे मेरे द्वारा लाई गई राशि में से पांच सौ रुपये भेंट किए।

यह सब मेरे हाथ में होने के कारण, मैंने ज़ोरा को पाने की आखिरी कोशिश करने का निश्चय किया, क्योंकि मुझे लगा कि इससे मैं उस बुढ़िया को रिश्वत दे सकता हूँ जो खुद को उसकी माँ कहती थी; और देर हो चुकी थी, फिर भी मैंने कोई बहाना बनाया और शहर की ओर चल पड़ा। मैं जल्द ही उस जानी-मानी गली में पहुँच गया, और दरवाजा खुला देखकर अंदर चला गया, जहाँ मुझे उस बुढ़िया और ज़ोरा की बहन ज़ेनत के सामने पेश किया गया।

मुझे देखकर वे उठ खड़े हुए और मेरा सहृदयतापूर्वक स्वागत किया।

‘मीर साहब, मोहरम के बाद से आप हमारे साथ नहीं रहे,’ बूढ़ी औरत ने अपनी सभी उंगलियों को कनपटी पर चटकाते हुए कहा। ‘आप जानते थे कि आप हमेशा हमारे सबसे प्रिय अतिथि रहेंगे, फिर भी हमने आपको नहीं देखा। हमसे यह अलगाव क्यों हो गया है?’

मैंने उस बूढ़ी औरत पर मुझे दरवाजे से लौटाने का आरोप लगाना पसंद नहीं किया, जैसा कि मैंने पहले बताया था, इसलिए मैंने कहा कि मैं शहर से बाहर था और अभी-अभी लौटा हूं और उसे प्रणाम करने आया हूं।

'और अब, माँ,' मैंने कहा, 'ज़ोरा कहाँ है? गुलाब को बुलबुल से अलग क्यों किया गया है?'

'ज़ोरा!' बूढ़ी औरत ने कहा; 'क्या तुम उस मूर्ख लड़की को अभी तक नहीं भूली हो? क्या ज़ेनाबी नहीं है, जो तुम्हारे लिए मर रही है और जब से उसने तुम्हें देखा है, तुम्हारे बारे में बड़बड़ा रही है?'

'टोबा! टोबा!' ज़ेनत ने बनावटी ढंग से अपना चेहरा ढकते हुए कहा। 'शर्म करो, माँ! तुम ऐसा कैसे बोल सकती हो? तुम ऐसे झूठ कैसे बोल सकती हो?'

'मैं सच कह रही हूँ, मीर साहब; मैं कसम खाती हूँ कि उस भोली लड़की का दिमाग आपकी सुंदरता पर मोहित हो गया है;' और उसने प्यार से मेरी ठोड़ी सहलाई।

मैं क्या कर सकता था? मुझे तुरंत समझ आ गया कि अगर मैं ज़ेनत के लिए प्यार का इज़हार नहीं करूँगा तो ज़ोरा के बारे में मुझे कभी कुछ सुनने को नहीं मिलेगा; लेकिन मैं उसे इतनी आसानी से भूल भी नहीं सकता

था, और मैं ज़ेनत से उसके प्यार के लिए नफ़रत करता था। मैंने सोचा कि अगर हो सके तो तुरंत समझौता कर लेना ही बेहतर होगा।

'माँ,' मैंने कहा, 'मुझे आपकी बेटी के प्यार पर गर्व है, और मुझ जैसे छोटे बच्चे के लिए, जिस तरह से वह मुझे अपना प्यार दिखाती है, वह बहुत ही सुखद है; फिर भी मैं ज़ोरा को नहीं भूल सकता: और कसम से बताइए, क्या मुझे उससे मिलना चाहिए या नहीं? अब मेरी बात सुनिए; मैं अमीर नहीं हूँ, न ही ऐसा कोई जो उस पर हज़ारों खर्च कर सके, लेकिन जो मेरे पास है वह हमेशा के लिए उसका है, और आपका भी, अगर आप उसे मुझे सौंप देंगी। क्या आप उसे मुझसे अलग करेंगी?'

'आप क्या पेशकश करते हैं?' बूढ़ी औरत ने कहा। 'मुझे लगता है कि आप हमारे किसी रईस का भेस बदलकर यहाँ ऐसी पेशकश लेकर आए हैं।'

मैंने कहा, 'मैं कोई रईस नहीं, बल्कि एक गरीब स्यूद हूँ। मेरे पास पाँच सौ रुपये हैं, और ये आपके हैं अगर आप ज़ोरा को हमेशा के लिए मेरा बना दें; बस एक शब्द कह दीजिए, और मैं आ जाऊँगा; हम एक मूला मंगवाएँगे, और निकाह हो जाएगा।'

'पांच सौ रुपये!' बूढ़ी औरत चिल्लाई और वह और उसकी बेटी बेकाबू होकर हंसने लगीं। 'पांच सौ रुपये!' आखिरकार जब वह बोल पाई, तो बोली; 'अरे यार, तुम या तो पागल हो या नशे में हो!'

मैंने बहुत गुस्से से जवाब दिया, 'मैं न तो वह हूँ और न ही वह; मैं तुम दोनों की तरह ही होश में हूँ, बल्कि कहीं ज्यादा होश में हूँ।'

'तो अगर तुम ऐसे हो,' उस बुढ़िया ने कहा, 'आलिया के नाम पर तुम्हें क्या मिला है कि तुम्हें लगता है कि हम ज़ोरा को पाँच सौ रुपये के लिए बेच देंगे? पाँच हज़ार और दुगुना भी काफ़ी नहीं होगा।'

'तब,' मैंने कहा, 'तुम दोनों शैतान की औलाद हो, और मैं तुम पर थूकता हूँ। मुझे अपने घर से कुत्ते की तरह भगाने से संतुष्ट न होकर, अब तुम मुझे धरती पर मिलने वाली मेरी इकलौती खुशी से भी वंचित कर रही हो। हे स्त्री, क्या तुम्हारे पास दिल नहीं है?'

'हाँ,' बूढ़ी औरत क्रोध से चिल्लाई; 'हाँ, हमने तुम्हें ठुकरा दिया था, जैसा कि मैं अब कर रही हूँ। चले जाओ! और फिर कभी इस तरह घुसपैठ करने की हिम्मत मत करना, वरना मैं देखूँगी कि क्या मैं कुछ तगड़े आदमियों को इकट्ठा करके तुम्हें लाठियों से पीट-पीट कर बाहर नहीं निकाल सकती, जैसे तुम कुत्ते के बच्चे हो।'

'शांत हो जाओ! स्त्री,' मैंने पुकार कर कहा; 'मेरे पिता को अपशब्द कहने से सावधान रहो।'

'उसका मुँह मिट्टी से भर जाए और उसकी कब्र अपवित्र हो जाए! तुम्हारी माँ...'

मैं इसे और बर्दाश्त नहीं कर सका। मैं अपने जूते लेने के लिए दरवाजे की ओर भागा और एक जूता हाथ में धमकी भरे अंदाज में पकड़ लिया।

मैंने कहा, 'अब अगर तुमने एक और अपशब्द कहा, तो मैं तुम्हारे मुंह पर मारूंगा।'

उसने उसे नहीं रोका। उसके होंठों से गालियों की एक नई बौछार निकल पड़ी, और मैं सचमुच क्रोधित हो गया। मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सका। मैं उस पर झपटा, उसके चेहरे पर अपने जूते से मारा और उस पर थूक दिया। बेटी सीढ़ियों के ऊपर भागी और चीख-पुकार मचाने लगी।

'चोर, चोर! वह हमारी हत्या कर रहा है! कासिम, मोहम्मद अली, तुम कहाँ हो? हमारी हत्या कर दी गई है—हमारी बदनामी हुई है! अपनी तलवारें लाओ और उसे मार डालो!'

मैंने उस बुढ़िया को खूब परेशान कर दिया था, और मुझे लगा कि अब जाने का समय हो गया है; इसलिए मैं दरवाजे की ओर भागा, और ज़ीनत को पकड़कर पूरी ताकत से कमरे के दूसरी तरफ फेंक दिया। मैंने देखा कि वह बुरी तरह गिरी है, और मैं सीढ़ियों से नीचे भागा: लगभग आधे रास्ते में मुझे एक आदमी मिला जिसके हाथ में तलवार थी; वह खड़ा था, और मुझ पर वार करने ही वाला था, लेकिन मैंने उसकी बांह पकड़ ली और उसे सीढ़ियों से नीचे फेंक दिया, और जैसे ही वह नीचे लुढ़का, मैं उसके ऊपर से कूद गया और पलक झपकते ही घर के बाहर था।

खैर, मैंने आगे बढ़ते हुए सोचा, मुझे ज़ोरा तो नहीं मिली, लेकिन मैंने उसकी मां, उस बूढ़ी शैतान को चप्पल से पीट दिया है, जो कुछ हद तक संतोष की बात है, और जब भूद्रिनाथ मेरे इस कारनामे के बारे में सुनेगा तो वह शायद ही कभी हंसेगा।

अध्याय XX

सीआईएल. महोदया, आपका गीत बेहद भावुक है। एएलवी. तो क्या तुम मेरी हालत पर दया नहीं करोगी?
पुराना खेल
'आलिया की खातिर! नौजवान,' एक सभ्य दिखने वाले घर के द्वार के नीचे से गुजरते हुए एक धीमी और मधुर आवाज ने कहा; 'आलिया की खातिर, अंदर आओ और मेरी मालकिन को बचाओ!'
मैंने वक्ता को देखते हुए सोचा, "नए रोमांच।" वह एक युवा लड़की थी, जिसने गुलामों जैसे कपड़े पहने थे।
'तुम कौन हो?'
वक्ता ने कहा, 'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; क्या आप कल दोपहर दो अन्य लोगों के साथ इस रास्ते से नहीं गुजरे थे?'
'मैंने किया, और उससे क्या फर्क पड़ता है?'
'सब कुछ; मेरी प्रेमिका, जो पूर्णिमा के चंद्रमा से भी अधिक सुंदर है, ने तुम्हें देखा और तुम्हारे प्रति दीवानी हो गई है।'
मैंने कहा, 'मुझे खेद है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैं उसकी मदद कर सकता हूँ।'
'लेकिन तुम्हें ऐसा करना ही होगा,' लड़की ने कहा; 'तुम्हें करना ही होगा, वरना वह मर जाएगी; मेरे पीछे आओ, मैं तुम्हें उसके पास ले जाऊंगी।'
मैं हिचकिचाया, क्योंकि मैंने भोले-भाले लोगों को फंसाने के लिए बिछाए गए जालों की अजीबोगरीब कहानियां सुनी थीं—कि कैसे उन्हें दुष्ट स्त्रियों की सुख-सुविधाओं के लिए घरों में फुसलाकर ले जाया जाता था और फिर उनकी हत्या कर दी जाती थी। लेकिन यह विचार क्षणिक ही था। 'हिम्मत रखो! अमीर अली,' मैंने मन ही मन कहा; 'अपने अच्छे नुस्सीब पर भरोसा रखो और उसका पालन करो। इंशाल्लाह! कुछ मज़ा आएगा।'
मैंने उस लड़की से कहा, 'देखो, मैं पूरी तरह से हथियारों से लैस हूँ; मैं तुम्हारे पीछे आऊँगा, लेकिन अगर हिंसा दिखाई गई, तो जो लोग मेरा विरोध करेंगे, उन्हें तेज तलवार की धार का सामना करना पड़ेगा।'
'मैं तुम्हारी कसम खाकर कहती हूँ, कोई खतरा नहीं है। मेरे स्वामी गाँव गए हैं और अपने साथ सभी पुरुषों को ले गए हैं; घर में मेरे अलावा दो दासियों और तीन बूढ़ी महिलाओं के अलावा कोई नहीं है।'
'तो फिर आगे बढ़ो,' मैंने कहा; 'मैं तुम्हारे पीछे आता हूँ।'
वह द्वार से अंदर आई और मुझे एक आंगन से होते हुए एक खुले कमरे में ले गई, जहाँ एक खूबसूरत और भव्य वस्त्र पहने लड़की बैठी थी; लेकिन उसने मुझे देखते ही तुरंत अपने दुपुत्ते से खुद को ढक लिया और चिल्लाई, 'हे आलिया! ये तो वही है; क्या मैं इतनी भाग्यशाली हूँ?'
'जी हां, देवी,' मैंने कहा, 'आपका दास आपके चरणों में है और आपसे प्रार्थना करता है कि आप उस पर्दे को हटा दें जो सच्चे विश्वासी की निगाहों से स्वर्ग की एक हूर को छुपाता है।'

'जाओ,' उसने धीमी आवाज़ में कहा; 'अब जब तुम यहाँ हो तो मैं तुम्हारी तरफ देखने की हिम्मत नहीं कर सकती; आलिया के नाम पर जाओ! क्या तुम मेरे बारे में नहीं सोचोगे?'
मैंने कहा, 'आपका दास अपनी जाति में सबसे प्रिय है; मैं आपसे विनती करता हूँ कि मुझ पर एक नजर डालें, और फिर यदि आप चाहें तो मुझे जाने का आदेश दें।'
'मैं नहीं कर सकती,' उस सुंदर लड़की ने कहा, 'मैं नहीं कर सकती, मेरी हिम्मत नहीं है; आह, नर्स, तुमने मुझसे क्या करवा दिया?'
उस बुजुर्ग महिला ने मुझे अपने चेहरे से घूंघट हटाने का इशारा किया, और मैंने धीरे से ऐसा किया; उसने थोड़ा विरोध किया, लेकिन व्यर्थ; पल भर में मैंने घूंघट हटा दिया, और मैंने अब तक देखी सबसे खूबसूरत आँखों की एक जोड़ी ने अपनी कांपती हुई निगाहें मुझ पर टिका दीं—और फिर मैंने उसे अपने दिल से लगा लिया।
'यह सही है,' बूढ़ी औरत ने कहा; 'मुझे प्रेमी में कुछ जोश देखना अच्छा लगता है; माशाल्लाह! वह एक नेक युवक है;' और वह आई और उसने मेरे सिर पर अपनी उंगलियां चटका दीं।
'अब मैं आप लोगों से विदा लेती हूँ,' उसने कहा; 'आप लोगों को आपस में बहुत कुछ कहना है, और रात तेजी से बीत रही है।'
'नहीं, नहीं, नहीं!' लड़की चिल्लाई; 'हमें छोड़कर मत जाओ; यहीं रहो, अच्छी नर्स, मैं अकेले उसके साथ रहने की हिम्मत नहीं कर सकती।'
'बकवास,' बूढ़ी औरत चिल्लाई, 'यह मूर्खता है; उसकी बातों पर ध्यान मत दीजिए, महाराज;' और वह कमरे से चली गई।
'महारानी,' मैंने कहा, 'चिंता न करें, आपकी दासी भरोसेमंद है;' और मैं उससे दूर हटकर कालीन के किनारे बैठ गया।
'मुझे नहीं पता साहब, आप मेरे बारे में क्या सोचेंगे,' उसने कहा, 'और मैं यह स्वीकार करने में असमर्थ हूँ कि कल जब मैंने आपको अपने घर के पास से गुजरते देखा तो मैं आप पर मोहित हो गई थी; लेकिन ऐसा ही हुआ; आपकी सुंदरता देखकर मेरा जिगर पानी हो गया और मैं आपके लिए इतनी तड़पी कि मेरे सेवकों को लगा कि मैं मर जाऊंगी। उन्होंने कहा कि वे आपका इंतजार करेंगे, और आलिया ने मेरी प्रार्थना सुन ली और आपको भेज दिया।'
मैंने कहा, 'उसने एक समर्पित दास भेजा है; एक ऐसा दास जिसकी आत्मा प्रेम से जल रही है, ठीक वैसे ही जैसे बुलबुल गुलाब के लिए जलती है: बोलिए, और मैं आपका आदेश मानूंगा।'
'मेरी कहानी सुनो, तब तुम्हें पता चलेगा कि मुझ पर तरस क्यों आता है,' उस सुंदर लड़की ने कहा; 'और यह कुछ शब्दों में बयां हो जाती है। मैं साधारण माता-पिता की बेटी थी, लेकिन मैं वैसी ही थी जैसी तुम मुझे देख रहे हो—लोग कहते हैं कि मैं सुंदर हूँ; उन्होंने मेरी शादी मेरे पति से कर दी—ऐसा उन्होंने कहा—लेकिन उन्होंने मुझे बेच दिया। साहब, वह बूढ़ा है, वह ज़ालिम है, उसने मुझे अपने जूते से पीटा है, और मैंने उसकी

कुरान पर कसम खाई है कि मैं अब उसके घर में नहीं रहूँगी। हाँ, मैंने कसम खाई है: मैं कल ही भाग जाती, लेकिन मैंने आपको देखा, और मैंने आलिया से प्रार्थना की कि वह आपको भेज दे, और उसने ऐसा ही किया है। अब मेरे बारे में जो चाहो सोचो, बस मुझे बचा लो!' और वह उठी, और मेरे पैरों पर गिरकर मेरे घुटनों को पकड़ लिया। 'आप मुझे शरण देने से इनकार नहीं करेंगे? अगर आप ऐसा करते हैं, और आपका दिल मेरे प्रति कठोर है, तो बस एक ही बात बाकी है— मैंने एक कड़वा पेय तैयार किया है, और कल का सूरज मेरे शव को देखेगा।'

'हे भगवान! महिला,' मैंने कहा। 'जिसने मुझे आपके पास भेजा है, उसने एक इच्छुक और निडर दास को भेजा है: मेरे साथ अभी उड़कर आइए, और मैं आपको एक ऐसे पिता के पास ले जाऊँगा जो आपका स्वागत करेगा, और एक ऐसे दूर देश में ले जाऊँगा जहाँ हमारे भागने का कभी पता नहीं चलेगा।'

'अभी—इतनी जल्दी?' उसने हैरानी से कहा।

'जी, महिला, अभी इसी वक्त अपना घर छोड़ दो; मैं अपनी जान देकर तुम्हारी रक्षा करूंगा।'

'मैं ऐसा करने की हिम्मत नहीं कर सकती, साहब, मैं ऐसा करने की हिम्मत नहीं कर सकती; अगर हमारा भेद खुल गया तो हमारा क्या होगा? आप तो बच जाएँगे, लेकिन मैं—आप जानते हैं कि अगर कोई महिला षड्यंत्र में पकड़ी जाए तो उसका क्या हश्र होता है।'

'तो फिर क्या किया जा सकता है?' मैंने कहा। 'हाय! मैं इस शहर में अजनबी हूँ, और मुझे नहीं पता कि क्या सलाह दूं।'

'मैं अपनी नर्स को बुलाती हूँ; चलो सब कुछ उसी पर छोड़ देते हैं। - कुल्लू!'

बुजुर्ग महिला अंदर आई। उसने कहा, 'आपके क्या आदेश हैं?'

मैंने कहा, 'सुनो; मैं तुम्हारी प्रेमिका से बेहद प्यार करता हूँ; लेकिन यहाँ प्रेम में डूब जाना ठीक नहीं है, क्योंकि यहाँ खतरा है और हमें भागना होगा। मैं इस शहर में अजनबी हूँ और अपने घर, जो हिंदुस्तान में है, के लिए रवाना होने वाला हूँ, जहाँ मैं उसे सुरक्षित पहुँचा दूँगा। वह मेरे साथ चलने को तैयार है और मुझे बस तुम्हारी मदद और सलाह चाहिए।'

'उड़ जाना! घर और सबको छोड़कर हिंदुस्तान जाना, वो भी एक अनजान के साथ! अज़ीमाबी, ये तो पागलपन है; तुम्हें कैसे पता कि वो कौन है और तुम्हें कहाँ ले जाएगा? मैं तुम्हारी मदद नहीं करूँगा। मैं चाहता था कि तुम्हारा कोई प्रेमी हो और मैंने तुम्हें उसे पाने में मदद भी की; लेकिन ये तो सरासर पागलपन है—हम बर्बाद हो जाएँगे।'

'माँ,' मैंने कहा, 'मैं धोखेबाज नहीं हूँ; मैं आपकी कसम खाकर कहता हूँ कि मैं वफादार रहूँगा; बस हम दो बेसहारा जीवों की मदद कीजिए जिनका प्यार एक-दूसरे पर टिका है, और हम जीवन भर आपके सिर पर पैगंबर का आशीर्वाद चाहेंगे। मैं कल यहाँ से जा रहा हूँ; मेरे पिता व्यापारी हैं और मेरे साथ आ रहे हैं; उनके पास हम दोनों के लिए पर्याप्त धन है, और मैं उनकी इकलौती संतान हूँ: हम जल्द ही किसी भी पीछा करने वाले से दूर हो जाएँगे, और अपनी खुशी में हम हमेशा आपको इसके लिए धन्यवाद देंगे। अरे, माँ, क्या आप

कुछ उपाय नहीं कर सकतीं? क्या गोलकोंडा के रास्ते में कोई ऐसी जगह नहीं है जहाँ आप हमारी मुलाकात तय कर सकें? मैं आपको भरपूर इनाम दे सकता हूँ, और अभी आपको सौ रुपये देने का वादा करता हूँ, अगर आप मेरी बात मान लें।'

मेरी बातों से अज़ीमा को हिम्मत मिली और वह बुढ़िया के पैरों में गिर पड़ी। 'कुल्लू!' वह रोते हुए बोली, 'क्या तुम मुझे बचपन से नहीं जानतीं? क्या मैंने तुम्हें बचपन से प्यार नहीं किया? हाय! अब मेरे न तो माता हैं और न ही पिता; और क्या उसने मुझे जूते से नहीं पीटा? क्या मैंने इस घर को छोड़ने की कसम नहीं खाई थी? और क्या तुमने मेरी मदद करने की कसम नहीं खाई थी?'

'मैं क्या करूँ? मैं क्या करूँ?' नर्स रोते हुए बोली; 'हाय, मैं बेबस हूँ; मुझ जैसी बूढ़ी औरत क्या कर सकती है?'

'कुछ भी, सब कुछ,' मैंने कहा; 'मुश्किल समय में महिला की बुद्धिमत्ता कभी विफल नहीं हुई।'

'क्या आपने हुसैन शाह वुल्ली की दरगाह जाने की मन्नत नहीं मांगी थी?' अज़ीमा चिल्लाई; 'और क्या आपने यह नहीं कहा था कि अगर मैं अपनी पिछली बीमारी से ठीक हो जाऊं तो आप मुझे उस पवित्र संत के दरगाह पर नज़ूर पेश करने ले जाएंगे?'

'तुमने सही कहा, मेरी प्यारी!' नर्स ने कहा; 'मैं अपना वचन भूल गई थी। साहब, क्या आप कल दोपहर को दरगाह पर हमसे मिल सकते हैं?'

मैंने कहा, 'निश्चित रूप से मैं उपस्थित रहूंगा। अच्छी नर्स, हमें निराश मत करना, और मैंने जो सौ का वादा किया है, उसमें पचास और जोड़ दिए जाएंगे।'

'आपकी दया और उदारता बढ़ती रहे!' वह बोली। 'साहिब, मैंने इस सुंदर कन्या से उसके बचपन से ही प्रेम किया है, और यद्यपि यह मेरे हृदय को बहुत कष्ट देगा, मैं उसे आपके हाथों में सौंप दूंगी ताकि उसे उन अपमानों का और अधिक सामना न करना पड़े जो वह पहले ही झेल चुकी है।'

'धन्यवाद, धन्यवाद, अच्छी नर्स, मैं आप पर विश्वास करती हूँ; लेकिन उसके सिर की कसम खाओ कि तुम अपना वादा नहीं तोड़ोगी।'

'मैं कसम खाती हूँ,' बूढ़ी औरत ने अज़ीमा के सिर पर हाथ रखते हुए कहा, 'मैं कसम खाती हूँ कि वह तुम्हारी ही होगी।'

'बस बहुत हो गया,' मैं रोते हुए बोली, 'मैं संतुष्ट हूँ; अब, एक आलिंगन और मैं तुम्हें छोड़कर चली जाती हूँ। मेरे पिता मुझे बहुत याद करेंगे, और उन्हें डर होगा कि इस वीरान शहर में मेरी हत्या कर दी गई है।'

हमने एक लंबा, भावुक आलिंगन किया, और मैंने खुद को उससे अलग कर लिया।

'कल,' मैंने पुकारते हुए कहा, 'और दरगाह में हम मिलेंगे, फिर कभी अलग नहीं होंगे। इसलिए हिम्मत रखो, मेरे प्रिय, और अपने सामने आने वाली चुनौतियों के लिए अपनी सारी ऊर्जा जुटा लो। कल का दिन हम दोनों के लिए यादगार होगा, और मैं आलिया के लिए समृद्धि की प्रार्थना करती हूँ।'

'हाँ, ज़रूर,' नर्स चिल्लाई; 'डरने की कोई बात नहीं। नुरगिज़ वफ़ादार है और हमारे साथ आएगा; बाकी सब तो बहुत पहले सो चुके हैं और उन्हें पता भी नहीं कि तुम यहाँ हो। लेकिन अब जाओ; और देर करना खतरनाक है, और नुरगिज़ तुम्हें सड़क तक ले जाएगा।'
उसने आवाज़ दी, और वही दास जिसने मुझे अंदर आने का रास्ता दिखाया था, मुझे दरवाजे तक ले गया।
'हे महाराज, अपने माता-पिता की कसम, बेवफाई मत कीजिए, वरना इससे उनकी जान चली जाएगी।'
'मुझे शपथ लेने की आवश्यकता नहीं है, सुंदर युवती,' मैंने कहा; 'तुम्हारी मालकिन की सुंदरता ने मेरा दिल पिघला दिया है, और मैं हमेशा के लिए उसका हो गया हूँ।'
'तो फिर आलिया तुम्हारी रक्षा करे, अजनबी! यही तुम्हारा रास्ता है, अगर तुम उसी रास्ते से जाओ जिससे तुम कल आए थे।'
मैं गली में मुड़ी और जल्दी ही घर पहुँच गई। मेरे पिता सो रहे थे, और मैं लेट गई; लेकिन, आलिया! आलिया! मेरा दिल कितनी ज़ोर से धड़क रहा था और मेरा सिर कितना दर्द कर रहा था! हज़ार बार मैंने चाहा कि काश मैं सुंदर अज़ीमा को अपने साथ ले जाती; हज़ार बार मैंने अपनी मूर्खता को कोसा कि मैंने उसे छोड़ दिया, जबकि मेरे एक शब्द से ही वह घर और सारे बंधन छोड़कर मेरे पीछे आ जाती; लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। उलझे हुए विचारों और व्यर्थ के पछतावे के बीच मैं सो गई: लेकिन मुझे बुरे सपने आए। मैंने सोचा कि उसके अपमानित प्रेमी ने हमें प्रेम के घूंट लेते हुए घेर लिया है, और उसके सिर पर तलवार चमक रही है, जिससे वह अपने अपमान का बदला लेने वाला है। फिर मैंने कल्पना की कि वह दरगाह के मूलों में से एक है, और जैसे ही वह हमारे साथ जाने वाली थी, और एक गाड़ी में कदम रख रही थी, वह उस पर झपटा और उसे पकड़ लिया, और मैंने उसे उससे छुड़ाने की व्यर्थ कोशिश की। मैं सपने की उत्तेजना में जाग गई, और मेरे पिता मेरे ऊपर खड़े थे।
“अमीर अली, मेरे बेटे, पैगंबर के नाम पर, क्या बात है?” बूढ़े ने पुकारते हुए कहा। “नमाज़ का समय हो गया है, मैं तुम्हें जगाने आया था, और मैंने देखा कि तुम नींद में बुरी तरह करवटें बदल रहे हो और किसी को पुकार रहे हो, हालाँकि मैं नाम पहचान नहीं पाया; आवाज़ किसी औरत की लग रही थी—शायद अज़ीमा। क्या कर रहे थे? क्या तुमने कल रात कुछ बुनीज (एक तरह का नशा) किया था?”
हमारे पीड़ितों के लिए बुनीज एक अपशब्द था, और इससे जुड़े विचारों से मैं कांप उठता था।
'नहीं, नहीं,' मैंने कहा, 'कुछ नहीं। मुझे जाने दीजिए और मैं अपना वज़ू कर लेती हूँ; मैं आपके साथ नमाज़ में शामिल हो जाऊँगी। इससे मेरे मन शांत होंगे और मैं आपको बताऊँगी।' हमारी नमाज़ समाप्त होने पर, मैंने पिछली रात की अपनी सारी बातें बताईं। ज़ोरा की माँ के साथ जो हुआ, उसे सुनकर वह दिल खोलकर हँसे और कहा कि मैंने उनके साथ सही किया है; लेकिन जब मैंने अज़ीमा के साथ वाली घटना का ज़िक्र किया, तो उनका चेहरा बदल गया और परेशान हो गया; फिर भी उन्होंने बिना रुके अंत तक मेरी बात सुनी, और मुझे इससे शुभ संकेत मिला। मैंने उनके चरणों में गिरकर और हमारे मिलन के लिए उनकी स्वीकृति माँगकर अपनी बात समाप्त की।

'अमीर अली, अब पीछे हटना नामुमकिन है,' उन्होंने कहा। 'अगर आप अज़ीमा से किया वादा पूरा नहीं करते, तो वह अपना तैयार किया हुआ ज़हर पी लेगी; आप उसकी मौत का एक कारण बनेंगे, और यह आपके अंतरात्मा पर भारी पड़ेगा; इसलिए मैं आपको अपनी सहमति देता हूँ। मैं अब बूढ़ा हो चुका हूँ, कुछ ही वर्षों में मेरा अंत हो जाएगा, और मेरी लंबे समय से यही इच्छा रही है कि मैं आपसे सम्मानपूर्वक विवाह करूँ और आपके बच्चों को देखूँ। हमने हिंदुस्तान छोड़ने से पहले वहाँ विवाह अनुबंध करने का प्रयास किया था, लेकिन मैं ऐसा करने में असमर्थ रहा। अब इसकी कोई आवश्यकता नहीं है; आपने अपना चुनाव कर लिया है और आपको इस पर कायम रहना होगा; आलिया ने आपकी दुल्हन को आपके पास भेजा है और आपको उसे स्वीकार करना होगा—मेरी शुभकामनाओं के साथ; और आप कहते हैं कि वह सुंदर है, इस मामले में आप भाग्यशाली हैं। आपको पैसों की ज़रूरत पड़ेगी, क्योंकि आपने उसकी दाई को कुछ देने का वादा किया है; अगर वह वफादार है, तो मेरी तरफ से उसे पचास रुपये और दे देना; और बेहतर होगा कि आप अपने साथ सोना ले जाएं— उसे ले जाना आसान होगा।'

'मेरे प्रिय और आदरणीय पिता जी, आपने बिल्कुल सही कहा!' मैंने कहा, 'और अब मैं खुश हूँ। मैं आपका आशीर्वाद चाहता हूँ और हमारी योजनाओं को आगे बढ़ाने का जिम्मा आप पर छोड़ता हूँ। हम शाम को पुट्टुनचेरू में फिर मिलेंगे।'

'इंशाअल्लाह! हम करेंगे,' उसने उत्तर दिया। 'सावधान और सतर्क रहना। मुझे किसी खतरे की आशंका नहीं है, लेकिन बेहतर होगा कि तुम अपने साथ कुछ आदमियों को ले जाओ।'

मैंने उठते हुए कहा, 'मैं जाऊंगा; मैं अपने कुछ भरोसेमंद लोगों को साथ ले जाऊंगा;' और मैं वहां से चला गया।

मेरा घोड़ा जल्द ही तैयार हो गया और मेरे आदमी भी तैयार हो गए; लेकिन अज़ीमा के लिए किसी वाहन की आवश्यकता थी, इसलिए मैं थोड़ी दूर स्थित एक घर की ओर भागा जहाँ एक व्यक्ति रहता था जो किराए पर बैलगाड़ी देता था। मैंने उससे पहले ही समझौता कर लिया था कि अगर मुझे ज़ोरा के बारे में कोई सूचना मिले तो मैं तैयार रहूँ, और मैंने उसे बीदर तक जाने के लिए कहा था।

मैंने कहा, 'आओ, फाजिल, मैं तैयार हूँ और समय आ गया है।'

'और वो महिला?' उस व्यक्ति ने मुस्कुराते हुए कहा।

'अरे, वह भी तैयार है, बस जल्दी करो, हमारे पास एक पल भी गंवाने का समय नहीं है।'

'मेरी मां के लिए मुझे बीस रुपये दे दो, और मैं बैलों को जोत दूंगा और तकिए-गद्दे लगा दूंगा।'

मैंने कहा, 'ये रहे; अब जल्दी करो—अपनी आत्मा की कसम, जल्दी करो!'

'मैं तुरंत वापस आता हूँ,' उसने कहा; और वह अपने घर के अंदर चला गया, लेकिन लगभग तुरंत ही अपनी गाड़ी के कुशन और पर्दे लेकर लौट आया।

अपनी तैयारी पूरी करते हुए और खंभे पर कूदते हुए उसने कहा, "देखो, मुझे यहाँ आए ज़्यादा समय नहीं हुआ है। अब मैं कहाँ जाऊँ? शहर की ओर?"

'नहीं,' मैंने कहा; 'हुसैन शाह वुल्ली की दरगाह तक। आप आगे चलें, हम आपके पीछे आएंगे, क्योंकि मुझे रास्ता नहीं पता।'
'मैं इसे अच्छी तरह जानता हूँ,' उसने कहा; 'मेरे पीछे-पीछे आओ।'
मैंने पूछा, 'क्या यह बेगम बाजार से होकर जाती है या कारवां से?'
'आप दोनों के माध्यम से या किसी एक के माध्यम से, जैसा चाहें'।
और क्या कोई दूसरा रास्ता नहीं है?
'रास्ता तो है, लेकिन थोड़ा लंबा है। हमें अंग्रेज़ों के निवास के पास से होकर गोशा महल की ओर मुड़ना होगा; यह सड़क हमें कारवां और बेगम बाज़ार दोनों से काफी पीछे ले जाएगी।'
मैंने कहा, 'बस इतना ही काफी है; मैं दोनों से बचना चाहता हूँ।'
'बिस्मिल्ला! तो फिर,' सारथी ने पुकारा, 'चलिए आगे बढ़ते हैं;' और अपने बैलों की पूंछ मरोड़ते हुए, उनके पिछले हिस्से पर अपने पंजों से हल्के से कुछ इशारे करके उन्हें सरपट दौड़ने के लिए प्रेरित किया, हालांकि थोड़ी दूर जाने से पहले ही उन्होंने अपनी गति धीमी कर ली। मैंने उसे कुछ दूर तक जाने दिया, और फिर अपने छोटे दल को आगे बढ़ाया।

अध्याय XXI

अमीर अली किस प्रकार नियति का इंतजार करते हैं और निराश नहीं होते।

हम जल्द ही शहर के बाहरी इलाके को पार कर गए और दरगाह की ओर बढ़ते रहे। मुझे उम्मीद थी कि रास्ते में अज़ीमा से मुलाकात हो जाएगी; लेकिन मेरी यह उम्मीद पूरी नहीं हुई। जैसे ही हम एक ऊँची पहाड़ी की चोटी से नीचे उतरे, गोलकोंडा के राजाओं के मकबरे हमारे सामने प्रकट हो गए, जो सामने की पूरी ऊँची ज़मीन पर फैले हुए थे। मैंने उन्हें पहले कभी नहीं देखा था, वास्तव में मुझे उनके अस्तित्व के बारे में पता भी नहीं था, और इसी वजह से वे और भी अधिक प्रभावशाली लग रहे थे। इतनी दूरी से भी मैं उनके आकार और भव्यता को देखकर चकित था; लेकिन जब हम उनके और करीब पहुँचे तो मेरा आश्चर्य और भी बढ़ गया! हमारे पास काफी समय था, और मैंने सोचा कि अगर दरगाह ज़्यादा दूर न हो, तो हम सड़क से हटकर उन्हें देखेंगे। मैं बैलगाड़ी के चालक के पास गया और उससे पूछा कि हम अपने गंतव्य से कितनी दूर हैं।

उस व्यक्ति ने कहा, 'अभी आपको दरगाह दिखाई नहीं दे रही है, लेकिन यह मकबरों के ठीक पीछे, एक बड़े तालाब की सीमा पर स्थित है; आप इसे आसानी से देख सकते हैं; इमली के पेड़ों से घिरे होने के कारण आपको इसका सफेद गुंबद और सोने का पानी चढ़ा हुआ शिखर दिखाई देगा।'

'बहुत अच्छा,' मैंने कहा; 'आप वहाँ जाइए, और यदि आपसे कोई प्रश्न पूछा जाए, तो कहना कि आप उस दल से हैं जो शहर से आ रहा है। हम मकबरों पर जाएंगे, और थोड़ी देर में आपसे मिल लेंगे।'

चालक सड़क पर ही चलता रहा, और हम उससे हटकर दिवंगत राजाओं के मकबरों की ओर चल पड़े। जैसे-जैसे हम उनके पास पहुँचे, उनका विशाल आकार और देखने का नज़रिया बदलने पर उनका सुंदर रूप हमारे मन पर गहरा प्रभाव छोड़ने लगा, वहीं उनके चारों ओर फैली वीरानगी ने उनकी गंभीरता को और बढ़ा दिया।

मेरे साथ आए पीर खान ने कहा, 'कितनी खेद की बात है कि शहर के भले लोग इन भव्य इमारतों के आसपास बगीचे नहीं बनाते! यह जगह बिल्कुल उपेक्षित प्रतीत होती है, मानो कब्रिस्तान हो।'

मैंने कहा, 'ये जैसे हैं वैसे ही बेहतर हैं; इस दयनीय पीढ़ी की धूल उस महान पीढ़ी की धूल से शायद ही मिल पाएगी जिसने अपनी महिमा का ऐसा स्मारक छोड़ा है।' पहले विशाल मकबरे में प्रवेश करते हुए मैंने आगे कहा, 'यहाँ राजा और राजकुमार लेटे हैं; वे लोग जिन्होंने तलवार की नोक पर अपने राज्य जीते और उन्हें बचाए रखा—आज की पतित पीढ़ी से कितने अलग, जो अपने खाने के लिए फेरिंगियों की उदारता के ऋणी हैं!'

हम एक संकरी सीढ़ी से मकबरे के शिखर तक चढ़े, और उस चबूतरे से, जहाँ से विशाल गुंबद शान से खड़ा था, शहर का नज़ारा बेहद खूबसूरत था; लेकिन यह उस नज़ारे के बराबर नहीं था जिसका वर्णन मैंने पहले किया है, क्योंकि हमें कोई भी सफेद इमारत दिखाई नहीं दी; पेड़ों के घने जंगल में केवल मक्का मस्जिद और चार मीनार ही दिखाई दे रही थीं, सिवाय उन अनगिनत सफेद मीनारों के जो हर दिशा में पत्तों के बीच से

उठती हुई दिखाई दे रही थीं। चबूतरे के दूसरी ओर से सभी बड़े मकबरे एक नज़र में दिखाई दे रहे थे—हर एक अपने आप में भव्य और प्रभावशाली था; लेकिन जब उन्हें छोटे आकार के अन्य मकबरों के साथ समूह में देखा गया, तो वे और भी भव्य हो गए, क्योंकि उनके बीच का अंतर उनकी विशालता को और बढ़ा रहा था। कोई भी प्राणी दिखाई नहीं दे रहा था; पुराना किला, जिसकी भूरी, जर्जर दीवारें चट्टानों के विशाल ढेर को ढके हुए थीं, निर्जन प्रतीत हो रहा था, और उन महान दिवंगत लोगों के निवासों के साथ सामंजस्य बिठा रहा था जिन्होंने इसे बनवाया था।

सन्नाटा और वीरानगी इतनी घुटन भरी थी कि हम एक-दूसरे से मुश्किल से ही कुछ कह पाए, क्योंकि हम एक-एक करके भव्य इमारतों के अंदरूनी हिस्सों से गुजर रहे थे - उनमें से कुछ अंधेरी और उदास थीं और चमगादड़ों और जंगली कबूतरों से भरी हुई थीं, जिनकी गुटरगू ऊंचे गुंबदों के भीतर गूंज रही थी - और अन्य जिनके चौड़े मेहराब दिन के उजाले को अंदर आने देते थे, और देखने में अधिक प्रसन्नतापूर्ण थे।

कुछ सबसे बड़े पेड़ों का निरीक्षण करने के बाद मैंने कहा, 'बस बहुत हो गया; हम यहाँ यूँ ही समय बर्बाद कर रहे हैं क्योंकि अभी भी हमारी प्रतीक्षा की जा सकती है। उधर ही दरगाह है, और बेहतर होगा कि हम वहाँ जाकर तैयारी कर लें, वह अब ज्यादा देर तक अनुपस्थित नहीं रह सकती।'

पवित्र भवन के पास पहुँचते ही मैंने देखा कि हमारी गाड़ी तैयार थी; पर कोई दूसरी गाड़ी नहीं थी, और मेरे मन में कुछ आशंका हुई कि अज़ीमा समय पर नहीं आ पाई होगी; और मैंने मन ही मन ठान लिया कि अगर वह दोपहर से पहले नहीं पहुँची, तो मैं शहर लौटकर अपनी दुल्हन को ढूँढूँगा, क्योंकि अब मैं उसे दुल्हन ही मानता था। मैं इतनी सुंदर स्त्री को उस व्यक्ति के बुरे बर्ताव के लिए नहीं छोड़ सकता था, जिससे उसकी शादी हुई थी— एक ऐसा व्यक्ति जो उसके जैसी अनमोल रत्न को पाने के लायक नहीं था; लेकिन अभी सुबह का समय था, और शायद दरगाह पहुँचने में उसे कुछ घंटे लग सकते थे, जो शहर से मेरी उम्मीद से कहीं ज़्यादा दूर थी।

मैं पवित्र परिसर में दाखिल हुआ और संत के मकबरे पर भेंट चढ़ाने के बाद, मैंने पूरी श्रद्धा से प्रार्थना की कि जिस उद्देश्य से हम आए हैं, वह सफल हो। यह करने के बाद, मैं पेड़ों की छाँव में बैठ गया और मकबरे की सेवा में लगे कई मूलों में से एक से बातचीत करने लगा, जो संत की कब्र पर लगातार कुरान पढ़ रहे थे। उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं कौन हूँ: मैंने उन्हें बताया कि मैं इसी शहर का निवासी हूँ और अपनी पत्नी को एक गंभीर बीमारी से ठीक होने पर संत से मन्नत पूरी करवाने के लिए लाया हूँ; 'लेकिन वह अभी तक नहीं आई हैं,' मैंने कहा; 'मैं अपने कुछ सेवकों के साथ निकल गया हूँ, वह मेरे पीछे आ रही हैं और जल्द ही यहाँ पहुँच जाएँगी।' घंटे बीतते गए, फिर भी अज़ीमा नहीं आई। साहब, मैं चिंता और बेचैनी से व्याकुल था: क्या उसके साथ कोई विपत्ति आ गई होगी? क्या उसका पति अचानक घर लौट आया होगा? क्या उसने मुझसे धोखा किया होगा? आह, आखिरी बात नहीं! उसका दुख, उसकी पीड़ा इतनी गहरी थी कि वह दिखावा नहीं कर सकती थी, और छल करने का उसका क्या मकसद हो सकता था? दोपहर हो गई, और नबूत का संगीत बजने लगा, फिर भी उसका कोई अता-पता नहीं था। मेरा सब्र लगभग टूट चुका था, और मैं उस जगह गया जहाँ मेरा घोड़ा खड़ा

था, उस पर सवार हुआ, और आदमियों को वहीं रुकने का आदेश देकर शहर की ओर चल पड़ा। मैं अभी उस छोटे से गाँव से आगे ही बढ़ा था जिसके चारों ओर दरगाह थी, कि मैंने तीन गाड़ियाँ देखीं जिन पर पर्दे सावधानी से बंद थे। मेरा दिल आशा से ज़ोर से धड़कने लगा, और मैंने वापस लौटने का निश्चय किया; मैंने सोचा, उनमें से एक तो उसकी ही होगी, और मैं दरगाह में उसका इंतज़ार करूँगा।

'वह आ रही है!' मैंने पीर खान से चिल्लाकर कहा, जब वह उत्सुकता से मेरे शीघ्र लौटने का कारण पूछ रहे थे, 'वह आ रही है! फाजिल को कहो कि वह अपनी गाड़ी तैयार रखे और उसे उस द्वार तक ले जाए जो पुत्तुनचेरू की ओर जाता है।'

मैं घोड़े से उतरा और द्वार पर खड़ा हो गया।

पहली गाड़ी आई; वह नर्तकियों से भरी हुई थी, जिन्होंने मंदिर में गाने की मन्नत मानी थी। उनमें से एक की आवाज कुछ समय पहले चली गई थी, लेकिन उनके अनुसार पवित्र वुल्ली की कृपा से उसे वापस मिल गई थी। वे मेरे पास से गुजरीं, और जल्द ही मैंने उनकी आवाज में मकबरे के अंदर उनके द्वारा गाए जा रहे गीतों में से एक को सुना।

दूसरी गाड़ी आई; तीन बूढ़ी औरतें बाहर निकलीं, जो मूलाओं के लिए मिठाई की कुछ थालियाँ लेकर आई थीं, जो किसी बीमार कुलीन महिला की ओर से भेंट की गई थीं, जिसने अपनी सेहत सुधारने के लिए संत से प्रार्थना और मध्यस्थता करने की विनती की थी।

मैंने उनमें से एक से कहा, 'माँ, क्या आपने शहर से आने वाली सड़क पर तीन महिलाओं वाली कोई गाड़ी देखी है, दरअसल मेरी ज़नाना?'

'हां,' महिला ने कहा, 'वे हमारे ठीक पीछे हैं; उनका वाहन एक नाले में खराब हो गया था जिसे हमें पार करना था, और वे बहुत धीरे-धीरे आ रहे हैं, लेकिन वे तुरंत यहां पहुंच जाएंगे; और महिलाएं सुरक्षित हैं, क्योंकि मैंने उनसे बात की और उन्हें अपने साथ ले जाने की पेशकश की, लेकिन किसी तरह नुकसान की मरम्मत हो गई थी, और उन्होंने मेरी पेशकश को अस्वीकार कर दिया।'

'अल्हम्दुलिल्लाह!' मैंने पुकारा, 'वे सुरक्षित हैं; मैं सुबह से यहीं इंतजार कर रही थी और उनके बारे में बहुत चिंतित थी।'

'इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं,' बूढ़ी औरत ने कहा, 'क्योंकि खानुम पीली और कमजोर दिख रही थी; लेकिन माशाल्लाह! वह सुंदर है, और मेरे स्वामी भी हर तरह से उसके योग्य हैं।'

मैंने लापरवाही से कहा, 'वह बीमार थी, और उसका आना उसके द्वारा किए गए एक मन्नत के कारण है।'

'ईश्वर आलिया उसे दीर्घायु और अनेक संतानें प्रदान करे! मुझे उन दोनों के प्रति अनायास ही रुचि उत्पन्न हो रही है जिन्हें उसने एक दूसरे के लिए उपयुक्त बनाया है; लेकिन मैं जा रहा हूँ, महोदय, मेरे साथी मेरे आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

वह भी चल बसीं, और कुछ ही क्षणों में वह गाड़ी जिसे देखने के लिए मैं व्याकुल था, कुछ उभरे हुए मकानों के कोने से मुड़ी और धीरे-धीरे द्वार की ओर बढ़ने लगी। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था! क्या वह मेरी जान थी,

मेरी आत्मा थी, या मुझे तीसरी बार निराशा ही हाथ लगने वाली थी? गाड़ी रुकी, और मैं उस बूढ़ी नर्स को प्रणाम करने के लिए बेताब था, जो सबसे पहले पर्दे से ढकी गाड़ी से बाहर निकली; मैं उसकी ओर दौड़ा, लेकिन चालक ने मुझे रोक दिया।

'यह एक ज़नाना है, महोदय,' उसने कहा, 'और शिष्टाचार के अनुसार आपको नज़रों से ओझल हो जाना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि उतरते समय उनके चेहरे दिखाई दे जाएं।'

'शांत हो जाओ, मूर्ख! ये औरतें मेरी अपनी हैं।'

'इससे मामला बदल जाता है,' उस आदमी ने कहा; 'और इस देरी के लिए मेरे स्वामी का क्रोध उनके दास पर नहीं पड़ना चाहिए; एक छोटी नदी पार करते समय धुरी टूट गई, जो एक ऐसी घटना है जिसे दूरदर्शिता से रोका नहीं जा सकता था, क्योंकि मोहरम के बाद इसे नया ही लगाया गया था।'

मैंने कहा, 'कोई बात नहीं; अब आप जा सकते हैं; मैं वापस आकर आपको आपकी मजदूरी दे दूंगा: वहाँ एक खाली गाड़ी खड़ी है जिसे मैं उनके लौटने के लिए किराए पर ले लूंगा।'

वह व्यक्ति थोड़ी दूरी पर हट गया, और मेरी सांसें थम गईं जब मैंने अपना सिर पर्दे के पीछे से अंदर डाला और अपनी प्रेमिका को बिना घूंघट के बैठे देखा, जो शब्दों में बयान से परे खूबसूरत थी, और उसके सुंदर चेहरे पर उसकी सफलता की खुशी की चमक थी।

'शुक्र खोदा!' वह खुशी से बोली, 'तुम यहाँ हो, मेरे सबसे प्यारे और प्रियतम; तुमने अपने निर्धन दास के प्रति विश्वासघात नहीं किया।' मैंने उसे अपनी बाहों में भर लिया और उसके होठों पर अनगिनत चुंबन अंकित कर दिए।

'टोबा! टोबा! शर्म करो!' बूढ़ी नर्स चिल्लाई; 'क्या तुम थोड़ी देर के लिए भी नहीं रुक सकते? उसे घोड़े से उतरने में मदद करो, और हम दरगाह में चलते हैं।'

मैंने ऐसा ही किया, और एक बुर्का में लिपटी हुई, बूढ़ी औरत और नुरगिज़ पर झुकी हुई, अज़ीमा मेरे पीछे बाड़े में आ गई।

हमारी पहली प्राथमिकता यह थी कि हम अज़ीमा द्वारा लाए गए कुछ पैसे और कुछ मिठाइयाँ मंदिर में अर्पित करें; जिस बूढ़े मूला से मैंने पहले बात की थी, उन्होंने उन्हें ग्रहण किया और कब्र पर रख दिया।

उन्होंने कहा, 'आपकी प्रार्थनाएं स्वीकार कर ली गई हैं, और आप जो भी प्रार्थनाएं करेंगे, हमारे दयालु संत आपके लिए पवित्र पैगंबर से विनती करेंगे कि वे पूरी हों।'

'धन्यवाद, प्यारी मूला,' मैंने कहा; 'मेरी बस यही इच्छा है कि मेरी आँखों का तारा स्वस्थ रहे और लंबी आयु तक मेरे साथ रहे। उसके साथ हमारा समय सचमुच चिंताजनक रहा है; लेकिन अब वह स्वस्थ हो गई है, और ईश्वर करे आलिया उसकी सेहत को बनाए रखे!'

उन्होंने उत्तर दिया, 'ऐसा ही होगा; अल्हम्दुलिल्लाह! हमारे पूज्य संत की प्रार्थनाएँ अद्भुत रूप से प्रभावशाली हैं, और मैं अपने प्रभु को यहाँ किए गए कई चमत्कारों के बारे में बता सकता हूँ।'

मैंने कहा, 'निस्संदेह, हुसैन शाह वुल्ली की ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई है, और हम नगरवासियों को इस बात का शुक्रगुजार होना चाहिए कि प्राचीन काल में ऐसे धन्य संत यहाँ निवास करने के लिए प्रेरित हुए; क्योंकि हमारी वर्तमान पीढ़ी इतनी पतित हो चुकी है कि उनकी प्रार्थनाओं के बिना परमेश्वर का प्रकोप हम पर भारी पड़ेगा।'

मूला ने कहा, 'मेरे स्वामी के शब्दों में एक मधुर और पवित्र सुगंध है, और यह दर्शाता है कि यद्यपि उनका व्यवहार एक सैनिक जैसा है, उनका हृदय धर्म से परिपूर्ण है; और धन्य है वह व्यक्ति जिसमें ये दोनों गुण एक साथ दिखाई देते हैं। लेकिन अगर मेरे स्वामी के पास सुनने का समय हो तो मैं उन्हें संत के अनेक चमत्कारों के बारे में बता सकता हूँ; और चूंकि वे दोपहर तक नहीं लौटेंगे, इसलिए हम पेड़ों के नीचे बैठ सकते हैं और मैं उन्हें ये चमत्कार सुनाऊँगा।'

'माफ़ कीजिए, अच्छी मूला,' मैंने कहा; 'समय कम है, और मैंने स्यूडानी की माँ से वादा किया है कि मैं शाम की ठंड शुरू होने से पहले लौट आऊँगा, और अब दोपहर हो चुकी है।'

'जैसा आप चाहें,' उसने कहा; 'लेकिन शायद ये कुछ पन्ने, जिन्हें मैंने अपने खाली समय में संकलित किया है, मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षाप्रद भी साबित हों, यदि मेरे स्वामी इन्हें स्वीकार कर लें: बेशक वे फ़ारसी पढ़ सकते हैं?'

'ठीक-ठाक,' मैंने कहा; 'हम सैनिक शायद ही कभी अच्छे विद्वान होते हैं; फिर भी मैं किताब रखूंगा, और यह एक छोटी सी चीज है जो शायद काम आ जाए;' और मैंने एक अशरुफी उसके हाथ में थमा दी।

इसे देखकर बूढ़े आदमी की आंखें चमक उठीं, और ढेर सारी तारीफें करने के बाद वह हमें अकेला छोड़कर चला गया।

'अब समय बर्बाद करने का समय नहीं है,' बूढ़े कुल्लू ने कहा; 'हमें आज ही दूर और तेज़ी से यात्रा करनी होगी। क्या तुम अपने साथ गाड़ी लाए हो?'

'मेरे पास है, यह तैयार है; यदि आप जिस डिब्बे में आए हैं उसमें कुछ कमी हो तो मुझे बताएं, मैं उसे दूसरे डिब्बे में डलवा दूंगा।'

'हमारे साथ एक-दो आदमी भेज दीजिए,' नर्स ने कहा; 'मैं और नुरगिज़ नई गाड़ी का इंतज़ाम करेंगे और तुरंत वापस आ जाएंगे।'

वे भी हमें छोड़कर चले गए, और हम अकेले रह गए। उस विशाल परिसर में कोई नहीं बचा था, महिलाएं अभी भी मकबरे में गा रही थीं, और सभी मूला उनके चारों ओर बैठकर सुन रहे थे।

'क्या तुम आगे की यात्रा की थकान सहन कर सकती हो, अज़ीमा?' मैंने कहा।

'मैं मजबूत हूँ और सब कुछ सह सकती हूँ, इसलिए मैं तुम्हारे साथ हूँ और तुम मेरे साथ,' उसने उत्तर दिया। 'प्रिय, अब मैं सुरक्षित हूँ; लेकिन जब से मैंने तुम्हें आखिरी बार देखा था और जब तक मैं उस नीच शहर से पूरी तरह बाहर नहीं निकल गई, तब तक मैंने कितना तनाव सहा है!'

मैंने कहा, 'मुझे बताओ, तुमने संदेह से बचने की तरकीब कैसे अपनाई?'

'जब तुम हमें छोड़कर गए,' अज़ीमा ने उत्तर दिया, 'मुझे लगा मेरी खुशी हमेशा के लिए चली गई; मैं तुम्हें वापस बुलाने और तुम्हारे साथ भागने के लिए दुनिया भर के सारे वरदान दे देती। मैंने तुम्हारा नेक चेहरा देखा था, तुम्हारे प्रेम के वचन सुने थे; आलिया ने मुझे वैसा ही प्रेमी भेजा था जैसा मेरी कल्पना में चित्रित किया गया था, जबकि मैं प्रतिदिन उन पीड़ाओं को सह रही थी जो केवल प्रेम करने वाले और स्नेही ही महसूस कर सकते हैं, जब उनके स्नेह का प्रतिफल कठोर और कड़वे अपमान से मिलता है; और मुझे लगा मैंने उसे खो दिया है, कि मुझे केवल कुछ क्षणों का सुख मिला है, जो उन सपनों की तरह होगा जो अक्सर मेरी नींद में मुझे धोखा देते थे, और जब मैं अपने दुखद भाग्य की कड़वी वास्तविकताओं के साथ जागती थी तो मुझे छोड़ देते थे—और मैं बेहाल थी; लेकिन मेरी दयालु बूढ़ी नर्स और नूरगिज़ ने मुझे सांत्वना दी। उन्होंने मुझसे कहा कि वे मेरे लिए अपनी जान दे देंगी, और मुझे आश्वासन दिया कि तुम वफादार रहोगे; इसलिए मैंने हिम्मत जुटाई, और कुल्लू ने प्रस्ताव रखा कि हमें तुरंत भागने की तैयारी करनी चाहिए।' हमने कुछ कपड़े, मेरे गहने और हमारे पास बचे हुए सारे पैसे, कुछ सौ रुपये, पैक किए और सुबह होने से पहले थोड़ी देर सोने के लिए लेट गए। उजाला होते ही कुल्लू ने दूसरे दासों और दो बूढ़े नौकरों को बताया कि मैं इस दरगाह जा रहा हूँ और उनमें से एक को गाड़ी लाने के लिए भेजा; गाड़ी सूर्योदय के समय आई और हमने जो सामान पैक किया था, उसे कालीनों और चादरों के दो बड़े गट्ठों में छिपाकर, जिन्हें हमने कहा था कि दरगाह में बैठने के लिए हमें ज़रूरत पड़ेगी, हमने उन्हें गाड़ी में रख दिया, हम खुद भी बैठ गए और ड्राइवर तेज़ी से यहाँ आ गया।
उसने अभी बात ही की थी कि कुल्लू हमारे पास आ गई।
'सब कुछ तैयार है,' उसने कहा; 'मैंने दूसरी गाड़ी को भेज दिया है, और आपकी नई गाड़ी अब तैयार है;—देरी न करें।'
हमें जल्दी करने की कोई जरूरत नहीं थी, हम भी उसकी तरह ही जाने के लिए उत्सुक थे, और हम उठे और उसके पीछे चल दिए।
गाड़ी तैयार थी—मेरे आदमी उसके साथ थे, और नुरगिज़ पहले से ही अंदर बैठी थी। अज़ीमा अंदर बैठी, और उसकी बूढ़ी नर्स भी उसके पीछे-पीछे गई।
'तुम भी?' मैंने हैरानी से कहा।
'जी हां, मीर साहब; मेरा घर बीदर में है, मैं आपके साथ चलूंगा; वह शहर अब मेरे लिए सुरक्षित नहीं है: अगर मैं कभी उसमें दोबारा प्रवेश करूं और उस शैतानों के सरदार नुसरुत अली खान से मिलूं, जिसका घर अब बदनाम हो चुका है और जिसकी दाढ़ी पर हमने थूका है, तो मेरी जान चली जाएगी।'
मैंने फाजिल से कहा, 'गाड़ी चलाते रहो; जितनी तेज़ी से चला सकते हो, चलाओ; हमें रात होने से पहले पुट्टुनचेरू पहुंचना ही होगा।'
जिस तालाब पर दरगाह स्थित थी, उसे पार करने के बाद, दरगाह से निकलने वाली सड़क एक दुर्गम दर्रे से होकर गुजरती थी; चट्टानों के ढेर हमारे ऊपर मंडरा रहे थे, और सड़क कई बार इतनी संकरी थी कि गाड़ी मुश्किल से ही आगे बढ़ पाती थी।

'थोड़े से काम के लिए यह एक दुर्लभ जगह है,' मैंने पीर खान से कहा, जब हम सड़क के पार बनी एक नीची दीवार के पास पहुँचे, जिसमें बंदूक चलाने के लिए छेद थे; 'मैं गारंटी देता हूँ कि अतीत में यहाँ कई जघन्य अपराध किए गए हैं।'

“इस जगह के बारे में अजीबोगरीब कहानियां सुनने को मिलती हैं,” उसने जवाब दिया; “और हमने खुद भी शहर से अपने कुछ हालिया अभियानों में इसका इस्तेमाल किया है। यहीं पर वे सात बन्निया दफन हैं जिनके बारे में आपने सुना होगा,” और उसने सड़क से कुछ ही दूरी पर स्थित एक अनोखी चट्टान की ओर इशारा किया। “कब्र के साथ हमारा एक दुखद अनुभव रहा; नीचे पूरी चट्टान थी और शव मुश्किल से ही ढके हुए थे; लेकिन इस देश में कौन उनके बारे में पूछता है? अरे, जब हम यात्रियों के साथ चल रहे थे, तो हमने इसी दर्रे में दो आदमियों के शव पड़े देखे जिनकी बेरहमी से हत्या कर दी गई थी और उनके शरीर को बुरी तरह से क्षत-विक्षत कर दिया गया था।”

'खैर,' मैंने कहा, 'हमने कम से कम अपने निशान तो छोड़ ही दिए हैं, और सब कुछ देखते हुए हम भाग्यशाली रहे हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हिंदुस्तान तक हमें और कोई बुनाई न मिले।'

उन्होंने कहा, 'हमारे पास कुछ वर्षों तक आराम से रहने के लिए पर्याप्त धन है; फिर भी, अभ्यास की कमी होने पर हाथ कमजोर हो जाते हैं, और आप अभी काम में नए हैं; आने वाले कुछ वर्षों के लिए आपके पास जितना अधिक धन होगा, उतना ही अच्छा होगा।'

हम देर शाम पुट्टुनचेरू पहुँचे, और मेरी असीम खुशी का ठिकाना नहीं रहा जब मैंने देखा कि मेरे पिता और पूरा दल सुरक्षित पहुँच गए हैं और एक विशाल बरगद के पेड़ के नीचे आराम से डेरा डाले हुए हैं, जिसके पास एक फकीर का मकबरा है। हमारे छोटे तंबू में से एक अज़ीमा के लिए लगाया गया था, और उसे रात के लिए आराम करते देख मैं अपने पिता के पास चला गया।

जब मैंने उसे अपनी सारी सफलता के बारे में बताया, तो उसने कहा, 'तुम तो बड़े भाग्यशाली हो। मैं तुम्हारे बारे में बहुत चिंतित था, खासकर तब जब शाम ढल गई और तुम नहीं आए; लेकिन अब कोई खतरा नहीं है, हम फिर से ग्रामीण इलाके में हैं और सड़कें हमारी अपनी हैं। और अब बताओ, तुम्हारी नई दुल्हन कैसी है? क्या वह ज़ोरा जितनी ही सुंदर है?'

मैंने कहा, 'वह उतनी ही सुंदर है; पूर्णिमा का चांद भी उससे ज्यादा खूबसूरत नहीं होता; उसका प्रेम कोमल है और वह स्नेही और दयालु स्वभाव की है; आपको उससे कल जरूर मिलना चाहिए; वह अब यात्रा से थक चुकी है।'

'और मेरे बेटे, तुम थके हुए भी होगे और भूखे भी। मैंने तुम्हारे लिए एक खास पुलाव तैयार किया है।'

इसे लाया गया; और अज़ीमा को एक हिस्सा भेजने के बाद, मेरी उंगलियां बहुत जल्द थाली में बची हुई सामग्री को खाने में व्यस्त हो गईं; और मैंने इसका आनंद लिया, क्योंकि मैंने पूरे दिन अज़ीमा द्वारा लाई गई कुछ मिठाइयों के अलावा कुछ भी नहीं चखा था।

अध्याय XXII

रोज़ालिंड, अब मुझे बताओ कि तुम उसे अपने पास कितने समय तक रखना चाहोगी, तुम्हारे बाद।
उन्होंने उसे अपने वश में कर लिया है।
ऑरलैंडो। हमेशा के लिए।
ऐज़ यू लाइक इट, अंक IV, दृश्य 1

चौथी सुबह हम बीदर पहुँचे। हालाँकि हैदराबाद की तरह इसका बाहरी रूप उतना आकर्षक नहीं था जितना हमें पास आने पर लगा था, फिर भी यह शहर दिलचस्प था। एक लंबे पठार की चोटी धीरे-धीरे ढलान में बदल जाती थी, और वहाँ से बीदर अचानक हमारे सामने खुल गया। शहर की दीवारें एक ऊँची पहाड़ी की चोटी पर बनी थीं; और उनके ऊपर एक ऊँची मीनार, और एक और अधूरी सी दिखने वाली मीनार, गर्व से खड़ी थीं। दाहिनी ओर आम के पेड़ों के झुरमुट से कुछ मकबरों के बड़े सफेद गुंबद झाँक रहे थे, जिनसे पहाड़ी ऊपर से नीचे तक ढकी हुई थी; और दुखुन की अब लगभग वीरान हो चुकी राजधानी, जो कभी गौरवशाली और शक्तिशाली भामुनी राजाओं का पसंदीदा निवास स्थान थी, के पास पहुँचने पर एक शांत गंभीरता थी, जो हमारी भावनाओं से मेल खाती थी, और उस व्यस्त शहर के बिल्कुल विपरीत थी जिसे हम अभी-अभी छोड़कर आए थे। हमारे कुछ साथी जो आगे चले गए थे, उन्होंने शहर के द्वार के पास उस सड़क पर हमारे डेरे के लिए एक जगह चुन ली थी जिस पर हमें सुबह जाना था; लेकिन अपने दल से अलग होकर, मैं उस कस्बे से होकर गुजरा, जो कि अब अपने पुराने स्वरूप की तुलना में भले ही छोटा हो गया हो, लेकिन मेरी अपेक्षा से कहीं अधिक आकर्षक था।

मैं दूसरी तरफ बने शिविर में शामिल हो गया, जो अब अपने सामान्य चहल-पहल वाले रूप में दिखाई दे रहा था: कुछ लोग कुएं के किनारे अपना सुबह का भोजन पका रहे थे, कुछ स्नान कर रहे थे, और सभी उस आनंदमय ढंग से बातें कर रहे थे जिससे पता चलता था कि उनके मन चिंताओं से मुक्त और प्रसन्न थे, क्योंकि उन्हें उम्मीद थी कि वे अपने घर उम्मीद से कहीं अधिक जल्दी लौटेंगे और अपने साथ भरपूर लूट का माल लेकर जाएंगे।

'मेरे पिता, यह सच्चे विश्वासियों से भरा शहर है,' मैंने उनके पास पहुँचते हुए कहा; 'यहाँ मूला (वकील) तो बहुत होंगे, और मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप एक को बुलवाएँ, ताकि निकाह संपन्न हो सके, और मैं अज़ीमा को आपके हाथों से अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर सकूँ।'

'मैं इसका विरोध नहीं करूंगा, मेरे बेटे; लेकिन बूढ़ा मूला, चाहे वह कोई भी हो, इसे अजीब समझेगा।' मैंने कहा, 'वह जो चाहे सोच सकता है; लेकिन मैं अब उसके बिना नहीं रह सकता; इसलिए कृपया इस मामले को सुलझा हुआ समझें और उसे तुरंत बुलवा लें।'

तदनुसार पीर खान को उस पवित्र व्यक्ति को लाने के लिए भेजा गया, जो विधिवत पहुँच गया। मेरे पिता ने उसका अत्यंत आदरपूर्वक स्वागत किया और उसे उसके बुलावे का उद्देश्य समझाया। उसने अत्यंत आश्चर्य

व्यक्त किया; उसने यात्रा के दौरान विवाह समारोह आयोजित करने के बारे में पहले कभी नहीं सुना था और यह हर तरह से अनुचित और अशोभनीय था।
जब उसने अपनी सारी दलीलें दे दीं, तब मेरे पिता ने उसे जवाब दिया।
'देखो, हे अच्छे मूला,' उन्होंने कहा, 'हमारे पवित्र धर्म के रीति-रिवाजों और परंपराओं का मुझसे अधिक सम्मान करने वाला कोई नहीं है। क्या मैं हिंदुस्तान का सय्यद नहीं हूँ? क्या मैं दिन में पाँच बार नमाज़ नहीं पढ़ता, रमज़ान में रोज़ा नहीं रखता और धर्म द्वारा निर्धारित सभी त्योहारों का पालन नहीं करता? और यद्यपि मैं ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहता जिसे हमारे धर्म के नियमों का उल्लंघन माना जाए, फिर भी कुछ ऐसी परिस्थितियाँ हैं जिन्हें मैं समझा नहीं सकता, जिनके कारण यह रस्म निभाना अनिवार्य है; और यदि आप इनकार करते हैं, तो मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि बीदर में मूलाओं की कमी नहीं है, और यदि आप इसे नहीं निभाते हैं तो कोई कम ईमानदार व्यक्ति इसे निभाएगा और वह उस पुरस्कार का हकदार होगा जो मैं अब आपको प्रदान करता हूँ;' और मेरे पिता ने उनके सामने दो अश्रुफी रख दिए।
'इससे मामला पूरी तरह बदल जाता है,' मूला ने पैसे जेब में रखते हुए कहा। 'चूंकि रस्म अदा करनी ही है, अल्लाह के नाम पर इसे होने दो; यह निश्चित रूप से भाग्य में लिखा था, और इसलिए बीदर में मुझसे ज्यादा निकाह की रस्म अदा करने को तैयार कोई नहीं मिलेगा; कृपया मुझे मेरी किताब लेने वापस जाने दीजिए, मैं तुरंत वापस आऊंगा;' और वह चला गया।
'देखो,' मेरे पिता चिल्लाए, 'मुझे लगा था ऐसा ही होगा। सोने का लालच किसी को नहीं मिटता: सिंहासन पर बैठे राजकुमार से लेकर सबसे गरीब किसान तक, सब पर एक जैसा असर होता है; इसका प्रभाव सर्वशक्तिशाली है। इससे मनुष्य अपने पड़ोसी का विवेक, उसकी पत्नी या उसकी बेटी खरीद सकता है; इससे मनुष्य किसी भी शहर में आदरणीय काज़ी को रिश्वत देकर सौ हत्याएं करने, दस्तावेज़ों में हेराफेरी करने, पड़ोसी का सामान चुराने या दुनिया के हर गुनाह का दोषी होने पर भी खुद को निर्दोष घोषित करवा सकता है; इससे एक अच्छा आदमी और भी अच्छा बन सकता है—पर ऐसा कम ही होता है—एक बुरा आदमी अपनी बर्बादी खुद बढ़ाता है: इसके लिए कोई भी झूठ बोलेगा, धोखा देगा, लूटेगा, हत्या करेगा और खुद को जानवर के स्तर तक गिरा देगा; युवतियां अपने स्वामियों का अपमान करेंगी; बूढ़ी औरतें रिश्वत लेकर उनकी मदद करेंगी। जिसके पास धन का भंडार है, वह उसे बढ़ाने के लिए हर तरह की धूर्तता करेगा, फिर भी कभी खुश नहीं रहेगा; जिनके पास पैसा नहीं है, वे इसके लिए तरसते रहेंगे और कभी खुश नहीं रहेंगे।'
इसे किसी बच्चे को खेलने के लिए दे दो, और किसी रहस्यमय सहज प्रवृत्ति से वह इसे अपने सीने से लगा लेता है, और अगर इसे उससे छीन लिया जाए तो दहाड़ता है। संक्षेप में, इसके प्रभाव का विरोध नहीं किया जा सकता; बूढ़े और जवान, अमीर और गरीब—सभी इसके गुलाम हैं। मनुष्य का ज्ञान कुछ भी नहीं; मनुष्य की वाक्पटुता कुछ भी नहीं; उनका चरित्र कुछ भी नहीं; उनका पद कुछ भी नहीं: लेकिन यह तुच्छ धातु, जिसकी न कोई आवाज है, न कोई बुद्धि है, न कोई चरित्र है, न कोई पद है—यह पृथ्वी पर हमारे भाग्य को उतनी ही निश्चितता और शक्ति से नियंत्रित करती है जितना स्वयं आलिया स्वर्ग में करती है।

'अलिया के क्यूपोद्रुत!' मैंने आह भरते हुए कहा; 'पिताजी, आपके शब्द सच हैं, अब जब हम उन पर विचार करते हैं; और हमें उस आदरणीय मूला के अचानक बदले हुए मत का एक अनमोल उदाहरण मिला है, जिसने आपका सोना देखकर आगे कोई प्रश्न नहीं पूछा।'

'नहीं!' मेरे पिता चिल्लाए, 'अगर किसी के पास पर्याप्त धन हो, तो वह दुनिया पर राज कर सकता है। सिकंदर कौन था? सभी वृत्तांतों के अनुसार, वह एक मामूली राजकुमार था, जो इस देश के शासक के आधे जितना भी शक्तिशाली नहीं था; फिर भी, जब उसने जिन्नों का विश्वास जीता और बाद में अपने जादू से उन पर प्रभुत्व स्थापित किया, तो क्या उन्होंने धरती के गर्भ में जमा खजाने उसके हवाले नहीं कर दिए? और फिर कौन उसकी प्रगति को रोक सकता था? क्या यह सब एक किताब में नहीं लिखा है, और क्या यह कुरान जितना ही सत्य नहीं है?'

मैंने कहा, 'इस पर संदेह करना धर्मद्रोह होगा; लेकिन हमारे संवाद का विषय, अपनी पुस्तक बगल में दबाए हुए, आ रहा है; मैं अज़ीमा को तैयार करता हूँ।'

मैं उसके पास गया। 'प्रियतम,' मैं बैठ गया और उसकी कमर में हाथ डालकर बोला, 'प्रियतम, वो समय आ गया है, जब आलिया के आशीर्वाद और मेरे पिता की स्वीकृति से तुम हमेशा के लिए मेरी हो जाओगी, और जब कानून हमें एक साथ बांध देगा, केवल मृत्यु ही हमें अलग कर पाएगी। मूला आ गया है; और तुम्हारी अनुमति से, अभी, इसी वक्त, निकाह संपन्न होगा; और देरी व्यर्थ है, और मैं अपने प्रेम की ज्वाला में जल रहा हूँ।'

'इतनी जल्दी, अमीर अली? ओह, जब तक हम तुम्हारे घर नहीं पहुँच जाते, तब तक नहीं। इस नाजायज रिश्ते के लिए मेरी सहमति के बारे में तुम्हारे पिता क्या सोचेंगे?'

'वह इसकी मंजूरी देता है, प्रिय! वही था जिसने मूला को बुलवाया; वही था जिसने उसे समारोह संपन्न करने के लिए राजी किया; और वे बस मेरे तम्बू में लौटने का इंतजार कर रहे हैं ताकि वे उन शब्दों को पढ़ सकें जो तुम्हें हमेशा के लिए मेरा बना देंगे।'

'हाय! मुझे नहीं पता,' उस सुंदर लड़की ने कहा; 'मैं किसी और की पत्नी हूँ—यह कैसे हो सकता है?'

'इस घृणित विवाह को भूल जाओ,' मैं रोते हुए बोली; 'अज़ीमा, ये आपत्तियाँ मुझे मार डालेंगी। क्या मैं तुम्हारी दासी नहीं हूँ? क्या हम अब किसी दूर देश की ओर नहीं जा रहे हैं, जहाँ से तुम भागी हो, वह तुम्हें फिर कभी नहीं देखेगा? आह, इस तरह बातें करना बंद करो, क्योंकि यह एक कड़वा उपहास लगता है कि तुम मेरे साथ भागी थी, और अब मुझे ही नकार रही हो।'

'नहीं, नहीं, नहीं! ऐसा मत कहो, अमीर अली; तुमने मुझे अपमान से और उस दर्दनाक मौत से बचाया है जिसके लिए मैंने खुद को अभिशप्त कर लिया था। मैं तुम्हारी दासी हूँ, तुम मेरे नहीं; मेरे साथ जैसा चाहो वैसा करो; जो चाहो वैसा ही होने दो। मैं मृत्यु तक तुम्हारा अनुसरण करूँगी।' और उसने अपना चेहरा मेरी छाती में छिपा लिया।

'तब,' मैंने कहा, 'प्रिय, तैयारियां जल्द ही पूरी हो जाएंगी। कुल्लू को बुलाओ और उसे सब कुछ बता दो।'

वह बुजुर्ग महिला आई और मेरा प्रस्ताव सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुई।
“मुझे डर था कि आप इस बंधन में नहीं बंधेंगे, मीर साहब,” उसने कहा, “और इस विषय पर मेरा मन बहुत व्याकुल था; लेकिन अब मैं निश्चिंत हूँ, और मैं अपनी प्यारी बच्ची को आपको प्रसन्नता और विश्वास के साथ सौंपती हूँ: ईश्वर करे कि आप उसमें सुख पाएँ और अपने वंशजों को देखें। काश मैं आपके साथ चल पाती! लेकिन मैं बूढ़ी हो चुकी हूँ, और मेरी हड्डियाँ और आत्मा एक परदेस में चैन से नहीं रह पाएँगी: आपकी उदारता और जो कुछ मैंने इकट्ठा किया है, वह मेरे जीवन भर के लिए पर्याप्त है, और जब मेरा समय आएगा तो मैं संतुष्ट होकर मरूँगी।”
'तो जल्दी करो,' मैंने कहा; 'एक पर्दा लगाओ, और मैं मूला को बुलाऊंगा; जब तक समारोह पढ़ा जा रहा है, तुम तीनों उसके पीछे बैठ सकते हो।'
तंबू के एक तरफ से दूसरी तरफ एक कपड़ा फैलाया गया और उसे जमीन से बांध दिया गया: मेरे पिता, मैं और मूला एक तरफ बैठे थे, और महिलाएं दूसरी तरफ।
'सब कुछ तैयार है, मूलाजी,' मैंने कहा; 'शुरू कीजिए।'
उन्होंने अपनी किताब खोली और अरबी में विधिपूर्वक प्रार्थना पढ़ी। मुझे उसका एक भी शब्द समझ नहीं आया, और न ही उन्हें; लेकिन इतना ही काफी था कि प्रार्थना पढ़ी गई—समारोह पूरा हो गया, और अज़ीमा हमेशा के लिए मेरी हो गई।
बीदर शहर और किले को देखे बिना चले जाना खेदजनक होता, जिनके बारे में मैंने बहुत प्रशंसा सुनी थी; इसलिए शाम को, मेरे पिता, मैं और कुछ अन्य लोग शहर में घूमने निकल पड़े ताकि हम जितना देख सकें उतना देख सकें। सबसे पहले हम पुराने मदरसे के पास से गुजरे, जो खंडहरों का एक भव्य समूह था; उसका अग्रभाग ऊपर से नीचे तक सुंदर तामचीनी से ढका हुआ था, और वह विशाल मीनार जिसे हमने सुबह दूर से देखा था, वह भी उसी से ढकी हुई थी। एक अन्य मदरसे के विशाल गोल टुकड़े चारों ओर बिखरे पड़े थे, और मैं कल्पना कर सकता था कि वह कितनी भव्य इमारत रही होगी, इससे पहले कि औरंगजेब द्वारा गोला-बारूद भंडार के रूप में उपयोग किए जाने के दौरान बारूद के एक दुर्भाग्यपूर्ण विस्फोट से उसका अग्रभाग उड़ गया, एक मीनार नष्ट हो गई, और पूरा ढांचा भूकंप की तरह फट गया।
आगे बढ़ते हुए हम किले के प्राचीन और भव्य खंडहरों के सामने एक खुले मैदान में पहुँचे। प्राचीन खंडहर महलों के ढेर लगे हुए थे, जिनमें से कई तो दीवारों पर ही बने थे और सभी अपनी गिरावट की ओर झुक रहे थे। ये महल हमें अपने निर्माताओं की भव्यता का ऐसा गहरा आभास दे रहे थे जैसा हमने अब तक नहीं देखा था। ये घमंडी मनुष्य को सबक सिखा रहे थे—उसे यह सिखाने के लिए कि उसे भी अपने संस्थापकों की तरह धूल में मिल जाना है: ये सदियों से खड़े थे; फिर भी अब उल्लू, चमगादड़ और जंगली कबूतर ही इन शानदार महलों के एकमात्र निवासी थे, जहाँ कभी सुंदरता का वास था और जो वीर और गौरवशाली लोगों की आराधना का केंद्र हुआ करती थी।

अब वो राजशाही, वो राजसी वैभव, वो वीर योद्धा कहाँ थे जिन्होंने कभी इन ऊँची दीवारों और मीनारों की रक्षा की थी और अक्सर आक्रमणकारियों की सेनाओं को चुनौती दी थी? सब कुछ गायब हो गया था, सब कुछ सुनसान और वीरान था, और खामोशी हमारे सामने के खंडहर जैसे दृश्य से बिल्कुल मेल खा रही थी।
हालाँकि, दीवारें जर्जर या ढही हुई नहीं थीं; वे पहले की तरह ही मजबूत और ठोस थीं; और कहीं-कहीं किसी छेद या कच्चे मोर्चे से निकली तोप की नोक यह दर्शाती थी कि वे अभी भी रक्षा करने में सक्षम हैं, हालाँकि, अफसोस! वहाँ कोई रक्षक नहीं था। हमने सोचा कि यह जगह बिल्कुल वीरान है, और हम प्रवेश द्वार की ओर बढ़ गए। यह विशाल था, और उस पर तामचीनी का काम बहुत खूबसूरती से किया गया था, जैसा हमने पहले पुराने मदरसे और गोलकोंडा के मकबरों में देखा था।
जब हम इस तरह बाहर का नजारा निहार रहे थे, तभी एक सैनिक हमारे पास आया और हमसे हमारे आने का मकसद पूछा।
मेरे पिता ने उत्तर दिया, 'हम अजनबी हैं, जो आज के लिए इस कस्बे में ठहरे हैं, और हम उस ऐतिहासिक किले को देखे बिना यहाँ से नहीं जा सकते जिसके बारे में हमने बहुत कुछ सुना है। क्या हमें अंदर जाने की अनुमति मिल सकती है?'
'ज़रूर,' उसने उत्तर दिया; 'आप जैसे सम्मानित व्यक्तियों का हमेशा सहर्ष स्वागत किया जाता है; यदि आप मेरे साथ चलेंगे, तो मैं आपको अंदर का हिस्सा दिखाऊंगा, जो देखने लायक है।'
हम उसके पीछे-पीछे चले और दो द्वारों से गुज़रे, जो आक्रमणकारियों के लिए अभेद्य होने के लिए तिरछे रास्तों से सुरक्षित थे, हम तीसरे द्वार के नीचे रुके, और हमारे मार्गदर्शक ने कहा,
'ऊपर के कमरे देखने लायक हैं, यदि आप ऊपर चढ़ेंगे तो।'
मैंने कहा, 'निश्चित रूप से, हम सब कुछ देखना चाहेंगे।'
हम एक संकरी सीढ़ी से ऊपर चढ़े, जिसके शीर्ष पर पहुँचकर कमरों का एक छोटा लेकिन सुंदर समूह दिखाई दिया, जो तामचीनी से भरपूर रूप से सजा हुआ था। रंगों की चमक और डिज़ाइन की बारीकी के मामले में यह बाहर से देखे गए किसी भी अन्य कमरे से कहीं अधिक उत्कृष्ट था। चमकदार नीले रंग की पृष्ठभूमि पर सफेद अक्षरों में कुरान की आयतें चारों ओर कंगनी पर अंकित थीं, और छतें और दीवारें हर रंग और डिज़ाइन के फूलों से ढकी हुई थीं। उनके रंग और जिस तामचीनी से उन्हें सजाया गया था, वे आज भी उतने ही ताज़े और चमकदार थे, जैसे कि उन्हें पहली बार चित्रित किया गया हो।
मैंने अपने पिता से कहा, 'ये अविनाशी हैं; काश, जिन इमारतों में ये रखी हैं, वे भी ऐसी ही होतीं, ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए उस भव्यता और धन का प्रमाण बनी रहें, जिसके कारण इनका निर्माण हुआ था!'
'हाँ,' उसने कहा, 'वर्तमान पतन के इससे बेहतर प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। उस समय के सम्राट न्यायप्रिय और उदार होने के साथ-साथ शक्तिशाली भी थे: उनके राज्य से प्राप्त धन को वे अपने शहरों को सुंदर बनाने और ऐसी इमारतें बनवाने में खुलकर खर्च करते थे जिनसे उनकी याद बनी रहे। अब, उन्हीं राज्यों से प्राप्त धन या तो बेकार में जमा किया जाता है या फिजूलखर्ची से खर्च किया जाता है; अब, किसी राजवंश के

स्मारक के रूप में कोई इमारत नहीं बनती, कोई सेना किसी वीर और महान शासक की उपस्थिति में प्रसन्न नहीं होती और उसके उदाहरण से प्रेरित होकर अपनी चमकीली तलवारों की नोक पर उसके लिए यश अर्जित नहीं करती। अब सब कुछ नीच और घिनौना है, शाहजहाँ और आलमगीर के गरीब पेंशनभोगी वंशज से लेकर दुखुन के कभी गौरवशाली सूबाओं के प्रतिनिधि तक।'

'जी हां,' हमारे मार्गदर्शक ने कहा; 'अब खुद को सिपाही कहने का क्या फायदा, जब खाने के लिए रोटी भी मुश्किल से मिलती है? हम मुट्ठी भर लोग जो किले में हैं, भव्य महलों के खंडहरों और वीरान दीवारों के बीच भटकते रहते हैं, और हमारे एकमात्र दुश्मन तेंदुए और लकड़बग्घे हैं, जिन्होंने हर साल बढ़ते जंगल और वीरानगी का फायदा उठाया है, और हमें पूरी तरह से भगा देने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। लेकिन खिड़की से देखिए, सज्जनों; जिस खुले मैदान से आप आए हैं, उसे फतेह मैदान कहते हैं, यानी विजय का मैदान। यहां बीदर के गौरवशाली सम्राट, पहले भामुनी और बाद में फरीद वंश, बैठते थे, जबकि उनकी वीर सेनाएं द्वारों से निकलती थीं, और अपने राजा को शौर्य प्रदर्शन से प्रसन्न करते हुए मनोरंजन करते थे। और वहां,' उन्होंने हमें दूसरी खिड़की की ओर ले जाते हुए कहा, 'वहां उनकी कब्रें हैं जहां उनके नश्वर अवशेष विश्राम करते हैं, हालांकि उनकी आत्माएं हमारे पैगंबर के धन्य स्वर्ग में हैं।'

हमने देखा, और नज़ारा जितना खूबसूरत था उतना ही अप्रत्याशित भी। हम एक ऊंचे पहाड़ की चोटी पर थे, हमारे सामने फैली घाटी दूर-दूर तक फैली हुई थी। दूर तक फैला नीला आसमान में विलीन हो रहा था, और हमारे करीब आते-आते गांव और खेत और भी स्पष्ट होते जा रहे थे, यहाँ तक कि ठीक हमारे नीचे वे किसी नक्शे पर बने हुए प्रतीत हो रहे थे; और उनके बीच मकबरे खड़े थे, भव्य इमारतों का एक समूह, जिनके सफेद गुंबद ढलते सूरज की लाल रोशनी में चमक रहे थे।

'हाँ,' मैंने कहा, 'उन्हें अवश्य ही ऐसा महसूस हुआ होगा कि वे राजा हैं, जब वे अपने वीर सैनिकों को प्रशंसा भरी निगाहों से देख रहे थे और उस सुंदर देश पर नजर डाल रहे थे जिस पर वे शासन करते थे।'

मेरे पिता ने मेरी सोच को तोड़ते हुए कहा, "चलो," मेरी सोच में तेज़ी से फ़त्तेह मैदान के खुले मैदान में बीते युगों के सैनिकों और योद्धाओं की छवि उभर रही थी, और उनके मर्दाना खेल—उनके नकली युद्ध—लड़ने वाले पक्षों के नारों का चित्र मेरे सामने आ रहा था—जबकि जिस स्थान पर मैं खड़ा था, वहाँ से राजा की प्रशंसा और उनके दरबारियों के जयकारे मेहराबदार छतों से गूंज रहे थे और बाहर मौजूद भीड़ द्वारा प्रतिध्वनित हो रहे थे—"चलो, देर हो रही है, और हमें जल्दी लौटना होगा।"

हम फिर से अपने मार्गदर्शक के पीछे-पीछे चले, और जब हम खाई के ऊपर बने एक पुल से गुज़रे, तो हमें उसकी विशाल चौड़ाई और गहराई का अद्भुत नज़ारा देखने को मिला। खाई का निचला हिस्सा आंशिक रूप से रुके हुए पानी से ढका हुआ था, जो मानसून के बाद जमा हुआ पानी था; क्योंकि बरसात का मौसम अब बीत चुका था। रक्षा के उद्देश्य से खाई को बड़े ही अनोखे ढंग से खोदा गया था, ठोस चट्टान को काटकर काफी गहराई तक बनाया गया था; तीन दीवारें खड़ी छोड़ी गई थीं, जिनके बीच काफी अंतराल था; और ये निश्चित रूप से किसी भी आक्रमणकारी के लिए एक बहुत बड़ी बाधा साबित हो सकती थीं।

हम एक विशाल, अंधकारमय मेहराब से किले में दाखिल हुए, जिसके भीतर कुछ सैनिक आराम कर रहे थे; और वहाँ से खंडहरों के टुकड़ों और झाड़ियों से ढके एक बड़े आंगन को पार करते हुए, हम एक खुले मैदान में पहुँचे। यहाँ हमारे सामने बाहर के दृश्य से भी कहीं अधिक उजाड़ दृश्य था; महलों, अस्तबलों, दफ्तरों, स्नानागारों, हथियारों और गोला-बारूद के गोदामों सहित हर प्रकार के खंडहर ज़मीन पर बिखरे पड़े थे; यह एक दुखद दृश्य था, लेकिन स्पष्ट रूप से यह सब मरम्मत से परे था और तेज़ी से विनाश की ओर बढ़ रहा था। हम उस स्थान से निकलकर उस जगह की एकमात्र बची हुई अद्भुत वस्तु, एक विशाल तोप को देखने गए, जो हमारे मार्गदर्शक के अनुसार बीजापुर की एक तोप की बहन थी। यह एक ऊँचे बुर्ज पर स्थित थी, जहाँ से नीचे फैले मैदान का शानदार दृश्य दिखाई देता था। उस मैदान पर विशाल किला अपनी गहरी छाया फैलाए हुए था, जबकि दूर स्थित देश शाम के बढ़ते अंधेरे में धीरे-धीरे धुंध में विलीन होता जा रहा था। मैदान से खड़ी चढ़ाई पर चढ़ते हुए कस्बे के पशुओं के झुंड ही उस सन्नाटे को तोड़ रहे थे, क्योंकि उनकी रंभाने की आवाज़, उनकी अनगिनत घंटियों की झंकार और चरवाहे की बांसुरी की उदास लेकिन मधुर धुनें हमारी ऊँची जगह तक पहुँच रही थीं।

लेकिन हम वहां और नहीं रुक सकते थे; हम उसी रास्ते से लौट आए जिससे आए थे; और हालांकि मेरी इच्छा थी कि मैं खंडहर हो चुके और वीरान महलों में घूमूं और उनके कोने-कोने को देखूं, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी; इसलिए हमने अपने गाइड को उसकी विनम्रता के लिए एक छोटा सा उपहार देकर विदा किया और अपने शिविर की ओर वापस चल दिए।

साहब, बीदर से एलिचपुर पहुँचने तक हमें कोई उल्लेखनीय घटना नहीं घटी। एलिचपुर से होते हुए हमने घर वापसी का मार्ग चुना; हालाँकि, हमने उसी रास्ते से यात्रा नहीं की जिससे हम आते समय गए थे; क्योंकि वह रास्ता हमें मुंगरूल और ऊम-राओटी से होकर ले जाता, और हमारे पास दोनों स्थानों से बचने के ठोस कारण थे; सहौकर के भाग्य की याद एलिचपुर के निवासियों के मन में अभी भी ताज़ा होती, और हमारा दिखना इतना उल्लेखनीय था कि उसे आसानी से भुलाया नहीं जा सकता था। इसलिए हम नंदैर से गोदावरी नदी के किनारे बूरहनपुर की ओर चल पड़े, और जब हम बरार घाटी में अकोला पहुँचे, तो हम फिर से एलिचपुर की ओर मुड़ गए और सुरक्षित रूप से वहाँ पहुँच गए। लेकिन आपको यह नहीं सोचना चाहिए कि इस लंबी यात्रा के दौरान हम निष्क्रिय थे; इसके विपरीत, हमने अपने काम को उसी उत्साह और सफलता के साथ जारी रखा जिसके साथ हमने अपनी इस सौभाग्यशाली यात्रा की शुरुआत की थी और उसे पूरा किया। और कोई भी यात्री, चाहे वह कितना भी साधारण क्यों न हो, जो हमारे दल में शामिल हुआ या हमारे बीच बहला-फुसलाकर लाया गया, बच नहीं पाया: और इस तरह, यद्यपि हमारी लूट में कोई खास वृद्धि नहीं हुई, फिर भी हमने अपने भरण-पोषण के लिए पर्याप्त धन इकट्ठा कर लिया, बिना उस सामान्य भंडार से कुछ लिए, जिसे हमारे घर पहुँचने पर बाँटा जाना था।

एलिचपुर में हमने रहमान शाह दूला की दरगाह के पास कुछ बड़े इमली के पेड़ों के नीचे डेरा डाला। वह एक शांत और सुंदर स्थान था। दरगाह के नीचे एक छोटी नदी बह रही थी, जिसका उद्गम पास के पहाड़ों से होता

था; और उस नदी के उस पार घने पेड़ों से घिरी संत की पवित्र इमारतें शांति और विश्राम का निवास स्थान प्रतीत होती थीं। थोड़ी देर आराम करने और यात्रा से गंदे हुए वस्त्र बदलने के बाद, अज़ीमा और मैं अपने कुछ साथियों के साथ वहाँ गए, ताकि दरगाह पर अपनी भेंट चढ़ा सकें और आलिया की निरंतर देखभाल और सुरक्षा के लिए धन्यवाद अर्पित कर सकें।

यह हो जाने के बाद, मैंने उसे वापस अपने शिविर में भेज दिया, और हमेशा की तरह मूला लोगों के साथ सामान्य बातचीत में लग गया, ताकि हमारे अभियानों में मार्गदर्शन के लिए जानकारी जुटा सकूँ; और एलिचपोर जैसे इतने बड़े शहर से मुझे कुछ उम्मीद थी कि हमें कुछ मूल्यवान लूट का माल मिलेगा।

हमने रोजमर्रा की घटनाओं से जुड़े कई विषयों पर बातचीत की; अंत में, मूला ने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। मैंने बताया कि मैं घोड़ों का व्यापारी हूँ, जो हिंदुस्तान से घोड़े लेकर हैदराबाद गया था और अब उन्हें बेचकर वापस लौट रहा हूँ। मूला ने पूछा, 'और जो लोग आपके साथ हैं, वे कौन हैं?'

मैंने कहा, 'मेरे पिता, जो एक व्यापारी हैं, उनमें से एक हैं; उनके अलावा हमारे साथ आए घोड़ों की देखभाल करने वाले और सेवक हैं, और कई यात्री हैं जो समय-समय पर हमारी यात्रा में शामिल होते रहे हैं।'

'तो तुम काफिला हो?' मूला ने कहा।

'बिल्कुल सही,' मैंने कहा; 'और खुद को मजबूत समझते हुए, हमने बैतूल होते हुए जुब्बुलपुर जाने का फैसला किया है, जो हालांकि छोटे कद के लोगों के लिए असुरक्षित है, लेकिन हमारे विशाल दल के लिए कोई बाधा नहीं है।'

'बिल्कुल नहीं,' उसने उत्तर दिया; 'और यह सड़क आपको काफी दूरी बचाएगी जो आपको नागपुर से होकर जाने पर तय करनी पड़ती; और चूंकि आप जंगल के रास्ते जाने पर अड़े हैं, तो शायद आपको अपने दल में एक और सदस्य जोड़ने में कोई आपत्ति न हो? और मुझे लगता है कि मैं आपके लिए एक सदस्य का इंतजाम कर सकता हूँ।'

मैंने कहा, 'बिल्कुल नहीं, अगर यात्री सभ्य हों तो।'

'बिल्कुल,' मूला ने कहा; 'जिस व्यक्ति की मैं बात कर रहा हूँ, वह एक प्रतिष्ठित व्यक्ति है, किसी नुवाब से कम नहीं, जो अपने भतीजे के पास लौट रहा है, जो भोपाल पर शासन करता है।'

'अरे, मुझे लगता है मैंने उनके बारे में सुना है,' मैंने कहा; 'आपका मतलब नुवाब सब्ज़ी खान से तो नहीं है, जैसा कि उन्हें कहा जाता है?'

'वह वाकई एक शानदार और अनुभवी सैनिक हैं। यह खेदजनक है कि उन्हें भांग की इतनी लत है, जिसके कारण उन्होंने एक ऐसा नाम कमाया है जिससे युद्ध के मैदान में उनके शत्रुओं में दहशत फैल जाती है और उनके अन्य सभी नाम इससे कहीं अधिक प्रसिद्ध हो गए हैं।'

मैंने कहा, 'यह बहुत दुख की बात है; क्योंकि महान खान के बारे में बहुत अच्छी बातें सुनने को मिलती हैं, और उनके वीरतापूर्ण कारनामे हिंदुस्तान में रहने वाले सभी लोगों को ज्ञात हैं: मुझे उनके साथ जाने में बहुत खुशी होगी, क्योंकि यह भी कहा जाता है कि वह एक असाधारण साथी हैं।'

'तुमने सही सुना है,' मूला ने कहा। 'नुवाब सूर्यास्त से पहले यहाँ आ जाएँगे, क्योंकि वे हमेशा की तरह हमसे बातचीत करने और भांग पीने आते हैं; अगर तुम मेरे संदेश भेजने पर अपने शिविर से बाहर आओगे, तो मैं तुम्हें उनसे मिलवा दूँगा।'

'धन्यवाद, आदरणीय मूला,' मैंने कहा; 'आपको बस मुझे बुलाना है, और मैं खुशी-खुशी आपकी पुकार पर आऊंगा।'

मैंने कुछ ही समय बाद उसे छोड़ दिया। यहीं से एक ऐसे रोमांच की शुरुआत हुई जो हमारे पिछले सभी रोमांचों को फीका कर देने वाला था; नुवाब का रुतबा, उसके साथ आने वाले अनुयायियों की संख्या और उसके जाने पर मचने वाला शोर—ये सब मिलकर इसे एक ठग के लिए लूट और शोहरत की चाहत रखने वाले रोमांच के समान ही आकर्षक बना रहे थे।

मैंने अपनी उम्मीदों के बारे में किसी से एक शब्द भी नहीं कहा; मैंने ठान लिया था कि योजना और क्रियान्वयन, दोनों ही मामलों में मैं इसे पूरी तरह से अपने हाथ में रखूंगा। अगर मैं सफल हो जाता, तो मेरी शोहरत और प्रतिष्ठा हमेशा के लिए कायम हो जाती, और इतने सारे लोगों का साथ होने पर मैं असफल हो ही नहीं सकता था। एक पल के लिए मेरे मन में ख्याल आया—कि नुवाब एक योद्धा है, वह पूरी तरह से हथियारों से लैस होगा; और मैं कौन होता हूं जो उसका मुकाबला कर सकूं? लेकिन मैंने तुरंत ही इस विचार को खारिज कर दिया। एक ठग के रूप में और हर हथियार को चलाने में, चाहे पैदल हो या घोड़े पर, मेरी अपनी वीरता पर मेरा पूरा भरोसा था; यह आज तक कभी परखा नहीं गया था, और मेरा मानना है कि मैं किसी भी जीवित प्राणी से नहीं डरता था।

हां, अमीर अली, मैंने कहा, तुम और तुम्हारा पूरा कबीला हम अंग्रेजों से हमेशा डरते रहे हो। तुमने आज तक हममें से किसी पर हमला नहीं किया, न ही ऐसा करने की हिम्मत की।

ठग हँसा।—नहीं साहब, आप गलत हैं; हमें आपसे कभी डर नहीं लगा, लेकिन आप में से किसी पर हमला करना नामुमकिन था। जब आप घोड़े पर सवार होकर यात्रा करते हैं, तो आप पर हमला करना बेकार है, क्योंकि आप अपने साथ कुछ भी नहीं रखते। आपके तंबुओं में आप नौकरों से घिरे रहते हैं, और रात में आपकी हमेशा पहरेदारी होती है। जब आप डाक से यात्रा करते हैं, तो शायद हमें आपकी पालकियों से कुछ रुपये मिल जाएं, लेकिन आप आम तौर पर हथियारबंद रहते हैं, आप आमतौर पर पिस्तौल रखते हैं, और हमारे मकसद को पूरा करने से पहले हममें से कुछ को निश्चित रूप से मार गिराना होगा; लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि अगर आप में से कोई भी गायब हो गया, तो इतना शोर मचेगा कि भागना नामुमकिन हो जाएगा, खासकर इसलिए कि आपसे जो भी सामान हम लेंगे, उससे हमारी पहचान पक्की हो जाएगी।

मैंने हंसते हुए कहा, "तुम्हारे तर्क तो ठोस हैं; लेकिन मुझे शक है, अमीर अली, तुम्हें पिस्तौलें पसंद नहीं हैं, और यही वजह है कि हम तुमसे बच निकले हैं: लेकिन अपनी कहानी जारी रखो; मैंने तुम्हें बीच में रोक दिया है।"

तो साहब, चलिए आगे बढ़ते हैं। मैं शाम तक बड़ी बेसब्री से इंतज़ार करता रहा। जब मैं अपने तम्बू के द्वार पर बैठा था, तभी मैंने एक आदमी को घोड़े पर सवार देखा, जिसके साथ कुछ लोग थे। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि उनमें एक सुंदर युवती भी थी, जो एक फुर्तीले टट्टू पर सवार होकर शहर से आ रही थी। वह हमारे शिविर के पास से गुजरा और नदी पार करके दूसरी तरफ के किनारे पर चढ़ गया और दरगाह में प्रवेश कर गया। क्या यही मेरा नया शिकार था? मुझे ज्यादा देर तक असमंजस में नहीं रहना पड़ा; जल्द ही मूला का संदेश आया, जिसमें मुझे साथ चलने के लिए कहा गया था; और अपनी तलवार और ढाल लेकर मैं उस आदमी के पीछे चल पड़ा जो मुझे बुलाने आया था।

अध्याय XXIII

वह एक साहसी और उत्साही योद्धा थे।
और अनेक युद्धों में भाग ले चुका था;
उसकी भौहें काली थीं और आंखें अग्निमय थीं।
उसने गर्व और क्रोध की शीघ्रता का भाव दिखाया।

मार्मियन, पहले बताए गए बूढ़े मूला के साथ बैठे हुए, नुवाब सब्जी खान बुहादूर (मैं उन्हें इसी नाम से जानता था) अपना कड़वा और नशीला पेय पी रहे थे। उनके चारों ओर उनके कुछ सेवक खड़े थे, भयंकर दिखने वाले लोग, जिनमें से एक-दो के खुरदुरे चेहरों पर गहरे निशान थे, जो दर्शाते थे कि उन्होंने अपने महान स्वामी का कई युद्धक्षेत्रों में बहादुरी से साथ दिया था। उनके पीछे वही दासी बैठी थी जिसका मैंने पहले जिक्र किया था, एक दुबली-पतली गोरी लड़की, जो नुवाब के पसंदीदा पेय का एक नया कटोरा तैयार करने में व्यस्त थी।

मूला ने मेरा परिचय कराया। उन्होंने कहा, 'महाराज, यह वही युवक है जिसके बारे में मैंने बात की थी। मुझे उसकी प्रशंसा दोहराने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि निःसंदेह आपकी पारखी नज़रें तुरंत देख लेंगी कि वह एक सम्मानित और सुसंस्कृत व्यक्ति है, और महाराज के उच्च पद के लिए एक उपयुक्त साथी है।'

मैंने अपनी तलवार का मूठ नज़ूर के रूप में प्रस्तुत किया, और उसे हाथ से छूने के बाद, उन्होंने मुझे कालीन पर अपने पास बैठने के लिए कहा।

मैं इतना शिष्ट था कि ऐसा करना मेरे लिए संभव नहीं था; इसलिए मैंने इस तरह के सम्मान के अयोग्य होने का बहाना बनाते हुए, कालीन के किनारे पर अपनी एड़ियों के बल बैठ गया और अपनी तलवार और ढाल अपने सामने रख ली।

तलवार ने तुरंत उनका ध्यान आकर्षित किया। 'यह एक उत्कृष्ट हथियार है, मीर साहब,' उन्होंने कहा; 'क्या मुझे इसे देखने की अनुमति मिल सकती है?'

मैंने तलवार की मूठ पेश करते हुए कहा, 'निश्चित रूप से, यह तलवार मेरे स्वामी की सेवा में है।'

'नहीं, मीर साहब, मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है; लेकिन मुझे इन मामलों में जिज्ञासा है, और मेरे पास एक चुनिंदा संग्रह है, जिसे मैं एक दिन आपको दिखाऊंगा।'

उसने इसे सावधानीपूर्वक म्यान से बाहर निकाला, और जैसे ही चमकदार पॉलिश किया हुआ ब्लेड सूर्य के प्रकाश में चमक उठा, उसने उसे खुशी भरी मुस्कान के साथ देखा, जैसे कोई लंबे समय बाद किसी घनिष्ठ मित्र से मिलता है।

लेकिन मुझे उनका वर्णन अवश्य करना चाहिए। वे कद में लंबे और मजबूत शरीर वाले थे; विशेष रूप से उनकी भुजाएँ, जो उनके पतले मलमल के वस्त्र से स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं, बेहद मांसल और लंबी थीं; उनका शरीर थोड़ा मोटा था, शायद उम्र का प्रभाव था, जिसने उनकी घुंघराली दाढ़ी और मूंछों में भी कुछ सफेद बाल ला दिए थे; या यह भी हो सकता है कि अत्यधिक मात्रा में मादक पदार्थ के सेवन से उनकी संख्या

बढ़ गई हो। उनका चेहरा बेहद आकर्षक था और उनकी उच्च कुल का प्रमाण था। उनका उदात्त माथा, जो उनकी पगड़ी से लगभग ढका नहीं था, नसों से भरा हुआ था जो सतह से ऊपर उठी हुई थीं, मानो उनमें बहने वाला गर्वित रक्त किसी बंधन को नकार रहा हो। उनकी आँखें चील की तरह बड़ी और भेदक थीं, और यदि वे अत्यधिक शराब के सेवन से सूजी हुई और लाल न होतीं, तो उन्हें सुंदर कहा जा सकता था। उनकी नाक पतली और उभरी हुई थी, नथुने बड़े और लगभग पारदर्शी थे, और मुंह धनुष की तरह छोटा और घुमावदार था, जो शांत अवस्था में हमेशा तिरस्कार का भाव लिए रहता था। उनकी लहराती और आकर्षक दाढ़ी और मूंछें, जिनका मैंने पहले ही जिक्र किया है, उनके चेहरे को ऐसा रूप देती थीं जैसा मैंने पहले कभी नहीं देखा था और न ही उसके बाद कभी देखा है। उनका पूरा व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावशाली था, और साधारण से साधारण वस्त्र में भी नुवाब को देखकर कोई भी तुरंत कह सकता था कि वह एक उच्च कुल का व्यक्ति और एक वीर सिपाही है।

उसके गले में मोतियों की एक माला थी, और इसके अलावा उसने कोई आभूषण नहीं पहना था। उसका पहनावा जानबूझकर सादा था, फिर भी बेहद साफ-सुथरा था। मैंने उसके सिर के पिछले हिस्से पर, जहाँ गर्दन जुड़ती है, और उसकी चौड़ी छाती पर दो गहरे निशान देखे, और पतले कपड़ों से भी उसका गहरा घाव छिपा नहीं था। यह था सब्ज़ी खान, जिसने कई कठिन लड़ाइयों में प्रसिद्धि हासिल की थी, और जिसे मैं पहले ही मौके पर खत्म करने के लिए दृढ़ संकल्पित था।

वह तलवार को इतनी गंभीरता से और इतने लंबे समय तक देखता रहा कि मुझे लगने लगा कि शायद यह मेरे पिता के किसी शहीद की रही होगी, जिसे नुवाब जानता होगा। मैं मन ही मन सोच रहा था कि अगर वह मुझसे पूछे कि मुझे यह कहाँ से मिली, तो मैं उसे क्या जवाब दूँ। तभी अचानक उसने तलवार की धार पर उंगली फेरते हुए कहा, 'तो, मेरे दोस्त, तुमने भी युद्ध देखे हैं; इस अच्छी तलवार में कुछ हल्के निशान हैं जो किसी पुराने सैनिक के स्पर्श से बच नहीं पाए हैं। ये निशान इसमें कैसे आए?'

'ओह, हिंदुस्तान से आते समय लुटेरों के साथ एक मामूली झड़प हो गई थी,' मैंने कहा; और मैंने उसे निर्मूल रोड पर चोरों के साथ हुई अपनी घटना के बारे में बताया।

जब मैंने अपना विवरण समाप्त किया, तो उसने कहा, 'बहुत अच्छा किया; लेकिन मुझे लगता है कि आप अपनी सफलता को आगे बढ़ाते हुए कुछ और बदमाशों को मार गिरा सकते थे। अगर आपका दिल आपका साथ देता, तो यह हथियार आपको कभी निराश नहीं करता।'

'नुवाब, मेरा दिल कभी नहीं डगमगाया,' मैंने जवाब दिया; 'जो मुझे अच्छी तरह जानते हैं, वे यह भी जानते हैं कि मैं यह साबित करने का मौका ढूंढता रहता हूं कि मैं मर्द हूं, कायर नहीं; लेकिन उस समय मैं क्या कर सकता था? हम कुछ ही लोग थे, और जंगल बहुत घना था—हम अंधेरे में उनका पीछा नहीं कर सकते थे।'

'तुम सही कह रहे हो,' उसने उत्तर दिया; 'और मेरे नौजवान, सब्ज़ी खान के भाग्य का अनुसरण करने के बारे में तुम्हारा क्या विचार है? फिलहाल तो उसके पास तुम्हें देने के लिए कुछ नहीं है; लेकिन इंशाअल्लाह! वो समय जल्द ही आएगा जब परखे हुए शौर्यवान कुछ हासिल कर सकेंगे। मेरे मित्र दोस्त मोहम्मद ने मुझे जल्दी

आने के लिए लिखा है, क्योंकि उन्हें अपने नए अभियानों में नेताओं की आवश्यकता है; और मुझे लगता है कि तुम्हारा व्यक्तित्व और कौशल उन्हें पसंद आएगा। तुम्हारा क्या विचार है? तुम जीवन भर घोड़े बेचने के लायक नहीं हो; और अगर तुमने अपने वर्तमान अभियान में कुछ पैसा कमाया भी है, तो उसे अपने व्यक्तित्व के अनुरूप खर्च करने का इससे बेहतर तरीका और कोई नहीं हो सकता कि कुछ लोगों को इकट्ठा करके अपनी सेवाएँ प्रदान करो। दोस्त मोहम्मद को तुम्हारे जैसे युवकों की आवश्यकता है, और इंशाअल्लाह! हम कुछ ऐसा करेंगे जिससे हमें प्रसिद्धि मिलेगी।'

'आपकी कृपा बनी रहे, बुंदे नुवाज़!' मैंने पुकारा; 'यही तो मेरी आत्मा की सबसे बड़ी तमन्ना है; आपके परिचय से मुझे सेवा अवश्य मिल जाएगी: और अगर एक बार हमें कोई काम मिल गया, तो आप देखेंगे कि मैं पीछे नहीं हटूंगा।'

'तो क्या आप मेरे साथ चलेंगे?' उसने कहा; 'मुझे खुशी होगी। मुझे लगता है कि आपके साथ कुछ आदमी और कुछ यात्री हैं; क्या आप जबलपुर जाने के लिए सीधे रास्ते का सुझाव देते हैं? यह रास्ता ऊबड़-खाबड़ है, लेकिन मेरे पास समय कम है; और नागपुर वाला रास्ता, हालांकि रुकावटों या लुटेरों के खतरे से मुक्त है, बहुत लंबा है।'

मैंने जवाब दिया, 'नुवाब साहब, मैंने इसे लेने का निश्चय कर लिया था, आपको देखने से पहले ही, क्योंकि हम एक मजबूत और अच्छी तरह से हथियारों से लैस दल हैं; लेकिन अब मुझे कोई संकोच नहीं है। जहाँ तक चोरों या डाकुओं की बात है, मुझे उनसे कोई डर नहीं है, और मेरे स्वामी को तो निश्चित रूप से कोई डर नहीं होना चाहिए।'

'जब से तुम मेरे साथ आए हो, तब से तो कोई नहीं,' उसने कहा; 'लेकिन मेरे साथ जो कुछ साथी हैं, उनके साथ जंगल में जाना मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं था; क्योंकि वहाँ घूमने वाले गिरोह शक्तिशाली और निर्दयी होते हैं, और युद्ध के मैदानों में जीवन बिताने के बाद सब्ज़ी खान का किसी अज्ञात स्थान पर मारा जाना एक दुखद नियति होगी।'

और फिर भी आप ऐसा करेंगे, नुवाब साहब, मैंने मन ही मन कहा; आपकी मृत्यु का प्रहार उसी जंगल में आप तक पहुंचेगा जिससे आप डरते हैं, और उस स्थान पर कोई स्मारक नहीं होगा जहां सुब्ज़ी खान के अवशेष पड़े होंगे।

'मीर साहब, आप कब चलने के लिए तैयार होंगे?' उन्होंने आगे पूछा; 'क्या आपको यहां रुकने का कोई कारण है?'

'कुछ नहीं,' मैंने उत्तर दिया। 'मैंने कल सुबह प्रस्थान करने का इरादा किया था, लेकिन यदि मेरे स्वामी चाहें तो मैं कुछ दिन प्रतीक्षा कर सकता हूँ।'

'अरे नहीं, कल सुबह मेरे लिए चलना-फिरना सुविधाजनक नहीं होगा, लेकिन परसों मैं सुबह होते ही यहाँ आपसे मिल जाऊँगा और हम साथ-साथ यात्रा करेंगे।'

'जो हुकम!' मैंने उत्तर दिया; 'मैं तैयार रहूंगा; और अब क्या मुझे जाने की अनुमति है?'

'ज़रूर,' उसने कहा; 'मैं अब आपको और नहीं रोकूंगा, क्योंकि मुझे खुद जाना है। मेरे मित्र सुलाबुत खान के यहाँ आज रात कोई दावत है, और मैंने उसमें शामिल होने का वादा किया है।'

मैं अपने तम्बू में लौट आया, और यद्यपि मैं अपने पिता को यह बात बताने के लिए बहुत उत्सुक था, फिर भी मैंने ऐसा करने से तब तक परहेज किया जब तक कि नुवाब पूरी तरह से हमारे साथ नहीं आ गया, जब मैं उसका ठीक से परिचय कराऊंगा।

जैसे ही हम तीसरी सुबह सूरज निकलने से पहले निकलने की तैयारी कर रहे थे, नुवाब हमारे शिविर में आया और मेरे बारे में पूछताछ करने लगा।

मैं तुरंत उसके पास पहुँच गया, और मेरे पिता भी हमारे पास आ गए, तो मैंने उन दोनों का आपस में परिचय कराया। औपचारिक शिष्टाचार के बाद, नुवाब की नज़र से बचकर, मेरे पिता ने मुझे एक संकेत भरी नज़र से देखा—मैंने भी उन्हें उसी तरह देखा, और वे समझ गए; उनके चेहरे पर विजय का भाव आ गया, जिससे मुझे प्रसन्नता हुई, क्योंकि आगे आने वाले इस साहसिक कार्य के लिए यह दल केवल मेरा ही ऋणी था।

हमारा दल जल्द ही आगे बढ़ गया, और जैसे-जैसे सुबह की रोशनी बढ़ती गई, मुझे नुवाब का रूप और वस्त्र दिखाई देने लगे, जो अब मेरे बगल में सवार थे। वे एक शानदार भूरे घोड़े पर सवार थे, जो अपने स्वामी के अधीन गर्व और उत्साह से चल रहा था: घोड़े का साज-सामान गहरे लाल मखमल का था, जो थोड़ा मैला था, लेकिन फिर भी बेहद आकर्षक था, क्योंकि काठी और लगाम पर सुनहरे धागे से सुंदर कढ़ाई की गई थी। लेकिन सबसे ज़्यादा मेरा ध्यान उस घुड़सवार पर गया: उसने अपने साधारण कपड़ों के ऊपर उत्तम इस्पात की कड़ियों से बनी, बेहद चमकदार कवच वाली कमीज़ पहनी हुई थी; कमर पर उसने एक सुंदर हरी शॉल लपेटी हुई थी, जिसमें सोने-चांदी से जड़ी दो-तीन कटारें थीं। उसकी कोहनी तक इस्पात के दस्ताने थे और जांघों पर इस्पात के कवच थे। सिर पर एक चमकदार इस्पात की टोपी थी, जिसके ऊपर से लाल रेशमी झालर लटक रही थी, और धूप से बचने के लिए उसके सिर पर एक रुमाल लपेटा हुआ था। पीठ पर गैंडे की खाल से बनी, खूबसूरती से रंगी और सोने से मढ़ी ढाल लटकी हुई थी; कंधे पर से गुज़रती कढ़ाईदार मखमली बेल्ट से एक लंबी तलवार लटकी हुई थी; और काठी के धनुष पर एक छोटी सी कुल्हाड़ी बंधी हुई थी, जिसका हैंडल लंबा और चमकदार इस्पात का था।

उसका रूप-रंग एक योद्धा के रूप में उसकी प्रसिद्धि के अनुरूप ही था। मैंने हैदराबाद में सैकड़ों सैनिक देखे थे, लेकिन मैंने आज तक किसी ऐसे सैनिक को नहीं देखा था जो इतना सुसज्जित हो जितना वह मेरे बगल में सवार था—और न ही किसी ऐसे सैनिक को, जिस पर मैं इतना भरोसा कर सकता था और जिसके साथ मैं किसी भी भयंकर युद्ध में सहर्ष चला जाता। परन्तु उसके हथियारों या कवच का क्या लाभ? वे उसके किसी काम के नहीं थे—उसके दिन गिने-चुने थे, और उसकी साँसें उसकी नाक में थीं।

'तुम मुझे ध्यान से देखो,' उसने कहा।

'हाँ,' मैंने उत्तर दिया; 'क्योंकि मैंने आज तक इतना परिपूर्ण घुड़सवार नहीं देखा: घोड़ा, हथियार और साजो-सामान सब मिलकर अपने महान स्वामी की शोभा बढ़ाते हैं। क्या आप हमेशा इसी तरह यात्रा करते हैं?'

'हमेशा, मीर साहब; एक सैनिक को कभी भी अपने कवच से बाहर नहीं रहना चाहिए। उस आलीशान कुत्ते सुलाबुत खान के साथ मैंने जो थोड़ा समय आराम में बिताया है, उससे मेरा शरीर नरम हो गया है, और अब भी मुझे अपने कवच से रगड़ महसूस हो रही है। लेकिन वह समय आएगा जब मुझे इसकी आवश्यकता होगी, और बेहतर होगा कि मैं अभी से इसकी आदत डाल लूँ।'

हम पूरी यात्रा साथ-साथ करते रहे, और वह अपने कारनामों, लड़ाइयों और बच निकलने की कहानियों से हमारा ध्यान भटकाता रहा। मैं उसकी कहानियों और उसकी अद्भुत बातचीत की कला से उतना ही प्रभावित था; और अक्सर सोचता था कि काश मैं उससे मित्र के रूप में मिला होता, या उसके अधीन भर्ती हो गया होता, जब मैं उसके झंडे तले चलकर उसके वीरतापूर्ण कार्यों के बराबर पहुँचने का प्रयास कर सकता था। लेकिन वह चिन्हित था: हमारी भाषा में वह 'बुनिज' बन चुका था, और हमारे पेशे के हर नियम और पवित्र कर्तव्य के अनुसार उसे मरना ही था।

हम बिना किसी रोमांच के अपने पहले पड़ाव तक पहुँच गए। इसके आगे ग्रामीणों ने हमें बताया कि जंगल घना होता जा रहा था, सड़क बहुत खराब और पथरीली थी, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि गोंड लोग हथियारबंद थे और रास्ते में मिलने वाले हर किसी को लूट रहे थे।

रिश्तेदारों की बात सुनते हुए नुवाब ने कहा, 'हमें आजमाने दो, आजमाने दो! इंशाल्लाह! वे हमें कोई नुकसान नहीं पहुंचा पाएंगे, और हो सकता है कि उनमें से कुछ को अपने कष्टों के बदले टूटे हुए मुकुट ही मिलें।'

लेकिन अगली सुबह हम अधिक सावधानी से आगे बढ़े; हमारे आदमियों को आपस में अच्छी तरह से एकजुट रहने के लिए कहा गया था, और मैंने कुछ भरोसेमंद लोगों को गाड़ी के चारों ओर तैनात कर दिया, जो ऊबड़-खाबड़ और पथरीली सड़कों पर मुश्किल से आगे बढ़ रही थी; नुवाब और मैं दल के आगे-आगे चल रहे थे। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए, सड़क और भी अधिक उबड़-खाबड़ होती गई; कई जगहों पर यह लगभग पैदल मार्ग जितनी संकरी हो गई थी, और लोगों को सड़क पर फैली शाखाओं को काटना पड़ा, ताकि गाड़ी आगे बढ़ सके। कई बार यह ऊंचे टीलों के बीच से गुजरती थी, जो लगभग हमारे ऊपर लटके हुए थे, और जिनसे हमारे सिर पर पत्थर बरस सकते थे, और हमारे लिए आत्मरक्षा में वार करना भी असंभव था।

'नुवाब साहब, वह बहुत ही भयानक जगह थी,' मैंने कहा, जब हम इन संकरे दर्रों में से एक से निकलकर खुले मैदान में पहुँचे, हालाँकि वह अभी भी जंगल से ढका हुआ था; 'अगर हम पर वहाँ हमला हुआ होता तो हम निश्चित रूप से मारे जाते।'

“हाँ, बिल्कुल,” उसने कहा; “और मैं शुक्रगुजार हूँ कि हम इससे बच निकले; अगर मुझे ठीक से याद है तो इसकी बदनामी है। लेकिन यहाँ से मुझे लगता है कि और कोई नहीं है; जंगल घना हो जाता है, और झाड़ियाँ भी कम हो जाती हैं। लेकिन देखो,” वह चिल्लाया, “यह क्या है? आलिया की कसम! गोंड हम पर हमला कर रहे हैं। “शमशेर आलम!” वह तुरही की तरह गूंजती आवाज में चिल्लाया, “शमशेर बू डस्ट!” और उसकी चमकती तलवार म्यान से बाहर निकली। अपने घोड़े को रोकते हुए, और उसी समय अपनी एड़ियों से उसके

पार्श्वों को छूते हुए, जानवर ने दो-तीन छलांगें लगाईं, जिसके बाद नुवाब अपनी सीट पर मजबूती से बैठ गया, अपनी टोपी को अपने सिर पर दबाया, और मुझे तैयार रहने के लिए कहा।

मैं पीछे नहीं था; मेरी तलवार निकली हुई थी और ढाल मैंने खोलकर अपने सामने रख ली थी ताकि तीरों से बचाव हो सके। मेरा घोड़ा, जो नुवाब के घोड़े से कुछ ही कदम पीछे था, कुछ ही छलांगों में मुझे उसके पास ले आया, और हमारे पीछे भूद्रिनाथ और कुछ अन्य लोग टट्टुओं पर सवार होकर आ रहे थे, और कुछ पैदल सैनिक अपनी तोपों के साथ थे।

'आओ, अपवित्र माताओं के पुत्रों,' नुवाब ने पुकारा; 'आओ और अपने आप को सच्चे पुरुष साबित करो; आओ और अपने कायरतापूर्ण तीरों को बलवान हृदयों और तैयार हथियारों के विरुद्ध आजमाओ! तुम नीच कुल के काफ़िर और कायर हो; इंशाल्लाह! तुम्हारी बहनें नीच हैं, और गधों ने तुम्हारी माताओं से प्रेम किया है।'

नुवाब के हाव-भाव और गालियों को देखकर मैं हँसे बिना नहीं रह सका, क्योंकि वह गोंडों पर बरस रहा था और उन पर तलवार लहरा रहा था। वे हिले तक नहीं, और पहाड़ी की ढलान पर बैठे-बैठे उन्होंने हम पर तीरों की बौछार करने के लिए अपने धनुष तैयार कर लिए—और सच में, तीर हमारे पास से सीटी बजाते हुए निकल गए, और एक तीर नुवाब के घोड़े की गर्दन में मामूली रूप से लगा, जिस पर गोंडों ने जीत की खुशी में ज़ोरदार जयकार की।

'अरे, मेरे बेचारे मोती, तुम घायल हो गए हो,' उसने घाव से तीर निकालते हुए कहा। 'मीर साहब, वे बदमाश कभी नीचे नहीं आएंगे; बेहतर होगा कि आप उन पर गोलियों की बौछार कर दें और उन्हें तितर-बितर कर दें।'

'अब, मेरे बेटों,' मैंने अपने अनुयायियों से कहा, 'जब भी कोई साथी आग में अपना शरीर डाले, तो तुम उसे चिह्नित कर लेना।'

उन्होंने ऐसा ही किया। एक गोंड, जो एक चट्टान पर बैठा था और अपने पैरों के पास धनुष रखे हुए था, आसानी से नज़र आ रहा था और अपनी सुरक्षा के प्रति बिल्कुल लापरवाह था। सुरफुराज खान ने उस पर निशाना साधा और तीर चलाया, और पल भर में वह लुढ़कते-लुढ़कते लगभग हमारे पैरों के पास आ गिरा: तीर उसके गले में लगा था और वह मर चुका था। उसकी हालत देखकर बाकी लोग ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे और एक पल के लिए हमें लगा कि वे हम पर हमला कर देंगे: लेकिन उनमें से एक और बुरी तरह घायल हो गया, और उसे उठाकर वे तेज़ी से अपने पहाड़ी किलों की ओर भाग गए। उनका पीछा करना व्यर्थ और असंभव था।

अपनी यात्रा के दौरान हमें आगे कोई और अप्रिय घटना नहीं मिली, और हम तय समय पर अपने पड़ाव पर पहुँच गए।

कुछ देर बाद मेरे पिता मेरे पास आकर बोले, 'अमीर अली, क्या नुवाब हमारा होगा या नहीं? अगर तुमने उसे मेहमान के तौर पर बुलाया है, तो बता दो; अगर नहीं, तो बेहतर होगा कि तुम कोई व्यवस्था कर लो।'

'एक मेहमान!' मैं चिल्लाया; 'अरे नहीं, उसे तो हटाना ही होगा; जब उसे नष्ट करने के लिए इतने सारे अच्छे स्थान मौजूद हैं तो इसमें कोई कठिनाई नहीं हो सकती।'
'असंभव!' मेरे पिता ने कहा; 'घोड़े पर सवार होकर यह तो पागलपन होगा। वह एक बेहतरीन घुड़सवार है, और उसका घोड़ा बहुत ही जोशीला है; जरा सी भी गड़बड़ी उसे बेकाबू कर देगी, और उसे कौन संभाल पाएगा? हमें कोई और योजना बनानी होगी।'
मैंने कहा, 'सब कुछ मुझ पर छोड़ दो; यदि स्थान चुनने की कोई परम आवश्यकता नहीं है, तो मैं अवसर की प्रतीक्षा करूंगा।'

अध्याय 24

लियर। नहीं, नहीं, नहीं जीवन नहीं;
कुत्ते, घोड़े या चूहे को जीवन क्यों मिलना चाहिए?
और तुम बिल्कुल भी सांस नहीं ले रहे हो? हे भगवान, तुम फिर कभी नहीं आओगे।
कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं!
किंग लियर, अंक V, दृश्य iii

अगले दिन मैंने भूद्रिनाथ और सुरफुराज खान से कहा, 'मुझे लगता है कि आप लोग बहुत पहले ही यह समझ चुके होंगे, मेरे दोस्तों, कि नुवाब हमारे साथ क्यों है?'

पूर्व वाले ने उत्तर दिया, 'हमें इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता, क्योंकि आप उसे इतनी दूर तक ले आए हैं: लेकिन हमें बताइए, आपकी क्या इच्छा है, इसे कैसे संभाला जाएगा? रास्ते में उस पर हमला करना असंभव होगा; वह निश्चित रूप से हममें से कुछ को मार डालेगा, और मैं तो इस समय अपनी जान गंवाना नहीं चाहता।'

मैंने कहा, 'आप सही कह रहे हैं; हमें किसी भी तरह का जोखिम नहीं लेना चाहिए; फिर भी मुझे लगता है कि अवसर जल्द ही मिल जाएगा।'

'कैसे?' दोनों ने एक ही क्षण में चिल्लाकर पूछा।

मैंने कहा, 'सुनो, और बताओ कि क्या मेरी योजना तुम्हें मंज़ूर है। कल मार्च के दौरान नुवाब को इस बात का अफ़सोस था कि हमें साफ़ पानी का कोई अच्छा स्रोत नहीं मिला, ताकि वह अपना रोज़ का शरबत पी सके: तुम जानते हो कि उसके साथ रहने वाली दासी हमेशा उसे तैयार करती है। अब मुझे उम्मीद है कि कल के मार्च में हमें ऐसा कोई स्रोत मिल जाएगा, और मैं उसे रुकने और तरोताज़ा होने के लिए मनाने की पूरी कोशिश करूँगा: जब वह मुझसे बातचीत में व्यस्त होगा, अगर वह बेखबर मिला तो हम उस पर हमला कर सकते हैं।'

'इससे आसान कुछ नहीं है,' सुरफुराज खान ने उत्तर दिया; 'अगर वह एक बार बैठ गया तो हम असफल नहीं हो सकते; उसके हथियार तब उसके काम नहीं आएंगे।'

'मुझे यह काम बिलकुल पसंद नहीं,' भूद्रिनाथ ने कहा। 'मान लो अगर वह सतर्क भी रहे, तो वह निश्चित रूप से भाग जाएगा; और यद्यपि मैं और यहाँ का खान न तो किसी इंसान से डरते हैं और न ही किसी शैतान से, फिर भी एक नुवाब को मारना कुछ असामान्य बात है; वह कोई आम बुनिज नहीं है, और मुझे लगता है कि उसे बिना किसी नुकसान के जाने देना चाहिए।'

'बकवास!' मैं चिल्लाया। 'यह बात तुम कह रहे हो, भूद्रिनाथ? मैं तो हैरान हूँ। अगर वह नुवाब है, तो क्या वह इंसान नहीं है? और क्या मैंने उसे अपने पेशे के हर नियम के अनुसार बहकाया नहीं है? नुवाब को मारना

शायद कोई नई बात हो, लेकिन सोचो, यार, सोचो कि यह कहने में कितना गौरव होगा कि हमने वीरों में श्रेष्ठ सब्ज़ी खान को मार डाला: हमारे पिता और दादा ने तो ऐसा काम पहले कभी नहीं किया।'
उन्होंने कहा, 'यही कारण है कि मैं इसके खिलाफ आवाज उठाता हूं; कोई भी असामान्य चीज अनुचित है, और अक्सर भवानी के लिए अपमानजनक होती है।'
मैंने कहा, 'तो फिर इस पर शकुन देखो और पता करो कि वह क्या कहती है। इंशाल्लाह! हमें नुवाब जरूर मिलेगा।'
'हाँ,' उसने उत्तर दिया, 'अब तुम एक ठग की तरह बोल रहे हो, और वो भी एक सच्चे ठग की तरह: मैं आज शाम शकुन देखूंगा और परिणाम बताऊंगा; यदि वे अनुकूल रहे, तो तुम पाओगे कि भूद्रिनाथ तुम्हें छोड़ने वाला आखिरी व्यक्ति होगा।'
शाम को विधिवत रूप से शगुन देखे गए और वे शुभ सिद्ध हुए। भूद्रिनाथ बड़े हर्ष के साथ मुझे यह समाचार सुनाने आया।
मैंने कहा था ना कि ऐसा ही होगा,' मैं चिल्लाई; 'हमारी संरक्षिका ने अब तक हमें जो सौभाग्य दिया है, उसके बाद भी तुम लोग उन पर शक करके मूर्खता कर रहे हो; और अब सुनो, मैं चुप नहीं बैठी थी। मैंने ग्रामीणों से पता लगाया है कि यहाँ से लगभग चार क्रॉस दूर एक छोटी सी धारा है जिसमें भरपूर पानी है; उसके किनारे घने जंगल से ढके हुए हैं, जितना हम चाहते थे, और मैंने उसी जगह को चुन लिया है। क्या हम लुघाई लोगों को भेजें?'
'ज़रूर,' भूद्रिनाथ ने कहा; 'हमें तैयार रहना चाहिए: लेकिन नहीं,' उन्होंने आगे कहा, 'इसका क्या फायदा? अगर जंगल उतना ही घना है जितना आप कह रहे हैं, तो हम शवों को आसानी से छिपा सकते हैं; और वैसे भी, चूंकि वहाँ एक नदी है, तो रेत या कंकड़ में जल्दी से कब्र बनाई जा सकती है। लेकिन नुवाब एक ताकतवर आदमी है, मीर साहब; बेहतर होगा कि आप उसके साथ अकेले जोखिम न लें; बाकी लोगों के लिए, आदमियों ने उन्हें सुरक्षित कर लिया है, यानी उन्होंने पहले ही तय कर लिया है कि कौन उनका काम करेगा।'
मैंने कहा, 'यह तो और भी अच्छा है, क्योंकि अब इसके बारे में सोचने के लिए ज्यादा समय नहीं है।'
'मैंने एक व्यक्ति को चुना है,' भूद्रिनाथ ने आगे कहा, 'वह व्यक्ति जो खुद को नुवाब का जमादार कहता है; मैंने उससे घनिष्ठ संबंध बना लिए हैं और मुझे उस पर पूरा भरोसा है; बाकी लोगों ने भी ऐसा ही किया है; लेकिन हमने नुवाब का जिम्मा आप पर छोड़ दिया है।'
'वह मेरा है,' मैंने चिल्लाकर कहा; 'मैं नहीं चाहता था कि कोई मेरे काम में दखल दे। अगर सुरफुराज खान ने किसी को नहीं चुना है, तो मैं उससे मदद लूंगा।'
'मीर साहब, जहाँ तक मुझे पता है, ऐसा नहीं है, और वह हमारे साथ मौजूद किसी भी व्यक्ति जितना ही बलवान है; उसके और उसके एक और साथी के साथ आप असफल नहीं हो सकते; लेकिन सुरफुराज खान को शुमशिया बनने दीजिए, वह एक अच्छा शुमशिया है।'

मैंने कहा, 'अगर नुवाब बैठे हों तो मुझे इसकी शायद ही जरूरत पड़ेगी; हालांकि किसी भी मुश्किल की स्थिति में इसका होना शायद बेहतर होगा।'

हमने उस रात सारी व्यवस्थाएँ कर लीं और अगली सुबह पूरे उत्साह के साथ अपनी यात्रा शुरू की। हमेशा की तरह, नुवाब और मैं दल के आगे-आगे साथ-साथ चल रहे थे।

'यह तो बदकिस्मती का देश है, मीर साहब,' उसने चलते-चलते कहा। 'क्या तुमने कभी इतना उजाड़ जंगल देखा है, जहाँ एक छोर से दूसरे छोर तक सच्चे मुसलमान के होंठों को तर करने के लिए पानी की एक बूँद भी न हो? अच्छा हुआ मौसम ठंडा है, वरना हम लंबी यात्राओं में बुरी तरह थक जाते; और इसी वजह से मैं, सब्ज़ी खान, तीन दिनों से बिना शरबत के हूँ। आलिया की कसम! अब तो मुझे इतनी प्यास लग रही है जैसे गर्मी में कौआ, और मेरा मुँह अपने आप खुल रहा है। काश, इस सूखे रेगिस्तान में कोई नदी या कुआँ मिल जाए! मैं जी भरकर पानी पी लेता।'

'धैर्य रखो, खोदावुंड!' मैंने पुकारा, 'कौन जानता है कि हम किसी नदी के पास हों? और फिर हम रुकेंगे और तरोताज़ा हो जाएंगे: मुझे खुद भूख लगी है, और मेरे पास जो खजूर हैं उनसे उपवास तोड़ने में एक घंटे की देरी मुझे पसंद नहीं होगी।'

'हा, खजूर! मैं भी कुछ लूंगा; मेरे साथियों को मेरे बटुए में कुछ खाने को मिल जाए, और तुम सही कहते हो, इन पहाड़ों की ठंडी हवा वाकई भूख बढ़ा देती है।'

लेकिन एक के बाद एक कई मोड़ छूटते गए, और अभी तक कोई नदी दिखाई नहीं दी। मुझे लगने लगा था कि मुझे गलत जानकारी मिली है, और अपनी निराशा के कारण मेरा मूड बिल्कुल ठीक नहीं था, तभी पहाड़ी की चोटी पार करते ही मुझे खुशी से वह छोटी नदी दिखाई दी जिसके बारे में ग्रामीणों ने बताया था।

मैंने कहा, 'देखो, खोदावुंड! आखिरकार नदी मिल ही गई, और पानी की चमक देखकर लगता है कि यह अच्छी होगी। क्या तुम अब एक घंटे के लिए रुकोगे? हम सब मिलकर एक पाइप पी सकते हैं, और तुम्हारा दास तुम्हारे लिए शरबत तैयार कर देगा।'

'ज़रूर,' वह चिल्लाया; 'हो सकता है हमें कोई और न मिले, और यही वह समय है जब मुझे अपना शरबत सबसे ज़्यादा पसंद है; किसी को पीछे से मेरी दासी के लिए भेजो, और उसे जल्दी आने को कहो।'

मैंने उसके लिए एक आदमी को भेजा, और नदी के किनारे पहुँचकर हमने एक चिकनी घास वाली जगह चुनी, और अपनी काठी के कवर फैलाकर बैठ गए।

एक-एक करके, जैसे-जैसे लोग आते गए, वे भी विश्राम करने लगे, या पानी में उतरकर अपने हाथों और चेहरों को साफ पानी से धोकर तरोताज़ा होने लगे, जो कंकड़ों से भरे तल पर चमकता हुआ बह रहा था; जानवरों को भी पानी पीने की अनुमति दी गई थी; और सभी लोग समूहों में बैठकर, आपस में हुक्का पीते हुए, उस रास्ते की खूबियों और आगे आने वाली चुनौतियों पर खुशी-खुशी चर्चा कर रहे थे। मैंने जल्दी से चारों ओर देखा, तो पाया कि सभी लोग अपने-अपने पदों पर तैनात थे, नुवाब के प्रत्येक सेवक और अंगरक्षक के साथ तीन ठग

थे। इसलिए वे आश्वस्त थे। अज़ीमा की गाड़ी सड़क पर खड़ी थी, और उसे वहाँ से ले जाने के लिए मैं उसके पास गया।

'प्रिय,' मैंने कहा, 'लोगों को थोड़ा आराम करने का समय देने के लिए हम यहाँ थोड़ी देर के लिए रुके हैं, लेकिन बेहतर होगा कि आप आगे बढ़ें; सड़क चिकनी लग रही है, और हम आपको पकड़ने के लिए तेज़ी से यात्रा करेंगे।'

'ज़रूर,' उसने जवाब दिया; 'उन्हें आगे बढ़ने के लिए कहो, क्योंकि मैं यात्रा के अंत तक पहुँचने के लिए तरस रही हूँ। बेचारी नुरगिज़ और मैं झटकों से लगभग मर ही गए हैं।'

'अच्छा, ठीक है,' मैंने कहा, 'एक-दो पड़ाव और सह लो। मैं वादा करता हूँ कि अगर संभव हुआ तो पहले बड़े गाँव या कस्बे में, जहाँ हम पहुँचेंगे, मैं तुम्हारे लिए एक डमी का इंतज़ाम करूँगा, और फिर तुम आराम से रह पाओगे।'

मैंने उस गुंडे से कहा, जो ड्राइवर का काम कर रहा था (क्योंकि मैंने बीडर से निकलने के तुरंत बाद रास्ते में एक गाड़ी खरीदी थी, और तब से वही उसे चला रहा था), 'अब आगे बढ़ो, लेकिन ज्यादा तेज मत जाओ।'

वह मुझे छोड़कर चली गई, और मैं नुवाब के पास लौट आया। वह मेरे पिता के साथ बातचीत कर रहा था, और अभी भी स्पष्ट रूप से अपने घृणित पेय के नशे में थोड़ा धुत था।

'अरे! मीर साहब,' उन्होंने पुकारा; 'क्या सोचते हो? मैं तुम्हारे इस आदरणीय पिता को अपना शरबत पिलाने की कोशिश कर रहा हूँ। कसम से! यह जन्नत के लायक पेय है, फिर भी वे कहते हैं कि यह कड़वा है और उनके पेट को रास नहीं आता। क्या तुम एक घूंट लोगे?' और उन्होंने मुझे प्याला थमा दिया। 'पी लो, साहब! इससे तुम्हें फायदा होगा और ठंडी हवा भी नहीं लगेगी; और जहाँ तक बनाने की बात है, मैं इसकी तारीफ करता हूँ; क्योंकि हिंद के दस राज्यों में कुरीना जितनी सब्जी बनाने में माहिर गुलाम कहीं नहीं है। है ना, बेटी?'

'मेरे स्वामी का अपनी दासी पर बहुत स्नेह है,' उस युवती ने कहा; 'और यदि वह प्रसन्न हो जाते हैं, तो उसे बस इसी बात की परवाह होती है।'

'तो फिर एक और प्याला लाओ,' नुवाब चिल्लाया; 'क्योंकि गीत क्या कहता है?' और उसने वही गीत ज़ोर से गाया जो मैंने पहले सुना था—

पेयाला पे, तो माइन ने पे, फिर किसी को क्या!* *एक प्याला (शराब) पी ली गई, तो मैंने भी पी ली; इससे किसी को क्या लेना-देना? और इससे किसी को क्या लेना-देना? सारी दुनिया जानती है कि सब्ज़ी खान भांग पीता है, और इससे वह कोई कमज़ोर सिपाही नहीं बनता। अब अगर कुछ सुंदर लड़कियाँ हमें एक-दो गुज़ल सुनाएँ, तो मुझे लगता है कि इस वीरान जगह को स्वर्ग बना दिया जा सकता है।'

'यह अच्छा विचार है, नुवाब,' मैंने उसकी हास्यपूर्ण टिप्पणी में शामिल होते हुए कहा; 'हम अगले गाँव से कुछ तुवायफें ले लेंगे; मुझे पूरा यकीन है कि वे एक-दो पदयात्रा में हमारे साथ चलेंगी।'

'आपने बहुत अच्छा कहा, मीर साहब; आपके शब्द बहुत अच्छे हैं, सचमुच बहुत अच्छे; और इंशाल्लाह! हमें औरतें मिल जाएंगी,' नुवाब ने धीरे-धीरे और अस्पष्ट स्वर में कहा, क्योंकि उन्होंने काढ़ा काफी मात्रा में पी लिया था, जिसका असर उनके सिर पर हो गया था। 'अलिया की कसम! उन्हें भी नाचना चाहिए— ऐसे—' उन्होंने जोश से कहा, और उठकर अपनी बाहें फैलाकर एक-दो बार चक्कर लगाया, और हम सब पर तिरछी निगाहें डालीं।

उसे देखना बेहद हास्यास्पद था। उसका शानदार कवच और पोशाक उसकी लचर चाल और बेतुकी हरकतों से बिल्कुल मेल नहीं खा रहे थे, और हम सब दिल खोलकर हँसे।

लेकिन यह तमाशा बहुत लंबा खिंच रहा था, और हमारे पास इससे कहीं ज़्यादा ज़रूरी काम था, इसलिए हमने अपना समय और अवसर ऐसी मूर्खताओं में बर्बाद नहीं किया। इसलिए मैंने उनसे फिर बैठने का अनुरोध किया, और सुरफुराज खान को इशारा किया कि जैसे ही वह मुझे उनके पीछे जाते हुए देखें, वह तुरंत तैयार रहें।

'अरे! कुरीना,' उसने वापस बैठते हुए पुकारा, 'और सब्ज़ी लाओ, मेरी बच्ची: आलिया की कसम! यह प्यास बुझने का नाम ही नहीं ले रही, और आज तो तुम इसे बनाने में कमाल कर रही हो। मुझे और चाहिए, वरना मैं इस घिनौने दौर को कभी खत्म नहीं कर पाऊंगा। अब मुझे नींद आ रही है, और थोड़ी और सब्ज़ी मुझे तरोताज़ा कर देगी।'

'फाजिल खान, मेरा हुक्का लाओ,' मैंने पूरी ताकत से चिल्लाकर कहा। यही वो संकेत था जिस पर हम सहमत हुए थे।

'हाँ,' नुवाब चिल्लाया, 'मैं एक-दो बार सूंघने की भीख मांगूंगा, यह मेरे शरबत के साथ अच्छा लगेगा।'

मैं अब उसके पीछे घूमकर आ गया था; मेरा रूमाल मेरे हाथ में था, और मैंने सुरफराज खान को उसे पकड़ने का इशारा किया।

'देखो, नुवाब!' वह चिल्लाया; और उसने मजबूती से उसकी दाहिनी बांह पकड़ ली।

'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे छूने की, गुलाम?' सब्ज़ी खान गुस्से से बोला। 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई एक नुवाब को छूने की—?'

उसने वाक्य पूरा नहीं किया। मैंने उसके गले में कपड़ा डाल दिया था, सुरफुराज खान ने उसका हाथ पकड़ रखा था, और मेरे पिता पूरी ताकत से उसके पैर खींच रहे थे। नुवाब गहरी नींद में सोए हुए आदमी की तरह कई बार खर्राटे ले रहा था, लेकिन मेरी पकड़ मजबूत थी और ढीली नहीं पड़ी: उसके नीचे तो घोड़ा भी मर जाता। अचानक, जैसे ही वह मेरे नीचे छटपटाने लगा, उसके शरीर की हर मांसपेशी कांप उठी; उसने फिर से और भी जोर से खर्राटे लिए, और अब उसका बेबस शरीर कोई प्रतिरोध नहीं कर रहा था। मैंने उसके चेहरे को देखा, और पाया कि जिस शरीर में अभी-अभी जान थी, उससे जीवन की सांस निकल चुकी थी। सब्ज़ी खान मर चुका था—मैंने सैकड़ों के हत्यारे को मार डाला था!

लेकिन किसी ने भी उसकी बेचारी दासी के बारे में नहीं सोचा था, जो कुछ दूरी पर, हमारी ओर पीठ करके, अपने बेहोश स्वामी के लिए एक और स्वादिष्ट पेय तैयार करने में व्यस्त थी। उसने न तो हमारी हाथापाई की आवाज सुनी, न ही नुवाब के कुछ लोगों की गहरी कराहें, और वह उस जगह की ओर बढ़ी जहाँ सुरफुराज खान अब मृत शरीर से कवच और वस्त्र उतारने में लगा हुआ था।

या आलिया! साहब, जब उसने वह सब देखा जो हुआ था, तो उसकी चीख कितनी तीखी थी! मैं उसे कभी नहीं भूलूंगा, न ही उसके चेहरे पर व्याप्त भय और पीड़ा को, जब वह दौड़कर लाश पर गिर पड़ी। साहब, स्वामी और दास होते हुए भी, वे एक-दूसरे से प्रेम करते थे।

उसके होंठ बेहोश लाश के होंठों से चिपके हुए थे, जिसने अक्सर उसके गर्म स्पर्श का जवाब दिया था, और वह अपनी पीड़ा में उन सभी प्यारे शब्दों को बुदबुदा रही थी जिनका इस्तेमाल वह अपने एकांत क्षणों में उसे पुकारने के लिए करती थी, और उससे जागने की विनती कर रही थी।

'वह मर नहीं सकता! वह मर नहीं सकता!' सुंदरी लड़की रो पड़ी—साहब, वह देखने में बहुत खूबसूरत थी, उसने थोड़ा उठकर अपने बिखरे बालों को आँखों से पीछे किया; 'और फिर भी वह हिल नहीं रहा—वह बोल नहीं रहा'—और उसने एक पल के लिए उसके चेहरे को निहारा। 'आह!' वह चीखी, 'उसकी आँखों को देखो—उन्हें देखो—वे उसके सिर से निकल जाएँगी! और उसका चेहरा, यह मेरे स्वामी का चेहरा नहीं है—ये वे होंठ नहीं हैं जिन्होंने अक्सर अपनी बेचारी कुरीना से प्यार भरे शब्द कहे थे! हे मेरे दिल, कितना दर्द हो रहा है!'

'यह बिलकुल नहीं चलेगा,' मैं चिल्लाया; 'तुममें से कुछ लोग उसे इस पीड़ा से मुक्ति दिला दो; जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं महिलाओं से युद्ध नहीं करता।'

'लड़की गोरी है,' सुरफुराज खान ने कहा; 'मैं उसे जीवन का आखिरी मौका दूंगा।'

'सुनो!' उसने उससे कहा, 'मज़ाक करने का समय नहीं है;' और जैसे ही उसने उसे बांह से झटक कर हिलाया, उसने दयनीय भाव से उसके चेहरे की ओर देखा और उस शव की ओर इशारा किया जिसके पास वह घुटनों के बल बैठकर शोक मना रही थी और खुद को आगे-पीछे हिला रही थी। 'मेरी बात सुनो,' खान ने कहा, 'जिन्होंने वह काम किया है, वे तुम्हारा दुखद जीवन समाप्त कर देंगे जब तक कि तुम मेरी बात नहीं मानोगी। मेरी कोई पत्नी नहीं है, कोई संतान नहीं है: यदि तुम उठोगी और मेरा अनुसरण करोगी, तो तुम मेरे लिए दोनों बनोगी। मरे हुए के बारे में और क्यों सोचना? और तुम भी उसकी दासी थी! उठो, मैं फिर कहता हूँ, और तुम्हारा जीवन बच जाएगा - तुम मुक्त हो जाओगी।'

'मुझसे किसने बात की?' उसने लगभग सुनाई न देने वाली आवाज़ में कहा। 'अरे, मुझे उससे दूर मत करो; मेरा दिल टूट गया है! मैं मर रही हूँ, और तुम हमें अलग नहीं करना चाहते?'

'सुनो, मूर्ख!' खान ने गरजते हुए कहा; 'इस सभा के समक्ष मैं तुझे जीवन और सुखमय घर का वादा करता हूँ, फिर भी तू मेरी बात नहीं मानता: अपने भाग्य को मत आज़माओ; मेरे एक शब्द पर ही तेरी मृत्यु हो जाएगी।

तो क्या तू मेरे पीछे आएगा? मेरा घोड़ा तैयार है, हम मृतकों को वहीं छोड़ देंगे और वहाँ पड़े हुए व्यक्ति के भाग्य के बारे में और नहीं सोचेंगे।'

'उसके बारे में अब और मत सोचो! उसे भूल जाओ—मेरे प्यारे, मेरे महान प्रेमी! ओह, नहीं, नहीं, नहीं! क्या वह मर नहीं गया? और मैं भी मर रही हूँ।'

'मैं तुम्हें फिर से चेतावनी देता हूँ, अभागी लड़की,' सुरफुराज खान चिल्लाया; 'मुझे बल प्रयोग करने के लिए मजबूर मत करो; मैं चाहता हूँ कि तुम स्वेच्छा से मेरा अनुसरण करो—अभी तक मैंने तुम पर हाथ नहीं उठाया है।'

उसकी ओर मुड़ते हुए और मृत शरीर के विकृत और अब अकड़ते हुए चेहरे को सहलाते हुए, उसकी प्रतिक्रिया में केवल एक धीमी सी कराह थी।

'लाश को यहाँ से हटाओ!' मैंने कुछ लुघाई लोगों से, जो अपना काम करने के लिए इंतज़ार कर रहे थे, चिल्लाकर कहा; 'ऐसा लगता है जैसे तुम सब उस विलाप करती हुई औरत की तरह प्रेम में डूबी हुई लड़कियाँ हो। क्या हम उसकी इस हरकत की वजह से यहाँ मंडराते रहेंगे? इसे यहाँ से हटाओ!'

मेरे आदेश का पालन किया गया; उनमें से चार ने शव को पकड़ लिया और दासी के अथक प्रयासों के बावजूद उसे उठाकर ले गए; उनका प्रयास व्यर्थ रहा; उसे दो पुरुषों ने पकड़ रखा था, और खुद को छुड़ाने के उसके संघर्षों ने धीरे-धीरे उसे थका दिया।

'अब तुम्हारा समय आ गया है,' मैंने सुरफुराज खान से कहा; 'हजारों शैतानों के नाम पर उसे पकड़ लो, क्योंकि वह तुम्हारी ही है, और उसे अपने घोड़े पर बिठा लो: तुम उसे अपने पास रख सकते हो, और अगर तुम उसे शांत नहीं रख पाए तो यह तुम्हारी ही गलती होगी।'

सुरफुराज खान ने उसे ऐसे उठाया जैसे वह कोई बच्ची हो; और हालांकि अब वह होश में आ चुकी थी, फिर भी वह बारी-बारी से हमें कोसती, हत्यारा कहती और हमें उसे मार डालने की गुहार लगाती रही। उसने उसे उठाकर अपने घोड़े पर बिठा दिया। लेकिन इसका कोई फायदा नहीं हुआ; उसकी चीखें इतनी भयानक थीं कि खुद को छुड़ाने के लिए उसका संघर्ष सुरफुराज खान और उसके एक आदमी के उसे पकड़े रहने के प्रयासों को लगभग नाकाम कर रहा था।

हम इस तरह लगभग आधा क्रॉस आगे बढ़े ही थे कि मेरे पिता, जो अब तक एक मूक दर्शक बने हुए थे, वहाँ आ गए, क्योंकि मैं एक बार फिर व्यर्थ ही दासी को शांत रहने और अपने भाग्य को स्वीकार करने के लिए मनाने की कोशिश कर रही थी।

'यह मूर्खता से भी बदतर है,' वह चिल्लाया, 'यह पागलपन है; और सबसे बढ़कर, सुरफुराज खान, तुम इतनी जल्दी में एक सुंदर चेहरे वाली लड़की पर मोहित हो गए! अगर हमें कोई यात्री मिल जाए तो हम क्या करेंगे? वह हमारी शिकायत उनसे कर देगी, और फिर हम बड़ा फायदा उठा सकते थे। तुम पर धिक्कार है! क्या तुम्हें अपना कर्तव्य नहीं पता?'

घोड़े के बाईं ओर बैठा आदमी हठपूर्वक बोला, 'मुझे शैतान से और कुछ नहीं कहना; तुम उसे जितना हो सके उतना अच्छे से बिठा लो; उसके और घोड़े के साथ, मुझे यात्रा के अंत तक काफी मजा आने वाला है;' और उसने अपनी पकड़ छोड़ दी।
'अरे,' मैंने कहा, 'और क्या तुम्हें लगता है कि जब हम अपने मुकाम पर पहुंचेंगे तो उसकी जुबान बंद रहेगी? तब तुम उसके साथ क्या करोगे?'
'शैतान!' खान चिल्लाया और म्यान में रखी तलवार से उसके चेहरे पर जोरदार प्रहार करते हुए बोला, 'क्या तुम चुपचाप नहीं बैठोगी और मुझे घोड़े को आगे ले जाने नहीं दोगी?'
जिस हिंसा से उसने प्रहार किया, उससे तलवार अपनी लकड़ी की म्यान को चीरते हुए निकल गई और उसके चेहरे पर एक गंभीर घाव हो गया।
मेरे पिता चिल्लाए, 'देखो, तुमने अपनी हिंसा से उसकी सुंदरता तो बिगाड़ ही दी; अब तुम्हें उससे क्या चाहिए?'
'वह हर हाल में शांत रहती है,' खान ने कहा और वह घोड़े को थोड़ी दूर तक ले गया।
लेकिन उस प्रहार से वह केवल आंशिक रूप से ही स्तब्ध हुई थी, और उसे अपनी स्थिति का फिर से होश आ गया; उसके चेहरे से खून टपक रहा था, जिसे उसने अपने हाथ से पोंछ लिया; उसने एक पल के लिए दया भरी निगाहों से अपने चेहरे को देखा, और अगले ही पल खुद को हिंसक रूप से जमीन पर पटक दिया।
'तुममें से कोई एक इस जानवर को तब तक पकड़े रखे, जब तक मैं इसे दोबारा खड़ा न कर दूं।' लेकिन वह पहले से कहीं ज्यादा छटपटाने लगी और उसकी चीखों से पूरा वातावरण गूंज उठा: उसने अपनी तलवार निकाली और उसे उसके ऊपर उठा लिया।
'वार करो!' वह चिल्लाई, 'तू हत्यारा और दुष्ट है, वार कर! और इस बेचारी दासी की दयनीय जिंदगी का अंत कर दे; तूने मुझे पहले ही घायल कर दिया है, और एक और वार मुझे इस पीड़ा से मुक्ति दिला देगा; मुझे लगा था कि मैं मर जाऊंगी, लेकिन मौत मुझे नहीं आएगी। क्या तू मुझे नहीं मारेगा?'—और उसने उस पर थूक दिया।
'यह असहनीय है; मूर्खता थी मैंने एक बेकार जान बचाने के लिए इतनी मेहनत की,' खान ने अपनी तलवार म्यान में रखते हुए कहा; 'तेरी मृत्यु होगी, और वह भी शीघ्र।' उसने अपना रुमाल उसके गले में डाल दिया, और वह उसकी घातक पकड़ में मृत्यु की पीड़ा से तड़पने लगी।
'लो!' उसने अपना हाथ छोड़ते हुए कहा, 'काश ऐसा न होता; लेकिन यही उसका भाग्य था, और मैंने इसे पूरा कर दिया!' और वह शव को वहीं छोड़कर उदास मौन में आगे बढ़ गया।
कुछ लुघाई लोग आ गए, शव को सड़क के किनारे झाड़ियों में जल्दी से दफना दिया गया, और अब हमारे बीच कोई बाधा नहीं थी, इसलिए हमने पूरी गति से अपनी यात्रा जारी रखी। मैं शुक्रगुजार था कि मैंने अज़ीमा को उसकी गाड़ी में भेज दिया था; वह हिंसा के घटनास्थल से बहुत दूर थी, और अगर वह आस-पास होती तो उसे इसका कारण जरूर पता चल जाता; लेकिन उसकी गाड़ी का चालक जल्दी में था, और उसे पकड़ने से

पहले हमें काफी दूरी तय करनी पड़ी। साहब, यह अजीब बात है कि उस दिन के बाद सुरफुराज खान पहले जैसा हंसमुख और हंसमुख नहीं रहा। वह अपने काम में नौसिखिया नहीं था; उसके हाथों सैकड़ों पुरुष और महिलाएं मारे गए थे; लेकिन जिस क्षण उसने दास की हत्या की, उस क्षण से वह एक बदला हुआ इंसान बन गया: वह चुपचाप, उदास भाव से बैठा रहता, उसकी आँखें खालीपन को निहारती रहतीं, और जब हम उसे इस बारे में याद दिलाते, तो उसकी एकमात्र प्रतिक्रिया एक उदास मुस्कान होती, जैसे ही वह अपना सिर हिलाता और कहता कि उसकी आत्मा चली गई है: ऐसे अवसरों पर उसकी आँखें भी कभी-कभी आँसुओं से भर जातीं, और उसके मुँह से इतनी आहें निकलतीं कि उसका दिल टूट जाता।

वह हमारे साथ हमारे घर तक आया, लूट के माल में से अपना हिस्सा लिया, जिसे उसने तुरंत गिरोह के गरीब सदस्यों में बांट दिया, और हमें उदास विदाई देने के बाद, अपने सारे कपड़े उतार दिए, अपने शरीर को राख से ढक लिया, और एक फकीर के वेश में इस कठोर दुनिया में निकल पड़ा, ताकि इसके थप्पड़ों और तिरस्कार को सहन कर सके।

कई साल बाद मुझे पता चला कि वह उस जगह लौट आया जहाँ उसने लड़की की हत्या की थी, सड़क किनारे एक झोपड़ी बनाई और उस जंगली इलाके में यात्रियों की ज़रूरतों को पूरा करने लगा, जहाँ उसके एकमात्र साथी भालू, बाघ और भेड़िया ही रहे होंगे। उसके हमसे बिछड़ने के बाद मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा, और हममें से कई लोगों को उसकी अनुपस्थिति और बाद में हमारे द्वारा किए गए अभियानों में उसकी बहादुरी और साहस की कमी खलती रही: हमारे बीच उसकी जगह कोई नहीं ले पाया।

इस अभियान से जुड़ी और कोई रोमांचक कहानी मुझे आपको सुनाने को नहीं है: हम बिना किसी दुर्घटना या रुकावट के तय समय पर अपने घर पहुँच गए; और कौन नहीं कहेगा कि हमने यहाँ की शांति और सुकून का भरपूर आनंद लिया, और अपनी लंबी अनुपस्थिति और यात्रा के रोमांच और खतरों के बाद हमने इसकी महत्ता को और भी बढ़ा दिया? मैं पूरी तरह से खुश था, अज़ीमा के बढ़ते प्यार और स्नेह में सुरक्षित महसूस कर रहा था, जिसका मधुर स्वभाव दिन-प्रतिदिन और भी निखरता जा रहा था। मुझे अपने साथियों के बीच उच्च स्थान प्राप्त हुआ, क्योंकि मैंने जो कुछ हासिल किया था, वह हमारे गाँव में रुके लोगों और देश भर में छोटे-छोटे अभियानों पर गए अन्य लोगों को बताया गया था; और हमने जो अपार लूट का माल प्राप्त किया था, और मेरे पिता का सक्रिय जीवन से सेवानिवृत्त होने का दृढ़ निश्चय, मुझे एक महान भाग्यवान नेता के रूप में दर्शाता था, और एक ऐसा व्यक्ति जिस पर भविष्य के किसी भी अभियान में भरोसा करने में कई लोग प्रसन्न होंगे, क्योंकि मैं हमारी संरक्षिका का विशेष प्रिय प्रतीत होता था।

हमारे आने के लगभग दो महीने बाद हुसैन के दल की वापसी से हम सब बहुत प्रसन्न हुए। जैसा कि हमने पहले ही तय कर लिया था, विदा होते समय दोनों दलों के अभियानों से प्राप्त धन को एक जगह इकट्ठा कर आम वितरण के लिए रखा गया और तय दिन पर वितरण किया गया। साहब, आपको शायद यकीन न हो जब मैं आपको बताऊँ कि कुल धन लगभग एक लाख रुपये था।

सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि मुझे जमादार के रूप में हिस्सा दिया जाए, और हमारे दल के नियमों के अनुसार मुझे कुल का आठवां हिस्सा मिला। भूद्रिनाथ और सुरफुराज खान को भी वही हिस्सा मिला जो मुझे मिला, लेकिन सुरफुराज खान को उतना ही हिस्सा मिला जितना हमने उसके हमारे साथ जुड़ने के बाद जीता था। मुझे ठीक से याद नहीं कि वह कितना था, लेकिन जैसा कि मैंने आपको बताया है, उसने उसे दल के गरीब सदस्यों में बाँट दिया; और जाहिर तौर पर वह इसी उद्देश्य से हमारे साथ रुका था, और जैसा कि मैंने पहले बताया है, वह तुरंत हमें छोड़कर चला गया।

इस प्रकार अर्जित धन से मैंने दो वर्ष शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत किया। मुझे अक्सर देश-विदेश में छोटी-मोटी यात्राओं पर जाने की तीव्र इच्छा होती थी, पर मेरे पिता इस बारे में बिल्कुल भी नहीं सुनते थे।

'इसका क्या फायदा?' वह कहता था। 'तुम्हारे पास अगले दो साल तक गुजारा करने के पर्याप्त साधन हैं; मेरी संपत्ति भी बहुत है, और जब तक हमें आपूर्ति की कमी महसूस न हो, तब तक तुम अतिरिक्त धन अर्जित करने के प्रयास में अपनी जान जोखिम में क्यों डालोगे, जिसकी तुम्हें आवश्यकता नहीं है?'

लेकिन मेरी आत्मा इस तरह के निष्क्रिय और यशहीन जीवन जीने के खिलाफ बुरी तरह विद्रोह कर रही थी, और हर उस कारनामे के बारे में सुनकर मेरी बेचैनी और बढ़ जाती थी जिससे मुझे डर था कि वह आलस्य मुझ पर हावी हो जाएगा, और मैं एक बार फिर अपने पेशे के रोमांचक और साहसी कारनामों में शामिल होना चाहता था।

फिर भी मुझे अपने घर से बहुत लगाव था। अज़ीमा ने मुझे एक प्यारा सा बेटा दिया था, जो मेरी जान था, और जिस समय की मैं बात कर रहा हूँ, उस समय मैं अपने परिवार में एक और सदस्य के आने की उम्मीद कर रहा था। मैं पहले ही दो बार जाने का मन बना चुका था, और तीसरा भी नज़दीक आ रहा था, लेकिन मैंने इसे भी निष्क्रियता में ही बीतने दिया, हालाँकि भूद्रिनाथ और अन्य लोगों ने मुझे बार-बार और ज़ोर देकर कहा कि मैं अपनी किस्मत आज़माऊँ और एक और दल का नेतृत्व करते हुए बंगाल में प्रवेश करूँ, जहाँ हमें भरपूर काम और सफलता का आश्वासन था।

हालांकि मेरी उनके साथ जाने की बहुत इच्छा थी, मेरे पिता ने फिर भी आपत्ति जताई; उनके मन में यह धारणा बैठ गई थी कि यह अभियान दुर्भाग्यपूर्ण होगा; और सचमुच ऐसा ही हुआ। कई नेताओं के नेतृत्व में एक बड़ा दल हमारे गाँव से तय समय पर निकला; लेकिन शगुन, हालांकि पूरी तरह से बुरे नहीं थे, फिर भी बहुत उत्साहजनक नहीं थे, और इसका पूरे दल पर बुरा प्रभाव पड़ा। वे अभी ज्यादा दूर नहीं गए थे कि विभिन्न नेताओं के बीच ईर्ष्या और झगड़े शुरू हो गए; वे एक-दूसरे से अलग हो गए और अलग-अलग रास्तों पर चल दिए। एक-एक करके वे अपने अभियान से निराश होकर लौट आए, उन्हें बहुत कम लूट मिली थी, जो मुश्किल से साल के बाकी बचे समय के लिए पर्याप्त थी। लेकिन एक दल का फिर कभी पता नहीं चला; उसमें मेरा बेचारा दोस्त भूद्रिनाथ और उसके साथ गए छह नेक साथी शामिल थे। वर्षों बाद हमें उसके भाग्य के बारे में पता चला: वह बंगाल गया था, कलकत्ता गया था, और उस समय तक वह बहुत सफल रहा था; लेकिन वहाँ

उसके साथियों ने अपनी सारी लूट अय्याशी में उड़ा दी, और वे मुश्किल से कुछ मील चलने लायक ही सामान लेकर वापस लौटे।

वे लगभग बनारस पहुँच ही चुके थे कि भयंकर भुखमरी को देखते हुए उन्होंने कुछ यात्रियों पर हमला कर दिया और उन्हें मार डाला। हालाँकि, उन्होंने अपने पीड़ितों को दफनाया नहीं, और उनमें से एक, जो मरा नहीं था, जीवित हो उठा: उसने पास के गाँव के निवासियों को सूचना दी। मेरे बेचारे दोस्तों को पकड़ लिया गया, उनके पास जो कुछ भी था, उसे तुरंत पहचान लिया गया, और हमले में बचे व्यक्ति द्वारा दी गई गवाही पुख्ता थी। भला इसका विरोध कौन कर सकता था? कानून ने अपना काम किया, और उन पर मुकदमा चलाकर उन्हें फाँसी दे दी गई।

अमीर अली ने यहाँ अपना वृत्तांत रोक दिया और कुछ दिनों में इसे फिर से शुरू करने का वादा करते हुए, उन्होंने जाने की अनुमति मांगी और अपना सामान्य सलाम कहकर विदा हो गए।

मानव जीवन की पुस्तक का यह एक विचित्र पन्ना है! मैंने सोचा, जब वह कमरे से बाहर निकला। वह आदमी, जिसने सैकड़ों हत्याएं की हैं, अतीत को संतोष और आनंद के साथ याद करता है; बल्कि वह अपने जीवन की घटनाओं को याद करने में गर्व महसूस करता है, जिनमें से लगभग हर एक हत्या है, और अपने पीड़ितों के छोटे से छोटे विवरण और उनके विनाश में अपनी भूमिका का वर्णन करने में गौरव महसूस करता है, और उसे शायद ही कोई पछतावा होता है! अपनी भयावह कहानी सुनाते समय वह केवल एक-दो बार ही सिहर उठा है, और कहानी की शुरुआत में उसे सबसे ज्यादा किस बात ने परेशान किया, यह मुझे अभी तक पता नहीं चला है।

लगभग इसी एक अपवाद को छोड़कर, अतीत की कहानी सुनाते समय उनका उत्साह और भी बढ़ जाता था; और उनकी सहज वाक्पटुता, जब कहानी सुनाते समय और उनकी जीवंत कल्पना और सच्ची स्मृति के प्रभाव में, कभी-कभी मुझसे कहीं बेहतर कलम और सक्षम अनुवादक के योग्य प्रतीत होती थी: लेकिन चलिए इसे छोड़ देते हैं; मैं दोहराता हूँ, यह मानवता के विविध इतिहास का एक विचित्र और भयावह अध्याय है। कैन के समय से लेकर आज तक, दुनिया के हर देश में हत्यारे रहे हैं—नफरत से, बदले की भावना से, ईर्ष्या से, भय से, और हमारी प्रकृति की हर बुरी भावना के उकसावे से हत्या करने वाले; लेकिन एक हत्यारे के जीवन को हमेशा निरंतर दुखमय बताया गया है—वह कीड़ा जो कभी नहीं मरता, दोषी अंतरात्मा की पीड़ा और निंदा, जो हृदय को कुतरती है, जीवन के हर आनंद को नष्ट कर देती है, और अपने पीड़ित को या तो आत्महत्या करने, न्याय के सामने आत्मसमर्पण करने, या मानसिक पीड़ा से क्षीण होने के लिए मजबूर करती है—शायद अन्य नियतियों से भी अधिक भयानक नियति। हत्यारों के बारे में हमने ऐसे ही वर्णन सुने और पढ़े हैं, लेकिन ये ठग बाकी सबसे अलग हैं। उनके मन में पश्चाताप का कोई नामोनिशान नहीं है। निरंतर कारावास की थकान में कोई सोच सकता है कि अतीत की उनकी कल्पनाएँ और यादें उनके लिए असहनीय होंगी; लेकिन नहीं—वे दूसरों की तरह खाते-पीते और सोते हैं, अपने पहनावे का ध्यान रखते हैं, अतीत के बारे में बात करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं, और अगर कल रिहा कर दिए जाएँ, तो अस्थायी प्रतिबंध के बाद नए जोश के साथ

फिर से अपने इस भयानक पेशे में लग जाएँगे। यह भी अजीब है कि हिंदू और मुसलमान, हर संप्रदाय और पंथ के लोग, उस अंधविश्वास में एकमत हैं जिससे यह भयानक धंधा पनपा है। हिंदुओं के मामले में शायद यह आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि उनकी रक्षा करने वाली देवी वह हैं जिन्हें सभी जातियाँ श्रद्धा से देखती हैं और उनसे अत्यंत भयभीत रहती हैं; लेकिन मुसलमान की बात करें तो, जब तक उसका आचरण भाग्यवाद के उस भयानक सिद्धांत से प्रेरित न हो, जिससे प्रत्येक सच्चा आस्तिक अपनी बुद्धि के उदय से ही पूरी तरह ओतप्रोत होता है, तब तक उसके द्वारा किए गए इस भयावह कृत्य का कारण बताना कठिन है। उसका कुरान हत्यारों की निंदा करता है। खून के बदले खून, आंख के बदले आंख और दांत के बदले दांत, उसके पैगंबर का सिद्धांत है, जिस पर विश्वास करते हुए भी वह कांपता है। और अमीर अली अपने जेलरों की नजरों में भी एक भुलामददगार है; एक सम्मानित व्यक्ति, एक धार्मिक व्यक्ति, जिसने अपनी जवानी से ही दिन में पांच बार नमाज पढ़ी है, अपने जीवन और आचरण में अत्यंत धर्मनिष्ठ है, अपने स्नान में अत्यंत सावधानी बरतता है, रमज़ान और अपने कैलेंडर में प्रत्येक संत दिवस का रोज़ा रखता है, मुहर्रम में हरे वस्त्र पहनता है, और एक अच्छे हिंदुस्तानी सईद की तरह अपनी छाती पीटता है और अपने बाल नोचता है; संक्षेप में, वह अपने धर्म की हजार और एक रस्में निभाता है, और स्वर्ग और वहां मिलने वाली सभी हूरों के बारे में उतना ही आश्वस्त रहता है जितना कि वह अब एक अच्छे भोजन के बारे में होता है।

फिर भी अमीर अली एक हत्यारा है, जिसके सामने अतीत या वर्तमान के ज्ञात संसार के हर हत्यारे को—शायद उसके अपने पेशे के कुछ लोगों को छोड़कर, जैसे जर्मनी के स्वतंत्र गिरोह, लांज़कनेक्ट्स, इटली के बैंडिट्टी, कोंडोटिएरी, बुकेनियर्स और समुद्री लुटेरे, और हमारे समय के बर्क्स और हेयर्स का गिरोह (जो वैसे तो ठगी की एक पतित प्रणाली है, जिसके बारे में जब मैंने अमीर अली को बताया तो वह दिल खोलकर हँसा और कहा कि वे बड़े ही नासमझ हैं)—कम महत्व का समझा जाना चाहिए।

पाठक, ये विचार मेरे मन में चल रहे थे, तभी अंत में मैं जोर से चिल्लाया, 'छी! इसका कारण बताने का प्रयास व्यर्थ है, लेकिन ठग्गी नियतिवाद और अंधविश्वास की संतान प्रतीत होती है, जिसे उस चरम उत्तेजना ने पोषित और परिपूर्ण किया है जिसने मनुष्य को ऐसे कृत्यों के लिए प्रेरित किया है जिनसे मानवता कांप उठती है।'

'क्या खोदावुंद ने पुकारा?' एक पालक ने कहा, जो मेरे सिर के ऊपर पंखा खींचते-खींचते धीरे-धीरे सो गया था और मेरी इस बात से जाग गया। 'क्या साहब ने पुकारा?'

'नहीं, बूदुन, मैंने ऐसा नहीं किया; लेकिन चूंकि तुम जाग गए हो, तो किसी को मेरे लिए चिलम लाने को कहो। मेरे तंत्रिका तंत्र को शांत करने की आवश्यकता है।'

अध्याय XXV

वह एक पुरुष है, उसे हर तरह से देखो।
मैं उसके जैसा व्यक्ति दोबारा कभी नहीं देखूंगा।
हैमलेट, अंक I, दृश्य II

एक सप्ताह बीतने पर, अमीर अली ने मुझे संदेश भेजा कि वह अपनी कहानी सुनाना फिर से शुरू करने के लिए तैयार हैं, और मैंने तुरंत उन्हें अपने निवास पर आने का अनुरोध किया। वे आए, और अपनी आदत के अनुसार विनम्रतापूर्वक प्रणाम करते हुए, मैंने उन्हें बैठने के लिए कहा।

पाठक शायद उस व्यक्ति के बारे में जानना चाहेंगे जिनसे मेरी और उनकी लंबी बातचीत हुई है; और इतने महत्वपूर्ण विषय पर उन्हें और अधिक अंधेरे में न रखते हुए, मैं उन्हें अमीर अली का परिचय देता हूँ। वे कद में छोटे हैं, लगभग पाँच फुट सात इंच लंबे; उनका शरीर अब दुबला-पतला हो गया है, जो शायद उनकी लंबी कैद का परिणाम है—इसे कैद कहना मुश्किल है, सिवाय इसके कि उनकी पहले की स्वतंत्र और बेरोकटोक आदतों और गतिविधियों के लिए, छोटी से छोटी पाबंदी भी अत्यंत कष्टदायक और असहनीय होगी। उनकी उम्र लगभग पैंतीस या चालीस वर्ष होगी, लेकिन भारत के मूल निवासी के हिसाब से यह उन पर जँचती है, और उनकी दाढ़ी और मूंछें, जिन पर वे स्पष्ट रूप से बहुत ध्यान देते हैं और जिन्हें वे हमेशा बड़ी सफाई से संवार कर रखते हैं, जरा भी सफेद नहीं हुई हैं। जैसा कि मैंने कहा है, उनका शरीर दुबला-पतला है, लेकिन अत्यंत सुगठित, फुर्तीला और मांसल है, और उनकी भुजाएँ अपनी असाधारण लंबाई और तंदुरुस्ती के लिए उल्लेखनीय हैं। उनका पहनावा हमेशा बेहद साफ-सुथरा होता है, और उनके साथी गवाहों की तुलना में अधिक सलीके से पहना जाता है, उनकी पगड़ी हमेशा एक सुंदर ढंग से बंधी होती है, और उनकी कमर पर हमेशा एक अंग्रेजी शॉल या रंगीन रूमाल बंधा होता है, जबकि पहले कश्मीरी शॉल या ब्रोकेड रूमाल उनके लिए अधिक उपयुक्त हुआ करता था। रंगत में वे एक देशी व्यक्ति के हिसाब से गोरे हैं; उनका चेहरा आज भी बेहद आकर्षक है, और इससे मुझे विश्वास होता है कि उनकी युवावस्था के बारे में कही गई बातें अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं हैं। उनका माथा ऊँचा और चौड़ा है; उनकी आंखें बड़ी, चमकीली और बेहद भावपूर्ण हैं, खासकर जब उनकी वाक्पटुता जागृत होती है और अलंकारिक भाषा की बाढ़ सी आ जाती है, जिसे अंग्रेजी में अनुवाद करना असंभव होगा, या यदि किया भी जाए, तो ऐसे भाषा-रूपों से अपरिचित अंग्रेजी पाठक को वह अतिरंजित और बेतुका लगेगा। उनके गाल थोड़े धंसे हुए हैं, लेकिन उनकी नाक बाज जैसी और सुडौल है, उनका मुंह छोटा और खूबसूरती से तराशा हुआ है, और उनके दांत बेहद सफेद और एक समान हैं। उनके ऊपरी होंठ पर छोटी-छोटी मूंछें हैं, जो कई हसार लेफ्टिनेंटों को भी ईर्ष्या दिला सकती हैं; जबकि उनकी घनी और लहराती दाढ़ी, जिसमें से एक भी बाल नहीं छूटता, लगभग उनकी छाती तक जाती है और उनके गले और गर्दन को छुपाती है, जो किसी चित्रकार या मूर्तिकार के लिए अध्ययन का विषय हो

सकती है: अंत में, उनकी छाती बहुत चौड़ी और उभरी हुई है, जो उनकी पतली कमर के प्रभाव के साथ अच्छा विरोधाभास पैदा करती है।

उनका व्यवहार शालीन, सौम्य और विनम्र है—वास्तव में यह सज्जनता से भी बढ़कर है—यह दरबारी है, और मैंने ऐसे व्यवहार की बराबरी मुसलमानों में भी नहीं देखी, जिनमें से कई लोगों के साथ मेरा मेलजोल रहा है। मेरे जो भी पाठक भारत गए हों और यहाँ के रईसों और उच्च पदस्थ लोगों से परिचित हुए हों, वे तुरंत समझ जाएँगे कि इस मामले में मैं अमीर अली की कितनी प्रशंसा करता हूँ। उनकी भाषा शुद्ध और धाराप्रवाह है, शायद फारसी के उनके ज्ञान के कारण थोड़ी बनावटी है, जो कि मामूली होते हुए भी, उन्हें अक्सर अनावश्यक रूप से भी उस भाषा के शब्दों और अभिव्यक्तियों का प्रयोग करने में सक्षम बनाती है, लेकिन फिर भी यह शुद्ध उर्दू है; उन्हें इस पर गर्व है, और वे उन लोगों को घोर तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं जो दुखी या हिंदुस्तान की भ्रष्ट बोली बोलते हैं। कुल मिलाकर, अमीर अली एक व्यक्तित्व हैं, और अपनी और सबकी नज़र में एक अत्यंत महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं; और अब उसने अपनी चाल में जो अकड़ अपना ली है, जो स्पष्ट रूप से उसके लिए अपरिचित है, वह उसकी अब कमजोर स्थिति पर अनुचित नहीं लगती।

पाठक, यदि आप इन वर्णनों को समझ सकें, तो आपके सामने अमीर अली हैं; और जब आप अपनी कल्पना में उनकी छवि को निहारते हैं और उनके सौम्य और भावपूर्ण चेहरे को देखते हैं, तो मेरी ही तरह आप भी यह नहीं सोचेंगे कि वह एक कुख्यात हत्यारा था, जिसने अपने जीवनकाल में सात सौ से अधिक हत्याएं की थीं। मेरा तात्पर्य यह है कि वह इतनी बड़ी संख्या में मनुष्यों के विनाश में सक्रिय रूप से और व्यक्तिगत रूप से शामिल था।

अब, अमीर अली, मैंने कहा, चूंकि मैंने आपके रूप-रंग का वर्णन पूरा कर लिया है, मुझे उम्मीद है कि आप अपने द्वारा पहले से बताई गई रोमांचक कहानियों के भंडार में और अधिक योगदान देने के लिए तैयार हैं।

साहब, आपका दास तैयार है, उसने उत्तर दिया, और इंशाअल्लाह! वह आपको निराश नहीं करेगा। लेकिन मेरे मालिक ने मेरी दयनीय हालत का वर्णन क्यों किया है, जो अब पहले से ही काफी खराब है? क्या आपका दास पूछ सकता है कि आपने क्या लिखा है? —और उसकी आवाज़ के लहजे से यह स्पष्ट हो गया कि उसने निष्कर्ष निकाल लिया था कि यह मेरे लिए अनुकूल नहीं होगा।

मैंने कहा, "सुनो, मैं तुम्हें पढ़कर सुनाता हूँ।" हर वाक्य पर उनके चेहरे की चमक बढ़ती गई। जब मैंने पढ़ना समाप्त कर लिया, तो उन्होंने कहा,

यह बिल्कुल सटीक चित्र है, जैसा मैं स्वयं को दर्पण में देखता हूँ। आपने छोटी से छोटी बात भी नहीं छोड़ी है; बल्कि मैं तो यह भी कह सकता हूँ कि मेरे स्वामी ने मेरी प्रशंसा की है।—और वह उठे और उन्होंने गहरा सलाम किया।

नहीं, मैंने कहा, मैंने आपकी बाहरी सुंदरता की प्रशंसा नहीं की है, जो कि आकर्षक है; लेकिन मुझे डर है कि जो लोग इसे पढ़ेंगे वे आपके दिल के बारे में खुद ही फैसला कर लेंगे, और उनकी राय वैसी नहीं होगी जैसी आप चाहते हैं, बल्कि वैसी होगी जिसके आप हकदार हैं।

साहब, क्या आपको लगता है कि मेरा दिल खराब है?
बिल्कुल, मैं करता हूँ।
लेकिन ऐसा नहीं है, उन्होंने आगे कहा। क्या मैं कभी दयालु पति और सच्चा मित्र नहीं रहा? क्या मैंने अपने बच्चों और पत्नी से प्रेम नहीं किया, जब तक ईश्वर ने उन्हें मेरे लिए जीवित रखा? और क्या मैं अब भी उनकी मृत्यु पर गहरा शोक नहीं मनाता? ऐसा कौन सा व्यक्ति है जो अमीर अली के सम्मान के विरुद्ध एक शब्द भी कह सकता है, जो हमेशा पवित्र और निष्कलंक रहा है और हमेशा रहेगा? क्या मैंने कभी कोई सामाजिक बंधन तोड़ा है? क्या मैं कभी किसी साथी के प्रति विश्वासघाती या निर्दयी रहा हूँ? क्या मैंने कभी अपने कर्तव्य या विश्वास में कोई चूक की है? क्या मैंने कभी अपने धर्म के किसी रीति-रिवाज या समारोह की उपेक्षा की है? मैं आपको बताता हूँ, साहब, ऐसा कोई व्यक्ति जीवित नहीं है जो इनमें से किसी भी बात पर मुझ पर उंगली उठा सके। और यदि आप इन बातों पर विचार करें, तो ये वे बातें हैं जिनका कड़ाई से पालन करने से मनुष्य को संसार में मान-सम्मान प्राप्त होता है।
लेकिन उन सात सौ हत्याओं के बारे में, अमीर अली, आप क्या कह सकते हैं? वे दूसरे पलड़े में आपके विरुद्ध एक भयानक संतुलन बनाते हैं।
आह! वो तो बिल्कुल अलग बात है, ठग हँसते हुए बोला, - बिलकुल अलग बात। मैं आपको कभी यह विश्वास नहीं दिला सकता कि मुझे उन्हें अंजाम देने का पूरा अधिकार था, मैं तो आलिया के हाथों का एक मामूली मोहरा मात्र था। क्या मैंने उनमें से किसी को मारा? नहीं! वह तो उन्होंने ही मारा था। अगर मेरी रुमाल उनके गले में हज़ार बार भी डाली गई होती और मेरे हाथों में हाथी जितनी ताकत होती, क्या मैं कुछ कर पाता, क्या वे मर जाते, बिना उनकी मर्ज़ी के? मैं आपको बताता हूँ, साहब, वे नहीं मरते, मर ही नहीं सकते थे; लेकिन चूंकि मैं आपको कभी भी इसके विपरीत सोचने के लिए राजी नहीं कर पाऊंगा, और चूंकि अपने स्वामी से बहस करना मेरे लिए उचित नहीं है, इसलिए मुझे लगता है कि अब मुझे अपनी कहानी फिर से शुरू करनी चाहिए, अगर वे सुनने को तैयार हों, क्योंकि मुझे अभी बहुत कुछ बताना है। मैंने अपने पहले अभियान का इतना विस्तृत वर्णन किया है कि शायद मुझे अपने जीवन की अन्य घटनाओं का वर्णन इतना लंबा-चौड़ा करने की आवश्यकता नहीं है; सच कहूँ तो, अगर मैं ऐसा करने लगूँ तो आप, साहब, लिखते-लिखते थक जाएँगे और आपके देशवासी पढ़ते-पढ़ते, क्योंकि मेरे हर अभियान में मेरा साथ देना लगभग अंतहीन काम हो जाएगा। इसलिए, आपकी अनुमति से, मैं केवल उन्हीं घटनाओं का वर्णन करूँगा जो मुझे लगता है कि आपको सबसे अधिक रुचिकर लगेंगी और जिनमें मुझे उल्लेखनीय घटनाएँ याद हैं।
मैंने कहा, "आगे बढ़ो; मैं सुन रहा हूँ।"
तो फिर, ठग ने कहा, खोदावुंद को याद रखना चाहिए कि मैंने उससे कहा था कि मैं तीन अभियानों से बचकर निकला था, और मैंने तीसरे अभियान पर जाने का लगभग निश्चय कर लिया था। मैं अब उसी अभियान के बारे में बात करना चाहता हूँ, क्योंकि उसमें एक असाधारण घटना घटी थी, जिससे तुम्हें तुरंत पता चल जाएगा कि यदि आलिया की इच्छा हो तो किसी के लिए भी अपने भाग्य से बचना असंभव है।

जिस समय की मैं बात कर रहा हूँ, उस समय मुझे भूद्रिनाथ और सुरफुराज खान के निधन के कारण अपने कुछ और करीबी लोगों से मिलना पड़ा था, जिनके प्रति मेरे मन में गहरा आदर था। हुसैन, हालांकि मैं उन्हें अपने पिता के सबसे प्रिय मित्र के रूप में प्यार और आदर देता था, अब इतने बूढ़े और गंभीर हो चुके थे कि वे मेरे सभी विचारों और शायद प्रसिद्धि पाने की मेरी बेतहाशा आकांक्षाओं में शामिल नहीं हो सकते थे। इसलिए, पीर खान और मोतीराम, जिनके नाम से आप परिचित हैं, अब मेरे ही स्तर तक पहुँच चुके थे और विभिन्न अभियानों में खुद को 'नेक और सच्चे व्यक्ति' साबित कर चुके थे, इसलिए मैंने उन्हें अपने विश्वास में लिया और हमने एक अभियान की योजना बनाई, जिसका नेतृत्व मैं करने वाला था और वे मेरे अधीनस्थ। हमारे परिचितों में से पचास सबसे युवा, सबसे मजबूत और सबसे सक्रिय एवं उद्यमशील लोगों को दल के रूप में चुना गया; और सभी को पहले से सूचित कर दिया गया था, और हम वर्ष 18 के दशहरा से कुछ दिन पहले अपने गाँव के पास एक उपवन में मिले, जो छायादार था और बड़ी सभाओं के लिए उपयुक्त था, और हमेशा बैठक और विचार-विमर्श के स्थान के रूप में उपयोग किया जाता था; इसे एक भाग्यशाली स्थान माना जाता था, क्योंकि यहां से आज तक कोई भी दुर्भाग्यपूर्ण अभियान शुरू नहीं हुआ था।

हम सब एकत्रित थे। सुबह बहुत सुहावनी थी, और घास, जो अभी तक धूप और सूखे से भूरी भी नहीं हुई थी, मानो हमारे लिए ही एक मुलायम और सुंदर कालीन बिछाई गई हो। आसपास के खेत, जिनमें से कई हमने खुद जोते थे, हरी-भरी हरियाली से लहरा रहे थे, और उन पर से गुजरती हवा के हल्के झोंकों से ज्वार के हर लंबे पौधे में कंपन हो रहा था, जबकि तेज धूप से सब कुछ इतना जगमगा रहा था कि उसे लगातार देखना लगभग कष्टदायक था। हमारे ऊपर छाए ऊंचे बरगद के पेड़ों में पक्षी गा रहे थे; सैकड़ों हरे तोते उनकी शाखाओं में खेल रहे थे और चहचहा रहे थे, एक डाल से दूसरी डाल पर उड़ रहे थे, कुछ खेल रहे थे, तो कुछ पेड़ों के पक रहे बेरों को खा रहे थे; और पूरा बाग अनगिनत कबूतरों की गुटरगू से गूंज रहा था, जिनकी कोमल और प्रेम भरी गुनगुनाहट दिल की बेचैनी को शांत कर रही थी, और उसे शांति और विश्राम की अनुभूति करा रही थी, और उन्हें उतना ही खुश रहने का आह्वान कर रही थी जितना वे स्वयं थे।

मेरे पिता और हुसैन हमें अपने परामर्श और अनुभव से मार्गदर्शन देने के लिए उपस्थित थे, और भवानी को बलि और आह्वान के साथ कार्य प्रारंभ किया गया; लेकिन जैसा कि मैंने पहले ही इन अनुष्ठानों का वर्णन कर दिया है, इन्हें दोहराने की आवश्यकता नहीं है; संक्षेप में यह कहना पर्याप्त है कि शगुन देखे गए और वे अत्यंत शुभ थे; उन्होंने हमें आश्वस्त किया, और यद्यपि मैंने उनकी आवश्यकता के बारे में जो कुछ भी सुना था, उसके बावजूद मुझे उनमें बहुत कम विश्वास था, फिर भी उन्होंने पूरे समूह में उत्साह भर दिया, और मैं भी उनके परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई उमंग में शामिल हो गया।

मेरे पिता ने अपने संक्षिप्त भाषण में बैठक का उद्देश्य बताया। उन्होंने कहा कि वे बूढ़े हो चुके हैं और अब यात्रा की थकान और कठिनाइयों को सहन करने में असमर्थ हैं; उन्होंने पिछली यात्रा में मेरे द्वारा किए गए सभी कार्यों का सारांश प्रस्तुत किया, उन विभिन्न उदाहरणों की ओर इशारा किया जिनमें मैंने अपनी उम्र से कहीं अधिक सक्रियता, साहस और विवेक का प्रदर्शन किया था, और अंत में सभी से आग्रह किया कि वे मुझ

पर पूर्ण विश्वास रखें, हर बात में मेरी आज्ञा का पालन करें मानो वे स्वयं उपस्थित हों, और सबसे बढ़कर आपस में किसी भी प्रकार का झगड़ा न करें, क्योंकि इससे निश्चित रूप से वही विनाशकारी परिणाम होंगे जो पिछले वर्ष की यात्रा के साथ हुए थे।

इस संबोधन के बाद वे सभी एक साथ खड़े हो गए, और आपसी सहमति से पवित्र कुल्हाड़ी पर शपथ लेकर मेरी आज्ञा का पालन करने का वचन दिया, जो कि वे ले सकते थे सबसे प्रभावशाली शपथ थी, और उनका दृढ़ विश्वास था कि इससे किसी भी प्रकार का विचलन उन पर हमारी रक्षक देवी के प्रतिशोध को आमंत्रित करेगा और उनके विनाश का कारण बनेगा।

साहब, मैं आपको अपने कहे शब्दों का वर्णन करके समय बर्बाद नहीं करूँगा; संक्षेप में कहूँ तो, मैंने प्रस्ताव रखा कि हमारा दल दुखुन जाने वाले मुख्य मार्ग से होकर जबलपुर या नागपुर तक जाए; वहाँ से हम लूट की उम्मीद में पूरब या पश्चिम की ओर मुड़ेंगे और फिर अपने घर लौट आएँगे। मैंने खानदेश का ज़िक्र इसलिए किया क्योंकि हम ठगों को वहाँ ज़्यादा जानकारी नहीं थी और मुझे लगता था कि वहाँ हमें अच्छी लूट मिल सकती है, क्योंकि मैंने सुना था कि बंबई के व्यापारी मालवा में अपने संवाददाताओं को अफ़ीम और वहाँ के अन्य उत्पाद खरीदने के लिए बड़ी मात्रा में धन भेजते थे। मैंने उन्हें आश्वस्त करते हुए अपनी बात समाप्त की कि मुझे बड़ी सफलता का पूरा भरोसा है, मुझे खुद पर पूरा विश्वास है और अगर वे ईमानदारी से मेरा अनुसरण करेंगे, तो हम कुछ ही महीनों में पिछली बार की तरह ही लूट का माल लेकर लौट आएँगे।

वे फिर उठे और अपनी निष्ठा की शपथ ली; और वास्तव में उन दृढ़ निश्चयी पुरुषों को एक ऐसे अभियान के लिए खुद को तैयार करते देखना एक गंभीर दृश्य था, जिसका अंत सुखद हो सकता था, लेकिन जो उन्हें पकड़े जाने, अपमान और मृत्यु के भयानक जोखिम में डालता था।

अध्याय XXVI

अमीर अली एक नए अभियान पर निकल पड़े: उनके सामने आने वाले रोमांच। हमारी मुलाकात समाप्त हुई और मैं अज़ीमा को अपने प्रस्थान की तैयारी कराने के लिए लौट आया। मैंने अपनी अनुपस्थिति का बहाना बनाने के लिए एक कहानी गढ़ी थी। मैंने उसे बताया कि दुखुन की व्यापारिक यात्रा में मैंने जो धन अर्जित किया था, वह लगभग समाप्त हो चुका था; और यद्यपि उसकी संगति में और ऐसी खुशियों का आनंद लेते हुए, जिनकी मैंने कभी आशा भी नहीं की थी, मैं अब तक अपना घर छोड़ने के लिए अनिच्छुक था, फिर भी अब और देरी करना संभव नहीं था, अन्यथा हम पूर्ण विनाश के कगार पर खड़े थे। मैंने आगे कहा कि मेरे पिता ने व्यापार के लिए मुझे कुछ धनराशि दी थी; जिससे, यदि मुझे नागपुर और अन्य स्थानों पर मेरे पत्राचार करने वालों के पत्रों से जो सफलता मिलने की उम्मीद थी, वह प्राप्त हुई, तो मुझे अच्छा खासा लाभ अवश्य होगा—इतना कि हम शांति और समृद्धि का एक और दौर जी सकें।

उसने लंबे समय तक व्यर्थ ही मेरे दृढ़ संकल्प को बदलने की कोशिश की, रास्ते के खतरों, उन जोखिमों की ओर इशारा किया जिनका मुझे सामना करना पड़ेगा, और मेरी अनुपस्थिति से उसे होने वाले कष्ट के बारे में बताया; लेकिन जब मैंने उसे बताया कि मेरी योजनाएँ बहुत पहले से ही बनी हुई थीं, और सागर में मेरा इंतज़ार हो रहा था, जहाँ मेरे एजेंटों ने उन घोड़ों को इकट्ठा किया था जिन्हें मुझे बेचने के लिए ले जाना था, तो उसने मुझसे विनती की कि मैं उसे और हमारे बच्चों को अपने साथ ले जाऊँ, और कहा कि यात्रा करना उसके लिए कोई मुश्किल बात नहीं है, और बच्चों को नए माहौल और शिविर की चहल-पहल और नवीनता का आनंद आएगा।

लेकिन मैंने यह प्रस्ताव भी ठुकरा दिया। उसे ले जाना असंभव था, उसके यात्रा रथ के खर्च की तो बात ही छोड़िए; और अंत में, बहुत विनती और आपत्ति जताने के बाद, जैसा कि मैंने पहले बताया है, वह रुकने के लिए राजी हो गई; और जिस सुबह हमें प्रस्थान करना था, उस सुबह उसे अपने पिता की देखरेख में सौंपकर मैंने उससे स्नेहपूर्वक विदाई ली। उसने मेरे हाथों में कई ताबीज़ और कवच बाँधे और मेरे गले में पहनाए, जो उसने कई घूमते-फिरते फकीरों और साधुओं से खरीदे थे; और नम आँखों से उसने मेरे हाथों को मेरे बच्चों के सिर पर रखा और उन्हें आशीर्वाद देने को कहा। मैंने पूरी श्रद्धा और सच्चे मन से ऐसा किया, क्योंकि मैं उनसे बहुत प्रेम करता था, साहब, उतना ही तीव्र प्रेम जितना कि मेरे स्वभाव के अन्य प्रेम।

अंततः मैंने उसे छोड़ दिया। घर छोड़ना कभी सुखद नहीं होता, अक्सर कष्टदायक होता है; क्योंकि मन में पीछे छूटे लोगों के दुख के अस्पष्ट ख्याल आते रहते हैं, और हम उन कारणों की कल्पना करने लगते हैं जिनसे ये दुख उत्पन्न हो सकते हैं, जबकि वास्तविकता में वे होते ही नहीं। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ; लेकिन जब मेरे वीर साथियों ने मेरा हार्दिक स्वागत किया, तो मेरी अस्पष्ट आशंकाएँ तुरंत दूर हो गईं, और जब मैंने खुद को उस स्थिति में पाया जो कई बार मेरी दिली इच्छा रही थी, तो मेरा मनोबल बढ़ गया। मैं अपना मालिक था, मेरे

साथ ऐसे लोग थे जो मेरी आज्ञा का पालन करने को तैयार थे, और— इंशाल्लाह! मैंने मन ही मन कहा, अब अमीर अली का सितारा बुलंद है, और यह लंबे समय तक चमकता रहेगा!

मैंने आपको पहले भी प्रस्थान से ठीक पहले हुए समारोहों के बारे में बताया था; बेशक इस बार भी वे समारोह दोहराए गए; मोतीराम, जो हमारे ध्वजवाहक और सभी समारोहों के निर्देशक थे, ने एक बार फिर शुभ संकेत दिए, जैसा कि भूद्रिनाथ थे; और हम अपने पिता और हुसैन के साथ कुछ दूर तक चले, जिन्होंने अपने लंबे अनुभव से मुझे ज्ञान दिया। अन्य बातों के अलावा, दोनों ने विशेष रूप से मुझे स्त्रियों का हनन न करने की सलाह दी।

मेरे पिता ने कहा, 'पुराने समय में, उन्हें हमेशा बख्श दिया जाता था; यहाँ तक कि उन पार्टियों को भी छोड़ दिया जाता था जिनमें संयोगवश कोई भी, भले ही अन्य दृष्टि से अच्छे लोग हों, शामिल हो सकते थे, क्योंकि हमारी संरक्षिका स्त्री होने के कारण, उनके स्त्रीत्व का विनाश उन्हें घृणित लगता था और हर मौके पर इससे बचा जाता था। इसके अलावा, पुरुष ही पुरुषों के लिए उपयुक्त शिकार होते हैं; कोई भी सैनिक स्त्रियों से युद्ध नहीं करता, कोई भी सम्मानित पुरुष उनके विरुद्ध उंगली भी नहीं उठाता; और तुम, मेरे बेटे, जिसकी अपनी एक सुंदर पत्नी है, स्त्री जाति की किसी भी स्त्री के प्रति हिंसा करने वाले अंतिम व्यक्ति होगे।'

मैंने कहा, 'मुझ पर भरोसा रखिए, मैं ऐसा नहीं करूँगा; जैसा कि आप जानते हैं, मैं अपने पहले अभियान में मारी गई उन अभागी महिलाओं के भाग्य का घोर विरोधी था, और आपको याद होगा कि उनकी मृत्यु में मेरा कोई हाथ नहीं था; लेकिन मेरी आपत्तियों को पहले भूद्रिनाथ और बाद में सुरफुराज खान ने खारिज कर दिया, और मैं क्या कर सकता था? और यह सोचना वास्तव में भयानक होगा कि उनके दल की विपत्तियाँ और बेचारे भूद्रिनाथ का अज्ञात भाग्य हमारी संरक्षिका के विलंबित, लेकिन निश्चित प्रतिशोध के कारण थे।'

मेरे पिता ने कहा, 'ऐसा हो सकता है; लेकिन इसे अपने मन पर हावी न होने दो; मैंने और हुसैन ने अपने समय में कई महिलाओं को मारा है, और जैसा कि तुम जानते हो, इसका कोई बुरा परिणाम नहीं हुआ है। लेकिन मेरी कही बातों को ध्यान में रखो, समझदारी और विवेक से काम लो, और सबसे बढ़कर शकुनों पर पूरा ध्यान दो, और तुम्हारी सफलता और सुरक्षा निश्चित है।'

हम इसी तरह बातें करते हुए आगे बढ़ते रहे, और जब हम अपने गांव की सीमा के पत्थर पर पहुंचे, तो हम घोड़ों से उतरे और एक-दूसरे को गले लगाया, और मैं उन्हें छोड़कर अपने आदमियों के साथ आगे बढ़ गया। हमारे नियमों के अनुसार, जब तक हमारा पहला शिकार नहीं गिर जाता, तब तक किसी को भी दाढ़ी नहीं बनानी थी और न ही पान खाना था; और चूंकि यह कई लोगों के लिए असुविधाजनक था, इसलिए आप निश्चिंत रहें कि हम हर दिशा में सतर्क थे और हमारे जासूस हर उस गाँव में तैनात थे जहाँ से हम गुज़रते थे या ठहरते थे। लेकिन पाँचवें दिन तक हमें कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जिसने सुरक्षित और हर तरह से योग्य बलिदान दिया हो; हम यात्रियों के समूहों से मिले, कुछ अपने घरों की ओर जा रहे थे और कुछ वहाँ से लौट रहे थे, लेकिन उनके साथ हमेशा महिलाएं होती थीं, और मैंने उन्हें बख्शने का दृढ़ निश्चय कर लिया था, अपनी पत्नी के लिए भी और अपने पिता के आदेशों के कारण भी।

हालांकि, जैसा कि मैंने कहा, पाँचवें दिन, सुबह-सुबह, हम एक चौराहे पर पहुँचे और यह देखकर प्रसन्न हुए कि नौ यात्रियों का एक दल, जिनमें से तीन टट्टुओं पर सवार थे और देखने में सभ्य लग रहे थे, और बाकी पैदल थे, हमसे थोड़ी दूरी पर सड़क पर आ रहे थे। हमारी अपार खुशी के लिए, वे उसी सड़क पर आ गए जिस पर हम जाने वाले थे। हमने सड़क को लेकर दुविधा का बहाना बनाकर कुछ देर के लिए रुकने का फैसला किया था, और जब वे आए तो हमने उनसे सड़क के बारे में पूछा। उन्होंने तुरंत हमारे सामने वाली सड़क की ओर इशारा किया, और यद्यपि हमारी संख्या देखकर वे आश्चर्यचकित हुए, फिर भी वे हमारे साथ उस गाँव तक चलने के लिए सहमत हो गए जहाँ हम रुकने वाले थे, और उस सड़क तक भी जिसके बारे में हमने उनसे पूछा था। मैंने जल्द ही उनके दल के सबसे सभ्य व्यक्ति से बातचीत शुरू की; और मैंने उनके सवालों के जवाब में कहा कि हम सैनिक हैं और हिंदुस्तान से छुट्टी के बाद नागपुर जा रहे हैं, जहाँ हम सेवा में हैं। उन्होंने मुझे बताया कि वे और उनका भाई, जो दो अन्य सवारों में से एक था, एक मित्र और कुछ सेवकों के साथ एक यात्रा पर निकले हैं; वे इंदौर से आए थे और बनारस जा रहे थे, कपड़े और जई खरीदने के साथ-साथ उस पवित्र हिंदू तीर्थस्थल के दर्शन करने के लिए भी।

वाह वाह! मैंने सोचा, ये तो ज़रूर कोई बड़े आदमी हैं जो भेस बदलकर आए हैं, और मुझे पूरा यकीन है कि इनके पास खूब पैसा होगा। ज़रा भी देर नहीं करनी चाहिए, क्योंकि ये चौराहे से गुज़रे हैं और हमारे साथ नहीं दिखे हैं: इसलिए इनके गायब होने पर हमें शक करने का कोई सुराग नहीं बचेगा; तो जितनी जल्दी हो सके इनसे निपट लिया जाए, उतना अच्छा है। इसी मकसद से मैं थोड़ा पीछे रह गया और पीर खान को अपना इरादा बता दिया, जो सबसे पीछे चल रहा था; उसने ये बात दूसरे को बताई और इस तरह हमारे ज़्यादा दूर जाने से पहले ही ये बात पूरे गिरोह में फैल गई। मुझे ये देखकर बहुत खुशी हुई कि जैसे ही उन्हें पता चला कि क्या करना है, हर कोई अपनी जगह पर खड़ा हो गया, हर यात्री के साथ तीन गुंडे, और बाकी सबने उनके चारों ओर इस तरह घेरा बना लिया कि भागने की कोई गुंजाइश ही न रहे।

मुझे वह रास्ता अच्छी तरह याद था, क्योंकि हम पहले भी उसी रास्ते से गुज़र चुके थे; भला कोई बदमाश रास्ता कैसे भूल सकता है? मुझे यह भी पता था कि यद्यपि हमारे आसपास का इलाका खुला और बंजर था, फिर भी पास ही एक नदी थी, जिसका रेतीला तल जंगली सरू के पेड़ों से भरा हुआ था, और झाड़ियों में शवों को आसानी से छिपाया जा सकता था।

जब हम नदी के किनारे पहुंचे, तो जिस व्यक्ति से मैं बातचीत कर रहा था, उसने थोड़ी देर रुकने की विनती की।

उन्होंने कहा, 'हम आधी रात से यात्रा कर रहे हैं, और मैं तो बहुत थक गया हूँ, और मुझे आराम करने में खुशी होगी।'

मैंने कोई आपत्ति नहीं जताई, क्योंकि यही तो मेरी इच्छा थी; और घोड़े से उतरकर, उसे पानी के पास ले जाकर, मैंने उसे पानी पीने दिया, और फिर उस समूह में शामिल हो गया जो इकट्ठा होकर बैठ गया था; यात्री

अपने साथ लाए हुए जल्दी से तैयार किए गए भोजन पर चर्चा कर रहे थे, और ठग उनके चारों ओर बैठे या खड़े थे, लेकिन सभी अपनी-अपनी उचित जगहों पर थे।

मैं झिरनी देने ही वाला था कि मैंने भुट्टोटे परिवार को अपने रूमालों को खास ढंग से संभालते देखा, तभी मेरी तेज श्रवण शक्ति के कारण मुझे दूर से कुछ आवाजें सुनाई दीं। अच्छा हुआ कि मैंने संकेत नहीं दिया; नहीं तो हम शवों से कपड़े उतारने में व्यस्त होते और तभी वो दल हम पर आ पड़ता जिसकी मैंने आवाज सुनी थी। बेशक, वे एक नजर में ही समझ जाते कि हम क्या कर रहे हैं और सतर्क हो जाते। लेकिन हमारे सौभाग्य ने हमें बचा लिया। जैसा कि मैंने कहा, मैं थोड़ा हिचकिचाया, और कुछ ही मिनटों में चौदह यात्री प्रकट हुए और सीधे हमारे पास आकर बैठ गए। वे हर तरह के लोग थे, जो एक-दूसरे की सुरक्षा के लिए इकट्ठा हुए थे, और मैंने उन्हें भी खत्म करने का मन बना लिया था, जो मुझे लगता है कि हम कर भी सकते थे, तभी उन्होंने विदा लेकर मुझे बहुत राहत दी, और हमें सफलता और सुखद एवं सुरक्षित यात्रा की शुभकामनाएं दीं। किसी न किसी बहाने से मैंने अपने साथियों को तब तक रोके रखा जब तक कि दूसरा दल शोर सुनने के खतरे से काफी दूर न चला गया; और अब, सब कुछ तैयार देखकर, मैंने तंबाकू मंगाया, वही शब्द जिसका इस्तेमाल करने पर हम सहमत हुए थे, क्योंकि इससे ध्यान आकर्षित होने या संदेह पैदा होने की संभावना सबसे कम थी। मैं उस आदमी के पीछे खड़ा हो गया जिससे मैं बात कर रहा था, और जैसे ही मैंने बोला, मेरा रूमाल फेंक दिया गया! तीन साल के आराम ने मेरी पकड़ को ज़रा भी नहीं बिगाड़ा था, और वह पल भर में मेरे पैरों के पास एक लाश बनकर गिर पड़ा। मेरा काम पूरा हो गया था, और मैंने बाकी लोगों का हाल जानने के लिए चारों ओर देखा; एक बेचारा अकेला संघर्ष कर रहा था, लेकिन उसकी पीड़ा जल्दी ही समाप्त हो गई, और वह समूह भी खत्म हो गया!

'जल्दी करो, मेरे लड़कों!' मैंने लुघाई लोगों से कहा, 'जल्दी काम पर लग जाओ!' उनमें से एक मुस्कुराया।

'क्यों?' उसने कहा; 'क्या तुमने नहीं देखा कि जब हम यहाँ पहुँचे तो डूलम और चार अन्य उस झाड़ी की ओर चले गए? यकीन मानो। उन्होंने कब्र तैयार कर रखी है, या वे निकम्मे कुत्ते रहे हैं।'

और ऐसा ही हुआ; जब अनजान यात्री हमारे साथ बैठकर बातचीत कर रहे थे, उसी दौरान कब्र खोदी जा रही थी।

हम शवों के वस्त्र उतारने में इतने मशगूल थे कि किसी ने भी दो यात्रियों के अचानक आने पर ध्यान नहीं दिया। जब उन्होंने हमें इस काम में व्यस्त देखा तो उनके चेहरे पर जो दहशत छा गई, उसे मैं कभी नहीं भूल पाऊंगा; वे अत्यधिक भय से वहीं जम गए; वे कुछ बोले नहीं, लेकिन उनकी आँखें गुस्से से घूर रही थीं, कभी हमारी ओर तो कभी शवों की ओर।

मैंने उनके पास पहुँचते हुए कहा, 'दुखी लोगों, मौत के लिए तैयार हो जाओ! तुम हमारे काम के गवाह रहे हो, और हमारे पास अपनी रक्षा के लिए तुम्हारे विनाश के अलावा कोई चारा नहीं है।'

उनमें से एक ने अपनी शक्ति समेटते हुए कहा, 'साहिब, हम मर्द हैं और मरने से नहीं डरते, क्योंकि हमारा समय आ गया है;' और वह गर्व से सीधा खड़ा हो गया और मेरी ओर देखने लगा। वह लंबा-चौड़ा, ताकतवर और हथियारों से लैस आदमी था, और मुझे उस पर हमला करने में झिझक हो रही थी।

मैंने कहा, 'मैं तुम्हें एक विकल्प देता हूँ; गुंडा बन जाओ और हमारे गिरोह में शामिल हो जाओ—तुम्हारी अच्छी देखभाल की जाएगी और तुम समृद्ध होगे।'

'कभी नहीं!' उसने गरजते हुए कहा; 'कभी यह नहीं कहा जाएगा कि राजपूतों के महान वंश का वंशज तिलुक सिंह हत्यारों के साथ रहा और उनकी अपवित्र कमाई पर पला-बढ़ा। नहीं! अगर मुझे मरना ही है, तो अभी मर जाऊं। तुम बहुत हो; लेकिन अगर तुममें से कोई एक भी हिम्मतवाला है, तो आगे आए, और इस समतल रेत पर मैं अपनी मुक्ति के लिए एक ही प्रहार करूंगा;' और उसने अपनी तलवार निकाली और रक्षात्मक मुद्रा में खड़ा हो गया।

'मैं ही वह आदमी हूँ,' मैंने चिल्लाकर कहा, हालाँकि बैंड के सभी सदस्यों ने एक स्वर में मुझे उस मुठभेड़ से रोकने की पुरजोर कोशिश की और घोषणा की कि वह मुझसे कहीं अधिक शक्तिशाली है: 'मैं ही वह आदमी हूँ; अब आकाश और पृथ्वी पर अंतिम नज़र डाल लो, क्योंकि आलिया की कसम, तुम इस जगह को कभी नहीं छोड़ पाओगे!'

'अरे, शेखी बघारने वाले लड़के!' उसने कहा; 'मुझे बस निष्पक्ष खेल खेलने दो, और अपने किसी भी व्यक्ति को हस्तक्षेप करने के लिए मत कहो, वरना शायद ऐसा न हो जैसा तुम कह रहे हो।'

मैंने उनसे कहा, 'सुनो, तुम सब; इस मामले में दखल मत दो— यह सिर्फ मेरा मामला है। जहाँ तक दूसरे की बात है, उसके साथ जैसा चाहो वैसा व्यवहार करो;' और पल भर में ही वह मृतकों में गिने जाने लगा।

'ये सब तुम्हारी कायरतापूर्ण चालें हैं,' राजपूत चिल्लाया, अब मेरी ओर बढ़ते हुए, क्योंकि वह अपने साथी के भाग्य पर विचार कर रहा था; 'मेरा अंत भले ही उसके जैसा हो, लेकिन मैं एक सैनिक की मौत मरूंगा, न कि किसी बीमार कुत्ते की तरह जैसा वह मरा है।'

मैंने आपको पहले भी बताया है, साहब, कि मेरे कुशल प्रशिक्षक की बदौलत हर हथियार चलाने में मेरी निपुणता पूर्ण थी; और मैंने उन कठिन अभ्यासों में कभी ढिलाई नहीं बरती जो किसी पुरुष को युद्ध के लिए तैयार करते हैं, चाहे उसे कभी भी युद्ध में उतरना पड़े। मेरी तलवार वही थी जिसकी नुवाब सब्ज़ी खान ने इतनी प्रशंसा की थी, और मुझे उस आत्मविश्वास का अनुभव हो रहा था जो किसी व्यक्ति को अपने हाथ में एक भरोसेमंद हथियार होने और उसे चलाने का तरीका जानने पर होता है।

मैंने कहा था कि राजपूत मुझ पर हमला करने के लिए आगे बढ़ा; उसके पास कोई ढाल नहीं थी, जिससे मुझे बहुत बड़ा फायदा मिला, लेकिन उसकी लंबाई और ताकत के कारण पलड़ा उसके पक्ष में था, फिर भी ये कौशल और धैर्य के सामने कमजोर बचाव हैं।

उसने पूरी ताकत और क्रोध से मुझ पर हमला किया; एक के बाद एक वार मैंने अपनी तलवार और ढाल से झेले, लेकिन खुद एक भी वार नहीं कर पाया; वह अपने लोगों की तरह मेरे चारों ओर नाचने लगा, कभी एक

पैर पर तो कभी दूसरे पर, वह बेतहाशा घूमता रहा, और बीच-बीच में मुझ पर झपटता और सचमुच मुझ पर वारों की बौछार कर देता; लेकिन मैं वहीं स्थिर खड़ा रहा, क्योंकि मैं जानता था कि इस तरह के हमले से वह कितनी जल्दी थक जाएगा, और नदी की ढीली रेत उसकी थकान को और बढ़ा रही थी।
अंत में वह वहीं रुक गया और हांफते हुए मुझे घूरने लगा। 'काफ़िर का कुत्ता!' वह चिल्लाया, 'एक कुटिल माँ का बेटा, क्या कोई बात तुझे उस जगह से हटने के लिए विवश नहीं करेगी?'
'काफ़िर!' मैंने गरजते हुए कहा, 'काफ़िर के पुत्र, तेरे नीच शब्दों ने ही तेरा भाग्य तय कर दिया है;' और मैं उस पर टूट पड़ा। वह मेरे हमले के लिए तैयार नहीं था, उसने मुझ पर एक कमज़ोर और अनिश्चित प्रहार किया, जिसे मैंने अपनी ढाल से रोक लिया, और अगले ही पल मेरी तलवार उसकी गर्दन में धंस गई। वह गिर पड़ा, और उसके घाव और मुंह से खून बहने लगा।
'शुकुर खोड़ा!' पीर खान ने कहा, 'तुमने उसका काम बड़ी ही गरिमा से निपटा दिया है; मुझे गले लगाने दो;' और उसने मुझे अपनी बाहों में भर लिया।
राजपूत मरा नहीं था; उसमें इतनी ताकत बची थी कि वह अपने हाथ के बल उठ खड़ा हो सके, और उसने मुझे शैतान की तरह देखा; उसने बोलने की कई कोशिशें कीं; उसके होंठ हिले, लेकिन खून के कारण कोई आवाज नहीं निकली।
मैंने कहा, 'तुममें से कुछ लोगों ने उसे उसकी पीड़ा से मुक्ति दिला दी; उस आदमी ने अच्छा व्यवहार किया था, और उसे कष्ट नहीं सहना चाहिए था।'
पीर खान ने मेरी तलवार ली और उसे अपने दिल में घुसा दिया; वह एक पल के लिए तड़पा और उसकी सांसें रुक गईं।
'उसे यहाँ से भगाओ!' मैं चिल्लाया, 'हम यहाँ बहुत देर तक रुके रहे हैं।'
लुघाई लोगों ने उसके खून से बचने के लिए उसे पैरों और हाथों से पकड़ा और उसे उठाकर ले गए; अन्य लोगों ने उस जगह पर सूखी रेत बिखेर दी जहाँ वह गिरा था, और कुछ ही मिनटों में हम ऐसे आगे बढ़ गए जैसे कुछ हुआ ही न हो।
मेरे इस व्यक्तिगत साहस और कौशल के प्रमाण के बाद, मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि लगभग पूरा गिरोह मुझे पूजता था। उन सभी ने मुझे आश्वस्त किया कि एक ठग द्वारा खुले मैदान में एक यात्री और एक सैनिक को मार डालना एक अभूतपूर्व घटना थी, और केवल इसके ज्ञात होने से ही मैं बूढ़े-जवान सभी के लिए ईर्ष्या का पात्र बन गया, और मुझे अपने किए पर गर्व हुआ; उनकी प्रशंसा मेरे अहंकार के लिए मीठी सुगंध के समान थी।
व्यापारी और उसके भाई से हमें जो लूट का माल मिला, वह काफी समृद्ध था और किसी भी अभियान के लिए इतना माल अपने आप में ही काफी था। कुछ लोग तो वापस लौटने की बात कर रहे थे, लेकिन उनकी बात सिर्फ दो-तीन लोगों ने कही और उन्हें आसानी से खारिज कर दिया गया।

मैंने कहा, 'यह बहुत शर्म की बात होगी अगर भाग्य हमारे पक्ष में होते हुए भी हम अपने अच्छे भाग्य का लाभ न उठाएं।'
साहब, हमने अपना मार्च जारी रखा, और जब हम सागर पहुंचे तो हमने उन्नीस अन्य यात्रियों को मार डाला था, हालांकि हमें ज्यादा लूट का माल नहीं मिला: दस, पंद्रह, और एक बार तो लगभग सौ रुपये ही हमें मिले। सागर कस्बा पहले भी बड़ा था और आज भी एक विशाल और चहल-पहल वाला शहर है, जो हुसैन सागर की झील के लगभग बराबर एक बड़ी झील के किनारे बसा है; यहाँ से बहने वाली ठंडी हवाएँ इसे एक रमणीय स्थान बनाती हैं। हमने कस्बे के पास झील के किनारे डेरा डाला।
वहाँ चार दिन रहने के दौरान, हम रोज़ाना बाज़ारों में घूमते थे और भुट्टेराओं की दुकानों पर जाया करते थे। उनमें से एक भुट्टेरा पीर खान का परिचित था, जिसे हमने जानकारी देने के लिए अच्छी-खासी रकम दी थी। उसने हमारा ध्यान रखने का वादा किया था, और हमारे आने के तीसरे दिन शाम को पीर खान मेरे पास आया। मैं अपने छोटे से तंबू के प्रवेश द्वार के सामने बैठा सिगरेट पी रहा था और सामने फैले विशाल जलप्रपात पर बहने वाली सुखद हवा का आनंद ले रहा था।
'मीर साहब,' उसने कहा, 'भूट्टेरा वफादार है; उसे खबर मिली है कि एक साहूकार हमारे रास्ते से जा रहा है, जो लगभग एक सप्ताह में इस जगह से निकल जाएगा; वह कहता है कि हमें उस पर पूरा भरोसा है, लेकिन हमें यह जगह छोड़नी होगी और शहर के कुछ ही किलोमीटर के दायरे में आगे बढ़ना होगा, और सूचना पहुंचाने के लिए दो-तीन आदमियों को उसके साथ छोड़ना होगा।'
'उल्लाह!' मैंने कहा, 'वह एक नेक इंसान है; हम उसकी सलाह मानेंगे और कल सुबह जल्दी निकलेंगे। उसके सुझाव पर तीन बेहतरीन धावक यहीं रुकेंगे ताकि हमें खबर दे सकें।'
लेकिन उन्होंने यह शर्त रखी है कि अगर हम सफल होते हैं तो हमें बड़ा इनाम दिया जाएगा।
मैंने कहा, 'मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं दिखती; यदि वह अपने वचन का पालन करता है तो वह इसके योग्य होगा।'
'अरे, इसके लिए आपको डरने की जरूरत नहीं है; जब तक आप उसे भुगतान करते रहेंगे, वह वफादार रहेगा।'
'तो फिर उसे मिल जाएगा। उसे कितना चाहिए?'
'अगर हमें पांच हजार रुपये मिलते हैं तो दो सौ रुपये,' उसने जवाब दिया; 'अगर हमें दस हजार रुपये मिलते हैं तो दुगुना; और अगर दोनों के बीच का अंतर हो तो उसी अनुपात में।'
'अगर साहूकार अमीर है, खान,' मैंने कहा, 'तो हम उसे वह सब कुछ दे सकते हैं जो वह मांगता है; इसलिए जाओ और उसे बता दो कि उसे वह मिल जाएगा।'
'मैं जाता हूँ,' उसने कहा; 'अगर मैं वापस न लौटूँ, तो समझ लेना कि मैं उसके साथ ही रुका था।'
उसने अपने साथ जाने के लिए आवश्यक लोगों को ढूंढा, और उन्हें और कपड़ों का एक छोटा सा बंडल लेकर, मैंने उसे हमारे शिविर की सीमा से बहुत दूर शहर की ओर जाते हुए देखा।

अध्याय XXVII

अमीर अली ने लोमड़ी और हंस का पुराना खेल कैसे खेला, और इसमें शामिल हो गए। हम चार दिनों तक गांव-गांव घूमते रहे, कोई रोमांच नहीं मिला, और सच कहूं तो मैं देरी और निष्क्रियता से ऊबने लगा था, तभी पांचवीं सुबह, सूचना लाने के लिए हमने जिन लोगों को पीछे छोड़ा था, उनमें से एक आ गया।

उन्होंने कहा, 'पीर खान साहब, आपका सलाम भेजते हैं और आपसे निवेदन करते हैं कि आप तुरंत लौट आएं, क्योंकि सेना सुरक्षित है और शहर छोड़ने ही वाली है।'

'क्या तुम उसके बारे में कुछ जानते हो?'

'नहीं, मुझे नहीं पता, मीर साहब। मैं भुट्टेरा के घर पर रहता था, और वह और जमादार अक्सर उनके बारे में गंभीर बातचीत करते थे, लेकिन मुझे इस रहस्य के बारे में नहीं बताया गया।'

मैंने उत्तर दिया, "कोई बात नहीं; आप तरोताज़ा हो जाइए और हमारे साथ चलने के लिए तैयार रहिए। हम सागर से कितनी दूर हैं?"

'वैसे तो मैं लगभग चौदह किलोमीटर चलकर यहाँ आया,' उसने कहा, 'लेकिन जिस रास्ते को मैं जानता हूँ उससे शहर आधी दूरी से भी कम में पहुँच जाता है।'

'तो शायद हम शाम तक वहाँ पहुँच जाएँगे?'

'ज़रूर, अगर आप चाहें तो दोपहर तक, और मैं अभी आपको ले चलता हूँ।'

तदनुसार, उनके मार्गदर्शन में एक ऐसे दुर्गम रास्ते से होते हुए, जिसे मैं अकेले कभी नहीं ढूंढ पाता, हम शाम के समय सागर पहुंचे, और अपने पूर्व स्थान पर कब्जा करने के बाद, मैं जल्दी से भुट्टेरा के घर की ओर चल पड़ा, जहां मुझे अपने दोस्तों से मिलने का पूरा भरोसा था।

पीर खान वहां मौजूद थे और उन्होंने मेरा स्वागत किया। उन्होंने कहा, 'मुझे डर था कि दूत आपको ढूंढ नहीं पाएगा; लेकिन आलिया की कृपा से आप आ गए।'

'और यही हमारा योग्य सहयोगी है, मुझे लगता है?' मैंने भुट्टेरा को प्रणाम करते हुए कहा।

'बिल्कुल,' उसने उत्तर दिया; 'तुम्हारा बेचारा दास पेरू हमेशा खुश रहता है जब वह अपने अच्छे दोस्तों की सेवा कर पाता है।'

मैंने कहा, 'मैं यह नहीं भूला हूँ कि तुम्हें क्या मिलने वाला है, मेरे दोस्त, और तुम इस पर एक सच्चे ठग के वचन पर भरोसा कर सकते हो। क्या हम उस आदमी के बारे में पूरी तरह आश्वस्त हैं?'

पीर खान ने कहा, 'यह उतना ही निश्चित है जितना कि अब तक शहीद हुए लोगों का; कल वह सागर पर अपनी अंतिम नज़र डालेगा।'

'उल-हम्द-उल-इल्ला!' मैंने कहा; 'यह तो और भी अच्छा है। और आपको लगता है कि वह एक अच्छा बुनीज बनेगा?'

भुत्तेरा ने कहा, 'वह तुम्हारे लिए सात-आठ हजार अच्छे रुपये का होगा; और साथ ही पूरा नकद (नकदी) भी।'

'फिर से अच्छा, दोस्त; लेकिन तुम सड़क पर क्यों नहीं निकल पड़ते? तुम काफी होनहार व्यक्ति हो।'
'ओह, मैंने तो पहले ही कोशिश कर ली है,' उसने हंसते हुए कहा; 'मैं गणेश जमादार के साथ दो अभियानों पर गया था। क्या आप उन्हें जानते हैं?'
मैंने जवाब दिया, 'मैंने उनके बारे में सुना है; वे एक जाने-माने नेता हैं।'
भुट्टेरा ने कहा, 'वह है तो सही; लेकिन वह एक क्रूर कुत्ता है; और सच कहूँ तो—मुझे डर है कि आप मुझे इसके लिए कायर समझेंगे—मुझे वह तरीका पसंद नहीं आया जिस तरह से उसने उन गरीब लोगों के साथ व्यवहार किया जिनके साथ वह मिला; इसलिए मैंने सक्रिय काम छोड़ दिया, और जैसा कि आप अभी देख रहे हैं, मैं केवल छोटा-मोटा व्यापार करता हूँ, जिससे मुझे कभी-कभार थोड़ी-बहुत आमदनी हो जाती है।'
'अच्छा,' मैंने कहा, 'ऐसा लगता है कि तुम अच्छा काम कर रहे हो; लेकिन सावधान रहो कि तुम कैसे व्यवहार करते हो, और यह भी ध्यान रखो कि तुम बेचारे ठगों को उनकी शिकायत करने की धमकी देकर उनसे पैसे न छीन लो।'
मेरी टिप्पणी सुनकर वह व्यक्ति थोड़ा सहम गया, लेकिन खुद को संभालते हुए उसने दृढ़ता से विरोध किया कि उसने कभी भी इतना नीच कृत्य नहीं किया है।
पीर खान ने मुझे तिरछी नज़र से देखा, मानो कह रहा हो कि तुमने बिल्कुल सही बात कही है; लेकिन मैंने इस मामले को आगे नहीं बढ़ाया, क्योंकि हम पूरी तरह से उसके वश में थे।
'तो फिर,' मैंने कहा, 'मुझे लगता है कि हम सुबह शुरू करेंगे?'
'ऐसा ही करो,' उस आदमी ने जवाब दिया; 'सहौकर जबलपुर जा रहा है। कुछ दिनों तक खुद को न दिखाना ही बेहतर होगा, क्योंकि वह घबरा सकता है, और हाल ही में रास्ते में कुछ प्रतिष्ठित लोग लापता हो गए हैं।'
मैंने पीर खान से कहा, 'अब हमारा यहाँ कोई और काम नहीं है, और मैं थक गया हूँ; चलिए शिविर में चलते हैं। हम दो जासूसों को यहाँ रहने के लिए भेज सकते हैं, ताकि ज़रूरत पड़ने पर वे हमें साहूकार के प्रस्थान की सूचना दे सकें।'
उन लोगों को निर्देश दिए गए कि उन्हें क्या करना है, और हम उन्हें और भुट्टेरा लोगों को वहीं छोड़कर चले गए।
चलते-चलते पीर खान ने कहा, 'तुमने अपनी बातों से उस बदमाश की पोल खोल दी; यही उसका पैसा कमाने का तरीका है; इसी तरीके से वह साहूकार जितना अमीर हो गया है और सागर से गुजरने वाले हर गिरोह से चंदा वसूलना नहीं भूलता।'
'तो फिर,' मैंने कहा, 'मैंने उसके भाग्य के बारे में अपना मन बना लिया है। ऐसा नीच जीने लायक नहीं है—एक कायर बदमाश, जो आराम से बैठा रहता है, कोई जोखिम नहीं उठाता, कोई मेहनत नहीं करता, फिर भी सबसे अधिक हिस्सा पाता है। उसे मर जाना चाहिए। क्या आप उसे मौत के घाट उतारने के बारे में कुछ कहते हैं?'

'यह एक अनोखी योजना है,' उसने उत्तर दिया; 'लेकिन उसे शहर से बाहर कैसे निकाला जाए, यह मुझे नहीं पता; वह लोमड़ी की तरह चौकस है।'
'ओह,' मैंने कहा, 'यह जितना आप सोचते हैं उससे कहीं ज्यादा आसानी से संभाला जा सकता है। क्या काफिरों को पैसे का शौक है?'
'उसे अपने दयनीय अस्तित्व से उतना ही लगाव है।'
'तो, पीर खान, वह हमारे पास है: शिविर में पहुंचते ही मैं एक आदमी को संदेश के साथ भेजूंगा, जिसे आप मुझसे सुनेंगे, और यदि वह उसे नहीं लाता है, तो अमीर अली को गधों का बाप और दादा कह देना।'
'अच्छा,' उसने हंसते हुए कहा; 'हम तुम्हारी यह अनोखी योजना देखेंगे; लेकिन मैं तुम्हें बता दूं कि वह बदमाश बहुत सतर्क है। मैंने उसे कभी दिन के उजाले में ही बाहर आते देखा है, जब कोई खतरा नहीं होता, और तब भी वह केवल छोटे समूहों में ही आता है।'
'जंगली,' मैंने उस होशियार नौजवान से कहा जो हमेशा मेरी सेवा में रहता था; 'क्या तुम पेरू, भुट्टेरा को जानते हो?'
'ज़रूर; मेरे स्वामी आज दोपहर उनके साथ थे। मैं उनका घर जानता हूँ, क्योंकि मैं बाज़ार में आटा खरीदने गया था और मैंने अपने स्वामी को दुकान पर देखा था।'
'अच्छा,' मैंने कहा; 'तो फिर आपको इसके बारे में पूछने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। अब भुट्टेरा के पास जाइए और मेरी मुहर वाली अंगूठी अपने साथ ले जाइए: ध्यान रहे कि वह आपके हाथ से छूटे नहीं; उन्हें मेरी ओर से बहुत सम्मानपूर्वक बताइए कि उनकी कृपा से हमें बुनिज के मिलने की पूरी उम्मीद है और हमारे पास कुछ पैसे भी हैं, इसलिए अगर वे यहाँ आकर पैसे ले लें तो मैं उन्हें उनकी माँगी हुई राशि दे दूँगा। कहिए कि मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि इस रास्ते से हमारी वापसी अनिश्चित है और इसमें काफ़ी समय लग सकता है, और मेरे पास उन्हें पैसे भेजने का कोई साधन नहीं है; और यह भी कहिए कि मैं यह उपकार इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मुझे उनकी ईमानदारी पर पूरा भरोसा है और मैंने उनके कथनों पर पूर्ण विश्वास किया है। अब, क्या आपको यह सब याद है? ध्यान रहे कि उनसे रामासी भाषा में बात करें, वे इसे समझते हैं।'
'ज़रूर,' लड़के ने कहा; 'मुझे सब पता है।' और उसने वही दोहराया जो मैंने उसे बताया था।
मैंने कहा, 'बस इतना ही काफी है, और ये रही अंगूठी: अब जाओ, दौड़ो, उड़ो, और देखते हैं कि तुम कितनी जल्दी दो रुपये कमा लेते हो।'
'मैं जा रहा हूँ, जमादार साहब,' उसने खुशी से चिल्लाते हुए कहा। 'मैं तुरंत वापस आऊंगा।'
पीर खान ने कहा, 'वह तो बहुत होशियार लड़का है; वह बात को बहुत जल्दी समझ जाता है।'
'तो क्या खबर है, जंगली?' मैंने चिल्लाकर कहा, जब वह हांफते हुए मेरी तरफ दौड़ा।
'जमादार, एक पल रुको,' उसने कहा, 'जब तक मैं बोल न सकूँ: मैं बहुत दौड़ा हूँ।'
'लो, थोड़ा पानी पी लो: इससे तुम्हें आराम मिलेगा। क्या हुआ है? क्या कोई खतरे की बात है?'

“अरे, कोई बात नहीं,” लड़के ने जवाब दिया, “लेकिन सुनो। मैं बिना दौड़े जितनी तेज़ी से चल सकता था, चला, क्योंकि मुझे लगा कि अगर मैं उसके पास पहुँचते-पहुँचते हाँफने लगा तो उसे शक हो सकता है; इसलिए जब मैं कस्बे के द्वार पर पहुँचा, तो मैं धीरे-धीरे चलता हुआ उसकी दुकान तक पहुँचा। वह कुछ यात्रियों के लिए कबाब तलने में व्यस्त था, और उसने मुझे अपने निजी कमरे में जाकर उसका इंतज़ार करने को कहा। थोड़ी देर में वह मेरे पास आया।”

“अच्छा,” उसने कहा, “क्या खबर है? आप क्यों आए हैं? बुनीज सुरक्षित है; अभी-अभी आपका एक जासूस आया और उसने बताया कि उसे कल प्रस्थान करने का आदेश मिला है। आप क्या चाहते हैं?”

तो मैंने आपका संदेश, ठीक वैसे ही दोहराया जैसे आपने मुझे दिया था, और वह बहुत परेशान लग रहा था। वह कुछ देर तक कमरे में इधर-उधर घूमता रहा, खुद से बातें करता रहा, और मुझे "गणेश", "विश्वासघात" शब्द एक-दो बार दोहराते हुए सुनाई दिए। अंत में मैं इससे तंग आ गया, और उससे कहा, "मैं और इंतजार नहीं कर सकता, मुझे तुरंत वापस जाने का आदेश मिला है: क्या आप आएंगे या नहीं?" और यह सुनकर वह रुक गया; वह मुड़ा और मुझे गुस्से से देखने लगा।

"मुझे बताओ," उसने कहा, "युवक, क्या मो-टी-राम उस समय उपस्थित था जब यह संदेश दिया गया था?"

"नहीं, वह नहीं था," मैंने उत्तर दिया।

"क्या उसे इसके बारे में पता था?"

"नहीं; जब मुझे यह पत्र मिला तब तक वह शहर से वापस नहीं लौटा था; खैर, न तो मैंने और न ही जमादार साहब ने उसे देखा था।"

"क्या पीर खान वहां मौजूद थे?"

"नहीं," मैंने दृढ़ता से कहा, "वह नहीं था।"

"लेकिन वह तुम्हारे स्वामी के साथ इस स्थान से चला गया।"

मैंने कहा, "हो सकता है उसने ऐसा किया हो, लेकिन मैंने उसे नहीं देखा; जब वह लौटा तो मैं जमादार का बिस्तर लगा रहा था, और संदेश मुझे चुपके से दिया गया; क्योंकि आराम करने के लिए लेटने के बाद उसने मुझे बुलाया और संदेश दिया: और मैं आपको यह भी बता दूं कि उसने अपने तकिए के नीचे रखे थैले से पैसे गिने।"

"मेरे लिए कितना हिस्सा अलग रखा गया था?"

"ढाई सौ रुपये; वह और गिन रहा था, लेकिन अचानक रुक गया, बाकी पैसे थैले में रख दिए और कहा कि इतना काफी होगा।"

"और थैले में कितने पैसे हैं?"

"अलिया मालूम!" मैंने कहा; "मुझे इसके बारे में कैसे पता चलेगा?"

"जेमादार के साथ तम्बू में कौन सोता है?" उसने एक और चुप्पी और कमरे में कुछ और चक्कर लगाने के बाद पूछा।

"कोई नहीं," एल ने कहा, "मैं दरवाजे के पार सोता हूँ; लेकिन किसी को भी अंदर आने की अनुमति नहीं है।"
“तुम अच्छे लड़के हो,” उसने जवाब दिया, “और एक होशियार आदमी भी। क्या तुम भुट्टेरा बनना चाहोगे?”
"ठीक है," मैंने कहा; क्योंकि मैं देखना चाहता था कि वह किस चीज़ पर गोता लगा रहा है, और मुझे संदेह था कि वह अच्छी चीज़ नहीं है।
'क्या तुमने कभी ऐसे बदमाश के बारे में सुना है?' पीर खान ने कहा। 'काश, वह हमारे पास होता, तो मैं उसकी गर्दन तोड़ देता।'
मैंने कहा, 'उसे बोलने दो; उसे बीच में मत टोको।'
'खैर,' जंगली ने आगे कहा, 'वह कई बार इधर-उधर टहला, और अंत में आकर मेरे पास बैठ गया और मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया। मुझे यह अच्छा नहीं लगा, इसलिए मैंने अपना दूसरा हाथ अपनी कटार की मूठ पर रख दिया, जो मेरी कमरबंद में छिपी हुई थी।'
"जंगली," उसने मुझसे कहा, "तुम एक अच्छे लड़के हो, और अगर तुम इस मामले में मेरी मदद करोगे तो तुम मेरे बेटे बन सकते हो। तुम्हारी कम उम्र को देखते हुए, यह खूनी धंधा तुम्हें आकर्षित नहीं कर सकता; इसके अलावा, मैं गारंटी देता हूँ कि तुम्हारा जमादार तुम्हें मेरी तरह लाड़-प्यार नहीं करेगा और तुमसे कड़ी मेहनत नहीं करवाएगा।"
'मेंने सिर हिलाया।
"अरे! ऐसा ही है," उसने कहा, "और तुम आज़ाद होना चाहते हो? बोलो, लड़के, और डरो मत; तुम मेरे बेटे बनोगे। आलिया मेरी मदद करो! मेरे पास न पत्नी है, न संतान।"
मैंने फिर सिर हिलाया।
“हाँ, यह सही है,” उसने आगे कहा; “यद्यपि तुम्हारे साथ बुरा बर्ताव किया जाता है, फिर भी तुम खाए हुए नमक का दुरुपयोग नहीं करते, और मुझे यह बात तुममें और भी अच्छी लगती है। अब मेरी बात सुनो। मैं आऊँगा, पर अभी नहीं। तुम कहते हो कि तुम तम्बू के प्रवेश द्वार पर लेटोगे— अच्छा: तुम्हें इतनी गहरी नींद सोनी चाहिए जैसे तुमने अफीम ली हो— सुना? मैं चुपचाप तुम्हारे ऊपर से गुजरूँगा, और मुझे तिनके से गुदगुदी करने की एक पुरानी तरकीब आती है— समझे?”
"हाँ," मैंने कहा; "आपको बड़ा बैग चाहिए होगा।"
“बिल्कुल सही, मेरे बेटे,” उसने कहा, “तुमने सही अनुमान लगाया है; मुझ पर भरोसा रखो, मैं इसे हासिल कर लूंगा। जाते समय मैं तुम्हें छू लूंगा; तब तुम्हें मेरे पीछे आने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन तुम अवसर की प्रतीक्षा कर सकते हो।”
"लेकिन स्काउट्स के बारे में तो आपने सोचा ही नहीं," मैंने आगे कहा।
"ओह, मैं आसानी से उनसे बच सकती हूँ; रात अंधेरी और बादलों से घिरी है, और मुझे कोई नहीं देखेगा; मैं अपने कपड़े उतार दूंगी और अपने ऊपर एक काला कंबल डाल लूंगी।"

“तो मैं सहमत हूँ,” मैंने कहा; “और मैं उन बुरे लोगों को छोड़कर एक ईमानदार आदमी बन जाऊँगा। अब मैं जमादार से क्या कहूँ?”
“कहो,” उसने उत्तर दिया, “कि चरवाहे के झुंड से भेड़िये ने अक्सर सबसे मोटी भेड़ें चुरा ली थीं; और चरवाहे ने मन ही मन कहा, मैं भेड़िये को पकड़कर मार डालूँगा। और उसने एक गड्ढा खोदा, और उसके ऊपर एक टोकरी में एक मोटा मेमना लटका दिया, और बैठकर देखता रहा; और भेड़िया आया, और दूर से देखा कि चरवाहे की उदारता में कुछ असामान्य है, और उसने मन ही मन कहा, हे भेड़िये, तू भूखा है, लेकिन एक मेमना तुझे क्यों लुभा रहा है? वह समय आएगा जब तू चरवाहे को सोता हुआ पाएगा; इसलिए प्रतीक्षा कर, भले ही तेरा पेट खाली हो।—यह बात जमादार को कह, और वह तुझे समझ जाएगा।”
'अलिया की कसम! तुमने अच्छा किया, जंगली,' मैंने कहा, 'और तुम्हारी वफादारी का तुम्हें जरूर अच्छा इनाम मिलेगा। मेरे दोस्तों, तुम इस बदमाश के बारे में क्या सोचते हो?'
'अरे, हमें आश्चर्य नहीं है,' दोनों ने कहा, 'यह बिल्कुल उसके जैसा ही है; लेकिन इंशाल्लाह! वह अपने ही जाल में फँस जाएगा।'
मैंने कहा, 'अब दो जासूसों को बुलाओ;' और वे आ गए।
पीरू की योजना के बारे में बताने के बाद, मैंने आगे कहा, 'मेरे मित्रों, आपको इस बदमाश को शिविर में आने देना होगा: आप में से एक मेरे तंबू के पास लेट जाए और सोने का नाटक करे; लेकिन अपनी आँखें खुली रखें, और जैसे ही आप उसे अंदर आते देखें, पीर खान और मोती को जगाकर द्वार पर ले आएं; और फिर आप दोनों दरवाजे के दोनों ओर इस तरह खड़े हो जाएं कि वह आपको देख न सके। मैं सोने का नाटक करूंगा और उसे थैला ले जाने दूंगा, चाहे वह ऐसा करते समय मेरे ऊपर ही क्यों न गिर जाए; जैसे ही वह बाहर आए, आप उसे पकड़ लें और कसकर पकड़े रखें; मेरे आने तक उसे कोई नुकसान न पहुंचाएं: और जहाँ तक तुम्हारी बात है, जंगली, अगर तुम इतनी गहरी नींद नहीं सोए जैसे तुम्हारे पेट में अफीम का नशा हो, तो मैं आलिया की कसम खाता हूँ कि तुम उसके साथ एक ही कब्र में दफन होगे।'
'मुझसे मत डरो,' लड़के ने कहा; 'मैंने तुम्हारा नमक खाया है, तुम मेरे पिता और माता हो, तुमने मेरे साथ दयालुता का व्यवहार किया है, और मैं तुम्हें कैसे धोखा दे सकता हूँ? अगर मेरा ऐसा इरादा होता, तो मैंने उसके द्वारा कही गई किसी भी बात का ज़िक्र नहीं किया होता।'
मैंने कहा, 'तो हम सब तैयार हैं। क्या उन्होंने बताया कि वे कब आएंगे?'
'हाँ, उसने किया,' जंगली ने कहा; 'रात के दूसरे पहर में, जब उसका कोई और काम नहीं था।'
'अच्छा; तो फिर तुम सब तैयार रहना, और हम उसकी दाढ़ी पर थूकेंगे।'
मुझे बेसब्री से घंटों का इंतज़ार था, जब तक कि वो समय न आ जाए जब मैं उसके आने की उम्मीद कर सकूँ। मैं बार-बार अपने छोटे से तंबू से बाहर जाकर देखता कि सब अपनी-अपनी जगह पर हैं या नहीं, और फिर तंबू से संतुष्ट होकर लौट आता। पीर खान मेरे तंबू के पास गहरी नींद में सो रहा था, लेकिन मैं जानता था कि वो जागा हुआ है; जासूस आलस से इधर-उधर घूम रहे थे; सबसे बड़ी बात ये थी कि रात इतनी अंधेरी थी कि

मुझे अपना हाथ भी दिखाई नहीं दे रहा था, और झील की छोटी-छोटी लहरों की हल्की आवाज़ उसके कदमों की आहट भी नहीं सुन पा रही थी। 'हाँ,' मैंने धीमी आवाज़ में कहा, जब मैं आखिरी बार अपने कालीन पर लेटने जा रहा था, 'वो आएगा; चोर है ना, ऐसी रात को तो वो छोड़ेगा ही: लेकिन ये अंधेरा हमारे लिए भी उतना ही फ़ायदेमंद है जितना उसके लिए।'

'जंगली,' मैंने कहा, 'अब मैं आखिरी बार बाहर जा रहा हूँ; अपने पहरे का ध्यान रखना, मेरे अच्छे लड़के, और मैं तुम्हें नहीं भूलूंगा; पीर खान तम्बू के पीछे ही है: मुझे बाकी लोगों की ज्यादा परवाह नहीं है, जब वह पकड़ा जाएगा तो उन्हें भी जल्द ही इकट्ठा कर लिया जाएगा।'

'मुझसे मत डरो,' लड़के ने कहा; 'मेरी आंखें नींद से भारी नहीं हैं, और जब मैं पीर खान को पुकारने के लिए इस जगह से उठूंगा, तो एक चूहा भी मुझे नहीं सुन पाएगा।'

मैं अंदर गया और लेट गया; मैंने अपनी भरोसेमंद तलवार निकाली और उसे अपने दाहिने हाथ के पास रख लिया, ताकि मैं उसे पल भर में पकड़ सकूँ; और अपने आप को रजाई से ढक लिया, ताकि वह छिप जाए और मुझे तसल्ली रहे कि वह कब आएगा (क्योंकि मैं जानता था कि वह उसे मुझसे छीनने की कोशिश करेगा), मैं तंबू के प्रवेश द्वार पर टकटकी लगाए देखता रहा; और मेरी आँखें अंदर के अँधेरे को बाहर के अँधेरे से ज़्यादा महसूस करने लगीं, मुझे यकीन था कि अगर कोई अंदर आएगा, या दरवाज़े से भी गुज़रेगा, तो मैं उसे देख लूँगा। मैं बहुत देर तक इसी स्थिति में लेटा रहा; मैं मुश्किल से हिला, कहीं पीरू बाहर आकर यह न सुन ले कि मैं जाग रहा हूँ। अब, मेरा अनुमान है, आधी रात बीत चुकी थी; फिर भी कोई नहीं आया, और अगर मुझे यह यकीन न होता कि उसका भाग्य उसे विनाश की ओर ले जाएगा, तो मैं निराश हो जाता। साहब, ऐसा क्यों होता है कि लोगों को ये पूर्वाभास हो जाते हैं? मैंने अपने जीवनकाल में कई बार इन्हें महसूस किया है, लेकिन मैं कभी इनका कारण नहीं समझ पाया।

आखिरकार वह आ ही गया। मैंने देखा कि एक वस्तु ने द्वार को धुंधला कर दिया, एक पल के लिए थम गई, और फिर जंगली के शरीर के ऊपर से अंदर चली गई। जंगली इतनी ज़ोर से और स्वाभाविक रूप से खर्राटे ले रहा था कि अगर मैंने उससे थोड़ी देर पहले बात न की होती तो मैं उसे सोता हुआ समझ लेती। आलिया! आलिया! साहब, मेरा दिल कितनी ज़ोर से धड़क रहा है!—मैं उसकी धड़कनें सुन सकती थी, और वे मेरे सीने में इतनी ज़ोर से सुनाई दे रही थीं कि मुझे लगा कि वह भी उन्हें सुन लेगा। एक और विचार मेरे मन में कौंधा—क्या उसके पास हथियार हो सकते हैं? और क्या वह मुझे मारने की कोशिश करेगा? हो सकता है; और मैं लगभग कांप उठी जब मैंने सोचा कि मैं कैसे निष्क्रिय पड़ी रहूंगी और वह मेरा थैला चुरा लेगा; मैं उछलकर उसके शरीर में अपना हथियार घोंपने ही वाली थी, लेकिन मैंने यह विचार छोड़ दिया। वह एक चोर है, एक नीच चोर, और उसमें हथियार लाने की हिम्मत नहीं है, उसे चलाने की तो बात ही छोड़ो; और उसके दोनों हाथ भी नहीं होंगे—उसके पास एक हाथ नहीं हो सकता। इसलिए मैं चुपचाप लेटी रही, अपने हाथ तलवार की मूठ पर रखे हुए। तंबू बहुत नीचा था, और उसे झुककर आगे बढ़ना पड़ा: वह मेरे पास पहुँचा और घुटनों के बल बैठ गया, और जब मैंने सोने का नाटक किया, तो मुझे उसकी गर्म साँस महसूस हुई जब उसने मेरी ओर

देखा और मेरी आँखों में देखा कि मैं सचमुच सो रही हूँ या नहीं। वह संतुष्ट प्रतीत हुआ कि मैं सो रही हूँ, क्योंकि उसने तुरंत अपना हाथ तकिए के नीचे डाला, लेकिन इतनी खामोशी से कि अगर मैं सो रही होती तो मुझे पता भी नहीं चलता: लेकिन थैली उस तरफ नहीं थी, वह मेरे दूसरे कान के नीचे थी; उसने उसे महसूस किया, लेकिन मुझे लगता है कि उसे पता चला कि वह मुझे जगाए बिना उसे नहीं निकाल सकता; इसलिए उसने ज़मीन पर तिनके या घास का तिनका ढूँढा, और मेरे बगल वाले कान को गुदगुदी करने लगा। मैंने उसकी इच्छा का पालन किया, और एक हल्की सी आवाज़ के साथ उसकी ओर मुड़ी: इससे वह चौंक गया, और एक पल के लिए स्थिर हो गया; लेकिन फिर उसका हाथ टटोलने लगा; मैंने थैली को पीछे हटते हुए महसूस किया— तब तक पीछे हटते हुए जब तक कि वह तकिए से बाहर नहीं निकल गई; मैंने उसके कंधे पर पैसे रखते समय खनक सुनी और मुझे तसल्ली हुई: मैंने यह भी देखा कि जंगली दरवाजे पर नहीं था (हालाँकि वह कब गया, यह मुझे याद नहीं—क्योंकि मैं अपनी स्थिति में बहुत उलझा हुआ था), और भुट्टेरा को इसकी जानकारी थी। वह रुका और धीमी आवाज़ में बुदबुदाया, 'अजीब बात है कि वह चला गया; लेकिन वह रास्ता जानता है और मुझे निराश नहीं करेगा।' एक और कदम बढ़ाते ही वह दहलीज पार कर गया और पीर खान, मोती और एक दर्जन अन्य लोगों की ज़बरदस्ती पकड़ में आ गया।

'शानदार ढंग से प्रबंधित!' मैं चिल्लाया और दरवाजे की ओर दौड़कर समूह में शामिल हो गया: 'तुममें से कोई एक माचिस जलाओ; हमें चोरों के इस सरगना का चेहरा दिखाओ—एक ऐसा आदमी जो एक ठग के शिविर को लूटने की हिम्मत करता है और उसकी दाढ़ी को चुनौती देता है।'

रोशनी लाई गई, और वहाँ वह कांपता हुआ बेचारा व्यक्ति अपने कंधे पर रुपयों से भरा थैला लिए खड़ा था, और उसे ऐसे पकड़े हुए था मानो वह उसका अपना हो।

'हा!' मैंने कहा, 'तो ये तुम ही हो, पीरू, और वो भेड़िया जो इतना सतर्क था, आखिरकार चरवाहों के हाथ लग ही गया; उसने छोटे से लालच को नहीं अपनाया, लेकिन भेड़ों के बड़े झुंड पर अच्छी तरह से नज़र रखी गई थी, और वो जाल में फंस गया। और अब, बदमाश,' मैंने आगे कहा, 'तू हमें लूटना चाहता था, और तू मरने का हकदार है, फिर भी जो सवाल मैं तुझसे पूछूंगा, उनके जवाबों पर ही तेरा जीवन या मृत्यु निर्भर करती है।'

'उनके नाम बताओ, उनके नाम बताओ!' उस अभागे ने कहा; 'मुझे जीने दो, मैं बिना देरी किए निकल पड़ूंगा, मैं तुम्हारे साथ चलूंगा; तुम मुझे जंगल में अपने बीच से निकाल सकते हो, और अगर कभी सागर में या इस रास्ते पर मेरा चेहरा फिर से दिखाई दे, तो मेरे साथ जैसा चाहो वैसा व्यवहार करना।'

'बहुत अच्छा,' मैंने कहा; 'अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। क्या आपने जिस बुनीज का वादा किया है वह झूठा है?'

'यह उतना ही सच है जितना कि मैं सांस लेता हूँ: आह, मीर साहब, क्या आपके आदमियों ने तैयारियाँ नहीं देखीं, और क्या आप कल उनसे यही नहीं सुनेंगे? आपको इस पर संदेह कैसे हो सकता है?'

'आपको जाने देने के बदले आप हमें कितना पैसा देंगे? मुझे दो हजार रुपये चाहिए।'

'ऐ मेरे साहब! मेरे साहब!' उस बेचारे ने पुकारा; 'दो हजार रुपये! मैं इन्हें कहाँ से लाऊँगा? मेरे पास दुनिया में एक कौड़ी भी नहीं है।'
'यह झूठ है,' मोती और कई अन्य लोगों ने कहा; 'तुम्हारे पास हजारों रुपये हैं जो तुमने गरीब ठगों से जबरदस्ती छीन लिए हैं; हम ऐसे सौ उदाहरण गिना सकते हैं जिनमें तुमने हमसे पैसे लिए हैं: तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इससे इनकार करने की?'
मैंने कहा, 'देखो, ये कमरा है, और तुम इसका उपयोग जानते हो; बताओ कि तुम पैसे दोगे या नहीं।'
'मैं इसे दे दूंगा,' उसने कहा; 'मैं कुल्हाड़ी की कसम खाकर ऐसा करूंगा, और तुम मेरे साथ आओ और इसे ले लो।'
'अरे,' मैंने कहा, 'और हम खुद ही पकड़े जाएँगे! नहीं, नहीं, मेरे मित्र भुट्टेरा, इस तरह हमारी दाढ़ी पर धूल मत उछालो। इंशाल्लाह! जो लोग तुम्हें पकड़ सकते हैं, वे तुम्हारी सोच से कहीं ज़्यादा तेज़ दिमाग वाले हैं: नहीं, यार, मैं तो बस तुमसे मज़ाक कर रहा था—तुम्हारा सारा धन कहाँ छिपा है?'
'अगर तुम चाहो तो मुझे मार सकते हो, लेकिन मैं इस सवाल का कोई जवाब नहीं दूंगा।' 'अच्छा, ठीक है,' मैं चिल्लाया, 'जब तुम्हारा दम घुट रहा होगा तब शायद तुम इस बारे में सोचोगे; अब तुम दोनों इसे कसकर पकड़ो और इसके कंधों से थैला उतारो।'
उन्होंने वैसा ही किया। मैंने उसके गले में रूमाल डाल दिया और उसे तब तक कसता रहा जब तक कि उसका दम घुटने लगा। उसने बोलने की कई कोशिशें कीं, और अंत में मैंने अपनी पकड़ थोड़ी ढीली कर दी; लेकिन वह एक शब्द भी नहीं बोल सका—मृत्यु के भय ने उसकी बोलने की शक्ति को पंगु बना दिया था।
मैंने कहा, 'उसे थोड़ा पानी दो, इससे उसका डर दूर हो जाएगा।'
उसने उसे लिया और मेरे पैरों पर गिर पड़ा, और मुझसे उसे बख्शने की विनती की। मैंने उसे ठुकरा दिया और एक लात मारी।
'खजाना कहां है?' मैंने कहा: 'तुमने एक बार कमरे की जकड़न महसूस की है, सावधान रहो कि तुम दोबारा ऐसा जोखिम कैसे उठाओगे: खजाना कहां है?'
'मुझे जीने देने का वादा करो और मैं सब बता दूंगा,' भुट्टेरा ने कांपते हुए कहा।
मैंने कहा, 'मैं वादा करता हूँ; तुम यहीं रहोगे, और मैं इसे लाने के लिए लोगों को भेजूँगा; तुम अच्छी तरह जानते हो कि हमारे पास देरी करने का समय नहीं है, और अगर तुमने हमसे खिलवाड़ किया तो तुम परिणाम जानते हो—तुम पहले ही इसका आधा अनुभव कर चुके हो।'
'मोतीराम कहाँ है? उसे वह जगह पता है।'
'झूठे! मुझे पता नहीं,' मोती चिल्लाते हुए आगे बढ़ा; 'क्या तुम मुझे अपने घटिया लाभों में भागीदार साबित करना चाहते हो?'

भुट्टेरा ने आगे कहा, 'तुम उस जगह को जानते हो, लेकिन तुम्हें यह नहीं पता कि वहाँ कुछ है भी या नहीं; तुम्हें कस्बे के दूसरी तरफ का वह पुराना खोखला आम का पेड़ याद है, जहाँ तुमने गणेश से मिला मेरा आखिरी हिस्सा छोड़ा था?'

'मैं करता हूं।'

'अच्छा, तो फिर तुम्हें पेड़ के तने के खोखले भाग में खुदाई करनी होगी; लगभग एक हाथ की गहराई में तुम्हें मेरा सारा सामान मिल जाएगा—सोना, चांदी और गहने।'

'अब,' मैंने कहा, 'दुष्ट, मैंने अपना वचन निभाया है, तुम यहीं रहोगे; तुम्हारी कब्र खोदी जा चुकी है और घंटों से तैयार है: मैंने कसम खाई थी कि मैं सुबह होने से पहले तुम्हारी दाढ़ी पर थूकूंगा, और भोवानी, जिसके भक्तों को तुमने धमकाया और डराया है, ने तुम्हें मेरे हवाले कर दिया है:' और मैंने उस पर थूका; मेरे पास खड़े सभी लोगों ने भी ऐसा ही किया।

मैंने चिल्लाकर कहा, 'फिर से, उसे कसकर पकड़ो और तंबाकू लाओ।' वह घातक झिरनी को जानता था और खुद को छुड़ाने के लिए संघर्ष कर रहा था; लेकिन वह उन लोगों के चंगुल में फंसा एक बच्चा था जिन्होंने उसे पकड़ रखा था—पल भर में ही उसकी मौत हो गई!

'दफा हो जाओ, मोती!' मैं चिल्लाया; 'दस आदमी लेकर उस जगह जाओ जिसका उसने जिक्र किया है; हो सकता है उसने सच कहा हो, और इससे हमें फायदा होगा; तब बहुत से लोग इस घटना के बारे में सुनकर वाह! वाह! चिल्लाएंगे।'

शव को ले जाकर दफना दिया गया, कब्र को समतल करके दबा दिया गया, उस जगह पर प्लास्टर कर दिया गया, कुछ चूल्हे बनाए गए और उनमें आग जलाकर उन्हें काला कर दिया गया, और हमारा काम छिपा दिया गया।

साहब, क्या उस दुष्ट को उसका अंजाम नहीं मिलना चाहिए था? मेरी राय में, उसका निर्मम कृत्य हमारी वैध कार्यवाही से कहीं अधिक घृणित था; और जहाँ तक उसके विश्वासघात की बात है, उसने उसका दंड भुगत लिया।

मैंने कहा, यह एक भयानक बदला था; लेकिन तुमने लूटपाट के अपने घिनौने लालच से इसका न्याय बिगाड़ दिया। तुमने उसे जीवनदान देने का वादा क्यों किया और फिर उसकी हत्या क्यों कर दी? यह नीचता थी।

मैंने उससे ऐसा वादा नहीं किया था; मैंने कहा था कि वह जहाँ है वहीं रहे, और वह वहीं रहा—हाँ, वह अभी भी वहीं है।

अमीर अली, यह एक अच्छा अंतर था, और इससे यह और भी स्पष्ट हो जाता है कि आप पर कितना कम भरोसा किया जा सकता है। लेकिन उसके बाद क्या हुआ—क्या उसने अपने पैसों के बारे में सच बताया था?

ठग ने जवाब दिया, "हाँ, था।" भोर होने से बहुत पहले मोती लौट आया और मुझे जगाकर मेरे पैरों पर सोने-चांदी के सिक्कों, हारों, बाजूबंदों, कंगनों और पायलों का ढेर लगा दिया। उनकी कीमत लगभग तीन हजार रुपये थी और उनमें से एक भी वस्तु ठगों की दी हुई नहीं थी। मोती, पीर खान और अन्य लोगों ने अधिकांश

संपत्ति को पहचान लिया। हमने सभी आभूषणों को पिघला दिया और अगली यात्रा में उसे आपस में बाँट लिया। यह एक अच्छा खजाना था और इससे हम लंबे समय तक मालामाल रहे; वास्तव में, मैं कह सकता हूँ कि यह हमारे घर लौटने तक चला।

और मैंने साहूकार से पूछा, क्या उसके बारे में आई खबर सच थी?

ओह, बिलकुल सही, अमीर अली ने कहा; मैं तुम्हें उसके बारे में बताऊंगा। हम सागर से सुबह जल्दी निकल गए और रास्ते में थोड़ी दूर जाकर, जैसा कि हम किसी भी साहसिक यात्रा के बाद करते हैं, गुड़ खाने बैठ गए। जब हम यही कर रहे थे, तभी एक जासूस आया और उसने हमें खुशखबरी दी कि साहूकार शहर छोड़कर हमारे पीछे-पीछे आ रहा है, और दूसरा, जिसका नाम भीखरी था, साहूकार के साथ जुब्बुलपुर तक उसके सेवक के रूप में गया है, ताकि रात में साहूकार के सोते समय उसकी रखवाली कर सके।

'और वह यात्रा कैसे करता है?' मैंने पूछा।

स्काउट ने कहा, 'उस पर टैटू बना हुआ है, वह एक अच्छा मजबूत जानवर है, और उसके साथ दो और लोग लदे हुए हैं, और उसके और भिखारी के अलावा चार और आदमी हैं।'

'अच्छा,' मैंने कहा। 'अब, मेरे साथियों, हमें आगे बढ़ना होगा; साहूकार को कुछ दिनों तक हमारी कोई खबर नहीं मिलनी चाहिए, और तब तक मैं बाकी सभी से दूर रहूंगा।'

हम जल्दी से आगे बढ़े और अपने सफर के आखिरी पड़ाव पर पहुँच गए। तीन दिन तक हमने शांति से यात्रा की और समय-समय पर शकुनों का अवलोकन किया; सभी शकुन शुभ थे और हमारा हौसला बढ़ाते रहे। चौथे दिन, मानो संयोगवश, हमारी मुलाकात साहूकार और उसके साथियों से हो गई; उसके दल में अपने वफादार भिखारी को देखकर हमें बहुत खुशी हुई। रास्ते में ही हमारी उससे मुलाकात हुई, या यूँ कहें कि हमने उसे हमसे आगे निकलने दिया, और हमने सामान्य अभिवादन किया। मैं अच्छे कपड़े पहने हुए था और मेरे घोड़े भी अच्छे थे, और मैं एक सैनिक जैसा दिख रहा था। उसने हमसे हमारे गंतव्य और काम के बारे में पूछा, जिसका जवाब हमने वही पुरानी कहानी सुनाकर दिया, और हम खुशी-खुशी आगे बढ़ गए। साहूकार मोटा, हंसमुख और अपनी शैली में हाजिरजवाब था, और हमने कहानियाँ सुनाईं और उसके चुटकुलों पर खूब हँसे। साहब, यह आश्चर्यजनक है कि ये छोटी-छोटी बातें यात्रियों के बीच कितनी जल्दी सद्भावना और मित्रता पैदा कर देती हैं: ऐसी सुखद बातचीत में सड़क का अकेलापन और सफर की थकान भूल जाती है; और पड़ाव के अंत तक पहुँचने से पहले ही हम इतने घनिष्ठ मित्र बन गए थे मानो हमने महीनों साथ यात्रा की हो या एक-दूसरे को वर्षों से जानते हों। गाँव में विदा होते समय हमने सौहार्दपूर्ण विदाई ली; वह गाँव के अंदर बाज़ार में ठहरने के लिए और हम अपने पुराने शिविर स्थल की ओर चल दिए।

मैंने वहां मौजूद लोगों से कहा, 'कल का दिन अच्छा है, शुक्रवार है: हमें यह काम खत्म करना ही होगा।' सभी इस बात पर सहमत हो गए, और आधी रात को बेलहा और लुघाई लोग काम पर लग गए, बेलहा ने काम के लिए जगह चुनी और लुघाई ने कब्र खोदी।

सुबह होते ही एक आदमी (जो हमारा भिखारी था) आकर कहने लगा कि सहौकर गांव के दूसरी तरफ हमारा इंतजार करेगा, और उसने हमसे जल्दी आने की विनती की, क्योंकि उसे हमारी संगति पसंद थी और वह हमारे साथ आने वाले लोगों की सुरक्षा चाहता था।

उन्होंने आगे कहा, 'मैंने उसे थोड़ा डरा दिया था, और सच तो यह है कि सागर छोड़ने के बाद से ही वह चिंतित था, क्योंकि उसने पिछले साल रास्ते में कुछ लोगों के गायब होने की खबर सुनी थी; इसलिए जब हम कल आपसे मिले तो वह बहुत प्रसन्न हुआ, और बाद में उसने आपके बारे में, जमादार साहब, बहुत प्रशंसा की और कहा कि उसे आपकी संगति में कोई डर नहीं लगता।'

'शाबाश,' मैंने कहा; 'तुमने भी अपनी भूमिका बखूबी निभाई है, और इसे भुलाया नहीं जाएगा; लेकिन, मेरे दोस्तों, साहूकार इंतज़ार कर रहा है, और हमें चलना चाहिए; तुम सब कल की तरह उसके दल को घेर लो; उन्हें कहानियाँ और किस्से सुनाओ, और उनके मन को शांत रखो।'

'जय भवानी! जय अमीर अली!' का नारा पूरे दल ने लगाया जब हम मैदान से निकले और उस स्थान की ओर बढ़े जहाँ साहूकार हमारा इंतजार कर रहा था।

अध्याय XXVIII

केट्सबी। "मरना एक घृणित बात है, मेरे दयालु स्वामी।"
जब पुरुष इसके लिए तैयार नहीं होते और इसकी तलाश भी नहीं करते।
रिचर्ड तृतीय, अंक तृतीय, दृश्य द्वितीय

'राम! राम! मीर साहब,' साहौकर ने उस स्थान पर हमारा अभिवादन किया जहाँ भिखारी ने हमें निर्देशित किया था। 'राम! राम! मुझे खुशी है कि आपने अपने दीन सेवक के साथ समय बिताने की कृपा की, क्योंकि वास्तव में आपके धाराप्रवाह प्रवचन की मधुरता ने मेरे हृदय में और अधिक सुनने की लालसा जगा दी है, और सौभाग्य से मैं अब तक इस स्थिति से गुजर पाया हूँ।'

मैंने भी वही शिष्टाचार दोहराया और हम अपनी यात्रा पर निकल पड़े। धीरे-धीरे मेरे साथी अपने नए शिकारों के चारों ओर व्यवस्थित हो गए। सभी अपनी-अपनी जगह पर थे, और मैं उत्सुकता से उस पहले मुखबिर का इंतज़ार कर रहा था जो हमें यह सूचना दे कि भील तैयार है। साहब, ऐसे क्षणों में हम ठगों पर एक अजीब सी भावना छा जाती है: यह हमारे शिकारों के प्रति रुचि या दया की भावना नहीं होती, न ही उस काम के लिए पश्चाताप की भावना होती है जो हम करने वाले हैं, जैसा कि शायद आप सुनना चाहते हों, बल्कि इस साहसिक कार्य के परिणाम के लिए एक गहन चिंता, इसके पूरा होने की तीव्र लालसा और राहगीरों द्वारा बाधा डालने का डर होता है; और यद्यपि मैं अब काफी हद तक कठोर हो गया था, फिर भी मेरा दिल चिंता और आशंका से धड़क रहा था, और साहूकार की मजाकिया और हंसमुख टिप्पणियों के मेरे जवाब अस्पष्ट और खोए हुए थे; मेरे सारे विचार उस काम पर केंद्रित थे, और इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं थी। उन्होंने मेरे बदले हुए व्यवहार पर ध्यान दिया, और मैंने खुद को संभाला, और जल्द ही मैं उन्हें पहले की तरह ही खुश करने में सक्षम हो गया।

'अरे! ये तो बिलकुल आप ही जैसे हैं, मीर साहब,' उन्होंने कहा, जैसे ही मैंने एक चुटकुला सुनाया जिससे उनके मोटे पेट में गुदगुदी हुई, - 'बिल्कुल आप ही जैसे। अरे, नींद से जागते ही आपकी पहली नज़र किसका चेहरा पड़ा? ज़रूर किसी उदास शख्स पर, और तब से आप उसी के विचारों में डूबे हुए हैं।'

'मुझे नहीं पता, सेठजी,' मैंने उत्तर दिया; 'परन्तु आप जानते हैं कि मनुष्य का स्वभाव हमेशा एक जैसा नहीं रह सकता, और मैं स्वीकार करता हूँ कि मेरे विचार कहीं और थे, मेरे घर पर।'

“खैर,” उसने कहा, “मैं तुम्हारे और अपने लिए बस यही कामना करता हूँ कि हम अपने घरों को सुरक्षित लौट आएं, क्योंकि यह यात्रा थका देने वाली है, और इतने इंतज़ार के बाद दुर्भाग्यवश मुझे एक बहुत ही प्रतिकूल दिन पर अपनी यात्रा शुरू करनी पड़ी। मैंने लगभग एक महीने पहले सागर छोड़ने का निश्चय कर लिया था, लेकिन ज्योतिषी से सलाह लेने पर उसने मुझे बार-बार टाल दिया, कभी कहता रहा कि यह दिन बुरा है तो कभी वह दिन और बुरा, अंत में मेरे लिए वहाँ रुकना असंभव हो गया: और यह सब व्यर्थ था, और मैं नारायणु से प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे और तुम्हें सभी ठगों, चोरों और डाकुओं से बचाए।”

मैंने कहा, 'आमीन; मैं आपकी प्रार्थना का पूरे दिल से जवाब देता हूँ, क्योंकि मैं अपनी सेवा के लिए जा रहा हूँ, जहाँ हमें अक्सर असहनीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। लेकिन क्या कहते हैं कि रास्ते में गुंडे घूमते हैं, और वे कौन हैं या क्या हैं? यह शब्द मेरे लिए नया है।'

'सच कहूँ तो, मीर साहब, मैं आपको ठीक से बता नहीं सकता। कहते हैं कि ठग ऐसे लोग होते हैं जो तरह-तरह के बहाने बनाकर भोले-भाले यात्रियों को अपने जाल में फंसा लेते हैं और फिर उन्हें मार डालते हैं। मैंने यह भी सुना है कि उनके साथ सुंदर स्त्रियाँ भी होती हैं जो सड़कों पर मुसीबत का नाटक करती हैं और नरम दिल वाले यात्रियों को बहला-फुसलाकर मदद के लिए राजी कर लेती हैं। फिर वे उन पर शिकंजा कस लेती हैं और शैतान का कोई ऐसा जादू होता है जिससे वे तब तक उन्हें पकड़े रखती हैं जब तक उनके साथी नहीं आ जाते, चाहे फंसा हुआ व्यक्ति अपनी आजादी के लिए कितनी भी कोशिश करे। और यह बात बिलकुल सच है कि राजमार्गों पर चोर, ठग या किसी न किसी तरह के बदमाश भरे पड़े हैं, क्योंकि कई यात्री रहस्यमय तरीके से गायब हो जाते हैं। लेकिन मुझे डर नहीं है; मैं ईमानदार लोगों के साथ हूँ और हम एक बड़ा समूह हैं, और हम पर हमला करने वाले या तो बहुत हट्टे-कट्टे आदमी होंगे या शैतान।'

साहूकार के ठगों वाले विचार पर मैं मन ही मन हँस पड़ा, और मुझे पूरा यकीन था कि अगर सच्चाई सामने आई तो यात्रियों के गायब होने के पीछे गणेश जमादार का ही हाथ होगा। लेकिन मैंने खुशी से जवाब दिया, 'अरे! डरने की कोई बात नहीं, मेरे दोस्त। ये ठग, जैसा कि तुम कहते हो, कभी-कभार किसी अकेले यात्री पर झपट्टा मारकर उसे मार डालते हैं, लेकिन हमारे जैसे दल को छूने की हिम्मत कोई नहीं करेगा; और इंशाअल्लाह! अगर कोई दिखाई दिया, तो हम उनकी खाल उतार देंगे; मुझे इन बदमाशों का कीमा बनाने से ज्यादा कुछ भी पसंद नहीं है। मैं ऐसा एक-दो बार कर चुका हूँ, और मैंने कभी नहीं देखा कि तलवार खींचने पर वे खड़े हों। लेकिन उधर, मैं देख रहा हूँ, मेरा एक आदमी बैठा है; मुझे आश्चर्य है कि वह हमसे पहले कैसे पहुँच गया। मैं उससे पूछूंगा। उसने रास्ते में आराम करने के लिए जल्दी चलना शुरू कर दिया होगा;' और जैसे ही हम उसके पास पहुँचे, वह धीरे-धीरे जमीन से उठा, और उसने मुझे और साहूकार को प्रणाम किया; वह थका हुआ लग रहा था, लेकिन उसने अपनी भूमिका बखूबी निभाई।

मैंने कहा, 'यह कैसे संभव है, अमीर सिंह? आप हमसे इतना आगे कैसे हैं?'

'ओह,' उसने सहजता से उत्तर दिया, 'कल मेरे पैर में एक कांटा चुभ गया था, और जैसा कि मुझे पता था कि आप मेरा इंतजार नहीं करेंगे, मैं आधी रात को कुछ अन्य लोगों के साथ निकल पड़ा, जिन्होंने कहा कि वे मेरे साथी बनेंगे, और हम आराम से यात्रा करते रहे; लेकिन मैं आगे नहीं बढ़ सका, क्योंकि मेरे पैर में दर्द हो रहा था, और मैंने यहाँ आने वाले लोगों का इंतजार करने का फैसला किया ताकि मुझे टट्टू पर लिफ्ट मिल सके।'

मैंने कहा, 'तुम्हें यह मिल जाएगा; मेरे सामान ले जाने वाले वाहन पर सवार हो जाओ, और मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि जब हम पड़ाव के अंत तक पहुँचें तो एक नाई तुम्हारे पैर की जाँच कर ले। लेकिन तुम्हारे साथी कहाँ हैं?'

उन्होंने कहा कि आगे लगभग आधे रास्ते पर एक छोटी नदी है, और वे वहाँ जाकर अपने हाथ और चेहरे धोएंगे; उन्होंने मुझसे कहा कि अगर मैं उनका पीछा नहीं कर सका, तो आप उन्हें वहाँ पाएंगे।
'अच्छा,' मैंने कहा, 'और यह सुनकर खुशी हुई कि पास में पानी है; हम उतरकर तरोताज़ा हो सकते हैं, क्योंकि यह सफर लंबा है: आपका क्या कहना है, सेठ साहब? आप हिंदू भी सुबह के स्नान को लेकर उतने ही सजग हैं जितने हम मुसलमान।'
'जी हां, जी हां,' उन्होंने उत्तर दिया; 'यह खबर अच्छी है, क्योंकि मेरा मुंह सूख रहा है और मैंने अभी तक इसे धोया नहीं है; हम थोड़ी देर के लिए रुकेंगे; इसके अलावा, मेरा पेट खाली है और मेरे पास मिठाई है जो मैं आपके साथ बाँटूँगा, मीर साहब; पेट भरा न होने पर यात्रा करना ठीक नहीं है।'
'अच्छा विचार है,' मैंने उत्तर दिया, 'और मुझे इनकी आवश्यकता होगी; मैं आमतौर पर कुछ स्वयं लाता हूँ, लेकिन इस बार लाना भूल गया।'
जासूस सही था, उसने जिस छोटी नदी का ज़िक्र किया था, वह उतनी दूर नहीं थी जितना उसने बताया था, और कुछ ही मिनटों की घुड़सवारी के बाद हम वहाँ पहुँच गए; और सचमुच मेरे आदमी पानी के किनारे बेफिक्र बैठे थे, अपने साथ लाए हुए कुछ केक के जल्दबाज़ी में बने भोजन पर चर्चा कर रहे थे। 'भिलमनजेह, क्या तुमने गड्ढा साफ़ कर दिया है?' मैंने उत्सुकता से बेल्हा से पूछा।
'मंजेह,' उसने उत्तर दिया।
साहूकार ने कहा, 'तुमने क्या पूछा? अगर उनके पास तुम्हारे पीने के लिए साफ बर्तन नहीं है, तो तुम मेरा बर्तन ले सकते हो।'
मैंने जवाब दिया, 'आपकी दयालुता के लिए धन्यवाद, लेकिन मेरे एक दोस्त ने मुझे बताया है कि वह एक लेकर आया है और उसे मेरे लिए साफ करके तैयार रखा है।'
हम सब घोड़ों से उतरे; सभी पुरुष पानी में कूद पड़े और अपने मुंह और दांत धोने तथा अपने पैरों के नीचे कंकड़-पत्थर वाले तल पर बहते शुद्ध पानी को पीने में व्यस्त हो गए; लेकिन उनमें से कोई भी अपनी जगह से नहीं हटा और केवल अपना काम करने के संकेत की प्रतीक्षा करता रहा।
'क्या भील बहुत दूर है?' मैंने उस बेल्हा से पूछा जिसने मुझे स्नान के लिए पानी का एक लोटा दिया।
उन्होंने कहा, 'लगभग एक तीर की दूरी पर, उस झाड़ी में नीचे की ओर; वह एक अच्छी और प्रसिद्ध जगह है; पिछले साल इसी स्थान पर गणेश जमादार को एक दुर्लभ फसल मिली थी। लेकिन देर मत कीजिए, क्योंकि सूरज काफी ऊपर है और हो सकता है कि हमारे आगे वाले पड़ाव से यात्री आ रहे हों; रास्ते में यही एकमात्र बहता पानी है और सभी लोग तरोताजा होने के लिए यहीं आते हैं।'
'तो मैं तैयार हूँ,' मैंने कहा; 'और जब आप मुझे साहूकार के पास देखेंगे, तो मैं संकेत दूंगा; मुझे लगता है कि सभी सैनिक तैयार हैं।' और मैं उसकी ओर चल पड़ा।
जब मैं मोतीराम के पास से गुजरा तो उसने मुझसे कहा, 'तुम झिरनी क्यों नहीं देते? हम सब इसका इंतजार कर रहे हैं।'

मैंने कहा, 'अब तैयार हो जाओ; मैं अपने स्टेशन पर जा रहा हूँ।'
उसके पास खड़ा आदमी हमारी अजीब भाषा में बातचीत सुनकर मुड़ा; लेकिन तुरंत बाद वह बैठ गया और बड़ी लगन से अपने दांत साफ करने में जुट गया: उसके पीछे दो आदमी थे जो थोड़ी देर में उसकी मदद करने वाले थे!
मैंने कहा, 'अरे, सेठजी, मुझे आश्चर्य होता है कि आप ऊपर क्यों नहीं जाते; यहाँ तो ऊपर के सभी लोगों के कारण पानी गंदा हो गया है। मेरे साथ आइए, मैं आपको एक गहरी जगह दिखाता हूँ जहाँ मैंने अभी-अभी स्नान किया है और जहाँ पानी साफ है।'
'अरे, मुझे तो याद ही नहीं आया,' उसने कहा; 'मैं आपके पीछे आऊंगा।' वह नीचे झुककर सफाई कर रहा था, और जैसे ही मैं उसे समूह के बीच में ले आया, मैंने झिरनी (पानी का छल) कर दी।
साहब, हालांकि मैंने लगभग चार साल से रूमाल से किसी आदमी को नहीं मारा था, लेकिन मैं अपनी पुरानी तरकीब नहीं भूला था: मुझे लगता है कि वह मेरे पैरों तक पहुँचने से पहले ही मर चुका था।
देरी करना हमारी मूर्खता थी, और मैंने भविष्य में ऐसी गलती होने से रोक दी। हर आदमी ने मानो कुछ हुआ ही न हो, अपने-अपने काम में लगकर नहाने लगा, और रेत पर लाशें पड़ी रहीं। एक बार फिर हमारी किस्मत में रुकावट आना लिखा था। दो यात्री आते हुए दिखाई दिए, और लाशों को जल्दी से चादरों से ढक दिया गया, मानो उनके नीचे लेटे हुए लोग सो रहे हों; और मैंने आदमियों से कहा कि उनमें से कुछ बैठ जाएं और कुछ लेट जाएं, और सभी बहुत थकावट का नाटक करें। उन्होंने वैसा ही किया, और वे आदमी ऊपर आए; वे बेचारे थे, मारने लायक भी नहीं थे, और मैंने पीर खान से उन्हें जाने देने का प्रस्ताव रखा, लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं मानी।
'इन्हें जाने दो!' वह चिल्लाया; 'क्या तुम पागल हो? क्या तुम्हें नहीं लगता कि ये लोग पहले से ही जानते हैं कि हम कौन हैं? क्या कोई व्यक्ति मृतकों के सामने, चाहे वे कितने भी अच्छे से ढके या भेस बदले हों, इस एहसास के बिना आ सकता है कि वे मर चुके हैं? और देखो, हमारे कुछ आदमी उनसे बात कर रहे हैं; वे असली बुनी हैं, और डेवी ने उन्हें भेजा है।'
मैंने कहा, 'जैसी आपकी इच्छा, लेकिन उनकी संख्या और भी अधिक हो सकती है।'
'इतनी जल्दी तो नहीं,' उसने उत्तर दिया; 'ये लोग रात में ही निकले होंगे तभी इतनी जल्दी यहाँ आए हैं; लेकिन चलिए, हम इनसे पूछते हैं।' और हम उनके पास चले गए।
'सलाम!' मैंने कहा, 'आप इतनी सुबह कहाँ से आ गए? अगर आप उस जगह से आए हैं जहाँ हम दिन के दौरान पहुँचने की उम्मीद करते हैं, तो आपने बहुत तेज़ यात्रा की है; वह कितनी दूर है?'
उस आदमी ने कहा, 'यह सात किलोमीटर लंबा रास्ता है, और वहाँ पहुँचने से पहले सूरज बहुत तेज़ और गर्म हो जाएगा; लेकिन हमें जल्दी है और हमें आगे बढ़ना ही होगा।'
मैंने कहा, 'रुको, जब तक तुम्हें अनुमति न मिल जाए तब तक हिलने की हिम्मत मत करना; और मुझे बताओ, जिस गांव से तुम आए हो, वहां पिछली रात कितने यात्रियों ने ठहर कर रात बिताई?'

'हमारे अलावा दो और लोग हैं,' उन दोनों में से दूसरे ने मेरे सवाल पर घबराते हुए जवाब दिया। 'आप क्यों पूछ रहे हैं?'
'क्या आपको यकीन है कि और कोई नहीं थे?'
'बिल्कुल,' उसने उत्तर दिया; 'हम जबलपुर से एक साथ यात्रा करके आए थे और एक ही घर में ठहरे थे।'
और वे आपसे कितनी दूरी पर हैं?
'मुझे लगता है कि वे तुरंत यहां आ जाएंगे, क्योंकि हमने एक ही समय में शुरुआत की थी लेकिन उनसे आगे निकल गए हैं।'
'अच्छा,' मैंने कहा; 'अब वहीं बैठ जाओ और उनके आने तक इंतजार करो।'
'ऐसा क्यों?' दोनों चिल्लाए; 'आपको यात्रियों को रोकने का क्या अधिकार है? हम तो आगे बढ़ेंगे।'
मैंने कहा, 'हिम्मत करके हिलना-डुलना खतरनाक हो सकता है; तुमने हमारे क्षेत्र में घुसपैठ की है और तुम्हें इसका दंड भुगतना होगा।'
'क्या सजा? क्या तुम चोर हो? अगर हां, तो हमसे जो चाहो ले लो और हमें जाने दो।'
पीर खान ने कहा, 'हम चोर नहीं हैं; लेकिन चुप रहो, हम उनसे भी बदतर हैं।'
'और भी बुरा! भाई, हम तो गए काम से,' एक ने दूसरे से कहा; 'ये बदमाश ठग हैं; जैसा मैंने तुम्हें फुसफुसाकर कहा था, जब तुम्हें उनके बीच रुकना ही होगा, वैसा ही हुआ है: वे अपना घिनौना काम कर रहे हैं, और वहाँ वे लोग पड़े हैं जिन्हें उन्होंने नष्ट कर दिया है।'
'हां,' मैंने कहा, 'दुखी लोगों, तुमने सही अनुमान लगाया है; वहां मृतकों का शव पड़ा है, और जल्द ही तुम्हारा नाम भी उन्हीं में शामिल हो जाएगा; अपने भाग्य के विरुद्ध संघर्ष करना व्यर्थ है।'
मैं मुँह फेर लिया, क्योंकि मुझे लगा, साहब—इन निर्दोष लोगों को नष्ट करने के विचार से ही मेरा मन विचलित हो गया। वे शायद मर गए होते—पर पीर खान सही थे, उन्होंने मृतकों को पहचान लिया था, हालाँकि शवों को इस प्रकार रखा और ढका गया था मानो वे बेजान शरीर सो रहे हों—पर वे मिट्टी के ढेर की तरह पड़े थे। उन्हें ढकने वाली चादरों की तहों में साँसों की कोई आहट नहीं थी, और एक नज़र ही उन दुर्भाग्यशाली लोगों को सब कुछ बताने के लिए काफी थी जिन्होंने उन्हें देखा था। लेकिन मैंने उस भावना को यथासंभव दूर भगाया; यदि मैं उसके आगे झुक जाता, या अपने साथियों को उसके अस्तित्व का पता चलने देता, तो उन पर मेरा जो अधिकार था, वह खो जाता—और वही मेरे अस्तित्व का सार था।
मैंने पीर खान से कहा, 'उन्हें मरना ही होगा; आप सही थे, और उन्होंने सच्चाई का सही अनुमान लगाया था; लेकिन काश ऐसा न होता, और आलसी लुघाई अपना काम जल्दी कर लेते; वे चले जाते, और हम उनके बिना ही सुबह का अच्छा काम कर लेते; वे किसी काम के नहीं हैं।'
'मीर साहब, मैं किसी भी कीमत पर उनसे अपनी जगह नहीं बदलना चाहूंगा, और शायद उन्हें इस असमंजस से मुक्त करना ही बेहतर होगा।'

'ऐसा करो, पीर खान, और बाकी लोगों को भी इनके साथ हटवा दो; बाकी बचे दो लोगों से मैं निपट लूँगा। ये लोग तो डर से लगभग मर ही चुके हैं, और बाकी बचे लोगों पर मैं अपने तरीके से टूट पड़ूँगा; मुझे ऐसे निष्क्रिय शिकार बिल्कुल पसंद नहीं हैं।'

पीर खान और एक अन्य व्यक्ति उन बेचारे लोगों के पास गए, जो वहीं ज़मीन पर बैठे रहे जहाँ हमने उन्हें छोड़ा था। मैंने उन्हें देखा; आदेश मिलते ही वे यंत्रवत उठ खड़े हुए और अपनी गर्दनें घातक रूमाल की ओर बढ़ा दीं, और कसाई के चाकू के नीचे भेड़ की तरह निर्दयता से मारे गए। बाकी यात्री भी जल्द ही आ गए, और जैसा कि अन्य लोगों ने बताया था, वे केवल दो ही थे।

मैंने मोती से कहा, 'अब इन लोगों से तुरंत निपटना होगा: तुम एक को पकड़ो, मैं दूसरे को; इन्हें एक शब्द भी नहीं बोलना चाहिए।'

'मैं तैयार हूँ,' उसने कहा; और हम उठे और सड़क पर इधर-उधर घूमने लगे।

यात्री आ गए। उनमें से एक युवक था और दूसरा बूढ़ा। मैंने युवक पर ध्यान दिया, और जैसे ही वह मेरे पास से गुजरा, एक गुंडे ने उसकी बांह पकड़ ली; वह पलटकर देखने लगा, और मैं तैयार था। उन्हें भी पकड़ लिया गया, और अपने बिखरे हुए साथियों को इकट्ठा करने के बाद, हम बिना रुके फिर से अपने रास्ते पर चल पड़े।

सुबह का काम बढ़िया रहा। साहूकार उतना ही धनी था जितना भुट्टेरा ने कहा था, और लदे हुए टट्टुओं की तलाशी लेने पर हमारी निगाहें चार हज़ार तीन सौ रुपये पर टिक गईं: इनके अलावा छह सुंदर शॉल भी थे, जिनकी कीमत एक हज़ार रुपये से भी अधिक थी, और सूती कपड़े के कुछ टुकड़े भी थे, जिन्हें फाड़कर तुरंत बाँट दिया गया। बाकी चार यात्रियों के पास सौ रुपये से अधिक थे, जो एक अच्छी-खासी रकम थी, जिसे मैंने समूह में बराबर बाँट दिया, और बड़ी रकम अपने पास रख ली, और उसे पहले से अर्जित राशि में जोड़ दिया।

अध्याय 29

इसमें स्पष्ट रूप से दिखाया गया है कि जब शैतान गाड़ी चला रहा हो तो उसे रोकना कितना मुश्किल होता है। बिना किसी और परेशानी के हम जुब्बुलपुर पहुँच गए और वहाँ दो दिन विश्राम किया। पीर खान, मोती और मैं पूरे समय बाज़ारों में घूमते रहे, लेकिन हमें कोई यात्री नहीं मिला और न ही हमें पता चला कि कोई आने वाला है; इसलिए वहाँ रुकना व्यर्थ था, और हमारे पास अभी भी काफी समय था, इसलिए हम अपनी इच्छानुसार आराम से यात्रा कर सकते थे: अतः तीसरी सुबह हम फिर से चल पड़े।

जुब्बुलपुर और नागपुर के बीच का इलाका वीरान है। मीलों तक कोई गाँव नहीं दिखता, सड़क पथरीली और ऊबड़-खाबड़ है, और लगभग पूरे रास्ते घना और खतरनाक जंगल है। इसी वजह से यह इलाका हमेशा से ठगों का पसंदीदा अड्डा रहा है, और इन कुछ यात्राओं में शायद देश के किसी भी अन्य हिस्से की तुलना में कहीं अधिक घटनाएँ घटी हैं। हम सभी को इस बात का अफसोस था कि जुब्बुलपुर में हमें कोई नौकर-चाकर नहीं मिला, जिससे हम रास्ते की थकान मिटा सकें, तभी हमारे दूसरे पड़ाव पर पहुँचने के कुछ ही समय बाद, मोती, जो हमारे लिए काम ढूंढने गया था, यह खुशखबरी लेकर लौटा कि एक व्यापारी की दुकान के दरवाजे पर एक पालकी खड़ी है, जिसके चारों ओर कुछ पादरियों और सैनिकों का झुंड है, और वह किसी यात्री की पालकी जैसी लग रही थी।

'पर वह जरूर उच्च पदस्थ होगा,' मोती ने कहा, 'इसलिए मैं आपसे विनम्रतापूर्वक निवेदन करता हूं कि आप, मीर साहब, यह पता लगाने का प्रयास करें कि वह कौन है और यदि संभव हो तो उसे अपने साथ ले आएं।'

मैंने उसकी सलाह मानी और यात्रा के कपड़े बदलकर ऐसा वस्त्र पहन लिया जिससे मेरा स्वागत सम्मानजनक हो। मैंने खुद को हथियारों से लैस किया और एक ठग के साथ, जो मेरा हुक्का लिए हुए था, गाँव में चला गया। जल्द ही मुझे पालकी और उसके आसपास के लोग दिखाई दिए, और मार्गदर्शन के लिए कुछ जानकारी प्राप्त करने के लिए, मैं उसके ठीक सामने स्थित एक छोटी सी टुम्बोली की दुकान पर गया और बैठकर तंबाकू और पान बेचने वाले से बातचीत करने लगा।

'तुम जिस देश में रहते हो, वह तो बिल्कुल जंगली इलाका है,' मैंने कहा।

'जी हां, यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा आप कहते हैं,' उसने उत्तर दिया, 'और यदि आप यात्री न होते, तो एक गरीब आदमी के लिए पान और तंबाकू बेचकर अपना पेट भरना मुश्किल होता, लेकिन अभी तो मेरा व्यापार खूब फल-फूल रहा है।'

मैंने कहा, 'सड़क पर ज्यादा लोग नहीं दिख रहे हैं; मैं जुब्बुलपुर से बिना किसी से मिले ही आ गया हूँ।'

'अभी तो इन सड़कों पर ज्यादा चहल-पहल नहीं है,' उसने जवाब दिया, 'लेकिन एक महीने में सैकड़ों लोग होंगे; और वहाँ,' उसने सड़क के उस पार वाले घर की ओर इशारा करते हुए कहा, 'मैंने कुछ समय से लगभग इकलौता ही घर देखा है।'

मैंने पूछा, 'यह कौन है? और यह कहाँ से आया है? यह हमारे साथ नहीं था।'

'मुझे नहीं पता,' टुम्बोली ने उत्तर दिया, 'और मुझे परवाह भी नहीं है; वह जो भी हो, उसने मेरा काफी सामान खरीदा है, और आज सुबह मेरे हाथों में आया पहला चांदी का सिक्का वही था।'

मैंने देखा कि इस आदमी से कुछ भी पता नहीं चलेगा, इसलिए मैं थोड़ी दूर पर रहने वाले एक बुनिया के पास गया और कुछ औपचारिक और बेपरवाह सवाल पूछने के बाद उससे पूछा कि क्या वह उस यात्री के बारे में कुछ जानता है; लेकिन उसे भी कुछ नहीं पता था, सिवाय इसके कि एक दासी ने उससे कुछ आटा खरीदा था। उसने कहा, 'लोग कहते हैं कि वह एक प्रतिष्ठित सज्जन हैं जो निजी तौर पर यात्रा कर रहे हैं और नहीं चाहते कि लोग उन्हें जानें; खैर, साहब, मुझे उनके बारे में कुछ नहीं पता; लेकिन मुझे लगता है कि वह थोड़ी देर में सामने आ जाएंगे।'

मैंने सोचा, ये तो बहुत अजीब बात है; एक रंगीन पालकी, आठ भारवाहक और कुछ सैनिक इस वीरान जगह पर आए हैं, और फिर भी किसी को कोई जिज्ञासा नहीं है; ये कौन हो सकता है? मैं टुम्बोली लौटकर थोड़ी देर बैठूंगा; शायद मैं देख सकूं, हालांकि मैं इस रहस्यमय व्यक्ति के बारे में कुछ भी नहीं सुन सकता।

मैं दुकान पर बैठ गया और अपने सेवक को हुक्का मंगवाकर वहीं बैठकर धुआँ उड़ाता रहा, इस उम्मीद में कि शायद बरामदे में फैले पर्दों के पीछे से कोई निकले। मेरा इंतज़ार व्यर्थ नहीं गया; मैंने उन्हें एक-दो बार धीरे से हिलते देखा और मुझे लगा जैसे किसी चमकीली आँख की रोशनी मेरी ओर टकटकी लगाए हुए है। मैंने अपनी निगाहें उस ईर्ष्यालु पर्दे पर टिका दीं और काफी देर बाद वह जल्दी से खुल गया, जिससे मुझे एक पल के लिए एक सुंदर चेहरे की झलक मिली; लेकिन वह तुरंत फिर से बंद हो गया, और मैं उस खूबसूरत लेकिन रहस्यमयी शख्सियत के बारे में व्यर्थ ही सोचता रह गया जिसने इस तरह खुद को मेरे सामने आंशिक रूप से प्रकट किया था। पालकी के आसपास लेटे-बैठे किसी भी व्यक्ति से व्यक्तिगत रूप से पूछताछ करना मेरे उद्देश्य के अनुरूप नहीं होता, क्योंकि इससे वे मुझ पर शक करने लगते और यह अनुचित होता: आखिर वह सिर्फ एक औरत थी, - अब मुझे औरतों से क्या लेना-देना था? और क्या मैंने मन ही मन यह निश्चय नहीं किया था कि मैं कभी भी उन्हें बुनीज के रूप में नहीं ढूँढूँगा? बल्कि, उन पार्टियों से भी बचना चाहिए जिनमें ऐसी कोई संभावना हो?

इसलिए मैं उठा और अपने शिविर की ओर चल पड़ा, यह दृढ़ निश्चय करते हुए कि मैं अगली सुबह अपनी यात्रा जारी रखूंगा; क्योंकि, मैंने सोचा, वह कोई प्रतिष्ठित महिला होगी जो अपने स्वामी से मिलने जा रही होगी, और अल्लाह न करे कि मैं इतनी असहाय और असुरक्षित महिला पर हाथ उठाऊं; और मैंने अपनी प्यारी अज़ीमा के बारे में सोचा, और इस विचार से कांप उठा कि कहीं वह कभी मेरे पेशे के अन्य सदस्यों की पहुंच में न आ जाए, जो शायद मेरी तरह ईमानदार न हों।

लेकिन, साहब, मनुष्य के संकल्प—ये क्या हैं?—क्षणिक विचार, जो मन को अच्छे विचारों की ओर प्रेरित करने का प्रयास करते हैं, परन्तु वासना के प्रचंड और प्रबल प्रभाव से नष्ट हो जाते हैं। मेरे संकल्प के बावजूद मेरा मन अशांत था, और कल्पना बार-बार मुझे उसकी दृष्टि याद दिलाती और फुसफुसाती कि वह प्रेम भरी दृष्टि थी। मैं उसे अपने मन से नहीं निकाल सका, और अपने साथियों की बातचीत में उसे अपने विचारों से दूर

करने का प्रयास किया; परन्तु व्यर्थ; वह प्रेम भरी दृष्टि मेरे सामने थी, और जिस सुंदर आँखों से वह दृष्टि डाली गई थी, वे मानो किसी और दृष्टि की, किसी निकट और अधिक प्रेमपूर्ण दृष्टि की माँग कर रही थीं।
इस अवस्था में मैंने पूरा दिन बिताया, अब मैंने ठान लिया था कि मैं उस प्रलोभन का विरोध करूँगा जो मेरे हृदय को कुंठित कर रहा था, और अब मैं लगभग गाँव जाने और अपनी बेचैनी के अज्ञात कारण को खोजने के लिए तैयार ही था; और मैं दुविधा में था, तभी शाम ढलते समय मैंने एक दासी को शिविर की ओर जाते देखा, और मैं उससे मिलने गया, लेकिन उससे बात करने का मेरा इरादा नहीं था, कहीं वह केवल गाँव की लड़की ही न निकली। हम मिले और मैं उसके पास से गुजर गया, लेकिन मैंने तुरंत समझ लिया कि वह किसी की तलाश में है, क्योंकि वह हिचकिचाते हुए मुड़ी और मुझसे बोली।
'मेरी धृष्टता के लिए क्षमा करें, साहब,' उसने कहा, 'लेकिन मैं किसी की तलाश में हूँ, और आपका रूप देखकर मुझे लगता है कि वह आप ही होने चाहिए।'
मैंने कहा, 'बोलिए; अगर मैं आपकी किसी भी तरह से मदद कर सकता हूं, तो मुझे आदेश दीजिए।'
उसने जवाब दिया, 'मुझे नहीं पता कि तुम वही हो या नहीं; लेकिन मुझे बताओ, क्या तुम आज सुबह कुछ देर के लिए टुम्बोली की दुकान पर हुक्का पीते हुए बैठे थे?'
'मैंने किया, मेरी प्यारी युवती,' मैंने कहा; 'और इसमें क्या है? इसमें ऐसा कुछ भी असामान्य नहीं है जो ध्यान आकर्षित करे।'
'अरे नहीं!' लड़की ने नखरे दिखाते हुए कहा; 'लेकिन एक व्यक्ति ने आपको देखा है जो आपसे दोबारा मिलना चाहता है, और यदि आप अब मेरे साथ चलेंगे तो मैं आपका मार्गदर्शन करूंगी।'
मैंने पूछा, 'और यह व्यक्ति कौन हो सकता है? और एक यात्री से उसका क्या लेना-देना हो सकता है?'
'आपके पहले प्रश्न का उत्तर शायद मैं न दे सकूँ,' लड़की ने कहा; 'और दूसरे प्रश्न के बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं है; लेकिन, कसम से, मेरे साथ आइए, क्योंकि मामला अत्यंत महत्वपूर्ण है, और मुझे स्पष्ट आदेश मिले हैं कि यदि संभव हो तो मैं आपको वहाँ ले जाऊँ।'
मैंने कहा, 'मैं आपके पीछे आ रहा हूँ; आप आगे बढ़िए।'
'तो मुझसे कुछ दूरी पर पीछे रहना,' उसने कहा, 'और जब तुम मुझे घर में प्रवेश करते हुए देखो, तो मेरे पीछे निडरता से अंदर कदम रखना, मानो तुम ही मालिक हो।'
मैं उसके पीछे गया। लेकिन आह! साहब, भाग्य की शक्ति देखिए। मैं अपने तम्बू में बैठा रह सकता था और उस लड़की से इनकार कर सकता था, जिसके बारे में मुझे पहले ही पता चल गया था कि वह मुझे ढूंढ रही है। जब मैं उससे मिलने के लिए आगे बढ़ा, तो मैं उदासीन होकर आगे बढ़ सकता था, और जब उसने मुझसे बात की, तब भी मैं यह मानने से इनकार कर सकता था कि मैं वही व्यक्ति हूँ जिसके पीछे उसे भेजा गया है, या मैं उसके साथ जाने से मना कर सकता था; लेकिन भाग्य ने मुझे आगे बढ़ाया, बल्कि उसने मुझे एक दासी के पीछे घसीट लिया, एक ऐसे साहसिक कार्य में धकेल दिया जिससे मैं बचना चाहता था, और जिसके बारे में मेरा दिल कहता था कि इसका अंत दुखद होगा। साहब, भाग्य का कोई विरोध नहीं कर सकता; यह तुच्छतम

तरीकों से भी महानतम कार्य करता है, और हम तन-मन से इसके दास हैं, आँख बंद करके इसकी इच्छा का पालन करते हैं! मैं केवल ठगों की बात नहीं कर रहा, बल्कि पूरी मानव जाति की बात कर रहा हूँ। क्या ऐसा नहीं है?

मैंने कहा, "मुझे ऐसा लगता है, अमीर अली, कि जब भी आपके दुष्ट हृदय किसी वस्तु पर अपना मोह साधने लगते हैं और आप उनके सुझावों का पालन करते हैं, तो इसके लिए बेचारा भाग्य ही दोषी होता है।"

नहीं, मैं तो इससे बचता, ठग चिल्लाया, और क्या मैंने तुम्हें यह नहीं बताया? आलिया जानती है कि मैं इस मामले में नहीं पड़ता; लेकिन मैं क्या कर सकता था? उसकी इच्छाशक्ति के आगे मेरे कमजोर इरादे क्या थे? और फिर भी तुम मेरी बात नहीं मानोगे। साहब, मैं झूठ नहीं बोलता।

मैंने कहा, "मुझे नहीं लगता; लेकिन तुम्हारी आंखें इतनी खूबसूरत थीं कि तुम उन पर मोहित हो गए; इसलिए अपनी कहानी जारी रखो।"

उस गुंडे ने हंसते हुए कहा, "वे सचमुच वही थे, और जिस घड़ी मैंने उन्हें देखा, वह धिक्कार हो। लेकिन मैं आगे बढ़ता हूँ।"

दासी मुझसे आगे चल रही थी; कुछ दूरी तक मैं उसके पीछे-पीछे गाँव और उसके बाज़ारों से गुज़रा और उसे उस घर में प्रवेश करते देखा जिसके सामने मैं सुबह बैठा था। मैं भी अपने चप्पल दरवाज़े पर छोड़कर, अपने घर में प्रवेश करने वाले व्यक्ति के आत्मविश्वास से भरे अंदाज़ में अंदर चला गया। जैसे ही मैंने दहलीज पार की, दासी ने मुझे रोक लिया।

'एक पल रुकिए,' उसने कहा; 'मैं आपके नाम की घोषणा करने जा रही हूँ;' और उसने अस्थायी स्क्रीन को एक तरफ खींचकर अंदर चली गई।

कुछ ही क्षणों में वह लौटी और मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया। मैंने उसकी बात मानी और अगले ही पल मैं उस अनजान व्यक्ति के सामने था, जो एक आकर्षक चादर से पूरी तरह ढकी हुई थी और मेरी नज़रों से छिपी हुई थी, और उसका चेहरा मुझसे दूर दीवार की ओर मुड़ा हुआ था।

'महाराज,' मैंने कहा, 'आपका दास आ गया है, और वह आपके जैसी सुंदर महिला के लिए अपनी पूरी शक्ति से सब कुछ करेगा। बोलिए! आपके आदेश मेरे सिर और आँखों में हैं।'

'बायटो,' उसने धीमी, संकोची आवाज में कहा, 'मुझे तुमसे कुछ पूछना है।'

मैंने उसकी बात मानी और कालीन पर उससे उचित दूरी पर बैठ गया।

'मुझे डर है कि आप मुझे साहसी और निर्लज्ज समझेंगे, अजनबी,' उसने कहा, 'आपको अपने सामने, बल्कि अपने कमरे में भी आने देने के लिए; लेकिन अफसोस! मैं विधवा हूँ, और मुझे आपकी सुरक्षा की आवश्यकता है जो शायद आप मुझे दे सकें। आप किस दिशा में जा रहे हैं?'

मैंने उत्तर दिया, 'नागपुर की ओर; मेरा इरादा कल सुबह इस दयनीय जगह को छोड़ने का है, और मैं जबलपुर से आया हूँ।'

'मैं भी वहीं से आई हूँ,' उसने कहा, 'और मैं भी नागपुर जा रही हूँ। आह, मेरा भाग्य अच्छा है जिसने मुझे एक ऐसे व्यक्ति के पास भेजा है जो अकेली और बेसहारा विधवा की रक्षा करेगा!'

मैंने कहा, 'यह अजीब बात है, महोदया, कि हम पहले नहीं मिले, जबकि हम एक ही रास्ते से आए थे।'

'नहीं,' उसने उत्तर दिया, 'ऐसा नहीं है, क्योंकि मैं आपके पीछे थी। मैंने सुना कि आप मुझसे आगे हैं, और मैंने आपको पकड़ने के लिए तेज़ी से यात्रा की। अब हम मिल चुके हैं, और चूंकि मुझे अपनी शेष यात्रा अकेले ही पूरी करनी है, इसलिए मैं आपसे निवेदन करती हूं कि मुझे आपके दल में शामिल होने के लिए स्टेज प्रदान करें, जिसके बारे में मैंने सुना है कि वह एक बड़ा दल है, जिससे मैं सुरक्षित और चिंतामुक्त रहूंगी।'

'आपकी इच्छा पूरी हुई, महोदया,' मैंने कहा; 'और रास्ते के खतरों से बचाव के लिए आपका बेचारा दास जो भी व्यवस्था कर सकता है, वह सहर्ष प्रदान की जाएगी। मैं आपको जगाने के लिए सुबह जल्दी एक आदमी भेजूंगा, और वादा करता हूं कि मैं आपके बिना गांव नहीं छोड़ूंगा।'

उन्होंने मुझे बड़े ही सलीके से सलाम किया, और ऐसा करते हुए चादर मानो अनजाने में उनके चेहरे से थोड़ी हट गई, और दूर से मैंने जो चेहरे के भाव देखे थे, वे एक बार फिर मेरी मुग्ध दृष्टि के सामने प्रकट हो गए। साहब, यह सदमा इतना गहरा था कि मेरे शरीर की हर नस सिहर उठी; बस थोड़ी सी शालीनता ने मुझे रोका, वरना मैं उठकर उनके चरणों में गिर पड़ता; लेकिन जैसे ही उनके चेहरे पर शर्म की लाली छा गई, और उन्होंने पल भर के लिए मुझ पर टिकी अपनी नज़रें झट से हटा लीं, उन्होंने चादर वापस ओढ़ ली और फिर दीवार की ओर मुड़कर अपना सिर ज़मीन की ओर झुका लिया।

मुझे लगा कि यह पूरी तरह से आकस्मिक था, और उस समय की घटना ने मुझे आश्वस्त कर दिया कि वह वास्तव में वैसी ही थी जैसा वह खुद को दिखाती थी; और यह डरते हुए कि मेरी अधिक देर तक उपस्थिति अप्रिय या उचित नहीं होगी, मैंने उससे पूछा कि क्या उसके पास कोई और आदेश है और क्या वह मुझे जाने की अनुमति देगी।

'नहीं,' उसने कहा, 'मुझे और कोई मदद नहीं मांगनी है, सिवाय इसके कि मुझे उस व्यक्ति का नाम पता चल जाए जिसका मैं इस दयालुतापूर्ण कार्य के लिए ऋणी हूं।'

मैंने कहा, 'मेरा नाम अमीर अली है; मैं हिंदुस्तान का एक गरीब यहूदी हूँ।'

'आपकी धाराप्रवाह वाणी ने मुझे आश्वस्त कर दिया कि आप उसी महान वंश के हैं; मैं गलत नहीं हो सकता, —ऐसा कम ही सुनने को मिलता है। फ़ाज़िल! पैन और उत्त लेकर आओ।'

उन्होंने ऐसा ही किया, और विदाई का उपहार स्वीकार करने के बाद, उन्होंने मेरी छाती और दाढ़ी पर सुगंधित तेल लगाया, फिर मैं उठा और प्रणाम किया। उन्होंने भी मुझे प्रणाम किया और मुझसे फिर कहा कि मैं अपना वादा न भूलूँ। मैंने उन्हें आश्वासन दिया कि वे मुझ पर भरोसा कर सकती हैं, और मैं वहाँ से चला गया।

मैंने सोचा, वह जो कह रही है, वही होगी; मुझे पान और उतर पेश करना ही उसकी हैसियत साबित करता है; कोई आम आदमी, कोई वेश्या ऐसा सोच भी नहीं सकती। मुझे बस मोती और पीर खान की थोड़ी सी हंसी

सहनी पड़ेगी, जिसे मैं हंसकर टाल दूंगी; और यह बेचारी विधवा बिना यह जाने कि वह हत्यारों के हाथों में थी, सुरक्षित नागपुर पहुंच जाएगी। लेकिन उस रात मैंने उनमें से किसी से कुछ नहीं कहा। गांव में मुझे जो कुछ मिला, उसके बारे में और क्या मैंने किसी अज्ञात को खोज निकाला, इस बारे में उनके कई सवालों के जवाब में, मैं बस हंस पड़ी और कहा कि मुझे लगता है कि वह कोई नाचने वाली लड़की थी, क्योंकि मैं जानती थी कि उसका जिक्र करने से उनका ध्यान बुनीज के विचारों से हट जाएगा, क्योंकि हमारे पेशे के नियमों के अनुसार ऐसे लोगों को मारना मना है; और मेरी इस बात से वे संतुष्ट हो गए।

हालांकि, उन्हें उस समय बहुत आश्चर्य हुआ जब सुबह, हमारी प्रस्थान तिथि में सामान्य से अधिक देरी होने के बाद, मैं गांव के बाहर उस महिला के समूह में शामिल हो गया और उन्हें पता चला कि हम साथ-साथ यात्रा करने वाले हैं।

मैं

पीर खान और मोती के चुटकुलों और हास्य-व्यंग्यों से मैं अभिभूत हो गया, जिन्होंने कहा कि मैं एक धूर्त व्यक्ति हूँ जो इस तरह से उस महिला को अपने लिए हासिल करना चाहता है; और जब मैंने पुरजोर विरोध किया कि मुझे उसकी कोई परवाह नहीं है, जिससे वे और भी ज्यादा हंसने लगे, तो मैं आधा क्रोधित हो गया।

'देखो मेरे दोस्तों,' मैंने कहा, 'यह मामला एक तरह से मुझ पर थोपा गया है। वह महिला कौन है, यह मैं नहीं जानता। उसने मुझसे हमारे साथ चलने की अनुमति मांगी है, क्योंकि वह हमें यात्री समझती है, और मैंने उसे अनुमति दे दी है; और चाहे वह बूढ़ी हो या जवान, बदसूरत हो या सुंदर, मुझे कुछ भी पता नहीं है। हम बाद में उसके बारे में पता लगा सकते हैं, लेकिन वह जो भी हो, मैं उसे सुरक्षित यात्रा का वादा करता हूं, और वह बुनीज नहीं है। तुम्हें मेरा संकल्प याद है, और तुम देखोगे कि मैं उसे निभा सकता हूं।'

'नहीं,' मोती ने कहा, 'क्रोधित मत होइए; अगर किसी मित्र को कभी-कभार मजाक करने का अधिकार नहीं है, तो भगवान के नाम पर किसे है? और जहाँ तक हमारी बात है, हम आपके सेवक हैं और शपथ के अनुसार आपकी आज्ञा का पालन करने के लिए बाध्य हैं; इसलिए आप अपने साथ जितनी चाहें उतनी स्त्रियाँ रख सकते हैं, उनमें से एक भी बुनीज नहीं होगी।'

तो हम अपने रास्ते पर चलते रहे। कई बार मैं पालकी के पास जाकर अपने शानदार घोड़े को उसके बगल में उछल-कूद करने से खुद को रोक नहीं पाया। दरवाजे पहले तो कसकर बंद थे, लेकिन धीरे-धीरे एक दरवाजा खुल गया, और वही चमकती आंखें मुझे कई बार मुस्कुराती और सहमति भरी नजरों से देखती रहीं, हालांकि चेहरा अभी भी छिपा हुआ था।

हाय! साहब, उन आँखों ने मुझे बहुत कष्ट पहुँचाया, मैं उनका सामना नहीं कर सका।

दोपहर के करीब, जब हम अपनी थकान से आराम कर चुके थे, और मेरे आदमी अलग-अलग दिशाओं में फैल गए थे, शिविर में शायद ही कोई बचा था, तब दासी फिर से मेरे पास आई, और मैं उसके पीछे-पीछे उसकी मालकिन के पास गया।

हम काफी देर तक चुपचाप बैठे रहे, और वह महिला पहले की तरह ही नकाबपोश थी। मेरे मन में तमाम विरोधाभासी भावनाएँ थीं, फिर भी मैं स्वीकार करता हूँ, साहब, कि उनकी उपस्थिति में मैं अपना घर भूल गया था, और मेरी तीव्र इच्छा उस नकाबपोश महिला पर टिकी थी, जिसका चेहरा मैं अब तक नहीं जानता था। अंततः वह बोली, लेकिन उसने दास से बात की।

'जाओ,' उसने कहा, 'और बाहर, ऐसी जगह पर प्रतीक्षा करो जहाँ से कोई सुन न सके; मुझे इस सज्जन से कुछ ऐसा कहना है जो तुम्हारे कानों तक भी नहीं पहुंचना चाहिए, मेरे फ़ाज़िल।'

वह चली गई, और मैं दूसरे के साथ अकेला रह गया, और फिर से एक लंबा, और मेरे लिए दर्दनाक, सन्नाटा छा गया।

'मीर साहब,' उसने अंत में कहा, 'आप मेरे बारे में क्या सोचेंगे? आप उस स्त्री के बारे में क्या सोचेंगे जो इस प्रकार एक पुरुष और अजनबी की निगाहों के सामने खुद को उजागर करती है? लेकिन अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; जो हो चुका है, वह हो चुका है, और बीते हुए कल के बारे में सोचना व्यर्थ है। मैं एक नवाब की विधवा हूँ, जिनकी जागीर आगरा के पास है; कुछ समय पहले उनका निधन नागपुर में हो गया, जब वे हैदराबाद से लौट रहे थे, जहाँ वे अपने भाई से मिलने गए थे, और मैं अकेली रह गई, पर बेसहारा नहीं। उनके पास अपार धन था, और इस प्रकार मैं उनकी मृत्यु की खबर अपनी जागीर में भेजकर नागपुर में सुख-सुविधाओं से रह सकी। मेरे भेजे हुए दूत अंततः लौट आए, और मुझे यह सुखद समाचार लाए कि मेरे पति की संपत्ति पर मेरे अधिकार को चुनौती देने वाला कोई नहीं है; और मेरा अपना परिवार, जो उनके परिवार जितना ही कुलीन और शक्तिशाली है, ने जागीर पर कब्जा कर लिया है और उसे मेरे नाम पर अपने पास रखा है; और उन्होंने मुझे लिखा कि मैं जितनी जल्दी हो सके लौट आऊं और देश के सम्मानित पुरुषों में से एक नया पति चुन लूं, जिससे मुझे संतान हो और जो संपत्ति की वारिस बने। मैं तुरंत लौटने के लिए निकल पड़ी—आह! अमीर अली, बाकी की कहानी मैं कैसे बताऊं! शर्म से मेरी ज़बान मुंह से चिपक गई है और मेरे होंठ मेरे दिल की बात कहने से इनकार कर रहे हैं।

'बोलिए, महोदया,' मैंने कहा, 'अपनी आत्मा की कसम, बोलिए! मैं अधीर हो रहा हूँ, और आपने मेरी जिज्ञासा को इतनी प्रबलता से जगा दिया है कि अब यह शांत नहीं रह सकती।'

'तो मुझे बोलना ही होगा,' उसने कहा, 'भले ही ऐसा करने में मुझे शर्म से मरना पड़े। मैंने पिछले गाँव में सुना था कि आप आ गए हैं; मैं आपको इसलिए कह रही हूँ क्योंकि मेरी वफादार दासी, जो सब कुछ पता लगा लेती है, आपके आने के कुछ ही समय बाद आई और उसने मुझे बताया कि उसने अब तक के सबसे सुंदर घुड़सवार को देखा है। उसने आपके शाही अंदाज़, आपके व्यक्तित्व की सुंदरता, जिस सहजता से आप अपने तेजतर्रार घोड़े को संभालते थे, और सबसे बढ़कर आपके चेहरे के मधुर और मनमोहक भाव का वर्णन किया। इस वर्णन ने मुझे उत्तेजित कर दिया। मेरी शादी एक बूढ़े आदमी से हुई थी, जो मेरी सुरक्षा को लेकर बहुत ईर्ष्यालु था और मुझे अपनी बेचारी दासी के अलावा किसी और से मिलने नहीं देता था: लेकिन मैंने मर्दाना सुंदरता के बारे में सुना था और मैं उस समय का बेसब्री से इंतज़ार कर रही थी जब उसकी मृत्यु मुझे

इस घृणित गुलामी से मुक्त कर देगी। मैं अपने ऊपर हावी अनियंत्रित इच्छा और शर्म और स्त्रीत्व की भावना के बीच लंबे समय तक सोचती रही; और शायद बाद वाली भावना जीत जाती, लेकिन आप आए और उस झोपड़ी के सामने बैठ गए जिसमें मैं आराम कर रही थी; मेरी दासी ने मुझे बताया कि तुम वहाँ हो, और मैंने देखा।—आलिया! आलिया! एक बार जब मेरी नज़र तुम पर टिक गई, तो मैं उसे हटा नहीं पाई; और जिस छेद से मैं देख रही थी, उससे तुम्हारा पूरा शरीर दिखाई नहीं दे रहा था, इसलिए मैंने पर्दा थोड़ा सा खोला और तुम्हारे रूप को देखकर अपनी आत्मा को तृप्त किया। तुम चली गईं, और मैं निराशा में अपने कालीन पर गिर पड़ी। मेरी दासी ने आखिरकार मुझे होश में लाया, लेकिन मैं तुम्हारे बारे में बड़बड़ा रही थी; और मुझे डर था कि कहीं मैं बेहोश न हो जाऊँ, इसलिए वह गई और तुम्हें ले आई। जब तुम अंदर आईं, तो मेरा कितना मन हुआ कि मैं तुम्हारे चरणों में गिर जाऊँ! लेकिन शर्म हावी हो गई, और एक सामान्य बातचीत के बाद, हालाँकि मेरी आत्मा आग से जल रही थी और मेरा जिगर पानी की तरह ठंडा हो गया था, मैंने तुम्हें जाने दिया। मैंने अपने लोगों से कहा कि मुझे नागपुर लौटना होगा, क्योंकि मैं गिरवी रखे कुछ कीमती गहने छुड़ाना भूल गई थी; और उन्होंने मेरी बात मान ली।—'अमीर अली!' वह अचानक अपना घूंघट हटाकर मेरे चरणों में गिर पड़ी और अपना सिर मेरी गोद में रखते हुए चिल्लाई, 'अमीर अली!' ये मेरी शर्मिंदगी की कहानी है—मैं तुमसे प्यार करती हूँ; आलिया ही जानती है कि मेरा दिल तुम्हारे लिए कितना तड़पता है! मैं सदा तुम्हारी दासी रहूँगी; तुम जहाँ भी जाओगी, मैं तुम्हारे पीछे-पीछे चलूँगी; तुम जो भी हो, जैसी भी हो, मैं तुम्हारी हूँ, और सिर्फ तुम्हारी; लेकिन तुम्हारे बिना मैं मर जाऊँगी। हाय! तुम मेरे पास क्यों आई?'

अध्याय XXX

लेकिन उसे मरना ही होगा, वरना वह और भी पुरुषों को धोखा देगी।

ओथेलो

और अब मेरे सारे संकल्प कहाँ गए? आलिया की कसम, साहब, मैं सब कुछ भूल गया था—घर, पत्नी, बच्चे—मैंने उनके बारे में सोचा तक नहीं, बल्कि उसकी आँखों से प्रेम, उस बेकाबू, जोशीले, जलते हुए प्रेम को गहराई से पी लिया, और उसे ऐसे सहलाया जैसे वह मेरी अपनी हो। हम वहाँ बैठे रहे, और यद्यपि मेरे मन में अपराधबोध था, और वह मुझे अपने बार-बार दोहराए गए वादों के प्रति बेवफाई का दोषी ठहरा रहा था, मैं खुद को उससे अलग नहीं कर सका, और बदले में उसके स्पर्श को सहा, हालाँकि वे अक्सर मेरे दिल पर तेज चाकू की तरह चुभते थे। इस तरह घंटे बीतते गए—मैंने उनके बारे में सोचा तक नहीं; वह मेरे चरणों में बैठी थी, और मेरे हाथ उसके लंबे रेशमी बालों में उलझे हुए थे, और मैं उसके ऐसे सुंदर चेहरे को निहार रहा था, जिसकी कल्पना मैंने अपने सपनों में भी नहीं की थी। ज़ोरा सुंदर थी, अज़ीमा उससे भी अधिक सुंदर थी, लेकिन शूरफुन उन दोनों से कहीं अधिक सुंदर थी, जितनी सुंदरता मैंने अपनी जाति की किसी भी स्त्री में देखी थी। वह चाहती थी कि मैं उसके साथ रहूँ: वह मोहक स्त्री, चाहती थी कि मुझे उसी क्षण मेरे साथियों से अलग कर दे और मुझे अपने साथ ले जाए, जहाँ उसे परवाह न हो, ताकि मैं उसके साथ रहूँ और वह मेरे साथ। उसने कहा कि उसके पास धन की कोई कमी नहीं है, और हम किसी अज्ञात स्थान पर जा सकते हैं, जहाँ हम वर्षों तक सुखमय जीवन व्यतीत करेंगे, और जहाँ वह अपने परिवार से संपर्क करके समय-समय पर इतना धन जुटा लेगी जिससे हम सुख-सुविधाओं से रह सकें।

'अमीर अली,' उसने कहा, 'तुम जवान हो, तुम अनजान हो, तुम्हें मामूली पैसों से शोहरत हासिल करने के लिए संघर्ष करना होगा, और इसके लिए क्या तुम अपनी कीमती जान जोखिम में डालोगे, जबकि मैं तुम्हें अपना सब कुछ दे रही हूँ और कसम खा रही हूँ कि मैं तुम्हारी दासी हूँ? आह, तुम ऐसा नहीं करोगे, तुम मुझे अब निराशा में मरने और एकतरफा प्यार से मरने के लिए नहीं छोड़ सकते! बोलो, मेरी आत्मा, क्या तुम मुझे नहीं छोड़ोगे?'

हे भगवान, मैं कितना नीच और झूठा था कि मैंने उसकी इच्छाओं का पालन करने की शपथ ली। साहब, यह एक भयंकर प्रलोभन था, और इसने मुझे पराजित कर दिया।

अंततः मैंने उससे अपना हाथ छुड़ाया, लेकिन इससे पहले मैंने उसकी कसम खाई कि मैं अगले दिन वापस आऊंगा, जब हम अधिक शांत होंगे और भविष्य के लिए अपनी योजनाएँ बना सकेंगे।

मैं अपने छोटे से तंबू में लौटा और वहाँ, आत्मा की पीड़ा में, ज़मीन पर लोटने लगा। मैं बड़बड़ाने लगा, मैंने खाना छोड़ दिया और मानो होश खो बैठा था; मैंने पीर खान से बदतमीज़ी से बात की, जिसे मेरे सेवक ने मुझे सांत्वना देने के लिए बुलाया था; और मैं लगभग अपनी जान लेने ही वाला था, क्योंकि भले ही मेरे सामने एक उज्ज्वल भविष्य था, लेकिन उसके बाद मेरा जीवन केवल दुख और अपराधबोध से भरा ही रह सकता था।

लेकिन मेरा क्रोध चरम पर पहुँच गया; और जैसे एक गरजता बादल, जो आंतरिक उथल-पुथल के बाद, अपनी गहरी गर्जना के बाद और अपने भीतर से बिजली गिराने के बाद, धीरे-धीरे अपने अंदर जमा पानी की बाढ़ धरती को शांत और तरोताज़ा करने के लिए बहाता है, वैसे ही मेरी आँखों से आँसू बहने लगे और उन्होंने मुझे शांत किया। मैंने सोचा, अब मैं सलाह माँग सकता हूँ और ले सकता हूँ, और पीर खान, जो मुझसे बहुत स्नेह रखता है, मुझे वैसे ही सलाह देगा जैसे वह अपने भाई को देता है।

मैंने उसे बुलवाया और अपनी बदतमीज़ी के लिए माफ़ी माँगते हुए कहा कि पिछले कुछ घंटों की घटनाओं के बारे में जो मैं बताऊँगा, उससे उसे इसका कारण पता चल जाएगा। मैंने उसे सब कुछ बताया और उसके जवाब का इंतज़ार करने लगा। मेरे मन से एक बोझ हल्का हो गया और मुझे बहुत अच्छा लगा।

बोलने से पहले उसने काफी देर तक सोचा; अंत में उसने कहा,—

'मीर साहब, यह वाकई एक मुश्किल मामला है, और मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या सलाह दूं; कल उसके पास जाइए; एक मर्द बनिए, और इस बचकाने जुनून के आगे मत झुकिए, जो आपको शोभा नहीं देता; उसे समझाने की कोशिश कीजिए कि आप उसकी इच्छा पूरी नहीं कर सकते; उससे प्यार से, लेकिन दृढ़ता से, उसके घर, उसके रिश्तेदारों और उस अपराधबोध के बारे में बात कीजिए जो उसके प्रस्तावित रिश्ते से आप दोनों पर लगेगा। उसे बताइए कि आपकी एक पत्नी और दो बच्चे हैं, और अगर वह सच्ची स्त्री है तो वह ईर्ष्या से भर उठेगी और आपसे झगड़ा करेगी; तब आप भी चिढ़ जाइए और उसे अपने रास्ते जाने दीजिए, और किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढिए जो इतना संकोची न हो और उसके अंध जुनून का फायदा उठा सके। और अगर यह सब भी विफल हो जाए, अगर आपके शब्द उसके दिमाग से ये मूर्खतापूर्ण विचार न निकालें, तो हमारे पास बस एक ही रास्ता है कि हम किसी अनजान दिशा में लंबी यात्रा करें और उससे तुरंत छुटकारा पा लें।'

मुझे जंगलों के रास्ते पता हैं, और चाहे वे कितने भी कठिन क्यों न हों, हम आसानी से बरार पहुँच सकते हैं, जहाँ उसे हमारे बारे में फिर कभी पता नहीं चलेगा।'

मैंने उनकी सलाह के लिए उन्हें हार्दिक धन्यवाद दिया; और उनकी सलाह का वह हिस्सा जो अज़ीमा और मेरे बच्चों से संबंधित था, मेरे दिल को झकझोर गया। पैगंबर की कृपा से मैं अभी भी पवित्र था, और उनकी सहायता से मैं पवित्र ही रहना चाहता था। मैंने निश्चय किया कि मैं उससे अपने पुराने संबंधों को इतनी दृढ़ता से जोड़ूंगा, और अपनी पत्नी के प्रति अपने प्रेम को इस प्रकार प्रदर्शित करूंगा कि वह मुझे तुरंत अस्वीकार कर दे।

इन दृढ़ संकल्पों से परिपूर्ण होकर मैंने एक बार फिर उसके दास द्वारा भेजे गए उसके बुलावे का पालन किया और उस लड़की के पीछे-पीछे चल दिया। बारह मील की लंबी यात्रा के बाद अब दिन ढल चुका था। साहब, मुझे आपको उसके मेरे प्रति प्रेम के बारे में दोबारा बताने की आवश्यकता नहीं है, जो अब वह बिना किसी रोक-टोक के प्रकट कर रही थी। उसने सचमुच सारी शर्म त्याग दी थी और मेरे द्वारा उसके परिवार से हमारे संबंध के परिणामों के बारे में कही गई किसी भी बात को सुनने को तैयार नहीं थी। अब मेरे पास केवल एक ही उपाय बचा था, और जैसे कोई व्यक्ति अपनी जान के खतरे में बारूदी सुरंग का अगला भाग चला देता है, वैसे

ही मैंने जल्दबाजी में और शायद अस्पष्ट रूप से अपनी पत्नी और बच्चों का जिक्र किया। पीर खान की अपेक्षा के अनुरूप, इसका प्रभाव तुरंत हुआ। वह मेरे चरणों में बैठी मेरी आपत्तियों को सुन रही थी और उनसे निपटने के लिए मुझसे मज़ाकिया ढंग से तर्क कर रही थी; लेकिन इन शब्दों पर वह अचानक खड़ी हो गई और अपने भव्य शरीर को पूरी तरह सीधा कर लिया, उसकी आँखें चमक उठीं और उसने अपने लहराते बालों को माथे से पीछे किया; उसके माथे और गर्दन की नसें फूल गई थीं, और उसे देखना भयावह था। मैं स्वीकार करता हूँ कि उसकी तिरस्कार भरी निगाहों के सामने मैं सहम गया था।

'अरे!' वह अंत में चिल्लाई, 'अरे, नीच और विश्वासघाती, कहो, क्या मैंने तुम्हें सही सुना? फिर से यह कहने की हिम्मत कैसे हुई कि तुम्हारी पत्नी और बच्चे हैं! तूने कौन सी गंदगी खाई है?'

यह मेरा समय था, और मेरे अच्छे संकल्प मेरे काम आए; मैं उठी, और उसके सामने उसी तरह के गर्व और अडिग भाव से खड़ी हो गई जैसे वह खुद थी।

'जी हां, शूरफुन,' मैंने कहा, 'मैंने सच कहा है; तुम्हारे जैसी खूबसूरत स्त्री मुझ पर विश्वास करती है, और मैं उसके प्रति वफादार रहूंगा; मैंने तुमसे बहुत देर तक तर्क किया, और अगर तुम बहक न जातीं और एक व्यर्थ और अचानक आवेश में आकर अपनी भावनाओं को ठेस न पहुंचातीं, तो तुम मेरी बातें सुन लेतीं और अपने परिवार और अब तक बेदाग रहे सम्मान की खातिर उन्हें मान लेतीं। इस मामले में मेरी दुर्भाग्यपूर्ण भूमिका के लिए, आलिया मुझे क्षमा करे! हे महिला, तुम्हारी मदहोश कर देने वाली सुंदरता ने ही मुझे गलती करने पर मजबूर किया; लेकिन उसने मेरे दिल को मजबूत किया है, और मैं तुमसे फिर से विनती करता हूं कि मित्रता के शब्दों को सुनो और फिर से पहले जैसी हो जाओ।'

साहब, मैं आपको कैसे बताऊँ कि वह कितनी हताश और कितनी कड़वी बातें कह रही थी, जब उसने मेरे छल के लिए मुझे फटकारा! मैं उन सब बातों का हकदार था, और मैंने बदले में एक शब्द भी नहीं कहा। मैं उसके पास नहीं जा सका, और न ही जाने की हिम्मत कर सका, कहीं ऐसा न हो कि मेरा दिल फिर से उसकी मीठी बातों में आ जाए, क्योंकि मुझे लगता था कि एक मीठा शब्द या काम उसे फिर से उसी स्थिति में ला देगा और वह अतीत को भुला देगी; और उसे ज़मीन पर बैठे हुए, कराहते हुए और इधर-उधर हिलते हुए देखना बहुत दयनीय था, वह बीच-बीच में अपने बाल नोच रही थी और अपनी छाती पीट रही थी, अपने मन की पीड़ा में।

अंत में उसने कहा, 'मुझे छोड़ दो! आह, अमीर आह, तुमने उस दिल को तोड़ दिया है जो तुम्हें हमेशा प्यार कर सकता था। मैं शिकायत नहीं करती: यह आलिया की इच्छा है कि जिस एकमात्र पुरुष से मैं प्यार कर सकती थी और जिसका सम्मान कर सकती थी, वह मुझे धोखा दे, और मैं इसे स्वीकार करती हूँ। शूरफुन अभी इतनी नीच नहीं हुई है कि वह किसी भी पुरुष के दिल में दूसरा स्थान स्वीकार कर ले, चाहे वह दिल्ली का सम्राट ही क्यों न हो। जाओ! तुम्हें देखना मेरी आत्मा को पीड़ा देता है; और आलिया हम दोनों को क्षमा करे!'

मैंने उसे वहीं छोड़ दिया। मैं जल्दी से पीर खान के पास गया और उसे सारी बात बताई, और वह बहुत प्रसन्न हुआ।

'अब,' उसने कहा, 'मामले को पक्का करने के लिए, आइए हम अपने कदम पीछे हटाएँ; इसमें कोई जोखिम नहीं है, क्योंकि हम कहीं भी ठहर सकते हैं, और हमें उस गाँव में जाने की ज़रूरत नहीं है जहाँ हम पहले रुके थे; हमें नागपुर में लूट की कोई उम्मीद नहीं है, और यदि आप चाहें तो हम, जैसा कि मैंने पहले कहा था, बरार में प्रवेश कर सकते हैं और खानदेश के रास्ते लौट सकते हैं, जो हमारी मूल योजना थी।'

मैंने कहा, 'मैं सहमत हूँ; इस महिला से हर हाल में बचना चाहिए। अपनी प्रतिष्ठा बचाने के लिए उसे अपने लोगों के साथ नागपुर जाना ही होगा, और हम आपकी सलाह मानकर उससे पूरी तरह से बचेंगे।'

इसलिए अगली सुबह, जिस रास्ते से हम गए थे, उस पर आगे बढ़ने के बजाय, हम वापस मुड़ गए और कुछ घंटों की यात्रा के बाद एक छोटे से गाँव में रुके, जो हमारे छोड़े हुए गाँव से कुछ ही दूरी पर था। लेकिन उस औरत के प्यार और उग्र जुनून का मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था। दिन ढलने से पहले ही, हमने उसकी पालकी को उसके आदमियों के साथ उसी रास्ते से गाँव की ओर बढ़ते देखा, जिस रास्ते से हम आए थे। अब क्या किया जाए? मेरा मन तो तुरंत उन घने जंगलों में भागने का कर रहा था, जिनसे हम घिरे हुए थे और जहाँ वह जल्द ही हमारा पता पूरी तरह से मिटा देगी। लेकिन पीर खान और मोती मेरी बात मानने को तैयार नहीं थे। उन्होंने कहा, 'यह कायरता होगी; किसी स्त्री के आगे इस तरह भागने का कोई कारण नहीं है; और हम उसके लिए जंगली जानवरों के खतरे और जंगल की अस्वस्थता को क्यों मोल लें? और,' मोती ने आगे कहा, 'अगर वह अब हमारा पीछा करती है, तो निश्चित रूप से यह तुम्हारे कारण नहीं होगा, बल्कि इसलिए होगा क्योंकि वह अब जितनी जल्दी हो सके अपने घर जाना चाहती है।'

मैंने कहा, 'ऐसा हो सकता है; उसकी योजनाएँ चाहे जो भी हों, उनसे मेरे निर्णयों पर कोई असर नहीं पड़ेगा।'

फिर भी मेरे मन में आशंका थी कि वह फिर से हमारा पीछा करेगी, और कुछ ही समय में मेरा संदेह सही साबित हुआ। दासी दूध बेचने वाली के वेश में चुपके से मेरे तम्बू में आई, और मैं उसके पीछे-पीछे गया, क्योंकि मुझे नहीं पता था कि उसकी मालकिन ने मुझे क्यों बुलाया था, और हमारी पिछली मुलाकात के बाद अब वह मुझे क्यों ढूँढ रही थी।

मैं उसके पास पहुँचा, और फिर हम अकेले रह गए। मैंने उसकी मीठी बातों का सामना करने के लिए खुद को तैयार किया और ठान लिया कि मैं उनका तिरस्कार करूँगा, ताकि वह मुझसे फिर झगड़ा करे और मुझे हमेशा के लिए छोड़ दे। साहब, हमारे बीच जो कुछ हुआ, वह मैं आपको बता नहीं सकता; एक पल वह प्रेम से भरी हुई थी, मेरी बाहों में गिरने को बेताब थी और मुझसे दया की भीख माँग रही थी, क्योंकि उसे लग रहा था कि उसकी प्रतिष्ठा धूमिल हो गई है, और उसके शब्द इतने कठोर थे कि पत्थर का दिल भी पिघल जाता; दूसरे पल वह मेरी बेवफाई के लिए मुझे बुरी तरह कोस रही थी और मुझे अपनी नज़रों से दूर जाने को कह रही थी; फिर भी, हर बार जब मैं जाने के लिए मुड़ता, वह मुझे रोकती और फिर से मुझसे विनती करती कि मैं उसकी बात सुनूँ और उसके प्रस्ताव मान लूँ।

अंततः मैं उसे और सहन नहीं कर सका। उसकी ज़िद से मैं चिढ़ गया था और अपने ही अनिर्णायक व्यवहार से परेशान था। मैंने उसे विदा किया और उस झोपड़ी से निकलने लगा जहाँ वह दिन भर रुकी थी, तभी उसने मुझे वापस आने के लिए चीख कर पुकारा। मैं लौट आया।

'शूरफुन,' मैंने कहा, 'यह मूर्खता है, बच्चों जैसा व्यवहार है; हम एक-दूसरे को क्यों सताएं? तुमने मेरा निश्चय सुन लिया है; और अगर तुम मुझे दिल्ली का सिंहासन दे दो, तो मैं तुम्हारे साथ उसे साझा कर सकती हूँ, लेकिन मेरा दिल तो उसी का होगा जो अभी उस पर काबिज है, और तुम अपने और मेरे लिए पीड़ा का कारण बनोगी। ईर्ष्या अभी भी तुम्हारे दिल में बसी है, और जब तुम उस व्यक्ति के साथ रहोगी जिससे तुम अभी भी नफरत करती हो, और जिसे तुम मुझसे अलग नहीं कर सकती, तो यह भावना और भी भयानक हो जाएगी?'

'मुझे तुम्हारी बातों की परवाह नहीं,' उसने कहा; 'मुझे परिणामों की भी परवाह नहीं; मैंने अपना जीवन और अपनी प्रतिष्ठा इस पर दांव पर लगा दी है, और मुझे अस्वीकार करना तुम्हारे लिए खतरनाक साबित होगा! जहाँ तक तुम्हारी पत्नी की बात है, मैं उससे नफरत नहीं करती। क्या हमारा कानून तुम्हें चार पत्नियाँ रखने की अनुमति नहीं देता? क्या पवित्र कुरान में ऐसा नहीं लिखा है? तुम इसे नकार नहीं सकते। मैं, जो एक स्त्री हूँ, यह जानती हूँ। मैं अज़ीमा को बहन की तरह प्यार करती हूँ, और तुम्हारे बच्चों को तुम्हारी खातिर; और क्या तुम उनके लिए धन और एक गौरवशाली भविष्य को ठुकरा सकते हो? अरे पुरुष, क्या तुम अक्ल से खाली हो गए हो? देखो, मैं तुमसे शांत भाव से बात कर रही हूँ, और तुमसे ऐसे तर्क कर रही हूँ जैसे मैं तुम्हारी बहन होती।'

मैंने कहा, 'काश आलिया मेरी बहन होती; मैं तुम्हें बहन की तरह प्यार करती, पर इस अपवित्र और शर्मनाक रिश्ते को कभी स्वीकार नहीं कर सकती। हाँ, शूरफुन, शर्मनाक! चाहे तुम इसे मीठी-मीठी बातों से छुपा लो, फिर भी यह शर्मनाक है। क्या तुम एक पल के लिए भी यह सपना देखती हो कि तुम्हारा स्वाभिमानी परिवार तुम्हारे पति के रूप में, तुम्हारी संपत्ति और धन के हिस्सेदार के रूप में, एक ऐसे व्यक्ति को स्वीकार करेगा जिसे वे नहीं जानते, जिसके पास कोई पारिवारिक सम्मान नहीं है, कोई सांसारिक प्रतिष्ठा नहीं है, और जिससे तुम्हारी मुलाकात रास्ते में हुई है? मैं तुमसे कहती हूँ, वे ऐसा नहीं करेंगे। इसलिए, मैं तुमसे विनती करती हूँ, अपने घर जाओ, और आने वाले वर्षों में मैं अपनी अज़ीमा को तुमसे मिलने भेजूँगी, और वह उस नेक महिला के लिए दुआ करेगी जिसने उसके पति को उसके पास सुरक्षित रखा।'

वह कुछ देर तक चुपचाप बैठी रही; लेकिन उसके भीतर की आग बुझी नहीं; बल्कि और भी तीव्र होकर भड़क उठी, जबकि मैंने व्यर्थ ही सोचा था कि मेरे संयमित शब्दों ने उसे हमेशा के लिए बुझा दिया है। उसने फिर मुझे जाने को कहा, लेकिन इस बार रूखेपन से, और मैं उसे छोड़कर चला गया।

मुझे अपने तम्बू में आए अभी एक घंटा भी नहीं बीता था कि वह दास फिर मेरे पास आ गया।—लेकिन शायद, साहब, आप मुगलों के साथ मेरी हर मुलाकात का विस्तार से वर्णन करने से ऊब गए हैं?

नहीं, मैंने कहा, अमीर अली: मुझे लगता है कि इसमें आपका कोई उद्देश्य है, इसलिए आगे बढ़िए।

फिर, ठग ने बात जारी रखते हुए कहा, गुलाम मेरे पास आया और मैं अकेला था।

‘आलिया के नाम पर,’ उसने कहा, ‘मीर साहब, मेरी बेचारी मालकिन के लिए कुछ कीजिए! जब से आप उसे छोड़कर गए हैं, वह एक तरह से सुन्न पड़ी है और मुश्किल से ही कुछ बोलती है। अभी उसने मुझे अपने लिए अफीम लाने को कहा; और जब मैंने मना कर दिया और उसके पैरों में गिरकर उससे अपने वचन वापस लेने की विनती की, तो उसने मुझसे गुस्से में कहा कि अगर मैं नहीं गया, तो वह खुद चली जाएगी। इसलिए मैं अफीम खरीद लाया; लेकिन अफसोस! मुझे इसके घातक परिणाम पता हैं: और केवल आप ही उसे बचा सकते हैं। तो जल्दी आइए और उससे प्यार से बात कीजिए; मैंने सब कुछ सुना है और आपने एक ईमानदार आदमी की तरह व्यवहार किया है; लेकिन चूंकि आप उसे आपको भुलाने और अपने इरादे छोड़ने के लिए राजी नहीं कर सकते, तो कम से कम अभी के लिए उसकी भावनाओं को समझिए और उसके साथ चलने के लिए राजी हो जाइए, इस वादे पर कि वह रास्ते में आपसे मिलने नहीं आएगी; और कहिए कि जब आप उसके घर पहुंचेंगे तो आपकी शादी विधिवत संपन्न हो जाएगी। अरे, उसके लिए ऐसा कीजिए!’ आपने कहा था कि आप उसे बहन की तरह प्यार कर सकते हैं, और यह एक भाई का आचरण होगा।'

'ठीक है,' मैंने कहा, 'चूंकि मामला इस मुकाम पर आ गया है कि उसका जीवन या मृत्यु मेरे हाथों में है, इसलिए मैं सहमत हूं;' और मैं उठा और उसके साथ चला गया।

ओह, उस अभागी लड़की ने कितने हर्ष से मेरा स्वागत किया! वह देर तक मेरे सीने से लिपटी रही, मुझे अपना रक्षक बताकर आशीर्वाद देती रही, और अपनी दासी को चूमते हुए मुझे अपनी कही बातें बताईं, और यह भी बताया कि मैंने उसकी इच्छा मान ली थी। मैंने पुकार कर कहा, 'तुम्हारी अनमोल जान बचाने के लिए ही मैं अपने और तुम्हारे दोस्तों के उपहास और ताने सुन रहा हूँ: सोचो मैं उनके प्यार को खोने का कितना बड़ा बलिदान दे रहा हूँ, और तुम रास्ते में सावधानी और शालीनता से पेश आओगी; हमें मिलने की ज़रूरत नहीं है—नहीं, हमें मिलना ही नहीं चाहिए, प्रलोभन हम दोनों के लिए बहुत प्रबल होगा; लेकिन मैं तुम्हारी जान और आँखों की कसम खाता हूँ कि मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा, और तुम हमारे साथ यात्रा करोगी।'

दासी बाहर चली गई थी, और वह मेरी ओर बढ़ी। उसने कहा, 'सावधान रहो, मुझे धोखा देने की कोशिश मत करो, क्योंकि मैं तुम्हारा रहस्य जानती हूँ, और यदि तुम बेवफा हुए तो मैं इसे सबके सामने उजागर कर दूँगी; तुम्हारा जीवन मेरे हाथों में है, और तुम यह जानते हो।'

'क्या रहस्य?' मैंने घबराकर पूछा। 'आपका क्या मतलब है?'

'मैं जानती हूँ कि तुम एक गुंडे हो,' उसने धीमी और दृढ़ आवाज़ में कहा; 'मेरे दास ने तुम्हें पहचान लिया है, और हज़ारों बातें मेरे मन में इस बात को पुख्ता करती हैं कि तुम एक गुंडे हो—तुम्हारे आदमी, तुम्हारा डेरा डालने का तरीका, मेरे दास ने तुम्हारे आदमियों को जो रस्में निभाते देखा है, और जिस आज़ादी से तुम अपनी मर्ज़ी से आते-जाते हो। ये सब निर्णायक सबूत हैं, और मैं तुम्हें चेतावनी देती हूँ! क्योंकि तुम जो भी कहोगे, मैं अपना विश्वास नहीं बदल पाऊँगी; तुम्हारे पास अभी भी उन लोगों की संपत्ति है जिन्हें तुमने अपने शिविर में मारा है—तुम इसे नकार नहीं सकते, तुम्हारी नज़रें मेरे शब्दों की पुष्टि करती हैं।'

मैंने मन ही मन उस दासी की ताक-झांक करने की प्रवृत्ति पर गुस्सा किया और मुझे डर था कि उसने हमारे किसी आदमी के ज़रिए हमें खोज लिया होगा, जिससे मैंने उसे बात करते देखा था, और मैंने उसे खत्म करने का निश्चय किया। लेकिन अब मुझे अपनी ही टक्कर का कोई मिल गया था, और हालांकि एक पल के लिए मैं शर्मिंदा हुआ, मैंने उसे जवाब दिया:

'तो फिर, शूरफुन, चूंकि तुमने हमें खोज लिया है, मेरे पास कोई विकल्प नहीं है, हमें एकजुट होना ही होगा, मुझे अपनी और अपने आदमियों की जान बचाने के लिए, तुम्हें अपनी जान बचाने के लिए। यह एक भयानक बंधन है जो हमें बांधता है, लेकिन इसे तोड़ा नहीं जा सकता।'

'मुझे भी यही लगा था,' उसने कहा; 'कितनी मूर्खता की मैंने कि पहले ही इस बात पर ज़ोर नहीं दिया! मैं इस पीड़ा से बच सकती थी। अब जाओ; मैं रोज़ तुम्हारे बारे में सुनती रहूँगी, और हो सकता है कि हमें छुपकर बात करने का मौका मिल जाए। अब मुझे तुम पर पूरा भरोसा है, और मेरा मन शांत है।'

मैंने उसे वहीं छोड़ दिया, लेकिन मेरे मन में विचारों का बवंडर चल रहा था; उसने हमें पहचान लिया था, और हमारे पेशे के नियमों के अनुसार मैं इसे अपने साथियों से छिपा नहीं सकता था। आलिया! आलिया! मुझे उन्हें जो बात बतानी है, उसका क्या अंजाम होगा! हाय, मैं सोचकर ही डर रहा था—पर यह करना ही पड़ेगा।

मैंने बहुत देर तक इस बात पर विचार किया कि क्या मुझे अपने साथियों के सामने सच्चाई उजागर करनी चाहिए, और मैं ऐसा करना नहीं चाहता था; लेकिन हम जिस खतरे में थे वह इतना गंभीर था, और मेरे पचास बहादुर साथियों का जीवन पूरी तरह से एक महिला के भरोसे था, इसलिए मैं अपने पेशे के सख्त नियमों को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता था। मैं जानता था कि इसका केवल एक ही विकल्प था; लेकिन यह उसका भाग्य था, और इसे न तो वह और न ही मैं टाल सकते थे।

जैसा कि मुझे उम्मीद थी, वह घातक फरमान हम सबके बीच फैल गया। शूरफन के पास जो जानकारी थी, उससे मेरे आदमी चकित और भयभीत हो गए, और थोड़ी सी बातचीत के बाद ही उसके भाग्य का फैसला कर लिया गया। साहब, आप इसके लिए मुझे बुरा समझेंगे, लेकिन क्या किया जा सकता था? हम उसे छोड़ नहीं सकते थे, वह ग्रामीणों को सतर्क कर देती, और वे हमारा पीछा करते। सच है, वे वहाँ हमारा कुछ खास नहीं कर पाते; लेकिन वे जंगलों में हमारा पीछा करते, और अंत में मौका देखकर हमें पकड़ लेते। हमारी अगली चिंता उस व्यक्ति का पता लगाने की थी जिससे उसने यह जानकारी प्राप्त की थी, और मैंने उस व्यक्ति का नाम बताया जिससे मैंने उस दास को बात करते देखा था। साहब, जैसे ही मैंने ऐसा किया, उसके चेहरे पर अपराधबोध के भाव स्पष्ट थे। वह एक युवक था, जिसे हममें से कोई भी अच्छी तरह से नहीं जानता था, और वह लुघाई जनजाति का था। वह पीर खान के पिछले अभियान में उनके साथ गया था, और उसका व्यवहार इतना अच्छा था कि पीर खान ने उसे हमारे साथ आने की अनुमति दे दी थी; लेकिन इस कृत्य से उसने सब कुछ खो दिया था, और यह बिल्कुल स्पष्ट था कि वह उस षड्यंत्रकारी और धूर्त गुलाम के छल में फंस गया था।

उसके बदले हुए रूप को देखकर मैंने तुरंत उस पर विश्वासघात का आरोप लगाया; और मेरे आरोप की गूंज बैंड के सदस्यों की आवाजों में सुनाई दी।

'उसे मरना ही होगा!' सबने एक साथ चिल्लाकर कहा; 'हम इस जानकारी के साथ अपना काम जारी नहीं रख सकते कि हमारे बीच एक भी गद्दार व्यक्ति है; और यह हमारे संगठन का नियम भी है। गद्दार को भला कौन बख्शता है?'

मैंने उससे कहा, 'अहंकारी, तूने ऐसा क्यों किया? तूने अपनी शपथ और खाए हुए नमक के प्रति विश्वासघात क्यों किया? क्या तुझे दंड का ज्ञान नहीं था? क्या तूने विश्वासघात के सैकड़ों उदाहरण नहीं सुने, और क्या कभी किसी को क्षमा किया गया है? अभागा! तू अपने बचाव में कुछ नहीं कह रहा, और तुझे ही सजा मिलनी चाहिए। धिक्कार है कि एक तुच्छ दास के छल ने तुझे अपने कर्तव्य से इतना विमुख कर दिया, और हम सबको खतरे में डाल दिया!'

जेमादार, उठते हुए बोला, 'मैंने पाप किया है, और मेरा समय आ गया है। मैं दया की भीख नहीं मांगता, क्योंकि मैं भली-भांति जानता हूँ कि मुझ पर दया नहीं दिखाई जाएगी; मुझे अपने ही लोगों के हाथों मरने दो, मैं संतुष्ट हूँ; और यदि मेरा भाग्य उनके लिए एक चेतावनी हो, तो भी मैं प्रसन्न हूँ। उस दासी से मिलने तक मैं अपने सम्मान में पवित्र था; उसने मुझे बताया कि तुम उसकी मालकिन से विवाह करने वाले हो, और तुमने उसे अपने बारे में बता दिया है। मैंने इसे सच समझा, और मैंने उससे अपने गिरोह के रहस्यों के बारे में बात की; मैंने उसे अपने कारनामों के बारे में बताया, और उसने उचित अवसर मिलने पर मेरी होने की सहमति दे दी। मूर्ख, मैं धोखे में आ गया; फिर भी मैं इसे अपने अपराध के लिए कोई प्रायश्चित नहीं मानता। इसलिए मुझे गोरदुत मार डाले; उसका हाथ कुशल है, और वह अपने कर्तव्य में विफल नहीं होगा।'

हमारे लुघाई समुदाय के मुखिया गोरदुत आगे बढ़े। उन्होंने उस दुर्भाग्यशाली व्यक्ति से कहा, 'मुझे अपनी मृत्यु के लिए क्षमा करें; मुझे आपसे कोई शत्रुता नहीं है, लेकिन यह मेरा कर्तव्य है और मुझे इसे निभाना ही होगा।'

'मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ,' उसने उत्तर दिया। 'अपना हाथ दृढ़ रखो; मैं कोई प्रतिरोध या संघर्ष नहीं करूँगा; मेरी मृत्यु की पीड़ा क्षणिक हो।'

गोरदुत ने मुझसे संकेत मांगा, मैंने संकेत दिया, और पल भर में उसके शिकार ने मृत्यु के द्वारा अपने अपराध का प्रायश्चित कर लिया; वह निष्क्रिय रूप से तड़पता रहा, और गोरदुत का हाथ जरा भी नहीं कांप उठा। शव को हमारे बीच से ले जाकर दफना दिया गया; और इसके बाद हमारे बीच कोई विश्वासघात नहीं हुआ, और मुझे कभी दूसरा ऐसा मामला नहीं मिला, सिवाय एक के, और वह सफल रहा; आप इसके बारे में आगे सुनेंगे। अब बस गिरोह के अलग-अलग सदस्यों को आने वाली तबाही में उनकी अलग-अलग भूमिकाएँ सौंपना बाकी था; और यह काम पूरा होने पर, मुझे लगा कि मैंने एक अच्छे गुंडे की तरह काम किया है, और दिन भर की घटनाओं के दौरान मुझ पर किसी अनुचित दया का कोई प्रभाव नहीं पड़ा था।

साहब, यह कितनी अजीब बात थी कि शूरफन, जो हमें जानती थी, जब उसे पता चला तो वह तुरंत हमसे दूर क्यों नहीं भागी! वह स्त्री, जो खून-खराबे से अनभिज्ञ थी, कैसे एक ऐसे व्यक्ति को देख सकती थी, बल्कि उससे भी बढ़कर, उसे दुलार सकती थी और उससे प्रेम कर सकती थी, जो पेशे से हत्यारा था और जिसने पूरी मानव जाति के विरुद्ध हाथ उठाया था? यह मेरी समझ से परे है: मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि यह उसका भाग्य था। वह मुझसे दूर रह सकती थी, उसे रहना चाहिए था; मानवीय आचरण के हर सिद्धांत में, मेरे प्रति उसका प्रेम दुष्ट और निर्लज्ज था, और एक गुणी स्त्री तो इसे अपने हृदय में जगह देने से पहले ही मर जाती। वह मुझे तब त्याग सकती थी जब उसने कहा था कि वह ऐसा करेगी, और जब उसने मुझसे कभी न मिलने का निश्चय कर लिया था; लेकिन उसके अंधे जुनून ने उसे उस जाल में फंसा दिया जो भाग्य ने उसके लिए बिछाया था, और वह उससे बच नहीं सकी, ठीक वैसे ही जैसे आप या मैं, साहब, जब हमारा समय आएगा तो मृत्यु से बच नहीं पाएंगे।

अगली सुबह हम उसके साथ चल पड़े। मैंने ठान लिया था कि मैं उसकी मृत्यु में कोई सक्रिय भूमिका नहीं निभाऊँगा, क्योंकि मैं उस पर हाथ उठाने का ख्याल भी बर्दाश्त नहीं कर सकता था, जिसके स्पर्श को मैंने स्वीकार किया था और जिसके चुंबन अभी भी मेरे होठों पर ताज़ा थे। मोती और पीर खान को उसकी सुरक्षा के लिए सौंपा गया था, और उसके एक सेवक के रूप में मुझे भी। लेकिन उसका दल बड़ा था; उसके साथ आठ भारवाहक, चार सिपाही उसके रक्षक के रूप में और उसका दास एक टट्टू पर सवार था, जिसे एक अन्य सेवक खींच रहा था। कुल मिलाकर वे पंद्रह लोग थे, और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, जब भी हमें कोई उपयुक्त स्थान मिलता, मेरे पैंतीस सबसे अच्छे आदमी उन पर टूट पड़ते। मैं एक जगह जानता था, वह एक जंगली इलाका था, जहाँ जंगल लगभग घना था, और जहाँ दोनों ओर मीलों तक कोई मानव बस्ती नहीं थी; और अधिक सुरक्षा के लिए, मैंने दल को उस रास्ते से ले जाने का इरादा किया था जिसे मैंने नीचे आते समय खोजा था, और जो जंगल के सबसे घने हिस्से में जाता था, जहाँ मुझे पता था कि हमारा घातक कार्य बिना किसी रुकावट के पूरा हो जाएगा।

हम उस जगह पर पहुँच गए जहाँ से वह रास्ता दो भागों में बँटता था जिसे मैं लेना चाहता था, और उसके सहायकों के बहुत विरोध के बाद, मैं उन्हें यह कहकर अपने पीछे आने के लिए राजी करने में सफल रहा कि वह रास्ता छोटा था और उस पर एक जलधारा बहती थी, जबकि मुख्य रास्ते पर ऐसी कोई धारा नहीं थी। हम छोटी नदी के पास पहुँचे और मैं घोड़े से उतर गया; मेरे दल ने उनके भोले-भाले शिकारों को घेर लिया और संकेत की बेसब्री से प्रतीक्षा करने लगे; लेकिन मैं शूरफुन को मृतकों का दृश्य देखने से बचाना चाहता था, जो उसे देखना पड़ता अगर वह सबसे पहले न मरती। मैं उसकी पालकी के पास गया और उससे कहा कि वह बाहर आकर मेरे द्वारा लाए गए जलपान में भाग ले; उसने पहले तो मना किया, क्योंकि उसे मेरे आदमियों की तीखी निगाहों का सामना करना पड़ता; लेकिन मैंने उससे कहा कि मैंने एक पेड़ पर कपड़ा टांग दिया है, जो बस कुछ ही कदम दूर है, और घूंघट में होने के कारण उसे कोई नहीं देखेगा। 'तुम्हारी दासी

वहाँ पहले से ही है,' मैंने कहा; 'तो आओ, वह हमारा भोजन तैयार कर रही है, यह पहला भोजन है जो हम एक साथ कर रहे हैं।'

वह चादर में लिपटी हुई सावधानी से बाहर निकली, ताकि वह मेरे साथ वालों को न देख सके। पालकी ने भी उसके शरीर को पूरी तरह से ढक रखा था। जैसे ही वह उठी, मोती का कमरा उसके चारों ओर था और उसकी तुरंत मृत्यु हो गई। पीर खान ने उसके हाथ पकड़े और जैसे ही उसकी सांसें रुकीं, उसने शव को पालकी में रखा और दरवाजा बंद कर दिया।

'अब इतना काम हो चुका है,' उसने कहा, 'हमें बाकी का काम जल्दी से खत्म करना होगा; वे सब बेखबर हैं और नदी में नहा-धो रहे हैं; सैनिक अपनी-अपनी चौकियों पर तैनात हैं। बिस्मिल्ला! झिरनी दो!'

मैंने अपना हिस्सा ढूँढा और दे दिया: मेरा काम जल्दी ही हो गया, और बाकी का भी; लेकिन एक-दो लोग कुशल नहीं थे, और बाकी लोगों के बीच उस अभागी लेकिन बेहद दोषी दासी की चीखें मेरे कानों में गूँज उठीं, और यह सोचकर मेरा दिल दुख से भर गया कि वे सब एक दुष्ट स्त्री की निरर्थक सनक के कारण मर गए। मैं शुरफुन को देख भी नहीं पा रहा था—उसके सुंदर चेहरे को देखकर ही मैं व्याकुल हो जाता। मैंने लुघाई लोगों को उसे ले जाते देखा, लेकिन मैं उनके पीछे नहीं गया। उसकी पालकी टुकड़े-टुकड़े हो गई और उसके साथ ही दफना दी गई।

मैं कितना अभागा हूँ! मैं रो पड़ा: आह, अमीर अली, क्या तुम्हें इतनी कम उम्र की और इतनी प्यारी लड़की के लिए जरा भी दया, जरा भी अफसोस नहीं हुआ?

साहब, मुझे शायद इसका एहसास हुआ होगा, लेकिन परसों मरे हुए व्यक्ति का अंजाम मेरे मन में इतना ताजा था कि मैं उसे दिखा नहीं सका: अगर मैंने ऐसा किया होता तो शायद वही मेरा अंजाम होता। इसके अलावा, क्या आप इस बात से इनकार कर सकते हैं कि यही उसका अंजाम था? और सबसे बढ़कर, क्या मैंने तुपुनी का मांस नहीं खाया था?

अध्याय XXXI

यह दर्शाता है कि अमीर अली ने बड़े दांव के लिए किस प्रकार एक गहन रणनीति अपनाई और जीत हासिल की।

सब कुछ पूरा हो जाने के बाद, हम आगे बढ़ते रहे और एक छोटे से उजाड़ गाँव में पहुँचे, जो हमारे पिछले साहसिक कार्य के स्थान से कुछ ही दूरी पर था। वहाँ, रिवाज़ के मुताबिक़ गोर की बलि देने के बाद, हमने जो काफ़ी लूटा था, उसे पेश किया गया और बाँट दिया गया। जल्द ही हमारे आगे के कार्यों पर चर्चा शुरू हो गई। कुछ लोगों ने सलाह दी कि हमें वापस लौटकर नागपुर जाना चाहिए; वास्तव में कई लोग इसके पक्ष में थे, और मैं भी इसके पक्ष में था; लेकिन पीर खान ने बेहतर सलाह दी, उन्होंने कहा कि इस तरह एक ही रास्ते पर बार-बार आने-जाने से हम पर शक ज़रूर होगा और शायद हम पर हमला भी हो जाए; और इस जोखिम को उठाना लूट के किसी भी अवसर के मुकाबले कुछ भी नहीं था। उन्होंने सलाह दी कि हमें एलिचपुर की ओर तेज़ी से बढ़ना चाहिए, उस शहर से बचते हुए और पहाड़ियों के पास चलते हुए, जब तक कि हम सुलाबत खान के अधिकार क्षेत्र से बाहर न निकल जाएँ। सुलाबत खान, अगर उसे हमारे बारे में पता चला, तो वह निश्चित रूप से नुवाब सब्ज़ी खान की मौत के लिए हम पर शक करेगा, जो उसका मेहमान था, और जिसकी मौत पूरे देश में जानी जाती थी और जिसे ठगों के हाथों में सौंपा गया था। कुछ और विचार-विमर्श के बाद हम सभी उनकी योजना पर सहमत हो गए, और अगले दिन, मुख्य सड़क छोड़कर, हम एक जंगल के रास्ते पर चल पड़े; और कई दिनों की थका देने वाली यात्रा के बाद, जब हम मूकताघेरी के सुनसान मंदिरों के पास दर्रे पर पहुँचे, तो मुझे बहुत खुशी हुई, जब हमने अपने सामने बरार की विशाल घाटी को फैला हुआ देखा, जो अभी भी हरे-भरे और भरपूर ज्वार की फसलों से ढकी हुई थी।

कुछ दिनों से मुझे कंपकंपी और पूरे शरीर में दर्द हो रहा था, और मेरा मन बेचैन और अशांत था। तमाम कोशिशों के बावजूद, रात में भयानक सपने मुझे सताते थे, और शूरफुन की आकृति लगातार मेरी कल्पना में आती रहती थी—कभी अपनी पूरी सुंदरता में, और कभी मृत्यु के बाद विकृत और बदली हुई; कभी वह मुझे अपनी प्रेम कहानी सुना रही होती थी, तो कभी अपने भाग्य का ताना मार रही होती थी। मैंने यह बात अपने साथियों को बताई थी, और उन्होंने मेरे ऊपर कई अनुष्ठान किए ताकि उन बुरी आत्माओं को भगाया जा सके जिनके बारे में मोती ने कहा था कि वे मुझ पर हावी हो गई हैं। लेकिन उनका कोई फायदा नहीं हुआ, और जिस सुबह हम दर्रे की चोटी पर पहुँचे, मैं इतना बीमार था कि मुझे घोड़े पर सहारा लेकर चलना पड़ा।

अब क्या किया जाए? एलिचपुर जाना शेर के मुँह में जाने जैसा था, और सब समझ नहीं पा रहे थे कि आगे क्या करें। हालाँकि, जिस घाटी से होकर सड़क गुजरती थी, उसके मुहाने को पार करते ही, कुछ लोगों ने थोड़ी ही दूरी पर एक बड़ा गाँव देखा और यह खुशखबरी लेकर वापस आए। मैं सड़क के किनारे एक छोटे से गाँव में बैठा था, या यूँ कहूँ कि लेटा हुआ था; और जब मैंने उनकी खबर सुनी तो मुझे वह गाँव याद आ गया जिसके बारे में वे बात कर रहे थे, जिसके पास से मैं एलिचपुर से सब्ज़ी खान के साथ निकलने वाली सुबह गुजरा था, हालाँकि मैं उसका नाम भूल गया था। इसलिए, मैंने उनसे मुझे वहाँ ले जाने की विनती की, और मुझे मेरे अच्छे घोड़े पर बिठाकर मैं जल्दी ही वहाँ पहुँच गया, और एक बुनिया की खाली दुकान में जैसे-तैसे आराम से बैठा

रहा। लेकिन बुखार मुझ पर हावी था; मेरा पूरा शरीर पहले तेज कंपकंपी से काँप उठा, जिसके बाद तेज जलन होने लगी। मुझे उस दिन की कोई बात याद नहीं है, और न ही उसके बाद के कई दिनों की, क्योंकि मैं बेहोश पड़ा था, और मेरी आत्मा जीवन और मृत्यु के बीच झूल रही थी।

उस भयानक समय के बाद मुझे जो पहले शब्द याद हैं, वे मेरे वफादार सेवक के थे।

'शूके खुदा!' उसने कहा; 'आखिरकार उसने अपनी आंखें खोल दीं!' और वह दौड़कर पीर खान और अन्य लोगों को मेरे पास बुलाया।

'मैं कहाँ हूँ?' मैंने धीमी आवाज़ में पूछा, क्योंकि बुखार की तीव्रता में मैं सब कुछ भूल गया था।

'शूके खोदा!' सबने फिर से कहा; 'आखिरकार वह बोल ही गया!'

मैंने अपना सवाल दोबारा दोहराया, और पीर खान ने उसका जवाब दिया।

'क्या तुम्हें याद नहीं?' उसने कहा; 'तुम यहाँ सुर्रुसगाम के अच्छे गाँव में हो, जो एलिचपुर से तीन किलोमीटर दूर है; और अब जब तुमने बोल दिया है तो सब ठीक हो जाएगा, तुम जल्दी ठीक हो जाओगे; लेकिन हम तुम्हारे बारे में बहुत चिंतित थे, क्योंकि एक नेक मुसलमान, जो हुकीम है, ने कल ही कहा था कि तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी, और हमें तुम्हारे दफ़नाने की तैयारी करने को कहा था: हालाँकि, वह गलत था, और इंशाल्लाह! तुम जल्द ही अपने बहादुर साथियों के नेतृत्व में फिर से मिलोगे।'

'हाय खान, मुझे डरने की कोई ज़रूरत नहीं है,' मैंने कहा, 'क्योंकि मैं कमज़ोर और लाचार हूँ, और आपका यहाँ मेरे साथ रहना केवल कुछ समय के लिए ही आपको टाल रहा है। मुझे मेरे हाल पर छोड़ दीजिए, और अगर आलिया की यही इच्छा है कि मैं ठीक हो जाऊँ, तो मैं घर पर आपसे मिल जाऊँगी। मुझे लगता है कि मैं आपके काम में एक बेकार बोझ ही हूँगी; क्योंकि अगर मैं इस बुखार से उबर भी गई, तो भी आने वाले कई दिनों तक शायद ही अपने घोड़े पर बैठ पाऊँगी।'

'मीर साहब, हम आपको कभी नहीं छोड़ेंगे!' मेरे चारों ओर बैठे सभी लोग एक स्वर में बोले। 'आपकी मृत्यु होने पर आपका अंतिम संस्कार कौन करेगा? या आप ठीक हो जाने पर आपकी देखभाल कौन करेगा? ये कैसी बातें हैं? क्या आप हमारे भाई और उससे भी बढ़कर हमारे नेता नहीं हैं? और अगर हम आपको छोड़ दें तो हमारा क्या होगा?'

'खैर, मेरे मित्रों,' मैंने उनकी दयालुता से अत्यंत प्रभावित होकर कहा, 'चूंकि आप खुले मैदानों में घूमने के बजाय एक बीमार व्यक्ति के बिस्तर के पास रहना पसंद करते हैं, तो ठीक है; कुछ दिनों में आपका इंतज़ार खत्म हो जाएगा, और या तो आपको मुझे यहीं दफनाना होगा, या, यदि आलिया की इच्छा हो, तो मैं एक बार फिर आपको नए अभियानों में नेतृत्व करूंगा।'

'लेकिन आपको चुप रहना होगा,' पीर खान ने कहा, 'क्योंकि हुकीम ने ऐसा कहा है, और हमसे कहा है कि अगर आप जरा भी जागें तो उन्हें खबर भेज दें, क्योंकि उन्होंने आपके लिए कुछ दवा तैयार की है, जिसे वे आपको देंगे और आशा करते हैं कि इससे आपका स्वास्थ्य जल्दी ठीक हो जाएगा। मैं जाकर उन्हें यह खुशखबरी सुनाता हूँ।'

कुछ ही समय में खान एक वृद्ध और आदरणीय व्यक्ति के साथ वापस लौटे। उन्होंने मेरा सिर और शरीर जाँचने के बाद खान की ओर मुड़कर कहा कि मेरी हालत संतोषजनक है। उन्होंने आगे कहा, 'लेकिन, चूंकि बुखार ठंड के कारण है, जो अभी भी उनके पेट में है, इसलिए हमें उन्हें वह दवा देनी होगी जिसके बारे में मैंने बात की थी: मैंने इसे तैयार कर लिया है, और चूंकि यह गर्म औषधियों से बनी है, यह जल्दी ही ठंड को दूर कर देगी, पसीना लाएगी, और इंशाल्लाह! कल वह बिल्कुल ठीक हो जाएंगे, हालांकि कुछ समय तक वह कमजोर रहेंगे।'

काढ़ा तैयार किया गया, और हालांकि मुझे बहुत मतली हो रही थी, मैंने उसे पी लिया, और उनके निर्देशानुसार अपने आप को रजाई और घोड़े के कपड़े से ढक लिया। मुझे तुरंत बहुत पसीना आने लगा; और जब हुकीम, जो हर समय मेरे पास बैठे थे, ने सोचा कि मुझे इस उपचार में काफी देर हो गई है, तो उन्होंने एक-एक करके मेरे आवरण हटाए, और मेरे गीले कपड़े उतारकर मैं जल्दी ही गहरी और ताजगी भरी नींद में सो गया, जिससे मैं अगली सुबह सूरज की किरणें मेरी पलकों पर पड़ने तक नहीं जागा।

जब मैं जागा तो मुझे इतनी ताजगी महसूस हुई कि मैं उठा तो सही, लेकिन मेरा सिर चकरा गया और मैं गिर पड़ा। मैंने दोबारा उठने की कोशिश नहीं की; लेकिन मैं ठीक था; मुझे लगा कि मैंने बीमारी को हरा दिया है, और मैं शुक्रगुजार था। थोड़ी देर में मुझे भूख लगी, और खिचड़ी का हल्का भोजन करने के बाद मैं सचमुच तरोताजा हो गया।

दो दिन और रुकने से मेरी सेहत में सुधार हुआ और मैं घर की ओर वापस जाने के लिए बहुत उत्सुक था; लेकिन घोड़े पर यात्रा करना संभव नहीं था, क्योंकि मैं सहारे से कुछ ही कदम चल सकता था; इसलिए, जब पीर खान ने अपनी सेवाएं देने की पेशकश की, तो मैंने उन्हें एलिचपुर भेजा ताकि वे पालकी या डौली (सामान उठाने वालों सहित) किराए पर ले सकें, जो मुझे कुछ दूर तक या जितनी दूर तक मुझे आवश्यक लगे, ले जा सकें।

वह उनके साथ लौट आया, और अगले दिन, उस भले हुकीम को उसका पारिश्रमिक देकर, मैं अपने बहादुर साथियों के साथ खुशी-खुशी एक बार फिर निकल पड़ा।

हमने बूरहानपुर जाने के लिए सबसे अच्छा रास्ता चुना, जो बरार की घाटी से होकर पहाड़ियों के करीब से गुजरता था; और जब हम जुलगाम के पुराने शहर में पहुंचे, तो मैंने खुद को इतना मजबूत महसूस किया कि मैंने पालकी को विदा कर दिया और एक बार फिर अपने अच्छे घोड़े पर सवार हो गया।

साहब, लंबी और कष्टदायक बीमारी के बाद अपने घोड़े पर सवार होना और उस उदार जानवर की शक्ति को फिर से महसूस करना कितना आनंददायक और उत्साहवर्धक होता है, मानो वह भी अपने स्वामी के स्वस्थ होने पर प्रसन्न हो रहा हो। वह भी मेरी ही तरह बहुत प्रसन्न था, और मैंने उस सुबह की सवारी का इतना आनंद कभी नहीं लिया था; ठंडी हवा मेरे दुबले-पतले गालों को छू रही थी, जब मैं सवारी कर रहा था। कभी मैं अपने घोड़े को मनचाहा उछल-कूद करने देता, कभी उसे मैदान में दौड़ाता, और फिर अपने साथियों के साथ

मिल जाता जो खुशी-खुशी चल रहे थे, मानो वे भी मेरी ही तरह आनंदित हों और मुझे फिर से अपने आगे देखकर प्रसन्न हों।

बूरहनपुर पहुँचने तक हमें कोई रोमांच नहीं मिला। हम उस गाँव को छोड़ने के दसवें दिन वहाँ पहुँचे जहाँ मैं मृत्यु के बहुत करीब पहुँच गया था; वास्तव में, हमने किसी रोमांच की तलाश भी नहीं की थी। हमें कस्बे की एक पुरानी सराय में अच्छा कमरा मिल गया, और मैंने ठान लिया कि जब तक हमें आगे बढ़ने का कोई रास्ता न मिल जाए, तब तक मैं वहीं रहूँगा। तदनुसार, प्रतिदिन अलग-अलग बाज़ारों में लोगों को भेजा जाता था; लेकिन सात दिन आलस्य में बीत गए, और मैं गंभीरता से सोचने लगा कि शूरफन की मृत्यु, जो कि अपरिहार्य घटना थी, मेरे निष्ठापूर्ण वादों के विरुद्ध थी, जिसके कारण मैं हमारी संरक्षिका की सुरक्षा से वंचित हो गया था; दूसरे शब्दों में, मुझे डर था कि मेरा सौभाग्य मेरा साथ छोड़ चुका है, और एक बार मैंने दवी को एक भव्य बलिदान देने का प्रस्ताव रखा और भविष्य की योजनाओं के लिए शकुन देखने का भी सोचा।

यह हो गया, और शगुन अच्छे थे—'कुछ हद तक शुभ!' मोती ने कहा, जो इन मामलों में हमारा मार्गदर्शक था; 'हमें जल्द ही अच्छी किस्मत मिलेगी, वरना ये हमें कभी नहीं मिलती।'

लेकिन एक और दिन बीत गया, और सोथाई लोगों ने फिर भी कोई सूचना नहीं दी।

लेकिन अगले दिन, दोपहर के करीब, मोती मेरे पास आया।

उन्होंने कहा, 'आप शायद जानते होंगे कि यह स्थान अपनी समृद्धि के कारण रोकुरियाओं, या खजाना ढोने वालों, द्वारा अक्सर इस्तेमाल किया जाता है, जो बंबई से पैसा लाते हैं और अफीम खरीदने के लिए मालवा ले जाते हैं।'

'हाँ,' मैंने कहा; 'इसमें क्या है? मैंने अपने पिता से भी यही सुना था, जिन्होंने मुझे उनमें से कुछ को लेने की उम्मीद में इस रास्ते से लौटने के लिए कहा था।'

'तो,' उसने कहा, 'मैं चाहता हूँ कि तुम और पीर खान मेरे साथ चलो; तुम दोनों की नज़रें बहुत तेज़ हैं, और अगर मैंने उनमें से आठ को नहीं पहचाना है तो मैं बहुत बड़ी गलती कर रहा हूँ। मैंने पहले भी उनके कबीले के कुछ लोगों को मारा है, और मुझे लगता है कि मैं गलत नहीं हूँ जब मैं कहता हूँ कि ये भी उनमें से ही हैं।'

'अच्छा,' मैंने उत्तर दिया, 'मैं आऊंगा;' और पीर खान और मोती के साथ हम उन लोगों की जांच करने के लिए निकल पड़े जिनके बारे में मोती ने बात की थी।

एक खाली दुकान में हमें वे मिले। ये लोग बहुत सतर्क थे, इसलिए यह अत्यंत आवश्यक था कि हम उन्हें शक न होने दें; अतः हम जल्दी से उनके पास से गुजर गए और अपने चेहरे रुमालों से ढक लिए; फिर भी, उन पर सरसरी नजर डालते ही, उनके मजबूत शरीर और उनके साथ मौजूद एक ऊंट को देखकर, साथ ही उनके बेचैन और संदिग्ध हावभाव से, मुझे यकीन हो गया कि वे वही लोग थे जिनकी हमें तलाश थी। यह मौसम भी बिल्कुल सही था; वे मालवा में अफीम की खेती करने वालों को दान देने के लिए खजाना लेकर आ रहे थे, क्योंकि इस पौधे के बीज कम से कम एक महीने तक बोए नहीं जाने थे।

मैं संतुष्ट था; फिर भी उनकी संगति सुनिश्चित करने का तरीका मुझे नहीं सूझ रहा था, और कुछ भी तय करने से पहले मेरे मन में कई योजनाएँ आईं: अंततः मैंने एक योजना बनाई, जब मैं अपने साथियों के साथ नदी की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर बैठा था, जहाँ हम अक्सर नीचे बहने वाली उस शानदार नदी से आने वाली ताजी हवाओं और शुद्ध हवा का आनंद लेने के लिए जाया करते थे।

मैंने कहा, 'मैं सोच रहा था कि इन लोगों को सुरक्षित रखने के लिए हमें क्या करना चाहिए; आप जानते हैं कि वे कहावत के अनुसार बहुत सतर्क रहते हैं।'

दोनों ने सहमति में सिर हिलाया।

'अच्छा,' मैंने आगे कहा, 'निम्नलिखित योजना के बारे में आपका क्या विचार है? पीर खान, आप और मैं मुसाफिर होने का नाटक करेंगे; हम अभी अपनी सराय में जाएंगे, अपने घोड़ों पर धूल और कीचड़ डालेंगे और अपने कपड़े गंदे कर लेंगे, और दो आदमियों और एक भारी बोझ लादे हुए टट्टू को लेकर शहर का चक्कर लगाएंगे, पुराने महल के नीचे वाले द्वार से प्रवेश करेंगे, और थके होने का नाटक करते हुए उनके पास रुकेंगे; हम आसानी से उनका विश्वास जीत लेंगे, और फिर उनके साथ चलेंगे। मोती, मैं तुम्हें दल की ज़िम्मेदारी सौंप रहा हूँ, और तुम्हें बता दूँगा कि हमें कौन सा रास्ता लेना है। तुम्हें परिस्थितियों के अनुसार चलना होगा, और आदमियों को दो-तीन के समूह में मुझसे आगे निकलने देना होगा; कुछ को आगे जाना होगा, ताकि हम उनके पास पहुँच सकें; और इस तरह, भले ही दल बिखर जाए, फिर भी, इंशाल्लाह! कुछ ही कदमों में हम काम पूरा करने के लिए पर्याप्त संख्या में इकट्ठा हो जाएँगे।' हम आपस में संपर्क बनाए रख सकते हैं, ताकि काम खत्म होने पर हम सब इकट्ठा होकर अपने घर की ओर जल्दी से चल सकें। लेकिन किसी भी हालत में आपको हमसे एक कदम से ज़्यादा पीछे नहीं रहना है; और आपको हमारे जाने के कुछ ही समय बाद हमारे पड़ाव पर पहुंचना होगा। अब बताइए, मेरे दोस्तों, क्या यह योजना ठीक रहेगी? या क्या आप कोई और ज़्यादा व्यावहारिक योजना बता सकते हैं? अगर हां, तो बताइए।

'यह उत्कृष्ट है,' दोनों ने एक स्वर में कहा, 'और इसके जनक बुद्धिमान थे। समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।'

हम अपनी सराय लौट आए, और दोपहर होते-होते दो थके-हारे यात्री, जो लंबी और थका देने वाली यात्रा से लौटे हुए प्रतीत हो रहे थे, बूरहानपुर के दक्षिणी द्वार से प्रवेश करते हुए और आश्रय की तलाश में बाज़ारों में भटकते हुए दिखाई दिए। ये मैं और पीर खान थे, मेरे साथ मेरा अच्छा साथी जंगली और दो अन्य ठग थे। हम उस झोपड़ी के पास से बार-बार गुज़रे, जो काफी बड़ी थी, जिसमें रोकुरिया लोग ठहरे हुए थे; और यह बहाना करते हुए कि हमें हर जगह जगह नहीं मिली, मैं अंत में उनके पास पहुँचा और उनमें से सबसे सम्मानित व्यक्ति से बात की, जो एक लंबा-चौड़ा, सुंदर और घनी मूंछों वाला व्यक्ति था।

'यारो!' मैंने कहा, 'लगता है तुम भी हमारी तरह मुसाफिर हो, और आलिया की खातिर हमें अपने कालीन बिछाने के लिए थोड़ी जगह दे दो। तुमने हमें यहाँ कई बार आते-जाते देखा है, फिर भी कोई भी हमसे यह नहीं कहता कि उतरकर आराम कर लो। बल्कि, हमें कई खाली जगहों में भी प्रवेश नहीं मिला। काश उनके मालिकों की बहनें अपवित्र हो जाएँ!'

उस आदमी ने कहा, 'सराय में जाओ; वहाँ जगह है, और तुम आराम से रहोगे।'
'जी हां,' मैंने कहा, 'हमने पहले ही कोशिश कर ली है, और वह जगह भरी हुई है; उसमें लगभग चालीस-पचास लोग थे, जिन्होंने हमें कड़े शब्दों में वहां से चले जाने को कहा; और सच कहूं तो, हमारे पास कुछ कीमती सामान होने के कारण हमें उनका रूप-रंग पसंद नहीं आया। वे चोरों या डाकुओं जैसे दिख रहे थे—है ना भाई?' मैंने पीर खान की ओर मुड़कर कहा।
'हाँ, बिल्कुल,' उसने कहा; 'कौन जानता है, अगर हम उनके बीच ठहरे होते, तो क्या हमारे गले न काट दिए जाते? यह आलिया की कृपा थी,' उसने श्रद्धापूर्वक ऊपर देखते हुए कहा, 'कि वह जगह भरी हुई थी, वरना हम थके हुए होते और कहीं भी आराम कर पाते तो हमें बहुत खुशी होती, क्योंकि सच में मैं अपने घोड़े पर मुश्किल से बैठ पाता हूँ।'
मैंने कहा, 'देखिए, हमारी क्या स्थिति है। आप हिंदू होते हुए भी हमें मना नहीं करेंगे। शाम ढल रही है और हम दिन भर घोड़े पर सवार रहे हैं; हमें बस थोड़ा सा भोजन ही मिल सकता है, उसके बाद नींद तो आएगी ही।'
'अच्छा,' उस आदमी ने कहा, 'आपको वापस भेजना असभ्य होगा, इसलिए उतर जाइए; और,' उसने अपने एक साथी से कहा, 'तुम, दूरजून और कुछ अन्य लोग ऊंटों की काठी और उन थैलियों को इधर थोड़ा खिसका दो, ताकि इन भुला आदमियों के लिए जगह बन जाए।'
जब उन्हें ले जाया जा रहा था तो मुझे पैसों की खनक सुनाई दी।
हम घोड़ों से उतरे, और थोड़ी ही देर में हमारे घोड़ों की मालिश की गई और भोजन तैयार किया गया, क्योंकि हमने उस दिन जानबूझकर उपवास रखा था। भोजन करने के बाद, हम रोकुर-रियास के साथ बातचीत में बैठे थे; और उनके निर्धारित मार्ग की जानकारी होने के कारण, हमने आपसी सुरक्षा के लिए उनके साथ चलने का निर्णय लिया, और संक्षेप में कहें तो, उनके साथ हमारे संबंध ऐसे हो गए जैसे हम अब तक साथ ही यात्रा करते आए हों। हमारी वेशभूषा, हमारे अच्छे घोड़े और हथियार ने उन्हें आश्वस्त कर दिया कि हम सैनिक हैं, क्योंकि मैंने उन्हें बताया था कि हम होल्कर की सेवा में हैं, पूना से लौट रहे हैं, जहाँ हम पेशवा के पास एक मिशन पर गए थे, और अपने साथ न केवल संदेश लाए हैं, बल्कि बड़ी मात्रा में धन भी लाए हैं। इसके प्रमाण स्वरूप मैंने अपनी भीतरी बनियान से कागजों का एक बंडल निकाला, और उन्हें अपने सिर और आँखों से छूते हुए, बाजी राव की उदारता की प्रशंसा की, और होल्कर के साथ उनके मैत्रीपूर्ण संबंधों की सराहना की। यह मेरी सबसे बड़ी चाल थी; यह विचार मुझे सराय में रहते हुए आया था, और मैंने जल्दी से कुछ रद्दी कागज़ों और हिसाब-किताबों का एक बंडल इकट्ठा किया, उन्हें एक पैकेट में बांधा, होल्कर को भेजा, और उस पर अपनी मुहर लगा दी, जो देश के किसी भी राजकुमार की मुहर जितनी बड़ी थी। आलिया साहब, उन्होंने मुझे वैसा ही मान लिया जैसा मैंने बताया था, मानो उनके सिर हों, और तुरंत मुझसे पेशवा और होल्कर के फिरंगी वंश को उखाड़ फेंकने की संभावना के बारे में सवाल करने लगे; लेकिन मैं अपने जवाबों में रहस्यमय तरीके से सतर्क था, बस इतना इशारा करता था कि यह संभव है, और बातचीत को बाजी राव द्वारा मुझ पर दिखाए गए एहसानों की ओर मोड़ देता था, जिसके बारे में मैंने इतने झूठ बोले कि मेरा दम घुट गया; और मैंने अपने

उस उत्तम घोड़े को पेशवा के उपहारों में से एक बताया। उन सभी ने कहा कि वह देने वाले और रखने वाले दोनों के योग्य था; और, कल के लिए हमारे पड़ाव पर सहमत होने के बाद, जो काफी दूर आठ बजे था, वे सो गए, सिवाय दो के, जो खींची हुई तलवारों के साथ खजाने की रखवाली कर रहे थे, और सभी यह मान रहे थे कि वे एक अज्ञात महान व्यक्ति के साथ हैं।

सोने से पहले मैंने जंगली को मोती के पास सूचना देकर भेजा। मैंने उससे रामासी भाषा में खुलकर बात की, और वह अपने काम पर निकल पड़ा।

'यह तो एक विचित्र भाषा है,' रोकुर्रियास के जेमादार ने कहा; 'यह क्या है?'

'ये तेलुगु है,' मैंने लापरवाही से कहा। 'मैंने इस लड़के को दो साल पहले हैदराबाद से मामूली रकम देकर खरीदा था, और ये मेरा गुलाम है; ये हमारी हिंदी समझता है, लेकिन बोलता नहीं है।'

शायद ऐसा करना नासमझी थी, लेकिन मैंने इतनी लापरवाही से बात की कि उन्होंने समझ लिया कि मैंने उसे किसी मामूली काम से भेजा है। दरअसल, मैंने उससे कहा था कि लौटते समय कुछ तंबाकू और पान खरीद ले, और चूंकि सराय हमारे यहाँ से ज्यादा दूर नहीं थी, इसलिए वहाँ जाने में लगने वाला समय किसी सामान्य काम से ज्यादा नहीं होता।

वह कड़ाही और तंबाकू लेकर लौटा और मुझे बताया कि वे तैयार हैं, लेकिन अधिकांश लोग अगले दिन रुकेंगे, और गोरडट के नेतृत्व में सात सर्वश्रेष्ठ लोग तब प्रस्थान करने वाले थे; बाकी लोग, जिस गाँव में हमें रुकना था, वहाँ अपने एक साथी को जासूस के रूप में छोड़कर, जहाँ तक संभव हो सके आगे बढ़ेंगे।

मैं संतुष्ट था, और मुझे इस अभियान की सफलता का इतना भरोसा था कि मैं अपनी सारी संपत्ति दांव पर लगा सकता था कि मैं तीन दिनों में रोकुर्रियों को मार गिराऊंगा। हम अगली सुबह रवाना हुए, और दो दिनों तक हमें अपने किसी भी साथी का पता नहीं चला; हालांकि पीर खान ने इससे अच्छा संकेत दिया, उन्होंने कहा कि साथी अपना काम कर रहे हैं, और सही समय पर आ जाएंगे, और अगर वे बहुत जल्दी आ गए तो हमारे साथी सतर्क हो जाएंगे और भाग जाएंगे।

चौथे दिन हमारे साथियों में से एक प्रकट हुआ; हमने उसे रास्ते में पकड़ लिया, और चूंकि मैं जानबूझकर पीछे चल रहा था, इसलिए मुझे उससे पता चला कि गोरडट और उसके बचे हुए आदमी हमसे एक मील आगे हैं, और उनमें से कुछ उस दिन हमसे मिलेंगे और बाकी अगले दिन।

यह होना ही था। जिस गाँव में हमने डेरा डाला था, वहाँ चार आदमी हमसे आकर मिल गए; और अब जब आठ बजने में नौ मिनट बाकी थे, तो मैंने उन्हें बलपूर्वक मौत के घाट उतारने की संभावना पर विचार करना शुरू कर दिया—मेरा मतलब है, मौका मिलते ही तलवारों से उन पर हमला करने पर।

लेकिन यह खतरनाक था, क्योंकि वे व्यक्तिगत रूप से हमसे अधिक हट्टे-कट्टे थे, अपने हथियारों को चलाने में माहिर थे और बिल्लियों की तरह चौकस थे।

दूसरे दिन गोरदुत और उनके साथी हमसे मिल गए, लेकिन रोकुर्रियास को उन्हें हमारे साथ यात्रा करने की अनुमति देने के लिए मनाना मेरे लिए बहुत मुश्किल था। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि यह उनके नियमों के

विरुद्ध है, हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए, और यदि उनके मालिकों को पता चल गया कि उन्होंने रास्ते में एक भी यात्री को अपने साथ शामिल किया है, तो वे अपनी प्रतिष्ठा और जीविका खो देंगे।
“परन्तु आप,” भीम सिंह नाम के जमादार ने आगे कहा, “आप आदरणीय व्यक्ति हैं, जो अपनी सरकार की प्रतिष्ठा के लिए चोरों या डाकुओं के विरुद्ध हमारी सहायता करेंगे। हम आपके साथ सिंधिया के इन इलाकों में उतनी ही सुरक्षित यात्रा करते हैं मानो हमारे साथ घुड़सवारों का एक दस्ता हो। परन्तु हमारी खातिर राहगीरों की कहानियों पर विश्वास न करें; एक रोकुरिया के अनुभव पर भरोसा करें, उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता: और अकेले होने पर भी किसी से भी संगति न करें; इससे कोई लाभ नहीं होगा, बल्कि बहुत हानि हो सकती है।”
मैंने उसकी सलाह मानने का वादा किया, और जैसा कि मैंने स्पष्ट रूप से देखा कि वे हमारे दल के और सदस्यों को अपने साथ नहीं लेंगे, और यदि मैंने उन पर और अधिक दबाव डाला तो झगड़ा और उनसे अलगाव होना निश्चित था, इसलिए मैंने अपने बारह आदमियों के साथ जितना हो सके इस मामले को निपटाने का निश्चय किया। जंगली किसी काम का नहीं था, कम से कम मैंने उस पर भरोसा नहीं किया, क्योंकि वह तो बस एक नौजवान था; लेकिन बाकी सब मेरे दल के सबसे अच्छे लोग थे, सभी जाने-माने भुट्टोते, और अच्छे तलवारबाज थे, और उन्हें चलाना बखूबी जानते थे।
इसलिए दिन में हमने परामर्श किया; हम ज्वार के खेत में मिले, जिसने हमें छिपा लिया, और वहाँ हमने मामले पर चर्चा की। पीर खान ने प्रस्ताव रखा कि वह एक आदमी को मोती और बाकी लोगों के लिए वापस भेजे, उन्हें बताए कि वे रात में बिना रुके हमारे पास से गुजरें और हमें सुबह जल्दी उनसे मिलने दें; और जैसे ही दोनों दल एक-दूसरे के पास से गुजरते हुए मिल जाएं, मैं झिरनी दे दूँ।
योजना बहुत व्यावहारिक थी, और सलाह भी अच्छी थी, क्योंकि इससे मामला पूरी तरह स्पष्ट हो गया था; मैं खुद भी इसके पक्ष में था। फिर भी इससे कोई सम्मान नहीं मिलता; यह कुछ लोगों के खिलाफ एक बड़ा संघर्ष होता, और यह मुझे पसंद नहीं था, क्योंकि इस मामले में मेरे पास विकल्प था। अंत में, कुछ देर सोचने और पीर खान की बात सुनने के बाद, मैंने कहा, 'नहीं, नहीं, पीर खान; हम सब जवान हैं, और यश हमें प्रिय है। अगर हम इन लोगों को पुराने तरीके से मार दें, और लूट का माल बड़ा हो, तो हमें बेशक प्रशंसा मिलेगी; लेकिन सोचो, यार, इससे कितना सम्मान मिलेगा, कितना नाम मिलेगा! अगर हम इन लोगों के खिलाफ अपनी जान जोखिम में डालें, और विजयी हों, तो क्या देश का हर ठग 'शाबाश!' और 'वाह, वाह!' नहीं चिल्लाएगा? क्या यह प्रयास सार्थक नहीं है? मैं तुमसे कहता हूँ, नाम धन से बेहतर है; और अगर मरने का समय आ गया है, तो हम मोती और उसके लोगों को बुलाकर इसे टाल नहीं सकते। आखिर वे तो सिर्फ निकम्मे लोग हैं; और क्या हम उस गिरोह के चुने हुए लोग नहीं हैं, और वे ही नहीं हैं जिन पर मामला आड़े आएगा, भले ही सारे लोग आज मौजूद हों? इसलिए कहो, क्या तुम कल सुबह इन लोगों के खिलाफ अपनी जान जोखिम में डालकर उन पर हमला करोगे?

साहब, उन्होंने जरा भी संकोच नहीं किया; सभी ने मेरा अनुसरण करने और मेरे साथ मरने का वचन दिया, चाहे यही उनका भाग्य क्यों न हो।

मैंने कहा, 'तो देखो, तुम्हारी तलवारें म्यान में ढीली हैं, और तुममें से प्रत्येक अपने शत्रु के बाईं ओर, प्रहार करने की दूरी पर तैनात हो जाओ। पीर खान और मैं घोड़े पर सवार हैं, और हम असफल नहीं हो सकते। मुझे पूरा विश्वास है कि कोई खतरा नहीं होगा, और हम सफल होंगे।'

हम तितर-बितर हो गए और अपने साथियों से मिल गए। शाम गाने और सितार बजाने में बीती, जिस पर रोकुरिया परिवार के दो सदस्य और मेरे कुछ साथी माहिर थे; और हम देर रात आराम करने के लिए चले गए, कल अपना काम अच्छे से और बहादुरी से करने के लिए पूरी तरह तैयार थे।

और अगली सुबह आ गई, और सूरज पूरी चमक के साथ निकला; हम उसके तुरंत बाद निकल पड़े, क्योंकि रोकुर्रिया लोग सूरज उगने से पहले यात्रा नहीं करते थे, चोरों या डाकुओं के अचानक हमले के डर से, जो आम तौर पर अंधेरे में यात्रियों पर हमला करते हैं।

मुझे थोड़ी शर्मिंदगी हुई जब रोकुरिया जनजाति के दो लोग अपने साथ लाए ऊंट पर सवार हो गए और कहने लगे कि उनके पैर फटे और सूजे हुए हैं और वे चल नहीं सकते। इससे मैं एक पल के लिए घबरा गया, क्योंकि मुझे लगा कि उन्हें हम पर शक हो गया है, और मैं जानता था कि लगभग सारा खजाना उसी पर लादा हुआ था। लेकिन मैंने हैरानी नहीं जताई और ठान लिया कि अगर उन्होंने भागने का जरा सा भी संकेत दिया, तो मैं ऊंट को घायल कर दूंगा, और इस तरह उसे हमारी ओर भागने से रोक दूंगा, क्योंकि मुझे पता था कि वह बहुत तेज दौड़ सकता है, क्योंकि उन्होंने एक दिन पहले उसे पूरी रफ्तार से दौड़ाया था, यह दिखाने के लिए कि वह घोड़े को भी पीछे छोड़ सकता है।

हम दोपहर तक चलते रहे, और थकान और गर्मी से परेशान होकर सड़क पार करने वाली एक छोटी नदी के पास उतरकर हमें राहत मिली। मैंने सोचा कि उन पर हमला करने का यह अच्छा मौका होगा, लेकिन मेरी निराशा हाथ लगी; वे सब एक साथ रहे, और तब मुझे यकीन हो गया कि उन्हें हमारे इरादों का कुछ-कुछ शक हो गया है; लेकिन मैं हमले को ज्यादा देर तक टाल नहीं सकता था, और मैंने हर हाल में हमला करने का निश्चय कर लिया था, क्योंकि रोकुर्रियास की तेज़ गति से मेरे सैनिक थक रहे थे, और उन्हें उनके साथ बने रहने में बहुत मुश्किल हो रही थी।

बड़े ही सौभाग्य से, नाले को पार करने के लगभग एक पार बाद, हम एक ऊबड़-खाबड़ और पथरीले रास्ते पर आ गए, जिससे ऊँट की गति धीमी हो गई। उसके पैर पत्थरों से छिल गए थे, और वह संभलकर चल रहा था, हालाँकि मैंने देखा कि उसकी पीठ पर सवार लोग उसे आगे बढ़ाने के लिए पूरी कोशिश कर रहे थे। इस धीमी गति ने मेरे आदमियों को अपनी जगह लेने का मौका दिया, और हम थोड़ी दूर तक आगे बढ़ते रहे, लेकिन किसी भी क्षण हमले के लिए तैयार थे। मैं ऊँट के जितना हो सके पास जाना चाहता था, ताकि वह भाग न सके; लेकिन रास्ता और भी खराब हो गया, हमारी गति और भी धीमी हो गई, और मुझे यकीन हो गया कि उसे और तेज़ नहीं किया जा सकता। उस समय हम सब एक साथ थे, और मैंने देखा कि समय आ गया है।

मेरा दिल कितनी ज़ोर से धड़क रहा था! डर से नहीं, साहब, बल्कि उत्साह से—ऐसा उत्साह जैसे किसी जुआरी का हो जिसने अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया हो, और जो मुट्ठी भींचकर, दाँत भींचकर और साँस रोककर कौड़ियों के पलटने का इंतज़ार कर रहा हो, जो या तो उसे बर्बाद कर देगा या उसकी किस्मत बदल देगा।

पीर खान ने मेरी ओर एक नज़र डाली: एक रोकुरिया अपने घोड़े के कंधे पर धीरे-धीरे चल रहा था, दूसरा मेरे पास ही था; और ऊँट पर सवार लोग, हमारी ओर पीठ करके, राजपूतों के जंगली गीतों में से एक को आनंदपूर्वक गा रहे थे, जिसमें बीच-बीच में पैदल चलने वाले और मेरे कुछ साथी, जिन्हें गीत के बोल पता थे, भी उनके साथ शामिल हो जाते थे। जंगली मेरे टट्टू को आगे ले जा रहे ऊँट के ठीक पीछे था, और बाकी सब पीछे थे, लेकिन सभी अपनी-अपनी जगह पर थे। मैंने बस एक बार पीछे मुड़कर देखा कि वे अपनी जगह पर हैं, और संतुष्ट होकर मैंने झिरनी की आवाज़ लगाई—'जंगली पिन लाओ!' मैंने ज़ोर से चिल्लाया।

मेरे साथियों की तलवारें म्यान से चमक उठीं और पल भर में अपने शिकारों के शरीरों में धंस गईं, खून से लथपथ हो गईं। जहाँ तक मेरी बात है, मैंने अपने नीचे वाले साथी का सिर चीर दिया था, और घाव में फंसी मेरी तलवार उसके गिरते ही मेरे हाथ से छूट गई; मैंने उसे उठाने के लिए घोड़े से छलांग लगाई, और तभी मैंने ऊँट को ज़मीन पर पड़ा हुआ, बुरी तरह कराहते हुए देखा; उस पर सवार दोनों आदमी उसके साथ गिर पड़े थे, लेकिन दोनों ने खुद को संभाल लिया था: एक ने जंगली पर हमला कर दिया था, और बेचारा लड़का उससे एकतरफा लड़ाई लड़ रहा था; दूसरा तलवार उठाए मुझ पर झपटा। साहब, मुझे लगा मेरा अंत आ गया है, लेकिन मुझे अपनी ढाल पीठ से हटाने का समय मिल गया, और मैंने उसे बचाव में अपने सामने पकड़ लिया, जबकि मैं हताशा में अपने हथियार को खींच रहा था।

आलिया की जय हो! मेरे अथक प्रयास के आगे वह पराजित हो गई और हम बराबरी पर आ गए। मैंने पहले भी आपको तलवारबाज़ी में अपनी कुशलता के बारे में बताया है, लेकिन रोकुरिया में मुझे अपने जैसा ही प्रतिद्वंद्वी मिल गया: हालाँकि उसके सारे सैनिक उसके चारों ओर पड़े थे, सिवाय एक के—जिसने मेरे बेचारे सेवक को बुरी तरह घायल कर दिया था, और अब पीर खान और एक अन्य सैनिक उसे घेर रहे थे—वह मेरी ही तरह शांत और सतर्क था। हमने जमकर लड़ाई लड़ी और काफी देर तक मुकाबला बराबरी का रहा; हम दोनों की साँस फूल रही थी और हमारी ढालें बार-बार पड़ने वाले वारों से कट रही थीं; अंत में, जब मेरा पैर एक पत्थर पर फिसल गया, तो उसने मेरे सिर पर वार किया: थकावट के कारण उसका वार कमजोर था, वरना वह मुझे मार डालता: उसने मेरी पगड़ी को चीर दिया और मेरे सिर पर मामूली चोट पहुँचाई।

मैं गिरा तो नहीं, हालाँकि उस वार से थोड़ा स्तब्ध रह गया था; वह इस मौके का फायदा उठा सकता था, पर उसने ऐसा नहीं किया। हार के डर से पागल होकर मैं उस पर टूट पड़ा और अपने जोरदार हमले से उसे पीछे हटने पर मजबूर कर दिया: आखिरकार, पीछे हटते हुए वह भी फिसल गया और अपना संतुलन खो बैठा; उसने खुद को संभालने के लिए अपनी तलवार हवा में बेतहाशा उठाई, लेकिन मैंने उसकी तरह मौका नहीं गंवाया; मेरी पूरी ताकत से वार हुआ, और उसकी ओर अचानक छलांग लगाने से उसकी ताकत और बढ़ गई,

और वह गर्दन और कंधे से चीरकर जमीन पर गिर पड़ा—गिरने से पहले ही उसकी लगभग मौत हो चुकी थी। एक पल के लिए मैंने उस बहादुर राजपूत के चेहरे को देखा, और फिर अपने बेचारे लड़के को ढूंढा, जिसका खून तेजी से बह रहा था; उसका घाव भी गर्दन में था, और खून उसके गले में भरकर उसे घुटन पैदा कर रहा था।

मैंने अपनी कमरबंद से उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ; इससे उसे कुछ पल के लिए राहत मिली और उसने पानी माँगा। एक आदमी ने ऊँट से चमड़े का थैला बाँध रखा था जिसमें पानी था, और मैंने उसका मुँह उसके होठों से लगा दिया; उसने थोड़ा पानी पिया और गोरडट के सहारे उठ बैठा।

'मैं मारा गया,' उसने कहा, 'जेमादार—मैं मर रहा हूँ—मेरा अपना खून मुझे गला घोंट रहा है: मैं ठीक नहीं हो सकता। मेरे शरीर को जानवरों के लिए मत छोड़ो, बल्कि दफना दो। उस आदमी ने,' उसने थोड़ी देर रुककर एक मरे हुए व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए कहा, 'उस आदमी की तलवार ने मुझे मार डाला। मैंने ऊँट के पैर की पिछली नसें काट दीं, और वह गिर गया; मैंने सोचा था कि वे दोनों बेहोश हो जाएँगे, लेकिन वह उठ खड़ा हुआ और मुझ पर हमला कर दिया, और मैं उसका मुकाबला नहीं कर सका। तुम सब लोग व्यस्त थे, वरना मेरी मदद करते। लेकिन मरना मेरी नियति थी, और मैंने इसे कल महसूस किया, मृत्यु की कड़वाहट तब मुझ पर छा गई, लेकिन अब मैं संतुष्ट हूँ: दर्द जल्द ही खत्म हो जाएगा।'

यहाँ आकर वह बेहोश हो गया, और हम सब उसके चारों ओर खड़े होकर रोने लगे, क्योंकि वह एक स्नेही लड़का था, और हम सब उसे भाई की तरह प्यार करते थे। लेकिन वह थोड़ा संभल गया, हालाँकि उसके गले में घरघराहट थी, और खून की वजह से वह मुश्किल से बोल पा रहा था।

'मेरी माँ!' उसने धीमी आवाज़ में कहा, 'जेमादार, मेरी माँ! तुम उन्हें और मेरी छोटी बहन को जानती हो। वे अब भूखी मर जाएँगी; लेकिन क्या तुम बेचारे जंगली की खातिर उनकी रक्षा करोगी?' और उसने अपना सिर मेरे हाथ पर झुकाने की कोशिश की, मानो उनके लिए मुझसे मदद की गुहार लगा रहा हो।

मैंने कहा, 'चिंता मत करो, उनकी अच्छी देखभाल की जाएगी, और जब तक अमीर अली जीवित हैं, उन्हें किसी चीज की कमी नहीं होगी।' लेकिन मैं रोने के कारण मुश्किल से बोल पा रही थी, क्योंकि मैं उस बूढ़ी औरत को जानती थी, और उसने अमीर अली को मेरे भरोसे सौंपते हुए उनकी सुरक्षित वापसी के लिए कई प्रार्थनाएँ की थीं। हाय! हम उन्हें उनके भाग्य के बारे में कैसे बता सकते थे!

वह बेचारा लड़का मेरी बातों से संतुष्ट हो गया; वह जवाब देना चाहता था, उसके होंठ हिले भी; लेकिन खून की एक धारा ने उसकी वाणी रोक दी, और अपनी बेजान और धुंधली आँखों से मेरी ओर देखते हुए, उसने अपना सिर मेरे हाथ पर झुकाया और प्रयास में ही मर गया। 'अब,' मैंने वहाँ जमा हुए ठगों से कहा, 'मैं यहाँ एक बात की कसम खाता हूँ, और जब तक तुम इसे स्वीकार नहीं करोगे, तुम मेरे नहीं हो। मैं कसम खाता हूँ कि इस बेचारे लड़के को जो भी हिस्सा मिलना था, वह उसकी माँ को दुगुना कर दिया जाएगा: अभी तक हमें पता नहीं है कि वह कितना है, लेकिन जो भी होगा, उसे दुगुना कर दिया जाएगा।'

'हम सहमत हैं,' सभी ने एक स्वर में कहा; 'बल्कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार इसमें अपना योगदान देगा; यदि जंगली ने ऊंट की टांग न बांधी होती, जिसके बारे में हममें से किसी ने सोचा भी नहीं था, तो वह शायद बच निकलता, बल्कि बच ही जाता: क्योंकि हमने कल उसकी गति देखी थी, और उस पर सवार दोनों राजपूत उसे उठाकर ले जाते।'

मैंने कहा, 'इस नेक वादे के लिए तुम मेरे अपने भाई हो; अब तुममें से कुछ लोग उस बेचारे लड़के के लिए कब्र खोदो। हमें उस जानवर को उतारना होगा और शवों से कपड़े उतारने होंगे। मुझे कुछ दर्द हो रहा है, इसलिए मैं अपना सिर धोकर घाव पर पट्टी बांध लूंगा: तो तुम लोग जल्दी से अपना काम शुरू करो।'

ऊँट अभी भी दर्द से कराह रहा था; उन्होंने उसे उठाने की कोशिश की, लेकिन व्यर्थ; प्रहार से उसके टखने के ऊपर की नस फट गई थी और वह उठ नहीं पा रहा था; इसलिए एक आदमी ने उसका गला काट दिया और उसकी पीड़ा समाप्त कर दी। खजाने से भरे थैलों को मेरे टट्टू और पीर खान के घोड़े और मेरे घोड़े पर लाद दिया गया, और हर आदमी ने अपनी कमरबंद भी भर ली, ताकि हम सारा सामान ले जा सकें। हमने राजपूतों की तलवारें ले लीं; लेकिन बाकी सब कुछ और उनके शवों को कुछ दूर जंगल में घसीटकर ले गए और जल्दी से मिट्टी और पत्थरों से ढक दिया। संघर्ष स्थल की खून से सनी मिट्टी को इकट्ठा करके फेंक दिया गया, और बहुत कम समय में उस जगह पर केवल ऊँट का शव ही बचा रहा, जिसे हम ठिकाने नहीं लगा सके; और मोती और उसके साथियों के मार्गदर्शन के लिए हमेशा की तरह निशान छोड़ते हुए, हम मुख्य सड़क पर आगे बढ़ गए।

आह, हमारी खुशी कितनी अपार थी जब हम उस स्थान पर पहुँचने से पहले ही, जहाँ हमें डेरा डालना था, एक नदी के किनारे बैठकर खुद को धो रहे थे, तभी हमने देखा कि जिस ऊँची पहाड़ी से हम अभी-अभी गुज़रे थे, उसकी चोटी पर हमारा दल आ रहा है! वे बेदम होकर, उत्सुकता और आशा से भरे हुए हमारी ओर दौड़े। सबसे पहले मोती आया और उसने खुद को मेरी बाहों में फेंक दिया। उसने कहा, 'हम आखिरी पड़ाव से जल्दी-जल्दी आगे बढ़े, इस उम्मीद में कि समय रहते हम तुम्हें पकड़ लेंगे; और जब हमने मरा हुआ ऊंट देखा, तो तुम्हें ढूंढने की हमारी बेचैनी कितनी बढ़ गई थी! हमने संघर्ष के निशान देखे, और कुछ खून भी देखा जो तुम्हारी नजर से छूट गया था— जिसे मैंने साफ कर दिया है— और इससे हमारी चिंता और बढ़ गई; लेकिन दवी का शुक्रिया! आखिरकार हमने तुम्हें ढूंढ लिया, और तुम सब सुरक्षित हो। है ना?'

'ऐसा नहीं है,' मैंने कहा; 'हमने बेचारे जंगली को खो दिया है, जो लड़ाई में मारा गया; और मैं घायल हूँ; लेकिन यह केवल एक मामूली चोट है, और कुछ दिनों में ठीक हो जाएगी।'

खजाने का कुछ हिस्सा तुरंत दूसरे टट्टुओं में बाँट दिया गया; और गाँव के बाहर डेरा डालकर, जब हम वहाँ पहुँचे, तो रिवाज़ के मुताबिक़ कुर्बानी देने के बाद, मैंने अपना छोटा सा तंबू लगवाया और सारा खजाना उसमें रख दिया। एक-एक करके थैले खोले गए, और लूट का माल वाकई शानदार था— हमारे द्वारा उठाए गए जोखिम का पूरा फल मिला! उसमें डॉलर, सोने के मोहर और रुपये थे, जिनकी कुल कीमत साठ हज़ार रुपये थी; और एक छोटे से डिब्बे में मोम के कपड़े में सिले हुए बड़े मोतियों की छह मालाएँ भी थीं, जिनकी कीमत

दस हज़ार रुपये से कम नहीं हो सकती थी। हमारी खुशी का वर्णन करने की ज़रूरत नहीं है: हमें कई वर्षों तक आराम, बल्कि समृद्धि मिलने वाली थी, और हर कोई चुपचाप कृतज्ञता से खजाने के ढेर को निहारता रहा। अंत में, सारा खजाना इकट्ठा करके थैलों में भर दिया गया, जिन पर मैंने अपनी मुहर लगा दी।
अब हम जल्दी से अपने घर की ओर चल पड़े, क्योंकि हमें किसी तरह के रोमांच की तलाश नहीं थी, न ही इसकी कोई ज़रूरत थी: केवल दो बदनसीब लोग, जो हमारे साथ आने पर अड़े थे, मारे गए, और एक महीने से भी कम समय में हम अपने गाँव से तीन कदम की दूरी पर थे। मैंने एक आदमी को आगे भेजकर हमारे आने की सूचना दे दी; और, आलिया! अज़ीमा को देखने और अपने बच्चों को एक बार फिर गले लगाने की चाहत में मेरा दिल प्यार और बेचैनी से कितना धड़क रहा था, उन सभी खतरों के बाद जिनका मैंने सामना किया था! अपने घर की दहलीज पर पहुँचने की मेरी बेचैनी कितनी तीव्र थी, जब मैंने उस जाने-माने उपवन को देखा, वह जगह जहाँ से मैं इतनी उम्मीदों से भरी हुई निकली थी, और गाँव की दीवारें और सफेद मस्जिद पेड़ों के बीच से झाँक रही थीं जिनसे वे घिरे हुए थे! मैंने अपने घोड़े को सरपट दौड़ाया, और मैंने अपने पिता और मोएदीन को मुझसे मिलने के लिए आते देखा, मुझे इस्तुकबाल देने के लिए, वापसी का स्वागत करने के लिए; लेकिन, जैसे ही मैं उनके पास पहुँची, उन्होंने अपना सिर झुका लिया, और धीरे-धीरे उदास कदमों से आगे बढ़े। अचानक मेरे दिल में एक दर्द सा उठ गया। मैंने अपने घोड़े से छलांग लगाई और उनकी ओर दौड़ा। मेरे पिता रो रहे थे।
'आलिया की खातिर बोलो!' मैं चिल्लाई। 'यह क्या हो सकता है? अरे, सीधे-सीधे सबसे बुरी बात बता दो, और मुझे बताओ—क्या अज़ीमा मर गई है? यह सस्पेंस मुझे मार डालेगा।'
उस बूढ़े आदमी ने बस कुछ ही शब्द कहे, और उसने मुझे बताया कि मेरा बच्चा, मेरा प्यारा बेटा मर गया है! और अमीर अली रो पड़े।

अध्याय XXXII

लियर। क्या तुम मुझे जानते हो, साथी?
केंट। नहीं, महोदय; लेकिन आपके चेहरे पर वह भाव दिख रहा है।
जिसे मैं स्वामी कहना पसंद करूंगा।
किंग लियर, अंक I, दृश्य 4

हालांकि आम तौर पर अमीर अली जैसे हत्यारे के सुख-दुख के प्रति सहानुभूति जताना मुश्किल होता है, जो इतने जघन्य अपराध से बुरी तरह दागदार था, फिर भी उस क्षण मुझे यह देखकर गहरा सदमा लगा कि लगभग बीस साल बीत जाने के बाद भी, उसके प्यारे बच्चे की मौत का ज़िक्र भी उसे इतना प्रभावित कर सकता था कि उसकी आँखों में आंसू आ जाते थे, और वे आंसू सच्चे थे। मैं दूसरों को उस बदमाश के मन की विचित्र स्थिति पर विचार करने के लिए छोड़ता हूँ, कि कैसे कोमलता की यह भावना उसके चारों ओर पनपे घोर अपराधबोध से दबने से बच गई, और मैं उसके कारनामों का वर्णन जारी रखूंगा।

साहब, उन्होंने कहा, अब मैं आपको अपनी प्रिय अज़ीमा से हुई उस दुखद मुलाकात का ब्योरा देकर क्यों परेशान करूँ? आप खुद ही कल्पना कर लीजिए। हमारी आत्मा उस बच्चे से बंधी हुई थी, और आलिया के हाथों लगे उस आघात को सहने में हमें बहुत समय लगा। लेकिन दुःख की तीव्रता धीरे-धीरे कम हो गई, और हमारी बेटी, सुंदरता में बढ़ती हुई, हमारे विचारों में छाई रही और हमारी देखभाल और ध्यान का केंद्र बनी रही।

हमारे लौटने के कुछ समय बाद, एक दिन मेरे पिता मेरे पास आए और चिंता भरे चेहरे के साथ बोले कि ऐसी अफवाह फैली है कि हम पर शक किया जा रहा है और उन्हें लगता है कि हमारा गाँव अब हमारे लिए सुरक्षित नहीं है। हम कोई जोखिम नहीं उठा सकते थे; खबर में सच्चाई हो भी सकती थी और नहीं भी, लेकिन सुरक्षित आश्रय पाना हमारा कर्तव्य था। इसलिए, मैं और मेरे पिता अंग्रेजों से अभी तक स्वतंत्र हुए विभिन्न राज्यों का दौरा करने और यह पता लगाने के लिए निकल पड़े कि क्या उनमें से कोई शासक हमें एक निश्चित कर के भुगतान पर निवास की अनुमति देगा, जैसा कि हमारा समुदाय सिंधिया की सरकार को तब दिया करता था जब हमारा गाँव उस राजकुमार के अधीन था। हम उसी के अनुसार रवाना हुए और बुंदेलकुंड में कई शासकों से मिलने के बाद (क्योंकि हम अपने घर से आगे जाने के इच्छुक नहीं थे), झालोन के राजा ने हमारा स्वागत किया और गणेश जमादार ने हमारा उनसे परिचय कराया, जो उनकी देखरेख में था और जिसने अपने मैत्रीपूर्ण व्यवहार के बदले में लूट का अच्छा हिस्सा राजा को दिया था।

हमारी बातचीत लंबी चली: राजा कुछ समय तक हमें शरण देने के परिणामों से भयभीत थे, या उन्होंने कृपा दिखाने के लिए ऐसा होने का नाटक किया; लेकिन हमने उनके सेवकों और भरोसेमंद नौकरों को भरपूर रिश्वत दी और अंततः अपने उद्देश्य में सफल हो गए। हमें उनकी सरकार को प्रति वर्ष तीन सौ रुपये का कर देना था, उन्हें कोई भी दुर्लभ या मूल्यवान वस्तु भेंट करनी थी जो हम प्राप्त करते, और प्रतिष्ठा बनाए रखने के

लिए, मेरे पिता उनकी राजधानी से थोड़ी दूरी पर स्थित तीन गांवों में खेती करने के लिए सहमत हो गए। यह सब इस बात पर समाप्त हुआ कि हमने उन्हें पिछली यात्रा में लाई गई मोतियों की मालाओं में से एक, मेरी अपनी सुंदर तलवार और लगभग पांच हजार रुपये मूल्य की अन्य वस्तुएं भेंट कीं। जब हम इस प्रकार आपसी सहमति से संतुष्ट हो गए, तो मेरे पिता और कुछ लोग वहीं रुक गए, जबकि मैं और बाकी लोग अपने परिवारों को लाने के लिए अपने गांव लौट गए।

मैं स्वीकार करती हूँ कि मैंने अपना घर बड़े दुख के साथ छोड़ा; वहाँ हमने कई खुशनुमा दिन बिताए थे, और हम गाँव वालों के प्रिय थे, जिन्हें हमने अपने सौम्य व्यवहार से अपना बना लिया था। अब हमें एक नए देश की तलाश करनी थी, और नए रिश्ते बनाने थे—जो किसी भी परिस्थिति में अप्रिय बात थी। लेकिन मेरे पिता की बुद्धिमत्ता ने हमें बचा लिया। अंग्रेज़ अधिकारियों को जो जानकारी मिली थी—केवल आलिया ही जानती है कैसे—वह सही थी। अपने नए घर में बसने के कुछ ही महीनों बाद, हमें पता चला कि मुर्नाए के पूरे पुरगुन्ना पर गाँव-गाँव हमला हो गया था। ठगों में से कई सर्वश्रेष्ठ और बहादुर अपने घरों की रक्षा करते हुए शहीद हो गए थे; बचे हुए लोग भाग गए थे, तितर-बितर हो गए थे, और उन लोगों के पास शरण ली थी जिन्होंने हमारी तरह पहले ही बस्तियाँ बना ली थीं।

जहां तक मेरा सवाल है, जब तक मेरे पास धन था, मैं नए जोखिम उठाने के मूड में नहीं था। मैंने ठगों में सर्वोच्च पद प्राप्त कर लिया था, क्योंकि पिछली यात्रा से लौटते ही मुझे सूबेदार घोषित कर दिया गया था; और मैं आराम से रहना चाहता था और अपने पिता को उन गांवों के प्रबंधन में सहायता करना चाहता था जो हमें सौंपे गए थे और जिनसे हमें अच्छी आय होती थी। इसलिए, फिलहाल ठगी का काम छोड़ दिया गया था; और हालांकि गणेश, जो एक उग्र और बेचैन स्वभाव के थे, अक्सर हमें किसी अभियान में शामिल होने के लिए उकसाते थे, हमने ऐसा करने से परहेज किया और शांतिपूर्वक और सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत किया।

गणेश जी के बारे में कुछ ऐसा था जो मुझे रहस्यमय लगता था, और राजा के दरबार में उन्हें देखते ही मेरे मन में एक ख्याल कौंध गया कि मैं उनसे पहले भी दुखद परिस्थितियों में मिल चुका हूँ। तमाम कोशिशों के बावजूद मैं उस रहस्यमयी भावना को पूरी तरह से भुला नहीं पाया और उनके साथ सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित नहीं कर पाया; और मेरे पिता के साथ उनकी घनिष्ठता और उन पर गणेश जी की सलाहों के स्पष्ट प्रभाव को मैं संदेह और अविश्वास की दृष्टि से देखता था। गणेश जी कद में लंबे और बलवान थे, लेकिन उनका चेहरा अब तक देखे गए किसी भी चेहरे से कहीं अधिक भयावह था, और उनके व्यवहार में एक क्रूरता थी जो मुझे घृणास्पद लगती थी। खैर, अभी इस बात को छोड़ दें; उनका मेरी कहानी से कोई लेना-देना नहीं है, आगे चलकर मुझे उन्हें आपके सामने स्पष्ट और अप्रिय तरीके से प्रस्तुत करना पड़ेगा।

लगभग तीन साल शांति से बीत गए, और मुझे याद नहीं कि कोई ऐसी घटना हुई हो। मेरी कोई संतान नहीं थी, और मेरी बेटी सुंदरता और शालीनता की मिसाल बनकर बड़ी हो रही थी। मैं खुश थी, और घर छोड़ने का सपना भी नहीं देखती, अगर राजा की बेईमानी और सूखे की एक दुर्भाग्यपूर्ण ऋतु न होती। पहली वजह से हमें पाँच हज़ार रुपये देने पड़े, जो उसने हमें पकड़ने की धमकी देकर माँगे थे; और दूसरी वजह से हमारे

खेती वाले गाँवों में हमें काफ़ी नुकसान हुआ, जिनकी संख्या अब सात थी, और जिनके लिए उसने हमें पूरी कर वसूली करने के लिए मजबूर किया। इन रकमों ने हमारी संपत्ति को बुरी तरह कम कर दिया; और मैंने लूटपाट के लिए एक गिरोह बनाने के लिए लोगों की तलाश शुरू की। लेकिन उन्हें इकट्ठा करना आसान नहीं था, क्योंकि मेरे अपने आदमी देश के दूर-दराज के हिस्सों में बिखर गए थे, और उन्हें बहुत खर्च और समय की कुर्बानी के बिना एक साथ लाना संभव नहीं था।

ठीक इसी समय पूरे देश में यह अफवाह फैल गई थी कि चीतू और अन्य प्रमुख पिंडारी सरदार बरसात के बाद, दशहरा के त्योहार पर अपनी सेनाएँ इकट्ठा करेंगे और उन्होंने अब तक के सबसे बड़े अभियान की योजना बनाई है; एक ऐसा अभियान जो निश्चित रूप से इसके सभी सदस्यों को समृद्ध करेगा और अंग्रेज़ सरकार में दहशत पैदा करेगा। यह विचार मुझे बिल्कुल पसंद आया; मैं पेशे से नहीं, बल्कि स्वभाव से सैनिक था; और मैंने सोचा कि अगर मैं कुछ चुनिंदा, अच्छे घोड़ों वाले सैनिकों के साथ किसी भी दल में शामिल हो जाऊँ, तो हम उतना ही सफल हो सकते हैं जितना कि हम खुद किसी अभियान पर निकलें। इसके अलावा, बाद वाली योजना में सफलता की कोई उम्मीद नहीं थी, क्योंकि सड़कें पिंडारी गिरोहों से भरी होंगी, जो यात्रियों और ठगों को बख्शते नहीं थे; वे ठगों को तो घोर शत्रुता की दृष्टि से देखते थे।

इसलिए मैंने अपनी तैयारियों में जुट गया। पीर खान और मोती अभी भी हमारे पास ही थे, और जब मैंने उन्हें अपनी योजना बताई, तो वे बड़ी तत्परता और उत्साह से उसमें शामिल हो गए। उनके पास अच्छे घोड़ों के लिए पर्याप्त धन था, और कुछ समय बाद वे यात्रा के लिए पूरी तरह तैयार होकर लौट आए। मैंने उनसे कहा था कि वे हमारे साथ चलने के लिए कुछ अच्छे साथियों का इंतजाम करें, जिन्हें वे ले आए; लेकिन हमारे संयुक्त संसाधनों से उनके लिए घोड़े खरीदना संभव नहीं था, और पैदल तो वे किसी काम के नहीं होते। अपनी इस दुविधा पर विचार करते हुए मेरे मन में एक विचार आया कि शायद राजा बाद में दुगुना भुगतान करने के वादे पर घोड़े उधार दे दें या बेच दें। मैंने ऐसी बातें सुनी थीं, और मैंने ठान लिया कि जो भी संभव हो, कोशिश करके देखूं।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई जब राजा मान गए, और यह मेरी अपेक्षा से कहीं कम कठिनाई से हुआ, क्योंकि मैं उनका प्रिय बन चुका था। मुझे उनके अस्तबल से पाँच घोड़े लेने की अनुमति दी गई, जिनकी कीमत प्रत्येक घोड़े के लिए तीन सौ रुपये थी, जिसमें उनकी काठी और साजो-सामान भी शामिल थे, और यह राशि हमारे सफल होने पर दोगुनी कर दी जानी थी। राजा ने वास्तव में मेरे द्वारा दिए गए सुझाव के लिए मुझे धन्यवाद दिया, और कई अन्य लोगों ने भी इसी तरह की शर्तों पर घोड़े प्राप्त किए, बशर्ते उन्होंने उन शर्तों के पालन की गारंटी दी हो जिनके तहत उन्होंने घोड़े लिए थे।

मेरी अंतिम व्यवस्थाएँ शीघ्र ही पूरी हो गईं। हम सभी अपनी सामर्थ्य के अनुसार सर्वोत्तम हथियारों और साजो-सामान से सुसज्जित थे; और मुझसे और मेरे सात साथियों से बेहतर घुड़सवारों और वीर-दिखने वाले किसी छोटे दल ने कभी साहसिक यात्रा पर प्रस्थान नहीं किया था। प्रस्थान करने से पहले हमने शकुन देखे, जो शुभ थे, और हमने प्रस्थान की सभी रस्में ठीक उसी प्रकार निभाईं जैसे हम किसी ठग्गी अभियान पर जा रहे हों।

कुछ समय बाद हम चीतू के निवास स्थान नेमावुर पहुँचे। यहाँ हिंदुस्तान के हर कोने से लोग एकत्रित थे, जो अपनी जनजातियों और वेशभूषा, हथियारों व साजो-सामान में एकरूपता लिए हुए थे। नेमावुर के आसपास का इलाका उनसे भरा हुआ था, और पूरा शहर सक्रिय सेवा और विशेष रूप से लूटपाट की आशा से आकर्षित मनुष्यों की भीड़ से भरा हुआ प्रतीत हो रहा था। हमने तुरंत सरदार के दरबार में प्रवेश किया और उन्होंने हमारा हार्दिक स्वागत किया। मैंने अपनी तलवार की मूठ को नज़ूर के रूप में प्रस्तुत करके रिवाज़ के अनुसार अपनी सभा की शुरुआत की; और अपने सबसे कीमती वस्त्र पहनकर, मेरा स्वागत ऐसे किया गया मानो मैं किसी उच्च पदस्थ सरदार हूँ और मेरे पास सात नहीं बल्कि सैकड़ों सैनिकों की कमान है।

चीतू एक सुंदर पुरुष और वीर नेता थे। उन्हें युद्ध के मैदान में मरना चाहिए था, न कि उस दयनीय तरीके से जिस तरह उनकी मृत्यु हुई। लुभुरों का नेतृत्व करने वाले किसी भी नेता ने लूट के बंटवारे में चीतू पिंडारी से अधिक न्यायसंगत निर्णय नहीं लिया; अपने अधीन सैनिकों की ज़रूरतों और शिकायतों पर चीतू पिंडारी से अधिक ध्यान देने वाला कोई नहीं था। इसी कारण उन्हें इतने सारे अनुयायी मिले, जबकि उनकी व्यक्तिगत सक्रियता और साहस ने उनके सैनिकों को परिश्रम और प्रतिस्पर्धा के लिए प्रेरित किया। कोई भी चीज़ उन्हें थका नहीं सकती थी; मैंने अक्सर उन्हें लंबी और थका देने वाली यात्रा के बाद देखा है, जब हममें से अधिकांश के लिए अपने घोड़ों पर बैठे रहना भी मुश्किल होता है, वे मोर्चे पर दौड़ पड़ते हैं और अपने शानदार घोड़े को दौड़ाते हैं, जो उन्हें ऐसे वीरतापूर्वक ले जाता है मानो वे कुछ मील की सुबह की सवारी से लौट रहे हों।

जैसा कि मैंने कहा, चीतू मेरी शक्ल देखकर हैरान रह गया, जब मैंने अपना परिचय झालोन के एक गरीब स्यूद के रूप में दिया, जो उसके आगामी अभियान में उसके अधीन सेवा करने का इच्छुक था।

'ओह,' उसने कहा, 'झालोन से! मेरे मित्र, तुमने बहुत दूर का सफर तय किया है; फिर भी तुम्हारा स्वागत है, जैसे हर बहादुर घुड़सवार का होता है जो चीतू की सेवा में एक अच्छा घोड़ा और नेक दिल लेकर आता है। तुम मेरी सेवा की शर्तें जानते हो; मैं कोई वेतन नहीं देता, बल्कि उतना ही लूटा हुआ माल देता हूँ जितना तुम अपनी मेहनत से ला सकते हो: लोग तुम्हें बता देंगे कि उसमें मेरा हिस्सा कितना है; और मैं तुम्हारी ईमानदारी की उम्मीद करता हूँ, क्योंकि अगर तुम बदमाश हो तो तुम्हारा चेहरा तुम्हें धोखा दे देगा।'

मैंने कहा, 'मैं शर्तें जानता हूँ और उन्हें स्वीकार करूँगा; लेकिन मैं अपने साथ कुछ दोस्तों को लाया हूँ जो मेरे भाग्य में भागीदार बनना चाहते हैं, और यदि हुजूर की इच्छा हो तो मैं उन्हें भी ले आऊँगा।'

'ज़रूर,' उसने उत्तर दिया; 'लेकिन अभी मैं व्यस्त हूँ: शाम को सभा स्थल पर अपने आदमियों के साथ मुझसे मिलो, और मैं उन्हें और तुम्हारे घोड़ों को देख लूँगा, क्योंकि दुरा में मैं तुम्हें जो स्थान आवंटित करूँगा वह उनकी योग्यता पर निर्भर करता है।'

मैंने प्रणाम किया और चला गया। मेरी मुलाकात चीतू के सरदारों में से एक, ग़फ़ूर खान से हुई थी, जो देखने और व्यवहार में बिलकुल जंगली था, जिसके चेहरे पर पिंधारीपन साफ झलकता था, और जिसने दोस्त मोहम्मद और कुरीम खान के दरबारों में बड़ी कुशलता से सेवा की थी। उसने ही मुझे चीतू से मिलवाया था, और अब जब वह दरबार से मेरे साथ जा रहा था, तो उसने मुझे आगे की राह के बारे में निर्देश दिए।

उसने कहा, 'शहर के उस पार मैदान में तुम हमसे मिलोगे, और देख लेना कि तुम्हारे सभी घोड़े अच्छी हालत में हों, तुम्हारे सैनिक अच्छे कपड़े पहने और हथियारों से लैस हों। मैं यह कहने का साहस करता हूँ कि तुम सब मेरी उस टुकड़ी में शामिल होगे, जिसे नेतृत्व करने का गौरव प्राप्त है और जो लड़ाई और लूटपाट में सबसे आगे है। मुझे तुम्हें पाकर खुशी होगी, और मैं कोशिश करूँगा कि क्या मैं तुम्हें अपनी टुकड़ी के एक-दो सौ सैनिकों की कमान दिला सकता हूँ। हमें नेताओं की ज़रूरत है, और तुम्हारी शक्ल देखकर मुझे लगता है कि तुम मेरे संरक्षण के साथ न्याय करोगे।'

मैंने कहा, 'यही तो मेरी हमेशा से ख्वाहिश रही है; और अगर आप मुझ पर कृपा करेंगे, तो मैं आपको प्रसन्न करने की पूरी कोशिश करूंगा। यह सच है कि मैंने अभी तक कोई सेवा नहीं की है; लेकिन जब मन में इच्छा होती है तो यह आसानी से सीखा जा सकता है।'

हम अलग हो गए, और मैं अपने आदमियों के पास जल्दी से गया ताकि उन्हें हमारे नए सरदार के निरीक्षण के लिए तैयार कर सकूँ। हमारे घोड़े अब यात्रा की थकान से आराम कर चुके थे और अच्छी हालत में थे; हमारे हथियार साफ और तेज किए हुए थे। हमने पिंडारियों की खास लंबी भाला ले ली, जो हजारों की संख्या में बिक रही थी; और तय समय पर मैं अपने छोटे से दल को उस जगह ले गया, जहाँ लगभग सौ घुड़सवार पहले से ही इकट्ठा थे। मैंने खुद को सब्ज़ी खान के कवच में सजाया था, जो एक शानदार कवच था; और मेरा शानदार घोड़ा, मेरे साथ उछल-कूद करते हुए, अपने सवार पर गर्व करता हुआ और खुश लग रहा था कि आखिरकार उसे एक ऐसा दृश्य मिल गया है जो उसके जोशीले स्वभाव के अनुकूल है। पीर खान और मोती भी प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले थे, और लगभग मेरी ही तरह अच्छे घुड़सवार थे; और बाकी लोग भी उतने ही अच्छे थे, बल्कि शायद मुझसे भी बेहतर, जितने कि वहाँ मौजूद अधिकांश लोग थे।

मैंने उनसे कहा, 'सब साथ रहो; इधर-उधर मत भटकना, वरना हमारा दल असलियत से कहीं ज्यादा महत्वहीन लगेगा। जब मुखिया आता हुआ दिखे, तो मेरी हरकतों पर नज़र रखना और मेरे पीछे आना।'

सूर्यास्त से बहुत पहले चीतू शहर से निकला, उसके साथ कल्पना से परे वीर सैनिकों का एक दल था। विभिन्न दर्रों के नेता उसके चारों ओर थे, प्रत्येक अपने वस्त्रों, हथियारों और घोड़े की साज-सज्जा में एक दूसरे से बढ़कर भव्य और वीर भाव से परिपूर्ण था। उसके आगे, अपने घोड़े को अद्भुत ढंग से उछालते और झुलाते हुए, गफूर खान सवार था, जो जंजीरदार कवच पहने हुए था और डूबते सूरज की लाल किरणों में चमक रहा था। दिखने में कोई भी उसकी बराबरी नहीं कर सकता था, हालांकि कई घुड़सवार देखने में भव्य थे; और कोई भी अपने घोड़े को उस सहजता और सुंदरता से नहीं चला सकता था जैसा वह चला रहा था।

'यही वह आदमी है!' मैंने उत्साह से पीर खान से कहा; 'यही वह आदमी है जिसके अधीन हमें सेवा करनी है; क्या वह बहादुर नहीं है? अब मेरे पीछे आओ।' और मैंने अपने बेचैन घोड़े की लगाम ढीली छोड़ दी, और झट से आगे बढ़ते हुए पल भर में अपने आदमियों के साथ चीतू के पास पहुँच गया। मैंने अपना भाला ज़मीन पर गिरा दिया, अपने घोड़े को उसके पास बिठाया, और काठी के धनुष को प्रणाम करते हुए कहा कि मैं अपने आदमियों को उनके निर्देशानुसार लाया हूँ, और उनके आदेशों की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

चीटू ने अपने घोड़े को रोका और एक पल के लिए मुझे प्रसन्नता से देखा।
अंत में उसने कहा, 'तुम एक शानदार नौजवान हो, और तुम्हारे सैनिक बेहतरीन घोड़ों पर सवार हैं। काश तुम्हारे साथियों की संख्या सैकड़ों में होती। खैर, कुछ किया जा सकता है। तुम्हारा क्या कहना है, ग़फ़ूर खान, क्या मीर साहब तुम्हारे साथ सेवा करेंगे? और क्या तुम्हारे पास उनके अधीन कुछ सौ सैनिक होंगे?'
'क्या मैं आपकी कुर्बानी बन सकता हूँ!' खान ने पुकारा, 'यही तो आपका सेवक भी चाहता। मुझे मीर साहब पहली नज़र में ही पसंद आ गए थे, और अब जब उन्होंने ठीक से कपड़े पहने हैं, तो आलिया की कसम! वे सचमुच एक रौस्तम हैं, और (मेरी धृष्टता के लिए क्षमा करें) गफूर खान को अपने लिए एकमात्र उपयुक्त साथी लगते हैं।'
'तो ऐसा ही हो,' चीटू ने कहा; 'उसे अपने साथ ले जाओ, और ध्यान रखना कि तुम उसके साथ नरमी से पेश आओ।'
'आओ,' खान ने मुझसे कहा, 'तो फिर आओ, मीर साहब, उन लोगों में से किसी एक से भाला ले लो; यहाँ एक दुर्लभ मैदान है, और मुझे देखना होगा कि तुम अपने हथियार के उस्ताद हो या नहीं।'
मैंने कहा, 'मुझे डर नहीं है; मुझे भाले के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। पैदल और तलवार से मैं सेना के सर्वश्रेष्ठ योद्धा से भी नहीं डरूंगा; फिर भी, आपको प्रसन्न करने के लिए, मैं कोशिश करूंगा।'
मैंने भाला उठाया, जो एक लंबा, हल्का बांस था, जिसके सिरे पर रुई का एक बड़ा भरा हुआ गोला लगा था, जिससे लाल कपड़े की कई छोटी-छोटी पट्टियाँ लटक रही थीं, और मैं ग़फ़ूर खान के पीछे-पीछे मैदान में आगे बढ़ गया।
हम बारी-बारी से एक-दूसरे का पीछा करते रहे, कभी आक्रमण के लिए आगे बढ़ते, कभी पीछे हटते, वहाँ मौजूद घुड़सवारों की जय-जयकार के बीच, जो उत्सुकता से देख रहे थे कि एक बिल्कुल अजनबी सेना के सबसे कुशल घुड़सवार के सामने कैसा व्यवहार करेगा। काफी देर तक हम दोनों में से किसी को भी दूसरे पर कोई बढ़त नहीं मिली; हमारे घोड़े बेहतरीन ढंग से प्रशिक्षित थे, और न ही किसी ने दूसरे को भाले के वार की पहुँच में आने दिया। यही इस द्वंद्वयुद्ध की खूबी थी, और हर नाकाम वार या सोचे-समझे वार से सफल बचाव पर 'शाबाश! शाबाश!' की आवाजें गूँज उठती थीं। अंत में खान ने मुझे छू लिया; यह बस एक खरोंच थी, जो मेरी बांह पर लगी, क्योंकि मैंने घोड़े को मोड़ने में एक पल की देरी कर दी थी, और उसने जीत की घोषणा कर दी।
'मैं इसे स्वीकार करता हूँ,' मैंने कहा, जब हमारे घोड़े हाँफते हुए खड़े थे, 'क्योंकि जैसा कि आप जानते हैं, मैं इस हथियार के इस्तेमाल में नौसिखिया हूँ; फिर भी यदि आप मुझे एक और मौका देंगे, तो मैं फिर से आपके साथ भाले से मुकाबला करूँगा और देखूँगा कि क्या मेरी किस्मत बेहतर होती है।'
'अच्छा,' वह हंसते हुए बोला; 'लेकिन सावधान रहो, मैं तुम्हें चेतावनी देता हूं कि मैं दया नहीं करूंगा; एक युवक के हाथ की पसलियों पर एक जोरदार प्रहार उसे उसकी कमजोरी का एहसास कराता है, और उसे हमेशा के लिए सावधान कर देता है।'

'चलो ना,' मैंने कहा; 'अगर हो सके तो मैं भी तुम्हारी तारीफ करूंगा।'
हमने फिर एक बड़ा चक्कर लगाया और अच्छी गति से एक-दूसरे के करीब आते गए, यहाँ तक कि हम लगभग भाले की दूरी पर आ गए। खान ने अपना वादा निभाया और मुझ पर कई बार तीखे हमले किए। हालाँकि, मैंने अपने घोड़े की फुर्ती से उन्हें बचा लिया और मैंने साफ देखा कि वह किसी भी कोशिश में मेरे इतने करीब नहीं आ सकता कि निर्णायक प्रहार कर सके। उसका घोड़ा भी मेरे घोड़े से मोटा होने के कारण अधिक थका हुआ था; और उसे कुछ देर तक व्यर्थ में मेरा पीछा करते हुए मेरे घोड़े को थकाने देने के बाद, मैंने अचानक अपनी स्थिति बदल ली और उस पर हमला कर दिया। मेरा मानना है कि मैं उससे अधिक शांत और सतर्क था, क्योंकि वह इस बात से नाराज़ लग रहा था कि एक अजनबी उसके पसंदीदा अभ्यास में उसके साथ इतनी बराबरी पर है; उसने मेरे हमलों को उतनी सटीकता से नहीं रोका जितना पहली मुठभेड़ में, जब उसे छूने के मेरे तमाम प्रयासों के बावजूद, उसने मुझे चकमा दिया और मुझ पर हँसा। फिर भी मैं उसे छू नहीं पाया था; और मेरे लगातार पीछा करने से थककर, उसने फिर से मुड़कर हमला करने की कोशिश की; लेकिन क्या उसका घोड़ा मुड़ने में धीमा था, या मैं उसके बहुत करीब था जिससे वह वार से बच नहीं पाया, यह मुझे नहीं पता; लेकिन जैसे ही उसने मेरे पीछे से निकलने की कोशिश की, मैंने अचानक अपने घोड़े को घुमाया, अपनी एड़ियों से उसकी पसलियों पर वार किया, और जैसे ही उसने कुछ गज की छलांग लगाई, मैंने अपना भाला सीधे खान की चौड़ी छाती पर मारा, जिससे वह कुछ हद तक स्तब्ध रह गया। हमारे आसपास के लोगों ने जोर से चिल्लाकर मेरी जीत की घोषणा की, और खान स्वयं, हालांकि अपनी हार से शर्मिंदा था, सरदार के सामने मेरी प्रशंसा करने वालों में सबसे आगे था।
'अलिया की कसम!' उसने कहा, 'मीर साहब, आप इस काम में माहिर हैं; आपने मेरे साथ चाल चली है।'
'खान, मैं तुम्हारी दाढ़ी और कुरान की कसम खाकर कहता हूँ कि मैंने ऐसा नहीं किया; यह महज़ संयोग था। आलिया जानती है कि दो दिन पहले तक मैंने कभी भाला हाथ में नहीं लिया था। मैंने तो बस देखा कि तुमने मुझे मारते समय क्या किया, और मेरी किस्मत मेरे अच्छे घोड़े की वजह से ही है। लेकिन यह सब संयोग था, और यद्यपि मैं इस जीत को महत्व देता हूँ, फिर भी मुझे इस बात का अफसोस है कि ऐसे संयोग से तुम्हें चोट पहुँची।'
'नहीं, मुझे कोई चोट नहीं लगी है, स्यूद,' उसने उत्तर दिया, 'और मैं इन सब बातों को अच्छे स्वभाव से सहन करता हूँ; लेकिन अगर तुम तलवार चलाने में उतने ही माहिर हो जितना कि भाले चलाने में, तो शिविर में कोई भी तुम्हारे सामने टिकने वाला नहीं होगा।'
मैंने कहा, 'किसी को चुनौती देना मेरे लिए घमंड की बात होगी, क्योंकि मैं आप लोगों के बीच अजनबी हूँ; फिर भी अगर महान चीटू मुझे आजमाना चाहते हैं, तो मैं कल अपनी क्षमता का प्रदर्शन करने की कोशिश करूँगा।'

'वाह, वाह!' सबने खुशी से चिल्लाया; और चीतू स्वयं, ग़फ़ूर खान के साथ मेरी मुठभेड़ के परिणाम से बेहद प्रसन्न होकर, मुझे अपने निवास पर शीघ्र उपस्थित होने के लिए कहा, जहाँ वह कुछ अच्छे तलवारबाजों को आमंत्रित करेगा ताकि वे हमें अभ्यास करते हुए देख सकें।

खंड II का अंत

खंड III

अध्याय XXXIII

अमीर अली ने अपने डेब्यू में कैसा प्रदर्शन किया
एक पिंडारी, और कैसे उमरावती के सहौकरों ने इसे प्राप्त किया
उनके अवांछित आगंतुक

अगली दोपहर हम सब कस्बे के बाहर एक छोटे से मैदान में इकट्ठा हुए; चीतू ने पिंडारी शैली में अपना कालीन बिछाया था और अपने सरदारों के साथ बैठा था, अपने हाव-भाव से वह लड़ाई को उत्सुकता से देखने का संकेत दे रहा था। वह मेरे प्रति बहुत विनम्र था और उसने मुझे अपने पास बैठने के लिए कहा, जब तक कि कुछ तैयार सैनिक अपनी कुशलता और पराक्रम का प्रदर्शन न कर दें। उसके संकेत मिलते ही, दो बलवान राजपूत घेरे में कूद पड़े और कुछ देर तक एक-दूसरे की ढालों पर लाठियाँ बजाते रहे, लेकिन किसी ने दूसरे को छुआ तक नहीं।

'क्या इससे आपको खुशी हुई?' चीटू ने मुझसे कहा। 'देखो, ये लोग अपने हथियारों में माहिर हैं: अगर उनके हाथों में तलवारें होतीं तो उनमें से कोई भी खून नहीं बहाता।'

मैंने कहा, 'वे काफी कुशल हैं, लेकिन मुझे लगता है कि वे पहले भी साथ खेल चुके हैं और एक-दूसरे के तौर-तरीकों से वाकिफ हैं; वे बहुत दिखावा करते हैं, लेकिन अगर मुझे माफ किया जाए तो, मुझे लगता है कि उनमें से किसी के पास भी असल कौशल नहीं है। अगर मेरे स्वामी चाहें, तो मैं उनमें से किसी एक को आज़माऊंगा।'

उन्होंने कहा, 'ध्यान रखना कि तुम कमजोर न पड़ जाओ; मैं तुम्हारी बेदाग प्रतिष्ठा को धूमिल नहीं होने देना चाहता। तुमने पहले ही मेरे मन में तुम्हारे प्रति काफी रुचि जगा दी है।'

मैंने कहा, 'मेरे लिए चिंता मत करो; मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा।'

मैंने अपने सारे कपड़े उतार दिए और सिर्फ़ अपनी पतलून पहने रह गया। मैंने अपनी कमर पर एक रुमाल कसकर बाँधा और घेरे में प्रवेश किया, जहाँ मेरा इंतज़ार एक व्यक्ति कर रहा था, जो अपने पहले मुकाबले के बाद आराम कर चुका था। मैंने पीर खान से एक छड़ी और टोकरी से बनी एक छोटी ढाल ली, जो उन्हें लेकर आया था, और मैं बीच में पहुँच गया। सभा में कानाफूसी होने लगी कि मैं अपने प्रतिद्वंद्वी के मुकाबले कमज़ोर हूँ, क्योंकि उन्होंने मेरे दुबले-पतले शरीर की तुलना उसके लंबे और बलवान शरीर से की; लेकिन मैं इससे विचलित नहीं हुआ। मैं अपनी कुशलता जानता था और यह भी कि केवल शारीरिक बल इसके आगे कुछ खास काम नहीं आएगा।

मैंने राजपूत से पूछा, 'यह कैसे होगा? क्या पहला वार ही हमारे बीच फैसला करेगा?'

'ज़रूर,' उसने जवाब दिया। 'मैं ज़ोरदार प्रहार करूँगा, इसलिए सावधान रहो।'

'अच्छा,' मैंने कहा: 'अब अपनी जगह ले लो।'

उसने ऐसा ही किया। वह घेरे के एक किनारे पर चला गया और धीरे-धीरे मेरी ओर बढ़ा, कभी झुककर अपनी ढाल वाली भुजा को अपने घुटने पर टिकाकर मुझे एक पल के लिए देखता, और कभी मेरे चारों ओर चक्कर लगाता, कभी एक पैर पर खड़ा होता और फिर दूसरे पर, और अपनी छड़ी को हवा में लहराता।

मैं एकदम स्थिर और बेपरवाह मुद्रा में खड़ा रहा, लेकिन पूरी तरह सतर्क था, क्योंकि मुझे पता था कि उसके पीछे जाने में कुछ जोखिम हो सकता है। मुझे स्पष्ट रूप से पता था कि उसे इसकी उम्मीद नहीं थी, क्योंकि वह एक पल के लिए असमंजस में लग रहा था, लेकिन अंत में वह दो-तीन छलांगों में मुझ पर झपटा और मेरे सिर पर वार किया। मैं पूरी तरह तैयार था, क्योंकि मैं उसके हमले का तरीका जानता था; मैंने वार को अपनी ढाल पर सहा, लाठी को उसके नीचे दबा लिया, और उसके निहत्थे शरीर पर ऐसे वार किए कि वह पूरी तरह से चकित रह गया।

सभा तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठी, और दूसरे राजपूत ने आगे बढ़कर मुझे सलाम किया।

उन्होंने कहा, 'मेरे मित्र भीम सिंह के साथ तो तुम्हारा काम बहुत कम समय का था; लेकिन अब तुम्हें मुझसे मुकाबला करना होगा।'

मैंने जवाब दिया, 'मैं तैयार हूं; इसलिए अपनी-अपनी जगह पर जाओ।'

अब मेरे सामने एक ऐसा प्रतिद्वंद्वी था जो मेरे बराबर का था; वह मेरी खेल शैली जानता था, और सचमुच मुझे लगा जैसे मैं उस पल अपने पुराने प्रशिक्षक से भिड़ रहा हूँ; लेकिन मैं उसे अक्सर हरा देता था, और मुझे अपने सामने वाले व्यक्ति से डर नहीं था। हम जल्द ही एक-दूसरे से भिड़ गए: वह मेरी ही तरह शांत और सतर्क था, और एक लंबे संघर्ष के बाद, जिसमें किसी को भी बढ़त नहीं मिली, हम दोनों हाँफते हुए थोड़ी देर आराम करने के लिए रुके।

'बस करो, बस करो!' चीटू चिल्लाया; 'तुम दोनों ने बहादुरी दिखाई है; कोई भी नहीं जीता है, और बेहतर होगा कि तुम इस मामले को ऐसे ही रहने दो।'

'ऐसा नहीं है, खोदावुंड,' मैंने कहा; 'चलो इसे खत्म करते हैं; हममें से किसी एक को तो जीतना ही होगा, और मेरा मित्र भी मेरी ही तरह यह देखना चाहता है कि हम दोनों में से बेहतर कौन है। क्या ऐसा नहीं है?'

'अरे,' उस व्यक्ति ने हंसते हुए कहा, 'नुवाब साहब जानते हैं कि अभी तक कोई मुझे हरा नहीं पाया है; लेकिन मुझे आखिरकार मेरा मुकाबला मिल गया है: और जिसने भी तुम्हें सिखाया वह एक अच्छा गुरु था, और उसे अपने योग्य शिष्य मिला है।'

'जैसा तुम चाहो,' चीटू ने कहा, 'बस अच्छे मूड में खेलो; इससे कोई झगड़ा न होने दो।'

हम दोनों ने उन्हें सलाम किया और उन्हें आश्वस्त किया कि हम झगड़ा नहीं कर सकते और जो भी विजयी हो उसे अपने प्रतिद्वंद्वी के प्रति उच्च सम्मान रखना चाहिए।

और साँस वापस आने पर हम फिर से मैदान में उतर गए: जीत काफी देर तक हमारे बीच मंडराती रही, कभी एक की ओर झुकती तो कभी दूसरी की ओर; हम दोनों एक-दो बार लड़खड़ा गए थे, और दर्शक चाहते थे कि हम रुक जाएँ, लेकिन हम इतने उत्साहित थे कि यह असंभव था—हम उनकी चीखों पर भी नहीं रुके।

राजपूत के सटीक प्रहारों से बचने के लिए मुझे अपनी पूरी ताकत लगानी पड़ी; हवा का दबाव मुझसे ज़्यादा था, और इसी वजह से मुझे अपनी खेल शैली बदलनी पड़ी: अब तक मैं उस पर हमला कर रहा था, अब मैं केवल उसके वारों को रोक रहा था, और मौके की तलाश में था। अपनी जल्दबाजी में, लगातार प्रहारों से मेरी रक्षा पंक्ति को तोड़ने की सोचकर, उसने अपना किनारा खुला छोड़ दिया, और मेरी लाठी उसकी पसलियों पर इतनी ज़ोर से लगी कि सबने सुना, और इतनी ताकत से कि उसकी साँस ही रुक गई; अगर मेरे पास तलवार होती तो मुझे लगता है मैं उसे दो टुकड़ों में काट देता।

'सही तरीके से जीती!' चीतू चिल्लाया; 'सही और बहादुरी से जीती! रामदीन सिंह, तुम हार गए, लेकिन इसमें तुम्हारी कोई शर्म की बात नहीं है। थोड़ी देर में मेरे पास आना, मैं तुम्हें इनाम दूंगा।'

राजपूत हँस पड़ा, और मुझे खुशी हुई कि उसने हार को इतने सहज भाव से स्वीकार किया, क्योंकि मुझे इसके विपरीत की उम्मीद थी; उसने अपनी हार स्वीकार की और सभी से कहा कि यह एक निष्पक्ष मुकाबला था और उसने अपनी पूरी कुशलता का इस्तेमाल किया था: 'इसलिए सावधान रहो,' उसने आगे कहा, 'कि तुममें से कोई भी मीर साहब से भिड़ने की हिम्मत कैसे करे; तुम सब जानते हो कि मैं क्या हूँ, और मैं बुरी तरह हार गया हूँ।'

मैं उस नेक इंसान से मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ और मैंने खुद चीतू से बात की।

'हे खोदावुंद, मैं एक वरदान चाहता हूँ, और यदि मुझे इसके पूरा होने की आशा है, तो मैं बोलूंगा।'

'कहिए,' उसने उत्तर दिया; 'मैं इसे सहर्ष स्वीकार कर लूंगा।'

'तो फिर,' मैंने कहा, 'इस बहादुर को मेरे अधीन कर दिया जाए। आपकी कृपा से, एक अजनबी को हरवुल (अग्रिम टुकड़ी) के एक हिस्से की कमान सौंपी गई है, और मैं इन दोनों राजपूतों को अपने साथ रखना चाहता हूँ, और मुझे एक को पचास और दूसरे को पच्चीस आदमी सौंपने की अनुमति दी जाए।'

'अच्छा,' चीतू ने कहा, 'ऐसा ही हो; और तुम, गुफूर खान, यह सुनिश्चित कर लेना कि ऐसा हो जाए; ये वे लोग हैं जो जरूरत के समय हमारी सेवा करेंगे।'

कुछ ही दिनों में मैं अपने नए कार्यभार में पूरी तरह से रम गया। भाग्य ने मेरी उम्मीदों से कहीं अधिक मेरा साथ दिया था, और मुझे अपने नए गुरु के अधीन एक गौरवशाली करियर के अलावा और कुछ नहीं दिख रहा था। यह सच है कि अब मैं स्वयं नेतृत्व नहीं कर रहा था, लेकिन मेरा पद सम्मानजनक था, और शायद मेरी योग्यता से कहीं अधिक था। मुझे जो अवसर मिला, मैंने उसका लाभ उठाया और अपने पिता और अज़ीमा को पूरी बात विस्तार से लिखी, क्योंकि मुझे पता था कि वे इस नई और अप्रत्याशित खबर से प्रसन्न होंगे।

शिविर में हमारा समय उसी तरह बीता जैसा मैंने बताया है। सुबह के समय मैं चीतू की देखभाल में रहता था, जो लगातार आने वाले नए साहसी लोगों का निरीक्षण करते समय मुझे शायद ही कभी अपने से दूर जाने देता था; और शामें शक्ति प्रदर्शन और कौशल परीक्षण के साथ समाप्त होती थीं, जिनमें मैंने अपनी शुरुआती प्रतिष्ठा को बरकरार रखा। मैंने नेमावुर में बिताए उस महीने से अधिक सुखद समय कभी नहीं बिताया, जो हर तरह से मेरे लिए बेहद संतोषजनक और मेरी पूर्व-निर्धारित इच्छाओं के अनुरूप था।

अंततः दशहरा का त्योहार आ गया और इसे बड़े धूमधाम से मनाया गया। सभी एकत्रित साहसी लोगों की भव्य परेड निकाली गई, उनकी संख्या गिनी गई और बताया गया कि पाँच हज़ार कुशल घुड़सवार उपस्थित थे; और उनके अनुयायियों और साधारण घुड़सवारों को मिलाकर यह संख्या लगभग आठ हज़ार हो गई—एक वीर दल, जो अपने सरदार के आदेश का पालन करने और अपने सामने आने वाले देशों में युद्ध और विनाश फैलाने के लिए तैयार था।

योजना यह थी कि नूरबुद्दा नदी पार करने के तुरंत बाद हम दो टुकड़ियों में बंट जाएंगे, दक्षिण में किस्तना नदी तक पहुंचेंगे, और यदि वह नदी पार करने योग्य पाई गई, तो फिर जहाँ तक संभव हो दक्षिण की ओर आगे बढ़ेंगे, बिना फिरंगी सेनाओं से मुठभेड़ किए, जिनके बारे में हमें आश्वासन दिया गया था कि वे फिलहाल निष्क्रिय हैं, लेकिन शीघ्र ही हमारा पीछा करने के लिए भेजी जा सकती हैं। तदनुसार, सुबह होते ही पूरा शिविर गति में था; और यह देखना एक अद्भुत दृश्य था कि एक के बाद एक दुर्रा अपने सरदार के सामने जुलूस निकालते हुए तेजी से आगे बढ़ रहे थे। नूरबुद्दा नदी पर नौकाओं की व्यवस्था की गई थी, जिसे हमने उसी दिन पार किया और उसके दक्षिणी किनारे पर हिंदिया शहर के पास अपना ठिकाना बनाया।

इस बिंदु पर सेना अलग हो गई। मैं अपनी टुकड़ी और चीतू के साथ रहा, और अगले दिन हम पश्चिम की ओर बढ़ते हुए आगे बढ़े, ताकि हम तपती नदी तक पहुँच सकें। हमें उस नदी की घाटी से होते हुए नागपुर के राजा के क्षेत्र तक पहुँचना था, जिनके साथ पहले ही एक संधि हो चुकी थी जिसके तहत हमें उनके राज्य से होकर निर्बाध रूप से गुजरने की अनुमति थी, इस शर्त पर कि हम लूटपाट नहीं करेंगे। दूसरी टुकड़ी, जिसका नेतृत्व सईद भीकू कर रहे थे, जो चीतू के बाद दूसरे सबसे प्रसिद्ध नेता थे, पूर्व की ओर नूरबुद्दा नदी के किनारे-किनारे आगे बढ़ी, जब तक कि वे नागपुर जाने वाली मुख्य सड़क तक नहीं पहुँच गए, जिसके द्वारा उन्हें यात्रा करनी थी।

इस बीच हम तेज़ी से आगे बढ़ते रहे; क्योंकि हम अपने अभियान स्थल पर पहुँचने के लिए उत्सुक थे, हमारा पैसा कम होता जा रहा था और बिना लूट के हम भूखे मर जाते। हमने सुना था कि मेजर फ्रेज़र के नेतृत्व में नियमित सैनिकों की एक छोटी टुकड़ी हमारी गतिविधियों पर नज़र रख रही थी; लेकिन हमारे जासूसों ने बताया कि उनकी संख्या कम थी और हमें उनके हमले का कोई डर नहीं था: बताया गया था कि उनमें तीन सौ से ज़्यादा सैनिक नहीं थे और हमने व्यर्थ ही सोचा था कि वे इतने हज़ार सैनिकों का सामना करने की हिम्मत नहीं करेंगे। लेकिन हमने उनकी बहादुरी का सही अंदाज़ा नहीं लगाया था। हम जानते थे कि वे हमसे पंद्रह मील से ज़्यादा दूर थे, और कौन सी पैदल सेना इतनी दूर चलकर हमारे जैसे घुड़सवारों के दल पर हमला कर सकती थी?

लेकिन उन्होंने हम पर हमला कर दिया। हम तापती नदी के किनारे एक गाँव के पास अपने ठिकाने पर पहुँचे थे, और कुछ लोग सुबह का खाना बना रहे थे, कुछ लोग शिविर में आराम कर रहे थे या अपने घोड़ों के काठी के कपड़े पर लेट रहे थे, तभी यह खबर फैली कि फिरंगी हम पर हमला करने वाले हैं। उसके बाद मची अफरा-तफरी का वर्णन करना असंभव है। लोग इधर-उधर भागने लगे; संगठित होने की कोई उम्मीद नहीं

थी; जैसे ही किसी को अपना घोड़ा मिला, वह उस पर सवार होकर जान बचाकर भाग गया: एक भी आदमी खड़ा नहीं रहा। मैंने अपने साथियों से व्यर्थ ही आग्रह किया कि वे इकट्ठा हों और लाल कोट पहने सैनिकों की उस छोटी सी टुकड़ी पर हमला करें जो अब हमारे शिविर के पास कतार बनाकर खड़ी थी और हम पर सटीक निशाने से लगातार गोलियाँ बरसा रही थी। किसी ने मेरी बात नहीं सुनी, और यद्यपि मेरे अपने ठगों और मेरी टुकड़ी के कुछ सैनिकों ने कसम खाई कि अगर मैं उनका नेतृत्व करूँ तो वे मर जाएँगे, मुझे सफलता की कोई उम्मीद नहीं दिख रही थी; और चूंकि मेरे एक-दो आदमी मेरे पास ही गिर गए थे, इसलिए हम भी अंत में अपने घोड़ों का रुख मोड़कर भाग गए। हमारा पीछा नहीं किया गया, हालांकि पैदल सेना के साथ कुछ घुड़सवार थे, जो अगर घोर कायर न होते तो हमारा पीछा करते और हमसे भिड़ जाते।

सच कहूँ तो मेरी यही इच्छा थी कि वे ऐसा करें, और मैंने अपने लगभग सौ सैनिकों को एक साथ इकट्ठा रखा, जबकि हम समय-समय पर पीछे मुड़कर अपने भाले लहराते हुए अपने ही दल के घुड़सवारों को चुनौती देते रहे, जो ज़रा भी नहीं हिले। हमने देखा कि पैदल सेना एक बार फिर हमारे शिविर पर कब्ज़ा करने के लिए आगे बढ़ी, जो धूप से बचने के लिए इधर-उधर लगे हज़ारों अस्थायी आवरणों और अधपके भोजन के नीचे जलती आग के साथ, लंबी यात्रा के बाद उनके लिए एक आरामदायक विश्राम स्थल रहा होगा। उन्होंने काफ़ी लूट का माल हासिल किया होगा, क्योंकि कई सैनिकों ने अपने घोड़े की नंगी पीठ पर छलांग लगा दी, और विजेताओं के लिए अच्छी तरह से सजी हुई काठी पीछे छोड़ दी।

हमें अचानक और पूरी तरह से हार का सामना करना पड़ा, और अगर दुश्मन के पास पैदल सेना की बड़ी टुकड़ी या कोई अच्छी घुड़सवार सेना होती जो हमारा पीछा करती, तो हम भविष्य में लूटपाट की सारी उम्मीदें खो देते और शायद अपने-अपने घर लौटकर अभियान को बीच में ही छोड़ देते। लेकिन जैसा कि हुआ, हमने पाया कि हमारे सौ से ज़्यादा सैनिक नहीं खोए थे, और तीन दिन बाद हम फिर से मिल गए और पहले की तरह ही जोश में थे।

अंततः हम एलिचपुर के पूर्व की पहाड़ियों से लगभग अछूते रास्तों से होते हुए, उन घने जंगलों से निकले जिन्हें मैंने मुगलों के साथ हुए विवाद के बाद पार किया था। हम वुर्दा नदी के पास निज़ाम के क्षेत्र में प्रवेश कर गए, जिसे हमने पार किया और लगभग पच्चीस मील की एक ही यात्रा में उमरावती पहुँच गए, जो हमारे नेता का शुरू से ही लक्ष्य रहा प्रतीत होता था। मैंने पहले भी इसकी समृद्धि और खुशहाली का वर्णन किया है, और तब यह आज की तुलना में कहीं अधिक समृद्ध था।

हम एक शक्तिशाली नदी की बाढ़ की तरह तेज़ी से आगे बढ़ रहे थे, और रास्ते में पड़ने वाले हर गाँव को उसके निवासी तुरंत छोड़कर चले गए और हमें अपने भरोसे छोड़ गए। हमने एक-एक करके उन गाँवों को लूटा और खजाने की तलाश की, और कुछ सबसे बड़े गाँवों से भारी मात्रा में लूट का माल प्राप्त हुआ। उस दिन अग्रिम पंक्ति का नेतृत्व करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ, और मुझे वह रोमांच अच्छी तरह याद है जब हम पहाड़ियों की आखिरी दर्रे को पार करके मैदान में उतरे। मुझे अच्छी तरह याद है कि मैंने अपने साथियों को, जिनकी संख्या अब बढ़कर लगभग पाँच सौ शानदार योद्धा हो गई थी, और पीछे से भी कई दल जुड़ते जा

रहे थे, अपनी तलवार लहराते हुए बरार के विशाल मैदान दिखाए और उनसे कहा कि हमारे पास अपनी इच्छा अनुसार लूटपाट करने की असीमित शक्ति है!

उस दिन ग़फ़ूर खान मुझसे ईर्ष्या कर रहा था; उसे चीतू के साथ रोक लिया गया था, जो मुख्य दल के साथ रहा, जबकि मेरे हरवुल (सैनिकों की संख्या बढ़ा दी गई थी) को आगे बढ़ाकर उमरावती को घेरने के लिए भेजा गया था। हम तेज़ी से आगे बढ़े! जिन कुछ गाँवों पर हमने अचानक कब्ज़ा किया, वहाँ के भयभीत निवासियों ने बिना पूछे ही रुपये, सोने-चांदी के आभूषण भेंट कर दिए। जैसे-जैसे हम आगे बढ़े, हमारे आने की खबर हर गाँव में फैल गई, और हज़ारों लोग अपने घरों से भागते हुए देखे गए; जबकि कुछ ही लोग हर गाँव में मेरे लिए भेंट लेकर रुके रहे, और मुझसे विनती करते रहे कि मैं उनके गाँवों को न जलाऊँ। मैंने भी ऐसा नहीं किया; हालाँकि कुछ ही देर बाद हमारे पीछे हर दिशा में उठते धुएँ के स्तंभों को देखकर मुझे भी लगा कि मुख्य दल हमसे कम दयालु था। हम शाम के समय उमरावती पहुँचे। इस महत्वपूर्ण चौकी की रक्षा के लिए बहुत कम सैनिक थे, और वे हमारे आने की खबर सुनकर भाग गए थे; इसलिए हम बिना किसी रोक-टोक और विरोध के शहर में प्रवेश कर गए। मेरी वर्तमान यात्रा पिछली यात्रा से कितनी अलग थी!

मैंने अपना रास्ता मुख्य सड़क की ओर मोड़ा, जहाँ मुझे पता था कि मुझे प्रमुख साहूकार मिलेंगे; और, अपने आदमियों की टुकड़ियों को दोनों छोरों और विभिन्न निकासों पर तैनात करने के बाद, मैं चौक, या बाजार के बीचोंबीच पहुँचा और शहर के प्रमुख लोगों के बीच उतरा, जिन्होंने एक कालीन बिछा रखा था और जैसा कि उन्होंने कहा, हमारा सम्मान करने के लिए तैयार थे।

लेकिन अभिवादन के कुछ ही शब्द बोले गए, क्योंकि हमारी मुलाकात सौहार्दपूर्ण नहीं थी, और दोनों पक्ष सौदेबाजी में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते थे।

कुछ देर तक उनकी गरीबी और मेरी इच्छा के अनुरूप पर्याप्त राशि जुटाने में असमर्थता के व्यर्थ दावों को सुनने के बाद मैंने कहा, 'आओ सज्जनों, यह सरासर मूर्खता है। आपने एक लाख रुपये की पेशकश की है; क्या आपको लगता है कि महान चीतू इससे संतुष्ट हो जाएगा? मैं कुरान की कसम खाकर कहता हूँ कि वह संतुष्ट नहीं होगा, और बेहतर होगा कि आप तुरंत समझदारी से काम लें और मेरी बात सुनें। अंधेरा होने से पहले ही सारा लुभुर यहाँ पहुँच जाएगा, और यदि आप में से कोई अपने किसी ऊँचे घर या बुर्ज पर चढ़ने की जहमत उठाएगा, तो आप देखेंगे कि पिंडारे कैसे अपनी प्रगति का संकेत देते हैं। मेरे पीछे कई सुंदर गाँवों में अब न छत बची है, न पेड़, और यदि आप हमसे खिलवाड़ करेंगे तो निश्चित रूप से आपके अच्छे शहर का भी यही हाल होगा; और न केवल उसे जलाया जाएगा, बल्कि आपकी संपत्ति मेरे आदमियों की दया पर छोड़ दी जाएगी—हाँ, और आपकी पत्नियाँ और बेटियाँ भी; इसलिए मैं आपको स्पष्ट चेतावनी दे रहा हूँ। आपके पास हमारा विरोध करने की कोई शक्ति नहीं है; और यदि आप इनकार करते हैं, तो मुझे आपको यह बताने की इच्छा है कि हम यहाँ कुछ दिनों तक रुकेंगे और आपके घरों के अंदरूनी हिस्सों का निरीक्षण करके अपना मनोरंजन करेंगे। इसलिए जाइए, समझदारी से काम लीजिए, आपस में सलाह-मशविरा कीजिए, और इससे पहले कि इस पेड़ की छाया मेरी तलवार की लंबाई बढ़ा दे (और मैं उसे ज़मीन पर रख दूँ), मुझे अपने नाम के

अनुरूप एक ऐसा उत्तर दीजिए जो बुद्धिमत्तापूर्ण और उदार हो; इसके बाद मैं आपको एक पल भी नहीं दूँगा; आपके घर पास ही हैं, और इंशाल्लाह! हम स्वयं ही आपकी सहायता करेंगे।

'बहुत खूब!' मेरे आस-पास खड़े सभी लोग चिल्लाए; 'लेकिन, मीर साहब, हम तुरंत अपनी मदद क्यों नहीं कर लेते? इन कंजूस व्यापारियों को हम जैसे इज्जतदार लोगों की जरूरतों का अंदाजा भी नहीं हो सकता, जिन्हें अभी लंबा सफर तय करना है।'

मैंने उत्तर दिया, 'तुम उनकी बातें सुनोगे; तब तक हम सब शांत और व्यवस्थित रहें, और तुममें से कोई भी उनकी बातचीत में बाधा न डाले, न ही नगरवासियों के साथ हिंसा करे।'

लगभग समय बीत चुका था, और मेरी तलवार का केवल मूठ ही धूप में दिखाई दे रहा था। व्यापारियों की परिषद, उनकी तीखी बहस और उनके चेहरों पर दिख रहे बेचैन और चिंतित भावों को देखते हुए, ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह किसी निर्णय से उतनी ही दूर थी जितनी पहले थी।

मैं उत्सुकता से बढ़ती हुई परछाई को देखता रहा, और समय-समय पर उन्हें पुकारता रहा कि निर्धारित समय लगभग समाप्त हो चुका है; अंत में मेरी तलवार की चमकीली मूठ की चमक फीकी पड़ गई, और मैंने अपने आदमियों के शोर के बीच उसे उठा लिया। व्यापारियों ने मेरी यह हरकत देखी, और फिर एक समूह मेरी ओर बढ़ा।

उनमें से सबसे मोटे व्यक्ति ने, जो मुखिया प्रतीत होता था, कहा, 'बैठ जाइए, मीर साहब; बैठ जाइए; आइए इस मामले पर शांतिपूर्वक और विचारपूर्वक चर्चा करें। वह कार्य जो जल्दबाजी में और उत्तेजित मन से किया जाता है, वह हमेशा असंतोषजनक होता है।'

'नहीं!' मैंने कहा, 'मैं ऐसा नहीं करूँगा: मैं जहाँ खड़ा हूँ, वहीं रहकर तुम्हारी बात सुनूँगा। याद रखो, जब मैं अपनी तलवार निकालता हूँ, तो लूटपाट शुरू हो जाती है, और यद्यपि इन बहादुरों पर मेरा कुछ प्रभाव है जब तक वे तुमसे एक उचित प्रस्ताव की उम्मीद करते हैं, लेकिन जैसे ही उनकी उम्मीदें टूटती हैं, मेरी शक्ति समाप्त हो जाती है, और मैं तुम्हारे किसी भी जीवन के लिए जवाबदेह नहीं रहूँगा।'

'एक पल के लिए मेरे साथ एक तरफ आइए,' मुख्य व्यापारी ने कहा; 'मैं आपसे अलग से बात करना चाहता हूँ; आपको साहूकार से किसी भी प्रकार के विश्वासघात का डर नहीं होना चाहिए!'

हम सब दिल खोलकर हँसे। 'नहीं, नहीं,' मैंने कहा, 'मुझे किसी बात का डर नहीं है, और मैं आऊँगा। और तुम लोग, मेरे साथियों,' मैंने अपने साथियों की ओर मुड़कर कहा, 'ध्यान रखना कि इनमें से कोई भी सम्मानित व्यक्ति बचकर न निकल पाए।'

जब हम उस समूह से कुछ कदम दूर चले गए, तो मैंने कहा, 'अच्छा, तुम क्या कहोगे? जल्दी करो; मेरे आदमी बेचैन हैं, और तुम्हारे घर और दुकानें बेहद पास हैं, जो तुम्हें उकसा रही हैं और लुभा रही हैं।'

'तो सुनो,' उसने उत्तर दिया; 'तुम एक नेता हो, और अपने आचरण से तुम पर वह प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखता है जो तुममें है। तुम्हारे साथ पाँच सौ से अधिक सैनिक नहीं हैं; इसलिए हम तुम्हें तुम्हारे हिस्से के रूप में दस हजार रुपये देते हैं, तुम्हारे प्रत्येक सरदार को एक हजार रुपये और तुम्हारे सैनिकों को सौ-सौ रुपये; यह

लगभग एक लाख रुपये होगा, और हम मुख्य दल से मुकाबला करेंगे। तुम्हारा क्या कहना है? जल्दी बताओ, क्योंकि पैसा पास ही है, और मुख्य दल के आने से पहले आसानी से वितरित किया जा सकता है।'
मैंने कुछ देर सोचा; मुझे पता था कि चीतू अपनी शर्तें मनवाएगा, और उसके आने से पहले जितना हो सके उतना माल अपने पास रखने में मुझे कोई हर्ज नहीं दिख रहा था। मुझे यह भी पता था कि उसे दस लाख की उम्मीद थी, और वह इसे या लगभग उतनी ही रकम, चाहे सही हो या गलत, हासिल कर लेगा। साहूकार ने कहा, 'फिर से सुनो; तुम आगे हो; तुम्हें बस अपना पैसा लेकर आगे बढ़ना है, और रास्ते में आने वाला कोई भी गाँव तुम्हें रात भर पनाह देगा; चीतू को क्या पता चलेगा?'
'नहीं,' मैंने कहा, 'हम यहीं रुकेंगे; पच्चीस मील चलने के बाद, हमारा आगे बढ़ने का मन नहीं है; लेकिन एक लाख रुपये के तत्काल भुगतान पर मैं अपने आदमियों को शहर से बाहर ले जाऊंगा; याद रखना, हमारी कमाई का एक तिहाई हिस्सा मुखिया के पास जाता है, और हमारा हिस्सा आखिर में बहुत कम है।'
'सहमत हूँ,' उसने कहा; 'अब अपने आदमियों के पास जाओ और उन्हें शांत रहने के लिए मनाओ: हिंसा से उन्हें उतना लाभ नहीं मिलेगा जितना हमारे साथ अच्छा व्यवहार करने से मिलेगा।'
हम उस समूह के पास लौट आए जिसे हमने छोड़ा था, और मैंने उन्हें वह प्रस्ताव बताया जो मुझे दिया गया था; इसका स्वागत एक ज़ोरदार चीख के साथ हुआ जिससे पूरा वातावरण गूंज उठा, और फिर पैसे के लिए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाहटें सुनाई देने लगीं।
ऐसा प्रतीत होता है कि रकम पहले ही एकत्र कर ली गई थी, क्योंकि कुछ ही क्षणों में रुपयों से लदे थैलों से लदे पुरुषों की एक कतार उस गली से निकली जहाँ हम बैठे थे। पिंडारी समुदाय के लोग, प्रत्येक का अपना सरदार, एक-एक करके वहाँ लाए गए; प्रत्येक व्यक्ति को उसके सौ रुपये और प्रत्येक सरदार को उसके एक हजार रुपये दिए गए, जिन्हें उनकी काठी के विशाल थैलों में भर दिया गया।
'आपने अपनी परवाह नहीं की, मीर साहब,' पीर खान ने कहा; 'आपने कुछ भी नहीं लिया।'
'अरे, मेरे लिए चिंता मत करो,' मैंने जवाब दिया; 'मुझे मेरा हिस्सा मिल गया है; थैली देखने में बड़ी नहीं लगती, लेकिन उसमें सोना भरा है।'
उसकी आँखें चमक उठीं। 'यह सही है,' उसने कहा; 'बाकी लोगों को इसके बारे में पता नहीं चलना चाहिए।'
'एक शब्द भी नहीं; यह केवल तुम्हें और मुझे ही पता है। अब हमें इन बदमाशों को सावधान करना होगा कि वे कोई हद पार न करें; ऐसा लगता है कि वे शहर में दंगा मचाने के मूड में हैं।'
'वे संतुष्ट प्रतीत होते हैं,' उसने उत्तर दिया; 'कम से कम मैं तो हूँ। आलिया की कसम! मीर साहब, यह तो दुर्लभ काम है; सुबह की सवारी में एक हजार रुपये कमाना हमारे पेशे से कहीं बेहतर है, हालाँकि हम अपने समय में भाग्यशाली रहे हैं।'
'चुप!' मैंने कहा, 'चुप रहो! यह हमारे रहस्यों को बताने का समय नहीं है। यहाँ से चले जाओ! देखो कि ये लोग कस्बे के सामने अपनी जगह घेर लें। मैं कुछ अन्य लोगों के साथ यहीं रहूँगा और देखूँगा कि चीटू के आने पर इस जगह का क्या हाल होता है।'

एक-एक करके पिंडारी मुझे छोड़कर चले गए, सिवाय कुछ लोगों के जो मेरी इच्छा के अनुसार रुके रहे; और हमारा काम समाप्त होने पर, मैं बैठ गया और चीतू के आने की प्रतीक्षा करने लगा।

'तुम्हें क्या लगता है वो क्या पूछेगा?' मेरे मोटे दोस्त ने मुझसे कहा।

मैंने उत्तर दिया, 'मुझे नहीं पता; लेकिन बेहतर होगा कि आप तुरंत उदार हो जाएं, वरना वह आपके शहर को लूट लेगा, और आप जानते हैं कि पिंडारी कैसे होते हैं; वे बहुत कम संकोची होते हैं, और आपमें से कुछ को यातनाएं दी जा सकती हैं।'

यातना के विचार मात्र से सभा में कंपकंपी दौड़ गई और मुझे समझ आ गया कि मैंने अपना लक्ष्य साध लिया है। 'हाँ,' मैंने आगे कहा, 'कोरला जैसी चीज़ें होती हैं, और तुम्हारी मोटी पीठें जल्द ही चीर दी जाएँगी; इसके अलावा, कुछ लोग उंगलियों को बाँधने और उनके सिरों पर मारने में माहिर होते हैं, जो मुझे लगता है कि सुखद नहीं होगा, और तुम्हारे मुँह पर बाँधने के लिए थैलों में मिश्रण बनाने में भी माहिर होते हैं। मैंने हठी साहूकारों को मनाने के लिए इससे भी बदतर तरकीबें सुनी हैं; लेकिन तुम बुद्धिमान हो—तुम्हें चेतावनी दी जाएगी।'

'मीर साहब, तुरंत बताइए,' अभी तक चुप रहे व्यापारियों में से एक ने कहा, 'बताइए हमें क्या भेंट चढ़ानी चाहिए और पिंडारी कितने हैं? हमने सुना है कि पाँच हज़ार हैं।'

'सेठजी, यह कुछ कम है,' मैंने कहा; 'मुझे लगता है कि हम दस हज़ार से थोड़ा कम हैं; लेकिन आप लुभुर को देख लीजिएगा और खुद ही फैसला कर लेगा। जहाँ तक रकम की बात है, तो सबसे पहले चीतू के लिए एक लाख रुपये—मुझे पता है कि वह इतनी ही उम्मीद करता है; फिर तीन सरदार हैं, हीरू, गुफूर खान और राजुन—प्रत्येक को पचास हज़ार; फिर प्रत्येक छोटे नेता और दफ़्फ़ादार को एक हज़ार, और हर अच्छे पिंडारी को सौ। कहिए, क्या मैंने सही कहा?'

'भगवान, हमारी रक्षा करो!' सबने एक साथ पुकारा, 'हम बर्बाद और मरे हुए हैं। अरे, यह तो कम से कम आठ लाख रुपये होंगे; इतनी रकम हम कहाँ से लाएँगे? हम बर्बाद हो चुके हैं, बेहतर होगा कि हमें तुरंत मार दिया जाए।'

'नहीं, नहीं, मेरे प्यारे दोस्तों, ऐसा नहीं है,' मैंने कहा। 'पूरी दुनिया जानती है कि उमरावती देश का सबसे अमीर शहर है, बल्कि हैदराबाद से भी ज़्यादा अमीर है, और यहाँ का पैसा लाखों में नहीं, करोड़ों में गिना जाता है; इसलिए चीतू से अपनी गरीबी की बात मत करो, क्योंकि वह जल्द ही साबित कर देगा कि तुम झूठ बोल रहे हो या नहीं। मेरा यकीन मानो, तुम्हारे लिए सबसे सुरक्षित तरीका यही है कि तुम उसे एकमुश्त बड़ी रकम दे दो, क्योंकि उसे लंबा सफर तय करना है; नेमावूर से निकलने के बाद से इन लोगों को कुछ नहीं मिला है, और वे भूखे-प्यासे हैं।'

'मैं तुम सबको बताता हूँ,' मोटे साहूकार ने कहा, 'आदरणीय मीर साहब सत्य कहते हैं। भगवान ने यह विपत्ति भेजी है, और हमें अपने भाग्य को स्वीकार करना होगा। अपनी पत्नियों और बेटियों को अपनी आँखों के सामने अपमानित होते देखने से कहीं बेहतर है कि हम अपना एक-एक पैसा दे दें। मैंने कह दिया।'

'शाबाश!' मैं चिल्लाया; 'अब तुम बुद्धिमानों की तरह बात कर रहे हो, और मैं तुम्हें आगे सलाह देता हूँ। चीतू एक महान व्यक्ति है, और सम्मान पाना पसंद करता है, जो वास्तव में उसका हक भी है; बाकी नेता भी ऐसा ही करते हैं। अब तुम पान, उत्तूर और मसाले ले आओ, उन्हें एक अच्छी थाली में सजाओ, कुछ सुंदर शॉल ले आओ, और जैसे ही वह बैठे, तुममें से कोई एक उसके और बाकी सरदारों के कंधों पर सबसे अच्छे शॉल डाल दे, और उसके सामने ऐसे नज़ूर रखो जैसे तुम स्वयं सिकंदर यहोवा के सामने रखते हो। इंशाअल्लाह! तुम उसकी नज़र में कृपा पाओगे, और जहाँ तुम्हें दस लाख देने पड़ते, वहाँ तुम्हें आधी रकम देकर छूट मिल जाएगी, और तुम्हारा शहर भी बच जाएगा।'

'गंगा की कसम! बिलकुल सही कहा!' कई लोगों ने कहा। 'मीर साहब, आप एक दयालु मित्र हैं और अच्छी सलाह देते हैं; आपके बिना हमें पता ही नहीं चलता कि क्या करना है।'

मैंने कहा, 'तुममें से कोई भी उदास चेहरा न बनाए, बल्कि ऐसा दिखाओ जैसे तुम उसके आने से प्रसन्न हो। बिना कारण के घबराओ मत। तुम्हें भुगतान करना ही होगा, इसलिए इसे यथासंभव विनम्रता से करो।'

सभा ने मेरे शब्दों को ध्यानपूर्वक सुना, क्योंकि मैं बारी-बारी से उन्हें सलाह दे रहा था और उन्हें आगाह कर रहा था, ताकि मैंने जो उत्साह पैदा किया था, वह बना रहे; और इस तरह समय बीतता गया और शाम ढल गई, जब कई घोड़ों के कदमों की आहट और तोपों की आवाज से हमें मुख्य सेना के आने का आश्वासन मिला।

'अब हमारे साथ रहो,' सहोकरों ने मेरे चारों ओर भीड़ जमा करते हुए कहा; 'तुम हमारे मित्र हो और तुम्हें हमें पेश करना होगा: हम डरेंगे नहीं।' लेकिन उनके शब्द झूठे साबित हुए, क्योंकि पिंडारी सरदार का सामना करने के विचार मात्र से ही सबके दांत कांप रहे थे और गाल पीले पड़ गए थे।

चीटू आया और जंगली दिखने वाले लोगों की भीड़ से घिरा हुआ चौक में सवार होकर प्रवेश किया, जिनकी उपस्थिति का प्रभाव शाम के धुंधलके से काफी बढ़ गया था, उसके खिताबों को एक दर्जन मुंह से चिल्लाकर पुकारा गया, जिनमें से प्रत्येक उसकी शक्तियों को बढ़ा-चढ़ाकर बताने में एक-दूसरे से होड़ कर रहा था। मेरे नेतृत्व में सहोकरों का समूह उसकी ओर बढ़ा; और प्रमुख व्यापारी ने सरदार के रकाब पर अपना माथा रगड़ते हुए उससे उतरने और आराम करने की विनती की, साथ ही यह भी कहा कि एक दावत तैयार की गई है, और सभी अपनी भेंट प्रस्तुत करने के इच्छुक हैं।

मैंने भी इस अनुरोध का समर्थन किया, और वह चिल्लाया, 'मैं इस आवाज को जरूर पहचानता हूँ; भगवान के नाम पर, यह किसकी आवाज है?'

मैंने कहा, 'यह आपके गुलाम अमीर अली का है।'

'ओह, तो सब ठीक है,' वह चिल्लाया; 'और तुम भी साहूकार बन गए हो। यह कैसे हो सकता है, मीर साहब?'

'नुवाब, मैं आपकी कुर्बानी बन जाऊं!' मैंने कहा; 'मैं इन नेक लोगों के साथ इसलिए शामिल हुआ क्योंकि उन्होंने कहा था कि आपके वैभव को देखकर वे नष्ट हो जाएंगे। मैंने केवल उन्हें सांत्वना दी और अपने स्वामी के आने तक उनका हौसला बनाए रखा।'

'तुमने अच्छा किया,' चीटू ने कहा। 'क्या सब कुछ तैयार है?'
'सब कुछ,' सहौकरों ने पुकारा; 'यदि महान चीतू नीचे उतरेगा, तो हम उसका सम्मान करने के लिए तैयार हैं।'
वह नीचे उतरा और मुख्य व्यापारी द्वारा हाथ पकड़कर उसे पास के एक घर में ले जाया गया, जो एक व्यापारी का था। उस घर में एक साफ सफेद चादर बिछी थी और एक मसनद रखा हुआ था। कमरा भी अच्छी तरह से रोशन था। चीतू बैठ गया और स्पष्ट संतुष्टि के साथ चारों ओर देखने लगा; हालांकि उसका चेहरा क्रूर था, लेकिन अब उस पर विजय की मुस्कान थी, फिर भी उसमें अत्यधिक आनंद का भाव भी झलक रहा था।
'ये तो सभ्य लोग हैं,' उसने अपने प्रिय और करीबी दोस्त राजुन से कहा। 'मुझे इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं थी: क्या तुम्हें थी?'
'बिल्कुल नहीं,' उसने कहा; 'मुझे लगा था कि हमें शहर में घुसने के लिए रास्ता बनाना पड़ेगा। यकीन मानिए, यह सब अमीर अली का ही काम है।'
'शायद ऐसा ही होगा,' चीटू ने कहा; 'वह एक सज्जन व्यक्ति है, और जानता है कि एक सज्जन व्यक्ति का स्वागत कैसे किया जाना चाहिए। लेकिन अगर वह न होता तो शायद ये सूअर अपने घरों में ही बंद हो जाते और हमें उन्हें बाहर निकालने की परेशानी उठानी पड़ती। लेकिन देखो, ये क्या कर रहे हैं?'
साहूकार ने मुझे कोहनी मारी और फुसफुसाते हुए मुझसे विनती की कि मैं चीतू से उनका नज़ूर स्वीकार करने के लिए कहूँ। जब मैंने हिचकिचाने का नाटक किया, तो उसने फिर फुसफुसाते हुए कहा, 'अगर वह इसे स्वीकार कर लेता है, तो मैं तुम्हें पाँच सौ रुपये दूँगा।' मैंने कहा, 'ठीक है; अगर पैसे नहीं दिए गए, तो मैं बदला ले लूँगा।'
'द्वारा
'गंगा! मेरी जुन्वा की कसम!' उसने फिर अत्यंत गंभीरता से कहा, 'नहीं, मैं इसे दुगुना कर दूंगा। हमारे लिए बोलिए, अच्छे मीर साहब, क्या आप हमारे मित्र और भाई नहीं हैं?'
'ये बेवकूफ तुमसे क्या बातें कर रहे हैं?' चीटू चिल्लाया। 'ये खुद क्यों नहीं बोलते?'
'खोदावुंद!' मैंने कहा, 'तुम्हारे नाम का खौफ तुमसे पहले ही पहुँच चुका है'—और वह गंभीर मुस्कान के साथ बोला, 'और तुम्हारा रूप इतना प्रभावशाली और इन लोगों ने जो सुना है उससे कहीं बढ़कर है कि आलिया की कसम! वे चुप हो गए हैं; और यद्यपि वे तुम्हारे उच्च पद के अनुरूप तुम्हारे चरणों में नज़ूर करना चाहते हैं, फिर भी उनके पास अपनी इच्छा व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं हैं, और उन्होंने तुम्हारे दास से मेरे स्वामी को यह बात बताने का अनुरोध किया है।'
'कबूल, कबूल! मैं सहमत हूँ,' चीतू चिल्लाया; 'थाली मंगवाओ। उमराओटी के सहोकरों का बनाया नज़ूर सचमुच देखने लायक होगा।'
मखमली आवरण से ढकी पंद्रह थालियाँ लाई गईं और उन्हें मुसनूद के सामने रख दिया गया; एक-एक करके उनके आवरण हटाए गए, और सचमुच यह एक शानदार नज़ारा था! चार थालियों में खजूर, पिस्ता, मिठाइयाँ और मिश्री भरी हुई थीं; बाकी में विभिन्न प्रकार के कपड़े थे, यूरोपीय और भारतीय, मलमल, चिंट्ज़, कीमती

पगड़ियाँ और बनारस के ब्रोकेड। यह किसी राजकुमार के लिए उपयुक्त नज़ूर था, और चीतू बहुत खुश हुआ।

मैंने साहूकार से कहा, 'अब यह एक खुशी का पल है; शॉल और अशरुफी कहाँ हैं? हिम्मत रखो और उस पर शॉल डाल दो, जैसे तुम अपने कबीले के किसी व्यक्ति पर शादी में डालते हो।'

साहूकार ने एक सेवक से शॉलें लीं और उन पर पाँच अशरुफी रखकर चीतू के चरणों में गए; तीन बार प्रणाम करके उन्होंने सोना भेंट किया और बेहद शानदार शॉलों को खोलकर कुशलतापूर्वक सरदार को उसमें लपेट दिया, फिर पीछे हटकर सम्मानपूर्वक हाथ जोड़कर विनम्रता की मुद्रा में खड़े हो गए।

अध्याय 34

भाग्य के पुत्रों, उसने हमें आगे भेजा है
अपनी बुद्धि के तीव्र प्रयोग से समृद्धि प्राप्त करना,
जो हमारी चमकीली तलवारों के भयानक भय से प्रेरित होकर,
इससे हमारी जेबें जल्दी भर जाती हैं।

चीटू को जिस सम्मान के साथ स्वागत किया गया था, उससे वह स्पष्ट रूप से प्रसन्न था, और जैसे ही उसने अपने शरीर को ढकने वाली सुंदर शॉल का निरीक्षण किया, उसके खुरदुरे चेहरे पर खुशी की एक गंभीर मुस्कान खिल उठी।

'इन लोगों में समझदारी है,' उसने ग़फ़ूर खान से कहा, 'और ये स्पष्ट रूप से प्रतिष्ठित व्यक्तियों के आगमन के आदी हैं। हमें इस तरह के शिष्टाचार की बिल्कुल उम्मीद नहीं थी, और वास्तव में हमारी लंबी यात्रा के बाद यह अत्यंत सुखद है; लेकिन ये लोग आपको भूल गए हैं।'

'ऐसा नहीं है, हे आदरणीय चीतू,' साहूकार ने अपनी बांह पर कई शॉल के जोड़े लिए आगे बढ़ते हुए कहा; 'हम अपने विशिष्ट अतिथियों को नहीं भूले हैं;' और उसने प्रत्येक सरदार पर एक-एक जोड़ी शॉल डाल दी, जिसे उन्होंने संतुष्टिपूर्वक ग्रहण किया।

'कमरा खाली करो,' चीटू चिल्लाया; 'हमें इन सम्मानित सज्जनों से कुछ काम है, जिसे मैंने किसी भी तरह का भोजन करने से पहले पूरा करने की शपथ ली है।'

यह काम जल्दी से हो गया, और वहाँ केवल हमारे नेता और साहूकार ही बचे थे, जो बाज़ के आने पर जंगली पक्षियों की तरह एक साथ huddled हो गए थे।

चीटू ने उनसे कहा, 'आगे आओ; हमारे पास आओ और बैठो; हम तुमसे बात करना चाहते हैं।'

वे सभी उठे और निर्देशानुसार, मुसनूद के किनारे सम्मानपूर्वक बैठ गए।

चीटू ने आगे कहा, 'अब, आप हमारे उद्देश्य से भलीभांति परिचित हैं। हमें धन चाहिए, और हम इसे किसी भी तरह से प्राप्त करेंगे; यदि आप समझदार हैं, तो आप मुझे और मेरे लोगों से छुटकारा पाने के लिए मुझे अच्छी खासी रकम देंगे, क्योंकि हम सब जंगली हैं। मैं आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचाना चाहता, और यदि आप पर कोई विपत्ति आती है, तो उसकी जिम्मेदारी आपकी ही होगी। इसलिए, बताइए, आप कितना देने को तैयार हैं?'

मेरे मित्र साहौकर, जो प्रवक्ता थे, ने कहा, 'सचमुच, हमें आपके आगमन की सूचना मिल चुकी है; और इस बात का प्रमाण कि हम आपसे भयभीत नहीं थे, आप हमें यहाँ देख सकते हैं, और हमने इतने प्रतिष्ठित व्यक्ति का स्वागत करने के लिए अपनी सीमित क्षमता से हर संभव प्रयास किया है। हमें आपके सेवक मीर साहब से भी अच्छी सलाह मिली है; और उनके निर्देशों के अनुसार हमने कुछ छोटी-मोटी वस्तुओं और कुछ नकद

राशि की सूची तैयार की है, जिसे हम आपके चरणों में अर्पित करना चाहते हैं।' और साहौकर ने उन्हें फ़ारसी में लिखा एक कागज़ सौंप दिया।
'यह बात मेरी समझ से परे है, क्योंकि मैं कोई गंवार नहीं हूँ: लेकिन क्या आप में से कोई पढ़ सकता है, भाइयों?' चीतू ने अन्य नेताओं से पूछा।
'न एक शब्द, न एक अक्षर,' सभी एक साथ चिल्लाए; 'हममें से कोई भी एक अक्षर को दूसरे से अलग नहीं पहचानता।'
साहूकार ने कहा, 'मैं एक मूनशी को बुलवा सकता हूँ; एक यहाँ मौजूद है।'
मैंने कहा, 'अगर मुझे अनुमति दी जाए, तो मैं सूची पढ़ूंगा: शायद मैं इसे समझ पाऊं।'
'हा! तुम अच्छे सिपाही होने के साथ-साथ क्लर्क भी हो,' चीटू हंसते हुए बोला। 'अच्छा, अखबार लो और हमें हमारी खुशखबरी सुनाओ।'
मैंने दस्तावेज़ पर सरसरी नज़र डालने के बाद कहा, 'तो सबसे पहले, इस पत्र में यह बताया गया है कि ऊमरावटी के बाज़ार कस्बे के साहूकार और अन्य लोग, परिषद में एकत्रित होकर, शक्तिशाली चीतू और उसकी सेना के निकट आने की सूचना पाकर, और उनके चरणों में सम्मान का एक छोटा सा भेंट अर्पित करने की इच्छा से, निम्नलिखित वस्तुएँ और नकद राशि प्रस्तुत की हैं, जो उनकी स्वीकृति के लिए तैयार हैं, इस शर्त पर कि वे उनकी दृष्टि में कृपा प्राप्त करें और दूसरों के प्रति उनकी दया सुनिश्चित करने का एक विनम्र साधन बनें।'
'बहुत खूब!' चीटू ने कहा। 'अब जल्दी से जल्दी मुख्य मुद्दे पर आओ, क्योंकि मुझे भूख लगी है, और मुझे पूरा यकीन है कि इन सज्जनों के परिवारों ने मेरे लिए भोजन तैयार किया होगा।'
'यह तैयार है, हे महाराज चीतू,' साहूकार ने पुकारते हुए कहा; 'और यदि आदेश दिया गया, तो इसे परोसा जाएगा; परन्तु हम गरीब हिंदुओं का भोजन महाराज को बेस्वाद लगेगा, इसलिए हमने शहर के सर्वश्रेष्ठ बावुर्चियों से भोजन बनवाया है।'
'चुप रहो!' मुखिया ने चिल्लाकर कहा; 'जब बोलने की अनुमति हो तभी बोलो: हम बीच में टोकने के मूड में नहीं हैं।'
साहूकार भयभीत होकर पीछे हट गया, और मैंने अपनी आवाज बुलंद करते हुए आगे बढ़ना शुरू किया।
'गरीबों के रक्षक!' मैंने चिल्लाकर कहा, 'पहली वस्तु आपके लिए पचास हजार रुपये की राशि है।'
'बस इतना ही?' उसने भौंहें सिकोड़ते हुए कहा।
'रुको,' मैंने कहा; 'आगे और भी है। एक थाली उत्तम रत्नों, सोने और चांदी से भरी हुई, जिसकी कीमत पंद्रह हजार रुपये है, और मेरे स्वामी के महल के लिए शॉल और ब्रोकेड की तीन थालियाँ, जिनकी कीमत दस हजार रुपये है: कुल मिलाकर पचहत्तर हजार रुपये। दूसरा, प्रत्येक उच्च पदस्थ नेता को दस हजार रुपये की राशि, जिनके बारे में हमें आदरणीय सैयद, अमीर अली से पता चला है कि वे तीन हैं: प्रत्येक को पांच हजार

रुपये की एक थाली रत्नों से भरी हुई, और तीन थालियाँ, प्रत्येक की कीमत पांच हजार रुपये है; कुल मिलाकर बीस हजार रुपये प्रत्येक को।'
'आगे बढ़ो!' चीटू चिल्लाया; 'मुझे लगता है कि तुमने अभी तक काम पूरा नहीं किया है?'
'नहीं,' मैंने कागज़ पर नज़र डालते हुए कहा; 'इसके बाद और भी लिखा है। तीसरा, प्रत्येक दुफ़्फ़ादार को एक हज़ार रुपये दिए जाएंगे: हमें उनकी संख्या का पता नहीं है, लेकिन हमने तीस मान लिए हैं।'
'बहुत बढ़िया!' चीटू चिल्लाया; 'और क्या?'
"चौथा, प्रत्येक योग्य व्यक्ति को पचास रुपये दिए जाएंगे, जो शक्तिशाली चीतू के विवेकानुसार दिए जाएंगे; हमने सुना है कि ऐसे चार हजार लोग हैं। साथ ही, सेना के हमारे साथ रहने तक के लिए भोजन, अनाज और चारा भी दिया जाएगा।" मैंने कहा, 'बस इतना ही; मेरे स्वामी के क्या आदेश हैं?'
'सूची काफी अच्छी है,' चीतू ने कहा; 'लेकिन कुछ बातों में गलती है: पहली बात, पचास दुफ्फादार हैं, है ना, गुफूर खान?'
'हाँ, हैं,' उसने जवाब दिया; 'मैंने खुद उन्हें फटकार लगाई थी।'
'इसे नीचे रख दीजिए, मीर साहब,' चीतू ने कहा। 'फिर से, पाँच हज़ार अच्छे पिंडारी हैं; क्या मैं सही नहीं हूँ?'
सभी नेताओं ने चिल्लाकर कहा, 'यह बात फिर से सच है; क्या नेमावुर में उनकी गिनती नहीं हुई थी?'
यह झूठ था; वहाँ मुश्किल से चार हज़ार लोग थे, क्योंकि लगभग आधे लुभुर नूरबुद्दा से अलग दिशा में चले गए थे; लेकिन इसका कोई खास महत्व नहीं था; क्योंकि मुझे पता था कि चीतू साहूकारों के साथ यथासंभव बेहतर संबंध बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित था।
'पांच हजार रुपये रख दो,' चीटू ने कहा; 'और अब देखो तुम्हारे पास कितने पैसे हैं।'
मैंने जल्दी से रकम का इंतजाम किया और उसे कागज पढ़कर सुनाया। मैंने कहा, 'सबसे पहले, महाराज का हिस्सा पचहत्तर हजार रुपये है; दूसरे, नेताओं के लिए साठ हजार रुपये; फिर पचास दफ़्फ़रों के लिए, प्रत्येक के लिए एक हजार रुपये, पचास हजार रुपये; अंत में, पांच हजार आदमियों के लिए, प्रत्येक के लिए चालीस रुपये, दो लाख रुपये। और कुल योग तीन लाख पचासी हजार रुपये है।'
'और,' चीतू ने गुफूर खान से कहा, 'मुझे लगता है कि घोड़ों के नाल घिस गए होंगे? हमें नए नाल चाहिए।'
'ज़रूर,' खान ने खिलखिलाती मुस्कान के साथ कहा।
'घोड़े की नालों के लिए पंद्रह हजार रुपये दे दीजिए, इससे, मीर साहब, कुल राशि चार लाख हो जाएगी; और सज्जनों,' उन्होंने सहोकरों से आगे कहा, 'मुझे आपसे अनुरोध है कि आप जल्द से जल्द भुगतान करें, अन्यथा हमें स्वयं ही ले जाना पड़ेगा।'
साहूकारों के बीच कुछ क्षणों के लिए जल्दबाजी में बातचीत हुई और उनके बीच कुछ तीखी बातें भी हुईं; लेकिन वे समझदार थे; मेरा मोटा दोस्त उठा और विनम्रतापूर्वक प्रणाम करते हुए बोला कि पैसा पास ही है और उसे तुरंत लाया जाएगा।

'शाबाश!' चीतू चिल्लाया; 'अब मुझे खाना खाने दो, और तुम सब ध्यान रखना कि कल सुबह तक दुफ्फादार इस घर में मौजूद हों, ताकि वे अपना और अपने आदमियों का हिस्सा ले सकें। लुभुरों को यहाँ से चले जाना चाहिए, क्योंकि इस तरह के स्वागत के बाद मैं अपने दोस्तों, सहौकरों को, अपने अराजक गिरोहों द्वारा लूटे जाने के खतरे में नहीं डालना चाहता।'

सरदार अलग हो गए, और मैं उनके साथ कमरे से निकलने की तैयारी कर रहा था, तभी चीतू ने मुझे वापस बुलाया; 'आओ और मेरे साथ खाना खाओ,' उसने कहा; 'मुझे पूरा यकीन है कि तुम्हारे दोस्त साहूकार हम दोनों के लिए पर्याप्त खाना तैयार कर चुके होंगे।'

मैंने आदेश का पालन किया और मुसनूद के किनारे बैठ गया। खाना जल्द ही आ गया, और वह वाकई बहुत स्वादिष्ट था। हमने उसका भरपूर आनंद लिया, क्योंकि सच कहें तो यात्रा ने हमारी भूख बढ़ा दी थी। भूख मिटने के बाद, पाइप के सुगंधित धुएं में सांस लेते हुए, चीतू ने मुझसे पूछा कि मैंने उसके लिए इतना शानदार स्वागत कैसे करवाया।

मैंने उसे सारी बात बता दी, लेकिन यह तथ्य छुपा लिया कि मैंने अपने लिए दस हजार रुपये की इतनी बड़ी रकम जुटा ली थी; क्योंकि अगर मैंने यह खुलासा कर दिया होता, तो वह तुरंत उसमें से कम से कम आधी रकम हड़प लेता। पीर खान ही एकमात्र व्यक्ति थे जिन्हें इसकी जानकारी थी, और मैंने इसे केवल उन्हीं को सौंपने का निश्चय किया था।

वह बहुत खुश था; मुझे पता था कि उसने एक बड़ी रकम जुटाने का निश्चय कर लिया था, और मैंने जानबूझकर साहूकारों के सामने उसकी संभावित मांग को बढ़ा-चढ़ाकर बताया था; यह, और मेरी धमकियाँ और इशारे कि अगर उन्होंने बड़ी रकम देने में जरा भी आनाकानी की तो उस जगह को लूट के लिए सौंप दिया जाएगा, सफल रहे थे।

'देखिए, मीर साहब,' उसने कहा, 'आपके उत्तम आचरण से मैंने सबसे पहले पचहत्तर हजार रुपये प्राप्त किए हैं; और प्रत्येक योग्य पिंडारी को उसके चालीस रुपये मिलने के बाद जो राशि बचेगी, वह लगभग एक लाख के करीब होगी; जो, आप कहेंगे, एक अच्छी शुरुआत है।'

मैंने कहा, 'हे महान चीतू, आपकी समृद्धि बढ़ती रहे; यदि आपका दास आपको इसी तरह कुछ और रकम जुटाने में मदद कर सके, तो वह बहुत प्रसन्न और सम्मानित महसूस करेगा। मेरे साथ जो लोग थे, उनके लिए मैंने वही शर्तें रखी थीं जो आपने स्वीकार की हैं, और वे पूरी तरह संतुष्ट थे।'

'और आप स्वयं के बारे में क्या कहेंगे, मीर साहब?'

मैंने कहा, 'मुझे ज्यादा कुछ नहीं मिला; शायद मैं खुद को नेताओं में से एक का दर्जा दे सकता था, लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया: फिर भी उन्होंने मुझे पांच हजार रुपये दिए, और मैं संतुष्ट हूं।'

'नहीं,' चीतू ने कहा; 'यह बहुत कम था, मेरे मित्र, और मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि अगली बार जितना हो सके उतना ले आना। और चूंकि तुमने इस बार अग्रिम दल का नेतृत्व करते हुए बहुत अच्छा व्यवहार किया है, इसलिए मैं भविष्य में इसकी कमान तुम्हें सौंप दूँगा, और मुझे गफूर खान को यथासंभव संतुष्ट करना होगा;

वह एक अच्छा सिपाही है, लेकिन मंदबुद्धि है, जो हमेशा स्वार्थ साधने और कस्बों और गांवों में आग लगाने में लगा रहता है, जिससे हमें अक्सर उतना भी नहीं मिलता जितना कि इन समृद्ध स्थानों से, हम थोड़ी सी कुशलता और कुछ मीठे शब्दों से प्राप्त कर सकते थे।'

'नुवाब, आपकी कृपा बढ़ती रहे!' मैंने पुकार कर कहा; 'इंशाल्लाह, आपका सेवक आपको कभी निराश नहीं करेगा।'

मैंने कुछ देर बाद उससे विदा ली और साहूकारों के साथ शामिल हो गया, जो नीचे बैठकर फर्श पर पड़े पैसों के बड़े-बड़े ढेरों को गिन रहे थे।

उन्होंने मेरा सहर्ष स्वागत किया और ज़ोरदार शब्दों में बताया कि मेरे द्वारा उनके लिए किए गए सक्रिय हस्तक्षेप के लिए वे मेरे कितने आभारी हैं। वे मुझसे वे पाँच सौ रुपये माँगना चाहते थे जो उन्होंने चीतू को सौंपते समय देने का वादा किया था, लेकिन मैंने मना कर दिया।

'नहीं,' मैंने कहा; 'यदि मैंने आपकी सेवा की है, और मुझे लगता है कि मैंने की है, तो मैं अपनी सेवाओं का लाभ नहीं उठाऊंगा। आपने मेरे साथ उतना ही अच्छा व्यवहार किया है जितना मैंने आपके साथ, इसलिए हिसाब बराबर है; मैं आपसे केवल इतना ही निवेदन करता हूं कि मुझे मेरा पैसा सोने की छड़ों में दे दें, जिसे मैं आसानी से छिपा सकता हूं, सिवाय कुछ सौ रुपये के जो वर्तमान खर्चों के लिए हैं।'

'हाँ, मंजूर है,' साहूकार ने कहा; और कुछ ही देर में सोना मेरे हाथ में आ गया; मैंने साहूकार के कुछ आदमियों को अपने पहरे में लेकर शिविर की ओर चल पड़ा, जिसकी तेज़ जलती हुई आग शहर के उस पार मैदान में अंधेरे में चमक रही थी, और कई जंगली झुंडों को दिखा रही थी जो ठंडी हवा से बचने के लिए आग के चारों ओर huddled थे। मैं जल्दी ही अपने छोटे से तंबू में पहुँच गया, जो तीन भालों पर फैला हुआ एक कपड़ा था, जिनमें से दो ज़मीन में गड़े हुए थे, और एक को उनके ऊपर एक खंभे की तरह बाँधा गया था; और पीर खान की मदद से, मैंने सोने को अपनी काठी के फ्लैप में बनवाए थैलों में रखा और उन्हें सिल दिया। एक ही रात में मैं दस हज़ार रुपये अमीर हो गया!

पीर खान ने कहा, 'यह बहुत बड़ा काम है; यहाँ हमें कोई परेशानी नहीं हुई है; और अगर हम इसी गति से आगे बढ़ते रहे, तो हम सौ ठग्गी अभियानों की मेहनत और जोखिम के बाद की तुलना में कहीं अधिक समृद्ध होकर लौटेंगे।'

मैंने कहा, 'मुझे हमेशा अग्रिम पंक्ति में रहना है; और अगर हमें हमेशा अच्छा हिस्सा नहीं मिलता है तो यह मेरी ही गलती होगी; जहाँ तक मेरा सवाल है, मैंने ठग्गी धर्म को त्याग दिया है, जब तक कोई पिंडारी सरदार अपना झंडा फहराने के लिए मौजूद है।'

'और हम सब आपका अनुसरण करेंगे,' उसने उत्तर दिया; 'मोती और बाकी लोग अपनी सफलता से प्रसन्न हैं और उनका मनोबल ऊंचा है: उनमें से कोई भी ऐसा नहीं है जिसे आज के काम का अच्छा हिस्सा न मिला हो, क्योंकि हम आपके आस-पास ही रहे और आपसे अपने प्रभाव का इस्तेमाल करने के लिए हमें अच्छी रिश्वत दी गई थी; वे हम सबको मूर्ख समझते थे, और आप जानते हैं कि मोती और मैंने भी ऐसा ही समझा।'

मैंने कहा, 'अगर तुम सब जल्द ही सचमुच में बेवकूफ साबित न हो जाओ तो इसमें मेरी कोई गलती नहीं होगी। अपने आदमियों को सक्रिय होने दो और अच्छे कपड़े पहनो: तुम सब अच्छे घोड़ों पर सवार हो और सरदार की नजर तुम पर पड़ जाएगी।'

अगली सुबह भोर होते-होते मैं चीतू के साथ था। सहोकरों ने आपस में चंदा इकट्ठा करके और कस्बे से चंदा लेकर सारा पैसा जमा कर लिया था; और यह सारा पैसा पिंडारियों में उचित रूप से बाँट दिया गया था। प्रत्येक दुफ्फादार अपने दुफ्फे का हिस्सा ले गया, और वे भली-भांति जानते थे कि अगर उन्होंने किसी को उसके हक से वंचित किया तो उन्हें कितना बड़ा जोखिम उठाना पड़ेगा।

कुछ घंटे बीत गए, और जल्दी से भोजन करने के बाद, सभी लोग अपने-अपने घोड़ों पर सवार हो गए, और लुभुर लोग अपने सामने के क्षेत्र में नई लूट की तलाश में निकल पड़े। फिर भी, रवाना होने से पहले, चीतू ने प्राप्त राशि के तुरंत भुगतान के बदले में वादा किया कि भविष्य में वह जो भी अभियान चलाएगा, उसमें ओमराओटी शहर को चंदे से छूट दी जाएगी; और उसने अपना वचन निभाया। ओमराओटी को फिर कभी नहीं लूटा गया, और बाद में वहाँ तैनात सैनिकों की एक बड़ी टुकड़ी ने छोटे और बिखरे हुए समूहों को हम जैसे अचानक हमला करने से प्रभावी ढंग से रोक दिया।

हम तेज़ी से आगे बढ़े! मैं, अपने दल का नेतृत्व करते हुए, जिसे अब मुझ पर पूरा भरोसा था, अपने बहादुर घोड़े पर सवार होकर खुशी से झूम रहा था, मेरा दिल उतना ही हल्का और प्रसन्न था जितना कि मुझे मिली असीमित स्वतंत्रता से हो सकता था। चिंता का कोई विचार मन में नहीं आया, और मैं उन गांवों को जलते या लूटते देखने के दर्द से बच गया जिनसे हम गुज़रे (जिनमें से प्रत्येक से हम जितना हो सके उतना धन इकट्ठा करते थे, जिसे तुरंत हमारे साथ चल रहे शूतुर ऊंटों पर लाद दिया जाता था), और निर्दोष निवासियों को पीछे चल रहे सैनिकों द्वारा क्रूर यातनाओं का शिकार होते देखने से भी बच गया, जिन्हें अक्सर लूट का माल नहीं मिलता था।

हम करिनजा में रुके; कस्बे में मौजूद कुछ सैनिकों ने कमजोर बचाव किया और जब हम अंदर घुसे तो उन्होंने मेरे कुछ आदमियों को घायल कर दिया; लेकिन वे जल्द ही मारे गए या तितर-बितर हो गए; और, अन्य गांवों को चेतावनी देने के लिए, इसे लूट और विनाश के लिए छोड़ दिया गया। मैं इस तरह की क्रूरता को कभी सहन नहीं कर सकता था, और मैं शिविर में अपने स्थान पर चला गया; कुछ ही देर बाद, साफ, धूसर शाम के आकाश में लगभग एक साथ गांव के विभिन्न हिस्सों से उठती हुई तेज लपटों से, मैं समझ गया कि यह विनाश के लिए अभिशप्त है। आग तेजी से फैल गई, जबकि पिंडारियों की चीखें उनके भयानक काम में लगी हुई थीं, और निवासियों की चीखें—महिलाओं की चीखें बेहद तीखी और स्पष्ट थीं—उनकी आवाज़ों के साथ गूंज रही थीं। लेकिन यह एक ऐसा काम था जिसमें पिंडारियों को आनंद आता था; व्यवस्था, जो केवल तब तक कायम रहती थी जब तक कोई उत्तेजना नहीं होती थी, पूरी तरह से समाप्त हो गई थी, और चल रहे इस पागलपन भरे दंगे को रोकने का कोई भी प्रयास हस्तक्षेप करने वाले के लिए मौत के समान होता। मेरे अपने

गुंडे भी मेरे आसपास बैठे थे, क्योंकि गुंडे बर्बर नहीं होते, और उनमें अत्याचारों में शामिल होने की कोई इच्छा नहीं थी।

हम चुपचाप बैठे रहे, लेकिन तभी हमारा ध्यान एक आदमी पर गया जो एक लड़की को घसीट रहा था। लड़की ने अपनी पूरी ताकत से विरोध किया, लेकिन जाहिर तौर पर वह लगभग थक चुकी थी। मैं उसकी मदद के लिए दौड़ा और मेरी नजर ग़फ़ूर खान पर पड़ी, जिसके चेहरे पर वासना और उस दृश्य के कारण क्रूरता और भी ज्यादा उभर आई थी जिसमें वह लिप्त था।

'हा!' वह चिल्लाया, 'मीर साहब, क्या आप हैं? मैंने एक सच्चे पिंडारी की तरह मेहनत की है और कुछ सराहनीय काम किया है; इसे देखो, यार! क्या यह पेरी नहीं है? एक हूरी? जब मैं उनके घर में घुसा तो उसकी मूर्ख माँ ने मेरा विरोध किया, लेकिन मैंने अपनी तलवार के एक वार से उसे चुप करा दिया, और देखो! यह रही उसकी सुंदर बेटी, एक राजकुमार के लिए योग्य साथी। बोलो, मेरी प्यारी, क्या तुम ग़फ़ूर खान के आलिंगन की संभावना से सम्मानित महसूस नहीं करती?'

हे भगवान! मैं उसे मार सकता था, और ऐसा करना बहुत आसान होता, क्योंकि वह तैयार नहीं था। मैंने अपनी तलवार म्यान से आधी निकाल ली थी, लेकिन वापस रख दी: मैंने मन ही मन उसका फैसला कर लिया था, और उसे अपने पास रखा। मैंने व्यर्थ ही उसे लड़की को छोड़ने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन वह मेरे चेहरे पर हँसा और उसे घसीटकर ले गया। वह उससे भागना चाहती थी, और उसने कोशिश भी की, लेकिन उसने उसका पीछा किया और उसे पकड़ लिया, क्योंकि उसके कोमल पैर खुरदरी ज़मीन से कट गए थे, और तेज़ी से छाते अंधेरे में मैं उन दोनों को देख नहीं पाया। बेचारी! वह एक ब्राह्मण की बेटी थी, और उसे अगले दिन का उजाला देखने की शर्मिंदगी और अपने उजाड़ घर में अपवित्र और बहिष्कृत होकर लौटने के दुख से बचा लिया गया था। सुबह ग़फ़ूर खान ने मुझे एक भयानक हँसी के साथ बताया कि उसने उसकी हत्या कर दी थी, क्योंकि वह उसकी कटार छीनकर उसे अपने दिल में घोंपने की कोशिश कर रही थी। उन्होंने कहा, 'मैंने उसे परेशानी से बचा लिया।'

धीरे-धीरे आग की तीव्रता कम होती गई, क्योंकि कुछ ही घर बचे थे जो जलकर राख हो गए थे, लेकिन पिंडारी अभी भी अपने क्रूर और भयानक कृत्यों में लगे हुए थे, जैसा कि रात की हवा में गूंजती चीखों से स्पष्ट था। मैंने सुना था कि कभी-कभी ऐसी क्रूरताएँ होती हैं, लेकिन मुझे उनकी भयावह वास्तविकता का कोई अंदाजा नहीं था। मैंने हज़ार बार लुभुर छोड़कर अपने घर लौटने का संकल्प लिया; लेकिन फिर यह सोचकर कि कुछ भटकते हुए घुड़सवार, जो अपना कोई उचित स्पष्टीकरण नहीं दे सकते, तुरंत पिंडारी समझकर देश के क्रोधित लोगों द्वारा बलि चढ़ा दिए जाएँगे—यह, और साथ ही, आगे के रोमांच की बेचैन इच्छा, ने मुझे यह विचार त्यागने पर मजबूर कर दिया। बारिश भी शुरू हो गई, और हम सब मेरे छोटे से तंबू में दुबक गए, और सुबह होने तक एक थका देने वाली रात गुजारी। फिर हम आगे बढ़े, और दुर्भाग्यपूर्ण करिनजाह शहर, जो अब सुलगते खंडहरों का ढेर बन चुका था, जल्द ही हमसे बहुत दूर छूट गया।

हम मुंगरूल से आगे बढ़े; और कस्बे के पार, अब दिन के उजाले में, मुझे वह जगह देखने का मौका मिला जहाँ मेरा पहला शिकार गिरा था। मैंने सोचा था कि वह जगह एक बड़े और घने जंगल में है, कम से कम उस रात चाँदनी में तो ऐसा ही लग रहा था, लेकिन ऐसा नहीं था; छोटी नदी वैसी ही थी जैसी हमने पार की थी, और मैं एक बार फिर उसी जगह पर खड़ा था जहाँ सहौकर गिरा था! झाड़ियों की एक पतली पट्टी नदी के किनारे थी, और पीर खान ने उस जगह से थोड़ा ऊपर एक इशारे से संकेत दिया जहाँ से हमने नदी पार की थी। वह भील (एक प्रकार का छोटा तालाब) था जहाँ उन्हें दफनाया गया था, और अब वह जगह हमारे शिकारों को छिपाने के लिए बेहद असुरक्षित लग रही थी, सड़क के इतने करीब और देखने में इतनी पतली सी छिपी हुई। फिर भी, उन्हें उनकी अंतिम विश्रामस्थली में दफनाए हुए कई साल बीत चुके थे, और लगातार बरसात के मौसमों ने या तो उनके अवशेषों को बहा दिया था, या उन्हें रेत से और भी गहराई तक ढक दिया था।

हम उस स्थान से भी गुजरे जहाँ हमारे दल डेरा डाले हुए थे और अलग हो गए थे; और अब मेरे सामने एक नया देश था, हालाँकि यह उस देश से थोड़ा ही भिन्न था जिसे हम पहले ही पार कर चुके थे।

हम बासिम में रुके और मुझे पिछली रात के दृश्यों के पुनरावर्तन का बहुत डर था; लेकिन मेरी हैरानी की बात यह थी कि सैनिक शांत और अनुशासित थे; और संभवतः शहर में एकत्र किए गए एक बड़े चंदे ने ही इसे बचा लिया था। यहाँ से पाँच कदम चलकर हम गोदावरी नदी के किनारे स्थित नंदैर पहुँचे, जो एक समृद्ध शहर था और जहाँ से हमारी सेना को उतनी ही बड़ी मात्रा में रसद मिलने की उम्मीद थी जितनी हमें उमरावती में मिली थी। हमें डर था कि हमारे आने की खबर वहाँ तक पहुँच गई होगी और साहूकार और धनी निवासी भाग गए होंगे; लेकिन ऐसा नहीं हुआ: वे पूरी तरह से आश्चर्यचकित थे और हमारी दया पर थे, क्योंकि वहाँ पहरा देने के लिए एक भी उल्लेखनीय सैनिक मौजूद नहीं था। कुछ सैनिक अवश्य थे, जिन्होंने नदी के ऊपर बने एक पुराने किले में खुद को बंद कर लिया था, जो नदी पार करने के स्थान पर स्थित था; लेकिन वे दीवारों के भीतर ही रहे, केवल तभी एक-दो गोलियाँ चलाते थे जब हमारे कोई लुटेरे बहुत पास आते थे; हमने उन्हें परेशान नहीं किया, बल्कि यथासंभव बड़ी राशि एकत्र करने के काम में जुट गए।

पहले की तरह, अग्रिम पंक्ति की जिम्मेदारी मुझे सौंपी गई थी, और मैंने वही प्रणाली अपनाई जो मैंने ओमराओटी में अपनाई थी।

मैं आपको लगभग वही कहानी दोहराकर उबाऊ नहीं बनाऊंगा; संक्षेप में इतना कहना ही काफी है कि डेढ़ लाख रुपये एकत्र करके सेना को दे दिए गए, और मुझे अपने हिस्से में लगभग तीन हजार रुपये, कुछ गहने और एक जोड़ी शॉल मिली। शहर नष्ट नहीं हुआ; वास्तव में ऐसा होना असंभव था, क्योंकि घर मजबूत थे और उनकी छतें सीढ़ीदार थीं; लेकिन उपनगरों को नुकसान हुआ, और दुर्भाग्यशाली बुनकरों की झोपड़ियों को उनके उत्तम कपड़ों के लिए लूट लिया गया, जिसके लिए यह जगह प्रसिद्ध है—और यह व्यर्थ नहीं गया, क्योंकि अगले दिन आधी सेना नई पगड़ी और कमरबंद पहने हुए दिखाई दी।

नदी पार करना संभव नहीं था, और वहाँ केवल एक ही नाव थी; इसलिए हम उत्तरी किनारे के साथ-साथ आगे बढ़ते रहे, जब तक कि हम गंगा खैर नहीं पहुँच गए, जहाँ हमें बताया गया कि नावें और एक अधिक

सुविधाजनक फेरी उपलब्ध हैं: और हम निराश नहीं हुए। जिस दिन हम उस स्थान के सामने पहुँचे, उसी दिन हमने आसानी से नदी पार कर ली, पुरुषों ने अपने घोड़ों को तैराकर पार कराया, और लूटा हुआ माल और सामान नावों द्वारा लाया गया। कुछ सौ लोगों ने शहर की रक्षा करने का प्रयास किया, लेकिन द्वार तोड़कर उस पर कब्जा कर लिया गया और उसे लूट लिया गया। हमारे कुछ सैनिक शहीद हो गए, और मेरे पैर में गोली लग गई, जिससे मैं उस स्थान की लूटपाट में सक्रिय रूप से भाग लेने में असमर्थ हो गया। हालाँकि, पीर खान और मोती निष्क्रिय नहीं थे, और वे गहनों और सिक्कों का एक अच्छा खासा ढेर लेकर आए, जिससे कुल भंडार में वृद्धि हुई।

यहां से हम दक्षिण की ओर बढ़े। बीदर, भालकी और हुमनाबाद (दूसरा उमरावती) का सुंदर और समृद्ध कस्बा अलग-अलग लूटा गया या उन पर भारी कर लगाया गया; जबकि हमारे रास्ते में आने वाले हर गांव को लूटा गया और अक्सर जलाकर नष्ट कर दिया गया। हुमनाबाद से मैं तीन सौ सैनिकों के साथ कुछ ही दूरी पर स्थित कुल्लियानी पहुंचा; लेकिन हमने पाया कि खतरे की सूचना दे दी गई थी और सभी धनी निवासी किले में शरण ले चुके थे, जो बहुत मजबूत था और हमारे लिए अभेद्य था। हालांकि, हमने इतना भय पैदा कर दिया था कि किले के रक्षक चुपचाप अंदर ही रहे और हमें अगली सुबह तक शहर पर शांतिपूर्ण कब्जा बनाए रखने दिया, जब हम फिर से मुख्य दल से मिल गए।

हम पहाड़ियों में एक दर्रे से उतरकर चिंचोली गाँव पहुँचे, जो ज़ाहिर तौर पर लूटा जा चुका था। हम सीधे दक्षिण की ओर बढ़ते रहे, रास्ते में आने वाली हर जगह को जलाते-लूटते हुए, जब तक कि कृष्णा नदी की चौड़ी और गहरी धारा ने हमारी आगे बढ़ने की राह रोक नहीं दी। यहाँ लुभुर कुछ दिनों के लिए रुके; चारा प्रचुर मात्रा में था, हर कोई पैसों से लदा हुआ था, और हमने सच्चे पिंडारियों की तरह अपने शिविर में खूब आनंद लिया। आसपास के इलाकों से नर्तकियों को लाया गया, हालाँकि उनके साथ कभी कोई हिंसा नहीं की गई, और उन्होंने अपने गीतों और प्रदर्शनों से हमारा मनोरंजन किया, और जब हमें फिर से आगे बढ़ने के लिए कहा गया, तो वे हमें छोड़कर चली गईं, पूरी तरह संतुष्ट और पुरस्कृत होकर, और इस बात का अफसोस जताते हुए कि वे हमारे साथ नहीं जा सकीं।

चीतू का रुकना गलत था, क्योंकि पिंडारियों के निकलने की खबर पूरे देश में फैल चुकी थी, और कूलबुर्गा की ओर बढ़ते हुए हमें कोई खास लूटपाट नहीं मिली। कूलबुर्गा में हमने देखा कि सैनिक तैनात थे और हमारे स्वागत के लिए तैयार थे; इसलिए शोलापुर और बरसी और वायराग के समृद्ध शहरों पर कब्जा करने का इरादा छोड़कर, हम भीर, प्येतून और औरंगाबाद की ओर चल पड़े, औरंगाबाद पर अचानक हमला करने की उम्मीद कर रहे थे, हालांकि हमें डर था कि वहां अच्छी खासी सैन्य तैनाती होगी।

लेकिन मैंने ठान लिया था कि अगर संभव हुआ तो मैं बारसी और वायराग को चौंका दूंगा, और मैंने चीतू के सामने अपने अभियान के प्रस्ताव रखे। उसने तुरंत मेरी बात मान ली, जिस पर ग़फ़ूर खान बेहद क्रोधित हुआ; और अपने साथ तीन सौ सर्वश्रेष्ठ सैनिकों को लेकर, जिन्हें मैं चुन सका, और उन्हें अपने ठगों के नेतृत्व में

टुकड़ियों में बाँटकर, मैंने मुख्य दल को अल्लंड शहर में छोड़ दिया और टोलजापुर की ओर तेज़ी से बढ़ गया, जहाँ से निचले इलाकों में जाने का एक दर्रा है।

टोलजापुर में दर्शनीय स्थलों में भवानी मंदिर के अलावा और कुछ खास नहीं है; और हालांकि मुझे पता था कि ब्राह्मणों के पास गहनों का भंडार है, फिर भी, चूंकि मेरे कई आदमी हिंदू थे, वे मंदिरों को लूटे जाने की बात सुनने को तैयार नहीं थे, और मुझे मजबूरन निवासियों से कुछ हजार रुपये वसूल कर ही संतोष करना पड़ा। हमारा अगला लक्ष्य वायराग था, और हम उसमें सफल रहे। हमारी सेना को मराठा घुड़सवारों की रिस्साला समझा गया, जो उस क्षेत्र में मौजूद थे, और हमें बिना किसी विरोध के शहर में प्रवेश करने की अनुमति मिल गई। हमने शहर को लूटा और भारी मात्रा में माल प्राप्त किया, क्योंकि योगदान के प्रस्ताव के लिए समय नहीं था; वास्तव में मैंने उस विकल्प के बारे में सोचा भी नहीं था, और न ही लंबी पैदल यात्रा के बाद मैं अपने सैनिकों को रोक सकता था। फिर भी वे क्रूर नहीं थे, और न ही मैंने उनमें से किसी के द्वारा किसी को यातना देने के बारे में सुना, और निवासियों ने अपनी कीमती वस्तुओं का पर्याप्त हिस्सा दे दिया जिससे उन्हें आसानी से संतुष्टि मिल गई। यहाँ हमें पता चला कि जिस रिस्साला के लिए हमें गलत समझा गया था, वह बारसी में थी, और चूंकि वह स्थान भीर जाने वाले हमारे सीधे रास्ते में पड़ता था, जहाँ हमें मुख्य सेना से मिलना था, इसलिए मुझे उस रास्ते से आगे बढ़ने का अपना इरादा छोड़ना पड़ा; पुरेंदा में निज़ाम के घुड़सवारों की एक बड़ी टुकड़ी भी थी, और मुझे डर था कि हम घिर सकते हैं। जिस रास्ते से हम आए थे, उसी रास्ते से तुरंत वापस लौटना ही हमारा एकमात्र विकल्प था; कुछ घंटों के आराम के बाद हम फिर से अपने घोड़ों पर सवार हो गए और टोलजापुर की ओर जितनी तेज़ी से दौड़ सकते थे, दौड़ पड़े। उस दिन मेरे बहादुर घोड़े ने मुझे बड़ी शान से ढोया: अधिकांश लोग अपने घोड़ों को अफीम खिलाकर उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करते थे, लेकिन मेरे अच्छे घोड़े को इसकी ज़रूरत नहीं थी, और जब हम टोलजापुर वापस पहुँचे तो वह लगभग उतना ही तरोताज़ा था जितना कि वहाँ से जाते समय था।

यहां हमने एक दिन आराम किया ताकि हम तरोताजा हो सकें, और उसके बाद आगे बढ़ते हुए, हमने भीर में मुख्य दल को पीछे छोड़ दिया, जहां वे डेरा डाले हुए थे।

मेरी योजना का कुछ हिस्सा विफल हो गया था, फिर भी चीतू ने बड़े संतोष के साथ दस हजार रुपये नकद और लगभग उतनी ही राशि के गहने स्वीकार किए, जो मैंने अपने उद्यम के परिणाम स्वरूप पूरे दरबार के साथ उसे भेंट किए; इसके लिए उसने मुझे सम्मान का वस्त्र पहनाया और अपने घोड़ों में से एक अच्छा घोड़ा भेंट किया।

अध्याय XXXV

इसमें बताया गया है कि कैसे अपनी सफलता से उत्साहित होकर चीतू ने एक और बड़े पैमाने पर अभियान की योजना बनाई और कैसे अमीर अली उसमें शामिल हो गया।

भीर को दो दिन तक लूटपाट और अत्याचार का शिकार बनाया गया; और जब हम वहाँ से निकले तो वहाँ के दयनीय निवासियों के पास शायद ही कोई कपड़ा बचा था। उन्हें जले हुए कुछ खंभों को इकट्ठा करके टूटी-फूटी झोपड़ियाँ बनाते देखना दयनीय था। इन झोपड़ियों को उन्होंने हरी टहनियों से ढक रखा था ताकि रात की ठंडी हवाओं से खुद को बचा सकें। उन्होंने अपने शहर पर हुए इस अत्याचार को चुपचाप सहन किया, क्योंकि उसकी रक्षा के लिए कोई सैनिक नहीं थे; और भली-भांति हथियारों से लैस और बर्बर हमारे जैसे गिरोह के सामने वे क्या कर सकते थे?

गोदावरी नदी के किनारे बसा पायेतुन भी उसी हाल में था; और यद्यपि कई धनी निवासी शरण लेने के लिए औरंगाबाद भाग गए थे, फिर भी हमारे उद्देश्य के लिए पर्याप्त माल बचा था। आप शायद जानते होंगे कि यह स्थान ब्रोकेड मलमल के निर्माण के लिए प्रसिद्ध है, जो केवल बनारस के मलमल से ही कमतर है; और उस समय पुणे और हैदराबाद के दरबारों की आपूर्ति के लिए इनकी भारी मांग थी: इसलिए आप हमारे द्वारा लूटे गए माल के मूल्य का अंदाजा लगा सकते हैं; चीतू के ऊंट और हाथी पूरी तरह से लदे हुए थे। हममें से किसी को भी नुकसान नहीं हुआ; और हमारे पास अब एक के बाद एक इतनी कीमती वस्तुओं का भंडार था कि मुझे नहीं लगता था कि हम इसे अपने साथ ले जा पाएंगे। मुझे आगे अपने मार्ग का विस्तृत वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है; अतः संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि हमने अदजुंताह घाट को पार कर लिया, हालांकि फिरंगी सैनिकों के कुछ समूहों ने हमें घेर लिया था; लेकिन हमने एक-दो तेज कदमों से उन्हें चकमा दिया, और बूरहान-पूर पर एक असफल प्रयास के बाद, हम तप्ती की घाटी से होते हुए दाईं ओर मुड़ गए, और कुछ ही दिनों में सुरक्षित रूप से नेमावुर स्थित शिविर में लौट आए।

तीन महीने से कुछ अधिक समय में ही हमने निज़ाम के विशाल क्षेत्र के सबसे समृद्ध भाग को पार कर लिया था; हम उसकी और फिरंगी सेना को चकमा देते हुए उनकी दाढ़ियों का मज़ाक उड़ाते हुए आगे बढ़े थे; हमने उसके सबसे धनी शहरों को बेरोकटोक लूटा था और लगभग एक भी सैनिक खोए बिना, भारी मात्रा में लूट का माल लेकर वापस लौटे थे। वह क्षेत्र इतना समृद्ध था कि नेमावुर के साहूकारों ने हमसे जितना खरीद सकते थे, उतना खरीदने के बाद भी, पूरे क्षेत्र को खरीदने के लिए और धन जुटाने में असमर्थ रहे; और ओजेन, इंडोर और आसपास के सभी बड़े शहरों के व्यापारियों को हमारे समृद्ध बाज़ार में बुलाया गया।

समय रहते सब कुछ खरीद लिया गया, और हर कोई अपने लूटे हुए माल के साथ जल्द से जल्द अपने घर लौटने के लिए तैयार था। यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि मैं अपने घर को फिर से देखने और अपनी अज़ीमा के चरणों में अपना अर्जित धन अर्पित करने की सोचकर कितना उत्साहित था, और न ही यह कि मेरी रोमांचक कहानियों को सुनकर उन्हें कितनी खुशी होगी। इसलिए मैंने और मेरे आदमियों ने जितना सोना

खरीद सकता था, खरीद लिया, और दो तेज़ ऊँट किराए पर लेकर, उन पर सोना और अपने उपयोग के लिए मिले कीमती कपड़े लाद दिए, और चीतू के दरबार से छुट्टी मिलते ही झालोन के लिए तेज़ी से रवाना होने के लिए तैयार था। यह आसान नहीं था, क्योंकि मैंने सरदार की वफ़ादारी से सेवा की थी, उन्हें मेरी कुशलता और सक्रियता पर भरोसा था, और वे मुझे छोड़ने से हिचकिचा रहे थे, क्योंकि उन्हें डर था कि मैं उनके पास वापस नहीं लौटूँगा।

जिस दिन मैं विदा लेने गया, उन्होंने मेरा विदाई उपहार स्वीकार नहीं किया, न ही मुझे प्रस्थान के समय उत्तर और पान की पारंपरिक भेंट दी; और मैं दरबार में उदास मन से बैठा रहा, यह सोचकर कि शायद मेरे साथ विश्वासघात किया गया है—मेरी मेहनत का यह एक घटिया प्रतिफल था। लेकिन मैं गलत था: जब कुछ ही लोग बचे थे, तब उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और रात के एक समय में मुलाकात और निजी बातचीत का समय तय किया, और मुझसे समय पर आने का आग्रह किया, क्योंकि उन्हें मुझसे कुछ महत्वपूर्ण बातें कहनी थीं।

मैं बेहतर उम्मीद के साथ अपने घर लौटा, फिर भी मन में संदेह बना रहा और लगभग पीर खान और बाकी लोगों की सलाह मानने को तैयार था, जो चाहते थे कि मैं भाग जाऊं, क्योंकि यही हमारे पैसे बचाने का एकमात्र उपाय था। हालांकि, मुझे चीतू पर पूरी तरह से अविश्वास नहीं था; लेकिन मैंने ठान लिया था कि अगर वह और बातें करके मुझे टालता रहा और देरी करता रहा, तो मैं उसे हर संभव तरीके से छोड़ दूंगा।

तदनुसार, मैं निर्धारित समय पर, आधी रात के बाद, वहाँ पहुँचा। मैंने पाया कि मुखिया अकेले थे। इससे पहले मुझे कभी भी किसी पूरी तरह से निजी सम्मेलन में शामिल होने का इतना सम्मान नहीं मिला था, हालाँकि मुझे उनकी परिषदों में बैठने की अनुमति दी गई थी और मेरे सुझावों को कई बार माना भी गया था। मैं अनुमान नहीं लगा सकता था कि आगे क्या होने वाला है।

'बैठ जाओ, स्यूड,' चीटू ने कहा; 'मुझे तुमसे बहुत कुछ कहना है।'

'बोलते रहिए, नुवाब,' मैंने उत्तर दिया; 'आपके शब्द आपके सेवक के लिए मधुर हैं, और वे उन कानों तक पहुंचेंगे जो आपके सेवाभाव में समर्पित हृदय को उनका अर्थ समझाएंगे।'

'तो सुनो,' उसने कहा। 'लेकिन पहले मैं तुमसे पूछूंगा कि पिछली मुहिम का उद्देश्य क्या था?'

'इसका उद्देश्य!' मैं चिल्लाया। 'मुझे लगता है, इसका एकमात्र उद्देश्य अपने और अपने आदमियों के लिए जितना हो सके उतना धन इकट्ठा करना था, ताकि मराठों और फिरंगी वंश के बीच होने वाले युद्ध का फायदा उठाया जा सके - ईश्वर उनकी जाति को शाप दे! मैंने स्वयं इस विषय पर विचार किया है और दूसरों से भी कई राय सुनी हैं, फिर भी मैं इससे अधिक गहरा उद्देश्य कभी नहीं समझ पाया।'

उन्होंने कहा, 'आप कुछ हद तक सही हैं, लेकिन पूरी तरह नहीं; अब आप पूरी बात सुनेंगे, और मेरी आगे की योजनाओं के बारे में भी जानेंगे।'

मैंने पूरी एकाग्रता से उनकी बात सुनी और जैसे-जैसे वे बोलते गए, मैंने उनके शब्दों को ध्यानपूर्वक ग्रहण किया।

'मीर साहब, आपने समय पर गहरी नज़र रखी है और मुझे आपसे यही उम्मीद थी। आपने शायद सुना होगा कि टीपू सुल्तान—जिनकी आत्मा को शांति मिले!—फिरिंगियों को उखाड़ फेंकने और उनका सफाया करने के लिए निज़ाम और सभी मराठों को एक संघ में शामिल करना चाहते थे। अगर उनकी योजना सफल हो जाती तो वे ऐसा कर देते; लेकिन, उनके लालच पर लानत! उन्होंने निज़ाम के क्षेत्रों को मराठों के साथ बाँटने की गुप्त साज़िश रची थी, जिसका पता न जाने कैसे चला; और फिरिंगियों के दुर्भाग्य पर लानत, जिन्होंने एकमात्र ऐसी शक्ति को उखाड़ फेंका जिसने अपने अस्तित्व के दौरान मुस्लिम धर्म की गरिमा को कायम रखा। टीपू और उनकी सत्ता दोनों ही जा चुके हैं।' शायद आपको इस बात का ज्ञान नहीं है कि इस समय, यद्यपि होल्कर अपनी शक्ति खो चुका है और सिंधिया ने फिरंगियों के साथ निष्क्रियता का एक नीच गठबंधन बना लिया है, फिर भी मराठा राज्यों, विशेषकर पुणे और नागपुर के राज्यों के बीच, एक गहरा गठबंधन मौजूद है, जो एक साथ उठकर सत्ता हथियाने वाले और कभी संतुष्ट न होने वाले यूरोपीय लोगों के खिलाफ युद्ध की घोषणा करने के लिए तैयार है। सिकंदर जाह फिरंगियों के साथ मिल जाएगा; हालांकि वह कुछ खास नहीं कर सकता, क्योंकि उसकी सेना दयनीय है और उसके नेताओं में न तो कौशल है और न ही वीरता, फिर भी वह उनका पूरा समर्थन करेगा और उसके राज्य फिरंगियों के आवागमन और भोजन के लिए खुले हैं, और उनमें ऐसे स्थान बनाए जा सकते हैं जो मराठा नेताओं के भविष्य के अभियानों को बुरी तरह से बाधित करेंगे। इसलिए मेरा पिछला अभियान (और आलिया की कृपा से यह सफल भी हुआ) सिकंदर जाह के देश को कंगाल करने, लोगों को निरंतर भय की स्थिति में रखने और, यह कहने की आवश्यकता नहीं है, अपने खजाने भरने के उद्देश्य से था।

अब फिर से सुनो। अपने उद्देश्य को पूरी तरह से पूरा करने और मराठों की तैयारियों से यूरोपियों का ध्यान हटाने के लिए, इन अभियानों को लगातार और तेज़ी से अंजाम देना होगा ताकि इनका उचित प्रभाव हो सके: हुज़ूर के आधे राज्य को लूटा जा चुका है, और दूसरा आधा बचा है;— इंशाल्लाह! उसका भी यही हाल होगा। फिरंगियों को निरंतर भय में रखा जाएगा; वे व्यर्थ ही हमारा पीछा करते हुए जगह-जगह जाएंगे, लेकिन मैं उनसे नहीं डरता। मैंने एक बार उनकी दाढ़ियों पर हँसा था, और फिर से हँसूँगा। उन्हें पता चलेगा कि चीतू पिंडारी कौन है, और इसका उन्हें खामियाजा भुगतना पड़ेगा। न केवल कायर निज़ाम को भुगतना पड़ेगा, बल्कि फिरंगियों के समृद्ध प्रांत भी बर्बाद हो जाएंगे। मैं कृष्णा नदी पार करूँगा; नदी पार करने योग्य होगी, या लगभग होगी; और उनके सैनिकों द्वारा कब्जा न किए गए सभी प्रांत मेरी शक्ति के सामने नतमस्तक हो जाएंगे। इससे उनके संसाधन समाप्त हो जाएंगे और उनके प्रयास पंगु हो जाएंगे। तब मराठे एकजुट होकर उठ खड़े होंगे: मैं उनका साथ दूँगा; क्योंकि मुझे उनकी सेनाओं में उच्च कमान और उनकी विजय के बाद के क्षेत्रों का वादा किया गया है; और हम उठ खड़े होंगे, मीर साहब—जी हाँ, जी हाँ, मैं कहता हूँ, क्योंकि ये उथल-पुथल भरे समय हम जैसे लोगों के लिए बिल्कुल उपयुक्त हैं—इंशाल्लाह! हम इनका लाभ उठाएंगे और ऐसी प्रसिद्धि अर्जित करेंगे जिस पर आने वाली पीढ़ियाँ आश्चर्यचकित होंगी।

मैंने कहा, 'यह एक अनोखी और गहरी योजना है, जबकि खेल देखने में आसान लगता है। मुझे इसमें कोई खामी नहीं दिखती; लेकिन क्या फेरिंगही हमारे लिए तैयार नहीं होंगे और हम जहां भी अपना चेहरा दिखाएंगे, वे हमारा सामना नहीं करेंगे?'

'नहीं!' वह उग्र स्वर में चिल्लाया, 'वे ऐसा नहीं कर पाएंगे! चाहे वे कितने भी चालाक क्यों न हों, मैं उनसे पहले मैदान में पहुँच जाऊँगा। अब वे सोचते हैं कि लूट से लबालब भरे होने के कारण हम यहाँ चुपचाप बैठे रहेंगे और मूर्खतापूर्वक अगले दशहरा का इंतज़ार करेंगे; लेकिन वे पूरी तरह गलत हैं: और यही कारण है कि मैंने आप लोगों से यह बात गुप्त रखी। मैं अपने दरबार में यह घोषणा नहीं कर सका कि मैंने एक और अभियान की योजना बनाई है; कोई मूर्ख अपने घर पर ही यह बात बता देता और एक हफ्ते में यह खबर पूरे देश में फैल जाती। नहीं! मैंने इसे गुप्त रखा है, सिवाय कुछ लोगों के, और वे मेरे मुख्य नेता हैं, जिनमें से प्रत्येक के पीछे एक हजार सैनिक हैं। मेरी बात सुनो, - मैंने आलिया की कृपा से, दो महीने से भी कम समय में पिछली सेना से भी बड़ी सेना के साथ यहाँ से निकलने का निश्चय किया है। कहो, क्या तुम आओगे? मैं तुम्हें एक हजार घुड़सवारों की कमान सौंपूँगा, क्योंकि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ और तुम पर निर्भर हूँ।' क्या आप उस समय तक झालोन से लौट सकते हैं? मैं आपको यहाँ रोकना नहीं चाहता; घर हर किसी को प्रिय होता है, चाहे वह कहीं भी हो, और आपका वहाँ लौटना उचित है: फिर भी मुझे बताएँ कि आप दो महीने के भीतर मुझसे मिल जाएँगे, और मैंने जो वादा किया है, उसे मैं पूरा करूँगा।

'मैं आऊंगा,' मैंने पुकार कर कहा; 'आपकी कृपा बढ़ती रहे, आपका दास आपकी उदारता का लाभ उठाएगा। दो महीने से भी कम समय में, चाहे मैं दिन-रात यात्रा करूं, मैं आऊंगा और अपने साथ और भी आदमियों को लाऊंगा।'

'जितने ज़्यादा हों उतना अच्छा,' चीतू ने कहा। 'अगर तुम चाहो तो मेरे अस्तबल से सबसे अच्छा घोड़ा ले लो, वह तुम्हारे हाथों से बेहतर किसी के पास नहीं हो सकता; और तुम्हें ऊँटों की ज़रूरत होगी, तो मेरे तेज़-तर्रार अस्तबलों में से जितने चाहो उतने ले लो: उन पर हल्का बोझ डालो, वे तुम्हारे साथ चलेंगे। और अब जाओ— मैं मन और शरीर से थका हुआ हूँ, और मुझे आराम चाहिए; मुझे पूरा यकीन है कि तुम सुबह होते ही उठ जाओगे। जाओ, और तुम्हें शांति मिले!'

मैंने उसे वहीं छोड़ दिया और खुशी-खुशी अपने साथियों के पास लौट आया। मुझे पता था कि राज़ उनके पास सुरक्षित है; और जब मैंने उन्हें अपनी गहरी योजना बताई, तो वे चीतू की दूरदर्शिता और सूझबूझ पर आश्चर्यचकित और प्रभावित हो गए। सबने कसम खाई कि वे मेरे साथ चलेंगे और अच्छे-बुरे समय में मेरा साथ देंगे। अगली सुबह हम सब खुशी-खुशी चल पड़े और देखते ही देखते मीलों का रास्ता हमारे तेज़ और मज़बूत घोड़ों के खुरों के नीचे गायब हो गया। आने में जितना समय लगा था, उससे कहीं कम समय में हम झालोन पहुँच गए, जिसकी हमें उम्मीद नहीं थी, और खुशी से उछलते हुए मैंने अपने घर की दहलीज पार की और फिर से अपनी अज़ीमा के आलिंगन में समा गया। हमारी खुशी को शब्दों में कैसे बयां किया जा सकता है? मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता; मेरा दिल इतना भरा हुआ था कि मैं बोल नहीं पा रहा था, क्योंकि मैं फिर से

अपने ज़नाना में बैठा था और अपने प्यारे बच्चे की मस्ती और उछल-कूद देख रहा था। मेरे पिता भी मेरे साथ खुश थे; लेकिन हम पर बुरी नज़र थी; हमारी खुशियों का प्याला भरते ही हमारे होठों से छिटक गया। वह आँख राजा की थी: लेकिन इसके बारे में आगे बात करेंगे।

ऐसा नहीं था कि मैंने उसकी उपेक्षा की; उसके घोड़ों की कीमत समय पर चुका दी गई थी, और मैंने उसे कीमती मोतियों की एक माला, कुछ सुंदर वस्त्र, प्येतुन से लूटा हुआ माल और इक्यावन सोने के सिक्कों से भरी एक थाली भेंट की। किसी को भी लग सकता था कि वह संतुष्ट हो जाएगा, लेकिन ऐसा नहीं था: फिर भी वह मुस्कुराता रहा और बधाई देता रहा। मुझे सम्मान का वस्त्र पहनाया गया, और निजी तौर पर (क्योंकि वह मेरे नए उद्यम के बारे में गुप्त रूप से जानता था) आगे के प्रयासों के लिए प्रोत्साहित किया गया, और उसने मुझे प्रसिद्धि और यश प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। नीच झूठा और हत्यारा! उसने मुझे धोखा दिया; लेकिन कौन उसके विचारों का अनुमान लगा सकता था?

जैसे ही मुझे मौका मिला, मैंने पीर खान और मोती को दो अन्य लोगों के साथ अलग-अलग दिशाओं में भेजा, ताकि वे जितने भी ठगों को अच्छे और कुशल घुड़सवार के रूप में जानते थे, उन्हें काम और लूट का लालच दें; घुड़सवारी में तो कुछ ही ठग माहिर थे। फिर भी, दस दिनों के भीतर वे बारह अन्य लोगों के साथ लौट आए, जिनमें से कुछ को मैं जानता था, और सभी दृढ़ निश्चयी और अपने हथियारों का कुशल उपयोग करने वाले बताए गए। उन्हें राजा के अस्तबल से आसानी से घोड़े मिल गए, जैसे पहले वालों को मिले थे, क्योंकि राजा को उनकी कीमत से दोगुने से भी अधिक मिल चुके थे, और अब वह उन्हीं शर्तों पर अपने पूरे अस्तबल को दांव पर लगाने को तैयार था। मैंने उनके हथियारों की जांच की और जो दोषपूर्ण थे उन्हें अस्वीकार कर दिया और उन्हें दूसरे हथियार दिए। हमारी काठीयों में नई रुई भरी गई थी, और हमने अपने अनुभव के आधार पर हर संभव तैयारी कर ली थी, ताकि हम उस अभियान से भी अधिक लंबे और कठिन कार्य के लिए तैयार रहें जिससे हम अभी-अभी लौटे थे।

लेकिन अब मेरे पास अपने घर की शांति और सुकून का आनंद लेने के लिए बहुत कम समय बचा था, और अब जब मैं वहाँ था, तो मैं उसे कभी छोड़ना नहीं चाहता था। मेरे पास प्रचुर धन था, जो कई वर्षों के लिए पर्याप्त था; और मैं ऐसी स्थिति में था जहाँ से मैं राजा के राज्य में राजस्व प्रबंधन में एक उच्च पद प्राप्त कर सकता था। फिर भी रोमांच की इच्छा कम नहीं हुई थी, और सबसे बढ़कर, मैंने चीतू को जो वादा किया था, उसे टाला या अनदेखा नहीं किया जा सकता था; और क्या उसने मुझे एक हजार सैनिकों की कमान सौंपने का वादा नहीं किया था? यह मेरी दृष्टि में बहुत आकर्षक था; और यदि उसकी योजना सफल हो जाती, तो मराठों द्वारा यूरोपीय और निज़ाम को पराजित करने और उनके विशाल राज्य को उनके वफादार नेताओं के शासन में विभाजित करने के समय, मैं अपने प्रयासों से किस पद तक पहुँच सकता था! इन विचारों ने मुझे शीघ्र प्रस्थान करने के लिए प्रेरित किया, और अपनी पत्नी से विदा लेकर मैं अपने पिता के आशीर्वाद और राजा की स्पष्ट सद्भावना के साथ शहर से निकल गया, जिन्होंने मुझे हर सफलता की कामना की और अपनी विशेष कृपा के प्रतीक के रूप में मुझे एक मूल्यवान तलवार भेंट की।

मैं जल्द ही चीतू के पास फिर से पहुँच गया, जिसने मेरा बड़े हर्षोल्लास से स्वागत किया। मैंने उसे अपने आगामी अभियान की तैयारियों में व्यस्त पाया। इस समय तक उसके पहले अभियान में लूटी गई अपार संपत्ति की खबर दूर-दूर तक फैल चुकी थी; हजारों लोग नेमावुर में आकर उसकी सेवा में तत्पर थे, इस आशा में कि उन्हें अगले अभियान में हिस्सा मिलेगा; और सैकड़ों लोग प्रतिदिन आकर पहले से एकत्रित भीड़ को और बढ़ा रहे थे। विभिन्न जनजातियों और व्यक्तियों को अलग-अलग नेताओं के अधीन करना एक कठिन कार्य था; और चीतू ने मुझसे सहायता मांगी, जिसे मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया, ताकि हम इस विविध जनसमूह को यथासंभव संगठित कर सकें।

यह आसान काम नहीं था, क्योंकि वे लोग स्वतंत्र रूप से और अपने दम पर काम करना पसंद करते; लेकिन चीतू के इरादे इसके विपरीत थे, क्योंकि उसका आक्रमण, यद्यपि केवल लूटपाट और तबाही के उद्देश्य से था, पिछले आक्रमणों की तुलना में अधिक सुनियोजित होने वाला था। ग़फ़ूर खान अपनी पूरी क्रूरता के साथ वहाँ मौजूद था, शहरों को जलाने और निर्दोष लोगों को यातना देने के लिए उत्सुक, उसकी इच्छा को पिछले अनुभवों से और भी बल मिला था। हमारे बीच सौहार्दपूर्ण संबंध थे, लेकिन मैं करिंजा की उस रात को और उस अभागी हिंदू लड़की की पीड़ा और उसकी हत्या की याद को कभी नहीं भूला था। इस अभियान में मुझे पूरा विश्वास था कि वह अपने आवेश को नहीं रोकेगा; और मैं केवल प्रतिशोधात्मक न्याय के प्रहार से उसके अपराधों के सिलसिले को रोकने के लिए एक अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था; जब तक वह अवसर नहीं आता, मैं उससे यथासंभव घनिष्ठ संबंध बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित था, ताकि वह और भी निश्चित रूप से मेरा अपना बन सके।

हमारी तैयारियाँ पूरी हो चुकी थीं; दस हज़ार से अधिक अच्छे घुड़सवारों को भर्ती कर लिया गया था, और उनके अनुयायियों की संख्या का अनुमान लगाना असंभव था; वे अपने संसाधनों से कैसे गुज़ारा करते थे, यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन वे ऐसा कर रहे थे, और बड़े आनंद से, क्योंकि हमारा शिविर मौज-मस्ती और आनंद का केंद्र था। अंतिम समारोह के रूप में, चीतू ने एक आम दरबार आयोजित किया, जिसमें सभी सरदार और नेता उपस्थित थे: उन्होंने अपनी कार्ययोजना का खुलासा किया, जो यह थी कि नागपुर के राजा के दक्षिण-पूर्व क्षेत्र में घुसपैठ करके, गोंडवाना के जंगलों से होते हुए, मसूलीपट्टनम के उत्तर में लगभग असुरक्षित प्रांतों पर अपनी सेना उतारनी है; वहाँ से कृष्णा नदी पार करके कुरनूल तक के क्षेत्र को तबाह करना है, और वहाँ से यथासंभव सर्वोत्तम तरीके से नेमावुर लौटना है। इस कार्ययोजना का सभा में उपस्थित लोगों ने उत्साहपूर्वक स्वागत किया, तंबू के बाहर मौजूद सेना ने भी उनका उत्साह बढ़ाया, और हवा में उल्लास की चीखें गूंज उठीं। यह एक उत्साहपूर्ण क्षण था, सभी ने खुशी मनाई और सरदारों ने उत्सुकतापूर्वक चीतू से निःसंकोच प्रस्थान करने का आग्रह किया। और उसने भी विलंब नहीं किया। पूरी सेना किसी भी क्षण प्रस्थान करने के लिए तैयार थी, और आदेश दिया गया कि सेना अगले दिन नूरबुद्दा नदी पार करे।

अध्याय 36

ड्यूक। मुझे तुम्हारे लिए खेद है; तुम्हें जवाब देने आना पड़ा है।
एक कठोर शत्रु, एक अमानवीय दुष्ट, दया से रहित, खोखला और निरर्थक।
किसी भी प्रकार की दया दिखाने से।
वेनिस का व्यापारी, अंक IV, दृश्य 1

मेरे हजार वीर घुड़सवारों के नेतृत्व में, मैं नदी पार करने वाला पहला व्यक्ति था, जो अब पार करने योग्य थी। हमने नदी के दूसरे किनारे पर उसी स्थान पर डेरा डाला, जहाँ हमने लगभग पाँच महीने पहले डेरा डाला था। हमारी संख्या लगभग दोगुनी हो गई थी और हमारे सामने एक शानदार आक्रमण की संभावना थी। मैं इस बारे में नहीं बताऊंगा कि हमने नागपुर के राजा के क्षेत्रों को कैसे पार किया, या उन जंगलों और वनों में कैसे प्रवेश किया, जहाँ से अब तक शायद ही कभी कोई सेना गुजरी हो। पानी की कमी के कारण हमें कई बार कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, लेकिन सभी ने साहसपूर्वक सहन किया; और अंत में हमारी सेना उत्तरी सिरकार के उपजाऊ मैदानों पर टूट पड़ी और सब कुछ उसके सामने नष्ट हो गया। किसी पर दया नहीं दिखाई गई। हमारी सेना कई मील चौड़े भूभाग में फैल गई और उसके रास्ते में आने वाले हर गाँव को लूटकर राख कर दिया गया।

हम प्रतिदिन दस-पंद्रह मील की रफ्तार से आगे बढ़ते रहे; न तो पहाड़ और न ही नदियाँ हमें रोक पाईं: अतिशयोक्ति की भाषा में कहें तो, हमने पहाड़ों को आसानी से पार कर लिया और नदियों को बहा ले गए। वहाँ हमारा विरोध करने के लिए कोई सेना नहीं थी, और अगर होती भी तो हमारी विजयी टुकड़ियों के पैरों तले रौंद दी जाती। फिर भी हमारा लड़ने का कोई इरादा नहीं था; यह हमारी योजना का हिस्सा नहीं था। अगर हमें प्रतिरोध की आशंका होती, तो हम उस स्थान से मुड़ जाते, क्योंकि ऐसे संघर्षों में खुद को झोंकने का क्या फायदा, जिनमें जीत निश्चित होने के बावजूद हम अपने कई सैनिकों को खो देते और भविष्य के अभियानों को पंगु बना देते?

कुछ दिनों बाद हम गुंटूर पहुँचे, जहाँ हमें पता था कि एक बड़ा खजाना जमा है, जो उस प्रांत का राजस्व था जिसे हमने तबाह कर दिया था। इसे हासिल करना चीतू का सबसे बड़ा लक्ष्य था, क्योंकि उसने सुना था कि यह कई लाख रुपये का है और उन घृणित यूरोपियों का है। मेरे सैनिक राक्षसों की तरह चीखते हुए उस पवित्र शहर पर टूट पड़े। उन्हें रोकना व्यर्थ होता, और मैंने ऐसा करने का प्रयास भी नहीं किया। ब्रिटिश अधिकारियों की उपस्थिति में शहर को पूरी तरह से लूटा गया, जिन्होंने खुद को उस इमारत तक सीमित कर लिया जिसमें खजाना था; और मुझे कहना होगा कि उन्होंने बहादुरी से अपना बचाव किया। कोई भी पिंडारी उस जगह के पास नहीं जा सकता था, क्योंकि वह गोलियों की बौछार का निशाना बन जाता था; और यद्यपि मैंने चीतू से अपने रिसाला के आगे वाली इमारत पर हमला करने की अनुमति देने का आग्रह किया, उसने मेरी बात नहीं मानी। उसने कहा कि उसे इस बारे में धोखा दिया गया था कि वहाँ बचाव के लिए सैनिक हैं;

और यद्यपि मैं हमेशा सोचता था कि वहाँ कुछ ही सैनिक थे, फिर भी उसने उनकी संख्या को बढ़ा-चढ़ाकर बताया और अपना इरादा छोड़ दिया।
लेकिन अपनी निराशा का बदला लेने के लिए, हमने अधिकारियों के घरों को लूटा, उनका सारा फर्नीचर तोड़ दिया और बाद में उनमें से कई को आग लगा दी, इस उम्मीद में कि इससे वे अपनी जगह से हट जाएंगे और घुड़सवार सेना के हमले के लिए तैयार हो जाएंगे। लेकिन वे इतने समझदार थे कि बाहर निकलने का जोखिम नहीं उठाया, और अनिच्छा से हमने वह स्थान छोड़ दिया जहाँ से हमें इतनी बड़ी लूट मिलने की उम्मीद थी; हालाँकि, जो कुछ हमें मिला वह कम नहीं था, भले ही कई लोग निराश हुए।
मैं ऐसा नहीं था। मैंने अपने गुंडों के साथ मिलकर एक अच्छे दिखने वाले घर पर कब्जा कर लिया था, जिसकी हमने घुसपैठियों से रक्षा की, और घर के निवासियों, एक बड़े धनी हिंदू परिवार से लगभग तीस हजार रुपये की सारी संपत्ति और आभूषण लूट लिए। हमने यह सब बिना किसी यातना के किया, क्योंकि मैंने कभी इसकी अनुमति नहीं दी, हालांकि हमें धमकियों का भरपूर इस्तेमाल करना पड़ा।
लूट के माल से लदे हुए हम दोपहर में शहर से निकल गए, और रात तक बिखरी हुई सेना फिर से शहर से लगभग दस किलोमीटर की दूरी पर डेरा डाले हुए थी, जो किसी भी पीछा करने से सुरक्षित थी।
हमने कृष्णा नदी पार की और लगभग कुरपा तक पहुँच गए, जहाँ हमें पता चला कि अंग्रेज़ सरकार का और भी खजाना है। लेकिन यहाँ भी हमें निराशा ही हाथ लगी। वहाँ पहरा दे रहे अधिकारी सतर्क थे और चौकी पर सैनिक तैनात थे; इसलिए हमने उनसे टकराव से बचते हुए कुरनूल की ओर रुख किया। यहाँ भी हमें खदेड़ दिया गया; लेकिन हमने नदी पार की और फिर से निज़ाम के इलाके में प्रवेश किया, जहाँ अंग्रेज़ घुड़सवारों का एक दस्ता हमारा पीछा कर रहा था, हालाँकि वे हमारे पीछे नहीं आए। अब विचार-विमर्श किया गया और यह तय किया गया कि हमारे लुभुर को तीन टुकड़ियों में बाँट दिया जाए, ताकि वे एक साथ मिलकर जितना कर सकते थे उससे कहीं अधिक क्षेत्र को नष्ट और तबाह कर सकें और हर दिशा में हमारी गतिविधियों पर नज़र रख रहे सैनिकों से आसानी से बच सकें। इसलिए एक टुकड़ी ने नदी के किनारे-किनारे पश्चिम की ओर, दूसरी ने पूर्व की ओर और तीसरी ने मध्य की ओर रुख किया।
जो मार्ग पूर्वी मार्ग से होकर जाता था, वही चीतू और मैं अपने साथ थे। हमें हैदराबाद के पूर्व की ओर के इलाके से होकर निर्मूल से होकर जाने वाले उत्तरी मार्ग से नागपुर के क्षेत्रों को पुनः प्राप्त करना था। अब मैं ही गफूर खान का एकमात्र साथी था; जब तक अन्य नेता साथ थे, वह अधिकतर उनके साथ ही रहता था, लेकिन अब उनकी अनुपस्थिति ने हमें एक साथ ला दिया था, और मैं लगभग कह सकता हूँ कि हम एक ही तंबू में रहते थे, अगर उसे तंबू कहा जा सकता है, जो हमें भीषण गर्मी से बचाता था। क्या मुझे यह बताने की आवश्यकता है कि मैं उसकी क्रूरताओं का प्रत्यक्षदर्शी था? ये तो रोज़ाना की घटनाएँ थीं, और आपको उस व्यक्ति का स्वभाव दिखाने के लिए, मैं एक उदाहरण दूंगा, जो उसके द्वारा किए गए हजारों ऐसे ही कृत्यों का एक नमूना है।

हम एक कस्बे में पहुँचे, जिसका नाम मुझे याद नहीं है, और अब इसका कोई महत्व भी नहीं है: हमेशा की तरह, भीड़ बेतहाशा उस कस्बे में घुस आई और तबाही का काम शुरू हो गया। मैं इसे क्यों छुपाता? मैं भी बाकियों की तरह ही व्यस्त था, और मेरे अनुयायियों और मुझसे कोई भी घर या झोपड़ी नहीं बच पाई। ग़फ़ूर खान भी व्यस्त था। मैंने अपना काम पूरा कर लिया था; मैंने महिलाओं के गहने छीन लिए थे, उनके पतियों और पिताओं को डराकर उनसे उनकी थोड़ी-बहुत जमा पूंजी छीन ली थी; और जितना हो सका, सब कुछ हासिल करने के बाद, मैं अपने ठगों के साथ कस्बे से निकलने की तैयारी कर रहा था, जो कभी मुझसे अलग नहीं हुए। लौटते समय हम मुख्य सड़क से गुजर रहे थे, तभी हमारा ध्यान एक सुंदर घर की ओर गया, जिसमें से दहशत और पीड़ा की चीखें सुनाई दे रही थीं।

मैं तुरंत घोड़े से उतरा और अपने आदमियों को अपने पीछे आने का आदेश देकर हम घर में घुस गए। जब हम उस जगह पहुँचे जहाँ से चीखें आ रही थीं, तो मेरे सामने जो दृश्य आया, उसे मैं कभी नहीं भूल पाऊँगा। वहाँ ग़फ़ूर खान अपने सात-आठ आदमियों के साथ एक भयानक काम में लगा हुआ था। तीन लाशें ज़मीन पर खून में लथपथ पड़ी थीं, जो अभी भी गर्म शवों से बह रहा था। दो जवान लड़के थे, और तीसरी एक बूढ़ी औरत थी।

ग़फ़ूर खान के सामने एक आदरणीय व्यक्ति खड़ा था, जिसके मुँह पर घोड़े की नाक में भरी गर्म राख से भरा थैला बाँधकर उसे यातना दी जा रही थी, जबकि खान का एक अनुयायी अपनी तलवार के मूठ से उसकी पीठ पर लगातार प्रहार कर रहा था। बेचारा अधमरा था और खान द्वारा उसके कान में गरजते हुए पूछे जा रहे सवालों का एक शब्द भी नहीं बोल पा रहा था कि उसका खजाना कहाँ छिपा है। तीन अत्यंत सुंदर युवतियाँ ग़फ़ूर खान के दल के अन्य लोगों के साथ व्यर्थ की हाथापाई में लगी हुई थीं; उनकी अस्त-व्यस्त शक्ल और दिल दहला देने वाली चीखें स्पष्ट रूप से बता रही थीं कि मेरे आने से पहले उनका क्या हाल हुआ होगा।

मैं क्या कर सकता था? खान पर खुलेआम हमला करने की हिम्मत तो मुझमें नहीं थी, हालाँकि मैंने अपनी तलवार म्यान से आधी निकाल ली थी और उस पर टूट पड़ने ही वाला था; पर वह मेरा वरिष्ठ अधिकारी था, और अगर मैंने उसे और उसके आदमियों को मार डाला होता, तो चीतू से यह बात छिपी नहीं रह पाती—और मेरा क्या हश्र होता? इसलिए, उस क्षणिक आवेग को रोकते हुए, जिस पर मैं लगभग अमल करने ही वाला था, मैं उसके पास पहुँचा और उसका ध्यान उस भयानक काम से हटाने की कोशिश की जिसमें वह लगा हुआ था।

'आइए, खान साहब,' मैंने पुकारा, 'हमारे पास ही एक घर है जिसमें प्रवेश करने के मेरे तमाम प्रयास विफल रहे हैं: मैं आपसे मदद चाहता हूँ, और इंशाअल्लाह! यह मेरी मेहनत का फल देगा, क्योंकि मैंने सुना है कि यह धन और गहनों से भरा है, क्योंकि परिवार धनी है।' मैंने झूठ नहीं बोला था, क्योंकि मैंने एक बड़े घर का द्वार तोड़ने का प्रयास किया था, लेकिन जब मुझे पता चला कि वह खाली है तो मैंने अपना प्रयास रोक दिया था।

'थोड़ी देर रुकिए,' उसने कहा; 'यहाँ मुझे खूब मज़ा आया; इन मूर्खों को हथियार लेकर हमारा प्रवेश रोकना ही था, और उनमें से एक ने मेरे हाथ पर खरोंच भी लगा दी। लेकिन वे क्या कर सकते थे—काफ़िर! एक सच्चे

मुसलमान के सामने? वे इसी कमरे में गिर पड़े, और उनकी बूढ़ी माँ भी, मेरी ही तलवार से। मेरे आदमी उनकी पत्नियों के साथ मजे कर रहे थे; जबकि मैं, जैसा कि आप देख रहे हैं, इस जिद्दी बूढ़े बदमाश से जितना हो सके उतना निकालने की कोशिश कर रहा था; लेकिन वह मेरी बात नहीं सुन रहा था, और मुझे उसे गर्म राख चखाने के लिए मजबूर होना पड़ा।'

मैंने कहा, 'शायद उसके पास कहने को कुछ नहीं है; कम से कम जब तक उसके मुंह पर वह थैला है, वह बोल नहीं सकता; इसे हटा दो, फिर हम सुनेंगे कि उसे क्या कहना है।'

'कोशिश करके देखो,' खान ने कहा; 'लेकिन तुम देखोगे कि हम उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ पाएंगे।'

मैंने उसके पीछे खड़े पिंडारी से चिल्लाकर कहा, 'थैली हटाओ; उसे बोलने दो, और थोड़ा पानी लाओ; उसका गला राख से भरा हुआ है।'

थैला हटाया गया और कमरे के एक कोने में रखा पानी से भरा एक बर्तन लाकर उसके होठों तक लगाया गया; लेकिन उसने घृणापूर्वक उसे अस्वीकार कर दिया, क्योंकि वह एक हिंदू और ब्राह्मण था।

'पियो!' उसके इस हावभाव को देखकर क्रोधित खान चिल्लाया; 'पियो, वरना आलिया की कसम, मैं इसे तुम्हारे गले से नीचे उतार दूँगा। काफ़िर, जिसके लिए गाय का मूत्र एक स्वादिष्ट पेय है, क्या तुम एक मुसलमान के हाथों से पानी लेने से इनकार करने की हिम्मत करते हो?'

'खून के प्यासे शैतान,' बूढ़े ने कर्कश स्वर में कहा, 'तेरे हाथों का पानी, या तेरे शापित वंश के किसी भी व्यक्ति का पानी, मुझे जहर दे देगा। मैं ऐसी गंदगी पीने के बजाय अपने बेटे का खून पीना पसंद करूंगा, जो वहां बह रहा है।'

हा! ऐसा कहते हो? तो फिर, पैगंबर मोहम्मद के नाम पर, तुम इसे चखो। यहाँ, सुमंद खान, ज़मीन से थोड़ा उठाओ; वहाँ एक प्याला है— उसे पूरा भर दो; बूढ़ा आदमी इसे ऐसे पिएगा जैसे वह जन्नत की मदिरा पीता हो।

मैंने ग़फ़ूर खान से कहा, 'रुको! तुम ऐसा अमानवीय काम नहीं करोगे।'

'नहीं, दखल मत दो,' खान ने दांत पीसते हुए कहा; 'मीर साहब, आप और मैं दोस्त हैं—आइए हम दोस्त ही रहें; लेकिन अगर मुझे मेरे उद्देश्य में बाधा डाली गई तो हम झगड़ा करेंगे; और क्या उसने यह नहीं कहा कि वह इसे शुद्ध पानी से बेहतर मानता है?'

सुमंद खान ने खून इकट्ठा किया था, और प्याला गर्म लाल तरल से आधा भरा हुआ था—एक भयानक घूंट, जिसे उसने अब बेचारे पिता को पेश किया। 'पी लो!' उसने बनावटी विनम्रता का भाव दिखाते हुए प्याला आगे बढ़ाते हुए कहा; 'इसे गंगाजल समझो, और यह तुम्हारा दिल खोल देगा और तुम हमें बता दोगे कि तुम्हारे खजाने कहाँ हैं।'

गुफूर खान जोर से हँसा। 'अलिया की कसम! सुमंद खान, तुम तो वाकई बहुत बुद्धिमान हो; इस विचार को किताब में लिख लेना चाहिए: मैं चीतू को इसके बारे में बताऊंगा।'

लेकिन बूढ़ा आदमी घृणा से उनसे मुंह मोड़ लिया, और उसकी छाती ऐसे फूलने लगी मानो उसे उल्टी आने वाली हो।
'समय बर्बाद करने का कोई फायदा नहीं है,' ग़फ़ूर खान चिल्लाया; 'अपनी कटार से उसका मुंह खोलो और उसमें वह काढ़ा डाल दो।'
ये हो गया; आलिया ने! साहब, उन दोनों ने मेरी आँखों के सामने ये किया—वे तो सच में शैतान थीं! उन्होंने न सिर्फ बूढ़े आदमी के गले में खून डाला, बल्कि उसका मुंह जबरदस्ती खोलकर उसके होंठ बुरी तरह काट दिए और उसका गाल चीर दिया।
'अब बताओ सोना कहाँ है!' ग़फ़ूर खान चिल्लाया। 'इस हठधर्मिता का क्या लाभ? क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा जीवन मेरे हाथ में है, और मेरी तलवार का एक ही वार तुम्हें जहन्नम भेज देगा, जहाँ वे मूर्ख तुमसे पहले जा चुके हैं?'—और उसने मृतकों की ओर इशारा किया।
'वार करो!' पीड़ित चिल्लाया, 'वार करो! तुम्हारा प्रहार मुझे अच्छा लगेगा; मैं बूढ़ा हो चुका हूँ और मृत्यु के योग्य हूँ। तुम देरी क्यों कर रहे हो?'
'लेकिन सोना, खजाने!' खान ने जमीन पर पैर पटकते हुए दहाड़ लगाई। 'क्या तुम मूर्ख हो?'
'सोना, मैंने तुमसे कहा था, मेरे पास नहीं है,' उसने उत्तर दिया; 'मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया था, लेकिन तुमने मेरी बात नहीं मानी। हमने तुम्हें अपना सब कुछ दे दिया, फिर भी तुम संतुष्ट नहीं हुए। तुमने मेरे बेटों और मेरी पत्नी की हत्या कर दी और मेरी बेटियों का अपमान किया। हम सबको मार डालो, हम तुम्हारे आभारी होंगे।'
'उसकी बात सुनो!' खान ने क्रूरता से चिल्लाते हुए कहा; 'वह हमारा मजाक उड़ा रहा है। बुढ़ापे की यह मनमानी दुष्टता—क्या यह कहावत सच नहीं है! तुममें से कोई तेल और माचिस ले आओ; हम देखेंगे कि क्या उसका यह स्वभाव मेरी अंतिम परीक्षा में खरा उतर सकता है, जो आज तक कभी असफल नहीं हुई है।'
तब तक घर पिंडारियों से भर चुका था, और अगर मैं चाहता भी तो आगे दखल देने की हिम्मत नहीं कर पाता। मैं बस देखता रहा, उसे उसके हाल पर छोड़ने का निश्चय कर लिया था; वह तो बस अपनी किस्मत को खुद ही बुला रहा था, और मैं उसे क्यों रोकूँ?
तेल लाया गया और मारे गए लोगों की धोतियों से ढेर सारे चिथड़े फाड़े गए। उन्हें तेल में डुबोया गया और बूढ़े आदमी की उंगलियों के चारों ओर यथासंभव मोटी परत में लपेटा गया।
'अब एक रोशनी लाओ,' खान चिल्लाया, 'और उसे कसकर पकड़ लो।'
एक रोशनी प्रज्वलित हुई और उस व्यक्ति ने उसे अपने हाथ में पकड़ लिया।
खान ने दांत भींचते हुए कहा, 'मैं तुम्हें आखिरी मौका दे रहा हूं; मुझे पूरा यकीन है कि तुम जानते हो कि तुम्हारी उंगलियों का क्या उपयोग किया जाएगा; जल्दी जवाब दो, वरना मैं उन्हें मशाल बना दूंगा और वे मुझे तुम्हारे खजाने तक पहुंचा देंगी, जो मुझे पूरा यकीन है कि किसी अंधेरे गड्ढे में छिपा हुआ है।'
बूढ़े ने हताश स्वर में उत्तर दिया, 'जो चाहो कर लो। तुम मुझे मार नहीं सकते; और यदि मेरी पीड़ा से तुम्हें किसी भी प्रकार की संतुष्टि मिलती है, तो ठीक है; क्योंकि नारायण ने मुझे तुम्हारे हवाले कर दिया है, और यह

उसकी इच्छा है, तुम्हारी नहीं। मेरी भुजाएँ जड़ से जल जाने पर भी तुम मेरी चीख नहीं सुन पाओगे। मैं तुम पर थूकता हूँ!'

'इन चिथड़ों में आग लगा दो!' ग़फ़ूर खान दहाड़ा; 'यह बर्दाश्त नहीं किया जा सकता।'

उन्हें जलाया गया—एक-एक करके वे धधकने लगे, जबकि आग के प्रभाव को तेज करने के लिए उसके हाथों को जबरदस्ती उसके बगल में दबा दिया गया था। आलिया, आलिया! यह एक घिनौना दृश्य था। तेल लगे चिथड़ों की लपटों में उंगलियों की गर्म त्वचा सिहर उठी, जिन पर समय-समय पर ताजा तेल डाला जा रहा था, क्योंकि लोग मशाल पर तेल डाल रहे थे।

बूढ़े ने अपनी ताकत को ज़रूरत से ज़्यादा आँका था। भला कौन सी नसें इतनी भयानक यातना सहन कर सकती हैं? उसकी चीखें इतनी दर्दनाक थीं कि पत्थर दिल भी पिघल जाता; पर ग़फ़ूर खान ने उन पर ध्यान नहीं दिया: वह अपने सामने खड़े उस बेचारे प्राणी के कष्टों को देखकर अपनी क्रूर आत्मा को तृप्त कर रहा था और शैतानी मुस्कान के साथ बार-बार उससे पूछता था कि क्या वह अपने खजाने बताएगा। लेकिन जिससे वह बात कर रहा था, वह चुप था और जब उसकी इच्छा पूरी तरह से शांत हो गई, तो वह पूरी तरह से बेसुध होकर गिर पड़ा।

मैंने चीखते हुए कहा, 'तुमने उसे मार डाला। आलिया की कसम, उसे छोड़ दो और हमें यहाँ से चलने दो; तुम्हें और क्या चाहिए? या तो उसके पास पैसे नहीं हैं, या वह पैसे देना नहीं चाहता।'

'उस अपवित्र माँ की बेटियाँ कहाँ हैं?' उसने मेरी बात अनसुनी करते हुए अपने अनुयायियों से कहा। 'वे कहाँ हैं? उन्हें आगे लाओ, ताकि मैं उनसे पैसों के बारे में पूछ सकूँ, क्योंकि पैसा तो ज़रूर होगा।'

लेकिन वे भी मर चुके थे! हाँ, उनकी भी हत्या कर दी गई थी; किसने की, यह मुझे नहीं पता, लेकिन उनके शव अगले कमरे में खून से लथपथ पड़े मिले।

यह खबर खान तक पहुंची और वह पहले से भी ज्यादा क्रूर हो गया; वह जंगली जानवर की तरह अपने दांत पीसने लगा; उसे देखना भी खौफनाक था।

बूढ़े व्यक्ति को होश आ गया था, क्योंकि उसके चेहरे और उंगलियों पर पानी डाला गया था; वह उठा, बेतहाशा इधर-उधर देखा, और फिर अपने क्षत-विक्षत हाथों को दया भरी निगाहों से देखने लगा। क्या वे लोग मनुष्य थे या शैतान जिनके बीच वह घिरा हुआ था? हे भगवान! वे मनुष्य नहीं थे, क्योंकि वे उस पर और उसकी लगभग बेहोशी जैसी हरकतों पर हंस रहे थे।

'बोलो!' खान ने तलवार से वार करते हुए चिल्लाकर कहा, 'बोलो, काफिर! वरना तुझे और भी यातनाएँ झेलनी पड़ेंगी।'

लेकिन वह कुछ नहीं बोला—वह अधमरा था: दुख और यातना ने अपना पूरा कहर बरपा दिया था।

खान ने अपनी तलवार निकाली। उसने फिर से पुकारा, 'बोलो!' और तलवार को अपने सिर के ऊपर उठा लिया। मुझे लगा जैसे बूढ़े आदमी के होंठ मुस्कुराए और हिले, मानो वह कुछ बोलना चाहता हो: उसने अपनी आँखें ऊपर की ओर उठाईं, लेकिन उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला।

खान के कांपते हाथों में तलवार उसके सिर के ऊपर थरथरा रही थी; और कोई जवाब न मिलने पर, तलवार पूरी ताकत से बूढ़े आदमी के माथे पर गिरी, जिससे उसका सिर लगभग दो टुकड़ों में बंट गया। क्या यह कहने की ज़रूरत है कि उसकी तुरंत मृत्यु हो गई?

मैं संतुष्ट था; ग़फ़ूर खान का प्याला भी भर गया था; क्योंकि मैंने उसी स्थान पर अपना संकल्प लिया था, - मैंने मृतकों को देखते हुए स्वयं से यह शपथ ली और घर से बाहर भागा।

अध्याय 37

उन्होंने उसे खूब शराब पिलाई।
और वह हर्षोल्लास में उन्मादपूर्ण गीत गाने लगा:
हुर्रे! शैतान चिल्लाया; वह जल्द ही मेरा होगा;
और वह बड़े आनंद से हँस पड़ा।
पुरानी गाथा
उसी क्षण मैंने उसे नष्ट करने का निश्चय कर लिया। शिविर पहुँचते ही मैंने अपने सभी गुंडों को इकट्ठा किया और उनके सामने वह योजना रखी जो मैं लंबे समय से अपने मन में मंथन कर रहा था। मैंने उनसे इस प्रकार कहा:
'मेरे भाइयों, आप देख चुके हैं कि ग़फ़ूर खान एक शैतान है; ऐसे व्यक्ति को मनुष्य कहना मुश्किल है: ये पिंडारी भले ही बुरे हों, लेकिन वह उनमें सबसे बुरा है और जीने के लायक नहीं है। मोती और पीर खान, करिंजा में ब्राह्मण लड़की का अंजाम याद कीजिए; आपको मेरा दबा हुआ क्रोध याद होगा, जिसने मुझे उस समय इस दुष्ट को मार डालने के लिए लगभग मजबूर कर दिया था; और मैं ऐसा कर भी देता, लेकिन मुझे लगा कि उसका भाग्य मेरे हाथ में नहीं है। मुझे लगा कि आलिया देर-सवेर मुझे उसके प्रतिशोध का ज़रिया बनने के लिए प्रेरित करेगी। मैंने अब तक खुद को रोका है, हालाँकि कभी-कभी मुझे लगा कि उसका समय आ गया है। मैंने सोचा था कि वह अंत में किसी ऐसे अपराध को अंजाम देगा जो पहले के सभी अपराधों से कहीं अधिक जघन्य होगा, और उसने वह कर दिया है। आप सभी ने देखा कि वह क्या था। क्या वह इससे भी बुरा कर सकता है?'
'वह ऐसा नहीं कर सकता!' मेरे आदमियों ने एक स्वर में कहा; 'वह लक्ष्य तक पहुँच चुका है, और वह हमारा है।'
मैंने कहा, 'वह ऐसा ही होगा। अब सुनो। तुम्हें पता है कि मेरे पास फिरंगियों की मीठी शराब की तीन बोतलें बची हैं, जो मैं गुंटूर से अपने साथ लाया था; उसे यह बहुत पसंद है, और वह आसानी से हमारे साथ यहाँ आकर इसे पीने के लिए राजी हो जाएगा; मैं उसके हिस्से में अफीम मिला दूंगा, और कुछ प्याले पीने के बाद वह बेहोश हो जाएगा, और आसानी से हमारा शिकार बन जाएगा।'
'बहुत बढ़िया!' पीर खान चिल्लाया, 'यह एक शानदार योजना है। आज रात ही इसे अमल में लाने के बारे में आपका क्या विचार है?'
मैंने कहा, 'आज रात नहीं; इस विशाल शिविर में हमें सावधानी बरतनी होगी। कल मैं अपना तम्बू इसके बिल्कुल किनारे पर लगाऊँगा; बल्कि इससे थोड़ी ही दूरी पर, और आधी रात को, जब सब नींद से बेहाल होंगे, तब उसे मार डाला जाएगा।'
पीर खान ने कहा, 'मैं निवेदन करता हूं कि गुफूर खान की काठी अच्छी तरह से अस्तर वाली है; क्या हम उस पर कब्जा नहीं कर सकते?'

मैंने जवाब दिया, 'मैं इसके बारे में सोच रहा था, लेकिन मुझे नहीं लगता कि बिना ज्यादा जोखिम और पकड़े जाने के डर के हम इसे हासिल कर पाएंगे।'
पीर खान ने एक क्षण के लिए विचार किया; फिर उन्होंने कहा,—
'मेरे पास एक योजना है, जेमादार, जिसे शायद आप बेहतर बना सकें; और, इंशाल्लाह! हमें काठी मिल जाएगी। मेरा कहना यह है: जब खान अच्छी तरह नशे में हो, तो क्या आप उसे अपने तम्बू में सोने के लिए कहेंगे, और उसके घोड़े और काठी को मंगवा लेंगे, ताकि सुबह उसके पास रहकर उसे सवार कर सकें। अगर काठी लाई जाती है, तो हम उसे खाली करके उसके साथ दफना देंगे; अगर नहीं, तो हम उसे नष्ट करके एक अच्छा काम करने पर प्रसन्न होंगे।'
'मुझे यकीन नहीं है कि शगुन अच्छे होंगे; बेहतर होगा कि हम उन्हें आजमा लें।' मोती ने कहा।
मैंने कहा, 'ऐसा ही करो; मैं पीर खान की योजना पर विचार करूंगा और देखूंगा कि क्या किया जा सकता है।' फिर हम रात के लिए अलग हो गए।
अगली सुबह की यात्रा के दौरान, जब किसी गाँव या कस्बे की लूटपाट से मची अफरा-तफरी में हम अलग नहीं हुए, तो मैंने जानबूझकर जितना हो सके गुफ़्फ़ूर खान के रास्ते में खुद को डाल दिया, और हमने अपने अभियान की सफलता और हमारे साथ घटी घटनाओं पर बातचीत की। मैंने कहा, 'क्या आपको याद है, खान साहब, गुंटूर के घरों पर हमला, और कैसे हमने कीमती सामान की व्यर्थ खोज में फिरंगियों के गोदामों को तहस-नहस कर दिया था? उन पर लानत हो! वे नुवाबों जितने अमीर हैं, फिर भी उनमें से किसी के पास सोने या चांदी का एक बर्तन भी नहीं है, न ही कोई गहना या किसी भी तरह की कीमती वस्तु, - केवल चीनी मिट्टी के बर्तन। और क्या आपको याद है कि हमने उन सबको कैसे तोड़ डाला था?'
'हाँ, मुझे याद है,' खान गुर्राया; 'और अगर हमारे सरदार की कायरता न होती, - मैं सच कह रहा हूँ, - तो हम हमला करके उस जगह पर कब्ज़ा कर सकते थे जहाँ खजाना था और खूब धन कमा सकते थे; जबकि ऐसा नहीं हुआ, हमें अपनी मेहनत का कुछ भी फल नहीं मिला। हालाँकि हमने उनके घर नष्ट कर दिए, और इससे हमें कुछ संतोष मिला।'
'सच है, खान! जब उन्होंने अपनी बस्तियों को जलती हुई लपटों में घिरा देखा होगा, तो उनके दिल कितने जल उठे होंगे! क्या आपको वह कीमती चीज़ भी याद है जो मैंने हासिल की थी और जिसके बारे में मैंने आपको बताया था—छोटी बोतलों में बंद शराब, जिन पर कागज़ छपे हुए थे? वह बहुत ही बढ़िया चीज़ थी।'
'माशाल्लाह! सचमुच,' खान ने कहा; 'इसका स्वाद कई दिनों तक मेरे होठों पर बना रहा। ये काफिर जानते हैं कि अच्छी शराब क्या होती है, यह तो निश्चित है। काश मैं अपने साथ कुछ लाया होता! कुछ बोतलें आसानी से ले जाई जा सकती थीं, और दिनभर की मेहनत के बाद इसका आनंद लिया जा सकता था।'
'मैं तुमसे ज्यादा सावधान था, खान; ऐसी शराब हमेशा नहीं मिलती; मैं कुछ बोतलें ले आया था, और मुझे लगता है कि वे अभी भी मेरे पास हैं, अगर वे टूटी नहीं हैं।'

'क्या तुम्हारे पास कुछ है? नहीं, तो अपने खजाने को लेकर कंजूसी मत करो; मुझे इसे फिर से चखने दो, क्योंकि मैं कसम खाकर कहता हूँ कि मुझे विश्वास है कि स्वर्ग में ऐसा अमृत नहीं मिलेगा।'
'यह आपकी सेवा में है, खान; लेकिन बदनामी से बचने के लिए, क्या आप आज शाम को सूर्यास्त के समय मेरे तम्बू में आना चाहेंगे?—अर्थात्, यदि कुछ बचा हो, जिसकी सूचना मैं आपको दे दूंगा। मेरा एक साथी बढ़िया पुलाव बनाएगा, और उसके बाद हम शांति से शराब का आनंद लेंगे।'
'आपके शब्द शराब के समान मधुर हैं, आदरणीय मीर साहब; मैं निश्चय ही आपके साथ रहूंगा। मैं अपने सईस से कहूंगा कि मेरा घोड़ा लाकर आपके घोड़ों के बीच रख दें; मुझे कोई नहीं देखेगा, और मैं अपने साथ किसी को नहीं लाऊंगा। आप जानते हैं, मैं सीमा से आगे भी जा सकता हूं, और मैं धर्म के लिए खुलेआम कलंक नहीं बनूंगा।'
उसके ये शब्द सुनते ही मेरा दिल खुशी से उछल पड़ा। अब तो बिना किसी परेशानी या पकड़े जाने के खतरे के काठी हमारी हो जाएगी: मैं उसका कितना आभारी हूँ कि उसने इतनी आसानी से मेरी योजनाओं को मान लिया!
'जी हां, खान,' मैंने कहा, 'यह ठीक नहीं होगा कि कोई हमें देख ले: हमें छुपकर रहना होगा। मेरे तम्बू में पीर खान के अलावा कोई नहीं होगा, जिसे आप जानते हैं; वह मेरा दत्तक भाई है और एक बेहतरीन साथी है: हम खूब दावत करेंगे। पुलाव तैयार होते ही मैं उसे आपके पास भेज दूंगा।'
'नहीं, नहीं!' वह चिल्लाया, 'ऐसा मत करो, इसकी कोई ज़रूरत नहीं है; मैं शाम ढलने के बाद तुम्हारे तम्बू तक टहलते हुए आ जाऊँगा। और, सुनो!' उसने अपने सईस से कहा, जो उसके पीछे-पीछे चल रहा था, 'ध्यान रखना, जैसे ही तुम मुझे मीर साहब के तम्बू की ओर जाते हुए देखो, मेरा घोड़ा और काठी तुरंत वहाँ ले आना। याद रखना, तुम्हें उसे मेरे पीछे-पीछे ऐसे ले जाना है जैसे मैं सवारी करने जा रहा हूँ; और वहाँ पहुँचकर उसे उनके घोड़ों के बीच बाँध देना।'
'जो हुकम,' उस व्यक्ति ने उत्तर दिया; 'आपके आदेशों का पालन किया जाएगा।'
'और ध्यान रखना,' खान ने आगे कहा, 'तुम किसी को नहीं बताओगे कि मैं कहाँ जा रहा हूँ, और न ही किसी प्रश्न का उत्तर देना, यदि कोई तुमसे पूछा जाए, जब तुम घोड़े को आगे ले जा रहे हो।'
'बिल्कुल नहीं; क्योंकि यही मेरे स्वामी की इच्छा है, मैं अवज्ञा करने का साहस नहीं कर सकता।'
'तुम ऐसा मत करना,' खान चिल्लाया, 'वरना मैं तुम्हारे लिए कोई कोर्ला ढूंढने की कोशिश करूंगा।'
वह साथी फिर पीछे छूट गया, और हमने अपनी बेतरतीब बातचीत फिर से शुरू कर दी। हम अलग-अलग नेताओं की खूबियों और उनके व्यवहार के बारे में बातें करते हुए आगे बढ़े। ग़फ़ूर खान एक खुशनुमा साथी था, और उसकी बातें हास्य और व्यंग्य से भरपूर थीं। मैंने उसे खूब दावत की उम्मीद दिलाकर खुश कर दिया था, और हम खुशी-खुशी आगे बढ़ते रहे।
लंबी और भीषण गर्मी भरी यात्रा के बाद हम अपने विश्राम स्थल पर पहुँचे; और दोपहर की भीषण गर्मी से बचने के लिए तंबुओं के नीचे आकर हमें बहुत राहत मिली। दिनभर में खान से मुझे कई संदेश मिले कि

भोजन तैयार है या नहीं; लेकिन यह मान लेना कि भोजन तैयार है, या निर्धारित समय से एक क्षण पहले भी उसे तैयार करवाना मेरे उद्देश्य की पूर्ति नहीं करता।
मोती ने मुझसे कहा, 'साहिब, आप सुबह से खान के साथ ही सवारी कर रहे हैं, और मुझे लगता है कि आपने शकुनों पर ध्यान नहीं दिया?'
मैंने चिंता से कहा, 'मैंने तो नहीं किया; लेकिन आपने ज़रूर किया होगा?' क्योंकि मैं जानता था कि वे मेरे आदमियों को कितना प्रभावित करेंगे; बल्कि, अगर उनके पक्ष में कोई न होता तो वे इस मामले में किसी भी तरह की भागीदारी से बिल्कुल इनकार कर देते।
'मैंने कोई लापरवाही नहीं की है,' मोती ने उत्तर दिया। 'कल रात, आपसे विदा होने के बाद, पीर खान, मैं और अन्य लोगों ने निशान को गोर का अर्पण किया, और भवानी की कृपा से, उन्होंने हमें थिबाओ और पिलाओ प्रदान किए हैं; इसलिए आपको चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह कृपालु हैं।'
'मुझे पूरा यकीन था कि वह ऐसा ही करेगी, मोती, क्योंकि मैं आलिया के मार्गदर्शन को देख रही थी; और मुझे पूरा विश्वास है कि अगर मेरी अपनी इच्छाएँ मेरे विपरीत भी होतीं, तब भी मैं इस मामले में उन्हीं के प्रभाव का पालन करती।'
'नहीं, ऐसा मत कहो, जेमादार,' उसने हंसते हुए कहा, 'तुम इसके लिए बहुत अच्छे ठग हो; लेकिन अब डरने की कोई बात नहीं है, क्योंकि शगुन वास्तव में उत्साहजनक थे।'
मैंने कहा, 'अगर हम सफल हो जाते हैं, तो मैं अपने तरीके से आगे काम करने के बारे में सोच रहा हूँ; लेकिन इस बारे में बाद में बात करेंगे। उसके गायब होने का पता चलने पर हलचल मच जाएगी, और हमें कुछ समय के लिए शांत रहना होगा।'
'अरे, ये तो बिल्कुल तुम्हारे जैसा है, जमादार। हम आपस में सलाह-मशविरा कर रहे थे और हमने तुम्हारे लिए कुछ साहसिक कार्य प्रस्तावित करने का निश्चय किया था; क्योंकि यहाँ ये पिंडारी कुत्ते रात-रात भर पड़े रहते हैं और हर एक की कीमत सैकड़ों रुपये है। फिर भी हम निष्क्रिय बैठे रहे; और मैं तो खुद कहता हूँ, धिक्कार है हम पर! हमें एक रात भी बिना काम के नहीं गुजारनी चाहिए।'
'रुको, अच्छे मोती; पहले हम खान को सुरक्षित कर लें। और अब मामलों को व्यवस्थित करने के लिए; हमें खुद ही अपने लुघाई बनना होगा।'
'इसके लिए हम तैयार हैं, मीर साहब; एक ठग को किसी भी पद पर अपना कर्तव्य निभाना चाहिए जब उसकी सेवाओं की आवश्यकता हो। हम सब काम के लिए तैयार हैं।'
'तो हमें जरा भी देर नहीं करनी चाहिए; तुम्हें अपना कफ़न मेरे कफ़न से जोड़ना होगा और उनके बीच कोई पर्दा लगाना होगा; खाली जगह में कब्र तैयार करनी होगी। उसके आने से पहले ही कब्र तैयार हो जाए तो बेहतर होगा:— लेकिन नहीं, शायद उसे शक हो जाए; बाद में भी जल्दी तैयार हो जाएगी।'
'तुम सही कह रहे हो, जमादार, उसे शक होगा: उसे ज्यादा गहराई में दफनाने की जरूरत नहीं है; और हमारे पास तीन ऐसे आदमी हैं जो पुराने लुघाई हैं; वे कुछ ही मिनटों में इसे तैयार कर देंगे।'

और उसका सैस भी मरेगा, मोती।
'ज़रूर,' उसने जवाब दिया। 'आप और पीर खान, खान से निपट लीजिए और सैस को हम पर छोड़ दीजिए—हम उसे संभाल लेंगे।'
'अच्छा; तो हमारी सारी व्यवस्थाएं पूरी हो गईं। याद रखना कि पीर खान अकेले हमारे साथ भोजन करेंगे; आप सभी को बाहर रहना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि घोड़ों पर काठी कसी रहे, क्योंकि अगर हमें देख लिया गया या हम पर शक हुआ तो हमें तुरंत भागना होगा। वैसे मुझे इन दोनों बातों की कोई चिंता नहीं है।'
'मैंने भी नहीं देखा,' मोती ने कहा; 'यह मामला हलचल मचा देगा, क्योंकि वह एक प्रतिष्ठित नेता है; लेकिन यह माना जाएगा कि या तो वह अपना लूटा हुआ माल लेकर भाग गया है, या किसी ने उसकी हत्या कर दी है। मैं आपको बता दूं, मीर साहब, कि नेमावूर छोड़ने के बाद से कई पिंडारी अपने ही साथियों के हाथों मारे गए हैं।'
'मुझे इसमें कोई शक नहीं है, मोती। मैंने कई झगड़ों के बारे में सुना है, और इस तरह के लोगों में नैतिकता नाम की कोई चीज नहीं होती। ये दुष्ट लोग हैं, और पहले अभियान में शामिल लोगों से कहीं ज्यादा बुरे हैं। लेकिन अब जाओ, कफ़न तैयार करो, और पीर खान को मेरे पास भेजो।'
शाम ढल गई; दिन की आखिरी लाल लकीरों के साथ ही शाम की नमाज़ के लिए श्रद्धालुओं की पुकार शिविर में गूंज उठी। लोग समूहों में इकट्ठा होकर, अपने चटाइयों पर घुटने टेककर आलिया से प्रार्थना कर रहे थे—वे लोग जिनके हाथ उस दिन बहाए गए खून से अभी पूरी तरह साफ भी नहीं हुए थे! रस्म पूरी होने पर, हर कोई अपने साथी से अलग होकर अपने वफादार घोड़े के पास लेट गया और आराम की रात बिताने लगा, ताकि आने वाले दिन की मेहनत, लूटपाट और डकैती के लिए तैयार हो सके।
समय निकट आ गया; और जब मैं अपने तम्बू में बैठकर खान के आने की प्रतीक्षा कर रहा था, तो मेरा हृदय आनंद से भर उठा कि जीवन में पहली बार मैं एक नेक कार्य कर पाऊंगा, हत्यारों का बदला लेकर। पीर खान मेरे साथ थे: हम मुश्किल से ही कुछ बोले; हमारे मन में आने वाली घटनाओं को लेकर इतनी चिंता थी कि हम ज्यादा कुछ कह ही नहीं पाए।
'क्या तुमने बोतल में नशीली दवा मिलाई है?' उसने पूछा।
'मैंने कर लिया है। मैंने इसमें दो तोला अफीम मिला दी है; मैंने इसे चखा है, और नशीले पदार्थ का स्वाद महसूस हो रहा है; लेकिन यह दूसरी बोतल होगी, और उसे पता नहीं चलेगा; और अगर उसे पता चल भी गया, तो हम कुछ नहीं कर सकते, हमें जोखिम उठाना ही होगा। क्या आपको लगता है कि हम बिना शोर मचाए उसे अपने बीच में संभाल सकते हैं?'
'अगर हम ऐसा नहीं करते तो हम पर शर्म आएगी, मीर साहब; मैं भी उतना ही बलवान हूँ जितना वो है, और आपका रूमाल कभी नहीं चूकता। लेकिन किसी भी तरह की आवाज़ को रोकने के लिए, मान लीजिए कि हम मोती और दो-तीन अन्य लोगों को गाने और बजाने की अनुमति देते हैं, - मेरा मतलब है जब खान अपनी

पहली बोतल पी चुका हो। मोती के पास एक सितार और एक छोटा ढोल है, और उसकी आवाज़ बाकी सभी आवाज़ों को दबा देगी।'
'नहीं, नहीं!' मैंने कहा; 'दूसरों को हमारा गाना पसंद आ सकता है और वे सुनने आ सकते हैं; यह ठीक नहीं है: हमें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहिए और बाकी सब आलिया पर छोड़ देना चाहिए। खैर, समय आने पर हम देखेंगे।'
शाम काफी ढल चुकी थी और हमारे चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। शिविर में इधर-उधर कुछ आग जल रही थीं, जिनसे पता चलता था कि कहाँ-कहाँ कोई अकेला पिंडारी अपना दिन का आखिरी भोजन पका रहा है; बाकी सब गहरी नींद में सो चुके थे और हमारे सबसे नज़दीक वाले सभी लोग शांत थे। मैं अपने साधारण तंबू के दरवाजे पर खड़ा खान के आने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था; और आखिरकार मैंने धुंधलके में एक आकृति को चुपके से आते देखा, जो अपने रास्ते में पड़े हुए लोगों से सावधानी से बचती हुई आगे बढ़ रही थी। क्या यह खान था? हाँ। 'अलिया की कसम, वह आ रहा है!' मैंने पीर खान से कहा; 'मैंने उसे देख लिया है: और उसके पीछे उसका घोड़ा है, और सईद उसे आगे ले जा रहे हैं।'
'शुक्र खोदा!' मेरे साथी ने कहा; 'उसने हमें धोखा नहीं दिया है। मुझे डर था कि उसने धोखा दिया है, क्योंकि काफी देर हो चुकी है।'
'क्या आप हैं, मीर साहब?' गफूर खान की आवाज आई। 'मुझे डर था कि इस भयानक अंधेरे में मैं आपका तम्बू नहीं देख पाऊंगा।'
'मैं यहाँ हूँ, खान, और आपके सेवक के इस साधारण तम्बू में आपका स्वागत है।'
'तो तुम्हें शराब मिल गई, है ना?' खान ने खुशी से हाथ मलते हुए कहा। 'तुमने मुझे धोखा तो नहीं दिया?'
'तुम्हारी आत्मा की कसम, नहीं! खान, मेरे पास नहीं है; देखो, पीर खान पुलाव के लिए गए हैं।'
'खूब, आलिया की कसम! मीर साहब, मैंने इसे पूरा करने के लिए जानबूझकर सारा दिन उपवास रखा है; और मुझे एक घंटा पहले यहाँ आ जाना चाहिए था, लेकिन मुझे किसी मामूली बात पर दरबार में बुलाया गया था; और मैंने आपको इंतज़ार करवाया।'
और तुम्हारा घोड़ा, खान?
'ओह, वो यहाँ है; मेरे सईद ने उसे तुम्हारे नौकरों के बीच छिपा दिया है। मैंने अपने बाकी नौकरों को धोखा दिया—मैंने कसम खाई कि मुझे सिरदर्द है और मैं खा नहीं सकती, और सोने का बहाना बनाया, उन्हें सख्त हिदायत दी थी कि मुझे परेशान न करें। उन धूर्तों को पता था कि ऐसा करना ठीक नहीं है; और इसलिए, थोड़ी देर चुपचाप लेटने के बाद, मैं चुपके से अपने पीछे वाले तंबू से निकल गई, और उन्हें चकमा दे दिया। मुझे लगता है कि तुम्हारे लोग जानवर के सामने थोड़ा चारा डाल सकते हैं?'
'ज़रूर: मैंने पहले ही इसका ध्यान रख लिया है।'
अब पीर खान पुलाव लेकर अंदर आए; और बैठते ही हमारी उंगलियां तुरंत पुलाव के बीच में जा लगीं।
'अब शराब लाओ, मीर साहब; इसके बिना पुलाव सूखा है, और मेरे गले में नमी की कमी है।'

'ये लीजिए,' मैंने इसे एक कप में डालते हुए कहा; 'देखिए यह कैसे चमक रहा है, जैसे माणिक की आग।'
खान ने बोतल पूरी खाली करने के बाद कहा, 'अरे, ये तो हूरों की शराब है; कितना आनंद आता है! सोचो, मीर साहब, जन्नत में हम सच्चे मुसलमान कितना आनंद लेंगे (अगर वहाँ भी इतनी ही अच्छी शराब मिले तो), बीस हूरों से घिरे हुए, और हर एक हमें खुश करने के लिए होड़ करेगी! लेकिन पियो, यार, मैं तो पूरी नहीं पीऊँगा।'
'नहीं, वह बोतल तो तुम्हारा हिस्सा है, खान, और तुम्हारे लिए एक और भी है; पीर खान और मैं इसे आपस में बाँट लेंगे। अफसोस की बात है कि और बोतलें नहीं हैं, या फिर बोतलें बड़ी नहीं थीं।'
'जी हां, यह वाकई अफसोस की बात है, मीर साहब, लेकिन जो कुछ है, हमें उसका भरपूर इस्तेमाल करना चाहिए;' और उन्होंने एक और घूंट लिया। 'ज़रा सोचिए,' उन्होंने आगे कहा, 'उन फिरंगियों के बारे में जो रोज़ाना इस तरह की चीज़ें पीते हैं। अब तो मुझे उनके नशे में किए गए बड़े-बड़े कारनामों पर ज़रा भी हैरानी नहीं होती। और क्या ऐसा नहीं है, मीर साहब, कि वे सब एक मेज़ के चारों ओर बैठकर पीते हैं, और ज़ोर-ज़ोर से गाने गाते हैं, जब तक कि वे नशे में चूर होकर गिर न पड़ें?'
'मुझे विश्वसनीय सूत्रों से पता चला है, खान। आलिया से! वे बहुत ही मिलनसार कुत्ते हैं।'
कुछ देर चुप रहने के बाद ग़फ़ूर खान ने कहा, 'काश मैं उनकी सेवा में होता। क्या आपको लगता है कि वे किसी को उसकी इच्छा अनुसार शराब पीने को देते?'
मैंने जवाब दिया, 'मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है।'
'तो मैं उनके यहाँ नौकरी करूँगा, मीर साहब; यह चीज़ मुझसे कहीं बेहतर मुसलमानों को भी एक काफ़िर की सेवा करने के लिए ललचाएगी। लेकिन कहते हैं सिकंदर यहोवा भी इसे पीता है।'
मैंने कहा, 'हैदराबाद में रहते हुए मैंने यही सुना था; दरअसल, मैंने पहली बार इस शराब का स्वाद वहीं चखा था; और गुंटूर में फिरंगी परिवार के घरों में जब मैंने उन बोतलों को देखा तो मुझे वे फिर से याद आ गईं।'
'यह किसी राजकुमार के लिए ही उपयुक्त पेय है,' खान ने बोतल खत्म करने के बाद आह भरी और बड़े दुख भरे चेहरे से बोतल को देखते हुए कहा। 'यह खत्म हो गया, मीर साहब; आपने कहा था कि आपके पास एक और है?'
'अरे खान! लेकिन सिर्फ यही वाला,' मैंने दूसरा उसे देते हुए जवाब दिया।
'अब मुझे खुशी हो रही है, मीर साहब। आलिया की कसम! मैं गा सकती हूँ—शायद नाच भी सकती हूँ, हालाँकि ऐसा करना शर्मनाक होगा। लेकिन पैगंबर ने किसी मुसलमान को गाने से मना नहीं किया है। अल्लाह उनका नाम बुलंद करे! क्या आप में से किसी के पास सितार है? लोग कहते हैं कि मैं अच्छा बजाती हूँ।'
मैंने पीर खान से कहा, 'जाओ और मोतीराम का घोड़ा ले आओ; वह अच्छा घोड़ा है। क्या उसका मालिक भी आएगा, खान?'
'नहीं, मुझे परवाह नहीं, मीर साहब; चाहे शैतान भी आ जाए, मैं उसकी दाढ़ी खींच लूंगा: आने दो। क्या वह गा सकता है?'

'बुलबुल की तरह, खान; मैंने शायद ही कभी किसी पुरुष से इतनी अच्छी आवाज सुनी हो।'
'कुछ स्त्रियों के लिए!' खान ने आह भरी; 'ऐसे क्षणों में उनकी हिरण जैसी आँखों की झलक और पायल की झंकार याद आती है। आह, मीर साहब, कृष्णा नदी में डेरा डाले हम कितने खुश थे। एक स्त्री थी—पर उनके बारे में क्यों बात करें, मीर साहब,—उनके बारे में क्यों बात करें?'
मैंने कहा, 'नेमावुर पहुँचने पर हमें उनकी संगति का और भी अधिक आनंद मिलेगा। लेकिन यहाँ मोती अपने सितार के साथ है।'
मोती ने सलाम किया और बैठ गया।
'क्या वाद्य यंत्र ठीक से बज रहा है, मोती—गायकों के मोती?' खान ने मोती के नाम पर किए गए अपने इस मज़ाक पर हंसते हुए कहा। 'क्या तुमने इसे ठीक से बजवाया है?'
'हे महान खान, मेरे पास है; हालांकि यह इतने उच्च कोटि के व्यक्ति के स्पर्श के योग्य नहीं है।'
'नहीं, यह एक अच्छा सितार है, और मधुर भी,' खान ने कहा, और अपनी उंगलियों को तारों पर इस तरह से फेरा जिससे पता चलता था कि वह एक कुशल सितार वादक हैं।
'वाह!' हम सब एक साथ चिल्लाए; 'बजाओ, महान खान! जिस हाथ ने ऐसी प्रस्तावना प्रस्तुत की है, वह चमत्कार कर सकता है।'
'मुझे थोड़ा और पानी दो,' वह चिल्लाया, 'मैं कोशिश करूंगा। क्या तुम कोई ग़ुज़ल जानते हो, मोती?'
'खान साहब, मुझे इनमें कोई खास महारत हासिल नहीं है; फिर भी, अगर मेरे मालिक किसी एक का जिक्र करेंगे, तो मैं कोशिश करूंगा। मुझे अपने देश के तुप्पों का सबसे अच्छा ज्ञान है।'
'पह!' खान चिल्लाया, 'तूप कौन गाएगा? मैं एक गुज़ल का नाम लेता हूँ जो हर किसी की ज़बान पर है—गाओ "माही-आलम, सोज़-ए-मुन; मुझे यकीन है कि तुम इसे जानते हो। लेकिन शराब, मीर साहब, मेरे लिए उंडेल दीजिए; आप मेरे साक़ी हैं, आप जानते हैं। मैं आपके लिए एक स्तुतिगान गाऊँगा, जैसे हाफ़िज़ ने अपने लिए कई स्तुतिगान लिखे और गाए हैं; उनकी आत्मा को शांति मिले! आह! वह अच्छा था; लेकिन ओह, मीर साहब, इसका स्वाद पिछली बार से अलग है।'
'बहुत संभव है,' मैंने कहा; 'जो बोतल आप देख रहे हैं उस पर अलग तरह का कागज लगा है; शायद यह बेहतर किस्म का हो।'
'यह अच्छा है, और मुझे बस यही परवाह है, मीर साहब। अब आगे बढ़िए, अच्छे मोती।'
मोती ने आदेशानुसार कार्य किया, और उसकी आवाज और खान का संगीत उन श्रोताओं की तुलना में कहीं बेहतर श्रोताओं के योग्य थे जिन्होंने उन्हें सुना।
'वाह वाह! शाबाश!' पीर खान और मैंने प्रस्तुति समाप्त होते ही कहा; 'इस निर्जन जंगल में दो इतने कुशल संगीतकारों को सुनना एक दुर्लभ सौभाग्य है। अब आपकी बारी है, खान साहब।'
'और शराब, मीर साहब, "साक़ी मेरा!" बारह इमामों की खातिर और शराब। काश हज़ार बोतलें होतीं, ताकि हम हर रात की तरह मिलते! अच्छी शराब और अच्छे साथी—क्या ये कवियों के गीतों का सार नहीं रहे हैं?'

'क्या अभी भी कुछ बचा है?' उसने प्याला खाली करने के बाद पूछा।
'लगभग आधी बोतल,' मैंने कहा।
'तो फिर मोती को एक प्याला पिलाइए, मीर साहब; वह इसके योग्य है।'
'क्षमा कीजिए,' मोती ने कहा, 'लेकिन मैं एक हिंदू और ब्राह्मण हूं।'
'तुम्हें सच्चा आस्तिक होना चाहिए था, मोती; खान तुम्हारे नाम के साथ उतना ही अच्छा लगता जितना राम। अरे, हमारे प्यारे पैगंबर तुम्हें जन्नत पहुँचकर उनके लिए गीत गाने को कहते!'
अब ग़फ़ूर खान की आवाज़ कुछ भारी हो गई थी, और उसने ग़ुज़ल करने की जो कोशिश की, उसमें वह नाकाम रहा; लेकिन उसे नाचने वाली लड़की की तरह अपनी आँखें इधर-उधर घुमाते देखना और उनकी कंपकंपी और लड़खड़ाहट की नकल करने की कोशिश करते सुनना बहुत हास्यास्पद था।
एक श्लोक गाने के बाद वह चिल्लाया, 'पह! मेरा गला सूख रहा है; मुझे और शराब चाहिए, मीर साहब; लेकिन सच तो यह है कि मुझे कुछ दिन पहले सर्दी लग गई थी, और अभी भी मेरी आवाज बैठी हुई है।'
एक और घूंट लेने के बाद उसने फिर कोशिश की, लेकिन कोई खास सफलता नहीं मिली। उसने खांसने और गले को साफ करने की व्यर्थ कोशिश की; शराब और उससे भी बेहतर अफीम अपना असर उतनी ही तेजी से दिखा रही थीं जितनी हम उम्मीद कर सकते थे।
'क्या तुम फिर से गाओगे, मोती?—मेरे मोती! मेरे गोवेया!' खान ने व्यंग्य भरे लहजे में कहा। 'इस देश के पानी पर लानत हो, जो मनुष्य के गायन को बिगाड़ देता है। गाओ, मनुष्य, और मैं बजाऊंगा; कम से कम यह उसे तो नहीं बिगाड़ सकता; और मीर साहब ने कम से कम आज रात के लिए तो इसका उपाय कर दिया है।'
मोती ने फिर से गाना गाया; लेकिन संगत बेतरतीब और अनियमित थी, और अंत में खान ने सितार नीचे फेंक दिया।
'यह ठीक नहीं है, मीर साहब, दिन भर की थकान (हिचकी) और इन बदमाश पिंडारियों पर चिल्लाने और उन्हें धमकाने (हिचकी) के बाद। मीर साहब, यह कैसे उम्मीद की जा सकती है कि मैं, तीन हजार घुड़सवारों का सरदार, गुफूर खान, गौया की तरह खेलूं और गाऊं? आलिया की कसम, मैं ऐसा नहीं करूंगा (हिचकी)। लेकिन ये हिचकी, मीर साहब, इनका इलाज क्या है?'
'थोड़ी और शराब, खान साहब; शराब के सिवा कोई और चीज उन्हें ठीक नहीं कर सकती। और भी है; अभी एक और प्याला है।'
'तो मुझे सब कुछ दे दो!' खान चिल्लाया; 'मैं इसे काफ़िर फिरंगी की तरह खड़े-खड़े पी जाऊँगा—उनकी बहनें अपवित्र हों, हाँ, उनकी माताएँ भी! फिर भी, जैसा मैंने कहा, मैं उनकी सेवा करूँगा और उनके बीच पीऊँगा, और कोई भी ग़ुफ़्फ़ूर खान से ज़्यादा नहीं पिएगा। - तुमने कहा कि वे खड़े-खड़े पीते हैं; और वे क्या कहते हैं?'
'हिप, हिप, हिप!' मैंने कहा; 'मैंने ये शब्द एक आवारा से सीखे थे जो उनके बीच एक खिदमुतगार रह चुका था और उनकी बेकाबू अय्याशी देखी थी।'

'वाह, हिप, हिप, हिप! ये हैं वो शब्द, है ना? मुझे आश्चर्य है कि इनका क्या मतलब है।'
मैंने कहा, 'मेरा मानना है कि ये उनके पैगंबर से प्रार्थना है, ठीक वैसे ही जैसे हम कहते हैं "बिस्मिल्ला इर रुहमान इर रुहीम!"'
'मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है, मीर साहब। अब मुझे उठने में मदद कीजिए, क्योंकि मेरे दिमाग में सब कुछ समाया हुआ है, और मेरा शरीर चारों ओर घूम रहा है; मैं कहता हूँ, मुझे उठने में मदद कीजिए, और मैं एक सच्चे मुसलमान और एक फिरंगी के रूप में आखिरी बूंद तक पी जाऊंगा। हा! क्या मैंने सही नहीं कहा?'
'बहुत बढ़िया, महान खान,' मैंने उन्हें उठने में मदद करते हुए कहा; 'अब, ये रही शराब।'
'बिस्मिल्ला!' खान चिल्लाया, 'हिप! हिप! हिप!' और उसने प्याला पूरा खाली कर दिया; उसका सिर उसकी छाती पर झुक गया, उसकी आँखें बेतहाशा घूमने लगीं: उसने आगे बढ़ने का एक हताश प्रयास किया, और अंत में ज़मीन पर धड़ाम से गिर पड़ा।
'बस!' पीर खान चिल्लाया और रास्ते से हट गया; 'बस करो, महान खान! हे नेक खान, अब तुम मरे हुए हो। फिरंगी और मुसलमान, तुमने हमारा खूब मजाक उड़ाया है।'
मैंने उनसे कहा, 'उसे उठाओ, उसे उसके एक पैर पर बिठाओ। मैं तैयार हूँ, और तुममें से कोई एक झिरनी दे।'
उन्होंने उसे उठाया, और जैसे ही वह बैठा, उसका सिर फिर से उसके कंधे पर झुक गया, और उसके मुंह से कुछ झाग निकला।
'वह मर रहा है,' मोती ने कहा; 'हमें उसे छूना नहीं चाहिए; यह मना है।'
मैंने कहा, 'बिल्कुल नहीं; सभी शराबी इसी हालत में होते हैं; मैंने सैकड़ों को इसी हालत में देखा है; इसलिए उसका सिर ऊपर उठाओ और झिरनी करो;' क्योंकि मैं उसके पीछे अपनी जगह ले चुका था।
उन्होंने ऐसा ही किया; पीर खान ने घातक शब्द कहे, और ग़फ़ूर खान ने मेरी कभी न मिटने वाली पकड़ के नीचे अपनी अंतिम पीड़ा से जूझते हुए दम तोड़ दिया।
'बस करो, मीर साहब,' पीर खान ने कहा, जो उसके पैर पकड़े हुए था; 'बस करो! वह मर चुका है।'
'उल-हम्द-उल-इल्ला!' मैंने कहा; 'काम पूरा हो गया, पैगंबर और भवानी धन्य हों! लुग़ैसों के पीछे जाओ; उन्हें तुरंत दफना देना चाहिए। अब सईसों की बारी।'
हमने खान का शव वहीं छोड़ दिया और बाहर निकल गए; बाकी लोग हमारा इंतजार कर रहे थे। 'वह कहाँ लेटा है?' मैंने पूछा।
उनमें से एक आदमी ने कहा, 'देखो, वह गहरी नींद में सो रहा है, और एक घंटे से सो रहा है।'
पीर खान ने कहा, 'यह तो और भी अच्छा है; उसे मेरे भरोसे छोड़ दो।'
मैंने उसे और मोती को सोते हुए देखा। पीर खान ने उसे अपने पैर से छुआ; वह उठकर बैठ गया और अपनी आँखें मलने लगा, लेकिन पीर खान उस पर टूट पड़ा और वह होश में आने से पहले ही पल भर में मर गया।
अब शवों और काठी के अंतिम संस्कार के अलावा कुछ नहीं बचा था। जल्दी से एक उथली कब्र खोदी गई;

और जब लुघाई लोग उसे तैयार कर रहे थे, तब मैंने, पीर खान और मोती ने काठी की अस्तर और जेबें खोलीं और सोना निकाल लिया। और कुछ नहीं था। वह सिक्कों के रूप में था, और छोटे-छोटे टुकड़ों में, क्योंकि लूटपाट में मिले गहनों को समय-समय पर पिघलाया गया था। उस समय हमारे पास इसके मूल्य का अनुमान लगाने का समय नहीं था, लेकिन हमने यह सुनिश्चित करने के लिए काठी को अपने चाकुओं से टुकड़ों में काट दिया कि उसमें कुछ भी न बचे, और टुकड़ों को शवों के साथ दफना दिया गया।

'मीर साहब, हम इस घोड़े का क्या करें?' मोती ने पूछा। 'हम इसे अपने साथ नहीं ले जा सकते, क्योंकि शिविर में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो ग़ुफ़्फ़ूर खान के घोड़े को न पहचानता हो; और हमारे पास इसे गंदा करने का समय नहीं है।'

मैं कुछ देर तक असमंजस में रहा; उस शानदार जानवर को अपने पास रखने से हमारी छुप जाने की गारंटी हो जाती, और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं। आखिरकार मुझे एक उपाय सूझा। मैंने कहा, 'उसे मार डालना चाहिए; वह बेशक एक शानदार जानवर है, लेकिन हमारी जान उसकी जान से कहीं ज़्यादा कीमती है। शिविर से आगे, लगभग एक तीर की दूरी पर, एक गहरी खाई है। क्या आप में से कोई उसे जानता है?'

'हममें से किसी ने भी इसे नहीं देखा है,' सबने एक साथ कहा।

'तो मुझे खुद जाना होगा, और तुम, गौस खान (वह मेरे आदमियों में से एक था), मेरे साथ चलो; हम उसे उसमें फेंक देंगे। जाओ और उसे उसकी बाड़ से खोल दो।'

मैंने उसका पीछा किया, और हम जानवर को खाई के किनारे तक ले गए; खाई गहरी थी, और हमारे उद्देश्य के लिए बिल्कुल उपयुक्त थी, क्योंकि उसके किनारे खड़ी ढलान वाले थे।

जब वह घोड़े को किनारे पर ले आया, तो मैंने कहा, 'बस इतना ही काफी है; अब इसकी लगाम एक तरफ घुमाओ; हमें इसे गिरने से पहले ही मार डालना होगा।'

उसने ऐसा ही किया; मैंने अपनी तलवार तैयार कर ली थी और उसे उस बेचारे जानवर के गले पर तेज़ी से चला दिया; खून बह निकला, वह पीछे की ओर लड़खड़ाया, अंधेरी खाई में गिर गया, और हमने उसके शव के भारी आवाज़ के साथ तल तक पहुँचने की आवाज़ सुनी। मैंने ऊपर देखा, लेकिन मुझे तल पर बस एक धुंधला सा शरीर दिखाई दिया, जबकि उसकी मृत्यु की पीड़ा की कुछ कराहें मेरे कानों तक पहुँचीं।

'बस करो!' मैंने कहा; 'चलो यहाँ से चले जाओ; सुबह होने से पहले सियार खूब दावत करेंगे, और कोई भी यहाँ देखने की नहीं सोचेगा। लेकिन उस जानवर को मारना अफसोस की बात थी।'

'उसकी कीमत करीब एक हजार रुपये थी, और हैदराबाद में उसे उतनी ही कीमत मिल जाती। आपने उसे वहां क्यों नहीं भेजा? मैं उसे ले आता।'

मैंने कहा, 'मैंने इस बारे में सोचा ही नहीं था; लेकिन अब कोई बात नहीं; नेमावुर पहुँचने से पहले हम इससे कहीं अधिक कमा लेंगे।'

'कैसे, मीर साहब? इस गरीब देश में हमें बहुत कम मिलता है।'

'मुझ पर भरोसा रखो, गौस खान,' मैंने कहा; 'हमने शुरुआत कर दी है, और इंशाल्लाह! हम काम जारी रखेंगे।'

मैं तम्बू में पहुँचा, और लुघाई लोगों ने अपना काम बखूबी कर दिया था; हमारे कालीन उस जगह पर बिछा दिए गए थे जहाँ खान अपने अंतिम विश्राम स्थल पर लेटे थे, और हम सब लेट गए और चैन से सो गए।

अगली सुबह ग़फ़ूर खान अपने नियमित स्थान पर नहीं मिला; उसके भाग्य को लेकर तरह-तरह के कयास लगाए गए, लेकिन कोई भी उसके गायब होने का कारण नहीं बता सका। कुछ का कहना था कि शैतान ने उसे उसकी दुष्टता के कारण अपने साथ ले लिया; दूसरों का मानना था कि उसने बहुत सारा माल लूटा था और उसे छीन लिए जाने का डर था, इसलिए वह उसे अपने साथ लेकर भाग गया, क्योंकि यह ज्ञात था कि वह माल उसकी काठी में सिला हुआ था।

जब हम अपने अगले पड़ाव पर पहुँचे, तो चीतू ने मुझे बुलवाया: मैं गया और उसे पूरे दरबार में बैठा पाया, और खान के सेवक उसके सामने कैदी की तरह बैठे थे। मैंने हमेशा की तरह सलाम किया, और उसने मुझे अपने पास बैठने का अनुरोध किया।

'यह तो बहुत ही रहस्यमय मामला है, मीर साहब,' उन्होंने कहा; 'गफूर खान चला गया है; और आलिया या शैतान ही जानते हैं कि वह कहाँ गया है! अगर वह भाग गया है, तो यह मेरे लिए अब तक की सबसे असाधारण घटना है; क्योंकि वह बचपन से ही मुझसे जुड़ा रहा है, और मैं हमेशा उसके प्रति दयालु रहा हूँ। आप क्या सोचते हैं?'

मैंने कहा, 'मैं भी असमंजस में हूँ; आपका सेवक नहीं जानता कि क्या कहूँ; हज़ार तरह की अटकलें लगाई जा रही हैं, लेकिन कोई भी इस रहस्य का कोई संभावित हल नहीं बता पा रहा है। लेकिन क्या आपने सेवकों से पूछताछ की है? उन्हें ज़रूर कुछ पता होगा।'

'मीर साहब, अभी तक तो नहीं; लेकिन ये रहे, और मैं चाहता हूँ कि आप इनसे पूछताछ करने में मेरी मदद करें। आप कुछ ऐसी बातें सोच सकते हैं जो मुझसे छूट गई हों।'

'मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा, नुवाब; लेकिन बेहतर होगा कि तुम शुरू करो—वे तुमसे डरेंगे और सच बोलेंगे।'

'उनमें से किसी एक को बुलाओ,' चीटू ने एक परिचारक से कहा।

वह व्यक्ति कांपते हुए आया और हमारे नेता के सामने झुक गया।

'तुम्हारा नाम क्या है?' उसने पूछा।

'सयुद इब्राहीम,' साथी ने कहा।

'और तुमने ग़फ़ूर खान की क्या सेवा की?'

'मैं एक खिदमुतगार हूँ, हे जगत के आश्रयदाता!' उस व्यक्ति ने कहा; 'मैं खान के कपड़े रखता था, उन्हें स्नान कराता था और रात में उनकी सेवा करता था। मैं हमेशा उनके साथ रहता था।'

'इब्राहिम, अब सच बोलो और डरो मत। लेकिन मैं पैगंबर की दाढ़ी की कसम खाता हूँ, अगर मुझे पता चला कि तुम झूठ बोल रहे हो, तो मैं तुम्हारे साथियों को चेतावनी देने के लिए तुम्हें अपने सामने टुकड़े-टुकड़े करवा दूँगा।'
'क्या मैं आपकी बलि बन सकता हूँ!' उस व्यक्ति ने पुकारते हुए कहा, 'मैं झूठ नहीं बोलूँगा। मैं क्यों बोलूँ? जो मैं जानता हूँ वह आसानी से बताया जा सकता है, और वह भी बहुत कम है।'
'आगे बढ़ो,' चीटू चिल्लाया, 'और मेरी कही हुई बात याद रखना।'
'आलिया मेरी गवाह है,' उस आदमी ने कहा, 'मुझे बहुत कम पता है। मेरे आदरणीय स्वामी दोपहर बाद महाराज के दरबार से लौटे: हमने उनके लिए भोजन तैयार किया था, लेकिन उन्होंने कहा कि वे बीमार हैं और खाना नहीं खाएंगे, और हमने उनके लिए जो खाना बनाया था, वह हम खुद खा लें। फिर वे अपने तम्बू में गए, दरबार के कपड़े उतारे, हथियार रखे और लेट गए। मैं तब तक उनके साथ था और उन्हें नहलाने के लिए बैठ गया; लेकिन उन्होंने मुझे जाने को कहा और मैं उन्हें छोड़कर चला गया। दिन भर उनके साथ दौड़ने से मैं थक गया था, इसलिए मैं भी लेट गया और तब तक नहीं उठा जब तक लोगों ने मुझे मार्च के लिए नहीं जगाया। मैं उन्हें जगाने और उनके कपड़े देने के लिए तम्बू में गया, लेकिन वे वहाँ नहीं थे। बिस्तर वैसा ही था जैसा उनके लेटने के समय था, लेकिन उनकी तलवार वहाँ नहीं थी, न ही वह छड़ी जो वे हमेशा अपने साथ रखते थे। मुझे बस इतना ही पता है, लेकिन शेख कादिर को और भी बहुत कुछ पता है, अगर आप उन्हें ऐसा कहना चाहें; उन्होंने खान को मेरे बाद देखा था।'
तदनुसार शेख कादिर को बुलवाया गया, और अन्य लोगों की तरह उन्हें भी चेतावनी और धमकी दिए जाने के बाद, उन्होंने इस प्रकार कहा:
'मैं भी एक खिदमुतगार हूँ, लेकिन मेरा काम खान की सेवा करना नहीं था; मैं उन्हें हुक्का देता था और उनके खाने के लिए अफीम तैयार करता था। शाम ढलने के कुछ ही देर बाद मैंने उन्हें तंबू में हलचल करते सुना और उन्हें देखता रहा; उन्होंने तंबू का पिछला हिस्सा उठाया और बाहर आ गए: मैंने उन्हें शिविर के बीचोंबीच चलते देखा और उनके पीछे गया: उन्होंने मुझे देखा और अचानक मेरी ओर मुड़ गए; "क्या," उन्होंने कहा, "क्या मैं कुछ कदम बाहर जाकर ताज़ी हवा भी नहीं ले सकता, बिना तुम जैसे बदमाशों के मेरे पीछे आए? चले जाओ!" नुवाब, मैं डर गया था कि कहीं वह मुझे कोर्ला का आदेश न दे दें, और मैं एक दोस्त के तंबू में चला गया। सुबह मुझे पता चला कि वह वापस नहीं लौटे हैं।'
मैंने कहा, 'यह बहुत ही निराशाजनक है; हमें अभी तक उसके लापता होने का कोई सुराग नहीं मिला है। अगर वह चला गया है, तो वह घोड़े पर सवार होकर गया होगा; उसका घोड़ा कहाँ है?'
'अरे, ये कहाँ है?' चीटू चिल्लाया। 'कौन बता सकता है?'
'मैं आपकी कुर्बानी बन जाऊं!' शेख कादिर ने कहा; 'न तो घोड़ा है और न ही उसका सैस। खान के पास दो घोड़े थे, लेकिन जो घोड़ा गायब है उसकी काठी में सारा सोना सिला हुआ था।'
'हा!' चीटू ने कहा, 'क्या ऐसा है? बाकी साईस कहाँ हैं?'

'पीर-ओ-मूरशिद?' एक सेवक ने पुकारा; 'वह बाहर इंतजार कर रहा है।'
'उसे भी बुलाया जाए।' वह आदमी अंदर आया।
'तुम्हें क्या पता है?' चीटू ने पूछा।
उस साथी ने कहा, 'मुझे बस इतना पता है कि भूरे घोड़े को दोपहर भर काठी से बांधकर रखा गया था; यह रिवाज के खिलाफ था, क्योंकि सोते समय उसकी काठी हमेशा तंबू में, खान के सिर के पास रखी जाती थी। मैंने अपने साथी सईद से इसका कारण पूछा; लेकिन वह मुझसे नाराज़ हो गया और कहा कि यह मेरा काम नहीं है, यह खान का आदेश था और उसकी मर्ज़ी थी। मैंने उसे अंधेरा होने के बाद घोड़े को उसके खंभे से ले जाते देखा, लेकिन मैंने कोई सवाल नहीं पूछा।'
मैंने कहा, 'नुवाब साहब, अब तो बस एक ही निष्कर्ष निकलता है। गुफूर खान भाग गया है और लूट का माल लेकर फरार हो गया है। हर कोई कहता था कि वह बहुत भाग्यशाली था; और सबने कहा कि उसकी काठी सोने से भरी हुई थी।'
'मैंने भी यही सुना है,' चीतू ने कहा; 'पर फिर भी उस आदमी की कृतघ्नता पर विश्वास करना कठिन है। मैं बचपन से ही उसके साथ रहा हूँ; मैंने उसे गुमनामी से उठाकर तीन हज़ार घोड़ों का सरदार बनाया; और मेरी इस दयालुता का यह दुखद अंत हुआ। जाओ,' उसने नौकरों से कहा; 'मुझे तुममें से किसी में कोई दोष नहीं दिखता; घोड़े को मेरे किले में ले जाओ और उसे मेरे घोड़ों के बीच बाँध दो।'
इस प्रकार यह साहसिक यात्रा समाप्त हुई; न तो हम पर और न ही किसी और पर संदेह हुआ। खान के हैदराबाद में मित्र थे, और माना जाता था कि वह वहीं भाग गया था। केवल हम ही उसके भाग्य को जानते थे, और वह ऐसा भाग्य था जिसका वह हजारों जघन्य अपराधों के कारण हकदार था, जिनका उल्लेख करना भी असंभव है।
लेकिन इसके बाद हम निष्क्रिय नहीं रहे; काम शुरू करने के बाद हमें लगातार काम मिलता रहा; शायद ही कोई रात ऐसी गुज़री हो जब एक-दो पिंडारी हमारे हाथों न मारे गए हों। खान की तरह ही उनकी भी कमी महसूस हुई, लेकिन लुभुर से लगातार हो रहे पलायन से हमें फायदा मिला; क्योंकि जैसे ही हम नेमावुर के पास पहुँचते, लोग रोज़ाना हर दिशा में अपने घरों की ओर भाग जाते, शिविर की थकान से बेखबर। साथ ही, फिरंगी सैनिकों की मौजूदगी की लगातार आगाहियाँ भी मिलती रहीं, जिनसे हम कई बार बाल-बाल बचे। लेकिन मुझे वह निरंतर सफलता नहीं मिली जो अब तक मुझे प्राप्त होती रही थी। विश्वासघात चल रहा था, और जिस बात का हमें सबसे कम डर था, वह अंततः भारी प्रहार के रूप में आई और हमें तितर-बितर कर दिया। मैं आपको बताऊंगा कि यह सब कैसे हुआ और हमारे साथ क्या हुआ।

अध्याय 38

पिस्तौल। किसी पर भरोसा मत करो;
क्योंकि शपथें तिनकों के समान हैं, मनुष्यों के विश्वास पतले केक के समान हैं।
और होल्ड-फास्ट ही इकलौता कुत्ता है, मेरी बत्तख:
इसलिए कैवेटो को अपना सलाहकार बनाएं।
हेनरी पंचम, अंक II, दृश्य III

झालोन से मैं जिन लोगों को अपने साथ लाया था, उनमें हिदायत खान नाम का एक व्यक्ति भी था। मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा था, लेकिन पीर खान उसे थोड़ा-बहुत जानता था, क्योंकि वह उसके साथ काम कर चुका था, और उसे एक कुशल ठग माना जाता था। उसकी उपलब्धियों के बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं थी, क्योंकि पिंडारी शिविर में मारे गए लोगों के विनाश में उसका कोई हाथ नहीं था; क्योंकि मैंने अपने भरोसेमंद आदमियों को यह काम सौंपना बेहतर समझा। लेकिन हिदायत खान निश्चित रूप से एक कुशल घुड़सवार था, तलवार और भाले चलाने में माहिर था, और एक पिंडारी के रूप में एक सक्रिय और साहसी व्यक्ति था। मैंने कहा है कि हमने उसे कभी भुट्टोटे या शुमशे के रूप में नियुक्त नहीं किया; क्यों, यह मैं ठीक से नहीं कह सकता, फिर भी ऐसा ही था; वह हमेशा एक जासूस की तरह काम करता था, और जब हमारा काम अंदर चलता रहता था, तो वह तंबू के द्वार पर पहरा देता था। ग़फ़ूर खान की मृत्यु के कई दिनों बाद, वास्तव में जब हम फिर से नागपुर क्षेत्र में पहुँच गए थे, और जब कुछ दिनों की पैदल यात्रा हमें नेमावूर तक ले जाती, तो पीर खान, मोती और एक-दो अन्य लोग एक शाम अंधेरा होने के बाद मेरे पास आए, उनके चेहरे चिंता और घबराहट से भरे हुए थे।

मैंने रोते हुए कहा, 'भवानी की कसम, क्या बात है? तुम लोग इतने परेशान क्यों हो? भाइयों, बोलो और जो भी सच है बता दो; क्या हम पकड़े गए हैं?'

'अफ़सोस, मुझे विश्वासघात का डर है,' मोती ने कहा। 'कुछ समय से हमें हिदायूत खान पर शक है, जो हाल ही में अजीब तरीके से हमसे गायब हो गया है, कि उसने चीतू के किसी खास आदमी को हमारे बारे में बता दिया है। हमने शिविर में कई बार उनका पीछा किया है, उन्हें गंभीर बातचीत करते हुए पकड़ा है, और आज रात हमें बहुत डर है कि वह अभी भी दरबार में है। अब क्या किया जा सकता है?'

मैंने कहा, 'हमें तुरंत भागना होगा। अब जब आपने हिदायत खान का नाम लिया है, तो मुझे भी संदेह हो रहा है: क्या घोड़ों पर काठी कसी हुई है?'

पीर खान ने कहा, 'वे ऐसे ही हैं, वे हमेशा से ऐसे ही होते हैं।'

'अच्छा,' मैंने कहा; 'तो फिर डरने की कोई बात नहीं है। फिर भी मैं यह सुनिश्चित करना चाहूँगा कि हम पर शक किया जा रहा है या नहीं—हाँ, और आलिया की कसम! मैं इसे तुरंत पता लगाऊँगा।'

'अरे, ऐसा मत करो!' वे चिल्लाए; 'भवानी की खातिर, अपने आप को खतरे में मत डालो; इससे क्या लाभ होगा? हमारे घोड़े तैयार हैं; चलो उन पर सवार हों; तम्बू को वहीं छोड़ दें और भाग जाएं।'
काश मैंने आलिया की इस समझदारी भरी सलाह को मान लिया होता! हालात ऐसे न होते; लेकिन मैं उस विचार से ग्रस्त था, जिद्दी इंसान को कोई रोक नहीं सकता, और मैंने उनकी एक भी बात नहीं सुनी। मैंने चिल्लाकर कहा, 'क्या तुममें से कोई एक भी मेरे साथ नहीं चलेगा? रात अंधेरी है, और हम चुपके से चीतू के तंबू तक पहुँच सकते हैं; हम कान लगाकर लेट जाएँगे और सुनेंगे कि क्या हो रहा है: अगर कुछ बुरा हुआ, अगर सच में हमारी शिकायत हो गई, तो हमारे पास अंदर पहुँचने से पहले भागने का काफी समय होगा।'
'मैं करूँगा,' पीर खान चिल्लाया; लेकिन कोई और नहीं हिला; वे सब भय से लकवाग्रस्त हो गए थे और कुछ भी करने में असमर्थ थे।
'भाई, ये तो तुम्हारी ही शान है,' मैंने कहा; 'तुम्हारा दिल बहुत बड़ा है। अब तुम सब घोड़ों को तुरंत भागने के लिए तैयार करो; उनकी रस्सियाँ ढीली कर दो और लगाम उनके मुँह में डाल दो; उन्हें उनकी जगह से हिलाना मत, वरना किसी को शक नहीं होगा: और आओ,' मैंने पीर खान से कहा, 'एक पल भी बर्बाद करने का समय नहीं है।'
हम चुपके से तंबू से बाहर निकले और दबे पांव चीटू के घर की ओर चल पड़े, जो सौभाग्य से ज्यादा दूर नहीं था। वहाँ कोई नहीं था; लेकिन बाहर से हम देख सकते थे कि एक मंद रोशनी वाले दीपक के पास तीन लोग गंभीर बातचीत में मशगूल थे। हम कनात के किनारे लेट गए और मैंने उत्सुकता से उनकी बातें सुनीं।
'अजैब!' एक आवाज सुनाई दी, जिसे मैंने तुरंत चीतू की आवाज के रूप में पहचान लिया, 'तो उसने खान की हत्या कर दी? तुमने कहा था कि उसने ही की थी।'
हिदायत खान ने कहा, 'मैं आपकी कुर्बानी बन जाऊं' (मैंने उनकी आवाज भी तुरंत पहचान ली), 'उन्होंने ऐसा किया; मैं यह तो नहीं कह सकता कि मैंने उन्हें अपनी आंखों से मरते देखा, लेकिन उन्होंने उन्हें शराब पिलाई, फिर उन्हें दफना दिया और अमीर अली ने खुद उस महान घोड़े को नष्ट कर दिया।'
'मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है,' चीटू ने आह भरते हुए कहा; 'मैंने उसे कृतघ्न समझकर उसकी स्मृति के साथ बहुत गलत किया है: और बाकी लोग?'
मुखबिर ने कहा, 'वे मामूली दर्जे के लोग थे, और मुझे उन सभी के नाम याद नहीं हैं: मुझे केवल एक का नाम याद है, क्योंकि उसे मारना उनके लिए मुश्किल था; वह हुबीब ऊला नाम का एक बलवान व्यक्ति था, और वह मेरे स्वामी के अपने ही पगा से था।'
'मैं उसे अच्छी तरह जानता था,' चीतू ने कहा; 'वह एक नेक और बहादुर आदमी था; और अमीर अली ने उसे मार डाला?'
'नुवाब, उसने ये अपने हाथों से किया; और मोती और पीर खान ने उसे पकड़ रखा था, वरना वो ऐसा नहीं कर सकता था। ये सिर्फ तीन रात पहले की बात है, जब मैं उनका पर्दाफाश करना चाहता था, लेकिन मुझे डर था

कि कोई मेरी बात पर विश्वास नहीं करेगा; और चूंकि मुझे पता था कि अमीर अली आपके पक्ष में है, इसलिए मैंने सोचा कि कोई भी उसके खिलाफ लगाए गए आरोप पर ध्यान नहीं देगा।'

'मैं तो ऐसा कभी नहीं करता, आलिया की कसम!' चीतू चिल्लाया, उठते हुए और गुस्से में अपना माथा पीटते हुए (मैंने अपने खंजर की नोक से कपड़े में छेद कर दिया था और सब कुछ साफ-साफ देख पा रहा था)। 'मैं तुम्हारी कहानी पर कभी विश्वास नहीं करता, लेकिन हालात तुम्हारी कही बात को पूरी तरह से सच साबित करते हैं। भला कौन यकीन कर सकता था कि अमीर अली, जो दयालु, परोपकारी था— जिसने हिंसा की हर साजिश का विरोध किया और हमारे अत्याचारों के खिलाफ तब तक आवाज़ उठाई जब तक मुझे खुद उन पर शर्म नहीं आने लगी— भला कौन उसे ठग समझ सकता था?'

'पर यही सच है, नुवाब,' उस नीच दुष्ट ने कहा; 'जब तुम उन्हें पकड़ लोगे, तो तुम्हें मेरी बात का पर्याप्त प्रमाण मिल जाएगा: ग़ुफ़्फ़ूर खान की तलवार इस समय पीर खान की कमर में बंधी है, जिसने अपनी तलवार फेंक दी है।'

'यह तो वाकई निर्णायक साबित होगा,' चीटू ने कहा। 'लेकिन तुम उनके साथ कैसे शामिल हुए?'

हिदायत खान ने कहा, 'मैं अपने गांव में था, जो झालोन के पास था। मैं पीरू (जिसे हम पीर खान कहते हैं) को पहले से जानता था। उसने मुझे अपने जमादार के साथ शामिल होने और पिंडारियों का पीछा करने के लिए कहा। मुझे कभी शक नहीं हुआ कि वे ठग हैं, भला कौन शक कर सकता था, जब अमीर अली और उसके पिता राजा के चहेते थे? और खान की मृत्यु के बाद ही उन्होंने अपना भयानक काम शुरू किया।'

'अच्छा,' चीटू ने कहा, 'तुमने योजना बना ली है; जितनी जल्दी तुम इसे अमल में लाओगे उतना ही अच्छा होगा। तुमने घुड़सवारों को तैयार कर लिया है, है ना?' उसने दूसरे आदमी से कहा, जिसका चेहरा मैं जानता था।

'मैंने देखा है,' उसने उत्तर दिया; 'वे अपने घोड़ों के पास खड़े हैं, सभी संकेत मिलते ही आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं—पचास बहादुर जवान; कोई भी गुंडा हमसे बच नहीं पाएगा।'

'या आलिया!' चीतू चिल्लाई; 'वह मुझे कैसे देखेगा? और मैं उसे वह सजा देने का आदेश कैसे दे सकती हूँ जिसका वह हकदार है? आह, अमीर अली, तुमने मुझे कैसे धोखा दिया! तुम्हारे उस सीधे-सादे चेहरे में छल कैसे देखा जा सकता था!'

'जाओ,' उसने हिदायत खान और अन्य लोगों से कहा; 'इन्हें बिना देरी किए मेरे पास ले आओ। मैं तुम्हारा इनाम नहीं भूलूंगा: तुमने पीर खान की काठी मांगी है।'

'बस बहुत हो गया! बस बहुत हो गया!' खलनायक चिल्लाया; 'मुझे बस इतना ही चाहिए।'

'हाँ,' पीर खान ने मुझसे फुसफुसाते हुए कहा, 'लेकिन उसे अभी तक वह मिला नहीं है, और अगर मिल भी गया तो वह बड़ा चालाक है। आइए, मीर साहब, हमें चलना होगा—वे आगे बढ़ रहे हैं।'

मैं लगभग वहीं जम गया था। मैं वहीं लेटकर प्रवचन सुन सकता था; लेकिन खतरा इतना करीब था, इतना घातक था कि एक पल की भी देरी संभव नहीं थी। मैं उठा और दबे पांव चलते हुए हमने देखा कि दो लोग तंबू

की दहलीज पार कर गए और तेजी से कदमों से शिविर के उस हिस्से की ओर बढ़ गए जहाँ पैग़ा था, जो हमारे तंबू के पास ही था।

भय ने हमें गति प्रदान की; हम अपने तंबू की ओर भागे और कुछ क्षणों के लिए उन कीमती सामानों को बाँधने में लगे रहे जिन्हें हम बाँटने के लिए बाहर लाए थे; ऐसा करने के बाद, हम अपने घोड़ों की ओर दौड़े। कुछ लोग पहले से ही अपने घोड़ों पर सवार थे; मैं अपने फुर्तीले घोड़े पर कूद पड़ा और अपनी तलवार निकाल ली, सबसे बुरे हालात के लिए तैयार। मैं चाहता था कि हम सब एक साथ आगे बढ़ें, क्योंकि अभी तक कोई खतरे की घंटी नहीं बजी थी, लेकिन मैं धोखा खा गया; हम चारों ओर से घिर गए थे! जैसे ही हम चलने लगे, घोड़ों का एक झुंड हम पर झपटा और हम तुरंत जीवन-मरण के संघर्ष में उलझ गए। क्या हुआ, मुझे नहीं पता; मैंने अपने विरोध में खड़े एकमात्र व्यक्ति को मार गिराया; पीर खान भी उतना ही भाग्यशाली था। मुझे दूसरे से मामूली चोट लगी, जिसकी मैंने परवाह नहीं की; हमने अपने घोड़ों को पूरी गति से दौड़ाया और अंधेरे ने हमें भागने में मदद की।

जैसे ही मैंने अपनी चाल थोड़ी धीमी की, मुझे पता चला कि मेरे कुछ साथी मेरे साथ हैं। हमने उत्तर दिशा में जाने और शिविर से दिखाई देने वाले एक छोटे से गाँव के पास मिलने का फैसला किया था; और इस सावधानी के चलते जो लोग बच निकले थे, वे जल्दी ही एक साथ जमा हो गए। हमारा पीछा नहीं किया गया, हालाँकि हमने पिंडारियों की चीखें सुनीं, जब वे अपने शिविर के अंदर और आसपास एक-दूसरे को पुकार रहे थे, और उनकी तोपों की गोलियों की आवाज़ भी सुनी; और बाद में हमें पता चला कि उन्होंने गलती से एक-दूसरे को बुरी तरह घायल कर दिया था। मुझे अपने आस-पास खड़े लोगों के नाम पुकारने में लगभग डर लग रहा था, क्योंकि मैं उनके चेहरे नहीं देख पा रहा था, और कोई भी अपने साथी से एक शब्द भी नहीं बोल रहा था।

हम काफी देर तक, लगभग एक घंटे से भी अधिक समय तक प्रतीक्षा करते रहे। धीरे-धीरे पिंडारी शिविर में शोर और चीख-पुकार शांत हो गई, और केवल टिमटिमाती पहरेदारी की आग से ही पता चल रहा था कि वहाँ एक विशाल सेना डेरा डाले हुए है। कभी-कभी रात की हवा में घोड़े की तीखी हिनहिनाहट सुनाई देती थी, और जब वह बंद हो जाती तो फिर से एक उदास सन्नाटा छा जाता था। छोटा सा गाँव भी वीरान था; उसका कुछ हिस्सा जल चुका था, और घरों के अंगारे अभी भी चिंगारियाँ छोड़ रहे थे, कभी-कभी आग की लपटें उठती थीं, क्योंकि छप्पर वाली झोपड़ियों की सूखी घास के बचे हुए हिस्से में आग लग जाती थी। और अधिक प्रतीक्षा करना व्यर्थ था; इसलिए मैंने उस सन्नाटे को तोड़ा, जो सभी के लिए कष्टदायक था।

'हम कितने लोग हैं, पीर खान?' मैंने धीमी आवाज़ में पूछा।

'ग्यारह,' उसने कहा; 'मुझे डर है कि बाकी सब गिर गए हैं।'

'मैं प्रार्थना करती हूँ आलिया, वे वहाँ हों; यातना सहने से बेहतर है तलवार या भाले के वार से मरना; लेकिन कौन अनुपस्थित है?—क्या मोती यहाँ है?'

'अफ़सोस! नहीं, मीर साहब। मैंने मोती को घायल होते देखा। मैंने उसे घायल करने वाले पिंडारी पर वार किया, लेकिन अंधेरे ने मुझे धोखा दिया: मेरा वार चूक गया।'
'और कौन-कौन अनुपस्थित हैं?' मैंने अपने दुख को दबाते हुए कहा, क्योंकि मोती मेरे लिए भाई समान था; 'जो लोग यहां हैं, वे अपने नाम बताएं।'
उन्होंने ऐसा ही किया। गौस खान अनुपस्थित था, और नुज्जुर अली और रामदीन सिंह, हमारे तीन सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति; मोती चौथा था; गद्दार हिदायत खान पांचवा था, और हमारे सभी सेवक और घोड़ों की देखभाल करने वाले भी अनुपस्थित थे।
मैंने कहा, 'यहाँ रुकने का कोई लाभ नहीं है; हमें जल्द से जल्द झालोन जाना चाहिए; वहाँ हम तय समय तक प्रतीक्षा करेंगे, और यदि कोई वापस नहीं आता है, तो मृतकों के लिए अंतिम संस्कार किया जाएगा। तुममें से कोई भी उस लूट के माल में से अपना हिस्सा लेने से नहीं कतराएगा जो हम (भवानी की जय हो!) अपने साथ लाए हैं, ताकि वह अपनी पत्नियों और परिवारों को दे सके; जो इच्छुक हैं, मुझसे यह शपथ लो।'
'हम कसम खाते हैं!' सभी ने लगभग एक स्वर में कहा।
मैंने कहा, 'मैं संतुष्ट हूँ; अब चलो आगे बढ़ते हैं। उजाला होते ही हमें मुख्य सड़क से मुड़ जाना चाहिए; हम सभी जंगलों के रास्ते जानते हैं, और उन्हीं रास्तों से हम तब तक यात्रा करेंगे जब तक हम हुसिंगाबाद से सुरक्षित रूप से आगे नहीं निकल जाते: उसके आगे मुझे कोई डर नहीं है।'
पीर खान चिल्लाया, 'आगे बढ़ो; हम तुम्हारे पीछे आते हैं।'
और हम भारी मन से चुपचाप आगे बढ़ते रहे। कई दिनों तक हम इसी तरह यात्रा करते रहे। नागपुर क्षेत्र में जहाँ तक हमारा अस्तित्व रहा, हमने अपने आप को सरकार के गुप्त मिशन पर आए सेवक के रूप में प्रस्तुत किया; और यद्यपि हम पर अक्सर संदेह किया जाता था और पूछताछ की जाती थी, फिर भी अपनी चतुराई से मैंने अपने दल को सभी कठिनाइयों से सुरक्षित निकाल लिया; और जब अंततः हम महान नूरबुद्दा नदी के तट पर पहुँचे तो हमारे हृदय आनंद से भर उठे, और अपने घोड़ों को नदी में दौड़ाते हुए हमने शीघ्र ही नदी के जल को अपने और अपने शत्रुओं के बीच से हटा दिया।
लंबी और कठिन यात्राओं की थकान के हम और हमारे घोड़े दोनों इतने अभ्यस्त हो चुके थे कि एक भी दिन ऐसा नहीं बीता जब हमने पंद्रह-बीस मील की दूरी तय न की हो, और इस रफ्तार से हम जल्द ही अपने घर पहुँच गए। आलिया की कृपा से हम अपने घर पहुँच गए, और अपनी थका देने वाली यात्रा के बाद झालोन के उपवनों को फिर से देखकर मेरा हृदय प्रसन्न हो उठा। हम अपने आगमन की सूचना किसी को नहीं दे पाए थे, और मैं अपने घर के दरवाजे पर अकेला और बिना किसी के साथ उतरा, धूल से सना हुआ, थकान और सूरज की भीषण गर्मी से बेहाल, और अपने बेचारे साथियों के भाग्य की चिंता से इतना बदल गया था मानो कुछ हफ्तों के बजाय दस साल और बीत गए हों। मेरे नौकर मुझे मुश्किल से पहचान पाए; लेकिन जब उन्होंने मुझे पहचाना, तो मेरे लौटने की खुशखबरी हर किसी के मुँह से निकल गई। अपनी तीव्र प्यास बुझाने का भी इंतजार किए बिना मैं अपनी प्रियतम अज़ीमा के आलिंगन में था, और खतरा एक बार फिर भुला दिया गया।

हम सब शाम को इकट्ठा हुए; और जैसे-जैसे हमारी काठी की जेबें एक-एक करके खोली गईं और उनमें रखी चीज़ें हमारे सामने ज़मीन पर ढेर की गईं, सचमुच हमारे सामने सोने और चांदी के टुकड़ों का एक शानदार ढेर दिखाई दिया, जो उन गहनों का था जिन्हें हमने ज़ब्त किया था और जिन्हें हमने मिलते ही पिघला दिया था। मोतियों की कुछ मालाएँ भी थीं, जिनमें से एक मैंने राजा के लिए अलग रख दी; फिर सभी का वज़न किया गया, मूल्य लगाया गया और बाँट दिया गया। जिन्हें हम मृत समझ रहे थे, उन्हें भी नहीं भूला गया; उनका हिस्सा अलग रख दिया गया और बाद में उनके परिवारों को सौंप दिया गया।

अब मुझे फिर से शांति और आराम मिल गया था; चीतू या किसी अन्य पिंडारी नेता से जुड़ने का विचार तो दूर की बात थी; क्योंकि भले ही मैं छद्म नाम से ऐसा कर लेता, फिर भी पहचाने जाने का खतरा बहुत अधिक होता, और मैं फिलहाल काफी धनी था। चीतू भी अपनी प्रसिद्धि और समृद्धि के शिखर पर पहुँच चुका था; मराठा शक्तियों के अचानक और उग्र उदय ने उसकी सारी योजनाएँ विफल कर दीं। यूरोपियों के कौशल और वीरता के आगे उनका सब कुछ व्यर्थ था; वे एक-एक करके पराजित होते चले गए; और चीतू, भले ही वह अपने शत्रुओं की उदारता का लाभ उठा सकता था और उनके द्वारा दी गई एक बड़ी जागीर स्वीकार कर सकता था, फिर भी वह अपने बेचैन मन को वश में नहीं कर सका। उसके कुछ साथी उसके पीछे चले गए, लेकिन नए समर्थकों के लिए उसका झंडा उठाना व्यर्थ था। वे भी एक-एक करके उसका साथ छोड़ गए; उसकी सारी उम्मीदें धराशायी हो गईं; वह एक दयनीय भगोड़ा बन गया; एक स्थान से दूसरे स्थान, एक किले से दूसरे किले तक पीछा किए जाने के बाद, अंततः असीर घुर किले के आसपास के घने जंगलों में एक बाघ के हाथों उनकी दुखद मृत्यु हो गई। उनकी आत्मा को शांति मिले! वे एक महान व्यक्ति और कुशल एवं बहादुर नेता थे; और पिंडारी सरदार के रूप में अपने उग्र जीवन में उन्होंने जो भी अपराध किए हों, उनकी यह भयानक मृत्यु उन सभी का प्रायश्चित है।

दो साल और बीत जाते हैं। साहब, मैं आपको रोज़मर्रा की नीरस घटनाओं का ब्यौरा देकर क्यों थकाऊँ, जिनमें से एक भी घटना उल्लेखनीय नहीं है? मैं आपको फिर से उसी राह पर ले चलूँगा, और आगे के रोमांचों की ओर।

लेकिन, अमीर अली, मैंने कहा, क्या तुमने कभी मोती और अपने उन साथियों के बारे में कुछ नहीं सुना जिन्हें चीतू ने पकड़ लिया था?

मैं उन्हें भूल गया था, साहब; उनका अंत दुखद हुआ, जैसा कि आप आगे सुनेंगे।

घर लौटने के लगभग तीन महीने बाद, एक शाम जब मैं अपने घर के दीवान खाने में कुछ दोस्तों के साथ बैठा था, तभी एक नौकर ने मुझे बताया कि एक आदमी बाहर है, जो चादर में लिपटा हुआ है और मुझसे बात करना चाहता है। उसने कहा, 'वह अंदर नहीं आ रहा है; और कहता है कि जब आप उसे देखेंगे तो पहचान लेंगे।'

मैंने अपनी तलवार उठाई और उसके पीछे चल दिया। शाम का समय था, और जिसने मुझे बुलवाया था, उसके चेहरे को मैं पहचान नहीं पाया; दरअसल, उसने इतने कपड़े पहने हुए थे कि मैं उसके चेहरे को मुश्किल से देख पा रहा था।

'मित्र, तुम्हारा उद्देश्य क्या है?' मैंने पूछा, क्योंकि वह व्यक्ति कुछ नहीं बोला, बल्कि अपने वस्त्र के नीचे बाहों से मेरे सेवक को चले जाने का इशारा किया। मैंने उसे जाने को कहा।

जब हम अकेले थे, तब उस आकृति ने चिल्लाकर कहा, 'जेमादार, क्या तुम मुझे नहीं जानते?'

मैंने कहा, 'यह आवाज मेरे कानों को जानी-पहचानी लग रही है; रोशनी में आओ ताकि मैं तुम्हारा चेहरा देख सकूं।'

'नहीं, नहीं!' उस व्यक्ति ने खोखली आवाज़ में कहा, 'मैं प्रकाश सहन नहीं कर सकता; मैं भले ही अपंग और अपमानित हूँ, लेकिन अँधेरा मेरी शर्म को मुश्किल से ही छुपा पाता है: मैं गौस खान हूँ।'

'घौस खान!' मैंने विस्मय से कहा; 'वह मर गया, वह मर गया—'

'यह सच है,' उस व्यक्ति ने उदास स्वर में कहा; 'घौस खान तुम्हारे सामने है: इसे साबित करने के लिए, एक प्रकाश मंगवाओ और मुझे देखो।'

मैं खुद एक पर्ची लाया और उसे उसके चेहरे के पास रखा। मैं सचमुच दंग रह गया। गौस खान मेरे सामने था, लेकिन कितना बदला हुआ! उसके चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गई थीं और धँसी हुई थीं, आँखों की चमक फीकी पड़ गई थी, दाढ़ी उलझी हुई और बिना कंघी की हुई थी, और कुछ गंदे चिथड़े उसके सिर को ढके हुए थे; लेकिन सबसे ज्यादा चौंकाने वाली बात यह थी कि उसकी नाक उसके चेहरे के पास से कटी हुई थी, और घाव भरने के कारण उसके गालों और मुँह की त्वचा आपस में चिपक गई थी, जिससे वह उन पर कसकर चिपकी हुई थी, और उसके चेहरे पर एक भयानक भाव आ गया था।

'मेरे बेचारे दोस्त!' मैंने उसे गले लगाते हुए कहा, 'ये कैसे हुआ? तुम इस हालत में कैसे पहुँच गए? आलिया की कसम, बोलो! और बताओ तुमने क्या-क्या सहा है।'

“मेरे चेहरे की विकृति ही सब कुछ नहीं है, मीर साहब,” उसने अपने ऊपर ओढ़े गंदे, फटे हुए कपड़े को हटाते हुए कहा। “इन्हें देखिए!” और उस बेचारे ने मुझे अपनी बांहों के ठूंठ दिखाए: उसकी दोनों हथेलियाँ कलाई और कोहनी के बीच से कटी हुई थीं, और घाव अभी-अभी भरे थे। ऐसा करते ही वह दुख और शर्म से व्याकुल होकर ज़मीन पर बैठ गया।

मैंने उसे उठाया और यथासंभव सांत्वना दी। मैंने उसके लिए स्नान और साफ कपड़े मंगवाए, एक कुशल नाई से उसके घावों पर पट्टी करवाई, और उसे भरपेट भोजन करते देखने के बाद, उसे आराम करने के लिए छोड़ दिया।

अब जब मेरे खोए हुए साथियों में से एक वापस आ गया है, तो मुझे आपको यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि मैं बाकी लोगों के भाग्य के बारे में जानने के लिए कितना उत्सुक था। उस रात मैं सो नहीं पाया और बेचैन रहा;

लेकिन अगले दिन, मुझसे अलग एक निजी कमरे में, जहाँ कोई मुझे देख न सके, उसने मुझे अपने कारनामों और कष्टों का निम्नलिखित वृत्तांत सुनाया: वास्तव में, कारनामे कम थे, लेकिन कष्ट बहुत थे।
'मीर साहब, आपको वह भयानक रात तो याद ही होगी,' उन्होंने कहा, 'जब हम लूट का माल लेकर निकलने ही वाले थे कि हम पर हमला हो गया। अंधेरे ने आपको भागने में मदद की, लेकिन पिंडारी घुड़सवारों के पहले ही हमले में मेरी पीठ में भाले का गहरा घाव लगा, जिससे मैं घोड़े से गिर गया। पिंडारियों ने मुझे पकड़ लिया, हाथ-पैर बांध दिए और चीतू के तंबू में ले गए, जहाँ अब लोगों की भारी भीड़ जमा थी। मेरी पीठ के घाव पर पट्टी बांधी गई और कुछ ही क्षणों बाद अन्य पिंडारी मोतीराम को लेकर आए, जो सिर में बुरी तरह घायल था, और दो अन्य, नुज्जुर अली और रामदीन सिंह, जो बिल्कुल ठीक थे। हिदायत खान वहाँ था—वह दुष्ट और गद्दार! और जब मैंने उस पर अपनी निगाहें गड़ा दीं और उन्हें नहीं हटाया, तो उसकी विजयी निगाहें मेरी निगाहों के सामने फीकी पड़ गईं।'
'चुप रहने का आदेश दिया गया, और चीतू ने हिदायत खान से ऊंची आवाज में पूछा कि क्या वह अपने सामने मौजूद किसी भी व्यक्ति को जानता है।'
"हाँ, नुवाब," उस दुष्ट ने कहा; और उसने एक-एक करके हमारा नाम लिया और हमें दिखाया।
"और आपको उनके खिलाफ क्या कहना है?" मुखिया ने पूछा।
"मैं उन पर ठग होने का आरोप लगाता हूँ," उसने कहा; "मैं उन पर हत्या का आरोप लगाता हूँ, ग़फ़ूर खान की हत्या का, और चौदह अन्य अच्छे पिंडारियों की हत्या का,—वे इसे नकारने की हिम्मत नहीं करते।"
"उनके जमादार को, जैसा कि उन्हें कहा जाता है," चीतू ने कहा, "अगर वह बोल सकते हैं, तो इसका जवाब दें।" लेकिन बेचारे मोती की आत्मा तेजी से शरीर से निकल रही थी, वह बेहोश हो गया था, और उसके बाद उसने कभी बात नहीं की।
“मैं जवाब दूंगा,” मैंने कहा; “मैं कहता हूं कि यह झूठ है, घिनौना झूठ; मैं उस आदमी को सबूत लाने की चुनौती देता हूं। क्या हमने आपके शिविर में अच्छी सेवा नहीं की, हे नुवाब? क्या हम हमेशा खतरे में सबसे आगे नहीं रहे हैं, और इन सभी हत्यारे बदमाशों से कहीं अधिक दयालु नहीं रहे हैं?”
"उसके मुंह पर जूता मारो! उसकी गुस्ताखी के लिए उसे मार डालो!" कई लोगों ने चिल्लाकर कहा।
"चुप रहो!" चीतू ने फिर चिल्लाकर कहा; "जो भी इस जांच में बाधा डालेगा, आलिया की कसम, मैं उसका सिर काट दूंगा।"
“बोलिए,” उन्होंने मुझसे कहा; “आपको और क्या कहना है?”
"कुछ नहीं, नुवाब; मुझे आपके न्याय पर भरोसा है।"
"तुम्हें न्याय जरूर मिलेगा; लेकिन मुझे बताओ कि तुम्हारा सरदार क्यों भाग गया है।"
इससे मैं थोड़ा भ्रमित हो गया, लेकिन कुछ देर सोचने के बाद मैंने दृढ़ता से उत्तर दिया,—
"देखो, नुवाब, मैं एक साधारण सिपाही हूँ, और मीठी बातों से तुम्हें खुश नहीं कर सकता। मेरा नेता भाग गया है, यह सच है, लेकिन अपराध बोध से नहीं। उस दुष्ट हिदायत खान ने कई बार लूट का अपना हिस्सा ज़रूरत

से ज़्यादा माँगा, और उसे मना कर दिया गया। वह हमसे अलग हो गया; हमने शिविर में उसका पीछा किया, और उसे एक ऐसे आदमी से गुप्त बातचीत करते हुए पकड़ा जो तुम्हारा खास आदमी माना जाता है। इससे हमें शक हुआ। आज शाम हमने उसे तुम्हारे तंबू तक देखा; मैंने यह सूचना अपने जमादार को दी; वह और पीर खान चुपके से तंबू की ओर बढ़े; वे बाहर लेट गए और उसके हत्या के घिनौने आरोपों को सुना, और उनके पास भागने और अपने घोड़ों पर सवार होने के अलावा कोई समय नहीं था। हम सब तैयार नहीं थे, और तुम्हारे हाथों में आ गए। तुम्हारे सामने आने का उसका क्या फायदा होता? उसके जैसे आदमी के लिए तो अपमान ही असहनीय होता—वह खुद को खत्म कर लेता। मुझे इससे ज़्यादा कुछ नहीं पता; जैसा चाहो हमारे साथ करो।"

चीतू मेरी बातों से स्तब्ध प्रतीत हुआ और कुछ क्षण सोचने लगा। "उनके अपराध के प्रमाण!" उसने हिदायत खान से कहा; "प्रमाण! उन्हें लाओ, अन्यथा तुम्हारा और भी बुरा हाल होगा।"

“उनकी तलवारें लाई जाएं,” उसने कहा; “पीर खान ग़ुफ़्फ़ूर खान की तलवार लेकर भाग गया है, लेकिन उस आदमी (रमदीन की ओर इशारा करते हुए) के पास एक तलवार है जो दो रात पहले मारे गए एक पिंडारी की थी, और अन्य वस्तुएं उनकी काठी की तहों में मिल सकती हैं।”

भीड़ में से एक पिंडारी चिल्लाया, "मुझे तलवारें दिखाओ; मेरा भाई दो रात पहले लापता हो गया था, और तब से मैं उसे व्यर्थ ही खोज रहा हूँ।"

'उन्हें लाया गया। आह! मीर साहब, मैं आपको कैसे बताऊं कि पिंधारी ने रामदीन सिंह को तुरंत पहचान लिया, जिसने चीतू से हमारा खून मांगने की पुरजोर मांग की?'

"यह तुम्हारे खिलाफ निर्णायक सबूत है," चीटू ने कहा; "तुम क्या कह सकते हो?"

'रामदीन ने खुद को निर्दोष साबित करने के लिए कुछ शब्द बुदबुदाए, लेकिन उन पर ध्यान नहीं दिया गया।'

हिदायत खान ने पुकारते हुए कहा, "हे पीर-ओ-मूर-शिद, मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि यदि आपको मेरे द्वारा घोषित तथ्यों पर कोई संदेह हो, तो मैं आपके द्वारा चुने गए किसी भी व्यक्ति के साथ चलने को तैयार हूँ; मैं उन्हें उस स्थान तक ले जाऊँगा जहाँ उस व्यक्ति का दुर्भाग्यशाली भाई अपनी अभागी कब्र में दफन है; और मैं न केवल उसे, बल्कि उसके आगे भी कई कदम चलकर, एक जगह एक शव, दूसरी जगह दो शव खोदता जाऊँगा, जब तक कि हम उस स्थान पर न पहुँच जाएँ जहाँ ग़फ़ूर खान और उसका दुर्भाग्यशाली सईस एक ही गड्ढे में दफन हैं।"

चीटू सिहर उठा। "यह बिल्कुल सच है," उसने कहा। "हाय! मेरे बहादुर सैनिक इन निर्दयी लोगों के हाथों मारे गए—वे लोग जिन्हें युद्ध के मैदान में मृत्यु को गले लगाकर शहादत हासिल करनी चाहिए थी। उनके काठी और सामान कहाँ हैं? उन्हें पेश किया जाए।"

हालात बदतर होते जा रहे थे। आपको याद होगा, नुज्जुर अली की काठी पुरानी और घिसी-पिटी थी, और उसने वही काठी उस पिंडारी की ली थी जिसे हमने आखिरी बार मारा था। भाई को यह बात पता थी और वह उस पर रो रहा था। काठी की तह में उसका सारा लूटा हुआ माल था, ठीक वैसे ही जैसे हमें मिला था; और

मेरी कमर पर उस आदमी का हुमेआना (कपड़ा) था, जिसे मैंने अपने हुमेआना की जगह पहन लिया था; उस पर फारसी में उसका नाम लिखा था, जिसे मैंने ध्यान नहीं दिया था। बस इतना ही काफी था—हम दोषी साबित हो गए; मैंने फिर से ईमान लाया और खुद को मौत के हवाले कर दिया।

फिर भी मैंने अपनी आवाज बुलंद की। "नुवाब!" मैंने कहा, "भाग्य से और अधिक संघर्ष करने का कोई लाभ नहीं है; यदि हम हज़ार गुना निर्दोष भी होते, तो भी हमारे विरुद्ध तथ्यों का यह समूह हमें दोषी ठहरा देता। अब मैं यह नहीं छुपाता कि हम ठग हैं—पवित्र भवानी के अनुयायी, जो हमें स्वर्ग में प्रवेश देंगे। हम आपके आदेश से मरेंगे, परन्तु वह नीच क्यों जीवित रहे?—वह जिसने अपने हिस्से से अधिक की लालची माँग के लिए, जिसे वह जानता था कि हमारे नियमों के अनुसार उसे नहीं मिल सकता, हमें दोषी ठहराया, अपनी शपथ तोड़ी और अपने खाए हुए नमक के प्रति विश्वासघात किया? क्या वह ठग नहीं है? क्या वह बचपन से ही मेरे और सौ अन्य लोगों के साथ हमारे काम में शामिल नहीं रहा है? वह इससे इनकार नहीं कर सकता; उसे देखो—उसके भय से काँपते कायर चेहरे को देखो—वे दिखाते हैं कि मैं जो कह रहा हूँ वह सत्य है। यदि वह, जैसा कि वह कहता है, एक ईमानदार व्यक्ति होता, तो उसने हमें हत्या करते समय—शवों के पास—पकड़ने का आदेश क्यों नहीं दिया? वह ऐसा कर सकता था, सिवाय इसके कि..." गुफूर खान के साथ जो कुछ हुआ, वो रात के पहले पहर में हुआ, जब शिविर में सभी जाग रहे थे और हर कोई अपने-अपने काम में व्यस्त था। उसने तब हमारी शिकायत क्यों नहीं की? उसकी बात मान ली जाती। लेकिन नहीं! उसे उस आदमी के भाई के लूटे हुए माल का आधा हिस्सा चाहिए था; उसे यह नहीं दिया गया, जैसा कि पहले भी कई बार हुआ था, और अब वह लोगों के लिए थूकने की वस्तु बन गया है। अगर हम मरते हैं, तो उसे बख्शा नहीं जाना चाहिए, क्योंकि वह हमारी तरह ही ठग है, क्योंकि वह गद्दार और कायर है!

"झूठे!" हिदायत खान क्रोध और भय के बीच मुश्किल से बोल पा रहा था; "झूठे! मैं तुम्हें चुनौती देता हूँ कि तुम यह साबित कर दो कि मैंने कभी किसी व्यक्ति का गला घोंटा है।"

"नहीं," मैंने चीटू से कहा, "वह बहुत बड़ा कायर था, उसमें हिम्मत नहीं थी! और मेरे स्वामी ने शायद गौर किया होगा कि उसने अपने अंतिम शब्दों में अपने अर्थ को व्यक्त करने के लिए अपशब्दों का प्रयोग किया था।"

"घिनौने!" चीटू ने उससे कहा, "तू उनसे भी बदतर है—वे बहादुर और निर्भीक हैं, तू कायर है; तेरा सिर तेरे शरीर से धड़ से अलग कर दिया जाएगा।"

क्षमा और जीवन के लिए उसकी चीखें भयानक थीं; उसने गिड़गिड़ाया, उसने धमकियाँ दीं; लेकिन इसका क्या लाभ हुआ? उसे घसीटकर तम्बू के द्वार तक लाया गया, एक पिंडारी उसके पीछे खड़ा हो गया, और जब वह अभी भी

*ला इल्ला-इल-उल्ला-महुमुद रसूल-इल्ला!' ('अल्लाह के सिवा कोई ईश्वर नहीं, महमूद अल्लाह का पैगंबर है!')

उसने दया की भीख मांगी, तभी उसका सिर उसके कंधों से अलग होकर आगे की ओर लुढ़क गया।

"क्या तुम निराश नहीं हो?" चीटू ने हमसे चिल्लाकर कहा; "तुम्हारा भी यही हाल होगा।"
"नहीं!" हम सब एक साथ चिल्लाए; "मृत्यु तो देर-सवेर आनी ही है, और हमारी मृत्यु अभी है—हम डरते नहीं हैं।"
“वे इससे डरते नहीं हैं,” उसने दूसरे सरदार से कहा; “मृत्यु तो उनके लिए सुखद होगी; परन्तु उनकी सजा इससे भी बदतर होगी—वे एक दयनीय जीवन व्यतीत करेंगे। हो!” उसने अपने फ़ुराशों से कहा, “इन दुष्टों की नाक और हाथ काट दो और उन्हें मेरे पास ले आओ।”
'ऐसा हो गया, मीर साहब! मैं अकेला ही यह कहानी सुनाने के लिए ज़िंदा बचा हूँ: हमारी नाकें काट दी गईं—फिर हमारे हाथ। खून से लथपथ कटे हुए हाथों को उबलते तेल में डाल दिया गया, और हमें शिविर से निकाल दिया गया, वहीं के वहीं, जंगली जंगलों में मरने के लिए छोड़ दिया गया, जैसा कि वे चाहते थे। और बाकी दो मर गए; हमारे घावों पर पट्टी बांधने वाला कोई नहीं था, नुज्जुर अली और रामदीन के घाव कई दिनों बाद फिर से फूट पड़े और दो दिनों के भीतर ही उनकी मृत्यु हो गई। जब तक हम साथ थे, हम गांवों में भीख मांगकर अपना गुजारा करते रहे, खुद को दूर देश के ग्रामीण बताते रहे जिन्हें पिंडारियों ने यहाँ तक लाकर बुरी तरह घायल कर दिया था, और भूख मिटाने के लिए पर्याप्त धन जुटा लेते थे; लेकिन हमारे घावों पर पट्टी बांधने वाला कोई नहीं मिला, जो भीषण गर्मी से सूज गए थे; और जैसा कि मैंने कहा, वे दोनों मर गए। मोती को हमने कभी नहीं देखा, लेकिन वह भी मर गया होगा, क्योंकि उसके सिर का घाव मस्तिष्क तक पहुँच गया था, और वह कभी बोल नहीं पाया। उसका भाग्य हमारे मुकाबले कहीं बेहतर था!'
मैं जगह-जगह भटकता रहा, दिन में कुछ कदम ही चलता रहा। मुझे भोजन मिला, और मेरी दुआएं उन लोगों पर हैं जिन्होंने पैगंबर के खातिर मुझे भोजन दिया। मैंने जो कष्ट सहे हैं, उनका वर्णन मैं नहीं कर सकता; लेकिन अब मैं फिर से आपके साथ हूँ, और आपकी दया ने सब कुछ मेरी स्मृति से मिटा दिया है। मैं आपके साथ जिऊंगा और मरूंगा, यदि आप अपने वफादार दास को, जो अब आपके लिए केवल एक बोझ है, पर्याप्त भोजन प्रदान करेंगे।
उसकी कहानी सुनकर मैं बहुत दुखी हुआ। मैंने उस बेचारे की देखभाल की और उसके घाव भर गए, लेकिन उसके बाद वह कभी सिर उठाकर नहीं खड़ा हो पाया। साल खत्म होने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई, मुझे लगता है शर्म और अपनी बेबसी के एहसास के कारण।

अध्याय 39

मनुष्य अपने भीतर क्या-क्या छिपा सकता है?
हालांकि बाहरी तौर पर वह देवदूत जैसा दिखता है।
शेक्सपियर

जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया है, साहब, तीन साल निष्क्रियता में बीत गए। मेरे पिता और मैं राजा के बहुत प्रिय थे, कम से कम हमें ऐसा ही लगता था। राजा ने हमारी रक्षा की और हम पर कृपा बरसाई। हमारा राजस्व का काम बढ़ गया था, अब हमारे पास एक बड़े भूभाग का प्रबंधन था, और मुझे विश्वास है कि हमने प्रजा और उनके राजा दोनों को संतुष्ट किया। राजस्व कभी बकाया नहीं रहा; और देश के दूर-दराज के हिस्सों से कई लोग हमारी सौम्य और न्यायपूर्ण शासन शैली के बारे में सुनकर हमारे गांवों में आकर बस गए। राजस्व संग्राहक के रूप में हमारे विशेषाधिकारों से अच्छी आय होती थी, और हम सुखी और शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। फिर भी मेरे मन में एक बेचैनी थी; मैंने विभिन्न दिशाओं में ठगों के विभिन्न गिरोहों की सफलताओं के बारे में सुना था: लोग आकर अपने कारनामों का बखान करते थे, और फिर से मेरे मन में अपने वीर साथियों का नेतृत्व करने और कुछ समय के लिए देश में आतंक फैलाने की लालसा जाग उठी।

यह सच है कि मैंने सर्वोच्च पद प्राप्त कर लिया था; मेरी प्रसिद्धि थी; ठगों का कोई भी जमादार या सूबेदार मेरे कारनामों की बराबरी नहीं कर सकता था; लेकिन मैंने व्यर्थ ही सोचा कि अभी और भी बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है, और मुझे बस एक अभियान की योजना बनानी है, जिसमें कई वर्षों से एकत्रित हुए ठगों की संख्या से कहीं अधिक ठग शामिल हो जाएंगे। जैसा कि आप आगे सुनेंगे, इसमें मुझे निराशा नहीं हुई। मैंने पहले भी आपको गणेश जमादार का नाम बताया है; जब वह यात्रा पर नहीं होते थे, तो हमेशा हमारे साथ रहते थे, हमारी शांत और सम्मानजनक जीवनशैली से ईर्ष्या करते थे, जिसे वे किसी भी कीमत पर हासिल नहीं कर सके, हालांकि उन्होंने हर संभव प्रयास किया। उन्होंने राजा के पूरे दरबार को, यहाँ तक कि स्वयं राजा को भी, नौकरी दिलाने के लिए रिश्वत दी; लेकिन उनके चेहरे में कुछ ऐसा कठोर और डरावना भाव था, और उनके व्यवहार इतने असभ्य थे कि वे अपनी इस प्रबल इच्छा को पूरा नहीं कर पाए।

वह हताशा में हमारे पास आया और राजा और उसके अधिकारियों के आचरण की कड़ी निंदा करने के बाद बोला कि उसने फिर से यात्रा पर निकलने का निश्चय कर लिया है, क्योंकि वहीं उसे काम और मनोरंजन मिलता है। उसने मुझे अपने साथ चलने के लिए प्रेरित किया और हमें मिलने वाले धन और गौरव का विस्तृत वर्णन किया; और मेरे कई संकोचों और आपत्तियों के बाद, अंततः मैं सहमत हो गया। उस क्षेत्र के सभी ठगों को सूचित किया गया कि आगामी दशहरा के बाद एक विशाल अभियान चलाया जाएगा।

अज़ीमा को मेरी अस्थायी अनुपस्थिति की आदत हो गई थी, इसलिए मेरे साथ बिताए शांतिपूर्ण समय के बाद, अब वह मेरे जाने का विरोध नहीं करती थी, जैसा कि वह पहले करती थी। उसे लगता था कि किसी व्यापारिक

सौदे के कारण मैं अपने वतन से दूर जा रहा हूँ, और जैसा कि आप जानते होंगे, मैंने उसे इस भ्रम से मुक्त नहीं किया।

मेरे अधीन पुनः सेवा करने की संभावना से प्रसन्न होकर, मेरे सभी पुराने साथी और कई अन्य लोग झालोन से कुछ दूरी पर स्थित मिलन स्थल पर उमड़ पड़े। गणेश के सौ से अधिक अनुयायी थे; और अंततः, दशहरा के दिन, तीन सौ से अधिक ठगों की उपस्थिति में पारंपरिक समारोह संपन्न हुए, जिनके नेतृत्व में इतने कुशल और अनुभवी ठगों का समूह पहले कभी एकत्रित नहीं हुआ था। मुझे अपने दल पर गर्व था; और मेरे पिता, जो मेरे साथ मिलन स्थल पर आए थे, उनके भीतर का पुराना जोश फिर से जागृत हो गया। मैंने उनसे हमारे साथ चलने का आग्रह किया, और वे मान गए।

कुछ लोग एक नए मार्ग की खोज करने और राजपूताना होते हुए गुजरात में प्रवेश करने के पक्ष में थे। इस प्रश्न पर आम सभा में विस्तार से चर्चा हुई, और नए मार्ग तथा सागर और जबलपुर होते हुए नागपुर जाने वाले हमारे पुराने मार्ग के बीच मतभेद होने के कारण, मामले को शकुन-शकुनों के निर्णय पर छोड़ दिया गया। जैसा कि मैंने पहले बताया है, शकुन-शकुनों से परामर्श लिया गया; और चूंकि शकुन-शकुनों ने स्पष्ट रूप से दक्षिण दिशा की ओर इशारा किया, इसलिए इस विषय पर कोई संदेह नहीं रह गया, और हम फिर से अपनी पुरानी, परिचित दिशा में आगे बढ़ गए, क्योंकि हममें से कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जो उस मार्ग के हर कदम से और रास्ते में आने वाले किसी भी व्यक्ति को नष्ट करने के सर्वोत्तम स्थानों से परिचित न हो।

हम सागर तक लगभग पहुँच चुके थे, हमारी बड़ी सेना को देखते हुए हमें कुछ खास सफलता नहीं मिली थी, हमने केवल चौदह यात्रियों को मारा था और बहुत कम लूट का माल मिला था; तभी एक रात, जब मेरे पिता और मैं, कुछ अन्य लोगों के साथ, अपने छोटे से तंबू में बैठे थे, तो हमने एकारेआ की आवाज़ सुनी— जो ठगों के लिए सबसे भयानक अपशकुन मानी जाती है। एकारेआ सियार की छोटी, तीखी भौंक या पुकार होती है, जो रात के पहले पहर में सुनाई देती है: अपने आप में यह आवाज़ विशेष रूप से उदास और डरावनी होती है, लेकिन ठगों के लिए यह खौफ की आवाज़ होती है। पल भर में सारी बातचीत बंद हो गई, और हम सब घबराहट और डर से एक-दूसरे को देखने लगे। कोई नहीं बोला, हम सब ध्यान से सुन रहे थे; कहीं यह आवाज़ दोबारा न आ जाए, जो पहले से भी बदतर होगी। और ऐसा ही हुआ; फिर से वही तीखी, छोटी भौंक सुनाई दी, और सोचने-समझने का समय ही नहीं था: सब अपने पैरों पर खड़े हो गए।

मेरे पिता ने कहा, 'हमें तुरंत लौटना होगा। भवानी में हालात ठीक नहीं हैं, या फिर खतरा मंडरा रहा है; किसी भी हालत में आगे जाना नामुमकिन है, क्योंकि तुमने ध्यान नहीं दिया कि आवाज ठीक उसी दिशा से आ रही थी जहाँ से कल हमें मार्च करना है?'

सभी इस बात पर सहमत थे कि ऐसा हुआ था, और सभी लौटने के लिए एकमत थे। फिर भी मैं यह समझ नहीं पा रहा था कि एक सियार की आवाज़ से तीन सौ लोगों का इरादा कैसे बदल गया, और मैंने यह कहने का साहस किया कि मुझे यकीन है कि यह कोई गलती थी, और अगर गलती नहीं भी थी, तो भी हमें आगे बढ़ना चाहिए, क्योंकि शुरुआत में शगुन बहुत शुभ थे। 'क्यों!' मैंने अपने पिता से कहा, 'क्या ऐसा नहीं था? क्या हमने

विधि के अनुसार हर सातवें दिन कुल्हाड़ी की पूजा नहीं की है? क्या हमने हर यात्री की मृत्यु पर सभी आवश्यक रस्में नहीं निभाई हैं?'

'यह सब सच है,' मेरे पिता ने कहा; 'पर आगे बढ़ने का सोचना मूर्खता है। नासमझ लड़के! तुम्हारी किस्मत अच्छी है और तुम्हें जो उत्तम सलाह मिली है, उसी के चलते तुमने कभी कोई असफलता नहीं देखी; लेकिन शकुनों को नज़रअंदाज़ करने से सावधान रहो—यह एक दिन तुम्हारा विनाश कर देगा। इस मामले में भवानी की योजनाएँ रहस्यमय हैं, और उनकी आज्ञा का पालन करना ही होगा!'

अन्य गुंडों ने भी एकारिया की आवाज सुनी थी, और कई लोग शोर मचाते हुए तंबू में आ गए, और या तो उन्हें तितर-बितर होने की अनुमति देने या उन्हें वापस झालोन ले जाने की गुहार लगाने लगे।

मेरे शब्द व्यर्थ होते, क्योंकि पूरा समूह अंधविश्वास से ग्रस्त प्रतीत हो रहा था; इसलिए मैं चुप रहा। हमारा शिविर तुरंत हटा दिया गया, और देर रात होने के बावजूद, हम उसी रास्ते पर कुछ कदम पीछे हट गए जिससे हम आए थे; हमें कोई शुभ संकेत नहीं मिला, और हम निराश, थके-हारे और हतोत्साहित होकर झालोन लौट गए।

एक महीना आलस्य में बीत गया; लेकिन फिर से यात्रा पर निकलने का निश्चय कर लेने के बाद, मैं पीछे हटने वाला नहीं था, और मैंने अपने आदमियों को फिर से इकट्ठा किया और शगुन देखने लगा। शगुन अनुकूल थे, और मैंने भवानी से दिल से प्रार्थना की कि वे हमें फिर से किसी निष्फल अभियान में न फंसाएं। शगुन ने पश्चिम दिशा की ओर इशारा किया, और हम जानते थे कि बंबई और इंदौर के बीच, और वास्तव में मालवा के सभी हिस्सों में, बड़े खजाने लगातार आते-जाते रहते थे। जैसा कि आपने सुना है, हमने पहले उस क्षेत्र में अब तक का सबसे बड़ा खजाना लूटा था, और मुझे उम्मीद थी कि इस बार भी वैसा ही खजाना मिलेगा। तदनुसार, हम अपना घर छोड़कर निकल पड़े—एक सौ बीस ठग मेरे और पीर खान के नेतृत्व में, जो अभी भी मेरे साथ था। गणेश किसी दूसरी दिशा में चले गए थे—मुझे नहीं पता था कि कहाँ; उनकी उपस्थिति मुझे हमेशा अप्रिय लगती थी; क्यों, मैं बता नहीं सकता था, और मैं उनके प्रति अपनी भावनाओं को मुश्किल से ही छिपा सकता था।

मेरे पिता के लिए यह यात्रा बहुत लंबी थी, इसलिए वे हमारे गाँव में ही रुक गए। साहब, बंबई जाते समय हमें कोई उल्लेखनीय घटना नहीं मिली, क्योंकि हम लूटपाट के इरादे से वहाँ जाने का निश्चय कर चुके थे; इसके अलावा, मैंने बंबई के महत्व के बारे में बहुत सुना था, और मुझे समुद्र और फिरंगी लोगों के जहाजों को देखने की उत्सुकता थी, जो अपने दूर देश से दुर्गम जलमार्गों से होकर आते थे। लेकिन जब मैं कहता हूँ कि हमें कोई विशेष घटना नहीं मिली या कोई उल्लेखनीय घटना नहीं मिली, तो यह मत सोचिए कि हम निष्क्रिय थे। हमारे हाथों इकत्तीस यात्री मारे गए; कई लोग बच निकले, क्योंकि शगुन उनके विनाश के विरुद्ध थे; और अंत में, हम लगभग चार हजार रुपये की लूट के साथ बंबई पहुँचे—जो हमें सम्मानजनक जीवन जीने के लिए पर्याप्त था। बंबई में हमने किले के बाहर स्थित बड़े बाज़ार में डेरा डाला; और यद्यपि पकड़े जाने के खतरे के कारण हम एक साथ नहीं रह सकते थे, फिर भी हमारे बीच निरंतर संपर्क बना रहा, और हर कोई किसी भी दिशा में

तुरंत निकलने के लिए तैयार रहता था। मैंने एक मिलन स्थल भी निर्धारित किया था, तन्नाह शहर, जो महाद्वीप के करीब होने के कारण एक ऐसा स्थान है जहां यात्री पार करने से पहले बड़ी संख्या में एकत्रित होते हैं।
मैंने समुद्र देखा! मैं प्रतिदिन उसके किनारे जाता और उसकी भव्यता को निहारता। मैं किले के सामने मैदान की घास पर लेटकर घंटों एक स्वप्निल आनंद में बिताता, उसके बदलते स्वरूप को निहारता रहता—जैसे कोई सुंदर स्त्री, कभी मुस्कुराती हुई, तो कभी प्रेम की भावनाओं से व्याकुल—या उसकी नीरस और उदास गर्जना सुनता, जैसे एक के बाद एक लहरें अपनी चोटी झुकाती और सफेद रेत पर चमकते झाग में बिखर जातीं।
हमारे आगमन के लगभग सातवें दिन, मैं इसी तरह लेटा हुआ था, अपने निष्क्रिय जीवन पर चिंतन कर रहा था, और लगभग अगले दिन प्रस्थान करने का निश्चय कर चुका था, तभी एक सभ्य दिखने वाला व्यक्ति मेरे पास आया।
'सलाम, अलैकुम!' उसने कहा; 'आप स्पष्ट रूप से अजनबी हैं, क्योंकि आपके पहनावे और हावभाव से लगता है कि आप हिंदुस्तान के निवासी हैं। मैंने आपको दो दिनों से इस स्थान पर आते और समुद्र को निहारते देखा है; क्या आपने इसे पहले कभी नहीं देखा?'
'बिल्कुल नहीं,' मैंने उत्तर दिया; 'जैसा कि आपने कहा, मेरा घर सुदूर अंतर्देशीय, हिंदुस्तान में है; आपने बिल्कुल सही अनुमान लगाया है: और मेरे जैसे अजनबी के लिए, यह कैसे संभव है कि मैं पानी के इस विशाल विस्तार को देखकर अचंभित न हो जाऊं, जो आकाश में विलीन होता हुआ प्रतीत होता है?'
अजनबी ने कहा, 'आपकी आवाज़ का मधुर स्वर मेरे कानों को संगीत जैसा लगता है। मैंने अपने देश (जो कि हिंदुस्तान भी है) के कई लोगों को सुना है, लेकिन किसी ने भी मुझे आपके स्वर की तरह अपने घर की याद नहीं दिलाई। क्या मैं आपके गाँव का नाम पूछ सकता हूँ?'
मैंने कहा, 'मैं पहले सिंदौस पेरगुन्ना के मुर्नाए में रहता था, लेकिन अब झालोन में रहता हूँ।'
'मुरनाए!' उस आदमी ने हैरानी से कहा; लेकिन उसने अपनी आवाज धीमी करते हुए कहा, 'अरे, मुझे अब याद आया; यह सिंधिया देश की सीमा पर है, और उसी का है।'
मैंने कहा, 'अभी नहीं; फेरिंगियों को यह संपत्ति सौंप दी गई है, और वे इस पर कब्जा रखते हैं।'
'लेकिन,' उस व्यक्ति ने विषय बदलते हुए कहा, 'आपको समुद्र देखना बहुत पसंद है; क्या आप कभी इसकी सतह पर गए हैं? क्या आपने उन जहाजों का दौरा किया है जिन्हें आपने शहर के सामने लंगर डाले देखा होगा?'
मैंने उत्तर दिया, 'नहीं, मैंने कई बार जाने का निश्चय किया, लेकिन जब मैंने उस जर्जर नाव को देखा जिसमें मुझे जाना था, तो मेरा मन घबरा गया। इसके अलावा, मैं एक अजनबी हूँ; अगर मैं उनके पास जाता तो कोई भी मुझे अपने यहाँ नहीं आने देता।'
'क्या आप मेरे साथ चलेंगे?' उस आदमी ने कहा। 'आज मेरा पूरा दिन खाली है, और मुझे आपके साथ समय बिताना अच्छा लगेगा।'

मैंने सहर्ष सहमति दी, और हम किले के बाहर समुद्र में जाने वाले एक पत्थर के घाट की ओर चल पड़े। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मेरी जान-पहचान किससे हुई थी; बंदरगाह पर काम करने वाले सभी मज़दूरों (घाट को इसी नाम से पुकारा जाता था) ने मेरे नए दोस्त का बहुत सम्मान किया; सभी ने उन्हें झुककर प्रणाम किया, और घाट पर बंधी छोटी नावों के मालिकों के बीच हमें जहाज़ तक पहुँचाने के सम्मान के लिए होड़ मच गई।

उन्होंने एक नाव चुनी और उसे धकेलते हुए हम समुद्र की गोद में पहुँच गए। मैं मानता हूँ कि मुझे डर लग रहा था; हालाँकि झालोन यमुना से ज़्यादा दूर नहीं था, मैंने वह नदी कभी नहीं देखी थी, और न ही बॉम्बे आने से पहले मैंने कभी कोई नाव देखी थी। अब जैसे ही हम पिछली लहर के शिखर से नीचे उतरते, हर अगली लहर ऐसी लग रही थी मानो वह हम पर से गुज़र जाएगी; लेकिन नाविक निडर और अनुभवी थे, और कुछ आशंकाओं के बाद मैंने अपनी स्थिति को स्वीकार कर लिया। हवा हमारे विपरीत थी, इसलिए हमने लंगर डाले कई जहाजों के चारों ओर चप्पू चलाए; और अंत में, जहाज पर मौजूद एक फिरंगी अधिकारी की अनुमति से, हम एक विशाल जहाज के किनारे पर चढ़ गए, जिसके बारे में मेरे दोस्त ने मुझे बताया कि वह एक युद्धपोत था और इंग्लैंड के राजा का था। ऊपरी हिस्से को देखने के बाद, एक नाविक को दो रुपये का छोटा सा इनाम देकर हम नीचे तोपें देखने गए। मैं उनके आकार और हर चीज़ की सटीक फिटिंग को देखकर चकित रह गया; रस्सियाँ भी कुंडली बनाकर बंधी हुई थीं, मानो बड़े-बड़े साँप सो रहे हों, और पूरा दृश्य इतना साफ-सुथरा था कि मैंने इसकी कल्पना भी नहीं की थी। लेकिन साहब, ये बातें तो आपको भली-भांति ज्ञात हैं, इसलिए मैं इन्हें छोड़ देता हूँ। अनुकूल हवा के साथ हम किनारे पर लौट आए, और जैसे ही नाविकों ने छोटी सी पाल खोली, हम उफनते पानी पर खुशी-खुशी नाचते हुए आगे बढ़ गए।

मैं अपने साथी से अलग होने ही वाला था, और मैंने एक बार फिर उसकी दयालुता के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की, तभी उसने मुझे रोक दिया।

'नहीं, मीर साहब,' उन्होंने कहा, 'मुझे आपसे और बात करनी है। अगर आप वो नहीं हैं जो मैं कभी था, और जो मैं अब भी मौका मिलते ही बन जाता हूँ, तो मैं बहुत बड़ी गलती कर रहा हूँ।'

मैंने उसे घूर कर देखा। क्या वह कोई गुंडा हो सकता है? अगर वह गुंडा नहीं था, तो वह हमारी पहचान के शब्दों को नहीं समझेगा; अगर वह गुंडा था, तो मैं सही साबित होऊंगा। मैंने ज़रा भी संकोच नहीं किया। मैंने उन्हें ध्यान से देखते हुए कहा, 'अली खान भाई सलाम!'

'सलाम अलैकुम!' उसने पुकारा। इतना ही काफी था—वह भी एक गुंडा था।

उन्होंने कहा, 'ये शब्द मैंने कई वर्षों से नहीं सुने हैं; ये मुझे मेरे बचपन के दिनों और तुपुनी जनजाति की याद दिलाते हैं।'

'तो तुमने इसे खा लिया?' मैंने कहा।

'मेरे पास है,' उस आदमी ने जवाब दिया।

'बस करो,' मैंने कहा; 'मुझे एक दोस्त मिल गया है; लेकिन तुम कौन हो, यह मुझे अभी तक नहीं पता।'

'क्या आपने कभी सोभान खान जमादार के बारे में नहीं सुना?' उसने पूछा। 'आप कहते हैं कि आप मुर्नाए से आए हैं: मुझे वहां जरूर याद किया जाता होगा?'
मैंने उत्तर दिया, 'जी हां; जो लोग आपको जानते थे, वे आपको मृत मानते थे। आप यहां कैसे हैं, और वह भी एक प्रतिष्ठित व्यक्ति?'
* शाब्दिक अर्थ है, 'मेरे भाई अली खान को नमस्कार।' यह वह पहचान का वाक्यांश है जिसके द्वारा ठग भारत के सभी हिस्सों में एक-दूसरे को पहचान दिलाते हैं।
'मैं आपको अपनी स्थिति के बारे में बाद में बताऊंगा, लेकिन फिलहाल मुझे आपसे कई सवाल पूछने हैं - और सबसे पहले, क्या मेरा अच्छा दोस्त इस्माइल जमादार जीवित है?'
मैंने कहा, 'मेरे पिताजी! निश्चित रूप से वह ठीक हैं; वह अच्छे बूढ़े व्यक्ति ने अच्छी उम्र प्राप्त कर ली है और स्वस्थ हैं।'
'शुकुर खोड़ा!' वह चिल्लाया; 'लेकिन तुमने कहा था कि वह तुम्हारा पिता था; निश्चित रूप से उसके कोई बच्चे नहीं थे—जब मैं गया था तब तो उसकी शादी भी नहीं हुई थी।'
'अहा,' मैंने कहा, 'तो शायद तब ऐसा रहा होगा, लेकिन मैं यहां खुद के बारे में बोलने के लिए मौजूद हूं।'
'और हुसैन, जो उसका और मेरा दोस्त था, क्या वह भी जीवित है?'
'अफ़सोस, नहीं; उनका निधन दो साल पहले हुआ था, वे उम्र और सम्मान से परिपूर्ण थे।' (मैंने आपको इस घटना का ज़िक्र नहीं किया है, साहब, लेकिन यह मेरे पिंडारी अभियान से लौटने के तुरंत बाद घटी थी।)
वह अपने कई पुराने दोस्तों के बारे में पूछता रहा और अंत में उसने पूछा कि मेरे साथ कितने लोग हैं।
मैंने उसे बताया, और वह उनकी संख्या देखकर कुछ आश्चर्यचकित रह गया।
“अच्छा,” उसने कहा, “आप यहाँ हैं, और अगर मैं आपके लिए कोई काम न ढूंढ पाऊं तो बड़ी मुश्किल होगी। मैंने आपको बताया है कि मैं एक ठग हूँ, और बचपन से ही ठग रहा हूँ; मेरे पिता और पूर्वज भी मुझसे पहले ठग थे। लेकिन, कई साल पहले, मैं यहाँ इंडोर के एक साहूकार के नौकर के रूप में आया था। मुझे यह जगह पसंद आई, और कुछ ही समय बाद मुझे अंग्रेजों की सेवा में सरकारी चपरासी की नौकरी मिल गई। वे मेरे प्रति दयालु और उदार रहे हैं; मैंने उनकी अच्छी सेवा की है, और धीरे-धीरे तरक्की करते हुए उस पद तक पहुँचा हूँ जो मैं अब जमादार के पद पर हूँ। मैंने ठगों के जमादार का पद क्यों छोड़ा, यह शायद आपको पता न हो?”
मैंने जवाब दिया कि मुझे नहीं पता।
'यह तुम्हारे पिता के साथ एक मूर्खतापूर्ण झगड़े का नतीजा था,' उसने कहा। 'हम एक अभियान पर थे, और मुझे लगा कि उन्होंने कुछ ज़्यादा ही सोच लिया था; हम दोनों युवा थे, जोशीले थे—हमारी तीखी बहस हुई और हम दोनों ने अपनी तलवारें निकाल लीं: वह मेरे वरिष्ठ थे, और मुझे डर था कि वह मुझे मौत की सज़ा दे देंगे। मैं भाग गया, इंदौर से साहूकार के अंगरक्षक के रूप में उनकी सेवा में शामिल हो गया, और तुम देख सकते हो कि मैं क्या हूँ। फिर भी, जब भी मेरी मुलाकात ठगों से हुई है, मैंने कभी उनका साथ नहीं छोड़ा। मैं खुद

साहसिक कारनामों में शामिल होने के लिए बहुत बूढ़ा हो चुका हूँ, लेकिन मैं युवा और फुर्तीले लोगों को उनके रास्ते में डाल देता हूँ, और इस तरह उनसे अपना संबंध बनाए रखता हूँ; यह सच है कि हिंदुस्तान के ठगों से नहीं, क्योंकि शर्म की भावना ने मुझे अब तक ऐसा करने से रोक रखा था; लेकिन चूंकि भवानी ने तुम्हें मेरे रास्ते में ला खड़ा किया है, तो तुम्हें इसका पछतावा नहीं होगा। मेरी जान-पहचान दुखुन के ठगों से रही है, और जब भी मुझे अपने कर्तव्यों से कुछ समय के लिए छुट्टी मिली, मैंने पुणे की ओर एक-दो अभियानों का नेतृत्व किया है।' लेकिन जब मैं ऐसा नहीं कर सका, तो मैंने अपने साथियों के लिए यात्रियों के समूह जुटाए, और वे सफल रहे। मुझे लूट के माल में से जो हिस्सा मिलना था, उससे मैंने उन लोगों का विश्वास जीता जो मेरे मित्र बन सकते थे; और आपका सेवक सोभान खान अपनी ईमानदारी और वफादारी के लिए साहिब-लोग में उच्च प्रतिष्ठा रखता है।

मैंने कहा, 'मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है; आपकी उपस्थिति सम्मान सुनिश्चित करती है; आपके शिष्टाचार शिष्ट हैं: और ऐसा क्यों न हो?'

बातचीत करते-करते हम उसके घर पहुँचे; वह मेरे घर से ज़्यादा दूर नहीं था; और जैसा कि उसने मुझे बाद में बताया, उसे पता चल गया था कि हम कौन हैं, और वह मेरा पीछा करते हुए जगह-जगह गया, जब तक कि उसे मुझसे छुपकर बात करने का मौका नहीं मिल गया। साहब, जैसा कि आप समझ सकते हैं, उसी समय से हम पक्के दोस्त बन गए। मैंने उसकी बदमाशी की सारी बातें (क्योंकि वह दिल से बदमाश था) बड़े चाव से सुनीं, और मैं कई बार उसके साथ उस सज्जन के दरबार में गया, जिनके साथ उसकी ज़िम्मेदारी थी। ज़ाहिर है, वह एक सम्मानित व्यक्ति था, और शांति बनाए रखने के अपने काम में वह बहुत उत्साही और सक्रिय था। फिर भी, ठग के रूप में उसके इस पेशे को निभाने के तरीके में मुझे कुछ डर सा लगता था; और जैसे-जैसे हमारी जान-पहचान गहरी होती गई, उसने मुझे अपनी योजनाएँ और कारनामे बताए। साहब, मैं आपको उनकी हद नहीं बता सकता। उसने मुझे दुखुन के जमादारों से मिलवाया, जो पुणे, नासक, शोलापुर और हैदराबाद जाने वाली सड़कों पर लूटपाट करते थे; साथ ही गुजरात के कुछ अन्य लोगों से भी मिलवाया, जो उस क्षेत्र में सक्रिय थे—लेकिन ये सभी उसके नियंत्रण में थे, और जिनसे वह बंबई के साहूकारों और व्यापारियों द्वारा विभिन्न दिशाओं में भेजे जा रहे खजाने के बारे में जानकारी देने के बदले में भारी कर वसूलता था।

मैं उसके साथ एक सप्ताह रहा था, और हमारे पास मौजूद धन तेज़ी से कम होता जा रहा था। अब क्या किया जाए? उसने मुझे हमारी ओर आने वाले खजाने की सूचना देने में सहायता करने का वादा किया था, और मैं अब तक इस उम्मीद में इंतज़ार कर रहा था कि वह अपना वादा पूरा करेगा। मैं बॉम्बे से भी ऊब चुका था; मौसम बदल रहा था, और मुझे नहीं लगता था कि बारिश शुरू होने से पहले हम झालोन पहुँच पाएँगे। इसलिए मैं उसके पास गया, और उसे साफ़-साफ़ बताया कि हमारे पास धन कम पड़ रहा है, और बॉम्बे जैसी जगह में, जहाँ मेरे आदमियों को इतने सारे प्रलोभनों का सामना करना पड़ता है, उनसे यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वे अपने पास जो कुछ भी है उसे बचा कर रखेंगे; इसलिए मैं वहाँ से निकलने के लिए उत्सुक था,

और अगर वह मुझे जल्द ही किसी लूट की उम्मीद नहीं दे सकता, तो मैं दो दिनों में निकल जाऊँगा, और रास्ते में अपनी किस्मत आजमाऊँगा।
उन्होंने कहा, 'तुम्हारे लिए मेरी योजनाएँ अभी पूरी तरह से तैयार नहीं हैं। मैंने सुना है कि इंदौर और मालवा के सबसे बड़े व्यापारियों में से एक वहाँ दो लाख रुपये से कम नहीं भेजने वाला है। मुझे पता है कि रोकुरिया (एक प्रकार का व्यापारी) किराए पर लिए गए हैं; लेकिन अभी मैं यह नहीं कह सकता कि वे हुंडी (एक प्रकार का माल) ले जा रहे हैं या पैसा। तीन दिनों में यह तय हो जाएगा, और इस बीच, चूंकि तुम्हें पैसे की ज़रूरत है, इसलिए एक हज़ार रुपये तुम्हारी सेवा में हैं, जिसे तुम झालोन पहुँचने पर तीन प्रतिशत प्रति माह ब्याज सहित मुझे चुका सकते हो। मैं अपने पुराने मित्र के पुत्र होने के नाते तुम्हारी ईमानदारी पर भरोसा करता हूँ।'
मैंने उत्तर दिया, 'मैं आपका आभारी हूँ; लेकिन पैसों की उतनी ज़रूरत नहीं है जितना मैंने कहा था। मुझे लगता है कि हर आदमी के पास लगभग बीस-तीस रुपये होंगे; लेकिन मैंने आपसे ऐसा इसलिए कहा ताकि वे इसे खर्च न कर दें। बस इतना कह दीजिए कि हम एक हफ्ते के अंदर रवाना हो सकते हैं, और मेरे आदमी सावधान रहेंगे।'
'ज़रूर,' उसने कहा, 'एक हफ्ते के भीतर; कल शाम नमाज़ के बाद मेरे पास आना, और तुम्हें अपने बुनीज के बारे में और जानकारी मिल जाएगी।'
ब्याज खाने वाला बदमाश! मैंने उससे विदा लेते हुए कहा। वह तो सच्चा मुसलमान है! अजीब बात है कि मैंने अपने पिता से उसके बारे में कभी नहीं सुना; लेकिन घर लौटकर मैं उनसे उसके बारे में पूछूंगा, और मुझे पूरा यकीन है कि मैं उसके बारे में कुछ बुराई या बदमाशी जरूर सुनूंगा। उसके पैसे का एक रुपया भी मैं हाथ नहीं लगाऊंगा, वह काफिर! एक ठग दूसरे ठग से ब्याज ले—ऐसा भला किसने सुना है! मुझे यकीन है कि वह उतना ही बुरा है जितना वह दुष्ट भुट्टेरा जिसे हमने सागर में मारा था। और मैं गलत भी नहीं था, साहब। मेरी एक दुखी जमादार से जान-पहचान हो गई जो बुनिज का इंतजार कर रहा था, उसने मुझे बताया कि वह ठगों को बेरहमी से पीटता था, उन्हें धमकी देता था कि अगर वे कभी आनाकानी करें तो उनकी शिकायत कर देगा, और उनसे दुगुना हिस्सा वसूलता था जितना उसे सड़क पर जोखिम और खतरे में हिस्सा लेने पर मिलता।
'पर,' जमादार ने कहा, 'उसके बिना काम नहीं चलता, चाहे वह हम पर कितना भी अत्याचार करे; वह सबसे कीमती लूट का माल हमारे हाथों में डाल देता है, जिसकी भनक तक हम खुद कभी नहीं लगा सकते; उसके कई ठग हैं जो उसके नौकर हैं और जिन्हें वह जानकारी हासिल करने के लिए उदारतापूर्वक रिश्वत देता है; वह सहोकरों का विश्वासपात्र है, क्योंकि वह उन्हें तस्करी में मदद करता है; वे भी उसे कभी-कभार साहिब-भाषण में मीठी बातें करने के लिए रिश्वत देते हैं। संक्षेप में, उसे उनसे और हमसे दोनों से रिश्वत मिलती है, और वह हमारी सारी कीमती लूट को बेचने का षड्यंत्र रचता है।'
'तो फिर उसकी आमदनी बहुत अधिक होगी,' मैंने कहा।

जेमादार ने कहा, 'वे हैं, और हम सभी उन्हें उसके हवाले करने से कतराते हैं; लेकिन फिर भी वह हमारी रक्षा करता है, और हम उसके बिना नहीं रह सकते।'
'क्या उसने कभी विश्वासघात किया है?' मैंने पूछा; क्योंकि, आलिया की कसम! मुझे उस बदमाश पर शक होने लगा था।
उन्होंने जवाब दिया, 'इस तरह की कुछ कहानियां तो हैं, लेकिन आम तौर पर उन पर भरोसा किया जा सकता है। फिर भी, जैसा कि मैंने कहा, अगर उन पर भरोसा न भी किया जाए, तो हम उनके बिना कुछ नहीं कर सकते; वे दुखुन के हर जमादार को जानते हैं, और अगर वे चाहें तो कल ही पूरी व्यवस्था को ध्वस्त कर सकते हैं; लेकिन ऐसा करना उनके हित में नहीं है, और हम सब उनके गुलाम हैं।'
जब पीर खान मुझसे विदा होकर चला गया, तो मैंने उससे कहा, 'तुम ऐसे ही लंबे समय तक जीवित रहो! लेकिन भाई, हम आखिरी बार यहाँ पकड़े जा रहे हैं। तुम्हारा क्या कहना है?'
पीर खान ने कहा, 'बिल्कुल; इन लोगों पर कभी भरोसा नहीं किया जा सकता; ये हर जगह, हर रूप में मौजूद हैं: ये गांवों के जमींदार और पोटैल हैं; ये फकीर और भुट्टेरा हैं; ये गूसेन, साहूकार, नौकर और मुस्तुद्दीन हैं; यहाँ तक कि झालोन का राजा भी इनमें से एक है। ये बुराई हैं, यह सच है, लेकिन इनके बिना हमारा काम नहीं चल सकता।'
मैंने कहा, 'मैंने अभी तक ऐसा नहीं किया है, और आलिया की कसम! मैं उनमें से किसी पर भी कभी भरोसा नहीं करूँगा।' 'मीर साहब, आपको कभी ऐसी ज़रूरत न पड़े।' और बातचीत वहीं रुक गई।
मैंने अपने वादे के मुताबिक जाकर देखा तो सोभान खान बेहद खुश था। उसने कहा, 'मैंने बुनीज हासिल कर ली है। क्या तुम तैयार हो?'
'मैं हूँ। आपके क्या आदेश हैं?'
'सुनो,' उसने उत्तर दिया। 'मैंने जो कहा था कि रकम दो लाख है, वह सही था। मेरी उम्मीदों के विपरीत, रकम सोने, चांदी और हीरों में है; लगभग दस हजार रुपये के नोट हैं, बस इतना ही। अब इससे पहले कि मैं तुम्हें और बताऊं, हमें सौदा करना होगा।'
मैंने चिल्लाकर कहा, 'बोलो; मैं तर्कसंगत रूप से कुछ भी देने को तैयार हूं।'
'अरे, तुम मेरे पुराने दोस्त के बेटे हो, इसलिए मैं तुम्हारे साथ वैसा व्यवहार नहीं करूँगा जैसा मैं अपने बाकी साथियों के साथ करता हूँ,' उसने कहा; 'उनसे मुझे कुल का एक तिहाई हिस्सा मिलता है, लेकिन तुमसे मैं केवल पाँचवाँ हिस्सा माँग रहा हूँ। पाँचवाँ हिस्सा बीस हज़ार रुपये होगा। क्या तुम इसे दोगे?'
'खुशी से,' मैंने कहा। 'आप मेरे वचन पर भरोसा कर सकते हैं; जैसे ही मुझे पैसे मिलेंगे और मैं झालोन पहुँचूँगा, मैं बॉम्बे में एक हुंडी खरीदकर आपको भेज दूँगा।'
'शानदार!' वह चिल्लाया; 'तुम एक ऐसे व्यक्ति हो जिसके साथ मैं लेन-देन करना पसंद करता हूँ; कोई अनावश्यक बातें नहीं, कोई चालाकी भरी सौदेबाजी नहीं, बल्कि तुम एक सैनिक की तरह बात करते हो। अब

मुझे अपनी मुहर के साथ वादा करो कि मुझे पैसा मिल जाएगा, और मैं तुम्हें पूरी योजना विस्तार से समझा दूँगा। कागज़ात तो बस औपचारिकता हैं, और मैं व्यवस्थित हूँ।'
मैंने इस पर आपत्ति जताई, और उसकी भौंहें तन गईं; मैंने इसे देखा, और तुरंत अपनी बात बदल दी: 'मुझे लिखने का सामान लाओ, और मैं इसे लिख लूंगा।'
'क्या! तुम लिखते हो? एक गुंडा लिखता है? खैर कोई बात नहीं, चूंकि तुम ऐसा कर सकते हो, तो और भी अच्छा; किसी तीसरे व्यक्ति की जरूरत नहीं पड़ेगी।'
मैंने कागज लिखा और अपनी मुहर लगाकर उसे सौंप दिया; उसने उसे सावधानीपूर्वक मोड़कर अपनी पगड़ी की तह में रख लिया।
'अब सब ठीक है, मीर साहब। यह खजाना पंद्रह रोकुर्रियों के साथ भेजा जा रहा है; उनके पास तीन ऊंट हैं, और वे सैनिकों के वेश में पुणे से इंडोर जा रहे हैं। वे कल खजाने के एक हिस्से के साथ यहाँ से रवाना हुए थे; बाकी पुणे में है: पुणे से वे नासुक जाएंगे, जहाँ आप उनसे मिलेंगे: मुझ पर भरोसा कीजिए, मेरी जानकारी बिलकुल सही है। मैं इसे भेजने वाले सहोकरों को जानता हूँ; मैंने रोकुर्रियों से बात की है; और यह सुनिश्चित करने के लिए कि उन्हें आप पर शक न हो, यहाँ फारसी और मराठा में लिखा एक पास है, जिस पर यहाँ के अंग्रेज सीमा शुल्क अधिकारियों के हस्ताक्षर और मुहर लगी है। यह आपको बनारस से हुर्रीदास नाम के एक सहोकर के लिए सामान लेकर आए व्यक्तियों के रूप में दर्शाता है, और निर्देश देता है कि आपकी वापसी पर कोई आपको परेशान न करे। सामान लाने वाले लोग अभी भी यहीं हैं, और संभवतः बरसात के अंत तक यहीं रहेंगे। उनके नेता का नाम फुतिह मोहम्मद है, इसलिए यदि आप चाहें तो आपको फुतिह मोहम्मद के रूप में ही रहना होगा;' वह भी लगभग तुम्हारी ही उम्र और शक्ल का है, इसलिए तुम उसकी नकल बेहतर तरीके से कर पाओगे। देखो, मैंने अच्छी योजना बना ली है, बाकी सब मैं तुम्हारे विवेक पर छोड़ता हूँ। नासुक के लिए अपनी पूरी कोशिश करो; वहाँ चार दिन रुको, और पाँचवें दिन तुम्हें तुम्हारा बुनिज मिल जाएगा, अगर तुम ठीक से ध्यान रखोगे। अब जाओ, अपनी तैयारियाँ करो, और भवानी तुम्हें सफलता दे। सोभान खान को याद रखना, और जितनी जल्दी हो सके लौट आना; मुझे पूरा यकीन है कि तुम्हारे लिए मुझे कोई नया काम मिल जाएगा।
मैंने कहा, 'आप मुझ पर भरोसा रख सकते हैं, खान साहब; मैं आपसे ज्यादा देर दूर नहीं रहूंगा। आपकी योजना सराहनीय है; और इंशाअल्लाह! आपके बीस हजार रुपये उतने ही सुरक्षित हैं जैसे कि वे अभी आपके पास हों।'
'अमीर अली, अपने पिता से मेरी ओर से बहुत अच्छे शब्दों में बात करना,' उन्होंने आगे कहा; 'क्या वह एक पुराने दोस्त से मिलने और अतीत के लिए मुझे माफ करने के लिए इतनी दूर आएंगे?'
मैंने कहा, 'मुझे इसकी बहुत कम उम्मीद है; वह बूढ़ा और कमजोर है, और कभी अपने गांव से बाहर नहीं निकलता; लेकिन वह आपको जरूर पत्र लिखेगा।'

'बस करो, बस करो,' खान ने कहा; 'मुझे अतीत में बहुत कुछ गलत काम करने के लिए खुद पर दोष लगाना है; लेकिन यह बहुत पहले की बात है, और वह शायद मेरे मूर्खतापूर्ण आचरण को भूल गया होगा।'
मैंने उसे छोड़ दिया, लेकिन मन ही मन ठान लिया कि बीस हज़ार रुपये में से एक कौड़ी भी देनी है या नहीं, इस बारे में मैं पूरी तरह अपने पिता की सलाह मानूंगा। 'और,' पीर खान ने बाद में कहा, 'बीस हज़ार रुपये—वह बूढ़ा बदमाश! उसे मिल जाए! अरे, मीर साहब, अगर उसने एक रुपया भी देख लिया तो हम उल्लू और गधे के भाई बन जाएंगे!'
अगली सुबह हम झालोन लौट रहे थे और हमने बंबई और तन्ना के बीच एक दिन का विश्राम किया। हमारा पास बहुत उपयोगी साबित हुआ, क्योंकि उसका सम्मान किया गया और उसका पालन किया गया; और उसके अगले दिन हम बिना किसी रुकावट के तन्ना और विभिन्न राजस्व चौकी पार कर गए।

अध्याय XL

पहला हत्याकांड। मैं मजबूत शरीर वाला हूँ, वह मुझ पर हावी नहीं हो सकता।
दूसरी हत्या। एक ऐसे लंबे-चौड़े आदमी की तरह बोल रहा है जो अपनी प्रतिष्ठा का सम्मान करता है;
आइए, काम शुरू करें?
रिचर्ड तृतीय,
अंक II, दृश्य iv

नासुक पहुंचने के चौथे दिन पीर खान चिल्लाते हुए मेरे पास आए, 'शुकुर खोदा! सूभान खान सही थे—वे आ गए हैं!'

'क्या आपको यकीन है, खान?'

'बिल्कुल,' उसने उत्तर दिया; 'उनके बारे में जो विवरण हमें मिला था, वह मेरे द्वारा देखी गई हर बात से मेल खाता है। खुद आकर देख लीजिए; वहाँ ऊँट और भेस बदले हुए लोग हैं। लेकिन अगर मैं उनसे कहीं भी मिला होता, तो मैं कसम खाकर कह सकता था कि वे रोकुरिया जनजाति के लोग हैं; उनका हावभाव और व्यवहार बिल्कुल उसी जनजाति जैसा है।'

मैंने कहा, 'बस करो, तुम धोखा नहीं खा सकते। उन्हें पता नहीं है कि हम यहाँ हैं, और हम वही करेंगे जो हमने बूरहनपुर में किया था। आदमियों को तैयार करो; हम शहर का चक्कर लगाएंगे, एक-दो चक्कर लगाएंगे, और उसी द्वार से प्रवेश करेंगे जिससे वे आए थे: फिर हम उनके साथ बाज़ार में ठहरेंगे।'

हम सब थोड़ी देर में चलने लगे, और जैसा कि मैंने योजना बनाई थी, शहर के बाहरी हिस्से का चक्कर लगाने के बाद, हम दूसरी तरफ से शहर में प्रवेश कर गए, और जल्द ही बाजार में अपने नए आवास में पहुँच गए। यात्री जल्द ही एक-दूसरे से परिचित हो जाते हैं। मैंने जो दुकान चुनी वह उनकी दुकान से सटी हुई थी, और मैंने जल्दी ही रोकुर्रियास के जमादार से जान-पहचान बना ली।

नारायण दास, यही उनका नाम था, एक लंबा और बेहद ताकतवर आदमी था; उसकी छोटी-छोटी चमकती आंखें और लंबी सीधी भौहें थीं, जिन्हें उसने अपनी पगड़ी को कनपटी पर कसकर बांधकर दोनों ओर तिरछी रेखाओं में मोड़ रखा था, जिससे उन्हें एक अनोखा रूप मिलता था: लंबी मूंछें, जो दोनों ओर मुड़ी हुई थीं, और घनी झाड़ीदार दाढ़ी; और उसका पूरा रूप-रंग यह साबित करता था कि वह एक अनुभवी रोकुरिया था, और छल और छल में माहिर था। मैंने उसके चेहरे को देखते हुए सोचा, "मुझे यहाँ एक धूर्त व्यक्ति से निपटना होगा; उसके सामने कोई साधारण बहाना नहीं चलेगा; लेकिन मुझे उसे पाना ही होगा, और हाँ, उसके दो लाख भी।" दो लाख! अगर वह खुद रूस्तम होता तो भी यह एक प्रयास के लायक होता। फिर भी उसने मुझसे जान-पहचान बनाने में देर नहीं की। हमारी औपचारिक अभिवादन की रस्म हुई, और हम सभी ने सुबह का खाना पकाकर अपने-अपने चटाइयों पर बैठने के बाद, जल्द ही हम अनौपचारिक बातचीत में मशगूल हो गए।

जब मैंने उनसे पुणे से खबर पूछी, तो उन्होंने कहा, 'बाजी राव ने तो बड़ा ही गड़बड़झाला कर दिया। कितना कायर है! अगर किरकी में लड़ाई के समय वह अपनी सेना का नेतृत्व कर लेता, तो वह फिरंगियों का सफाया कर सकता था।'

'और क्या आप चाहते हैं कि उसने ऐसा किया होता?' मैंने कहा।

'बिल्कुल; हम उनके बारे में क्या जानते हैं? जब तक वे बंबई के किले तक ही सीमित थे, तब तक सब ठीक था —और मुझे वह समय याद है जब उनके पास किले के बाहर मुश्किल से एक फुट जमीन थी—लेकिन अब, धीरे-धीरे वे आगे बढ़ते गए हैं, यहाँ तक कि उन्होंने मराठा साम्राज्य को उखाड़ फेंका है, और अब वे इसे अपने कब्जे में लेने के काफी करीब हैं।'

'लेकिन,' मैंने कहा, 'बाजी राव के पास एक अच्छी सेना है, सारा देश उनका अपना है, और निश्चित रूप से वे कुछ न कुछ करेंगे। मराठा अच्छे सैनिक हैं, और उनके साथ कई प्रतिष्ठित नेता हैं।'

'वह कुछ नहीं करेगा, मीर साहब; वह इधर-उधर भागता रहेगा, और उसकी सेना चाहे तो लड़ सकती है, लेकिन वह कभी तलवार नहीं उठाएगा। उस कायर में मक्खी के बराबर भी आत्मा नहीं है।'

"खैर, जमादार, मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; मैंने सैनिक जीवन त्याग दिया है, और मुझे खजाने और सामान की सुरक्षा करके अच्छी आजीविका मिल रही है। मैं अभी बनारस से आया हूँ, और जिस साहूकार ने मुझे काम पर रखा है, उसने और सामान मंगवाया है, जिसे मुझे उसके पास लाना है।"

'आह!' वह चिल्लाया, 'तो आप भी इसी धंधे में हैं। अगर आपके पास बहुत सारे आदमी हों तो यह अच्छा धंधा है, लेकिन अगर कम हों तो यह बेहद मुश्किल और परेशानी भरा हो जाता है। मैं अपने अनुभव से कह रहा हूँ, क्योंकि मैं खुद भी इसी धंधे में हूँ। मैं तो भाग्यशाली रहा, लेकिन मेरा बेचारा भाई बदकिस्मत था; वह यहाँ से इंडोर के बीच चोरों के हाथों मारा गया; हमें उसके बारे में बूरहानपुर से पता चला, लेकिन उसके आगे हमें उसकी कोई खबर नहीं मिली।'

'अजीब बात है!' मैंने कहा: 'मैंने सड़क पर चोरों के बारे में कभी नहीं सुना था, हालाँकि मेरी काफिला लूटने लायक होती। लेकिन अब मैं साहिब-लोग की सुरक्षा में हूँ, मुझे कोई परवाह नहीं; वे जल्द ही सारा देश अपने कब्जे में ले लेंगे, और एक साल में कोई खतरा नहीं रहेगा।'

'फिरिंगियों की सुरक्षा में! आपका क्या मतलब है? मुझे लगा आपने कहा था कि आप एक साहूकार की सेवा करते हैं।'

'जी हां,' मैंने जवाब दिया; 'लेकिन मेरी सुरक्षित वापसी सुनिश्चित करने के लिए उनके मित्र सोभान खान ने मुझे यह पास दिलवाया, जिसके बारे में उन्होंने कहा कि यह पूरे देश में मान्य होगा;' और मैंने वह दस्तावेज़ निकाला, जिसे मैंने मोम के कपड़े में सावधानीपूर्वक मोड़कर रखा था, और उन्हें दिखाया।

'आप भाग्यशाली हैं, मीर साहब, और विशेष रूप से सूभान खान को जानने के कारण, जो एक नेक और सम्माननीय व्यक्ति हैं; मैं उन्हें कई वर्षों से जानता हूँ; वे हमेशा मेरे अच्छे मित्र रहे हैं, और जब मुझे सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी, तब उन्होंने मेरे लिए बड़ी रकम की ज़मानत देकर मुझे रोज़गार दिलवाया। लेकिन आपने

कहा कि आपने सैनिक जीवन त्याग दिया है; इस मामले में आपने बुद्धिमानी दिखाई है; कम वेतन पर हर दिशा में मार्च करने और उसके लिए कठिन लड़ाई लड़ने से कहीं बेहतर है कि एक सम्मानजनक आजीविका अर्जित की जाए। आपने किसके साथ सेवा की है?'

मैंने कहा, 'तुम्हें किसी को नहीं बताना; क्योंकि जिस भी व्यक्ति ने मेरी सेवा की है, वह इसे गुप्त रखना चाहेगा, और शायद मेरे अतीत के बारे में जानकारी मेरे वर्तमान हितों के विरुद्ध हो सकती है। मैंने चीतू पिंडारी के अधीन सेवा की थी और उनके तीन हजार सर्वश्रेष्ठ घोड़ों का नेतृत्व किया था।'

'चीटू के नीचे!' जमादार चिल्लाया; 'यह तो बहुत अजीब है; और तुम मजाक नहीं कर रहे हो?'

'मैं नहीं हूँ, कसम से; अगर आपको शक है तो मैं कुछ ऐसे दस्तावेज़ ढूंढ सकता हूँ जिनसे आप इस बात को साबित कर सकें। लेकिन जैसा कि मैंने कहा, मैं किसी को बताना नहीं चाहता।'

'तुम्हें मुझसे डरने की ज़रूरत नहीं है,' उसने कहा, 'मैं रोकुरिया के जितना करीब हूँ, और तुम जानते हो कि यह कहावत मशहूर है; लेकिन तुमने ज़रूर अजीबोगरीब कारनामे और अजीबोगरीब जगहें देखी होंगी, क्योंकि कहते हैं कि वह मद्रास के लगभग पास पहुँच गया था, और फिरंगी देश को अपने पीछे रेगिस्तान बना दिया था।'

'जेमादार साहब, मुझे आपको अपने कुछ कारनामों के बारे में बताने में खुशी होगी, और शायद आपको उनमें रुचि हो, हालांकि किसी व्यक्ति के लिए अपने कारनामों के बारे में बात करना उचित नहीं है।'

नहीं, इसमें शर्मिंदा होने की कोई बात नहीं है, मीर साहब; और पिंडारी होने की बात करें तो, देश के सर्वश्रेष्ठ सैनिक उनके साथ थे; और जब नेमावुर में पहली लुभुर सेना एकत्रित हुई थी, तब वे एक वीर सेना थे।

'तो आप वहां थे?'

'हाँ, मैं था। मैं इंडोर और ओजेन से कुछ खजाना नेमावुर के सहोकरों के लिए लाया था, और मैंने अभियान की सारी तैयारियाँ देखीं; और भुगवान जानता है कि मैं उस पूरे दृश्य से इतना मुग्ध हो गया था कि अगर मुझे घोड़ा मिल जाता, तो मेरा पक्का विश्वास है कि मैं खुद पिंडारी की ओर मुड़ जाता। कहते हैं कि हर आदमी ने अपनी काठी सोने और मोतियों से भर ली थी।'

मैंने कहा, 'हम काफी भाग्यशाली थे, खासकर पहले अभियान में। अगर आप दूसरे अभियान के शुरू होने से पहले नेमावुर आ गए होते, तो आपने मेरे बारे में सुना होता; मेरी अच्छी प्रतिष्ठा थी और मेरा पद भी ऊंचा था। पहले अभियान में मैं कोई नहीं था, और चीतू का विश्वास मुझे केवल इसलिए मिला क्योंकि मैं उसके शिविर में किसी से भी बेहतर तलवारबाज था।'

'तो मैंने आपके बारे में सुना है,' उस आदमी ने कहा; 'लेकिन आप निश्चित रूप से वह सैयद अमीर अली नहीं हो सकते जो गुफ़्फ़ूर खान के बाद दूसरे स्थान पर था?'

मैंने उत्तर दिया, 'मैं वही व्यक्ति हूँ, कोई और नहीं। यह सच है कि मेरा रुतबा गिर गया है, लेकिन किसका नहीं गिरा? चीतू मर चुका है; गुफूर खान गायब हो गया है और माना जाता है कि वह हैदराबाद चला गया है; सैयद भीकू का पता नहीं कहाँ है; और शेख दुल्ला अभी भी बूरहानपुर और एलिचपुर के बीच की पहाड़ियों में

घूम रहा है, उसके सिर पर इनाम रखा गया है। मेरे बारे में कोई ज्यादा नहीं जानता था, और मुझे लगता है कि जब तक मैं शांति से रहूँगा और अपने वर्तमान काम में लगा रहूँगा, कोई मेरे बारे में नहीं पूछेगा। दूसरे हमले के बाद पिंडारी होने से मेरा मन भर गया था, और मैं जितनी जल्दी हो सके झालोन स्थित अपने घर पहुँच गया। अगर बाकी लोग समझदार होते, तो वे भी मेरी तरह अपनी सुरक्षा कर लेते।'

'हां,' जमादार ने कहा, 'चीतू का भाग्य दुखद था—वह इससे बेहतर का हकदार था: लेकिन कहते हैं कि साहिब-लोग ने उसे एक जगह की पेशकश की थी—क्या यह सच है?'

मैंने कहा, 'मैंने यही सुना है; वह मूर्ख था, उसने इसे स्वीकार नहीं किया; लेकिन इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं, उसका पूरा मन फिरंगियों को खदेड़ने की योजना में लगा हुआ था। उसे लगता था कि मराठा उन्हें हरा देंगे; और जब उन्हें पहली जीत मिल जाती, तो वह पंद्रह हजार घुड़सवारों के साथ उनसे जुड़कर एक महान सेनापति बन जाता। अगर वे सफल होते, तो मैं भी उनके पीछे जाता; लेकिन वे सफल नहीं हुए, न कभी होंगे, और मैं वही हूँ जो आप मुझे देख रहे हैं।'

उस आदमी ने कहा, 'अजीब इतिहास है, और आपने मुझे उससे कहीं अधिक बताया है जितना मैं पहले कभी नहीं जानता था। अगर पेशवा और नागपुर के राजा ने चीतू की तरह अपनी भूमिका निभाई होती, तो सब कुछ ठीक होता; लेकिन उनके बारे में सोचना बेकार है, और मुझे लगता है कि हमें अपने नए स्वामियों के प्रति अपना निर्णय लेना होगा। अब, हालांकि, मीर साहब, हम दोनों को अलग नहीं होना चाहिए। मैं कुछ खजाने के लिए इंडोर जा रहा हूँ, और आपके लिए सबसे अच्छा रास्ता उसी से होकर जाता है; मैं आपके साथ चलूँगा, क्योंकि आपका दल बड़ा है, और सच कहूँ तो, मुझे सिंधवा घाट के पास उन जंगलों से अपने दल के साथ गुजरना पसंद नहीं है। भील लोग मौजूदा अशांति का फायदा उठाकर हथियारबंद हो गए हैं। पेशवा से भागे हुए लोगों के गिरोह देश भर में हर दिशा में घूम रहे हैं, जो कुछ भी उन्हें मिलता है उसे लूट रहे हैं; और वे ज्यादा संकोची भी नहीं हैं। इसलिए, अगर आप चाहें तो हम आपसी सुरक्षा के लिए साथ रहेंगे।'

मैंने कहा, 'मुझे ऐसा करने में खुशी होगी; हालाँकि मेरे पास खोने के लिए दो-तीन हजार रुपये के अलावा कुछ नहीं है, और जो कोई भी उन्हें लेने आएगा उसे पैसों से ज्यादा मार पड़ेगी।'

'और मेरे पास तो इससे भी कम है,' उसने कहा: 'मेरे पास केवल अपने खर्चों को पूरा करने और अपने ऊंटों को खिलाने के लिए ही पर्याप्त है; लेकिन मैं लड़ाई में माहिर नहीं हूं, और न ही तुम्हारे जैसे मेरे पास घोड़े हैं, जिससे मैं खतरे से भाग सकूं।'

लेकिन लदे हुए भारी सामान से लदे काठी ने उसके शब्दों का खंडन कर दिया। मैं धोखे में नहीं आने वाला था, और मुझे उतना ही यकीन था कि वह बहुमूल्य खजाना वहीं था, जितना कि उसकी रखवाली करने वाला रोकुरिया मेरे सामने था।

कुछ देर बाद हम अलग हो गए; और जब मैं पीर खान के साथ अकेला था, तो मैंने उसे बताया कि मैंने क्या कहा था और कैसे मैंने रोकुरिया को धोखा दिया था। हम दोनों इस बात पर खूब हँसे।

'लेकिन मुझे आपकी चिंता है, मीर साहब,' उसने कहा। 'उसकी शक्ति और अपने दुबले-पतले शरीर की तुलना कीजिए। आपको अभी कोई जोखिम नहीं लेना चाहिए।'
मैं हँस पड़ा। 'उसकी शक्ति, खान!' मैंने कहा, 'उन बहुतों की शक्ति के सामने क्या कुछ है जो इससे पहले मेरे हाथों मारे जा चुके हैं? इसके अलावा, वह उस रोकुरिया का भाई है जिसे हमने बूरहानपुर के पार मारा था, और वह हर हाल में मेरा होना चाहिए। मैं इस साहसिक कार्य को हज़ारों के बदले भी नहीं छोड़ूंगा।'
पीर खान ने कहा, 'मैं आपको बताता हूँ, इंडोर से इतनी दूर उन्हें मारना ठीक नहीं होगा; आइए उन्हें शहर के जितना हो सके पास ले आएं, इससे हम अपने घर के और करीब हो जाएंगे। इस मामले से हंगामा मच जाएगा, और बेहतर होगा कि हम कोई जोखिम न लें।'
'खैर, जैसा तुम चाहो। मेरा इरादा उन्हें बूरहानपुर के पास मार डालने का था, और फिर सीधे पहाड़ियों की ओर मुड़ जाने का; ताकि कोई हमारा पीछा न कर सके।'
'अरे, और शेख दुल्ला और उसके साथियों को जोखिम में डालना, जो बाहर हैं?' पीर खान ने कहा; 'ऐसा करना बिलकुल ठीक नहीं होगा। वह हमें लूट लेगा; और जैसा कि वह हमें जानता है, वह शायद हमें भी उसी तरह मारेगा जैसे चीतू ने पकड़े गए बेचारे लोगों को मारा था।'
'अस्तफ़्फ़ुर आलिया!' मैं कांपते हुए चिल्लाया, 'भगवान न करे! नहीं, तुम्हारी योजना सबसे अच्छी है। हम कई कदम चलने से पहले ही उन्हें कस्बों से बाहर निकाल लेंगे, और फिर जब और जहाँ हम चाहें वे हमारे अपने होंगे।'
साहब, मैं अपनी यात्रा का ज़िक्र छोड़ रहा हूँ; सभी यात्राएँ एक जैसी नीरस होती हैं, धूल भरी सड़कों, झुलसा देने वाली धूप (क्योंकि रोकुर्रे लोग रात में सफ़र नहीं करते थे), खराब खाना और हर तरह की असुविधाओं का एक ही ढर्रे चलता रहता है। हमें कोई रोमांच नहीं मिला, सिवाय इसके कि अलग-अलग जगहों पर हमारी छोटी-मोटी चीज़ें चोरी हो गईं; और हम रोकुर्रे लोगों को अपने साथ डेरा डालने के लिए मनाने में पूरी तरह कामयाब रहे, क्योंकि हम अपनी पुरानी प्रथा पर अड़े रहे कि गाँवों में प्रवेश करने के बजाय बाहर रहना पसंद करते थे, जहाँ चोरों के अतिरिक्त डर के अलावा, धूल, गंदगी, गर्मी और ग्रामीणों के साथ लगातार झगड़े होते रहते थे। मेरे आदमियों ने बहुत अच्छा व्यवहार किया। उनकी बोली जाने वाली बोली से कोई नहीं बता सकता था कि वे खुद को जो बता रहे थे, उसके अलावा कुछ और थे—बनारस वाले और भोजपुर वाले: वे देखने में बिल्कुल मूर्ख उल्लुओं के झुंड जैसे लग रहे थे; लेकिन उन्होंने अपनी-अपनी भूमिका अत्यंत सावधानी और चतुराई से निभाई, जिस पर हमारे अभियान की सफलता टिकी थी।
आख़िरकार, साहब, क्या अब आप उस रोमांच को नहीं समझ सकते जो ठगों के मन में शिकार करने के दौरान उमड़ता है? क्या आप मेरी कहानी सुनकर और उसे सुनाते हुए हमारे साथ महसूस नहीं कर सकते? हम बीस दिन तक इन रोकुर्रियों के साथ रहे; हम उनसे घनिष्ठ हो गए; वे अपने किस्से सुनाते, हम अपने; शामें गाने या कहानियाँ सुनाने में बीततीं, जब तक कि हम एक-एक करके थककर अपने चटाइयों पर नहीं गिर जाते। क्या आप उस गहन रुचि को नहीं समझ सकते जिससे हम उनकी हर हरकत, बल्कि उनके मुँह से

निकले हर शब्द को देखते थे, और हमारी भयानक घबराहट को, जब कभी-कभी हमें लगता था कि हम पर शक किया जा रहा है? फिर भी हम हर मुश्किल में उनके साथ डटे रहे, एक पल के लिए भी वे हमारी नज़रों से ओझल नहीं हुए, और सबसे बढ़कर, हमने उनके मन को प्रसन्न रखा।

उनके नेता की बात करें तो, वह मुझसे बहुत प्रसन्न थे। पिंडारी के रूप में मेरे कारनामों, लूटी गई संपत्तियों, जलाए और लूटे गए शहरों के किस्से उन्हें बहुत दिलचस्प लगते थे, और मैं उन्हें प्रतिदिन नए कारनामों की कहानी सुनाता था। वह और उनके बाकी साथी भी बड़ी श्रद्धा से मेरी और पीर खान की कहानियाँ सुनते थे। धूर्त होने के बावजूद, वे दिल से ईमानदार और सरल थे, और हमारी हर बात पर आसानी से विश्वास कर लेते थे।

लेकिन उनका समय निकट आ चुका था। इंडोर पाँच कदम दूर था, और अब देरी करना न तो संभव था और न ही उचित; इसके अलावा, उनकी सुरक्षित पहुँच सुनिश्चित करने के लिए, मुझे पता था कि उन्होंने एक ही कदम में तीस मील चलने का निश्चय कर लिया था, और मेरे सैनिक इन साहसी लोगों का साथ नहीं दे सकते थे। 'चाहे कुछ भी हो जाए,' मैंने पीर खान से कहा, 'वे कल रात मरेंगे।'

समय आ गया। हम हमेशा की तरह उन्हीं भव्य इमली के पेड़ों के नीचे बैठे थे; बारी-बारी से हम अपना गीत गा रहे थे या अपने कारनामों की कहानियाँ सुना रहे थे; और अगर कोई हमें इस तरह मग्न देखता तो कौन अनुमान लगा सकता था कि आगे मृत्यु का सिलसिला शुरू होने वाला है? हर कोई अपनी बात कह रहा था, और बीच-बीच में सभा में से किसी एक के मुँह से फूटने वाली ज़ोरदार हँसी से पता चलता था कि हमारे दिल कितने हल्के और प्रसन्न थे—हम अपनी सफलता के विश्वास से, और रोकुरिया परिवार इस सोच से कि रास्ते का खतरा टल गया है, और उनका खजाना सुरक्षित रूप से अपने गंतव्य तक पहुँच जाएगा; हममें से किसी का भी चेहरा गंभीर नहीं था।

रोकुर्रियों के जमादार ने पुकारते हुए कहा, 'देखो, चाँद है; जब वह सामने पेड़ों के ऊपर आ जाएगा, तब हम आपको विदा करेंगे, हे दयालु मीर साहब; हमें आपकी संगति में सुख मिला और हम किसी भी भय या खतरे से मुक्त रहे। भगवान कृपा करें कि हम आगे भी आपकी संगति में उतनी ही सुरक्षित यात्रा कर सकें जितनी हमने की है! गाँवों के बाहर हमारी रक्षा करने में आपकी कृपा के कारण हमारा एक कौड़ी भी नहीं खोया; और हमें डेरा डालने का एक नया तरीका सिखाया गया है, जिसका हम भविष्य में पालन करेंगे। चाँद पूरी रात हमारा साथ देगा, और जब आप अपनी रात की नींद से जागेंगे तब तक हम बीस कौड़ी का फासला पार कर चुके होंगे।'

ठग अपनी-अपनी जगह पर खड़े हो चुके थे; हर रोकुरिया के साथ चार हट्टे-कट्टे आदमी थे, और मुझे आश्चर्य हुआ कि वे इस तरह एक-दूसरे से अलग कैसे हो गए। लेकिन उन्हें शक नहीं था; भला किसे हो सकता था? दूर पेड़ों के ऊपर चंद्रमा भव्यता से उदय हुआ; उसका पूर्ण, गोल और पीला गोला हमारे समूह पर एक मधुर प्रकाश बिखेर रहा था। रोकुरिया परिवार के सभी सदस्य एक साथ उठे और अपने-अपने निकट खड़े लोगों की ओर मुड़कर उन्हें विदाई का आशीर्वाद और अभिवादन दिया।

'नहीं,' मैंने कहा, 'हम इस तरह अलग नहीं हो सकते, नारायण दास; चलो दोस्तों की तरह विदा हों; मेरा आलिंगन स्वीकार करो; हम पेशे से दोस्त और भाई हैं।' हमने गले लगाया, और इससे पहले कि दूसरे मुझे प्रणाम करने के लिए आगे बढ़ते, मैंने झिरनी की: 'पान लाओ!' मैंने कहा।

बस इतना ही काफी था। जमादार मेरे ही रूमाल के नीचे गिर पड़ा, और कुछ चीखों और कराहों ने बाकी सब कुछ बता दिया—सभी मर चुके थे।

'जल्दी करो, मेरे साथियों! वही चमकीला चाँद जो इन लोगों की मदद करने वाला था, हम पर चमक रहा है; अपना काम जल्दी करो, ऊँट तैयार हैं, और कुछ ही घंटों में हम पीछा करने वालों से सुरक्षित हो जाएँगे, हालाँकि वास्तव में इस छोटे से स्थान से किसी के पकड़े जाने की आशंका नहीं है।'

शवों से कपड़े उतार दिए गए; हर व्यक्ति के ऊपर एक भारी भरकम शव था, इसके अलावा ऊंटों पर भी बहुत कुछ लादा हुआ था। हमने अपने पैसे गिनने के लिए नहीं रुके, बल्कि अंतिम संस्कार पूरा होते ही तेजी से आगे बढ़ गए; और अगले गाँव में कुछ क्षण रुककर तुपुनी लोगों के लिए शव खरीदने के बाद, सुबह हम अपनी पिछली रात के रोमांच स्थल से लगभग बीस किलोमीटर दूर पहुँच गए।

हम शाम तक रुके रहे, फिर आगे बढ़े, लेकिन इस बार एक अलग रास्ते से। इंडोर को लगभग पंद्रह किलोमीटर दाहिनी ओर छोड़कर, हमने अपना रास्ता देहलपुर नामक एक छोटे से गाँव की ओर मोड़ा। यहाँ से, ऊजेन को भी दाहिनी ओर छोड़कर, हम तेजी से आगे बढ़े। भीषण गर्मी के कारण हम हमेशा रात में ही यात्रा करते रहे। बुहादूरगढ़ और ओर्चा होते हुए हम सुरक्षित रूप से झालोन पहुँच गए। हमें केवल एक ही परेशानी हुई। होल्कर के राज्य की सीमा पर तैनात राजस्व अधिकारियों ने हमसे हमारी पहचान और हमारे पास मौजूद सामान के बारे में जानने पर जोर दिया। उनकी पूछताछ इतनी सख्त थी कि अगर मेरे पास अंग्रेजी पास न होता, तो हम संदेह के घेरे में आ जाते और गिरफ्तार हो जाते। लेकिन, सोभान खान की कृपा से, इस पर कोई सवाल नहीं उठाया गया; क्योंकि फुतिह मोहम्मद प्रथम को छोड़ दिया गया था। खजाने पर पचास रुपये का शुल्क, या कहें कि जबरन वसूली, लगाई गई और हमें एक नया पास दिया गया, जिससे हम आगे की पूछताछ और हिरासत से बच गए। खजाना देखकर मेरे पिता की खुशी का वर्णन कौन कर सकता है! बूढ़ा आदमी आनंद से झूम रहा था: उसने मुझे चूमा, गले लगाया, मुझे हर प्यार भरे नाम से पुकारा और गणेश जी के सामने, जो संयोगवश उनके साथ थे, मेरे आचरण की खूब प्रशंसा की। हालांकि, यह स्पष्ट था कि उस योग्य व्यक्ति को इससे बख्शा जा सकता था। ईर्ष्या ने उसे जकड़ रखा था, जिसे वह छुपा नहीं सका, और मुझे पूरा विश्वास है कि अगर उसमें हिम्मत होती, तो वह हमारे द्वारा प्राप्त खजाने की सूचना राजा को दे देता। सबसे पुराने ठग की स्मृति में ऐसा कोई खजाना कभी नहीं मिला था, और ठग मुझे झोरा नायक और कुडुक बनवारी के साथ रखते थे, जो भवानी के प्रसिद्ध भक्त थे, जिनके बारे में कहानियां सुनाई जाती थीं, जिन पर हमारे अधिकांश, बल्कि सभी साथी विश्वास करते थे, लेकिन मैं कभी विश्वास नहीं करता था। लेकिन मेरे लिए इतना ही काफी था। मुझे कभी हार का सामना नहीं करना पड़ा था, और मेरा पक्का मानना है कि हिंदुस्तान

का हर ठग यही सोचता था कि उसे मेरे साथ जुड़ना चाहिए ताकि वह अपने लिए इतना धन जुटा सके जिससे उसका कई वर्षों तक गुजारा हो सके।
मैं आपको बुहादुर्ग में घटी एक घटना के बारे में बताना भूल गया था। हम कस्बे के बाहर डेरा डाले हुए थे, और देर शाम हमने कुछ लोगों को अपने शिविर की ओर आते देखा, जिन्हें हमने पहले ठग समझा था।
मैंने पीर खान से कहा, 'ये कौन हो सकते हैं? ये तो ठगों जैसे दिखते हैं, जबकि अभी तो पार्टी करने का समय नहीं हुआ है।'
'शायद कोई बिछड़ी हुई टोली होगी,' उसने कहा; 'मैं जाकर देखता हूँ।'
मैंने आगे कहा, 'अगर वे बदमाश हैं और आप उन्हें जानते हैं, तो उन्हें ले आइए, लेकिन हमारे लूटे हुए माल के बारे में एक शब्द भी मत कहिए।'
'नहीं, नहीं, मैं इतना मूर्ख नहीं हूँ,' उसने हंसते हुए कहा; 'लेकिन मैं तुम्हें खबर जरूर दूंगा।'
वह गया और दल के नेता के साथ लौटा। मैंने जानबूझकर अपने छोटे से तंबू में ही रहने का फैसला किया था, ताकि अगर वे अजनबी हों तो मेरा चेहरा दिखाई न दे, और इसे पूरी तरह से छिपाने के लिए मैंने अपने मुंह और ठोड़ी पर एक रुमाल बांध लिया था।
पीर खान के साथ एक आदमी के तम्बू में प्रवेश करते ही एक कर्कश आवाज ने कहा, 'सलाम अलैकुम।'
मैंने कहा, 'स्वागत है मित्र; बैठ जाइए।' वह स्पष्ट रूप से यात्रा से थका हुआ था, और धीरे से बैठ गया।
मैंने कहा, 'आपका नाम क्या है? और आप कौन हैं?'
उस आदमी ने जवाब दिया, 'मेरा नाम, मुझे लगता है, ज्यादातर लोगों को अच्छी तरह से पता है, और वे इससे डरते हैं। मुझे लल्ल खान कहा जाता है, या आम बोलचाल में लल्लू।'
मैंने कहा, 'मैंने यह पहले कभी नहीं सुना; लेकिन आप और आपके आदमी कौन हैं?'
'ओह, हम तो स्वतंत्र व्यापारी हैं, जो अपनी ताकत का इस्तेमाल करके जो कुछ भी हासिल कर सकते हैं, उसे ले लेते हैं।'
मैंने सोचा, शायद वे कुछ भटकते हुए पिंडहारी हैं; और मैंने उनसे पूछा कि क्या वे वाकई पिंडहारी हैं।
'बिल्कुल नहीं,' उसने कहा; 'हम डाकू हैं।'
'हालात बदतर होते जा रहे हैं,' मैंने हंसते हुए कहा; 'और मुझे लगता है कि आप दिल्ली से हैं?'
'हाँ,' उसने उत्तर दिया, 'बिल्कुल; हम तुम्हें जानते हैं, भले ही तुम हमें न जानते हो। हम तुम्हारे डेरे से जानते हैं कि तुम गुंडे हो—पर हमसे डरने की कोई बात नहीं; भाई-भाई आपस में दखल नहीं देते; लूटपाट करने के हमारे तरीके अलग-अलग हैं, पर इससे क्या फर्क पड़ता है? हम आम तौर पर भाई हैं।'
'अच्छा, हम हैं; और अगर मैं आपकी मदद कर सकता हूँ, तो बताएँ।'
उसने कहा, 'बिल्कुल नहीं, बस हमें रात भर तुम्हारे बीच रहने की जगह देने के लिए; अगर तुम उसी रास्ते से नहीं जाओगे तो हम जल्दी निकल जाएंगे।'

'खान, चांद निकलने तक तुम्हारे लिए जगह और भोजन दोनों रहेंगे, लेकिन उसके बाद हम रवाना हो जाएंगे; हम उत्तर की ओर यात्रा करेंगे।'
'तो फिर कोई चारा नहीं है,' उसने जवाब दिया; 'हम आपके जाने तक यहीं रुकेंगे और बाद में आपकी ज़मीन पर कब्ज़ा कर लेंगे; हमें किसी को शक नहीं होगा।'
'और आप कहाँ जा रहे हैं?' मैंने पूछा।
उस आदमी ने कहा, 'हैदराबाद चलते हैं। इस समय डाकुओं के निकलने की किसी को आशंका नहीं होती, और पूरा रास्ता खाली रहेगा; बारिश के बाद, दशहरा के आसपास, हम नागपुर वाले रास्ते से लौटेंगे। अभी हम भोपाल और बूरहानपुर होते हुए जा रहे हैं।'
'और आपकी किस्मत?' मैंने कहा; 'क्या आपको अच्छी किस्मत मिली है?' (क्योंकि यह शब्द वे लोग समझते थे, और यह सड़क पर काम करने वाले सभी वर्गों के लोगों में आम है)।
उन्होंने कहा, 'औसत दर्जे का, न अच्छा न बुरा। हमारे कुछ प्रेम प्रसंग रहे हैं, लेकिन गर्व करने लायक कुछ नहीं।
मैंने कहा, 'अच्छा, आपने सही रास्ता चुना है; बूरहनपुर से हैदराबाद तक का रास्ता बढ़िया है, और आप सिकंदर जाह के इलाके में पहुँच जाएँगे, जहाँ राजमार्गों पर छूटे लोगों के बारे में कोई सवाल नहीं पूछता। आपको शुभकामनाएँ, और मेरा दोस्त आपके आराम का ख्याल रखेगा; मुझे माफ़ करना, क्योंकि मेरा चेहरा सूजा हुआ है और दाँत में दर्द है।'
'सलाम!' उसने विदा होते हुए कहा: 'अगर आप लौटने के बजाय जा रहे होते, तो हमें साथ में अच्छा खासा लूट का माल मिल सकता था; हम डाकू लोग कठिन काम में माहिर होते हैं।'
मैंने अपना लहजा बदल लिया था, और अगर वह मुझसे दोबारा मिलता तो मुझे पहचान पाना नामुमकिन था। मैंने ऐसा एक मकसद से किया था जो मुझे उसी समय सूझा था, जैसा कि आपको आगे पता चलेगा। मैंने इस मुलाकात के बारे में अपने पिता को बताया। मैंने कहा, 'हमें उनसे मिलते समय क्या रोक रहा है? वे लूट के माल से लदे होंगे, और आसानी से शिकार बन जाएंगे। वे बहादुर और बेपरवाह तो हैं, लेकिन उनमें अक्ल नहीं है, और वे हमें कभी पकड़ नहीं पाएंगे।'
'मुझे यह नहीं पता,' मेरे पिता ने कहा; 'वे उतने मूर्ख नहीं हैं जितना तुम सोचते हो; मैं उनके बारे में बहुत कुछ जानता हूँ, उनमें से कुछ को मार भी चुका हूँ, और वे काफी चालाक थे। उनके कई गिरोह ठगों की पहचान करके उनसे बच निकले हैं। हालाँकि, मुझे तुम्हारी योजना में कुछ भी आपत्तिजनक नहीं लगता; और वैसे भी, इससे एक नए अभियान का बहाना मिल जाएगा।'
'जी,' वहां मौजूद गणेश ने कहा, 'चलिए चलते हैं: मुझे मीर साहब का अभिनय देखने की बहुत इच्छा है। हमने उनके बारे में इतना सुना है कि भवानी की कसम, शायद मुझ जैसे बदनसीब बूढ़े ठग को भी कुछ नया सीखने को मिल जाए। क्या आप मुझे भी साथ आने देंगे?'

'ज़रूर,' मैंने कहा; 'लेकिन आपको इससे ज़्यादा कुछ नहीं पता चलेगा जितना आप पहले से जानते हैं; मैं भाग्यशाली रहा हूँ, लेकिन आप जानते हैं कि ज्ञान के प्रति मेरा दावा बहुत छोटा है, और मैंने कभी इस पर घमंड नहीं किया। मेरी समझ में, पूरी कला बस बोलने की कला में निहित है; और एक अच्छा भुट्टोटे शायद ही कभी अच्छा सोथा बन पाता है।'

'फिर भी आप दोनों ही हैं, मीर साहब,' गणेश ने शरारती मुस्कान के साथ कहा; 'और आपके सैनिक आपके पीछे मौत तक चले जाएंगे।'

मैंने कहा, 'ऐसा ही होगा; क्योंकि मैं उनके प्रति दयालु और विचारशील हूं, और उन्हें भरपूर इनाम देता हूं।'

यह बात उसे बहुत बुरी लगी; क्योंकि वह एक कठोर और दबंग व्यक्ति था, और यद्यपि उस समय के सबसे अच्छे भुट्टोटों में से एक था, यात्रियों को बहलाने-फुसलाने में माहिर नहीं था; और चूंकि वह हमेशा खुद को सोथा ही मानता था, इसलिए वह बदकिस्मती के लिए कुख्यात था; और बहुत कम लोग उसके अधीन काम करना चाहते थे। वह तीखी प्रतिक्रिया देने ही वाला था कि मेरे पिता ने उसे रोक दिया।

उसने कहा, 'उसे अकेला छोड़ दो; वह एक अभिमानी लड़का है, और हमारे बीच झगड़े से कोई लाभ नहीं होता: तुम्हें उसकी कही बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।'

'नहीं, इस्माइल,' उसने एक नाराज बच्चे के भाव से कहा, 'मुझे परवाह नहीं कि वह क्या कहता है: अहंकार का पतन अवश्य होगा, और शायद मैं इसे अपनी आँखों से देख सकूँ।'

मुझे बहुत गुस्सा आया, लेकिन और कुछ कहने का कोई फायदा नहीं था। अगर हम अकेले होते तो उसे ही इसका जवाब देना पड़ता।

तो देखिए, साहब, एक मामूली घटना से एक नए अभियान की योजना बनाई गई। हम सबने प्रार्थना की कि यह उस दिशा में पहले से नियोजित अभियान से अधिक सफल हो, और मैं स्वीकार करता हूँ कि पिछले अभियान में मिली सफलता ने शकुनों की शक्ति में मेरे विश्वास को और मजबूत किया, हालाँकि अभी तक यह पूरी तरह से स्थापित नहीं हुआ था। कहते हैं, अनुभव हमेशा महँगी कीमत पर मिलता है, और मिलने पर कड़वा होता है, और मुझे भी अपना अनुभव महँगवाना पड़ा, हालाँकि अभी वह समय नहीं आया था।

लेकिन सोभान खान कौन था? मैंने अमीर अली से कहा; और क्या तुमने उसे उसके खून की कीमत चुकाई?

अमीर अली ने कहा, "मुझे इसके बारे में ज़रा भी जानकारी नहीं है; लेकिन तुम सुनोगे।" मैंने अपने पिता से पूछा कि वह कौन था, और उसके साथ हुई अपनी सारी घटनाओं का ब्योरा दिया; जैसे ही मैंने उसका नाम लिया, उन्हें वह तुरंत याद आ गया।

'वह बदमाश!' मेरे पिता चिल्लाए; 'क्या वह इतना धनवान और सम्मानित है, एक नीच स्त्री का पुत्र? यह सोचकर ही आश्चर्य होता है कि वह ऐसी स्थिति में है, वह नीच! लेकिन आलिया के कर्म समझ से परे हैं। सुनो, मेरे बेटे, उसकी कहानी, जिसे कुछ ही शब्दों में बताया जा सकता है।'

'वह और मैं साथ-साथ जमादार थे। मुझे वह कभी पसंद नहीं था, और उसकी बदनामी थी; वह कभी अच्छा भुट्टोटे नहीं था, क्योंकि वह एकदम कायर था, लेकिन वह एक माहिर सोथा था, और उसकी मीठी बातों से उसे हमसे कहीं ज्यादा कमाई मिलती थी, जितनी हम सीधे-सादे काम से भी नहीं कमा सकते थे।'
खैर, कई साल पहले हम एक साथ आए, वो सोथा बना और मैं बाकी काम संभालता था। हमने जयपुर के पास कई यात्रियों को मार डाला था, क्योंकि हमारा गिरोह काफी बड़ा था। उनमें से दो साहूकार थे, और लूट का माल बहुत था। उसमें कुछ मोती और कीमती पत्थर भी थे; ये सब उसके दल को उनके हिस्से के रूप में दे दिए गए, और उसने कहा कि वो इन्हें बेचने के लिए इंडोर जाएगा; लेकिन मैंने उसे अलग-अलग समय पर लगभग एक हजार रुपये उधार दिए थे, जब उसके पास आदमियों को अपने अधीन काम करने के लिए प्रेरित करने के लिए पैसे नहीं थे, और मैंने उससे कुछ मोती मांगे, जो मुझे अपनी पत्नी के लिए चाहिए थे, ताकि वो मेरी उधारी के बदले में दे सके। यह एक रात की बात है, जब हमने लूट का माल बाँट लिया था; उसने कहा कि वो मुझे सुबह दे देगा, जब मैं अपनी पसंद के धागे चुन सकूँगा; और उसने इतनी आसानी से बात की कि मैं, मूर्ख होते हुए भी, उस पर कभी शक नहीं किया। उस रात वो भाग गया, और मुझे तुम्हारे इस असाधारण विवरण से पहले उसके बारे में कोई खबर नहीं मिली। उसे पैसे दे दो! मेरे पिता ने आगे कहा, 'टूटी हुई कौड़ी के बराबर भी उसे कभी कुछ नहीं मिलेगा; किसी और के मामले में मैं इसे माफ कर सकता था, लेकिन उसका व्यवहार घोर कृतघ्नता था; क्योंकि अगर मैंने उसकी सहायता और समर्थन न किया होता, तो वह उपेक्षित हो जाता और भूखा मर जाता।'
तो यही सोभान खान की दौलत का राज था; उसने अपने मोती एक-एक करके बेचे होंगे, जैसा कि उसने मुझे बताया था कि वह उनका व्यापार करता था, और रिश्वतखोरी से ही वह इस मुकाम तक पहुंचा था। बेशक, मैंने न तो उसे उसका पैसा भेजा जैसा मैंने वादा किया था, और न ही उसे यह बताने के लिए एक पत्र लिखा कि मैं झालोन में सुरक्षित पहुंच गया हूं। मैंने उसका पास भी नष्ट कर दिया, क्योंकि इससे उसकी पहचान उजागर हो सकती थी।

अध्याय XLI

राजकुमार हेनरी। जैक, कल हम पर्स कहाँ ले जाएँगे?
फाल्सटाफ। जहाँ तुम चाहो, लड़के; मैं एक बना दूँगा; मैं कुछ नहीं करूँगा।
मुझे खलनायक कहो और मुझे हैरान कर दो।
1 हेनरी चतुर्थ, भाग 1

मैंने आपको ठगों के बीच अपनी लोकप्रियता के बारे में बताया है, और जब यह पता चला कि एक नए अभियान की योजना बनाई जा रही है और वह दशहरा के बाद निकलेगा, तो इतने सारे लोगों ने अपने साथ आने की पेशकश की कि मुझे कई लोगों को अस्वीकार करना पड़ा और उनमें से उन्हीं को चुनना पड़ा जिन्हें मैं अपने अनुभव और स्वभाव से जानता था कि वे सबसे अच्छा व्यवहार करेंगे। उनमें से कुछ उत्कृष्ट संगीतकार और गायक थे। इससे पहले भी कई मौकों पर मुझे ऐसे लोगों की ज़रूरत महसूस हुई थी, ताकि मैं जिन यात्रियों से मिला था उनका मनोरंजन कर सकूँ; और ये लोग इस समय मुझे विशेष रूप से स्वीकार्य थे, क्योंकि अभियान बड़ा था; और देश पिछले कुछ वर्षों की तुलना में अधिक शांत और स्थिर था, इसलिए हमें विश्वास था कि सड़कें अपने घरों से आने-जाने वाले प्रतिष्ठित और प्रभावशाली लोगों से भरी होंगी। ताकि हमारे दल की प्रतिष्ठा और बढ़ जाए, मैंने अपने पिता से हमारे साथ चलने का अनुरोध किया, क्योंकि मुझे पूरा विश्वास था कि उनका आदरणीय रूप और सुसंस्कृत व्यवहार हमारी सभी चालाकी भरी रणनीतियों से कहीं अधिक हमारी सफलता सुनिश्चित करेगा।

मैंने राजा की उपेक्षा भी नहीं की; मैं समय-समय पर उनके दरबार में जाता था और मेरा हमेशा अत्यंत विनम्रता और सम्मान के साथ स्वागत किया जाता था, जैसा कि मैं वास्तव में योग्य था; क्योंकि मैं न केवल उनका एक अच्छा सेवक था, बल्कि कई ठग मेरे आस-पास विभिन्न गांवों में बसे हुए थे, और उनके द्वारा हमारी सुरक्षा और हमारे काम में सहयोग के लिए दिया जाने वाला राजस्व प्रति वर्ष एक अच्छी खासी रकम होती थी; और यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह समय पर दिया जाता था, क्योंकि हमारी छुपने की क्षमता मुख्य रूप से इसी पर निर्भर थी। हालाँकि, अंतिम अभियान में, मैंने लौटते समय गरीबी का बहाना बनाया था, और यद्यपि मैं अपने हिस्से से पाँच हज़ार रुपये आसानी से दे सकता था, मैंने अपने नज़ूर के रूप में बंबई में खरीदी गई दो सौ रुपये की बंदूक और रोकुर्रियों के खजाने में मिली मोतियों की एक छोटी माला भेंट करके संतोष किया; और वह संतुष्ट प्रतीत हुए; लेकिन यह केवल दिखावटी संतोष था जो असंतोष या क्रोध के हिंसक विस्फोट से पहले आता है। वह हमारा कट्टर और घातक शत्रु था, हालांकि उसने अपनी योजनाओं को मित्रता के आवरण में छिपा रखा था और धीरे-धीरे हमारे विनाश की अपनी योजनाओं को अंजाम दे रहा था।

हम निकल पड़े। हमारी तैयारियों और उनके पूरा होने के बारे में आपको बताने के लिए मेरे पास कुछ भी नया या दिलचस्प नहीं है। बेचारी अज़ीमा ने भी कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि हम क्या बनेंगे: उसके लिए इतना ही काफी था कि हर नए अभियान से उसे नए गहने और बेहतर कपड़े मिलते थे, और वह और भी ऊँचे

और आलीशान तरीके से जीवन यापन कर पाती थी। मैं अपने घर में काफी कुछ जोड़ पाया था, और अब वह उतना ही आरामदायक और विशाल था जितना मैं चाहता था। वह यह भी जानती थी कि धन-दौलत बढ़ने से वह हमारी इकलौती बेटी के लिए एक बेहतर रिश्ता ढूंढ पाएगी; और उसे अभी से ही उसके लिए शादी के प्रस्ताव मिल रहे थे, जिनमें से कुछ हर तरह से फायदेमंद थे, और ऐसे लोगों से थे जिनका हमारे पेशे से कोई संबंध नहीं था, जिससे मैं खुश था; क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता था कि एक भी दुर्भाग्य या हमारे बीच एक भी गद्दार मुझे मेरी समृद्धि से झकझोर सकता है, इसलिए मैं उसकी शादी ऐसे व्यक्ति से करना चाहता था जो उसकी रक्षा कर सके और उसे उन सभी खतरों से बचा सके जिनका सामना मुझे खुद करना पड़ रहा था। मैंने अज़ीमा से रुकने को कहा, क्योंकि (जैसा कि मैंने उसे बताया था) मेरी यात्रा निश्चित रूप से सफल होगी, और हमारे पहले से ही पर्याप्त धन में और वृद्धि होने से हम विवाह समारोह को अपनी अपेक्षाओं के अनुरूप या शायद उससे भी बढ़कर संपन्न कर सकेंगे। उसने मेरी बात सहर्ष मान ली; क्योंकि हिंदुस्तान की किसी भी महिला के लिए सबसे अधिक चिंता का विषय उसकी संतान का विवाह होता है; हालांकि शायद उसकी खुशी के बारे में मेरी चिंता नहीं है, लेकिन मुख्य बात यह है कि उसके वस्त्र सर्वोत्तम और उत्तम सामग्री के हों, उसके गहने बहुमूल्य और कीमती हों, और वह अपने नए पति के साथ जो भी सामान लेकर जाए, वह अत्यंत भव्य और टिकाऊ हो; ताकि वह कई वर्षों तक चले और उसके माता को उसके पति के परिवार की महिलाओं का स्नेह प्राप्त हो। महिलाओं के बीच किसी भी बात से ज्यादा झगड़े तब होते हैं जब कोई भी चीज साधारण सी लगे। संयुक्त परिवारों के बीच टिप्पणियाँ और आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला चलता रहता है, और इनसे जल्द ही एक ऐसी शत्रुता पनप जाती है जो कभी शांत नहीं होती। अनेक विवाह, जो शुरुआत में सुखद प्रतीत होते हैं, दुल्हन के वस्त्रों में खामियाँ पाए जाने के कारण अपने सुखद अंत में ही धूमिल हो जाते हैं, क्योंकि ये वस्त्र हमेशा दुल्हन की अपनी संपत्ति बनने से पहले उसकी महिला रिश्तेदारों को निरीक्षण के लिए सौंपे जाते हैं।

लेकिन मैं विषय से भटक रहा हूँ, और मुझे अपने कारनामों पर लौटना होगा। हम पहले की तरह झालोन से निकले, तीन सौ से अधिक ठगों का दल, मेरे पिता, गणेश, पीर खान और मैं। रास्ते में हमने बताया कि हम निज़ाम के सेवक हैं और अपनी आवधिक छुट्टी के बाद हैदराबाद में अपनी सेवा में लौट रहे हैं; यह आवश्यक था, क्योंकि इसके बिना हमारी संख्या संदेह पैदा कर सकती थी।

मैं उस पहले मामले को कभी नहीं भूलूंगा जिसे हमने अपने हाथ में लिया था; ऐसा नहीं है कि चार लोगों की मौत में कुछ उल्लेखनीय था, लेकिन इसके साथ एक दुखद परिणाम जुड़ा हुआ था, जिसने कई दिनों तक दल के मनोबल को गिराए रखा और जिससे कोई कभी उबर नहीं पाया।

पीर खान का एक भतीजा था, लगभग दस साल का एक लड़का, एक नेक छोटा बच्चा, सुंदर चेहरे वाला और अपनी उम्र से कहीं अधिक बुद्धिमान। जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, वह हम सभी का प्रिय था, और मैंने पीर खान से बार-बार विनती की थी कि मुझे उसे अपने बेटे के रूप में गोद लेने की अनुमति दें, ताकि वह मेरे खोए हुए बच्चे की जगह ले सके: लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं मानी, क्योंकि वह बच्चा मेरी प्रिय बहन का

बेटा था, जिसकी मृत्यु हो चुकी थी; लड़के के पिता की भी लगभग दो साल पहले मृत्यु हो गई थी, और पीर खान उसे अपने घर ले आए थे और उसे अपने बेटे की तरह प्यार करते थे।

वह छोटा सा साथी एक फुर्तीले टट्टू पर सवार था, जो मैंने उसे दिया था। वह हमेशा दल के आगे रहता था और घुड़सवारी के अपने नक़ल करतबों और अपनी बुद्धिमत्तापूर्ण बातों से हमारा मनोरंजन करता था। उसे कभी पीछे नहीं रखा जा सकता था। और जब वह समय आया जब उन चारों आदमियों को अपनी मौत का सामना करना था, तो हमने उसे पीछे आने वालों के हवाले कर दिया था और सख्त हिदायत दी थी कि किसी भी हालत में उसे हमारे पीछे आने की इजाज़त न दी जाए। पीर खान ने भी उसे इन लोगों के साथ रहने के लिए कहा था, क्योंकि वह कुछ दूरी पर स्थित एक गाँव की ओर जा रहा था, और उसने आज्ञापालन का वादा किया था। फिर भी हमारी सारी सावधानियां व्यर्थ गईं; भला भला कैसे, जब आगे जो होना था वह स्पष्ट रूप से उसके भाग्य में लिखा था?

मैंने अभी झिरनी दी ही थी कि चारों बेचारे आदमी मौत की पीड़ा से तड़प रहे थे, उनमें से एक चीख भी रहा था, तभी, हे आलिया! तभी अचानक आलम खान, वही लड़का जिसका मैंने ज़िक्र किया था, घोड़े पर सवार होकर आता हुआ दिखाई दिया। उसकी पहली खुशी की चीख थी कि उसने हमें पकड़ लिया है; लेकिन मैं कैसे बताऊं कि जब उसने देखा कि क्या हो रहा है, तो उसके चेहरे पर तुरंत जो खौफ छा गया, उसका वर्णन कैसे करूँ! उसकी आँखें एक जगह टिक गईं और चौड़ी खुल गईं, उसकी जीभ मुँह से चिपक गई, उसने एक भी आवाज़ नहीं निकाली, बस दर्द से अपने हाथ जकड़ लिए; और इससे पहले कि मैं घोड़े से उतर पाता, या पीर खान, जो काम की देखरेख कर रहा था, वह अपने टट्टू से बेहोश होकर गिर पड़ा।

जब हमने पीर खान को उठाया और उसे दिलासा देने की कोशिश की, तो मैंने उससे कहा, 'हम क्या करें? उससे बात करो; तुम्हारे एक शब्द से शायद वह जाग जाए।'

'मेरे बच्चे, मेरे बच्चे!' पीर खान ने भय और पीड़ा से चीखते हुए कहा; 'अरे, मुझसे बात करो! बस एक शब्द बोलो; तुम अपने माता-पिता को मार रहे हो। हे आलिया!' उसने हाथ आसमान की ओर उठाते हुए कहा, 'हे दयालु पैगंबर, कृपा करो कि यह बेहोशी दूर हो जाए और वह बोल सके; हे दयालु पैगंबर! अगर तुम मेरी प्रार्थना स्वीकार कर लो, तो मैं तुम्हारे नाम पर सौ फकीरों को भोजन कराऊंगा।' लेकिन इसका कोई फायदा नहीं हुआ; बेचारा लड़का बेसुध पड़ा था, हालांकि उसकी आंखें टकटकी लगाए घूर रही थीं, और वह एक शब्द भी नहीं बोल पा रहा था। ठग भी लाश को छोड़कर हमारे चारों ओर जमा हो गए थे। पास ही एक छोटी नदी थी, जिसमें भील पकाया गया था; मुझे पानी की याद आई और मैंने एक आदमी को पानी लाने के लिए भेजा। पानी लाया गया और मैंने उसके मुंह में डाला। 'वह होश में आ गया, उसके होंठ हिले!' पीर खान ने खुशी से चिल्लाते हुए कहा, 'वह बोल रहा है!'

और उस बेचारे लड़के ने सच में बात की।

'मैं कहाँ हूँ, चाचाजी?' उसने धीमी आवाज़ में कहा। 'मैं कहाँ हूँ? मैंने क्या देखा है?'

और उसने अपने हाथों से अपनी आँखों को ढक लिया।

'कुछ नहीं, कुछ नहीं,' उसके चाचा चिल्लाए; 'तुम अपने टट्टू से गिर गए हो, बस इतना ही; तुम्हें इतनी तेज़ी से सवारी नहीं करनी चाहिए थी, मेरे बच्चे; तुम मारे भी जा सकते थे।'
'नहीं, नहीं,' लड़के ने कहा; 'मैं नहीं गिरा। मैंने देखा—आलिया, मुझे बचाओ! मुझे बचाओ, चाचा! ओह, उनकी आँखों और चेहरों को देखो—वे वहाँ पड़े हैं—ओह, मुझे मार डालो, मैं इसे सहन नहीं कर सकता!—मैं मर जाऊँगा।'
बेचारा बच्चा! उसने फिर से उनके चेहरे देख लिए थे; हमने कभी मृतकों के बारे में सोचा ही नहीं था; एक शव हमारे पास ही पड़ा था, विकृत चेहरे भयानक रूप से मुस्कुरा रहे थे, और वह एक किनारे से टकराकर गिर गया था, जिससे उसने उसे आधा सीधा बैठे हुए देखा—एक बच्चे के लिए यह एक भयावह दृश्य था।
'इसे ले जाओ, इसे ले जाओ!' वह अपनी शिशु जैसी आवाज में चिल्लाया। 'मैं मर जाऊंगा—ओह, मुझे दफना दो! मैं उस चेहरे और आंखों को कभी नहीं भूलूंगा; वे हमेशा मेरे सामने रहेंगी!'
'इन्हें यहाँ से भगाओ!' मैं चिल्लाया; और जैसे ही मैं बच्चे की ओर मुड़ा, वह सड़क की रेत में मुंह के बल गिर पड़ा था और खुद को उसमें छिपाने की कोशिश कर रहा था—वह तेज ऐंठन से तड़प रहा था।
'आलिया! आलिया! मैं क्या करूँ?' पीर खान रो पड़ा। 'ओह, मीर साहब, अपनी आत्मा की कसम, अपनी माँ की इज्जत की कसम, कुछ कीजिए। उस बच्चे को बचा लीजिए, और मैं जीवन भर आपका दास रहूँगा; मैं घुटनों के बल आपकी सेवा करूँगा; मैं आपका सेवक बनूँगा।'
मैंने कहा, 'क्या किया जा सकता है?' 'हम बस इतना ही कर सकते हैं कि उसके साथ रहें और जब दौरा शांत हो जाए तो उसे दिलासा दें। वह जल्द ही ठीक हो जाएगा और सब कुछ भूल जाएगा।'
बेचारा लड़का, वह अपनी ऐंठन में कैसे तड़प रहा था! वह ठीक से बोल नहीं पा रहा था, उसके मुँह से झाग निकल रहा था, उसके होंठ पीले पड़ गए थे और सिकुड़ गए थे; जब उसने आँखें खोलीं तो ऐसा लग रहा था जैसे वे उसके सिर में धँसी हुई हों। मैंने पहले कभी ऐसा आतंक नहीं देखा था, और न ही मैं सोच सकता था कि इसका किसी पर इतना गहरा असर हो सकता है।
हम उसे नदी के किनारे ले गए, और उसका चेहरा धोकर और उसके मुंह में पानी भरकर, वह थोड़ा होश में आया। उसने अभी-अभी आँखें खोली ही थीं कि एक दुर्भाग्यपूर्ण संयोग से उसकी नज़र मरे हुए लोगों की पगड़ी पर पड़ी, जिससे मैं उसका चेहरा पोंछ रहा था। इसका उस पर तुरंत असर हुआ; उसकी चीखें फिर से फूट पड़ीं, उसे कोई शांत नहीं कर पा रहा था, और हम उसके बारे में बहुत चिंतित हो गए। हमें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें; हम किसी भी मानव बस्ती से बहुत दूर थे, और अगर हम किसी बस्ती के पास भी होते तो भी हम किसी हुकीम को उसे देखने के लिए बुलाने की हिम्मत नहीं करते, क्योंकि उसकी बेतरतीब बड़बड़ाहट हमारे कारनामों को पूरी तरह उजागर कर देती। हम उस लड़के के पास इस डर से बैठे रहे कि उसकी हर तड़प और ऐंठन उसकी मौत का कारण बन जाएगी; आखिरकार हमने उसे उठाया, और उसके टट्टू पर बिठाया, और बेहोशी की हालत में उसे एक चक्कर लगवाने में सफल रहे; लेकिन इसका कोई फायदा नहीं हुआ। वह फिर अपनी अस्थायी बेहोशी से जाग गया, और हमें उसे नीचे उतारना पड़ा, और

सड़क के किनारे एक टीले पर लिटाना पड़ा, जबकि हमने उसके चेहरे पर हवा की और उसे शांत करने का प्रयास किया।
लेकिन उसकी शक्ति बहुत कम हो गई थी, उसकी कराहें धीमी होती जा रही थीं, और यद्यपि अब वह अपनी आँखें खोलकर शांति से अपने चारों ओर देख रहा था, फिर भी यह हमारे लिए स्पष्ट था कि वह कोमल फूल मुरझा गया था और उस भय के कारण तेजी से सूख रहा था जिसने उसे जकड़ रखा था। पीर खान की हालत बहुत दयनीय थी; वह बड़बड़ा रहा था, गिड़गिड़ा रहा था, प्रार्थना कर रहा था; वह उस बेचारे पीड़ित के पास घुटनों के बल बैठ गया और अपने बहते आँसुओं से उसका चेहरा भिगो दिया; लेकिन उस पर कोई दया नहीं दिखाई गई। हम दोपहर के काफी बाद तक इसी तरह बैठे रहे; कई यात्री हमारे पास से गुजरे, सभी बच्चे की पीड़ा को देखकर सहानुभूति जता रहे थे, लेकिन जाते समय उन्होंने अपना सिर हिलाया, इस दृढ़ विश्वास के साथ कि उसकी मृत्यु अवश्यंभावी है।
और उनकी मृत्यु हो गई! शाम ढलते ही पवित्र आत्मा ने पीड़ा सहते शरीर को छोड़ दिया, और हम उस निर्जन वीरान जगह में मृत शरीर के साथ अकेले रह गए।
पीर खान जब दुख से हाथ जोड़कर इधर-उधर हिलते हुए कराह रहे थे, मानो उनकी आत्मा टूट जाएगी, तब मैंने उनसे कहा, 'अब विलाप करने का कोई लाभ नहीं है। भाई, अब कोई लाभ नहीं, लड़का मर चुका है, और हमें शव को मंच तक ले जाना होगा, जो ज्यादा दूर नहीं है।'
'जैसा तुम चाहो,' उसने उत्तर दिया; 'जहाँ तक मेरा सवाल है, मेरा दिल टूट गया है; मैं अब कभी ऊपर नहीं देख पाऊँगा। वह मेरी आत्मा का जीवन था, और उसके बिना मैं क्या करूँ? मैं क्या करूँ?'
लेकिन हमने शव को उठाया, और कभी उसे उठाकर, कभी अपने घोड़ों पर आगे रखकर, शिविर तक ले गए। हमारी अनुपस्थिति सबको पता चल गई थी, लेकिन जैसा कि इसका कारण भी ज्ञात था, कोई भी ठग हमसे मिलने नहीं आया। हमने अपने दुख भरे बोझ को मेरे तंबू में रख दिया, जल्दी से एक कब्र खोदी गई, और मशाल की रोशनी में, पूरे समूह के आँसुओं और विलाप के बीच उसे दफना दिया गया, क्योंकि वह लड़का सभी का प्रिय था।
पीर खान आधी रात को मेरे पास आए और मुझे मेरी अशांत नींद से जगाया, जिसमें उस दुखद दृश्य के भयानक सपने घुलमिल गए थे। मुझे उनके आने की खुशी थी, लेकिन आगे जो हुआ उसके लिए नहीं।
'मीर साहब,' उन्होंने लंबी चुप्पी के बाद कहा, 'मैं अब वैसा नहीं रहा जैसा पहले था, और न ही कभी वैसा हो पाऊंगा; मेरा मन टूट चुका है, और मैं अब अपने पेशे के लायक नहीं रहा। मेरा भाग्य भी इसके खिलाफ है, और इस भयानक विपत्ति के बाद मैं आपके लिए किसी काम का नहीं रहूंगा; इसलिए मुझे जाने की अनुमति दीजिए। आप देखिए, मैं शांत और संयमित हूं, और जो कुछ मैं आपसे कह रहा हूं, वह आवेश या दुःख में नहीं कह रहा हूं; इसलिए मुझे जाने दीजिए। मैं अपने घर जाऊंगा, और एकांत में अपने शेष जीवन को आलिया के लिए स्वीकार्य बनाने का प्रयास करूंगा, जिसने मुझे इस पीड़ा से नवाजा है। और मुझे धरती में दफनाने में

ज्यादा समय नहीं लगेगा; मुझे लगता है कि इस आघात ने मेरी आत्मा को झकझोर दिया है, और यह मुझे कब्र तक ले जाएगा।'

मैंने देखा कि उससे बहस करना व्यर्थ था: उसके चेहरे पर निराशा स्पष्ट झलक रही थी, और किसी के भाग्य को चुनौती देना असंभव है। यह आलिया की इच्छा है, और भला कौन इसका विरोध कर सकता है? इसे अपना रास्ता खुद तय करना होगा।

मैंने कहा, 'जाओ, पीर खान; अल्लाह आपको सलामत रखे और पैगंबर मोहम्मद का आशीर्वाद आप पर बना रहे! मुझे आपके लिए बहुत दुख है—मैं हमेशा आपके साथ शोक मनाऊंगा; लेकिन अगर भविष्य में आपका मन मुझसे मिलने को प्रेरित करे, तो मैं आपकी सेवाओं का सहर्ष लाभ उठाऊंगा। हम मित्र और भाई रहे हैं, और मुझे आशा है कि वर्षों के सच्चे और आपसी स्नेह के बाद हम इसी तरह विदा हो रहे हैं।'

वह मुझे जवाब नहीं दे सका—उसने मेरे हाथ मरोड़ दिए, जबकि उसकी आँखों से बड़े-बड़े आँसू उसके मर्दाना चेहरे पर बह रहे थे: उसने मुझसे बात करने की कोशिश की, लेकिन शब्द उसके गले में अटक गए; और अंत में मेरे पैरों पर गिरकर, उसने उन्हें चूमा और मेरे घुटनों को गले लगाया: फिर वह उठा, और एक पल के लिए मुझे निहारने के बाद, दबी हुई भावनाओं के प्रभाव से भरे चेहरे के साथ, वह हमेशा के लिए मेरे सामने से चला गया—हाँ, हमेशा के लिए! जब हम झालोन लौटे तो वह मर चुका था: उसके दुख ने उसे मार डाला था!

वह मेरे लिए मेरे अन्य सभी साथियों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था, और उसकी असमय मृत्यु से मुझे गहरा दुख हुआ।

मैंने कहा कि इस घटना ने हमारे दल पर उदासी का साया डाल दिया, जो कई दिनों तक बना रहा; लेकिन धीरे-धीरे सभी लोग फिर से पहले की तरह प्रसन्न हो गए, और हमारे हंसमुख और आनंदमय शिविर में गीत, चुटकुले और कहानियां फिर से गूंजने लगीं। हमने अपने उद्देश्य के अधिक गंभीर हिस्से को भी नहीं भुलाया। जुब्बुलपुर से एक-दो कदम की दूरी पर हमें पता चला कि एक मूनशी, जो बहुत धनी बताया जा रहा था, हमसे पहले नागपुर जा रहा था, और हमने उसे पकड़ने का प्रयास किया। हमने जुब्बुलपुर से नागपुर की ओर एक कदम बढ़ाया और अब हम अपने सबसे अच्छे क्षेत्र में प्रवेश कर रहे थे; मैं इसे अपना सबसे अच्छा क्षेत्र इसलिए कह रहा हूं क्योंकि उस उजाड़ देश में बहुत कम लोग रहते थे।

हमने मूनशी को पकड़ लिया, लेकिन अगर हम लगभग तीन सौ ठग न होते, तो हम उसके इतने बड़े दल पर हमला करने में संकोच करते। उसके पास दो बड़े तंबू, घोड़े, ऊंट, पालकी, कुली और नौकर थे; और हमने इस मामले पर काफी देर तक विचार-विमर्श किया।

हालांकि, शकुनों की जांच करने पर पता चला कि वे अनुकूल हैं, इसलिए हमने अब और संकोच नहीं किया, बल्कि उस उद्देश्य को पूरा करने की योजना बनाई जिससे बहुत अधिक लूट का वादा किया गया था।

हम दो दिन तक मूनशी के पास ही डेरा डाले रहे; स्वाभाविक रूप से इससे हमारा मेल-जोल बढ़ गया: यह जानकर कि हम सम्मानित व्यक्ति हैं, उन्होंने दूसरे दिन शाम को मेरे पिता और मुझे अपने पास बुलाया, और

हम चले गए। मूनशी यूरोपियों के यहाँ कार्यरत थे; उन्होंने जनरल डोवेटन के अधीन जामा की सेना में सेवा की थी, हालाँकि हम यह पता नहीं लगा सके कि वे उस अधिकारी के सेवक थे या नहीं; लेकिन उन्होंने उनके बारे में इस तरह से बात की जिससे हमें लगा कि वे उनके सेवक थे। उन्होंने हमें बताया कि अब जब देश में शांति स्थापित हो गई है, तो उन्हें हिंदुस्तान जाने की छुट्टी मिल गई है, और वे अपनी पत्नी और बच्चे के साथ लौट रहे हैं। हमने उनके साथ एक सुखद शाम बिताई, क्योंकि वे व्यापक ज्ञान के धनी थे, और उन्होंने हमें फिरंगियों के बारे में कई किस्से और कहानियाँ सुनाईं, जिनकी उन्होंने बहुत प्रशंसा की, और उनके बारे में हमने जो कई बातें सुनी थीं, उन्हें स्पष्ट किया, और उनके प्रति हमारी कई भ्रांतियों को दूर किया। उनकी बातों से मेरा उनके प्रति सम्मान पहले से कहीं अधिक बढ़ गया; हालांकि सभी मानते थे कि वे अच्छे और बहादुर सैनिक थे, फिर भी कहा जाता था कि वे दुष्ट, व्यभिचारी और शराबी थे। मेरे एक-दो सवालों पर मूनशी बेहिसाब हँस पड़ा। मैंने एक बार उससे पूछा कि यूरोपीय लोग अपनी उंगलियों के बजाय चाकू, कांटे और चम्मच से क्यों खाते हैं, जबकि भगवान ने उन्हें उंगलियां ही दी हैं।

'जी हां,' मेरे पिता ने कहा, 'मैं बूढ़ा हो गया हूं, फिर भी मुझे आज तक इसका पता नहीं चल पाया है। हमें बताओ, क्योंकि तुम जानते हो, क्योंकि तुमने खुद उन्हें खाते हुए देखा है।'

'मुझे बताओ तुमने क्या सुना है,' मूनशी ने कहा, 'और मैं तुम्हें जवाब दूंगी।'

मैंने कहा, 'यह इतना असाधारण प्रतीत होता है कि मुझे इस पर विश्वास करना मुश्किल हो रहा है; आखिर सभी मनुष्य एक जैसे क्यों नहीं हो सकते? फिर भी, मैंने सुना है, और मुझे लगता है कि यह विश्वसनीय स्रोत से है, कि उनके नाखूनों में जहर होता है, और इसलिए वे खून निकलने का जोखिम उठाने की हिम्मत नहीं करते, और तो और, अपने भोजन को छूने का भी नहीं।'

वह कितना हँसा! मुझे लगा कि वह हँसना बंद ही नहीं करेगा; और मुझे बहुत बुरा लगा कि मेरी टिप्पणी से इतनी ज़ोरदार हँसी मच गई। तंबू के पीछे से आ रही हल्की हँसी से मुझे यह भी सुनाई दिया कि औरतें भी मेरी हँसी पर खिलखिला उठी थीं। अंत में उसने कहा,—

नहीं, नहीं, मीर साहब, यह मूर्खता है। भला किसने आपसे ऐसा झूठ बोला होगा? भले ही उनकी त्वचा सफेद और चेहरे लाल हों, क्या वे हमारे जैसे ही मांस और खून के नहीं हैं? वे चम्मच और चाकू से खाते हैं क्योंकि यह उनके देश का रिवाज है और वे अपने हाथ गंदे नहीं करना चाहते; इसके अलावा, उनकी खाना पकाने की शैली हमसे अलग है; उदाहरण के लिए, वे आधी भेड़ भूनकर खाते हैं, और वे अपने औजारों के बिना ऐसा कैसे कर सकते हैं?

मैंने कहा, 'मैं अपनी अज्ञानता स्वीकार करता हूँ, और मुझे शर्म आती है कि मैं आपसे इनके बारे में और कोई सवाल नहीं पूछ सकता, इसलिए अब से मैं यही मानूंगा कि मैंने जो कुछ भी सुना है वह सब झूठ है।' फिर भी, उसी समय मेरे मन में उनके शराब पीने के दृश्यों और 'हिप! हिप! हिप!' शब्दों के अर्थ के बारे में और अधिक जानने की तीव्र इच्छा थी, जिनके बारे में मेरा पूरा विश्वास था कि उनका कोई रहस्यमय अर्थ है।

जब हम अलग हुए तो काफी रात हो चुकी थी, लेकिन अलग होने से पहले हमने साथ यात्रा करने और शामें एक साथ बिताने का फैसला किया। यही हमारी इच्छा थी; अगर हम उसे एक-दो कदम और आगे ले जाने में कामयाब हो जाते, तो हमारी सफलता निश्चित थी, क्योंकि वहाँ के ग्रामीण हमें जानते थे, हमारे दोस्त थे, और थोड़े से पैसे के बदले अपने घरों में ही रहते और हमें मनचाहा करने देते। मैंने यह बात पहले नहीं बताई, साहब, क्योंकि आप अच्छी तरह जानते हैं कि ऐसा ही है। हम जहाँ भी जाते हैं, हमारे दोस्त होते हैं; हम जितना हो सके रिश्वत देते हैं, और देश के हर हिस्से में हमारे एजेंट हैं जो धोखेबाजों या व्यापारियों के वेश में काम करते हैं। कुछ जमींदार हमसे डरते हैं, कुछ हमें धमकाते हैं और हमसे बड़ी रकम वसूलते हैं, लेकिन वे आम तौर पर वफादार होते हैं; और क्या आपको लगता है कि उनकी मदद और मिलीभगत के बिना हम कुछ कर पाते? हम नहीं कर सकते। खासकर निज़ाम के इलाके में हमें अच्छी मदद मिलती है। कई जमींदारों के पास नियमित वेतन पर ठग होते हैं, जिन्हें वे अक्सर सड़कों पर भेजते रहते हैं: कुछ एक निश्चित राशि से ही संतुष्ट हो जाते हैं; कुछ लोग, जो हमसे इतने करीबी संबंध से डरते हैं, कभी-कभी हमें गिरफ्तार करने का नाटक करते हैं और जितना हो सके उतना वसूल लेते हैं; और चूंकि वहां किसी भी तरह की पुलिस नहीं है, इसलिए उन्हें अपने कारनामों के उजागर होने का कोई डर नहीं है। मैं खुद वहां इन मामलों के संचालन के बारे में बहुत कम जानता हूं—मेरा मतलब व्यक्तिगत अनुभव से है—लेकिन मैंने दूसरों से, और विशेष रूप से मोती से सुना है, जिसने कई वर्षों तक हुजूर के राज्य में ठगों के एक गिरोह का नेतृत्व किया था, और उसने मुझे बताया कि जब तक वह गांवों के पोटैल, जमींदारों और राजस्व अधिकारियों को अच्छी तरह से रिश्वत देता रहा, उसे कोई बाधा नहीं आई; सैकड़ों अन्य लोग भी ऐसा ही करते थे, और अपने पेशे को इतनी खुलेआम अंजाम देते थे कि वे अक्सर मारे गए लोगों के शवों को दफनाने की जहमत भी नहीं उठाते थे। आप जानते हैं कि यह सच है, साहब, इसलिए मुझे इसका उल्लेख करने की शायद ही आवश्यकता है। लेकिन अब मेरी कहानी पर आते हैं।

हम उस गाँव पहुँच गए जहाँ हम जाना चाहते थे—बिसेनी नाम का एक छोटा-सा बदहाल गाँव; लेकिन पोटाएल हमारे हित में था, और कभी-कभार बीस रुपये का उपहार, और कभी-कभार एक नई पगड़ी, हमें उसकी चुप्पी और सहयोग दिला देती थी। मैं सहयोग इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि वह अक्सर यात्रियों को ठगों के हवाले कर देता था, यह कहकर कि उसका गाँव असुरक्षित है, और उन्हें बाहर जाकर बाकी ठगों के साथ डेरा डालना चाहिए। वह अच्छी तरह जानता था कि उनका क्या अंजाम होगा; लेकिन जैसा कि मैंने कहा, उसे अपने विश्वासघात की कीमत चुकानी पड़ी।

हम बिसेनी पहुँच गए; मैंने उस भले आदमी के लिए एक सुंदर पगड़ी और कमरबंद खरीदा था, और उसके लिए कई अन्य सामान भी तैयार रखे थे, जिनमें से एक अंग्रेजी पिस्तौल थी, जिसके बारे में उसने एक गुंडे के ज़रिए मुझे संदेश भेजा था कि मैं उसके लिए खरीद लूँ। पहुँचते ही मैं गाँव में उसके पास गया, और उसके घर में ही उसके सिर पर पगड़ी बाँधी, उसे अपने तैयार किए हुए उपहार दिए, और साथ में बीस रुपये का एक पर्स भी दे दिया।

'हा!' उसने कहा, 'अब क्या, मीर साहब? आप इतने उदार होने के आदी नहीं हैं। आपको कौन सी बुनियाद है कि आप उसे मेरे गरीब घर में लेकर आए हैं, ताकि इसे पहले से भी बदतर नाम दे सकें?'
'अरे नहीं,' मैंने लापरवाही से कहा; 'आप जानते हैं कि मैं कुछ वर्षों से इस तरह नहीं रहा हूँ, और ये इस बात का सबूत हैं कि मैं आपको भूला नहीं हूँ।'
'आपकी दयालुता के लिए धन्यवाद; आपकी कृपा और बढ़े,' उसने कहा; 'लेकिन वह बदमाश, मीर साहब? आप बड़े धूर्त हैं; मैं आपको बहुत पहले से जानता हूँ। वह सामने वाले तंबुओं में कौन है? और इतने सारे ठग यहाँ क्यों जमा हो गए हैं? आप अपनी योजना मुझसे छिपा नहीं सकते।'
मैंने कहा, 'मैं ऐसा चाहता भी नहीं; लेकिन हमारे पुराने समझौते को याद रखो।'
'हाँ, हाँ,' उसने जल्दी से कहा: 'पर समय बदल गया है, और उसके साथ मेरे स्वामी भी। क्या तुम नहीं जानते कि यह देश साहिब-लोग का है?'
'तो फिर, पोटैलीजी, इससे क्या फर्क पड़ता है?' मैंने कहा; 'इससे क्या फर्क पड़ता है?'
उसने जवाब दिया, 'मुझे तो नहीं; लेकिन क्या तुमने घुड़सवारों को नहीं देखा?'
'कौन से घुड़सवार?' मैंने चिल्लाकर कहा।
'छह,' उसने कहा, 'और एक डफदार। लगता है मेरे बेचारे गाँव की चोरों के लिए बदनामी है, और उन्होंने यहाँ पहरा देने के लिए एक टुकड़ी भेजी है। आलिया हमारी मदद करो, और हमारे मुँह में रोटी पहुँचाओ!'
'और वो दुफ्फादार कैसा है?'
पोटैल ने कहा, 'वह एक हिंदू है, और एक भोजपुरी है; उसका नाम हितह सिंह है; उसके सभी आदमी भी उसी के कबीले के हैं।'
'भोजपुरी!' मैंने कहा; 'तो मैं कह सकता हूँ कि वे ठग हैं। भला कौन सा भोजपुरी कभी ईमानदार आदमी रहा है?'
'नहीं, वे गुंडे नहीं हैं, मीर साहब, क्योंकि मैंने उन्हें पासवर्ड से परख लिया है। लेकिन सच कहूँ तो, मुझे लगता है कि मेरा दोस्त हित्ताह सिंह सिर्फ़ मेरी तरह बदमाश बनने का मौका चाहता है, - आलिया मुझे माफ़ कर दे!'
मैंने कहा, 'मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है। वह कहाँ है?'
'क्या मैं उसे फोन करूं?'
'ऐसा ही करो,' मैंने कहा। 'अगर मैं उसे मना नहीं सका, तो मैं उसे धमकाऊंगा; और अगर हालात बदतर हो गए, तो तुम जानते हो कि हमारे पास तीन सौ के मुकाबले छह से भी ज़्यादा लोग हैं, और उनके पास बचने का बहुत कम मौका होगा।'
'जी हां, मीर साहब; लेकिन कृपया हिंसा न करें; मेरी प्रतिष्ठा का थोड़ा ध्यान रखें। यदि यूरोपियों को हिंसा के बारे में पता चला, तो वे मुझे मेरे स्थान से निकाल देंगे।'
'और मुझे लगता है कि तुम गुंडे बन जाओगे। लेकिन जल्दी करो, पोटैलीजी, उस आदमी को यहाँ बुलाओ।'

वह कुछ देर के लिए अनुपस्थित रहा और एक छोटे कद के, बदसूरत दिखने वाले आदमी के साथ लौटा, और मैं उसके चेहरे पर साफ देख सकता था कि वह बदमाश है। आप पुरानी कहावत तो जानते ही हैं—'चोर के दाढ़ी में तिनका तो होता ही है'। अभिवादन का आदान-प्रदान हुआ और मैं सीधे मुद्दे पर आ गया।

मैंने उनसे कहा, 'देखिए, दुफ्फादार साहब, आप समझ गए होंगे कि हम क्या हैं?' उन्होंने सहमति में सिर हिलाया। मैंने आगे कहा, 'यह अच्छा है, क्योंकि शायद आप हमारे उद्देश्य को समझ गए होंगे।'

'कुछ हद तक,' उसने कहा; 'लेकिन मैं तुम्हारे बारे में क्या जानता हूँ?'

'बिल्कुल,' मैंने कहा, 'मुझे यही तो चाहिए; तुम्हें कुछ भी जानने की ज़रूरत नहीं है, और अगर कभी पूछा भी जाए तो तुम्हारे पास बताने के लिए कुछ नहीं होगा। मेरी सलाह मानो, अपने गाँव में चुपचाप रहो, और चाहे धरती ही क्यों न उलट जाए, बाहर मत निकलना। इसके लिए तुम्हें अच्छा इनाम मिलेगा। लेकिन अगर तुमने हमें परेशान किया, तो याद रखना कि हम तीन सौ सात के मुकाबले हैं—बहुत बड़ी चुनौती है, मेरे दोस्त।'

'नहीं, मैं बुद्धिमान हूँ,' उसने कहा; 'भोजपुरी कौन नहीं है? और न ही मैं हस्तक्षेप करना चाहता हूँ। जो चाहो करो; न तो मैं और न ही मेरे आदमी एक कदम भी हिलाएँगे।'

मैंने कहा, 'क्या आप उन पर भरोसा कर सकते हैं? क्या वे आपके करीब हो सकते हैं?'

'जमादार, आप उन्हें जितना चाहें उतना करीब रख सकते हैं; लेकिन हमें भुगतान मिलना चाहिए।' 'बिल्कुल,' मैंने कहा; 'मैं इसके अलावा कुछ और नहीं चाहता: लेकिन इनाम इस बात पर निर्भर करता है कि हमें क्या मिलता है।'

उस व्यक्ति ने कहा, 'दो सौ रुपये ले लो; यह तुम्हारे लिए फायदेमंद रहेगा।'

'खैर, यह सौदा पक्का है, दुफ्फादार,' मैंने उत्तर दिया, 'और पोटैल गवाह है। और अब मैं आपको एक और सलाह देता हूँ, जो यह है कि आप कुछ भी न जानें और न ही कुछ देखें, यहाँ तक कि अगर साहब साहब भी आपसे पूछें तो। आपको बस इतना जानना है कि यात्री आए और चले गए, और आपने उनका कोई हिसाब नहीं रखा।'

'बिल्कुल,' उस व्यक्ति ने कहा; 'मैं यह बहुत पहले से जानता हूँ। मैं अपने देश में तुम्हारे लोगों के समूहों से मिला हूँ, और मुझे उनसे असंतुष्ट होने का कोई कारण नहीं है: उन्होंने हमेशा सम्माननीय पुरुषों की तरह व्यवहार किया है, और मेरे साथ किए गए अपने वादे निभाए हैं।'

तो क्या हम सहमत हैं?' मैंने कहा।

'ज़रूर: तुम हमें देख नहीं पाओगे, और मैं रात में अपने पैसे लेने तुम्हारे पास आऊंगा।'

'डफदार, अब तुम्हें आ जाना चाहिए, क्योंकि मुझे लगता है कि सब कुछ खत्म होने के बाद हम आगे बढ़ेंगे।'

'आप जाइए, पोटैली जी; मेरा सैयद साहब के साथ जाना ठीक नहीं रहेगा। आप जाइए और पैसे ले आइए।'

'तो फिर चलो,' मैंने कहा, 'हमारा समय बर्बाद हो रहा है।'

'क्या तुम जल्दी लौट आओगे?' दुफ्फादार ने मुझसे पूछा।

मैंने उत्तर दिया, 'मुझे नहीं पता; लेकिन इसकी संभावना है। वैसे भी, चूंकि यह देश हमेशा हमारे लिए अच्छा माल मुहैया कराता है, इसलिए आप हमें यहां अक्सर देखेंगे।'
उन्होंने कहा, 'जितनी बार हो उतना अच्छा; और मुझे यहाँ अपना पद बनाए रखना होगा; ऐसे अच्छे दोस्तों को खोना मुश्किल होगा। आप, पोटैलजी, समय-समय पर कुछ नीच जाति के बदमाशों को मेरे पास ला सकते हैं, जिन्हें हम चोर बताकर यहाँ भेज देंगे।'
'ज़रूर,' पोटैल ने कहा, 'इस इलाके में गोंड और ढेरों की कोई कमी नहीं है; हर कोई जानता है कि वे चोर हैं; और अगर उन्होंने अभी तक कोई डकैती नहीं की है, तो वे कभी न कभी उसमें शामिल रहे हैं, इसलिए बात एक जैसी ही है। मैं समय-समय पर आपके लिए कुछ चोर ला दूंगा जब आपको उनकी ज़रूरत होगी।'
उन्होंने कहा, 'कभी-कभार मुझे कुछ लोगों की आवश्यकता होगी, बस अपनी प्रतिष्ठा और दिखावे को बनाए रखने के लिए, और कुछ वर्षों तक हथकड़ी में रहने से उनमें से किसी को कोई नुकसान नहीं होगा: सरकार उनका ख्याल रखेगी।'
इस प्रस्ताव को जिस सहजता से रखा गया और स्वीकार किया गया, उसे देखकर मुझे ज़ोर से हंसी आ गई। लेकिन यह सच था, और मैं जानता हूँ कि यह पहले भी और अब भी रोज़मर्रा की बात है। कई पुलिस दफ़्तरों ने इसी तरह अपने अधिकारियों के बीच नाम कमाया है, और एक दोषी व्यक्ति के बदले उन्होंने दर्जनों निर्दोष लोगों को पकड़वाया है। मंग और धेरों की परवाह कौन करता है? वे तो हमेशा बदमाश और लुटेरे ही होते हैं।

अध्याय 32

महोदय, आपका रूप-रंग इतना सुंदर है कि आपको इस तरह के घिनौने काम में शामिल नहीं होना चाहिए।
फ्लेचर की प्रेम की तीर्थयात्रा
मैंने पोटैल से कहा, 'वह एक भुला आदमी (सम्माननीय व्यक्ति) है,' जब वह हमारे शिविर की ओर चल रहा था; 'वह मेरे उद्देश्य के लिए बिल्कुल उपयुक्त है।'
उसने कहा, 'वह काफी समय से आपमें से कुछ लोगों की तलाश में है। हमने इस विषय पर कभी खुलकर बात नहीं की, लेकिन उसने कई बार इस बात का इशारा किया है। और मुझे लगता है कि उसने यह पद इसलिए चुना होगा, अगर उसके पास कोई विकल्प होता, क्योंकि यहाँ उसकी मुलाकात गुंडों से होने की संभावना थी। अगर आप उसे अच्छी तनख्वाह देंगे, तो वह आपकी आर्थिक मदद करेगा।'
मैंने कहा, 'क्या आपको लगता है कि मैंने पर्याप्त दे दिया है?'
'बिल्कुल,' उसने जवाब दिया; 'मुझे नहीं लगता कि उसे उम्मीद थी कि आप इतनी बातों पर सहमत हो जाएँगे।'
मैंने कहा, 'यह निश्चित रूप से एक बड़ी रकम है, लेकिन यह पहली बार है, और पैसा सही जगह खर्च किया गया है।'
'लेकिन आप मुझे भूल गए हैं, मीर साहब: क्या मुझे आपकी कृपा का हिस्सा नहीं मिलेगा?'
'बिल्कुल, पोटैलीजी। मैं जो लाया था वह तो बस थोड़ा सा था, शिविर में आपके लिए और भी है; आपको आपका हिस्सा मिल जाएगा।'
'कितने पैसे, मीर साहब? मुझे पैसे चाहिए; मेरा किराया बकाया है और मैं बहुत परेशान हूँ।'
'तीस रुपये,' मैंने कहा।
'कृपया इसे पचास कर दीजिए। आप नहीं जानते कि मैं कितनी मुश्किल में हूँ; मैं उधार नहीं ले सकता, और आलिया ने आपको मेरी मदद के लिए भेजा है। अगर आप मुझे पैसे नहीं दे सकते, तो क्या आप मुझे उधार देंगे? और इस काम में आपको अच्छा फल मिलेगा।'
'ठीक है,' मैंने कहा, 'आपको यह मिल जाएगा, लेकिन एक शर्त पर। हम उस समय रास्ते में नहीं होने चाहिए जब कुछ लोग, जिनकी हम तलाश कर रहे हैं, इस जगह से गुजरें: वे डाकू हैं; उनके पास कुछ टैटू वाले लोग और बहुत धन-दौलत है। अगर वे किसी भी तरह से यहां से गुजरें, तो आपको हमारे पीछे एक पत्र के साथ आदमी भेजने होंगे।'
उसने उत्तर दिया, 'मैं अपने बेटों को अच्छे घोड़ों के साथ भेजूंगा; वे तुम्हें आसानी से ढूंढ लेंगे, और तुम मुझ पर भरोसा कर सकते हो। ये लोग कहाँ से आएंगे?'
मैंने कहा, 'वे अब हैदराबाद चले गए हैं और नागपुर होते हुए लौटेंगे। अगर हम उनसे मिल गए तो बहुत अच्छा; लेकिन वे हमसे बच भी सकते हैं।'

'वे ऐसा नहीं कर पाएंगे, अल्लाह की कसम,' पोटैल ने कहा। 'मैं स्वयं उनकी प्रतीक्षा करूंगा, और यदि आप उन्हें प्राप्त कर लेते हैं तो मैं एक सुंदर उपहार की आशा करूंगा।'
'मैं तुम्हें नहीं भूलूंगा। लेकिन हम यहाँ शिविर में हैं: ध्यान रखना कि जब तुम पैसे ले जाओ तो कोई तुम्हें देख न ले।'
'इसके लिए किसी अनुभवी व्यक्ति पर भरोसा करना चाहिए,' उसने आँख मारते हुए कहा। 'चारा लाने के बाद मुझे मूनशी के पास जाना होगा, जिसने मुझे अपने घोड़ों के लिए चारे के लिए बुलाया है। मैं उससे भी मिलना चाहता हूँ—एक ऐसे व्यक्ति को देखना चाहता हूँ जिसकी साँसें उसकी नाक में बसी हों। और उसकी एक पत्नी भी है।'
'हाँ,' मैंने कहा, 'उसे रास्ते से हटाना नामुमकिन है, इसलिए उसे मरना ही होगा, जो कि बहुत दुख की बात है। उसका एक बच्चा भी है, लगभग चार साल का, जिसे मैं खुद चाहती हूँ; वह बहुत प्यारा लड़का है, और मेरा कोई बेटा नहीं है जो मुझे आशीर्वाद दे सके; कुछ दिनों बाद वह मुझमें और अपने पिता में फर्क नहीं कर पाएगा।'
मैंने पैसे देकर उसे विदा कर दिया। गणेश जी मेरे पास आए।
उसने कहा, 'मैंने जमीन का जायजा लिया है, और मूनशी के तंबू के पास एक गड्ढा है जिसे किसी न किसी उद्देश्य से खोदा गया है, जाहिर तौर पर यह एक कुएं की शुरुआत है; इससे हमें खुदाई की परेशानी से मुक्ति मिल जाएगी; मिट्टी भी इसके करीब ही है, और उसे केवल भरना होगा।'
मैंने कहा, 'क्या लुघाई लोगों ने इसे देखा है?'
'हां,' उसने जवाब दिया, 'मैं भवानी को अपने साथ ले गया था; वह कहता है कि यह बिल्कुल वही चीज है।'
मैंने कहा, 'हे गणेश, अब हम इसका प्रबंध कैसे करेंगे?'
'ओह, आप तंबू का काम संभाल लीजिए, बाकी सब मुझ पर छोड़ दीजिए; बाहर का सारा काम मैं संभाल लूंगी। आपकी ज़ुबान बहुत मीठी है, और मूनशी अकेली है; कुछ भी गड़बड़ होने पर मैं पास ही रहूंगी; लेकिन मुझे कुछ भी आशंका नहीं है।'
'न ही मैं। सैसेस या ऊंट वालों में से किसी को भी भागने नहीं देना चाहिए: वे बहुत सारे हैं।'
'कुल सोलह हैं; मैंने उन्हें गिना है: मुझे देखने दो—आठ भारवाहक, दो ऊंट वाले,—उनमें से एक की पत्नी है, —दो खिदमुतगार, एक महिला नौकरानी और चार सैस: ये कितने हैं?'
'अठारह,' मैंने कहा।
'खैर, कोई बात नहीं; शाम होते-होते मैं सबको घेर लूंगा; उनमें से अधिकतर लोग गाने सुन रहे होंगे, और बाकी बचे लोगों को हमें हर संभव तरीके से काबू में करना होगा। रात भी अंधेरी होगी, जो हमारे लिए फायदेमंद है।'
तब मैंने उसे गाँव के घुड़सवारों के बारे में और अपने किए के बारे में बताया। वह हित्ता सिंह, जो कि डफदार था, को जानता था और उसने मुझे बताया कि बंगाल के आरा जिले में अपने दौरों के दौरान उसकी उससे

मुलाकात हुई थी; और एक बार जब उसे हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया गया था, तो हित्ता सिंह ने कलेक्टर के सामने यह शपथ लेकर कि वह उसे जानता है, और उसके लिए बड़ी रकम की ज़मानत देकर उसे छुड़वा दिया था। गणेश ने कहा, 'भोजपुरी होने के बावजूद वह अच्छा आदमी है, लेकिन उसे अच्छी तनख्वाह चाहिए, और तुमने उसे चुप रहने के लिए काफी तनख्वाह दे दी है।'

शाम हो गई। मैं और मेरे पिता शाम की नमाज़ के बाद मूनशी के यहाँ गए; उनके हाथों में उनका बेटा बैठा था, और वह बड़ा ही प्यारा बच्चा था। उसके सुंदर चेहरे और भावपूर्ण आँखों को देखकर मैंने मन ही मन कहा, "मैं उस बच्चे से कितना प्यार करूँगी!" वह तुरंत मेरे पास आया, मैंने उसे प्यार से सहलाया और उसकी प्रशंसा भरी निगाहों के सामने अपनी सुंदर तलवार और कटार दिखाई। मैंने सोचा, "अज़ीमा भी उससे प्यार करेगी, और जब हमारी बेटी की शादी हो जाएगी और वह हमें छोड़कर चली जाएगी, तो वह उसकी जगह ले लेगा।"

'क्या आपके बच्चे नहीं हैं?' मूनशी ने कहा; 'या शायद मुझे पूछना ही नहीं चाहिए, हो सकता है आपने उन्हें खो दिया हो: इस सवाल पर आपकी भौंहें तन जाती हैं।'

मैंने उत्तर दिया, 'एक बेटी। एक बेटा, साहिब जादा का समकक्ष, आलिया ने मुझसे तब ले लिया जब वह लगभग उसी उम्र का था।'

'यह सचमुच उसकी इच्छा है,' मूनशी ने कहा; 'भाग्य के विरुद्ध कोई संघर्ष नहीं। यह लड़का मेरी इकलौती संतान है; कई वर्षों से मेरी शादी हो चुकी थी, और मेरी स्थिति कुछ-कुछ "तोते की कहानी" में सुल्तान जैसी थी; मेरे बाल सफेद हो रहे थे, और मैं निराश थी, लेकिन अंत में आलिया ने कृपा की, और आप इस लड़के को देख सकते हैं।'

मैंने कहा, 'ईश्वर करे कि वह सौ वर्ष जिए और समृद्ध हो। मुझे तो कोई उम्मीद नहीं है।'

हम कुछ देर तक बातचीत करते रहे, और बाहर से एक संदेश आने पर मैंने कहा, 'मेरे कुछ आदमियों के गायन से आप इतने प्रसन्न हुए हैं, हे मूंजी साहब, कि उन्होंने बायरूपियों की शैली में एक छोटा सा मुखौटा नृत्य आयोजित किया है, जिसे वे आपके सामने प्रस्तुत करने के लिए उत्सुक हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि यह काफी हास्यास्पद होगा, फिर भी इससे शाम का समय बीत जाएगा, और शायद आपके बेटे का भी मनोरंजन हो जाए।'

उन्होंने कहा, 'ज़रूर; जंगल में कुछ भी चलेगा; लेकिन अगर आप साथ न होते, मीर साहब, तो हमारा मार्च नीरस होता। मैं अंदर वालों को तैयार कर देता हूँ, इसलिए कलाकारों को बुला लीजिए।'

छह हट्टे-कट्टे आदमी आए, अजीबोगरीब कपड़े पहने हुए, उनमें से दो औरतों के वेश में थे, उनके हाथों में सितार और ढोल थे; वे गूसाईंयों के झुंड का रूप धारण किए हुए थे और हास्यास्पद ढंग से नाच-गा रहे थे। उन्होंने ये सब कहाँ से सीखा था, यह मुझे नहीं पता, लेकिन सब कुछ बढ़िया था, और मूनशी का छोटा बेटा ज़ोर-ज़ोर से हँस रहा था। जैसा कि हमने अनुमान लगाया था, मूनशी के सभी लोग तंबू के चारों ओर जमा हो गए, जो एक तरफ से खुला था ताकि वे तुमाशा को देख सकें; और मैंने मन ही मन खुशी से देखा कि हर आदमी के पास दो या तीन ठग थे, और उनमें से हर एक के पीछे एक खास ठग था। सब कुछ मेरी सोच के

मुताबिक तैयार था, और मैं इशारा देने ही वाला था, तभी एक ठग ने मुझे बाहर बुलाया। क्या बात थी, यह मुझे नहीं पता था, लेकिन एक पल के लिए बहाना बनाकर मैं बाहर चला गया।
'हम क्या करें?' गणेश ने मुझसे भयभीत और चिंतित स्वर में कहा: 'मीर साहब, फिरंगी हम पर हमला करने आ गए हैं!'
'फेरिंगहीज़!'
'हाँ,' उसने उत्तर दिया; 'और हम क्या कर सकते हैं? यह भला बुनिज हमसे बच निकलेगा। बेशक मूनशी उनसे मिल जाएगा, और तब हम दिल्ली के राजा को पकड़ने के बजाय उसका गला घोंटने के बारे में ही सोचेंगे।'
मैंने कहा, 'लेकिन कैसे? फेरिंगही हम पर हमला करने के लिए कैसे आए हैं? क्या आपने उन्हें देखा है?'
'नहीं,' गणेश ने कहा, 'पर मैंने उनके लोगों को देखा है। ऊंटों की एक लंबी कतार अभी-अभी आई है, और न जाने कितने लाल वस्त्रधारी सिपाही उनकी रक्षा के लिए तैनात हैं—उन सब पर मेरा श्राप हो!'
और वे कहाँ हैं?
'अरे, वे तो गांव में चले गए हैं। उन्हें यह जमीन चाहिए थी, लेकिन मैंने उनसे कहा कि मैं इसे नहीं दूंगा; कि मूनशी एक प्रतिष्ठित सज्जन हैं, और उन्हें परेशान नहीं किया जा सकता, और गांव के दूसरी तरफ बेहतर जमीन है।'
'तो फिर चिंता मत करो,' मैंने कहा; 'काम तुरंत करना होगा। मैं अंदर जाकर झिरनी दूंगा; और अगर उन ताक-झांक करने वाले बदमाशों, लस्करों में से कोई हमारे आसपास आ जाए, तो तुम जानते हो कि क्या करना है। लेकिन मुझे डर नहीं है; पोटैल हमारी मदद करेंगे, और हित्ताह सिंह भी, और ज्यादा शोर मचाने की जरूरत नहीं है। जरूरत पड़ने पर मेरे पिता को कुछ देर के लिए मूनशी का रूप धारण करना पड़ेगा, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।'
'अच्छा,' गणेश ने कहा; 'पर जल्दी करो, मीर साहब, जब तक सब कुछ पूरी तरह से जमीन के नीचे दफ़न नहीं हो जाता, मैं भय की पीड़ा में रहूंगा।'
मैंने उसे वहीं छोड़ दिया और लापरवाही से अपने रूमाल से खेलते हुए फिर से तम्बू में प्रवेश कर गया।
'यह क्या है?' मूनशी ने पूछा।
'अरे कुछ नहीं,' मैंने उत्तर दिया; 'बस कुछ साहिब-लोगों के तंबू आए हैं। उनके नौकर इस जगह पर डेरा डालना चाहते थे, लेकिन हमें यहाँ देखकर लस्करों ने उन्हें गाँव के दूसरी तरफ भेज दिया है। सैनिक कल सुबह जल्दी यहाँ पहुँच जाएँगे।'
'यह मुझे बिलकुल ठीक लगेगा,' उसने कहा; 'मैं इनके साथ ही रुकूँगा और आप सज्जनों को विदाई दूँगा; लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हमारी मस्ती कम हो जाए। मुझे पूरा यकीन है कि इन अच्छे लोगों के पास एक-दो गाने और हैं। क्या आपके पास हैं?' उसने उनसे पूछा।
उनमें से एक ने जवाब दिया, 'सौ; लेकिन शायद अगला वाला काफी शोरगुल वाला होगा।'

'कोई बात नहीं,' उसने कहा, 'खेलते रहो; मैं तुम्हें अपनी सामर्थ्य के अनुसार अच्छा इनाम दूंगा।'
शोर चरम पर पहुँचने तक मैंने झिरनी देने का इंतज़ार किया, फिर भी मुझे मनचाहा अवसर नहीं मिला। मूनशी कनात की ओर पीठ करके बैठा था, और उसके पीछे जाना नामुमकिन था; ठगों में से एक ने मेरी परेशानी देखी और उसे उठकर कुछ कदम आगे बढ़ने के लिए कहकर मेरी परेशानी दूर की।
'वे क्या करने वाले हैं?' उसने पूछा।
मैंने जवाब दिया, 'मुझे नहीं पता, लेकिन बेहतर होगा कि आप मेरी बात मान लें।'
वह उठा, और मैं चुपके से उसके पीछे चला गया। 'अब!' मैंने चिल्लाकर कहा; 'तकिया लाओ!' और मेरा हाथ मूनशी की गर्दन पर था। उसने एक ज़ोरदार चीख मारी और गिर पड़ा।
उसकी पत्नी कनात के एक छेद से देख रही थी; उसने सब कुछ देख लिया था और अपने बच्चे को गोद में लिए हमारे बीच दौड़ पड़ी। मैं उसे कभी नहीं भूलूंगा—कभी नहीं: मैं उसकी बेकाबू नज़र और उसकी चीखें कभी नहीं भूलूंगा। मैंने बच्चे को उसकी बाहों से छीन लिया और उसे ठगों के बीच छोड़ दिया; मैं बाहर भागा और सबसे पहले मेरी मुलाकात गणेश से हुई, जिसका चेहरा विजय से चमक रहा था, जिसे मैंने तम्बू से मशालों की रोशनी में देखा।
'सब हो गया!' वह चिल्लाया; 'वे सब मारे गए। दो को मैंने खुद मारा। लुघाई कहाँ हैं? हमें जल्दी करनी होगी।' वह भाग गया; और मैं तम्बू के सामने खुले मैदान में खड़ा रहा। ठगों के दल मृतकों के शवों को लेकर तेज़ी से इधर-उधर आ-जा रहे थे, जिन्हें एक-एक करके गड्ढे में फेंका जा रहा था। लेकिन गाना-बजाना हमेशा की तरह हर्षोल्लास से चलता रहा, और तम्बू में झाँककर मैंने अपने पिता को उस स्थान पर बैठे देखा जहाँ अभागा मूनशी बैठा था।
मेरा नन्हा बच्चा बुरी तरह रो रहा था, मुझसे विनती कर रहा था, उसकी आवाज़ और शब्द किसी का भी दिल पिघला देते, सिवाय मेरे। मैं उससे कह रही थी कि उसे उसकी माँ के पास ले जाऊँ। मैंने उसे जितना हो सका शांत किया और अपने तम्बू की ओर जा रही थी; लेकिन जिज्ञासावश मैं वापस लौट आई और उस गड्ढे को देखने गई जहाँ अंतिम संस्कार चल रहा था। मैं किनारे पर गई; गणेश जी वहाँ खड़े होकर लुघाई समुदाय के लोगों का हौसला बढ़ा रहे थे; उन्होंने मेरी गोद में बच्चे को देखा।
'यह कैसी मूर्खता है, मीर साहब?' उसने कहा; 'जब हम अभी इतने बड़े खतरे में हैं, तब भी आप उस लड़के को नहीं बख्शेंगे! यह तो सरासर पागलपन होगा। उसे मुझे दे दीजिए; मैं उस रोते हुए बेचारे को चुप करा दूंगा और उसे उसके माता-पिता के साथ भेज दूंगा।'
'कभी नहीं!' मैं चिल्लाई; 'यह लड़का मेरा है; तुम सारा माल ले लो, लेकिन मैं इसे मौत के हवाले नहीं करूंगी। क्या मैंने अपना एक बेटा नहीं खोया है, और क्या इस उम्र के बच्चे को गोद लेना जायज़ नहीं है?'
'पागलपन! पागलपन!' गणेश चिल्लाए, 'लड़के को मरना ही होगा। क्या आप मूर्ख हैं, मीर साहब, जो ऐसा जोखिम उठा रहे हैं?'

मैंने कहा, 'उसे कभी पता नहीं चलेगा कि हम कौन हैं और उसके माता-पिता कौन हैं; और मैं इस मामले में दखल नहीं दूंगा।'
'मूर्ख!' गणेश ने दांत पीसते हुए कहा, 'मैंने एक बार एक बच्चे को बख्श दिया था, और अब कभी किसी दूसरे बच्चे को नहीं बख्शूंगा; मैंने कुल्हाड़ी पर कसम खाई है।'
'मुझे हज़ार कसमों की परवाह नहीं,' मैं चिल्लाई; 'लड़का मेरा है, और अगर तुम झगड़े से बचना चाहते हो तो बेहतर होगा कि तुम मेरा विरोध न करो;' और मैं वहाँ से चली गई।
उसने मुझे बांह से पकड़ लिया।
'मुझे जाने दो,' मैंने चीखते हुए कहा और मैंने अपनी कटार को टटोला, 'वरना आलिया! मैं इस स्टील को तुम पर वार कर दूंगी।'
'लड़के,' वह चिल्लाया, 'तुम पागल हो; मुझे तुमसे डर नहीं लगता; गणेश जी के अलावा किसी और से खंजर की बात मत करो; उन्होंने तुम्हें इतना देख लिया है कि वे तुमसे डरते नहीं। मैं कहता हूँ, मुझे बच्चा दे दो, उसकी चीखें ही सिपाहियों को डरा देंगी।'
मैंने अपनी कटार या तलवार को खोजने की कोशिश की, लेकिन मैंने उन्हें तम्बू में ही छोड़ दिया था; मैंने यह जानने की कोशिश की कि क्या दया उसे प्रभावित कर सकती है।
'क्या तुममें दया नहीं है?' मैंने और भी नरमी से कहा: 'गणेश, क्या तुम्हें एक बच्चे पर दया नहीं आती? क्या तुम उसे मार सकते हो?'
मैं बेखबर था, और उसने मौके का फायदा उठा लिया। पलक झपकते ही उसने बच्चे को मेरी बाहों से छीन लिया और उसे गड्ढे में फेंकते हुए तिरस्कारपूर्वक चिल्लाया, 'अरे! नहीं, मुझे पता भी नहीं। अब जाओ और अपने खिलौने के खोने पर रोओ, मीर साहब।'
मैं आगे बढ़ा और तेज़ी से खोदे जा रहे गड्ढे के किनारे झुक गया; बेचारा लड़का नीचे बेसुध पड़ा था—उसके मुंह से बस एक चीख निकली थी, क्योंकि उसे ज़ोर से गड्ढे में धकेल दिया गया था। मैंने एक पल के लिए यह सुनिश्चित करने के लिए देखा कि वह मर चुका है, और जो मिट्टी डाली जा रही थी, उससे वह लगभग तुरंत मेरी नज़रों से ओझल हो गया।
मैंने प्रचंड क्रोध में गणेश जी की ओर रुख किया।
'कुत्ते!' मैं चिल्लाया, 'कुत्ते के बच्चे! तुम्हें इसका हिसाब देना होगा। अगर मेरी तलवार अभी मेरे पास होती, तो मैं तुम्हें दो टुकड़ों में काट देता।'
'यह एक खोखली धमकी है, और वैसी ही है जैसा मैंने तुम्हारे बारे में सुना है,' उसने कहा। 'जाओ, मीर साहब, तुम एक लड़के और मूर्ख हो: मैं तुमसे नहीं डरता।'
उस निर्दयी दुष्ट ने मेरे बेटे को मार डाला था। उस समय मैं कुछ नहीं कर सकता था, लेकिन मैंने बदला लेने का निश्चय कर लिया था और मैंने बदला लिया भी। मैंने अपने पिता और अपने तीन करीबी साथियों को इस घटना के बारे में बताया: उन्होंने गणेश पर आक्रमण करने के मेरे हर प्रयास में मेरा साथ देने का निश्चय किया

और अगले ही दिन ऐसा करने को तैयार थे; लेकिन यह मुझे मंज़ूर नहीं था, हालाँकि उसके शब्द मेरे दिल में चुभ रहे थे और उसके इस कृत्य ने मुझे उससे पहले से कहीं ज़्यादा नफ़रत करने पर मजबूर कर दिया था। मैंने अपने बदले को आखिरी क्षण तक टाल दिया, लेकिन अंततः मैंने बदला लिया, जैसा कि आप आगे सुनेंगे।
उस रात हम ज़मीन पर ही रुके रहे; पालकी के टुकड़े-टुकड़े करके गड्ढे में फेंक दिए गए थे, लेकिन अगली सुबह जब हम फिरंगी सेना के शिविर से गुज़रे, तो मेरे पिता ने मूनशी का रूप धारण किया। फिरंगी सेना का शिविर हमारे इतने करीब था कि मुझे अक्सर आश्चर्य होता है कि जब हमने उन्हें मार गिराया तो उन्होंने हमारी चीखें क्यों नहीं सुनीं। लेकिन हमने पूरी सावधानी बरती थी। ढोल की आवाज़ और मूनशी के दो घोड़ों को खुला छोड़ने से मची अफरा-तफरी, जिनका कई ठग चिल्लाते-चिल्लाते पीछा कर रहे थे, ने हमारे शिकारों की चीखों को दबा दिया था, और हमने बिना किसी शक के सारा काम कर दिया था। हमारे अच्छे दोस्त, पोटैल और दुफ्फादार, सिपाहियों से बातचीत करते रहे, और उन्होंने शोर पर ध्यान नहीं दिया, बस उसके कारण के बारे में एक हल्की-फुल्की टिप्पणी कर दी।
इसलिए हम फिर से सड़क पर थे। हमें उतना माल नहीं मिला जितना हमने उम्मीद की थी, वास्तव में वह तीन हजार रुपये से भी कम था, और हम बेसब्री से डाकुओं की तलाश कर रहे थे, जिनसे हमें उम्मीद थी कि वे हमारे अगले शिकार बनेंगे।
हम नागपुर गए और मूनशी के ऊंट और घोड़े बेच दिए। यहाँ हमारा गिरोह दो भागों में बँट गया; एक भाग, जिसका नेतृत्व इमोम बुक्श नाम का एक जमादार कर रहा था, हमारे पुराने रास्ते से ऊमरावती की ओर और बरार घाटी से होते हुए खानदेश और बूरहनपुर की ओर चल पड़ा; बाकी के लोग नागपुर शहर में चार दिन रुकने के बाद उसी रास्ते से लौट आए जिससे वे आए थे।
घर की ओर अपने दूसरे या तीसरे मार्च के दौरान हम डाकुओं से मिले। जिस गाँव में हमने डेरा डाला था, उसमें प्रवेश करते ही हमारे जासूसों ने उन्हें देख लिया था; और उनसे निपटने में अत्यधिक सावधानी आवश्यक थी, इसलिए मेरे पिता ने तुरंत अकेले ही सोथा, या धूर्तता फैलाने वाले, बनने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने कहा, 'मैं हिंदू होने का दिखावा करूंगा; अगर मैं अपने असली नाम से जाऊं तो ये बदमाश मुझ पर शक करेंगे, और सच में वे मुझे पहचान भी लेंगे। मैं हैदराबाद से आया हुआ राजपूत जमादार बनूंगा, और आप देखेंगे कि मैं अपना पुराना पेशा नहीं भूला हूं।'
तदनुसार उसने हिंदुओं की रीति के अनुसार अपने माथे और छाती को रंगा, अपनी आंखों को लकड़ी की राख से ढका, एक आदमी से उधार लिया हुआ कमरबंद और वस्त्र पहना, और दूसरे के साथ गांव में चला गया।
मैं कितनी बेसब्री से उनके लौटने का इंतज़ार कर रहा था! मुझे डर था कि वे अपने मिशन में असफल हो जाएँगे, लेकिन गणेश जी आश्वस्त थे। उन्होंने मुझसे कहा, 'वे कभी असफल नहीं होते; वे भवानी के विशेष भक्तों में से एक हैं; उनका किया हुआ हर काम कभी असफल नहीं हुआ। काश, मुझे भी उनका सौभाग्य प्राप्त होता।'

लेकिन वह इतनी देर तक अनुपस्थित रहा कि मुझे उसकी सुरक्षा को लेकर चिंता होने लगी और मैं उसके बारे में खबर लेने के लिए निकलने ही वाला था कि तभी मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई जब मैंने उसे आते हुए देखा। मैं उससे मिलने के लिए दौड़ पड़ा।

'क्या खबर है?' मैं चिल्लाई; 'ओह, मेरे पिताजी, आपकी अनुपस्थिति में मेरा जिगर जल गया है। आप इतनी देर तक क्यों रुके रहे?'

घोड़े से उतरकर उसने कहा, 'कोई बात नहीं, मेरे बेटे, मेरे पीछे आना तुम्हारी गलती होती। लेकिन अरे, उल्लू! मैंने उन्हें पकड़ लिया है— वे अब हमारे हैं।'

'उल-हमद-उल-इल्ला!' मैंने चिल्लाकर कहा, 'यह तो दुर्लभ खबर है; लेकिन आपने यह कैसे किया?'

“क्यों,” उसने उत्तर दिया, “यह तो आसानी से हो गया, हालाँकि मुझे अपनी सफलता को लेकर डर लग रहा था जब मैंने देखा कि डाकुओं में से एक ऐसा व्यक्ति था जिसे मैं बहुत समय से जानता था; लेकिन मेरी सफेद दाढ़ी और काफिरों के इन चिह्नों के कारण वह मुझे पहचान नहीं पाया: उसने कभी सोचा ही नहीं कि मैं इस्माइल ठग हूँ। मैं उनके नेता के साथ बैठा और बातचीत की, जिसने मुझे बड़ी गंभीरता से बताया कि वह अंग्रेजों का सेवक है और छुट्टी पर हिंदुस्तान जा रहा है। मैंने कहा कि मैं भी एक नौकर हूँ और जालना से आया हूँ, जहाँ मैं शराब पर कर वसूलता था। फिर हम घनिष्ठ हो गए और बातचीत का नतीजा यह निकला कि हम साथ यात्रा करने के लिए सहमत हो गए; और अल्लाह की कसम! अगर शगुन अच्छे रहे तो वे कल मर जाएँगे। इन लोगों के साथ देरी करना व्यर्थ है, क्योंकि वे स्पष्ट रूप से सोचते हैं (उन संकेतों से जो मैंने उन्हें आपस में करते देखा, जो मुझे ज्ञात हैं) कि हम उनके लिए निश्चित रूप से दुश्मन हैं, और अगर हम उन पर हमला नहीं करेंगे तो वे हम पर टूट पड़ेंगे।”

मैंने कहा, 'हमें कुशल कारीगरों की जरूरत होगी; और मैं नेता की भूमिका निभाऊंगा।'

गणेश ने कहा, 'मैं भी भुट्टोटे बनूंगा। मैंने कभी किसी डाकू को नहीं मारा। क्या वे बलवान होते हैं?'

'बिल्कुल,' मेरे पिता ने उत्तर दिया; 'लेकिन अपनी पूरी जनजाति की तरह वे भी भारी हथियारों से लैस हैं, और अगर हम सही ढंग से काम करें तो वे हमारे खिलाफ कुछ खास नहीं कर पाएंगे।'

मैंने कहा, 'हमें उन पर अपनी तलवारों से हमला कर देना चाहिए।'

'ऐसा नहीं है, मेरे बेटे, लेकिन हम उन्हें घेर लेंगे, और अगर कोई अच्छा अवसर नहीं मिला, तो सैनिक अपने हथियारों का इस्तेमाल कर सकते हैं।'

हम जल्द ही इस बात पर सहमत हो गए; और सुबह जब हम गाँव के चारों ओर घूमकर मुख्य सड़क पर पहुँचे तो डाकू लोग हमसे मिल गए। वे पच्चीस थे, हट्टे-कट्टे, लेकिन भारी-भरकम दिखने वाले आदमी, हथियारों से लैस, और उनके सिर कपड़ों से ढके हुए थे। उनके पास तेरह भारी-भरकम टैटू थे; और यह अच्छा ही हुआ कि उनके पास यह बोझ था, क्योंकि इससे वे अलग-अलग हो गए, क्योंकि प्रत्येक टैटू को चलाने के लिए एक आदमी की आवश्यकता थी। यदि वे एक साथ रहते, तो हम उन पर शायद ही कोई प्रभाव डाल पाते, और उन पर हमला करने की हिम्मत तो हम कर ही नहीं पाते।

'अब सावधान रहो!' मेरे पिता ने उन आदमियों से कहा; 'अगर तुम उन्हें अपने जानवरों को छोड़कर दो-तीन के समूह में इकट्ठा होते देखो, तो उन पर तुरंत टूट पड़ो, वरना वे हम पर हमला कर देंगे: वे अच्छी तरह जानते हैं कि हम कौन हैं, भले ही वे ऐसा दिखावा करें कि वे नहीं जानते।'

हम साथ-साथ आगे बढ़े: कुछ दूर चलने के बाद मैं घोड़े से उतरा और नेता के बगल में चलते हुए उससे बातचीत करने लगा। उसने मुझे बिल्कुल भी नहीं पहचाना और बड़ी गंभीरता से मुझे बताने लगा कि कैसे रास्ते में उसकी मुलाकात ठगों से हुई; कैसे उसने एक बड़े गिरोह से लड़ाई की और उन्हें परास्त कर उनके द्वारा लूटा गया लगभग एक हजार रुपये का माल अपने साथ ले गया।

मैं उसे अपने जूते से मुँह पर मार सकता था, लेकिन मैंने खुद को रोक लिया: फिर भी, इतना खुला झूठ मुझे क्रोधित करने के लिए काफी था। फिर भी मैंने उसकी बहादुरी की सराहना की, और उसने आगे कहा: 'जी, मीर साहब, ये ठग सबसे बड़े अपराधी हैं जिन्हें फाँसी नहीं दी गई है; और मैं पैगंबर की प्रशंसा करता हूँ कि मुझे उनके बारे में कुछ जानकारी मिली है, जो मैं अपने आकाओं, यूरोपियों को दूंगा। एक मूर्ख ठग ने, या बल्कि उसके ही किसी आदमी ने, मुझे बताया कि वे झालोन के हैं; मैं उस तरफ जा रहा हूँ, और अगर मैं राजा को उनके शहर में होने की सूचना नहीं देता, तो मुझे उल्लू और गधों का बाप कह लेना। मुझे उम्मीद है कि वह मुझे अच्छा इनाम भी देगा।'

हाँ, तुम उसे बता दोगे, मैंने सोचा; लेकिन पहले तुम्हें वहाँ पहुँचना होगा, मेरे दोस्त। माशाल्लाह! शब्द एक चीज़ हैं, लेकिन कर्म दूसरी।

'और क्या वे इतने मूर्ख थे?' मैंने पूछा; 'पूरी दुनिया कहती है कि ठगों के झांसे में कभी नहीं आना चाहिए।' उस व्यक्ति ने तिरस्कारपूर्ण ढंग से हँसते हुए कहा।

'कभी धोखा नहीं खाया!' उसने कहा; 'क्या मैंने उन्हें धोखा नहीं दिया? वे सूअर हैं, वे गधे हैं; वे बेचारे यात्रियों की हत्या करते हैं, लेकिन उनमें बच्चों जितनी भी अक्ल नहीं है। उनके मूर्ख जमादार ने अपना चेहरा कपड़े से ढककर मुझे धोखा देने की कोशिश की; लेकिन मैंने उसे अंधेरे में भी देख लिया था, और मैं हज़ारों लोगों के बीच भी उसकी गवाही दे सकता हूँ।'

मैंने पूछा, 'वह कैसा था?' 'मैं यह जानने के लिए उत्सुक हूं, भले ही भविष्य में उससे बचने के लिए ही सही, खासकर इसलिए कि मैं इस सड़क पर लगातार यात्रा करता हूं: लेकिन आपने कहा कि आपने उन पर हमला किया था?'

'जी हां,' उसने कहा; 'मैं भी एक अनुभवी यात्री हूं, और चूंकि हम एक बड़ी टोली थे, और ठगों की संख्या हमसे तीन गुना से अधिक नहीं थी, इसलिए मैंने अपने साथियों से कहा कि हालांकि मैं जानता हूं कि हम ठगों के साथ हैं, उन्हें डरने की जरूरत नहीं है, और अगर वे मेरी ओर ध्यान दें, तो हम उन पर हमला करके उन्हें तितर-बितर कर सकते हैं और उनका सारा माल लूट सकते हैं: और आलिया की कसम! हमने ऐसा ही किया, साहब। देर रात हम उन पर टूट पड़े, कुछ को मार डाला और बाकी भाग गए, उनमें कायर जमादार भी शामिल था। हमें इतना माल मिल गया कि हम आराम से हैदराबाद तक पहुंच सकें।'

तो हम बाल-बाल बच गए, मैंने सोचा; अगर हम उस रात आगे न बढ़ते तो ये लोग हम पर हमला कर देते, मुझे इसमें कोई शक नहीं। लेकिन साहब, ये झूठ कितना बेशर्मी भरा था! फिर भी मैं उसकी इस कहानी पर दिल खोलकर हँसे बिना नहीं रह सका, जिसे उसने आलिया और पैगंबर की कसम, मेरी दाढ़ी की कसम और अपने कैलेंडर के हर संत की कसम खाकर सच बताया था।

हम चलते रहे जब तक कि सड़क पर दो पेड़ दिखाई नहीं दिए, जिन पर यात्रियों ने उस स्थान के संरक्षक संत को भेंट के रूप में कपड़े के टुकड़े लटका रखे थे। मैंने स्पष्ट रूप से देखा कि यह उनका भील था; एक-एक करके वे अपने टैटू उतारने लगे और इकट्ठा होने लगे। हमारी ओर से और देरी घातक साबित हो सकती थी, और मेरे पिता ने यह देख लिया था। वे उतने ही तत्पर थे जितना मैं चाहता था: उन्होंने उनकी हरकतें देख ली थीं, और जैसे ही मैंने अपनी कमर से रूमाल हटाया, उन्होंने झिरनी कर दी। ग्यारह डाकू एक ही क्षण में गिर पड़े, सरदार मेरे हाथों मारा गया। मैंने अपना रूमाल उसके गले में डाल रखा था, और घातक प्रहार करने से पहले, मैंने उसके कान में चिल्लाकर कहा कि मैं अमीर अली हूँ, उन ठगों का सरदार जिनसे वह मिला था, और मैंने उसे जान से मारने की कसम खाई थी, और मैंने उसे मार डाला। बाकी तलवारों से काट दिए गए: मेरे आदमी तैयार थे, वे नहीं थे, और उन पर भारी बोझ था। लेकिन अगर हम तीन-चार सौ कदम और देर करते, तो वे हम पर टूट पड़ते और मुझे लगता है, साहब, बदमाश भाग जाते। लेकिन फिर भी, हम विजयी रहे; हमने लाशों को वैसे ही जंगल में फेंक दिया और आगे बढ़ गए, दिल खोलकर हंसते हुए और अपने इस साहसिक कार्य के सफल परिणाम से बेहद खुश थे। लूट का माल भी अच्छा था—तेरह हजार रुपये का सोना, चांदी और नकद धन हमारी आंखों के सामने था, जब हमने जांच के लिए हथियारों से भरे पैकेट खोले।

खैर, साहब, लौटते समय हम सेहोरा तक पहुँच गए थे, जहाँ हमारी मुलाकात एक बड़े यूरोपीय से हुई, जो भी यात्रा कर रहा था। हम उससे डरे नहीं, बल्कि उसके साथ चलने का निश्चय किया, क्योंकि हम अच्छी तरह जानते थे कि उसके साथ कई यात्री थे जिन्हें उसके सैनिकों का संरक्षण प्राप्त था; इसलिए हम दो दलों में बँट गए, एक में मैं और मेरे पिता, दूसरे में गणेश। हमारा उद्देश्य यात्रियों को उससे अलग करना था, और हमें उम्मीद थी कि उसकी धीमी चाल के कारण यात्रियों को होने वाली असुविधा और रास्ते में भोजन की कमी के बारे में बताकर, हम उन्हें अपने साथ चलने के लिए मना लेंगे। मुझे आगे की कहानी बताने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह बाकी कहानियों से अलग नहीं थी; इतना कहना ही काफी है कि कुछ ही कदम चलने के बाद यात्रियों का एक बड़ा दल हमसे जुड़ गया। हमने मुख्य सड़क छोड़कर जंगलों के पगडंडियों से चलना शुरू किया, और शिकारपुर गाँव के पास हमने भील (एक प्रकार का जंगल) चुना। यह स्थान हमारा पसंदीदा था और हमारे दल को अच्छी तरह से ज्ञात था। यात्री मारे गए, उनतीस पुरुष, कुछ महिलाएं और बच्चे; सभी को एक ही कब्र में दफनाया गया, क्योंकि जिस जगह उन्हें मारा गया था वह सुनसान थी। यह घटना रात में घटी, लेकिन उस समय चाँद की रोशनी इतनी सुंदर थी जितनी पहले कभी नहीं चमकी थी। मैंने एक बच्चे को आम नरसंहार से बचाया; गणेश जी वहाँ मौजूद नहीं थे, इसलिए मुझे नहीं रोका जा सका; और यद्यपि वह लड़का हिंदू था, फिर भी मैंने उसे गोद लेने और अपने धर्म के अनुसार पालने का निश्चय किया, और इससे

उसे बचाने का पुण्य और बढ़ जाता। लेकिन जब उसकी माँ की मृत्यु हुई, तो मैं उसे शव से दूर नहीं कर सका; वह इतना छोटा था कि बेतहाशा उससे लिपट गया—जब भी मैं उसे पकड़ने की कोशिश करता, वह चीखता और लात मारता, और मेरे हाथों और बाजुओं पर काटता। मैंने सोचा, अगर शव उसकी नज़रों से दूर हो जाए, तो वह शांत हो जाएगा और अपने भाग्य को स्वीकार कर लेगा; लेकिन नहीं—जब शव हट गया, तो उसकी हालत और बिगड़ती चली गई; कोई भी चीज़ उसे शांत नहीं कर पा रही थी, और मैं सचमुच अधीर और क्रोधित हो गया। मैंने अपनी तलवार निकाली और उसे धमकाया, लेकिन उसे अपने खतरे का एहसास नहीं था; उसने मुझे गालियां दीं, उसने मुझ पर बच्चों जैसी क्रूरता से थूका। मैंने उसे एक बार फिर अपनी बाहों में उठाया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ; उसने मेरे कान को अपने दांतों से पकड़ लिया और तब तक काटा जब तक खून नहीं निकल आया। दर्द की पीड़ा और गुस्से में मुझे पता ही नहीं चला कि मैंने क्या कर दिया। साहब, मैं आपको आगे क्या बताऊं? यह मेरे जीवन का सबसे बुरा कृत्य था, जिसके बारे में मैंने अभी तक आपको नहीं बताया है।

मैंने कहा, "मुझे लगता है तुमने ही उसे मारा है, अमीर अली।"

जी साहब, मैंने ही उसे मारा था; लेकिन मैंने ये कैसे किया! ये तो शैतान का काम था, मेरा नहीं। मैं कभी क्रूर नहीं था, पर अब शैतान मुझ पर हावी हो गया था।

यहाँ अमीर अली ने अपने हाथों से अपनी आँखें ढक लीं, और मेरा हृदय भयभीत देखकर मैंने उनसे उन भयानक विवरणों को सुनाने से रोकने की विनती की। कुछ देर रुकने के बाद उन्होंने सुनाना जारी रखा।

मैं कितना निर्दयी था, फिर भी मैंने ऐसा किया। मेरे पास मेरे घोड़े को पकड़े हुए उस गुंडे के अलावा कोई नहीं था, और वह भी भयभीत होकर डर के मारे चीख पड़ा। मैंने उसे चुप करा दिया और उस क्षत-विक्षत शरीर को वहीं छोड़कर अपने घोड़े पर सवार होकर अपने साथियों के पीछे सरपट दौड़ पड़ा।

जी साहब, उस कृत्य के लिए मुझे फांसी की सजा मिलनी ही चाहिए थी, अगर मैंने दूसरा कोई कृत्य न किया होता; लेकिन मुझे एक अलग भाग्य के लिए बख्श दिया गया।

इस घटना के तीसरे दिन हम पूरी रफ्तार से आगे बढ़ रहे थे, तभी हमने घुड़सवारों का एक दल अपने पीछे आते देखा। उन्हें देखकर मेरा मन घबरा गया और मैंने जल्दी से बिखरे हुए ठगों को इकट्ठा किया और उन्हें एक साथ खड़ा कर दिया, ताकि अगर घुड़सवार दुश्मन निकले या कोई आक्रामक हरकत करें तो हम उनका सामना कर सकें। वे चिल्लाते और गालियां देते हुए आगे बढ़ते रहे। वे लगभग चालीस थे; और मुझे पूरा यकीन है कि अगर मैं दल का नेतृत्व न कर रहा होता, तो वे सब एक साथ भाग जाते: लेकिन मैंने उनका हौसला बढ़ाया और पीछे हटते समय डटकर मुकाबला करने का निश्चय किया। मुझे पता था कि कुछ ही दूरी पर एक गाँव हमारे हित में था, जहाँ मेरे द्वारा बताए गए व्यक्ति जैसा ही एक वीर योद्धा रहता था; और अगर हम वहाँ पहुँच जाते, तो हम दीवारों और मीनारों पर कब्जा कर लेते और पीछा करने वालों को चुनौती देते।

मैंने अपने आदमियों से कहा, 'डरो मत; तुममें से जो सबसे श्रेष्ठ हैं, मेरे पीछे आओ, और हम इन लुटेरे बदमाशों को रोकेंगे। मैं जानता हूँ कि ये पिंडारी हैं, और दुनिया के सबसे बड़े कायर हैं। बस दृढ़ रहो; जिनके

पास बंदूकें हैं, वे सटीक निशाना लगाओ, और जब वे काफी करीब आ जाएँ, तो हर कोई अपने आदमी पर नज़र रखे, और देखो कि कहीं ज्यादा से ज्यादा घोड़े खाली न हो जाएँ।'

वे आगे बढ़ते रहे; सौभाग्यवश सड़क संकरी थी और उसके दोनों ओर घनी कंटीली झाड़ियाँ थीं, इसलिए वे हमें पार नहीं कर सके। वे बोलने की दूरी पर थे, इसलिए मैंने चिल्लाकर उन्हें आवाज़ दी।

'क्या तुम मित्र हो या शत्रु? यदि मित्र हो, तो हमारे पीछे रहो; यदि शत्रु हो, तो पैगंबर के नाम पर चले जाओ, मेरे मित्रों, अन्यथा तुम्हारा कठोर स्वागत हो सकता है।'

'रुको!' पार्टी के नेता ने चिल्लाकर कहा; 'तुममें से नेता कौन है? मैं उससे बात करूंगा।'

मैंने कहा, 'मैं नेता हूँ; अकेले बाहर आओ, मैं तुमसे मिलूँगा; लेकिन अगर तुममें से कोई भी हरकत में आया, तो आलिया की कसम, हम तुम पर गोली चला देंगे।' वह आदमी आगे बढ़ा, और यह देखकर कि कोई उसका पीछा नहीं कर रहा है, मैं अपने आदमियों के आगे निकल गया। मैंने उनसे कहा, 'अगर कोई विश्वासघात करे, तो गोली चला देना, मेरी चिंता मत करना।'

उस आदमी ने कहा, 'जमादार, हमारे ठाकुर ने तुम्हें बुलवाया है, तुम शायद समझ ही गए होगे कि क्यों। बेहतर होगा कि तुम आ जाओ: तुम्हें सिर्फ जुर्माना भरना होगा और तुम्हें छोड़ दिया जाएगा, मैं राजपूत होने की कसम खाकर तुमसे कहता हूँ।'

मैंने कहा, 'मैं न तो तुम पर और न ही तुम्हारे मालिक पर भरोसा करूँगा; तुम सब आवारा पिंडारियों का झुंड हो; मैं तुम पर हँसता हूँ और तुम्हारी दाढ़ियों पर थूकता हूँ। अगर तुम्हें हमारी ज़रूरत है, तो आओ और हमें ले जाओ; लेकिन हम अपनी मर्ज़ी से नहीं आएँगे। क्या हम मूर्ख हैं? क्या हम गधे हैं? अरे! क्या तुम इस तरह बात करने वाले हो? जिसने तुम्हें भेजा है, उसके पास वापस जाओ और कहो कि अमीर अली ठग को पकड़ने वाला अभी तक पैदा ही नहीं हुआ है, जब तक उसके हाथ में हथियार है या उसके साथ कुछ बहादुर साथी हैं। क्या तुम्हें ऐसा संदेश देने में शर्म नहीं आती?'

उसने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि अपने घोड़े को दौड़ाया और तलवार से मुझ पर वार किया। मूर्ख! उसे यह नहीं लगा कि एक ठग लड़ सकता है, और उससे भी कम कि उसने ऐसे व्यक्ति से मुकाबला किया है जिसे आज तक किसी ने नहीं हराया था। मैंने वार को अपनी ढाल पर रोक लिया और जैसे ही वह मेरे पास से गुजरा, मैंने पलटवार करते हुए उसके सिर पर वार किया;—वह अपने घोड़े से गिरकर मर गया।

मेरे अपने आदमियों ने शोर मचाया और अपनी बंदूकें चलाईं— एक घुड़सवार और एक घोड़ा घायल होकर गिर पड़े और धूल में लोटने लगे। अगर पिंडारी युद्ध में मेरे साथी मेरे साथ होते, तो मैं उन पर हमला करके उन्हें भगा देता, लेकिन मैं अकेला कुछ नहीं कर सकता था। फिर भी हमने उन्हें रोक लिया और धीरे-धीरे पीछे हट गए, हमारे पीछे वह टुकड़ी भी थी जो गोलीबारी से बच रही थी, लेकिन जाहिर तौर पर हम पर हमला करने के लिए समतल और उपयुक्त जगह की प्रतीक्षा कर रही थी। इस तरह हम तब तक पीछे हटते रहे जब तक कि उस गाँव की दीवारें हमारी नज़र में नहीं आ गईं जहाँ मैंने मुख्य टुकड़ी को भेजा था। हमने वहाँ शरण लेने के लिए अपने प्रयास दोगुने कर दिए, और गाँव के सामने एक समतल मैदान से गुजरते समय हमारे

आदमी कुछ अव्यवस्थित हो गए: वे भागने भी लगे थे, लेकिन मैंने उन्हें रोक दिया। 'आलिया की कसम!' मैं चिल्लाया, 'अपनी भलाई के लिए एकजुट रहो और हिम्मत रखो; जब तक हम दृढ़ हैं, वे हमारे पास आने की हिम्मत नहीं करेंगे, लेकिन एक बार अलग हो गए तो हम हार जाएँगे।' देखो, वे अभी भी हमला करने की तैयारी कर रहे हैं, जैसे कोई बाज़ अपने शिकार पर झपटता है। और वे नीचे आ गए; गरजते हुए, अपने भाले लहराते हुए और हमें गालियाँ देते हुए: मेरे कुछ आदमी पूरी तेज़ी से फाटक की ओर भागे, लेकिन उनमें से अधिकतर वहीं खड़े रहे। मैंने फिर से अपने एक दुश्मन पर हमला किया और उसे घायल कर दिया, लेकिन हालात हमारे खिलाफ थे; मेरा एक आदमी गिर पड़ा, भाले से सीने में छेद हो गया और रीढ़ की हड्डी तक चोट पहुँच गई; दूसरा घायल हो गया; लेकिन वे हमारा और फायदा नहीं उठा सके। जो लोग भाग गए थे, उनके साथ मेरे कुछ और आदमी और कुछ ग्रामीण, मेरे बहादुर बूढ़े पिता के नेतृत्व में, फाटक से बाहर निकले; घुड़सवारों ने यह देखकर अपना हाथ पीछे खींच लिया, और हम गाँव में सुरक्षित पहुँच गए। वे दोपहर तक आसपास मंडराते रहे, लेकिन हमारी गोलीबारी की पहुँच से बाहर; और दोपहर के कुछ ही समय बाद वे सब चले गए, और हमने उन्हें फिर कभी नहीं देखा। हालाँकि, हमें अपने आश्रय के लिए भारी कीमत चुकानी पड़ी, क्योंकि पोटाएल ने अपने गाँव के फाटक बंद कर दिए और घोषणा की कि हम उसे एक हज़ार रुपये दिए बिना बाहर नहीं जा सकते। मैं उस पर हमला करने, उसके गाँव को लूटने और पिंडारी रीति से उसे जलाने के पक्ष में था, और हम यह आसानी से कर सकते थे। लेकिन मेरे पिता ने ऐसा होने नहीं दिया: 'देश हमारे खिलाफ विद्रोह कर देगा,' उन्होंने कहा; 'और इसके अलावा, यह पोटैल के आतिथ्य और संरक्षण का उचित प्रतिफल नहीं होगा, भले ही हमें इसके लिए भुगतान करना पड़े।' इसलिए उन्होंने पैसे दिए; और आपसी सद्भावना के हज़ारो वादों के बाद, हम शाम को गाँव से निकल पड़े, जहाँ तक हो सके आगे बढ़ने के इरादे से, ताकि पीछा करने वालों की पहुँच से बाहर हो जाएँ। और हमारा पीछा नहीं किया गया; हालाँकि इस कारनामे ने पूरे देश में शोर मचाया और दूर-दूर तक जाना गया, फिर भी हमें परेशान नहीं किया गया। बाद में हमने सुना कि ठाकुर अपने आदमियों की हार सुनकर भयंकर क्रोधित हो गया और उन्हें कायरों का झुंड कहकर अपनी सेवा से निकाल दिया, जो वास्तव में वे थे। इसके अलावा उसने कसम खाई कि वह बाद में पकड़े गए हर ठग से बदला लेगा; और मेरा मानना है कि उसने अपना वचन निभाया और उनमें से कुछ को मौत के घाट उतार दिया। लेकिन हम उसकी दाढ़ी पर हँसे, और बाद में हमने उस घटना को लेकर कई मजेदार चुटकुले सुनाए।

ऐसा प्रतीत होता है कि अगले दिन, कुछ चरवाहे उस स्थान से गुजर रहे थे जहाँ यात्रियों की हत्या की गई थी, और उन्होंने लड़के का शव सड़क पर पड़ा देखा: सभी अवशेषों को बरामद किया गया, और उस गाँव और क्षेत्र के शासक को सूचना दी गई जहाँ यह घटना घटी थी।

हम अपने मार्ग पर चलते रहे। गणेश भी भाग्यशाली रहे थे; उन्होंने एक हाथ गंवा चुके जमादार और उसके परिवार समेत कई अन्य यात्रियों को दूसरी दिशा में ले जाकर एक बड़े समूह को बहला-फुसलाकर अपने जाल में फंसा लिया था और उन सभी को मार डाला था।

आप जानते हैं, साहब, कि किसी भी प्रकार से विकृत व्यक्ति को मारना हमारे लिए वर्जित है। बाद में मुझे गणेश और उसके साथियों द्वारा जमादार के भाग्य के बारे में किए गए विचार-विमर्श के किस्से सुनकर हंसी आई: उसने खुद मुझे ये बातें तब बताईं जब हम मिले थे।

उन्होंने कहा, 'कुछ, बल्कि लगभग सभी लोग, इस बात को लेकर दुविधा में थे कि उसका गला घोंट दिया जाए या नहीं। उसे दल से अलग करने का कोई साधन नहीं था, और उन्होंने कहा कि उसके कारण पूरे दल को छोड़ देना चाहिए, क्योंकि उसने एक भुजा खो दी थी, और इसलिए वह भवानी के लिए उपयुक्त बलि नहीं था। मैंने उत्तर दिया कि वह कुरूप नहीं था, कि यदि उसने एक भुजा खो दी थी, तो वह उसके पास पहले थी, और उसका खोना आलिया का काम नहीं बल्कि मनुष्य का काम था, और जब वह मरेगा तो वह उसी रूप में प्रकट होगा जिस रूप में उसे बनाया गया था; इसलिए वह वर्जित नहीं था, बल्कि सच्चा बुनिज था; और मैंने उनसे पूछा कि वे बिना किसी कर्म के, और सबसे बढ़कर, बिना किसी लूटपाट के, आपके और अपने भाइयों के सामने कैसे आएंगे। मैं विजयी हुआ; सभी का गला घोंट दिया गया; जमादार का गला मैंने स्वयं घोंटा, क्योंकि मेरे सभी प्रयासों के बावजूद कि इसमें कोई नुकसान नहीं है, कोई और उसे छूने को तैयार नहीं था।' लेकिन सबसे बुरी बात यह थी कि वहाँ दो विवाह योग्य युवतियाँ थीं, जो जमादार की बेटियाँ थीं। मेरे दो आदमियों को वे पसंद आ गईं और वे उन्हें अपनी पत्नियाँ बनाने के लिए ले जाना चाहते थे, लेकिन उन्होंने सहमति नहीं दी और उन्हें बाकी लोगों के साथ गला घोंटकर मार डाला गया।

अब हम रास्ता तय करने या कहाँ जाना है, इस बारे में असमंजस में थे। सागर में, जो हमारा मिलन स्थल था, हमने शकुन देखे; और चूंकि वे उत्तर दिशा की ओर इशारा कर रहे थे, इसलिए हमने सागर से उत्तर की ओर जाने वाली मुख्य सड़क से अलग होकर सेरोंजे की ओर रुख किया। लेकिन मेरे पिता झालोन लौट गए। हम दो समूहों में बँट गए, प्रत्येक समूह दूसरे से एक दिन की पैदल दूरी पर था, क्योंकि हमें बड़ी संख्या में यात्रा करने पर संदेह होने का डर था; और चूंकि यूरोपीय लोगों ने देश में पैर जमा लिया था, इसलिए हमने पाया कि विभिन्न चौकियों और पहरेदारों द्वारा हमसे पहले की तुलना में अधिक पूछताछ की जा रही थी। इसके अलावा, ठगों के अन्य गिरोहों के हाथों कई यात्री विभिन्न दिशाओं में गायब हो गए थे, और अधिकारी कुछ हद तक संदिग्ध और जिज्ञासु थे। हालांकि, कभी धौंस देकर, कभी रिश्वत देकर, हम आगे बढ़ने में कामयाब रहे, रास्ते में कई गुप्त स्थानों पर अपने फल छोड़ते गए, जिन पर चौकदारों को कभी संदेह नहीं हुआ; और यद्यपि हमें कोई बड़ा खजाना नहीं मिला, फिर भी शायद ही कोई दिन ऐसा बीता हो जब एक, दो या उससे अधिक यात्री हमारे हाथों मारे न गए हों। होल्कर के राज्य में स्थित एकलेरा गाँव में (अफ़सोस! मैं इसे कभी नहीं भूलूँगा) हमारे सोथाओं ने हमें खबर दी कि उन्होंने यात्रियों के एक छोटे समूह को पकड़ लिया है, जिनके बारे में उन्होंने सुना था कि वे कुछ ही दूरी पर स्थित एक गाँव की ओर जा रहे थे।

हमारे आदमियों ने उन्हें अकेले यात्रा करने के खतरे के बारे में बताया, ठगों के आतंक के बारे में जानकारी दी और उनसे सुरक्षा के लिए हमारे बड़े दल के साथ चलने की विनती की, जो इसी उद्देश्य से इकट्ठा हुआ था, और वे मान गए। सोथाओं ने उन्हें काफिला के नेता के रूप में मुझसे मिलवाने का प्रस्ताव रखा; और

तदनुसार, सूर्यास्त के समय, उनमें से एक बाज़ार लौटा और दो आदमियों को मेरे पास ले आया। मैंने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया, वही कहानियाँ दोहराईं जो मेरे आदमियों ने सुनाई थीं, और उन्हें अपने उद्देश्य के लिए पर्याप्त रूप से डरा दिया।

'सुनो,' एक ने कहा; 'हालांकि मैंने कभी किसी ठग को नहीं देखा है, न ही मुझे इस इलाके में किसी ठग के होने की जानकारी है, फिर भी इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे यहाँ रहे हैं। मेरी पत्नी के पिता की हत्या उन्हीं ने की थी।'

'कैसे!' मैंने कहा; 'इसके बारे में सोचना भी भयानक है; यह कैसे हुआ? क्या आपको इसके बारे में कुछ पता है?'

“नहीं,” उसने उत्तर दिया, “मैंने दूसरों से जो सुना है, उसके सिवा कुछ नहीं। मैं उस समय बच्चा था, लेकिन गाँव के बड़े-बुजुर्ग उन्हें अच्छी तरह जानते हैं और आज भी अक्सर उनके बारे में बात करते हैं। मैं आपको अपने ससुर से मिलवाऊँगा, जैसा कि मैं उन्हें उचित ही कहता हूँ, और वे आपको खुद कहानी सुनाएँगे। माशाल्लाह! वे इसे बड़े उत्साह से सुनाते हैं, और यह सुनने लायक है।”

मैं मानता हूँ कि मुझे दिलचस्पी थी; ठग्गी की एक आम कहानी में मेरी इतनी दिलचस्पी क्यों थी, यह मेरी समझ से परे था। मैं उठा और उस आदमी के पीछे-पीछे उसके घर गया, यह ठानकर कि पूरी कहानी उसके ससुर से सुनूंगा।

मैंने कहा था कि अभी दिन था; सूरज डूब रहा था, और गाँव में हमेशा की तरह शाम के समय चहल-पहल और शोरगुल था; चरने निकले मवेशी दरवाज़ों से अंदर आ रहे थे, धूल के बादल उड़ाते हुए, जिनमें से दीवारें धुंधली सी दिखाई दे रही थीं। फिर भी जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ा, मुझे वे जगहें जानी-पहचानी सी लगीं; मुझे लगा कि मैं उनके आस-पास की कई जगहों के नाम जानता हूँ—खासकर एक फ़कीर का घर, जिसके चारों ओर एक छोटा सा बगीचा था। जब मैं उसके पास पहुँचा तो लगभग चौंक ही गया, क्योंकि वह मुझे किसी ऐसे परिचित दोस्त के चेहरे जैसा लगा जिससे बहुत दिनों बाद मुलाकात होती है, जब नाम लेकर पुकारने में झिझक होती है, हालाँकि उसकी पहचान लगभग पक्की होती है। लेकिन बगीचे का नाम जानने की इच्छा के बावजूद मैं आगे बढ़ता रहा, क्योंकि किसी अजनबी के रूप में खुद को पेश करते हुए किसी को पहचानना मेरे उद्देश्य के लिए उचित नहीं होता। जैसे ही हम द्वार से गुजरे, मेरी आँखों के सामने और भी परिचित दृश्य प्रकट होने लगे—बाजार, छोटी मस्जिद, कोतवालों का चौराहा, महादेव का मंदिर। मैं उन सभी का नाम ले सकता था, और विशेष रूप से एक घर का—उसके पास से गुजरते ही मेरा दिल खुशी से उछल पड़ा। उसमें कुछ भी खास नहीं था; फिर भी वह मुझे अजीब तरह से ताजा लगा—जैसे कि मैं उसे कल ही छोड़कर आया था।

फिर भी मैं चुपचाप चलती रही, और मेरे साथी ने मेरे चेहरे पर झलक रही घबराहट और हैरानी को महसूस नहीं किया। हम घर पहुँचे, जो देखने में एक सभ्य घर था; और मुझे बैठने के लिए कहकर वह उस बूढ़े आदमी को लाने चला गया जिसके बारे में उसने बात की थी। जब वह अंदर आया, तो आलिया! आलिया! मैं भी उसे

नाम से पुकार सकती थी, हालाँकि उसका चेहरा मुरझाया हुआ और कमजोर था। मैं लगभग चिल्लाने ही वाली थी, रहीम खान! लेकिन मैंने खुद को रोक लिया, और जब उसका परिचय मुझे दूसरे नाम, फुतिह मोहम्मद खान से कराया गया, तो मैं चुप रही।

इसके बाद, मैंने सोचा, यह सब शायद एक भयानक सपना था, या हो सकता है कि मैं अपनी यात्राओं के दौरान उस जगह पर गया होऊं, शायद कुछ दिन वहाँ रुका भी होऊं, और इसीलिए वह जगह मुझे जानी-पहचानी लगती है। कुछ संक्षिप्त बातचीत के बाद मेरे नए मित्र ने मुझे जो बताया था, वह सब दोहराया और अपने ससुर से पीर खान की पूरी कहानी विस्तार से बताने का अनुरोध किया।

अध्याय XLIII

अब दुनिया के आधे से ज़्यादा हिस्से में
प्रकृति मृत प्रतीत होती है, और बुरे सपने दुर्व्यवहार करते हैं।
पर्दों से ढकी नींद... अब मुरझाया हुआ खून
...इस प्रकार अपनी दबे पांव चाल से,
वह अपने डिजाइन की ओर एक भूत की तरह बढ़ता है:
मैकबेथ, अंक II, दृश्य II

बूढ़े आदमी ने मेरे अभिवादन का हार्दिक उत्तर दिया; और जब हम ठीक से बैठ गए और हुक्का सबके बीच घूम गया, तो उसने उस लड़की के माता-पिता की दुखभरी कहानी सुनाई जिसे उसने गोद लिया था। उसकी कहानी मेरे नए परिचित की कहानी से कुछ ही अलग थी; और वास्तव में, यह पूरा मामला ठगी का उतना ही सफल उदाहरण प्रतीत हुआ जितना मैंने कभी सुना था। मुझे आश्चर्य है कि वे कौन थे, मैंने सोचा; मैं यह कहानी अपने पिता को बताऊंगा; शायद उन्होंने इसके बारे में सुना हो और मुझे उस लड़के के बारे में कुछ सुराग दे सकें जिसका भाग्य अनिश्चित है। फिर भी, वह लड़का शायद अभी भी हमारे बीच हो; और जैसे ही यह विचार मेरे मन में कौंधा, मुझे आधा यकीन हो गया कि मैं ही वह आदमी हूँ! लेकिन मैंने इसे रोक दिया—यह एक मूर्खतापूर्ण विचार था, जैसा कि कभी-कभी छोटी-छोटी बातों पर मन में आ जाता है और एक पल सोचने के बाद खारिज हो जाता है।

'और उसके बाद आपने उनके बारे में, न ही उस लड़के के बारे में कुछ सुना?' मैंने पूछा।

'कभी नहीं,' बूढ़े ने कहा; 'कभी नहीं; तब से कई साल बीत चुके हैं, और अगर वह लड़का जीवित है, तो वह लगभग आपकी ही उम्र का होगा, मीर साहब; और—या आलिया!' हवा के एक झोंके से दीपक मेरी ओर चमक उठा और वह मेरी ओर देखते हुए चिल्लाया, 'ये चेहरे मुझे जाने-पहचाने लगते हैं!—बोलो, साहब! तुम उसी के बेटे नहीं हो जिसकी हत्या हुई थी?'

मैं स्वीकार करता हूँ कि उनकी गंभीर निगाहें और व्यवहार, साथ ही गाँव के बारे में मेरी पहले से बनी धारणा कि मैं वहाँ परिचित हूँ, ने मुझे लगभग वश में कर लिया था; लेकिन मैं छल करने में इतना माहिर था कि उस संदेह से ज़्यादा देर तक विचलित नहीं हो सका जिसे वह साबित नहीं कर सकते थे, और मैंने लापरवाही से और हँसते हुए जवाब दिया: 'नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता; मेरे पिता अभी जीवित हैं, हालाँकि मेरी माँ मर चुकी हैं; वास्तव में मुझे उनकी बहुत कम याद है। इसके अलावा, हम वंश से शुद्ध सईद हैं, और एक दूर देश में रहते हैं, और आपने अपने पुराने दोस्त को पठान बताया था।'

'तो ऐसा नहीं हो सकता,' बूढ़े ने निराशा भरे भाव से मुँह फेरते हुए कहा; 'फिर भी समानता बहुत स्पष्ट है, और हे मीर साहब, मैं आपसे एक बूढ़े व्यक्ति की गलती को क्षमा करने की विनती करता हूँ; हो सकता है मेरी आँखें कमजोर हो रही हों। फिर भी, मेरे बेटे, उसे देखो और कहो, क्या वह उससे मिलता-जुलता नहीं है?'

'हाँ, बिल्कुल,' दूसरे ने उत्तर दिया, 'और जब मैंने उसे पहली बार देखा तो मुझे उसके चेहरे की समानता देखकर आश्चर्य हुआ; लेकिन यह शायद मेरी कल्पना है, या हो सकता है कि यह उन अकथनीय समानताओं में से एक हो जिन्हें अक्सर लोग देखते तो हैं लेकिन यह समझ नहीं पाते कि वे क्यों मौजूद हैं।'
मैंने कहा, 'लेकिन आपने एक सिक्के की बात की थी, जिसे आप विशेष गुणों से युक्त मानते हैं।'
'जी हां, मीर साहब, और मेरे पिता आपको बताएंगे कि मैंने इसकी प्रभावकारिता को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बताया है।'
दूसरे ने कहा, 'उसने भी ऐसा नहीं किया है; मैंने अनेक ताबीज़ देखे हैं, पर कोई इसके बराबर नहीं: जब यह पहनने वाले के गले में होता है, तो उसे कोई बुराई नहीं आती, कोई बीमारी नहीं होती, और द्वेषी या ईर्ष्यालु की निगाहें उस पर व्यर्थ ही टिकती हैं। निश्चय ही इसमें अद्भुत गुण हैं, क्योंकि यदि यह कभी उसके गले से हट जाए, तो वह बीमार पड़ जाती है या उसका मन अशांत हो जाता है।'
'आलिया के क़पोद्रुत!' मैंने कहा; 'यह ईश्वर की रचना है। ऐसे ताबीज़ सचमुच अनमोल होते हैं, और जिनके पास होते हैं वे भाग्यशाली होते हैं। मेरा एक बेटा था—वह एक फ़कीर की बुरी नज़र का शिकार हो गया, जिसे भीख देने से मना किया गया था; उसने मेरे घर को शाप दिया, और लड़का तड़प-तड़प कर मर गया। मैं घर से बाहर थी, और आप मेरी पीड़ा का अंदाज़ा लगा सकते हैं, महोदय, जब मैं लौटी और मुझे पता चला कि मेरा बेटा मर गया है। मुझे फिर कभी संतान का सुख नहीं मिला; लेकिन मेरी एक बेटी है, जिसकी मैं बहुत देखभाल करती हूँ, और कोई भी ताबीज़, चाहे मुसलमान हो या हिंदू, बेचने के लिए पेश नहीं किया जाता, उसे उत्सुकता से खरीदा जाता है और उसके गले में पहनाया जाता है। इस तरह मैंने बहुत पैसा खर्च किया है, लेकिन अभी तक कोई लाभ नहीं हुआ है; क्योंकि मेरी बच्ची नाज़ुक है, और उसे ऐसे बुरे सपने आते हैं जो उसकी नींद खराब करते हैं और उसके कोमल मन को बेचैन कर देते हैं; और काश, आलिया, मुझे भी आपके बताए गए ताबीज़ जैसा कोई ताबीज़ मिल जाता।'
'महान साहब, हिम्मत बनाए रखिए,' बूढ़े व्यक्ति ने कहा; 'यह तो निश्चित है कि आपने कष्टों से ही अनुभव प्राप्त किया है, फिर भी पवित्र तीर्थयात्रियों की जरूरतों पर निरंतर ध्यान देने से अंततः निश्चित रूप से लाभ होगा, और वे आपकी संतान के स्वास्थ्य और दीर्घायु के लिए प्रार्थना करेंगे।'
'काश आलिया उनकी बात सुन ले!' मैंने पूरे मन से कहा, क्योंकि उस समय मेरा दिल मेरी बच्ची और मेरी प्यारी पत्नी के साथ था।
मैं विदा लेने के लिए उठा, और चूंकि मेरे नए दोस्त ने हमारे शिविर तक मेरे साथ चलने पर जोर दिया, इसलिए हम पैदल ही वहां चले गए।
मैंने कहा, 'तो तुम भोर होते ही तैयार हो जाओगे; हम सुबह की ठंडी हवा के लिए जल्दी यात्रा करते हैं, और मेरे साथी पूर्व दिशा में प्रकाश की पहली किरण फैलते ही उठ खड़े होते हैं।'
उन्होंने कहा, 'मुझ पर भरोसा रखो, मैं तुम्हें इंतजार नहीं करवाऊंगा: हमारे सामने एक लंबा सफर है।'

वह मुझे छोड़कर चला गया। लेटते हुए मैंने सोचा, मुझे वह ताबीज़ चाहिए; उसकी असाधारण शक्ति से मेरा बच्चा सुरक्षित रहेगा, और ताबीज़ों की निरंतर खोज का अंत होगा, जो व्यर्थ और बहुत खर्चीली होती हैं: इसके अलावा, मैं अज़ीमा को ऐसा कोई उपहार नहीं दे सकती थी जिसे वह इतना महत्व दे, जो उसकी नज़रों में मोतियों की माला या कीमती गहनों से कहीं बेहतर हो। इस तरह सोचते-सोचते मेरे विचार घर की ओर चले गए: मेरे खजाने कल्पना में मेरे सामने थे, और मैंने अपने इस बेफिक्र और रोमांचक जीवन की तुलना उन शांत पलों से की जो मैंने उनके साथ वहां बिताए थे—अज़ीमा मेरे बगल में लेटी होती थी, और हमारा बच्चा अपनी मासूम शरारतों से हमारा मनोरंजन करता था। यह अंतर बहुत गहरा था, और मेरे दिल को छू गया। मुझे नींद आ गई; और यात्रा की तैयारियों की चहल-पहल से जब मुझे उठने का आगाह हुआ, तब जाकर मेरी नींद खुली। स्नान करने के बाद, मैंने सुबह की प्रार्थना और शुक्रिया अदा किया, और अपने छोटे से तंबू से बाहर निकलकर देखा कि दल आगे बढ़ने के लिए तैयार था; लेकिन मेरा नया परिचित और उसका परिवार अभी तक हमारे साथ नहीं थे।

'क्या हम आगे बढ़ें?' लालू ने पूछा, जो अब मेरा विश्वासपात्र था, क्योंकि वह भुट्टोटे परिवार का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति था, जब मैं अपने घोड़े के पास खड़ा होकर उस पर सवार होने की तैयारी कर रहा था।

'अभी नहीं,' मैंने कहा; 'मुझे गांव से कुछ लोगों के आने की उम्मीद है; उन्होंने वादा किया था कि वे देर नहीं करेंगे, लेकिन दिन बीतता जा रहा है। किसी को भेजकर उन्हें जल्दी करने को कहो।'

'जी हां, कल रात वाले हमारे दोस्त, मुझे लगता है, मीर साहब। बेशक हम उनका इंतजार करेंगे, और मैं उन्हें जल्दी लाने के लिए एक आदमी भेजूंगा: क्या आप जानते हैं कि कितने लोगों से निपटना होगा?'

'मैं नहीं,' मैंने उत्तर दिया; 'एक पति-पत्नी तो हैं, लेकिन और कितने हैं, यह मुझे नहीं पता। हालांकि, हम जल्द ही देख लेंगे।'

हमारा दूत लगभग तुरंत लौट आया। उसने कहा, 'वे आ रहे हैं; मैं अभी गांव के द्वार तक पहुंचा भी नहीं था कि मैंने उन्हें बाहर निकलते देखा।'

'और उनकी संख्या कितनी है?' मैंने पूछा।

'दो महिलाएं टट्टुओं पर सवार हैं, एक बूढ़ी महिला पैदल चल रही है, और तीन पुरुष तलवार और बंदूक से लैस हैं।'

मैंने कहा, 'कुल छह लोग हैं; लालू, तुम भुट्टोटों को खरी-खोटी सुना दो: अगर आज अच्छी जगह मिल गई तो मैं झिरनी दे दूंगा; अगर नहीं तो काम कल हो जाएगा।'

'जी हां, मीर साहब,' उन्होंने उत्तर दिया; 'लेकिन बेहतर होगा कि हम इसे आज के लिए टाल दें। सच कहूं तो, आज सुबह एक अशुभ संकेत मिला था, और आप जानते हैं कि किसी भी तरह का जोखिम उठाने की कोई जरूरत नहीं है।'

'बिल्कुल नहीं; हम आज रात बेलहास को भेज सकते हैं, और जो काम नियमित रूप से किए जाते हैं, वे सबसे अच्छे तरीके से पूरे होते हैं।'

अब गांव वाले हमारे पास आ गए और हमने एक-दूसरे को नमस्कार किया; हम रुके नहीं, बल्कि इतनी तेज़ी से आगे बढ़े कि गांव वाले हमारे साथ चल सकें; और इस तरह हम रास्ते के अंत तक पहुँच गए। रास्ते में मुझे इस काम के लिए कोई उपयुक्त जगह नहीं दिखी, क्योंकि इलाका घनी आबादी वाला था और गांव एक-दूसरे के बहुत करीब थे। लेकिन मुझे अपने एक परिचित से यह जानकर मन ही मन तसल्ली हुई कि अगला रास्ता एक सुनसान इलाके से होकर गुज़रता है, और उसने मुझे सतर्क और सावधान रहने की सलाह दी, क्योंकि वहां लुटेरे बहुत थे और हम पर हमला हो सकता था।

उस दिन और रात वे हमारे शिविर में ही ठहरे रहे। मैं बड़ी उत्सुकता से उस स्त्री का चेहरा देखने की कोशिश कर रहा था, जिसके पास वह वरदान था जिसे पाने की मेरी इतनी तीव्र इच्छा थी, पर मैं उसे देख नहीं सका; वह पूरी तरह एकांत में थी, या अगर वह अपने पति द्वारा बनाए गए अस्थायी आवरण से बाहर भी निकलती, तो वह एक मोटे लबादे में लिपटी होती, जिससे उसका चेहरा देखना मेरे तमाम प्रयासों के बावजूद असंभव था। पर वह मेरी थी, और मैं इस विचार से गौरवान्वित था कि एक दिन भी बीतने से पहले वह मेरे हाथों में आ जाएगी, और वह ताबीज भी मेरा हो जाएगा। साहब, शायद आप इसे पाने की मेरी इस तीव्र इच्छा पर आश्चर्य करेंगे; लेकिन अगर आप करते भी हैं, तो आप हमें नहीं जानते। हिंदुस्तान में ऐसी कौन सी माँ या पिता है, जो अपने बच्चे या पत्नी के लिए बुरी नज़र से बचाने वाले शक्तिशाली ताबीज की इच्छा धन-दौलत से भी कहीं अधिक न रखता हो, यहाँ तक कि जीवन की सामान्य ज़रूरतों या सुख-सुविधाओं से भी अधिक? एक बच्चा बीमार पड़ जाता है, तो कहा जाता है कि किसी की दृष्टि उस पर पड़ी है, अनगिनत रस्में निभाई जाती हैं, मिर्च जलाई जाती है, कमरे में सरसों के दाने रखे जाते हैं, और न जाने क्या-क्या किया जाता है, जिन्हें अगर मैं बताऊँ तो आप हँस पड़ेंगे; और इसीलिए ताबीज़ों की ज़रूरत पड़ती है। साधुओं से ताबीज़ देने की विनती की जाती है और इसके लिए उन्हें भारी कीमत चुकाई जाती है; फकीरों से बीमार बच्चे पर तांत्रिक मंत्र पढ़ने का आग्रह किया जाता है; और औरतें अपनी हर चीज़, यहाँ तक कि अपने गहने भी, उस ताबीज़ को खरीदने के लिए बेच देती हैं जिसे कारगर माना जाता है। साहब, मैंने एक बच्चे को खो दिया था; दूसरा, मेरी इकलौती संतान, लगातार बीमार रहती थी, और हम उसके बारे में हज़ारों दुखद आशंकाओं से व्याकुल थे। मेरे पास सभी समस्याओं का अचूक इलाज था, कम से कम मुझे तो यही विश्वास था। क्या आप मेरी उस ताबीज़ को पाने की उत्सुकता, मेरी बेचैनी पर आश्चर्य कर सकते हैं?

लालू मेरे पास आया, और उसके साथ बेलहास का सरदार भी था। 'मुझे लगता है कि हमें जितनी जल्दी हो सके आगे बढ़ना चाहिए?' बेलहास ने कहा।

'ज़रूर,' मैंने उत्तर दिया; 'मैंने सुना है कि सड़क एक सुनसान इलाके से होकर गुजरती है, जो यहाँ से कुछ ही कदम दूर शुरू होती है। ध्यान रखना कि तुम एक अच्छी जगह चुनो, और कब्र में छह शव समा सकें।'

'जो हुकम!' उस व्यक्ति ने जवाब दिया; 'लेकिन मुझे उम्मीद है कि सड़क के बारे में दी गई जानकारी सही है, और यह आखिरी चरण की तरह नहीं है, जो शुरू से अंत तक खेती योग्य ज़मीन है। मैं तो सबसे बेहतरीन बेल्हा को भी चुनौती देता कि वह ऐसी जगह चुन ले जहाँ रुकावट की कोई संभावना न हो।'

मैंने कहा, 'निश्चिंत रहो; जानकारी अच्छी है, यह मुझे हमारे सहयात्रियों से मिली है, जो उस रास्ते से सौ बार गुजर चुके हैं।'
'तो मैं सूर्यास्त के समय प्रस्थान करूंगा,' उन्होंने आगे कहा; 'मुझे लगता है कि सुरक्षा की दृष्टि से जितनी जल्दी इस स्थान का चयन किया जाएगा, उतना ही बेहतर होगा।'
'ज़रूर,' मैंने कहा। 'जाओ; तुम्हें जाने की अनुमति है।'
जल्द ही आधी रात हो गई: हम उठ चुके थे और लगभग तीन किलोमीटर चल चुके थे; हम हर गाँव को पार कर चुके थे और उस सुनसान इलाके में पहुँच गए थे जिसका मैंने पहले ज़िक्र किया है। गर्म रात की हवा अभी भी उस बंजर भूमि पर और घनी झाड़ियों से होकर बह रही थी, जिनसे वह क्षेत्र हल्का-फुल्का ढका हुआ था। सन्नाटा पसरा हुआ था, सिवाय हमारे सामान ढोने वाले टट्टुओं में से किसी एक की तीखी हिनहिनाहट के, या फिर प्लोवर पक्षी की उदास और बेजान आवाज़ के, जो अपने साथी को गीत सुना रहा था और दूर से उसकी आवाज़ का जवाब मिल रहा था। एक-दो बार लकड़बग्घे की आधी चीख, आधी दहाड़ सुनाई दी, और वह चीख किसी हत्यारे के चाकू के नीचे दबे हुए बेचारे की चीख जैसी थी, जिसे सुनकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए। मैं दल में सबसे आगे चल रहा था, बेल्हा की बेसब्री से तलाश कर रहा था, जो मुझे यह खुशखबरी दे कि कब्र तैयार है और हम अब किसी बाधा से सुरक्षित हैं; और मुझे इसके लिए ज़्यादा इंतज़ार भी नहीं करना पड़ा। सड़क के मोड़ पर मैंने भरोसेमंद दूत को बैठे हुए देखा; और जैसे ही उसने मुझे देखा और उठा, मैं उससे मिलने के लिए तेजी से आगे बढ़ा।
'भील मंजेह?' मैंने हमारी बोलचाल की भाषा में पूछा।
'मंजे,' जवाब मिला: 'यह तैयार है, मीर साहब।'
'और कितनी दूर, गोपाल?'
'यहाँ से तोप की मारक दूरी पर ही, रेतीले तल वाला एक सूखा नाला सड़क को पार करता है; और ऊँचे और संकरे किनारों के बीच से बहने वाली एक छोटी सहायक नदी का मार्ग ही हमारे लिए सबसे अच्छी जगह थी।'
'अच्छा,' मैंने कहा, 'तुम हमेशा सावधान रहते हो; अब मेरे पास रहना, और जब मैं घोड़े से उतरूं तो उसे पकड़ना: इस मामले में मेरी भी हिस्सेदारी है जिसे मैं किसी और को नहीं सौंपना चाहता।'
मैंने अपने घोड़े की गति धीमी कर दी, और दल जल्द ही मुझसे आगे निकल गया। जैसे ही वे मेरे पास आए, मैं रुक गया और घोड़े से उतर गया।
'खान, तुम्हारी इन सड़कों पर मुसीबत आए,' मैंने अपने एक परिचित से कहा; 'मेरे घोड़े का एक नाल निकल गया है, और उसका पैर थोड़ा दुख रहा है; इसलिए मैं उस पर थोड़ा वजन कम करने के लिए एक-दो कदम पैदल चलूंगा। यकीनन इस पथरीले रास्ते पर अब ज्यादा चलना नहीं पड़ेगा।'
'ज्यादा नहीं; शायद एक-दो क्रॉस; अगर मैं गलत नहीं हूं तो हम एक सूखे नाले के पास होने चाहिए, और वहां से अगला गांव डेढ़ क्रॉस दूर है; उसके बाद सड़क अच्छी है।'

संगीत जैसी एक आवाज़ ने कहा, 'मीर साहब को मेरे टैटू पर सवार होने दीजिए; मैं जकड़ा हुआ और अकड़ा हुआ हूँ, और थोड़ी देर चलने में मुझे खुशी होगी।'
ये मेरी शिकार थी! वो जो पंद्रह मिनट बीतने से पहले ही मेरे हाथों मरने वाली थी। मैंने सोचा, उस आवाज़ के साथ वो ज़रूर खूबसूरत होगी; लेकिन मैं देखूंगा।
'नहीं, नहीं, खान,' मैंने कहा, 'ऐसा नहीं हो सकता; मैं इतना सैनिक हूं कि बिना घोड़े के भी पैदल चल सकता हूं। माशाल्लाह! मेरे अंग मजबूत और लचीले हैं, और मुझे लंबी दूरी की दौड़ में आपसे मुकाबला करने में कोई आपत्ति नहीं होगी।'
'जैसा आप चाहें, मीर साहब, लेकिन आपको बस एक शब्द कहना है और वह घोड़े से उतर जाएगी। आलिया जानती है कि इस सुनसान इलाके में आपकी सुरक्षा के लिए यह एक छोटा सा प्रतिफल है, जिसे आज तक कोई भी इंसान डर और आशंका के बिना पार नहीं कर पाया है। नाले तक भी हम जल्द ही पहुँच जाएँगे; कहते हैं कि कई बहादुरों के खून ने इसकी रेत को भिगो दिया है।'
मैंने देखा कि महिला अपने पति के भाषण पर कांप उठी, और मैंने उसे रोका।
'तुम्हें शर्म आनी चाहिए, खान!' मैंने कहा; 'सोचो कौन सुन रहा है: औरतों के कान खून-खराबे की कहानियाँ सुनने के लायक नहीं होते, सिवाय तब जब वो युद्ध के मैदान की हों, और उन दृश्यों की हों जिनमें तलवार की नोक पर सम्मान और यश प्राप्त किया जाता है। यहाँ तुम सुरक्षित हो; कोई बदमाश डाकू हमारे जैसे काफिले से पंगा लेने की हिम्मत नहीं करेगा, और हम नाले को पार कर लेंगे, जैसे हमने पीछे वाले नाले पार किए हैं, इसके खतरों या इसमें जो कुछ भी हुआ है, उसकी परवाह किए बिना। लेकिन वह क्या था?' मैंने उत्सुकता से पूछा, क्योंकि कोई चीज़ मेरे पैरों के पास से गुज़री।
'एक खरगोश के अलावा और कुछ नहीं,' खान ने कहा; 'किसी घूमते हुए सियार ने उसे डराकर भगा दिया है, और वह छिपने के लिए कोई और जगह ढूंढ रही है।'
'एक खरगोश!' मैंने दोहराया, मेरे खून का प्रवाह मानो अचानक रुक गया, क्योंकि मैंने ठगों के लिए उस भयानक अपशगुन के बारे में सोचा—एक ऐसा अपशगुन जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था, या यदि नजरअंदाज किया गया तो निश्चित रूप से सबसे भयानक विपत्तियाँ, मृत्यु या लंबी कैद से कम कुछ भी नहीं, घटित होंगी।
'जी हां, मीर साहब, एक खरगोश। इसमें आश्चर्य की क्या बात है?'
'लेकिन मेरे ठीक रास्ते में,' मैंने अनजाने में बुदबुदाया।
"यह तो संयोग था," उस आदमी ने कहा; "इसमें क्या है?"
'कुछ नहीं,' मैंने उत्तर दिया; 'कुछ नहीं,—मेरे देश में इसके बारे में एक पुराना अंधविश्वास है, लेकिन मुझे लगता है कि यह एक बूढ़ी औरत की कहानी है।'
मैं चुपचाप इधर-उधर टहलती रही। हे आलिया! मेरे हृदय में कितना उथल-पुथल मच रहा था! मैंने तुम्हें बताया है कि मैं शकुनों की अवहेलना करती थी: मुझे उनकी परवाह नहीं थी, केवल इसलिए कि वे मेरे

आदमियों के लिए ठग्गी की आत्मा थे; और उन्हें प्रसन्न करने के लिए मैं दिखावा करती थी कि मैं उनका विशेष रूप से पालन करती हूँ। लेकिन जब सच्चाई सामने आई तो मेरा मन भयभीत हो गया। भवानी के आदेशों और शकुनों की जानबूझकर अवहेलना करने पर उसके प्रतिशोध की हर कहानी मेरे दिमाग में एक के बाद एक कौंध गई— कैसे एक की कीड़ों द्वारा खाकर मृत्यु हो गई; दूसरे को दुनिया जिसे न्याय कहती है, उसका शिकार होना पड़ा; कैसे किसी ने अपनी पत्नी या बच्चों को खो दिया— और मेरा भी अभी एक बच्चा था! मैं कहती हूँ कि मैं कुछ देर के लिए मानसिक भय से कांप उठी; लेकिन मेरा हृदय दृढ़ था, मेरा मन महान था; और मेरी पुकार पर वह ऐसे जाग उठा, जैसे कोई अच्छा घोड़ा, जो सफर से थका हुआ हो, फिर भी संघर्ष या खतरे के आने पर अपने मालिक को ऐसे ही बहादुरी से ले जाता है मानो अभी-अभी अस्तबल से निकला हो। हाँ, मेरी आत्मा में जोश आ गया। मैंने मन ही मन कहा, ऐसी बेकार की कहानियों को छोड़ो, जो सिर्फ बच्चों को डराने का काम करती हैं; अमीर अली इनसे डरने वाले नहीं हैं। और उस आकर्षण को खोना— जिसकी वजह से मुझे इतनी चिंता है, वो लगभग मेरी मुट्ठी में है! मैं जोर से हँस पड़ा।

'आप तो बड़े खुश हैं, मीर साहब,' लालू ने कहा, जिसे मैंने उनके घर पर देखा; 'हमें अपने विचार बताइए, ताकि हम भी हंस सकें; और आलिया की कसम! हमें इसकी बहुत जरूरत है, क्योंकि मैंने इससे ज्यादा निर्दयी देश कभी नहीं देखा।'

'बस एक ख्याल आया,' मैंने कहा। 'क्या आपको पता है मेरा हुक्का कहाँ है?'

उन्होंने उत्तर दिया, 'मेरे पास नहीं है, लेकिन मैं इसे मंगवाऊंगा।' और हमारे पीछे आने वालों ने इसे मंगवाने का आदेश दे दिया।

यह तैयारी का संकेत था। सभी ने इसे सुना और अपनी-अपनी जगह ले ली। वह स्थान ज़्यादा दूर नहीं हो सकता था, और मेरे अंतिम शब्दों के साथ ही हमारे साथियों के जीवन की हर उम्मीद खत्म हो गई।

और यह ज़्यादा दूर भी नहीं था; कुछ ही क्षणों की पैदल दूरी पर हम नाले के किनारे पहुँच गए। सबसे पहले मैं उसमें उतरा और अपना रूमाल खोला। मैं तैयार था; एक-एक करके बाकी लोग भी मेरे पीछे आए और अब हम सब सूखे और रेतीले मैदान के बीचोंबीच थे, एक साथ मिले हुए, पीड़ित और उनके विनाशक। मैंने देखा कि समय आ गया है और मैंने झिरनी दी।

वे गिर पड़े—अरे सब! और लगभग एक ही समय पर। कोई आवाज़ नहीं, कोई चीख नहीं; मैंने बस उस स्त्री के पति की हल्की सी घुरघुराहट सुनी, जो मेरी घातक पकड़ में मौत की पीड़ा से तड़प रही थी; कुछ तड़पों के बाद वह मर गई! मैंने उसके सीने को ढकने वाली चोली फाड़ दी; मैंने उसमें हाथ डाला और उस अभी भी गर्म सीने पर उस इनाम को टटोला जिसकी मुझे इतनी बेसब्री से चाह थी। मैंने उसे रेशम की डोरी से बंधा पाया— जिसे तोड़ने के मेरे सारे प्रयास विफल रहे; लेकिन मैंने अपना खंजर निकाला और उसे काट दिया, और खुशी के उन्माद में उस खजाने को अपने दिल से लगा लिया। मैंने सोचा, चेहरे को एक नज़र देख लो, और लुघाई अपना काम कर देंगे; और मैंने उसे निहारा। वह सुंदर था, बहुत सुंदर; लेकिन भाव और आँखें—, साहब! मैंने उसे क्यों देखा? अगर मैंने ऐसा न किया होता तो मैं वर्षों की पीड़ा से बच सकता था। मृत्यु के

संदर्भ में मैंने जितने भी चेहरे देखे हैं, उनमें से वह चेहरा आज भी मुझे सताता है, और सोते या जागते हुए हमेशा सताता रहेगा।

ऐसा नहीं है कि उस समय इसका मुझ पर कोई खास असर हुआ हो। नहीं, इसका असर बाद में हुआ, जैसा कि आप आगे सुनेंगे, और जब मुझे अपने किए का एहसास हुआ। हाँ, वह खूबसूरत थी, मेरी अपनी अज़ीमा की तरह गोरी, उतनी ही कोमल और बेदाग। मैंने सोचा, लुघाई लोग इन खूबसूरती को नहीं देखेंगे, और न ही मैं उनकी भद्दी टिप्पणियों को सुन सकता था; इसलिए मैंने उसके सीने को ढक लिया, उसके शरीर को उसी चादर में ठीक से लपेट लिया जो उसके चारों ओर लिपटी हुई थी, और उनके आने का इंतज़ार करने के लिए उसके पास बैठ गया।

'हे जमादार साहब!' गोपाल ने मेरे पास आकर कहा, 'क्या आपने शव से कपड़े नहीं उतारे? लेकिन मुझे उतारने दीजिए; वह चादर दो रुपये की है।'

'उसे छोड़ दो!' मैं चिल्लाया; 'उसे मत छुओ; वह तुम्हारे जैसे लोगों के देखने लायक नहीं है। और सुनो, मेरे दोस्त, उसे जैसा तुम देख रहे हो, वैसे ही दफना दो। बाकी लोग चाहे जो कहें, उन्हें बता देना कि यह मेरा आदेश है; और तुम्हारे हिस्से के लिए, जब हम झालोन पहुँचेंगे तो तुम्हें एक नई चादर मिलेगी।'

'जो हुकुम,' उस आदमी ने कहा, 'तुम्हारी बात मानी जाएगी। लेकिन क्या तुमने गहनों की तलाश की है?'

'मेरे पास है; उसके पास कुछ नहीं था। उसे यहाँ से ले जाओ और यह सुनिश्चित करो कि मेरी बात मानी जाए। फिर भी यहीं रहो, मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।'

मैं उसके साथ गया। कब्र वहीं थी जहाँ उन्होंने बताया था, एक छोटी जलधारा के ऊँचे और संकरे किनारों के बीच; वह गहरी थी और उसमें पहले से ही कुछ शव दफ़न थे। मैंने देखा कि उस सुंदर लड़की का शव उनके ऊपर सावधानीपूर्वक रखा गया था, और मैंने उन्हें चाकू से उसे क्षत-विक्षत करने से रोका, जैसा कि उन्होंने अन्य शवों के साथ किया था। मैंने तब तक प्रतीक्षा की जब तक कि सारा काम समाप्त नहीं हो गया और कब्र को ढक नहीं दिया गया; और अपने बिखरे हुए साथियों को इकट्ठा करके हम अपनी यात्रा पर आगे बढ़े। यह अच्छा हुआ कि हम इतनी जल्दी में थे, क्योंकि उस स्थान से मुश्किल से आधा कदम दूर ही हमें यात्रियों का एक बड़ा समूह मिला, जो अपनी संख्या पर भरोसा रखते हुए, हमारी तरह ही रात में आगे बढ़ गए थे। हमने आपस में संक्षिप्त अभिवादन किया, रास्ते के बारे में कुछ पूछताछ की, पानी कहाँ मिलेगा और क्या मिलेगा, और हम आगे बढ़ गए।

जैसा कि आप समझ सकते हैं, हमारा लूटा हुआ माल बहुत कम था: लगभग चालीस रुपये, कुछ कपड़े, मृतक का टैटू और महिलाओं के कुछ साधारण गहने, जिनकी कीमत शायद सौ रुपये ही होगी। लेकिन असली इनाम तो मेरे पास था, जो मेरी नज़रों में हज़ारों रुपये का था। किसी को पता नहीं था कि यह मेरे पास है, और मैं इसे हमेशा अपने गले में लटकाए, दिल से लगाए रखती थी। हज़ार बार मैंने इसे निकालकर निहारा; इसमें कुछ ऐसा था जिसका मुझ पर रहस्यमय असर होता था: कई बार मुझे लगा कि मैंने इसे पहले भी देखा है, और मुझे लगा कि इसकी पुरानी और घिसी-पिटी सतह मुझे जानी-पहचानी लग रही है। लेकिन मेरे दिमाग ने

मुझे इस विचार का कोई सुराग नहीं दिया, और मैंने इस असर को ताबीज़ के प्रभाव का नतीजा माना, और मुझे इसकी शक्ति का पूरा यकीन था। अज़ीमा इसे कितना पसंद करेगी! मैंने सोचा;—अपने आप में तो यह अनमोल है, फिर भी उसकी और मेरी नज़रों में एक खजाना है, क्योंकि यह हमारे बच्चे की रक्षा करेगा, और कई ईर्ष्यालु निगाहें उस पर टिकी हैं।

हम अभी भी झालोन से बहुत दूर थे, और मौसम आगे की यात्राओं के लिए अनुकूल था; लेकिन मैं तृप्त हो चुका था। अजीब बात है, मुझे अब रोमांच की प्यास नहीं थी; और यद्यपि रोमांच आया, और कुछ लोग हमारे हाथों में सौंप दिए गए, फिर भी मैंने उनकी तलाश नहीं की। जिन्हें हमने नष्ट किया, वे आकस्मिक यात्री थे जो हमारे दल में शामिल हो गए थे, और जिनका विनाश अपरिहार्य था।

हमने मालवा की सीमा पर स्थित एक गाँव में आम विचार-विमर्श किया; और यद्यपि कुछ लोग आगरा तक उत्तर की ओर और फिर वहाँ से झालोन तक जाने के पक्ष में थे, मैंने उनकी बात नहीं मानी, और वास्तव में अधिकांश लोग मेरे पक्ष में थे, जो हमें जो मिला था उससे संतुष्ट थे और मेरी ही तरह अपने घर लौटने के लिए तरस रहे थे। 'लेकिन मेरे मित्रों,' मैंने कहा, 'घर लौटने से हमें उत्तर की ओर जाने की तुलना में कम लाभ नहीं मिलेगा। सड़कें तो सड़कें हैं, और हम जहाँ भी जाएँगे, उन पर यात्री अवश्य मिलेंगे। हमें अपनी सतर्कता में ढिलाई नहीं बरतनी चाहिए, और अमीर अली के सौभाग्य पर भरोसा रखना चाहिए। विजय हमेशा उनके साथ रही है, और उनका सितारा अभी भी बुलंद है। सबसे बढ़कर, हमें शकुनों का ध्यान रखना चाहिए और उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए; यदि हमारा भाग्य शीघ्र ही अपने घर लौटना है, तो शकुन ही हमारे कार्यों और योजनाओं का निर्धारण करेंगे।'

मेरे भाषण की खूब सराहना हुई; शकुनों का अध्ययन किया गया; और यद्यपि कोई उल्लेखनीय शगुन नहीं दिखा, फिर भी सबसे जानकार ठगों की राय में, जब तक कोई नई घटना या अशुभ शगुन न आ जाए, तब तक अपनी वर्तमान दिशा पर बने रहना उचित था। तदनुसार, हमने अपना मार्ग जारी रखा।

मुझे याद नहीं कि कितने दिन बाद की बात है, लेकिन हम बुंदेलखुंद के एक बड़े कस्बे टीरी में डेरा डाले हुए थे और दो दिन से वहाँ बुनीज की तलाश में थे। तब तक हमें कोई बुनीज नहीं मिली थी, जो हमारी बदकिस्मती थी; लेकिन हमारे तिलहाई (पारंपरिक माओरी) पूरी तरह से काम में लगे हुए थे, और मैंने ठान लिया था कि बिना किसी रोमांच के कस्बे को नहीं छोड़ूंगा, क्योंकि झालोन जाने वाले रास्ते पर यही आखिरी जगह थी जहाँ हमें किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति से मिलने की उम्मीद थी। हालाँकि, दोपहर में सोथा और तिलहाई उदास चेहरों के साथ लौटे और कहने लगे कि उन्हें किसी से मुलाकात नहीं हुई, सिवाय कुछ दयनीय प्राणियों के जिन्हें नष्ट करने का कोई मतलब नहीं था; और सभी अगली सुबह वहाँ से निकलने के लिए तैयार थे।

मुझे अपनी बदकिस्मती पर गुस्सा आ रहा था, पता नहीं क्यों। मैंने उन सभी से कहा, 'फिर भी कल तक रुकिए; मुझे अंदर से लग रहा है कि कल शुभ दिन होगा, और एक दिन कोई बड़ी बात नहीं है।' मेरी इच्छा उनके लिए सर्वोपरि थी, और अगले दिन सुबह-सुबह मैंने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने, अपने सबसे दिखावटी हथियार उठाए, और कुछ ठगों को अपने निजी अंगरक्षकों की तरह साथ लेकर शहर की ओर चल

पड़ा। मैं अपने घोड़े को उछल-कूद करवाता रहा, ताकि अपनी शानदार घुड़सवारी का प्रदर्शन कर सकूँ। मैंने बाज़ार और मुख्य सड़कों पर दो बार चक्कर लगाया, लेकिन मुझे किसी भी तरह की सफलता या सौभाग्य की उम्मीद नहीं दिखी। अंत में, एक बड़े पीपल के पेड़ की छाया में एक चबूतरे पर बैठे तीन सभ्य दिखने वाले मुसलमानों को देखकर, मैं उनके पास गया और उनसे पूछा कि क्या वे मुझे मोती या कीमती पत्थरों के किसी व्यापारी का पता बता सकते हैं, क्योंकि मैं कुछ खरीदना चाहता था।

तीनों में सबसे बड़े ने कहा, 'क्या आप सचमुच ऐसा पूछ रहे हैं? या आप केवल यह जानने के लिए पूछ रहे हैं कि क्या हमारा गरीब शहर आपको ऐसी कीमती वस्तुएं उपलब्ध करा सकता है?'

मैंने कहा, 'ईश्वर न करे, महोदय, कि मुझ जैसी इतनी कम उम्र की लड़की आप जैसे उम्रदराज और सम्मानित व्यक्तियों के साथ मजाक करने की हिम्मत करे। मैं सचमुच वही चाहती हूँ जो मैंने कहा है, और अगर आप में से कोई मेरी मदद कर सके तो मुझे बहुत खुशी होगी, क्योंकि मैं यहाँ अजनबी हूँ।'

“चूंकि ऐसी स्थिति है,” उस बुजुर्ग सज्जन ने उत्तर दिया, “मुझे इस समय भी आपको शेख नुसरुद्दीन से मिलवाते हुए खुशी हो रही है, जो मेरे बगल में बैठे हैं और उस प्रतिष्ठित पेशे से जुड़े हैं जिसकी आप तलाश कर रहे हैं। लेकिन बेहतर होगा कि आप घोड़े से उतर जाएं और यदि आपकी इच्छा हो, तो जब तक आप चाहें, हमारे मुजलिस में शामिल हो जाएं। मुझे पूरा विश्वास है कि मेरे आदरणीय मित्र तब आपको अपने निवास स्थान तक ले जाने और आपको आवश्यक वस्तुएं दिखाने में प्रसन्न होंगे।”

मैंने कहा, 'आप दयालु हैं, और मैं आपका विनम्र निमंत्रण स्वीकार करता हूँ।' इतना कहकर मैं घोड़े से उतरा और कुछ सीढ़ियाँ चढ़कर वहाँ पहुँचा जहाँ वे बैठे थे।

बैठने की औपचारिकताओं में कुछ क्षण व्यतीत हुए। मेरे नए परिचित ने हुक्का और शरबत मंगवाया, और कुछ ही क्षणों में हमारे बीच अच्छे संबंध बन गए।

'आपका विशिष्ट नाम क्या है?' तीनों में से सबसे बड़े व्यक्ति ने पूछा, जिसने सबसे पहले मुझसे बात की थी।

मैंने अपना नाम रखा:—'एक गरीब स्यूद,' मैंने कहा; 'हमारे पैगंबर का एक अयोग्य वंशज, जिनके नाम पर शांति हो!'

'माशाल्लाह! मैंने कहा था ना,' बूढ़े ने कहा। 'माशाल्लाह! इस महान वंश को पहचानने में कोई गलती नहीं हो सकती; और उनकी वाणी भी! मेरे मित्रों, क्या आप कहते हैं, क्या यह हाफ़िज़ की कविता की तरह मधुर और लयबद्ध नहीं है?'

'आमीन! आमीन!' दोनों ने एक स्वर में कहा, "बिल्कुल सही; युवा सईद अपने कबीले का एक योग्य प्रतिनिधि है, और हमें उससे परिचित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।"

मैंने कहा, 'आप मुझे अभिभूत कर रहे हैं, महोदय; मैं इन प्रशंसाओं के योग्य नहीं हूँ; क्योंकि मैंने अपने सारे दिन शिविरों और संघर्षों में बिताए हैं, इसलिए मैंने उन शिष्टाचारों में से कुछ ही सीखे हैं जो प्रत्येक सच्चे विश्वासी के व्यवहार को सुशोभित करने चाहिए।'

'क्या आपने सिंधिया के साथ काम किया है?' मोती व्यापारी ने पूछा।

'नहीं,' मैंने कहा, 'उनकी सेनाओं में नहीं, हालांकि उनके साथ रहते हुए मैंने काफी भीषण लड़ाई लड़ी है। मैंने दुखुन में सेवा की है; और मुझे यह कहते हुए गर्व है कि मैंने एलिचपुर के सलाबुत खान के झंडे तले सेवा की है।'

'अच्छा नाम,' सबने कहा; 'महान खान ने भी बहादुरी से इसे अर्जित किया है, हालांकि हाल के संघर्षों में वह हमारी तरफ नहीं थे।'

मैंने कहा, 'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; जहां भी प्रहार करना होता था, या लड़ाई या हमले की उम्मीद होती थी, सलाबुत खान हमेशा सबसे पहले मैदान में उतरता था और सबसे आखिर में वहां से निकलता था।'

'और आपका गंतव्य, स्यूद?' मोती व्यापारी ने पूछा।

'झालोन,' मैंने उत्तर दिया। 'सलाबुत खान ने अपनी सेना कम कर दी है; और मुझ जैसे घुड़सवार के लिए अब कोई नौकरी की उम्मीद न होने के कारण, मैं अपने पिता के पास घर लौट आया हूँ और राजा की सेवा में लग गया हूँ—जिन्हें आलिया बचाए रखे! क्योंकि वे हिंदुस्तान के किसी भी राजकुमार की तरह उदार हैं; और उनकी ओर से मैं हाल ही में दौलुत राव के दरबार में कुछ विवादित मामलों को लेकर गया था। मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि सब कुछ शांतिपूर्वक सुलझ गया है।'

'सूभान आलिया!' तीसरे सम्मानित व्यक्ति ने चिल्लाकर कहा; 'ऐसा कैसे हो सकता है, जब हमारे सम्मानित अतिथि ने बातचीत को सफलतापूर्वक अंजाम दिया है?'

मैंने एक बार फिर धरती पर सिर झुकाया और सम्मान स्वीकार किया। कुछ संक्षिप्त बातचीत हुई और मैं जाने के लिए उठ खड़ा हुआ।

मैंने कहा, 'मेरा समय कीमती है, और मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ। मुझे अपने साथ आए लोगों के बारे में बहुत कुछ व्यवस्था करनी है, और मैं चौरी जाकर कोतवाल से उनका हिसाब-किताब निपटाने जा रहा हूँ: यदि आदरणीय शेख अपने किसी सेवक को अपना निवास स्थान बताने की अनुमति दें, तो मैं उसे देख लूँगा और सूर्यास्त से पहले उनसे मिलने जाऊँगा।'

'नहीं, मीर साहब, ऐसा नहीं हो सकता,' शेख ने उत्तर दिया: 'देखिए, मैं तैयार हूँ, मैं आपके साथ चलूँगा; मेरा छोटा-सा घर ज़्यादा दूर नहीं है, और अल्लाह न करे कि मैं आपके समय में दखल देने का ज़रिया बनूँ।'

वह उठा, अपनी कमर कसी, अपने कंधों पर शॉल डाला और अपने पैरों में चप्पलें डालकर मेरे साथ चलने के लिए तैयार हो गया।

मैंने दूसरों से कहा, 'तो मैं अब विदा लेता हूँ, महोदय; आप सभी स्वस्थ रहें!'

'बिना तवा और उत्तरे के नहीं, मीर साहब,' बड़े साहब ने कहा; 'ऐसा नहीं हो सकता कि हम आपको कुत्ते की तरह जाने दें।' और एक सेवक को बुलाकर सामान मंगवाया गया। तवा मुझे दिया गया; मेरी दाढ़ी और बगल में विधिपूर्वक तेल लगाया गया, और कुछ और सलाम और शुभकामनाओं के बाद, मैं अपने नए परिचित मोती व्यापारी के पीछे चल पड़ा।

जब मैं उसके पास से गुजर रहा था, तो मेरे एक सहायक ठग ने रामासी भाषा में मुझसे फुसफुसाते हुए पूछा, 'क्या वह बुनिज बनने वाला है?'
'चुप रहो!' मैंने कहा, 'एक शब्द भी मत बोलो; बल्कि तुम सब हमारे आगे दौड़ो और रास्ता साफ करो, मानो मैं कोई महान व्यक्ति हूँ।'
उन्होंने मेरी बात मानी और चिल्लाते हुए और भीड़ को धक्का देते हुए आगे दौड़ पड़े, मानो मैं पचास वंशों और सौ उपाधियों वाला कोई रईस हूँ।
हम जल्द ही व्यापारी के घर पहुँच गए; और दरवाज़े पर अपनी चप्पलें छोड़कर, उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे तुरंत अपने निजी कमरे में ले गया, जहाँ शायद वह अपना कारोबार करता था या अपने सबसे अच्छे ग्राहकों से मिलता था। वह एक बरामदा था, जो एक आँगन में खुलता था, जिसके बीच में एक छोटा सा फव्वारा था; उसके किनारों पर अलग-अलग आकृतियों में लाल खसखस और लार्कस्पर के फूल लगे थे; और एक-दो केले के पेड़ अपनी चौड़ी हरी पत्तियों को चारों ओर फैलाए हुए थे। वह जगह ठंडी और बेहद साफ-सुथरी लग रही थी। जिस कमरे में हम बैठे थे, उसकी हाल ही में सफेदी की गई थी, और उसका फर्श सफेद कपड़े से ढका था, सिवाय मुसनूद के, जो पीले कपड़े का था और उस पर नीले मखमल की किनारी लगी थी; कुछ बड़े आलीशान दिखने वाले तकिए मुझे आराम करने और दुनिया और उसकी चिंताओं को भूल जाने के लिए आमंत्रित कर रहे थे। कुछ देर बाद, मैंने सोचा, ऐसा ही मेरा अपना घर होगा; फव्वारा बनाना आसान है, और मैं भी इस सज्जन की तरह शांति और सुकून का आनंद उठाऊँगा। मैंने ऐसे सौ स्थान देखे थे, लेकिन उस जगह की सादगीपूर्ण स्वच्छता और आराम ने मुझे अत्यंत प्रभावित किया; और हालांकि मैं उस व्यक्ति के शांतिपूर्ण जीवन से ईर्ष्या कर रहा था, मैं मन ही मन उसे अपने साथ बहलाने की योजना बना रहा था, जिसे पूरा करने के लिए मुझे समय मिल गया, क्योंकि वह मुझे बैठा छोड़कर कुछ समय के लिए अनुपस्थित हो गया था।

अध्याय 14

होरेशियो। वहाँ के कारोबार का क्या मुद्दा है?
हैमलेट। यह संक्षिप्त होगा, अंतरिम समय मेरा है:
और मनुष्य का जीवन एक शब्द कहने से अधिक कुछ नहीं है।
हैमलेट, अंक V, दृश्य 2

कुछ समय बाद वह एक छोटा संदूक लेकर लौटा और अपने साथ एक सुंदर दिखने वाले लड़के का हाथ पकड़े हुए था, जिसे उसने मुझे अपने पहले बेटे के रूप में पेश किया। वह लगभग बारह वर्ष का था, बुद्धिमान दिखता था, सुंदर था और उसमें ऐसा आत्मविश्वास था जो मैंने पहले कभी नहीं देखा था।

मैंने कहा, 'मेरे मित्र, आलिया ने तुम पर कृपा की है; और साहिब ज़ादा अपने पिता के योग्य हैं। मेरा भी एक पुत्र था, जो मुझसे पहले वाले बालक जैसा ही होने का वादा करता था; लेकिन यह ईश्वर की इच्छा थी! और अब मेरा घर अकेला है। फिर भी मैं अपने दुखों को एक अजनबी पर क्यों थोपूँ? निःसंदेह तुम्हारे पास उसी वृक्ष के और भी फूल होंगे।'

व्यापारी ने कहा, 'वे तीन हैं, और वे मेरे जीवन का गौरव हैं; क्योंकि आखिर धन क्या है? सम्मान क्या है? संसार में नेक काम या इज्जत का क्या मतलब है, जब तक कि कोई उत्तराधिकारी न हो, जो आने वाली पीढ़ियों को अपने पिता के बारे में बताए? और तुम अभी जवान हो। निराश क्यों हो? आलिया एक सच्चे स्यूद की प्रार्थनाओं को अनसुना नहीं करेगी।'

'अफ़सोस,' मैंने कहा, 'मैं इसके बारे में नहीं सोचती। मेरी एक बेटी है, जिसका विवाह एक नेक पड़ोसी के बेटे से तय हो चुका है, और फिलहाल मेरी सारी उम्मीदें उसी पर टिकी हैं। उसी के लिए मैं विवाह समारोहों के लिए कुछ मोती ढूंढ रही हूँ।'

'और ये रहे, मीर साहब; सूरत और सेरेंडीब के मोती— ऐसे रत्न जिन्हें पहनकर कोई बादशाह भी गर्व महसूस करेगा।' और उन्होंने संदूक खोला और उसके अंदर की खूबसूरत चीजें मेरी प्रशंसा भरी निगाहों के सामने प्रदर्शित कीं।

मैंने कहा, 'ये वाकई खूबसूरत हैं; लेकिन मुझ जैसे गरीब सैनिक के लिए इतने महंगे गहने खरीदना मुमकिन नहीं है। कृपया मुझे कुछ सस्ते गहने दिखाइए, जो मेरी मौजूदा जरूरतों को पूरा कर सकें, क्योंकि मेरी ज़रूरतें तीन सौ रुपये से ज़्यादा नहीं हैं।'

उन्होंने एक डोरी चुनी और मुझे दिखाई; मुझे वास्तव में उसी की जरूरत थी, और खरीदारी तुरंत पूरी हो गई। फिर भी, चमकीली मालाएँ मेरे सामने पड़ी थीं; और जब मैंने मोतियों की समरूपता और उनके चमकीले पानी से बेहद खूबसूरत एक माला उठाई, तो मैंने अनायास ही कहा, 'काश मेरे संरक्षक इन्हें देख पाते!'

'अरे! क्या?' व्यापारी चिल्लाया। 'क्या आपको लगता है कि वह इन्हें खरीदेगा?'

मैंने कहा, 'बिल्कुल; क्योंकि मेरे झालोन छोड़ने से कुछ समय पहले ही राजा को मोतियों की बहुत ज़रूरत थी, और उन्होंने उन्हें मंगवाने के लिए इधर-उधर भेजा, लेकिन सफलता नहीं मिली; एक भी मोती नहीं मिल सका; और वह सूरत से भी कुछ मोती मंगवाने की बात कर रहे थे; लेकिन यात्रा की लंबाई और जोखिम ने उनके दिमाग से यह विचार निकाल दिया।'

व्यापारी कुछ देर सोचता रहा। अंत में उसने कहा, 'और तुम्हें सच में लगता है कि वह इन्हें खरीद लेगा?'

'हां, मुझे पता है। उनकी बेटी की शादी अगले साल होगी और वह समारोह के लिए गहने इकट्ठा कर रहे हैं।'

'ये बहुत खूबसूरत हैं,' व्यापारी ने रस्सी उठाते हुए कहा, 'है ना? मेरे पास ये दो साल से हैं, और यहाँ कोई इतना अमीर नहीं है कि इन्हें खरीद सके; फिर भी ये सस्ती हैं, मैं तुम्हारी दाढ़ी की कसम खाकर कहता हूँ, और मुझे इनसे बहुत कम मुनाफा होने की उम्मीद है।'

'कीमत?' मैंने पूछा।

'मीर साहब, आप जैसे गरीब, सय्यद और सिपाही से तो मैं छह हज़ार रुपये ले लूँगा, पर राजा और काफ़िर से आठ हज़ार रुपये माँगूँगा।' 'अच्छा,' मैंने कहा। 'अब मेरी बात सुनिए। जैसा आप कहते हैं, मैं गरीब हूँ; और इस शादी का भारी खर्चा मुझ पर आ रहा है। क्या आप मेरी मदद स्वीकार करके मोती झालोन ले जाकर वहाँ बेचने के बारे में सोचते हैं? राजा मुझसे बहुत मार्गदर्शन लेते हैं; और अगर मैं उनसे आठ हज़ार रुपये ले लूँ, तो आप मुझे उन मोतियों के तीन सौ रुपये वापस कर देंगे जो मैंने खरीदे हैं? इस पर अच्छे से सोच-विचार कर लीजिए और मुझे अपना फैसला बताइए।'

व्यापारी ने कहा, 'झालोन बहुत दूर है, और अगर मैं अपने मोती बेच दूं, तो पैसे लेकर वापस कैसे आऊंगा? चोरों को इस सौदे की खबर लग जाएगी, और हो सकता है कि वे मुझे रास्ते में रोककर मार डालें।'

मैंने उत्तर दिया, 'चिंता मत करो, इस बात की चिंता मत करो। जो व्यक्ति राजा की कृपा करने के लिए इतनी दूर अपने घर से आया है, राजा उसे वापस लौटने के लिए सुरक्षा प्रदान करेगा। मुझे इस बात का पूरा विश्वास है; और यदि यही एकमात्र कारण है जो आपको मेरे साथ आने का निर्णय लेने से रोक रहा है, तो बेहतर होगा कि आप इसे अपने मन से तुरंत निकाल दें।'

उन्होंने कहा, 'मैं ज्योतिषी से सलाह लूंगा।'

'नहीं, शेखजी,' मैंने उत्तर दिया, 'यह तो सरासर बेतुका है। सच्चे विश्वासियों को ज्योतिषियों से क्या लेना-देना? आप जिस व्यक्ति से सलाह लेना चाहते हैं, वह हिंदू है, और यह शब्द अपने आप में ही घृणित है। इसके अलावा, खतरा क्या है? मेरे साथ लगभग पचास आदमी हैं, मेरे अपने सेवक और राजा के सिपाही, इसलिए आपको कोई नुकसान नहीं हो सकता; आपकी वापसी के लिए कुछ घुड़सवार होंगे, जो आपकी पूरी सुरक्षा करेंगे। फिर, आपने कहा कि आपके पास यह हार दो साल से है, और इसके लिए कभी कोई प्रस्ताव नहीं आया; तो फिर आप अपना पैसा बेकार क्यों रखे हुए हैं? समझदारी से काम लीजिए, और मेरे साथ चलिए।'

'जी पिताजी,' लड़के ने कहा, 'वीर मीर साहब की बात सुनिए; मैं आपके साथ चलूंगा और अपने शहर से बाहर की दुनिया देखूंगा। आपको पता है आपने मुझसे वादा किया था कि अपनी पहली यात्रा में मुझे साथ ले जाएंगे।'

'खैर, यह तो वाकई बहुत लुभावना है,' व्यापारी ने कहा। 'आठ हज़ार रुपये, आपने कहा, मीर साहब? यह तो वाकई बढ़िया सौदा है, और ये छोटी-मोटी चीज़ें मेरे यहाँ किसी काम की नहीं हैं। सच कहूँ तो,' उसने आगे कहा, 'मैंने इन्हें एक पिंडारी से लिया था, जो चीतू या दोस्त मोहम्मद के साथ काम करता था, मुझे ठीक से याद नहीं; उसने इन्हें जितना हो सका संभाल कर रखा, लेकिन लुभुरों को फिरंगियों ने तितर-बितर कर दिया (हमारे मुक्त व्यापार पर एक बड़ा झटका), और हालाँकि उसके कुछ घुड़सवार, उसके अपने अनुयायी, उसके साथ रहे, फिर भी उसके पास उन्हें देने के लिए कुछ नहीं था; अंत में, जब उन्होंने विद्रोह कर दिया और अपने वेतन के लिए उसकी जान को खतरा बताया, तो उसे इन्हें बेचने के लिए मजबूर होना पड़ा, और मैंने इन्हें खरीद लिया।'

मैंने कहा, 'और ये तुम्हें सस्ते में मिले?'

जी हां, ये महंगे नहीं थे, मीर साहब; मजबूरी में कोई भी मोलभाव नहीं करता। मुझे ये सस्ते में मिले; और फिर भी मैं कसम खाकर कहता हूं कि आठ हजार रुपये में भी ये सस्ते ही हैं। मैं ये अपने अनुभव से कह रहा हूं; क्योंकि मैंने इससे भी बुरे दाम वाले सामान महदाजी सिंधिया को दस हजार में बेचे हैं; लेकिन अब वो इन्हें नहीं खरीदेंगे, और ये मेरे ऊपर बोझ बने हुए हैं।

'इसलिए, शेखजी,' मैंने कहा, 'आपके लिए बेहतर होगा कि आप मेरे साथ झालोन चलें। यात्रा में एक महीना लगेगा और आप वापस आ जाएँगे; मौसम यात्रा के लिए अनुकूल है, और चूंकि हम एक मजबूत दल हैं और रात में यात्रा करते हैं, इसलिए आपको धूप से कोई असुविधा नहीं होगी।'

'खैर, मीर साहब, मैंने लगभग फैसला कर लिया है; लेकिन अंदर वालों को बताना ज़रूरी होगा,' और उन्होंने अपने अंगूठे से ज़नाना की ओर इशारा किया; 'और जैसा कि आपने कहा कि आपको किसी काम से कोतवाल के पास जाना है, अगर आप सब कुछ खत्म होने के बाद, शाम की नमाज़ के समय, यहाँ आ सकें, तो मैं आपको पक्का जवाब दे पाऊँगा। हम भले ही औरतों को तुच्छ समझते हों, लेकिन आप जानते हैं, मीर साहब, कि उनसे सलाह लिए बिना कोई भी काम करना, खासकर यात्रा करना, असहज होता है।'

'जैसी आपकी इच्छा,' मैंने कहा; 'मुझे इस मामले से कोई फ़र्क नहीं पड़ता; मैंने ये सलाह सिर्फ़ आपके भले के लिए दी है; और इस नास्तिकता और स्वार्थ से भरी दुनिया में किसी मुसलमान भाई की मदद करना या किसी निस्वार्थ व्यक्ति से मदद पाना दिल को सुकून देता है। आलिया हाफ़िज़! मैं अब चलता हूँ, और मैं मोग़रेब के रास्ते लौटकर अपने मोतियों के पैसे ले आऊँगा।' मैं वहाँ से चला गया।

'क्या उसे बुनीज बनना है?' ठग ने फिर पूछा।

'शांत हो जाओ, मूर्ख!' मैंने हंसते हुए कहा; 'उसने चारा तो निगल लिया है, पर कांटा अभी फंसा नहीं है। रुको। इंशाअल्लाह! अमीर अली न तो उल्लू का बेटा है और न ही गधे का; और इंशाअल्लाह! हम उसकी दाढ़ी पर धूल जरूर डालेंगे, चाहे वह कितना भी सावधान क्यों न हो।'

जैसा कि आपने सोचा होगा, मेरा कोतवाल से कोई लेना-देना नहीं था। मैं अपने तंबू में गया और दल के सरदारों को इकट्ठा करके उन्हें अपनी योजनाएँ बताईं और उन्हें निर्देश दिए कि आने वाले नए मेहमान के सामने उनका व्यवहार कैसा होना चाहिए। यह सब हो जाने के बाद, मुझे बाकी सब बातों की चिंता नहीं रही। अगर वह आ गया!—यह उम्मीद करना लगभग असंभव था; फिर भी मुझे खुद पर और अपने भाग्य पर भरोसा था। और वह लड़का! वह सुंदर लड़का!—उसकी मृत्यु में भागीदार बनने का मेरा (पहली बार) मन नहीं कर रहा था। मैंने मन ही मन कहा, मुझे उसे अपने साथ नहीं आने देना चाहिए; पिता की मृत्यु से घर पहले ही वीरान हो चुका है, यही काफी है। मैं इसी बारे में सोच रहा था कि लालू मेरे पास आया।

'आप पागल हैं, मीर साहब,' उसने कहा; 'यह योजना व्यावहारिक नहीं है। रास्ते में मिले बुनीज से निपटना ठीक है; लेकिन किसी आदमी को उसके घर से घसीटकर, जैसा कि मैं कहूँ, उसे मार डालना बहुत बुरा है; और मुझे नहीं लगता कि यह उचित है।'

'हा!' मैं चिल्लाया; 'तो तुम मेरे खिलाफ हो गए हो। ये कैसे हो सकता है?'

'भगवान न करे कि आप ऐसा कहें, मीर साहब; लेकिन मामले को देखिए। आप कस्बे में जाने-माने हैं, लोगों ने आपको व्यापारी के घर में प्रवेश करते देखा है, और वे जानते हैं कि वह आपके साथ है। क्या वे हमें ढूंढ-ढूंढकर नहीं निकालेंगे?'

मैंने हंसते हुए कहा, 'तुम उल्लू हो; यकीन मानो, डरने की कोई बात नहीं है; और जहां तक उस आदमी को उसके घर से बाहर निकालने की बात है, तो मैं तुमसे कहता हूं कि मुझे इसमें और सड़क पर उससे सामान्य तरीके से मिलने में कोई फर्क नहीं दिखता। मुझे अकेला छोड़ दो, मैं अपना काम जानता हूं, और जब हम उसे पकड़ लेंगे तो तुम खुद मेरी तारीफ करोगे।'

'नहीं, यह तो बस एक दोस्ताना चेतावनी थी,' उसने कहा; 'और चूंकि आपको पूरा भरोसा है, तो आप इस मामले को आगे बढ़ाएं। वह अच्छा व्यवहार करेगा, है ना?'

'निश्चित रूप से, लगभग एक हजार रुपये। आलिया की कसम! मैं हाल के दिनों में किए जा रहे नीरस काम से थक गई थी और मेरी नसों में खून जम गया था। इसने मेरे अंदर जोश भर दिया है और मैंने काम शुरू कर दिया है। तुम जानती हो कि मैं शायद ही कभी असफल होती हूँ।'

'मीर साहब, ऐसा बहुत कम ही होता है; लेकिन क्या मैं कुछ कर सकता हूँ?'

'हाँ, तुम कर सकते हो,' मैंने कहा: 'थोड़ी दूरी पर मेरे पीछे आओ और घर पर नज़र रखो। जिस मूर्ख की मैं तलाश कर रहा हूँ, वह घर छोड़ने के लिए शुभ दिन की कामना अपने ज्योतिषी से करेगा। मुझे इस बात का पूरा यकीन है, क्योंकि उसने ऐसा कहा था; और उसने मेरे इस मज़ाक को बुरी तरह लिया। उसके नौकरों का पता लगाओ, और उनसे ब्राह्मण को भी; अपने साथ पैसे ले जाओ और उसे दे दो। अभी दिन का उजाला

काफी है, और याद रखना कि कल सुबह शुभ होगी और परसों अशुभ। इस बात का ध्यान रखो और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करो, क्योंकि बहुत कुछ इसी पर निर्भर करता है—बल्कि, सब कुछ।'

'मेरे सिर और आंखों पर ही इसका दोष हो!' उसने कहा; 'इसलिए, मीर साहब, मैं आपसे निवेदन करता हूं कि आप अभी भी मेरे साथ चलें, शायद भेस बदलकर, और मुझे घर दिखाएं। बाकी सब मुझ पर छोड़ दीजिए, मैं असफल नहीं होऊंगा।'

'अच्छा विचार है,' मैंने कहा। 'अगले चार घंटों तक सूरज नहीं डूबेगा; मैं आसानी से लौटकर नए कपड़े पहन सकता हूँ।' ऐसा कहते हुए मैंने अपने कीमती कपड़े उतार दिए, गंदे-मैले कपड़े पहन लिए, अपनी आँखों को छोड़कर अपना चेहरा बाँध लिया और अपनी तलवार बगल में दबाकर, टीरी के अच्छे कस्बे में किसी भी बदनाम झगड़ालू या गांजा पीने वाले की तरह दिखने लगा।

मैंने कहा, 'चलो, हमारा काम जल्द ही पूरा हो जाएगा;' और ऐसा ही हुआ। हम घर के पास से गुजरे और मैंने अपने साथी को गली के कोने पर छोड़ दिया, उसकी कमर में सौ रुपये थे और उसके सीने में एक धूर्तता भरी हुई थी।

मैं वापस लौटा, कपड़े बदलकर अपने घोड़े पर सवार हुआ और व्यापारी के पास अपना बकाया पैसा लेकर चल पड़ा। वह मुझे उसी जगह मिला; लेकिन शाम उमस भरी होने के कारण, वह मुझे अपने घर की छत पर ले गया, जहाँ हमारी सुविधा के लिए कालीन बिछे हुए थे। मैंने अपना पैसा चुकाया और मोती प्राप्त किए, फिर अपनी यात्रा के मुख्य उद्देश्य की ओर चल पड़ा।

'तो आप जाएँगे, शेखजी?' मैंने कहा; 'या आपका मन इसके खिलाफ है?'

'बिल्कुल नहीं, बिलकुल नहीं,' उसने उत्तर दिया। 'मेरी इच्छा तो जाने की है, मेरी दिली इच्छा है, मीर साहब; लेकिन जब मैंने अपनी ज़नाना में इसका ज़िक्र किया, तो भले ही किसी ने विरोध नहीं किया या आंसू नहीं बहाए, फिर भी सबने एकमत से कहा कि कोई शुभ दिन तय होना चाहिए, जिसके बिना मेरा जाना बिलकुल व्यर्थ होगा। आप जानते हैं कि औरतें कैसी होती हैं, मीर साहब; इतना कहना ही काफी है कि मैं उनकी झिझक दूर नहीं कर सका; क्योंकि जितना मैंने तर्क दिया और समझाया, उतना ही उन्होंने विरोध किया; और सच तो यह है कि मामला इतना गंभीर हो गया कि उन्हें शांत करने के लिए—ध्यान रहे—उन्हें शांत करने के लिए—मैंने पास में रहने वाले एक ब्राह्मण को दस रुपये भेजे, जो एक प्रसिद्ध ज्योतिषी हैं और यहाँ एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जिन पर भरोसा किया जाता है। आलिया गवाह है, मुझे इस बात की परवाह नहीं थी कि वह क्या कहते हैं; लेकिन जब यह संदेश आया कि कल का दिन अशुभ है, तो पूरे ज़नानखाना, पत्नियों, दासों और असीलों ने संभावित विपत्ति पर इतना विलाप किया और बाद में मेरे बच जाने पर इतनी बधाई दी कि मैं पूरी तरह स्तब्ध रह गया और मैंने कल की यात्रा का विचार त्याग दिया। लेकिन आप जानते हैं, मीर साहब, कल ग्रहों की युति का प्रभाव भिन्न हो सकता है, और चूंकि आप यहीं रुकेंगे—

'जी शेखजी,' मैंने कहा, 'मैं यहाँ नहीं रुक सकता। यहाँ तीन दिन यूँ ही समय बर्बाद कर चुका हूँ, और अब और नहीं रुक सकता, क्योंकि समय मेरे लिए अनमोल है। मेरे संरक्षक को अब भी आश्चर्य होगा कि मुझे

इतनी देर क्यों हो गई; और उनका अनुग्रह खोना मेरी आजीविका का नुकसान होगा। इसलिए कल मैं निश्चित रूप से रवाना हो जाऊँगा, चाहे आप आएँ या न आएँ। और जहाँ तक आपके मेरे साथ आने की बात है, यह आपका मामला है; मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं है, सिवाय इसके कि रास्ते में मुझे आपकी सुखद संगति का अभाव महसूस होगा।'

वह काफी असमंजस में था। उसने जाहिर तौर पर मेरे रुकने की उम्मीद की थी; लेकिन मेरे लापरवाह, फिर भी दृढ़ बोलने के तरीके ने उसे मेरे विचारों में बदलाव की कोई उम्मीद नहीं छोड़ी; और, जैसा कि कोई फारसी कहता, उसने 'उदासीन इच्छा के दांतों के बीच विचार-विमर्श की उंगली' पकड़ रखी थी। वह काफी देर तक चुपचाप जमीन को देखता रहा। यह लाभ के लालच और अंधविश्वास के बीच का संघर्ष था; क्योंकि हालांकि वह चाहता था कि मैं इसके विपरीत विश्वास करूं, वह शुभ और अशुभ दिनों के विश्वास में उतना ही डूबा हुआ था जितना उसकी पत्नियों के गुलाम या असील। अंत में उसने कहा:

'मीर साहब, आपको हमारा समझौता याद है—दो सौ रुपये? अगर आप एक दिन और रुकेंगे तो मैं इसे सौ रुपये और कर दूंगा। आप गरीब हैं, और सौ रुपये से आपकी बेटी की शादी के लिए बहुत सारे कपड़े खरीदे जा सकते हैं।'

यह तो सीधे-सीधे मुझसे सौ रुपये ठगने की कोशिश थी; और उसकी बातों के आखिरी हिस्से को सुनकर मेरा मन किया कि उसे वहीं गला घोंट दूं। फिर भी मैंने अपना आपा नहीं खोया: मैं एक बहुत बड़ा दांव खेल रहा था, और वो भी मामूली रकम के लिए, मैं इसे हारना नहीं चाहता था।

'नहीं, शेख,' मैंने कहा, 'ऐसा नहीं हो सकता; मैं कल सुबह सूरज निकलने के बाद एक घंटा भी नहीं रुकूंगा, चाहे मुझे हज़ार रुपये ही क्यों न मिलें: तुम मुझे बहका नहीं सकते। लेकिन क्या तुमने कभी सोचा है कि तुम्हारी नुजूमी ने तुम्हें धोखा दिया हो, और आसमान को अनुकूल बनाने के लिए दस रुपये से कुछ ज़्यादा की ज़रूरत हो? मैंने ऐसी बातें सुनी हैं, हाँ, और उन्हें आजमाया भी है, वरना शायद मैं भी सितारों के स्वरूप पर उतना ही विश्वास करता जितना तुम करते हो।'

'अरे! ऐसा कहते हो, मेरे दोस्त?' वह चिल्लाया। 'अलिया की कसम, अगर मुझे लगता कि वह मुझे धोखा देने की कोशिश कर रहा है, तो मैं उसे उसके कनपटी पर गाय के चमड़े के जूते से ही मार देता; लेकिन यह असंभव है। सितारों की स्थिति को वह कैसे बदल सकता है? और फिर भी कहता है, क्या मैं और पैसे भेजूं?'

'नहीं,' मैंने कहा, 'बिल्कुल नहीं; अगर वह ईमानदार है, तो वह इसे तुम्हारे सेवक के मुँह पर फेंक देगा; अगर वह बदमाश है, तो वह इसे अपने पास रखेगा और खबर भेजेगा कि तारे बदल गए हैं; पहले मामले में तुम धूल खाओगे, दूसरे में तुम्हें धोखा मिलेगा और वह तुम्हारी दाढ़ी पर हँसेगा। नहीं, मुझे तुम्हारे लिए कोई उपाय नहीं दिखता सिवाय इसके कि तुम उसका, ज़नाना का और तारों का विरोध करो; और यही साबित करेगा कि तुम एक सच्चे मर्द हो।'

'असंभव, मीर साहब,' उसने निराशा से कहा। 'नुजूमी को छोड़ दें तो, मेरी चार पत्नियाँ हैं, आलिया मेरी मदद करो! - यह वैध संख्या है, आप जानते हैं; लेकिन ओह! मेरे मित्र, उनका क्रोध भयानक है, और मैं उन्हें भड़काने की हिम्मत नहीं कर सकता।'

मैंने कहा, 'बस बहुत हो गया; तुम नहीं जाओगे, क्योंकि तुममें हिम्मत नहीं है, इसलिए नहीं कि तुम जाना नहीं चाहते।'

'बिल्कुल सही, मीर साहब: आपने बिल्कुल सही बात पकड़ ली है। मेरा मन तो तैयार है, और लाभ की संभावना भी मुझे प्रेरित कर रही है; लेकिन वे औरतें'—

नमाज़ का समय हो गया था, और पास की मस्जिद की छत से मुअज़्ज़िन की बुलंद आवाज़ ने समय की घोषणा की। हमने वज़ू किया, और नेक मुसलमान होने के नाते, हमने अपने कालीन बिछाए, और पश्चिम की ओर, जहाँ अभी भी रोशनी थी, अपनी शाम की दुआ और शुक्र अदा किया।

मैंने ठान लिया था कि मैं आखिरी पल तक यहीं रुकूंगा, ताकि मेरे दूत को अपनी कार्यवाही के लिए समय मिल सके, और अगर ज्योतिषी की तरफ से कोई संदेश न आए, तो मैं कोई और योजना बनाऊं, या फिर एक और दिन रुकने के लिए भी तैयार हो जाऊं। हे भगवान! मैंने सोचा, अगर तू मेरी सबसे बड़ी ज़रूरत के समय मुझे छोड़ दे, तो मैं तेरी पूजा करना छोड़ दूंगा।

हमारी प्रार्थना समाप्त हो गई थी, और हम बैठे-बैठे बातें करते रहे, लेकिन कोई ऐसा संदेश नहीं आया जो मेरे उद्देश्य के अनुरूप हो। मैंने धीरे-धीरे व्यापारी को यात्रा के विषय पर वापस ला दिया था, और उसके लालची स्वभाव को भांपते हुए, उसे झालोन में मिलने वाले स्वागत का वर्णन कर रहा था; और मैं एक और दिन रुकने के अपने विचार में बदलाव लाने के लिए अपने शब्दों को तैयार कर रहा था, तभी एक नौकर सीढ़ियों से ऊपर आया और उसके कान में कुछ फुसफुसाया, जिससे वह चौंक गया, लेकिन साथ ही उसके चेहरे पर खुशी का भाव भी आ गया।

'एक पल के लिए मुझे क्षमा करें, मेरे मित्र,' उसने कहा; 'मुझे नीचे बुलाया जा रहा है—दीवान खाने में कोई मेरा इंतजार कर रहा है। आप यहीं प्रतीक्षा करें, मैं तुरंत आपके पास वापस आ जाऊंगा।'

जैसे ही मैंने उसे सीढ़ियों से नीचे जाते देखा, मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। क्या मैं सफल हो गया था? या क्या मुझे खुद पर कोई खतरा महसूस हो रहा था? मैंने छत की ओर देखा; वह इतनी ऊँची थी कि वहाँ से कूदना असंभव था; अगर कोई खतरा था भी, तो भागना नामुमकिन था। लेकिन एक पल के विचार ने मुझे हिम्मत दी; और जैसे ही मैंने अपनी भरोसेमंद तलवार निकाली और उसे कार्रवाई के लिए तैयार किया, मैं अपने ही डर पर हँस पड़ा, क्योंकि मैं जानता था कि मैं उस संकरी सीढ़ी की रक्षा एक बड़ी सेना से कर सकता हूँ। मैंने दीवान खाना के आँगन में देखा, लेकिन कोई नहीं दिखा: मुझे दो ऊँची आवाज़ें धीमी और गंभीर बातचीत में सुनाई दीं; और जैसे ही मैंने अपनी गर्दन आगे बढ़ाई और छत की मुंडेर पर झुककर एक शब्द सुनने की व्यर्थ कोशिश की, मुझे अचानक व्यापारी और सफेद वस्त्र पहने एक आकृति को देखकर सुकून मिला, जिसे मैंने

तुरंत एक हिंदू के रूप में पहचान लिया, जबकि उसका मुंडा हुआ सिर यह साबित करता था कि वह एक पुजारी था, वे दीवान खाना से बाहर निकले; और अब उनके शब्द मुझे स्पष्ट रूप से समझ में आने लगे।
'तो फिर कोई बाधा नहीं है?' व्यापारी ने कहा।
ब्राह्मण ने कहा, 'नहीं,' (क्योंकि वह ब्राह्मण ही था,) 'जैसा कि मैंने कहा, सारणियों और गणनाओं में एक त्रुटि थी जिसे मैंने अभी-अभी खोजा है। मेरी बुद्धि ने भी मुझे बताया कि तुम जाने के लिए उत्सुक थे; क्या मैं सही हूँ?'
'जी हां, हे गुणी ब्राह्मण, तुम निश्चय ही गुणी हो। मुझे लाभ का वादा है—नहीं, धन का।'
दूसरे ने कहा, 'और तुम अवश्य सफल होगे। नारायण ऐसा ही करें! मैं तुम्हारी सफलता के लिए प्रार्थना करूंगा।'
'ऐसा ही करो, ऐसा ही करो, हे अच्छे ब्राह्मण: हे अच्छे सेओनाथ, मैं लौटते समय तुम्हें नहीं भूलूंगा। इंशाल्लाह! मैं आभारी हो सकता हूँ: मैं तुम्हारे माध्यम से मंदिर में नज़ूर करूँगा।'
'मुझे विश्वास है शेख जी, आप ऐसा करने में असफल नहीं होंगे, क्योंकि जब से आपने अपनी भेंटें बल्लाजी के मंदिर में अर्पित की हैं, तब से वे आप पर कृपा बरसा रहे हैं। लेकिन मैं आपकी भेंट देने जा रहा हूँ, भले ही वह छोटी सी हो। नारायण आपकी रक्षा करें!'
'यह दुगुना-तिगुना होगा, सेओनाथ। मैं आलिया की कसम खाकर कहता हूँ कि लौटने पर मैं यह नहीं भूलूँगा। तुम जाओ! अच्छा, आलिया हाफ़िज़, मेरी दोस्त मेरा इंतज़ार कर रही है।'
वह मेरे पास लौट आया। 'मेरे मित्र, मेरे साथ खुशियाँ मनाइए, मेरे दयालु मीर साहब! आखिर कल का दिन शुभ है। मेरे ब्राह्मण मित्र ने अपने एक शिष्य को यह बताने के लिए भेजा है कि उनकी शास्त्र-पत्रों पर गणना में कोई त्रुटि हो गई है, और आकाश की दृष्टि मेरे लिए अनिश्चित काल तक अनुकूल रहेगी। अरे, वह कितना बुद्धिमान और कितना ईमानदार है, मीर साहब! आपने उसे धूर्त कहा था, लेकिन देखिए, वह मुझे एक महीने तक संदेह में रख सकता था, और जब तक उसे अच्छी तरह से भुगतान न मिल जाए, तब तक वह तारों से परामर्श करने से भी इनकार कर सकता था। खैर, आखिर यह आलिया की शक्ति है, और निःसंदेह ये काफिर उससे कुछ संबंध रखते हैं, जो सच्चे धर्म के मानने वालों को नहीं है।'
'तो ऐसा ही लगता है, शेखजी,' मैंने उन्हें खुश करने के लिए कहा; 'यह वाकई आश्चर्यजनक है कि आपका दोस्त, एक ज्योतिषी होते हुए भी, पहली बार ईमानदार है। आपने उसकी इस नई खोज के लिए उसे दिल खोलकर पैसे दिए होंगे?'
व्यापारी थोड़ा सहम गया। 'मामूली सी बात है, मीर साहब; मंदिर के लिए तेल खरीदने के लिए बस कुछ पैसे चाहिए थे।'
'अरे वाह, कितना निस्वार्थ भाव है!' मैंने कहा; 'इस स्वार्थी दुनिया में, जहाँ हर कोई अपने पड़ोसी को नीचा दिखाने की कोशिश करता नज़र आता है, ऐसे आचरण को देखकर हृदय को सचमुच सुकून मिलता है। ज़ाहिर है, उसे कोई लाभ नहीं है?' 'बिल्कुल नहीं, मीर साहब, बिलकुल नहीं! एक सच्चा मुसलमान किसी

काफ़िर से कैसे संबंध रख सकता है? क्या मैं उसकी विद्वत्ता का लाभ अपने फायदे के लिए नहीं उठाता, और फिर उसकी दाढ़ी पर हँसता हूँ?' और वह हँस पड़ा।

झूठे! मैंने मन ही मन कहा, मुट्ठी भींचते हुए और दांत पीसते हुए, इस झूठी कसम के लिए तुम्हें आलिया को जवाब देना होगा, इससे पहले कि तुम्हारी उम्र कुछ दिन भी बढ़े। यह वास्तव में एक पुण्य कर्म है, और इसीलिए तुम्हें मेरे हवाले किया गया है। एक हाजी भी! ओह, कितनी शर्म की बात है! तभी मुझे अरबी की वह आयत याद आई जिसमें कहा गया है, 'यदि तुम्हारा पड़ोसी हज कर चुका हो, तो उस पर भरोसा मत करो; और यदि वह दो बार हज कर चुका हो, तो जल्दी से उसके पास से अपना निवास स्थान हटा लो।'

'अच्छा, ऐ हाजी,' मैंने कहा, 'और आप सही कर रहे हैं। लेकिन रात ढल रही है, बेहतर होगा कि आप यात्रा की तैयारी कर लें; और मैं आपको सलाह देना चाहता हूँ; अपने साथ एक या दो नौकरों के अलावा किसी को न लाएँ; मेरी संगति आपकी सुरक्षा के लिए पर्याप्त है। मेरे पास एक छोटा सा साथी है जो हम दोनों को संभाल लेगा; और सबसे महत्वपूर्ण बात, अपने बेटे को न लाएँ, - वह बेवजह ही खुद को थकाएगा और हमारी तेज़ गति में बाधा बनेगा, क्योंकि हमें तेज़ गति से चलना होगा।'

'मीर साहब, मैं हर बात में आपकी सलाह मानूंगा। मैं कोई नौकर नहीं लाऊंगा; जो आदमी मेरी अतिरिक्त घोड़ी चलाएगा, वह जरूरत पड़ने पर मेरी सेवा कर सकता है; और जितना कम दिखावा करूंगा, उतना ही कम शक होगा कि मैं अपने साथ पैसा लेकर चल रहा हूं।'

मैंने कहा, 'तो याद रखना, तुम सुबह का तारा उगने से पहले मेरे शिविर में आ जाना; हम सब तुम्हारे लिए तैयार रहेंगे, और जब तक हम अपने गंतव्य तक नहीं पहुंच जाते, तब तक सूरज इतना शक्तिशाली नहीं होगा।'

उसने तय समय पर वहाँ पहुँचने का वादा किया, और मैं उसे छोड़कर चला गया।

मुझे मेरा भरोसेमंद दूत मेरे तम्बू में मेरा इंतजार करता मिला। मुझे देखते ही वह जोर से हंस पड़ा।

'क्या वह सुरक्षित है?' उसने काफी देर बाद पूछा। 'आह, मीर साहब, मुझे बहुत मजा आया, और निस्संदेह आपको भी आया होगा।'

'वह तो पूरी तरह से फंस चुका है। जाल उसके चारों ओर लिपटा हुआ है; एक झटका और वह खो जाएगा। और तुम, मेरे वफादार दोस्त, तुमने ऐसी सफलता हासिल की है कि मैं तुम्हारी सफलता पर आश्चर्यचकित हूं।'

'आश्चर्यचकित न हों,' उन्होंने उत्तर दिया; 'यह काम मेरी सोच से कहीं आसान था। लेकिन मेरी रोमांचक कहानियाँ सुनिए।'

'ज़रूर,' मैंने कहा; और मैंने एक चिलम मंगाई, जबकि वह आगे बढ़ गया।

'तुम्हें याद है जब तुमने मुझे छोड़ा था?'—मैंने सिर हिलाया,—'खैर, मुझे नौकर मिलने में बहुत समय लग गया; और निराशा में मैं दीवार की छांव में लेट गया, लेकिन जागता रहा; आखिरकार एक आदमी बाहर आया, संयोग से एक हिंदू, और मैं उसके पीछे गया: 'क्या तुम मुझे कुलल की दुकान का रास्ता बता सकते हो?' मैंने कहा; 'मैं बहुत दूर से आया हूँ, और मेरा गला सूख गया है।' मैंने देखा कि वह आदमी खुद भी शराब पीता था,

उसकी आँखों के रंग से, और कुलल की दुकान का नाम सुनते ही उसकी आँखें चमक उठीं। 'एक दुकान पास में ही है,' उसने जवाब दिया; 'मैं तुम्हें दिखाता हूँ।' 'अच्छा,' मैंने कहा, 'तुम मेरे साथ शराब पियोगे।' खैर, हम दुकान में दाखिल हुए, और अंदर के कमरे में चले गए। मैंने शराब की एक बोतल मंगाई, और उसके पैसे दिए; जगह थोड़ी अंधेरी थी, और मैंने जो लिया था उसे ज़मीन पर उड़ेल दिया, लेकिन उसने एक-एक बूंद पी ली; उसने बोतल ऐसे खत्म कर दी जैसे पानी हो, और मैंने और मंगवाई। अंत में मैंने उससे पूछना शुरू किया कि उसका स्वामी कौन है और वह क्या सेवा करता है, और माशाल्लाह! मुझे बहुत कम समय में उसके बारे में सब कुछ पता चल गया; और अंत में, यह कि वह यात्रा पर जा रहा था, लेकिन एक ज्योतिषी द्वारा अगले दिन को अशुभ घोषित किए जाने के कारण वह यात्रा नहीं कर पाया। संक्षेप में, मेरा मित्र सुम्भू (उसका यही नाम था) बहुत नशे में धुत हो गया, और अपने स्वामी के निजी इतिहास के बारे में मुझे बहुत कुछ बताने के बाद, जो उसकी प्रतिष्ठा के अनुरूप नहीं था, वह जमीन पर बेहोश होकर गिर पड़ा, और मैंने उसे वहीं छोड़ दिया; लेकिन जाने से पहले मैंने यह पता लगा लिया था कि ज्योतिषी अगली गली के एक मंदिर में रहता है, और उसका नाम सेओनाथ है।

मैंने कहा, 'मैंने उसे देखा है; एक लंबा, गोरा आदमी, एक सुंदर पुजारी, और ठग के लिए काफी हट्टा-कट्टा।'

'तुमने उसे देखा! कैसे और कहाँ?'

मैंने उसे बताया, और हम दोनों खूब हंसे जब मैंने आंगन के दृश्य का वर्णन किया, और व्यापारी के चापलूसी भरे लहजे और ब्राह्मण के अभिमानी लहजे की नकल की।

लालू ने कहा, "लेकिन सुनो, और मेरी तरह आश्चर्यचकित हो जाओ। मुझे जल्द ही मंदिर और ब्राह्मण मिल गए, और मैंने उनसे अपने बच्चे के लिए बुरी नज़र से बचाव का ताबीज मांगा। उन्होंने मेरी ओर देखा—या आलिया, उन्होंने कैसे देखा! मैं उनकी निगाहों से कांप उठी, और मेरे रोंगटे खड़े हो गए जैसे मुझे बुखार हो गया हो; क्योंकि मैं उस आदमी को नहीं जानती थी, फिर भी ऐसा लग रहा था जैसे वह मेरे दिल की बात पढ़ सकते हों। उन्होंने कहा, "मेरे पीछे आओ, मैं इन ताक-झांक करने वालों से अलग तुमसे बात करना चाहता हूं।" उन्होंने विनम्रता से कहा, और मैं उनके पीछे-पीछे चली गई, हालांकि लगभग बेमन से। वह मुझसे आगे चले गए। उन्होंने कहा, "अपने जूते उतार दो; यह जगह अपवित्र नहीं होनी चाहिए: यह पवित्र है।" अंत में हम एक छोटे से आंगन में अकेले थे, जहां देवता का एक मंदिर था। फिर उन्होंने मेरी ओर मुड़कर मेरे चेहरे को देखा। मुझे सचमुच समझ नहीं आ रहा था कि क्या सोचूं; और ओह, मैं कितनी खुश हुई जब उन्होंने हमारे इशारे वाले शब्दों को दोहराकर मेरी अनिश्चितता को खत्म कर दिया!

'हमारा संकेत?'

जी हाँ, मीर साहब, बिल्कुल सही; मैं भी आपकी तरह ही हैरान था, लेकिन रहस्य जल्द ही सुलझ गया; वह हमारे सबसे पवित्र मंदिर बिंदाचुल का पुजारी निकला, जो यहाँ आया था और बनारस में कुछ खगोलीय ज्ञान प्राप्त करके यहाँ ज्योतिषी का काम करने लगा। उसे यह काम इतना लाभदायक लगा कि वह बिंदाचुल वापस नहीं लौटा। बेशक मुझे उससे कोई आपत्ति नहीं थी; मैंने अपनी योजना बताई, जिससे वह पहले तो

पीछे हट गया; लेकिन मैंने अपने पैसे खर्च किए और पाँच अश्रुफियों ने उसके विचारों में ऐसा बदलाव ला दिया कि उसने मेरी बातें संतुष्टि से सुनीं, आपके मित्र के बारे में उसने अपनी राय बदल दी और अंत में वहीं जाकर यह कहने की पेशकश की कि उसकी गणनाएँ गलत थीं और बेचारे शेख के लिए सब कुछ समृद्धि का संकेत है।

मैंने कहा, 'उन्होंने हमें निराश नहीं किया है।'

लालू ने जवाब दिया, 'नहीं, मुझे पता है; लेकिन हमें अच्छी खासी रकम चुकानी होगी। वह सौ रुपये और मांग रहा था, लेकिन मैंने उसे समझाया कि हमारा बैंड बड़ा है और बांटने के लिए ज्यादा पैसे नहीं होंगे, इसलिए मैंने उसे भुट्टोटे के हिस्से से ही संतुष्ट रहने के लिए मना लिया, जो उस आम चंदे में जोड़ा जाएगा जो बैंड को उसके योगदान के बारे में पता चलने पर इकट्ठा होगा।'

'और वह संतुष्ट है?'

'मीत साहब, आपके पास सबसे पुख्ता सबूत है; क्या उसने अपना वादा पूरा नहीं किया? और बिंदाचुल के किसी ब्राह्मण ने भला कब अपना विश्वासघात किया है? उसकी हिम्मत नहीं होगी: भवानी उसे मौके पर ही मार डालेगी, या उसे कष्टदायी यातनाएँ देकर मार डालेगी।'

मैंने पूछा, 'और हम उसे यह हिस्सा कैसे पहुंचाएंगे, चाहे वह कुछ भी हो?'

'आसानी से; हम इस जगह के बारे में जानकारी जुटा सकते हैं और उसे पत्र के माध्यम से उसे भेज सकते हैं, या हम इसके साथ एक आदमी को भेज सकते हैं।'

'जी हां, हम कर सकते हैं,' मैंने कहा; 'तो अब जाओ; उन लोगों को वही सबक दोहराओ जो मैंने उन्हें सिखाया है, और उन्हें सावधान और सतर्क रहने की हिदायत दो। हमें अच्छी फसल मिलने की उम्मीद है, और इंशाल्लाह! हमें वह मिल भी जाएगी। लेकिन काश मैं उस ब्राह्मण से मिल पाता जिसने इस मामले में हमारी इतनी मदद की है।'

उन्होंने कहा, 'उसे अकेला छोड़ दो; उसने मुझे बताया कि यद्यपि वह आपसे मिलने की बहुत इच्छा रखता है, क्योंकि उसने आपके आचरण के बारे में अक्सर सुना है, फिर भी संदेह से बचना बेहतर है, और आपके साथ किसी भी तरह का खुला संपर्क उसे उसके साथियों की पूछताछ के दायरे में ला देगा, इसलिए इससे बचना ही बेहतर है। और वह सही कह रहा है, मीर साहब; इससे कोई लाभ नहीं होगा।'

अध्याय 15

कॉर्नवाल। उसे चोर की तरह पकड़ो; उसे हमारे सामने लाओ।
हालांकि हम उनके जीवन के बारे में अच्छी तरह से नहीं बता सकते।
न्याय के स्वरूप के बिना भी, हमारी शक्ति
हम अपने क्रोध के प्रति एक ऐसा शिष्टाचार अपनाएंगे, जिसकी लोग निंदा तो कर सकते हैं, लेकिन उसे नियंत्रित नहीं कर सकते।
किंग लियर, तीसरा अंक, सातवाँ दृश्य
चार दिन बीत गए, और व्यापारी अब भी हमारे साथ था। उसकी देखभाल ठीक से नहीं की जा रही थी, और हम जब चाहें उसकी जान ले सकते थे; लेकिन हम उसे जितना हो सके अपने साथ ले जाना चाहते थे, और अपने रास्ते के निशान मिटाने के लिए नियमित रास्तों से हटकर दाएं-बाएं मुड़ते हुए, केवल अपने ही जाने-पहचाने पगडंडियों और गलियों से होकर जाना चाहते थे। फिर भी हम काफी दूर आ चुके थे, और मुझे पता था कि अगले दिन की यात्रा हमें एक जंगल से होकर ले जाएगी, जो हमारे पसंदीदा भीलों में से एक था, और जहाँ मैंने शुरू से ही तय कर रखा था कि उसकी मृत्यु होगी।
पांचवीं सुबह हम सफ़र पर निकले थे, और हमेशा की तरह (दरअसल मेरी आदत थी) मैं अपने दल के आगे-आगे चल रहा था। अब उजाला हो चुका था, लेकिन हम जंगल में प्रवेश कर रहे थे, और मैं मन ही मन खुश था कि वह मेरे वश में है, और कुछ ही घंटों में हमें एक बड़ा और कीमती खजाना मिलेगा, तभी मैंने अपने दाहिनी ओर झाड़ियों में एक जानवर को हिलते हुए देखा। एक पल में ही, एक खरगोश फिर मेरे रास्ते में आ गया! मैं मन ही मन हँस पड़ा। ये मेरे साथी कितने मूर्ख हैं! मेरे सिवा कोई जमादार इतनी बुरी चेतावनी के बाद इस रास्ते पर जाने की हिम्मत नहीं करेगा; वह और उसका पूरा दल ऐसे भागेंगे जैसे उनके रास्ते में सौ बाघ हों, और अपनी किस्मत के मुताबिक या तो उनसे बचने के लिए या उनका पीछा करने के लिए अपनी बान छोड़ देंगे। लेकिन मैं!—मैं इस पर हँसता हूँ: एक बार मैंने साबित कर दिया है कि चेतावनी हानिरहित है, तो क्या अब यह मुझे रोक पाएगी? अरे नहीं, नहीं! मेरा शिकार पक्का है, और मेरी मुट्ठी में है।
और ऐसा ही हुआ। साहब, हम अभी एक कदम भी आगे नहीं बढ़े थे कि मैंने वह जगह देख ली जहाँ मैं जाना चाहता था; और वहाँ व्यापारी और उसके दो नौकर मर चुके थे। जी हाँ, वह मेरे ही हाथों मरा। मैंने उसे उसके टट्टू से नीचे खींचकर गला घोंट दिया; और नौकरों की देखभाल बाकी लोगों ने की, लेकिन इससे पहले कि उनमें से एक ने मेरे एक आदमी को मार डाला; क्योंकि अपने सामने मौजूद इनाम को पाने की लालसा में, मैंने यह नहीं देखा कि व्यापारी के नौकर मेरी हरकतें देख रहे थे। बेचारा जो गिरा था, बुरी तरह घायल था; फिर भी वह साँस ले रहा था। उसके साथ क्या करना है, यह मुझे समझ नहीं आ रहा था: हम इंतज़ार नहीं कर सकते थे, और उसे अपने साथ ले जाना तो नामुमकिन था।

मैंने लालू से कहा, 'हम अनुंडी का क्या करेंगे? हम अपने गंतव्य से बहुत दूर हैं, और हम अपने बड़े दल के साथ यह नहीं कह सकते कि हम चोरों के बीच फंस गए हैं।'
उन्होंने तुरंत मेरे संदेह दूर कर दिए। उन्होंने कहा, 'इसे दर्द से मुक्ति दिला दो; यह आदमी मर रहा है: एक और बार दर्द देने से क्या फर्क पड़ता है? इसे बाकी लोगों के साथ दफनाया जा सकता है। अगर लोग इसे देखें तो शायद उन्हें अच्छा न लगे, लेकिन यहाँ सभी लोग व्यस्त हैं, और दल के अधिकांश लोग आगे बढ़ चुके हैं। बाद में हम इसे चादर में लपेट देंगे।'
मैंने अपनी तलवार निकाली और मरते हुए उस अभागे की ओर बढ़ा; वह गिड़गिड़ाते हुए मेरी ओर देखने लगा और बोलने की कोशिश करने लगा, लेकिन मेरा हृदय कठोर था। मुझे अपने किए पर घृणा हो रही थी, और मैंने आलिया से प्रार्थना की कि वह उस बेचारे प्राणी के रक्त के लिए मुझे क्षमा कर दे।
मैंने अमीर अली की बात काटते हुए कहा, "अहंकारी! तुमने अपने ही साथी, अपने भाई की हत्या कर दी, जिसके प्रति तुमने वफादारी की शपथ ली थी?"
मैंने किया, साहब, मैंने किया; फिर भी इसे हत्या क्यों कहें? वह थोड़े ही समय में मर जाता; मैंने तो बस उसे उसके कष्टों से मुक्ति दिलाई।
यह एक घिनौना कृत्य था, अमीर अली; और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह आपकी स्मृति में हमेशा बना रहेगा।
कभी-कभी, ठग का लापरवाह जवाब होता था; और मैंने उसे आगे बढ़ने के लिए कहा।
हमने शव को कमर के चारों ओर लिपटी चादर में लपेट दिया और कमरबंद से पैसे निकाल लिए। लालू और मैं शव को कब्र तक ले गए, जो अब लगभग पूरी तरह से भर चुकी थी।
'तो वह मर गया!' लुघाई लोग चिल्लाए; 'उस वार के बाद वह ज्यादा देर तक जीवित नहीं रह सकता था: जिसने वार किया था, वह हममें से और भी लोगों को मार डालता अगर हममें से कुछ लोगों ने उसे पकड़ न लिया होता; लेकिन हमने उसे शांति से दफना दिया है— वह अब किसी भले आदमी का सिर नहीं फोड़ेगा: और बेचारे अनुंदी की बात करें तो, उसे बाकी लोगों के साथ ही दफनाना होगा, क्योंकि इस सुनसान जगह में उसे जलाना असंभव है।'
और उसे दफना दिया गया; उन्होंने गड्ढे के बीच में गहराई बढ़ा दी, उसके ऊपर कुछ भारी पत्थर रख दिए और उसे मिट्टी से ढक दिया: और जैसे ही वह हमेशा के लिए मेरी आँखों से ओझल हो गया, मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे दिल से बोझ उतर गया हो। केवल लालू ही जानता था कि मैंने क्या किया था, और मैं जानता था कि वह वफादार और चुप रहने वाला था: फिर भी बाद में अक्सर मुझे यह अफ़सोस होता था कि या तो किसी और ने यह काम किया होता, या मैंने उसे मरने दिया होता।
साहब, हमें एक दुर्लभ खजाना मिला था। अगले गाँव में गोर खाने के बाद, हम जल्दी से अपने सफर के आखिरी पड़ाव की ओर बढ़े; और कमर कसने से पहले ही मैंने संदूक खोलकर लूट का माल बाँट लिया। व्यापारी न केवल वह हार लाया था जिसका मैंने पहले जिक्र किया था, बल्कि मोतियों का एक ढेर भी लाया था;

और उनकी संभावित कीमत का अनुमान लगाने पर, हमने पाया कि वह पच्चीस हजार रुपये था। अब हमें अपने घरों से दूर रुकने की कोई वजह नहीं थी; हमें खुद को और अमीर बनाने के लिए किसी नए रोमांच की जरूरत नहीं थी, और हम झालोन की ओर चल पड़े। हम वहाँ सुरक्षित पहुँच गए, और मैंने फिर से अज़ीमा को अपने दिल से लगा लिया, और यह देखकर खुशी हुई कि मेरी बच्ची ठीक है, और एक लड़की की तरह उत्सुकता से अपनी शादी के दिन का इंतजार कर रही है। मेरे पिताजी भी ठीक थे, और बिना किसी खास घटना के झालोन पहुँच गए थे, कम से कम उन्होंने मुझे यही बताया। लेकिन गणेश के बारे में कोई खबर नहीं थी, सिवाय इसके कि वह पूर्व दिशा की ओर मुड़ गए थे, और माना जाता है कि वह बनारस की दिशा में गए थे; और मुझे इसकी जरा भी परवाह नहीं थी, सिवाय इसके कि मूनशी के बेटे के विनाश का बदला लेने की भावना मेरे दिल में खटक रही थी और भूली नहीं थी।

मेरे घर में कई महीने चिंतामुक्त और शांति से बीत गए। अफसोस! अब जब मैं उस समय के बारे में सोचता हूँ, तो उस समय की तुलना नदी की शांत धारा से ही कर सकता हूँ, जो शांत दृश्यों और हरे-भरे किनारों के बीच बहती है, केवल कोमल हवाओं से ही हल्की लहरें उठती हैं, और अचानक रुक जाती है, चट्टानों से टकराती है, और उसकी धारा उथल-पुथल भरी और पथरीली बाधाओं से भयंकर संघर्ष में बदल जाती है। मुझे अपने भविष्य का कोई आभास नहीं हुआ, कोई चेतावनी नहीं दी गई; विनाश एक झटके में मुझ पर आ गिरा, और मैं और मेरा परिवार दोनों ही नष्ट हो गए! उस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के कारण ही मैं अब तक ईमानदार और शांत जीवन जी रहा था, क्योंकि मैंने ठग्गी छोड़ दी थी; और घर के सुखों का जितना अधिक अनुभव करता गया, उतना ही मैं अपनी भटकने, लूटपाट और विनाश की आदतों से विमुख होता गया। मेरे जीवन में इस सोचे-समझे बदलाव का एक कारण यह भी था कि मुझे हर दिन यह डर बढ़ता जा रहा था कि किसी दुर्भाग्यपूर्ण घटना से अज़ीमा को मेरे भयानक धंधे का पता चल जाएगा। मैं कल्पना कर सकता था कि उसके प्रेममय और कोमल स्वभाव पर क्या प्रभाव पड़ेगा, और यह जानकर कि मैं एक हत्यारा हूँ, उसके अस्तित्व की हर शक्ति कैसे धराशायी हो जाएगी; और अक्सर, जब वह आधी रात को मेरे सीने पर लेटी होती थी, तो ये विचार इतने तीव्र रूप से मेरे मन में आते थे कि यदि उसकी आत्मा का मेरी आत्मा से कोई रहस्यमय संबंध होता, तो वह भय से मेरे आलिंगन से दूर हट जाती और हमेशा के लिए मुझसे भाग जाती। और ये कल्पनाएँ इतनी बार और इतनी तीव्रता से आती थीं कि कभी-कभी मुझे लगभग लगता था कि ये आने वाली विपत्ति की चेतावनी हैं, और मैंने अपनी बेटी की शादी के बाद अपना निवास और अपनी सारी संपत्ति दिल्ली ले जाने का पक्का निश्चय कर लिया था, ताकि शेष दिनों तक वहीं रह सकूँ।

मैंने कहा था कि कई महीने बिना किसी घटना के बीत गए; मुझे यह भी बताना चाहिए था कि मेरे आने के कुछ समय बाद एक अंग्रेज सज्जन झालोन आए थे; और राजा के साथ उनकी कई गुप्त बैठकों से हमें पता चला कि किसी प्रकार की संधि हुई थी, और उन्होंने स्वयं को अंग्रेजी सरकार के संरक्षण में सौंप दिया था। मैंने इस पर ध्यान नहीं दिया: फिर भी उस समय भी एक ऐसी व्यवस्था चुपचाप लेकिन निश्चित रूप से काम कर रही थी

जिसने कुछ समय के लिए ठगों की शक्ति और एकता को कमजोर कर दिया—यह आघात इतना गंभीर था, बल्कि उससे भी अधिक गंभीर और स्थायी था, जितना उन्होंने पहले कभी अनुभव नहीं किया था।
अंग्रेज कुछ समय पहले झालोन से चले गए थे और हम उनकी यात्रा लगभग भूल चुके थे; मेरी बेटी की शादी की तैयारियां शुरू हो चुकी थीं और घर में हर तरफ खुशी का माहौल था। एक दिन दोपहर के करीब राजा के हुरकारा में से एक संदेश लेकर आया कि उसे विशेष कार्य के लिए दरबार में मेरी और मेरे पिता की उपस्थिति की आवश्यकता है। मैंने शादी समारोह का बहाना बनाकर मना किया, लेकिन सब व्यर्थ रहा। संदेशवाहक ने मेरी बात नहीं मानी; और अंत में, कोई विकल्प न देखकर, हमने कमर कस ली और हुरकारा के साथ चल दिए।
हमें विभिन्न प्रांगणों से होते हुए दीवान खाना ले जाया गया, जहाँ राजा अपने मुत्सुद्दी और सैनिकों से घिरे दरबार में बैठे थे। प्रवेश द्वार पर अपने जूते उतारकर, हम हमेशा की तरह राजा को अभिवादन करने के लिए उनकी गुड्डी की ओर बढ़ रहे थे, तभी अचानक हॉल के दोनों ओर से हम पर हमला हुआ और हमें तुरंत पकड़ लिया गया और हमारे हथियार छीन लिए गए। मैंने अपने पकड़ने वालों से व्यर्थ ही संघर्ष किया, मैंने उन्हें छुड़ाने के लिए हर संभव प्रयास किया: सब व्यर्थ था; मैं चारों ओर से घिर गया था और मुझ पर हावी हो गया था, मेरी पगड़ी मेरे सिर से बेरहमी से छीन ली गई थी और मेरे हाथ उससे इतनी कसकर बांधे गए थे कि मुझे लगा जैसे मेरे नाखूनों के नीचे से खून निकल आएगा। अंत में मैंने हार मान ली और सैनिकों के हाथों में निष्क्रिय पड़ा रहा। मेरा समय आ गया है, और मेरा भाग्य मुझे यहाँ तक ले आया है, लेकिन अंत में मुझे छोड़कर जा रहा है! मैंने सोचा; यह भवानी और आलिया की इच्छा है, मैं क्यों विरोध करूँ?
मुझे चुप देखकर राजा ने मुझसे बात की।
'अरे, अमीर अली,' उसने कहा; 'तुम्हारे बारे में ये क्या सुन रहा हूँ कि तुम एक ठग, एक कुख्यात हत्यारा हो? क्या ये उस व्यक्ति के बारे में सच हो सकता है जिसे झालोन में एक व्यापारी और सम्मानित व्यक्ति के रूप में देखा जाता था? तुम्हें क्या कहना है? बोलो, साहब, और अगर तुम कर सकते हो तो मुझे साबित करो कि तुम्हारे खिलाफ लगाए गए आरोप झूठे हैं।'
मैंने कहा, 'राजा, मुझे नहीं पता किसने तुम्हारे मन में मेरे या मेरे परिवार के विरुद्ध विष भर दिया है; क्या तुम्हारे नगर में कोई ऐसा है जो मेरे विरुद्ध एक शब्द भी कह सके? क्या मैंने सबके साथ, और तुम्हारे साथ भी, निष्पक्ष और ईमानदार व्यवहार नहीं किया है? क्या मैंने गांवों का प्रबंधन नहीं किया और उन्हें उजाड़ अवस्था से निकालकर समृद्धि की ओर नहीं ले गया? और क्या इस दरबार में कोई भी, चाहे जवान हो या बूढ़ा, कह सकता है कि मैंने कभी उसके साथ अन्याय किया हो या उससे एक अंश भी ठगा हो? राजा, कोई भी ऐसा नहीं कह सकता; तो फिर मुझे और मेरे बूढ़े पिता को नगर की नजरों में इस प्रकार अपमानित क्यों किया गया है, और विवाह के उत्सवों के बीच हमें हमारे घरों से क्यों निकाल दिया गया है?'
राजा ने कहा, 'मैं तुझ पर कोई आरोप नहीं लगाता; केवल भगवान ही जानते हैं कि मैंने जो सुना है वह सच है या नहीं; लेकिन तेरे और उस बूढ़े आदमी के खिलाफ कई गवाह हैं; उन्हें बोलने दो, और हम बाद में तुम्हारे

मामले का फैसला करेंगे।' उन्होंने एक सेवक से कहा, 'उन्हें सामने लाओ! एक-एक करके उन्हें इन अभागे आदमियों के सामने गवाही देने दो, हम इस मामले में कोई गोपनीयता नहीं चाहते।'
सभा में एक पल का सन्नाटा छा गया, और सबकी निगाहें—सौ की सौ निगाहें हम पर टिकी थीं। मैंने अपने पिता की ओर देखा, यह देखने के लिए कि उनकी स्थिति का उन पर क्या प्रभाव पड़ा है; लेकिन उनकी नज़र में मुझे कोई उम्मीद नहीं दिखी; उनकी ऊर्जा थम सी गई थी, और वे किसी अपराधी की तरह लग रहे थे, जबकि असल में वे अपराधी थे ही नहीं; उन्होंने मेरी चिंतित और अर्थपूर्ण निगाहों का जवाब उदासीनता या अत्यधिक भय भरी नज़रों से दिया—पता नहीं कौन सा भाव था; और उन्हें देखना दयनीय था, क्योंकि उनका आदरणीय और सम्मानित रूप उनकी दयनीय स्थिति से बिल्कुल मेल नहीं खा रहा था। मैंने उनसे नज़रें हटाकर अंदर आने वाले व्यक्ति को देखा, और तब मुझे लगा कि मेरा भाग्य निश्चित हो गया है। मैंने कभी उसका ज़िक्र नहीं किया, लेकिन वह शुरू से ही हमारे गिरोह से तिलहाई या जासूस के रूप में जुड़ा हुआ था, और बाद में कई मौकों पर भुट्टोटे के रूप में भी मदद कर चुका था। उसका नाम सूरज था; वह मेरे सभी शुरुआती अभियानों में मेरे साथ था, और मेरे ठग बनने से पहले कुछ समय तक मेरे पिता के अधीन काम कर चुका था; इसलिए वह मेरे जीवन के हर पहलू से वाकिफ था; और जब तक मैं पिंडारी नहीं बन गया, उसने हर घटना का विस्तारपूर्वक और सत्यनिष्ठा से वर्णन किया, एक भी घटना को नहीं छोड़ा और न ही उन घटनाओं में कुछ जोड़ा जिनमें मैं गहराई से शामिल था। उसने उन स्थानों को इंगित करने की पेशकश की जहाँ यात्रियों को नष्ट किया गया था, कई अवसरों पर हमारे द्वारा प्राप्त लूट की मात्रा का बखान किया, और अंत में मेरे पिता और मुझे बुंदेलखंड के सबसे बड़े नेता, ऐसे व्यक्ति जो किसी भी समय दो सौ या अधिक अनुयायियों के साथ मैदान में उतर सकते थे, और क्रूर और निर्दयी ठगों के रूप में निंदा की। उसने मुझे अपने शब्दों को गलत साबित करने की चुनौती दी, और वास्तव में मैं उसके आरोपों से कांप गया; क्योंकि वे सत्य थे, और सत्य हृदय को परखता है और दोषी को क्षुद्र कर देता है। लेकिन मेरे पिता के प्रति उसका क्रोध सबसे अधिक था। 'देखो उसे, राजा!' वह चिल्लाया; 'इस बूढ़े दुष्ट को देखो; कोई सोचेगा कि बूढ़ा होने के बावजूद, उसने अपने साथी मनुष्यों का जीवन छीनना बंद कर दिया होगा; मुझे लगा था कि वह अपने शेष दिन भवानी को बलिदानों से प्रसन्न करने और अपने पैगंबर को प्रार्थनाओं से प्रसन्न करने में व्यतीत करेगा! पर ऐसा नहीं हुआ। पिछले दो महीनों में वह लूट के माल से लदा एक अभियान से लौटा है, और जिस आखिरी व्यक्ति का उसने गला घोंटा, वह हे राजा, तुम्हारी ही प्रजा का एक सदस्य था—एक ऐसा व्यक्ति जिसका यहाँ सम्मान और प्रेम था, और जिसका शोक संतप्त परिवार आज पछताएगा कि मैंने तुम्हारे दरबार में उसके भाग्य का ऐलान कर दिया है।'
'मेरी ही एक प्रजा!' राजा ने गरजते हुए कहा; 'तुम्हारा यह मतलब नहीं हो सकता। बोलो! और डर को सच बताने से मत रोको।'
'डर! राजा, मैं इसे नहीं जानता। अगर मैं उस बूढ़े आदमी से डरता, तो क्या मैं इस तरह बोलने की हिम्मत करता? सुनो; तुम जेसवंट मुल को जानते थे, जो झालोन के सबसे सम्मानित श्रॉफों में से एक था?'
'क्या तुम उसे जानते थे, हे बुरी खबर के दूत! क्या जेस्वंट मुल मरा नहीं है?'

उस आदमी ने कर्कश स्वर में कहा, 'उससे पूछो; या यहीं रुको, यहाँ मौजूद दूसरे आदमी से पूछो; उसे आगे लाओ, वह पूरी कहानी बताएगा; मैंने तो नहीं देखा। लेकिन जेस्वंट मुल अब कभी नहीं बोलेगा, और जो लोग मानते हैं कि वह भला आदमी सागर में सुरक्षित है, वे अपनी मूंछें मुंडवा लें और शोक मनाएं, क्योंकि वह अब कभी दिखाई नहीं देगा। हाँ, वह मर चुका है, और वह बूढ़ा आदमी देखता रहा जब वह भुट्टोटे के कमरे के नीचे अपनी आखिरी पीड़ा से तड़प रहा था;' और उसने मेरे पिता की ओर इशारा किया, और उन्हें एक क्रूर और प्रतिशोधी आनंद भरी नज़र से देखा।

मुखबिर की गहरी आवाज़ सुनते ही सभा में सन्नाटा छा गया; और कई लोग अविश्वास भरे स्वर में एक साथ फुसफुसाते हुए बोले, 'जेसवंट मुल मर गया!'। राजा भी इस दुखद खबर से ज़रा भी प्रभावित नहीं हुए। वे चुपचाप अपनी कुर्सी पर बैठे रहे, हालाँकि उनके चेहरे के भावों से स्पष्ट था कि वे कितने दुखी थे। लेकिन अंततः वे उठे।

'तो क्या तुमने यह हत्या नहीं देखी?' उसने मुखबिर से कहा।

'मैंने ऐसा नहीं किया, महाराज; लेकिन बोधी को बुलवाइए, वह सारी जानकारी दे देगा।'

बोधी! मैंने सोचा, फिर तो वाकई कोई उम्मीद नहीं है। जब तक उसका नाम नहीं लिया गया था, मुझे हल्का सा आभास था कि आरोप मनगढ़ंत हो सकता है; खासकर इसलिए कि मैंने अपने पिता से साहूकार के भाग्य के बारे में कुछ नहीं सुना था: लेकिन बोधी उसके साथ था, और वह लुघाई समुदाय का मुखिया था, और यह पूरी तरह संभव था कि उसने ही पीड़ित के लिए कब्र खोदी हो।

'बोधी को आगे लाया जाए,' राजा ने पुकार लगाई।

वह आया; उसके चलने पर बेड़ियाँ खनक उठीं, और जब वह दरबार के बीचोंबीच पहुँचा, तब उसने मुझे और मेरे पिता को बंधे हुए और अपराधियों की तरह देखा। यह दृश्य देखकर वह स्तब्ध रह गया, और स्वाभाविक भी था; हमने उस पर भरोसा किया था, मेरे पिता ने ही उसे इस पद तक पहुँचाया था, और उसने हमेशा उसे बेटे की तरह माना था, हालाँकि उसका धर्म हमसे भिन्न था। उसका चेहरा भावों से भर उठा था— शायद एक निष्ठावान हृदय के कृतघ्नता से जूझने के भाव थे; और मैं बेसब्री से उसके मुँह से निकलने वाले पहले शब्दों का इंतज़ार कर रहा था। लेकिन उसके बोलने से पहले ही राजा ने उसे संबोधित किया।

'अभागे!' उसने कहा, 'तेरी जान इस शर्त पर बख्शी गई है कि तू सच बोलेगा और बिना किसी लाग-लपेट के अपने द्वारा किए गए हर हत्या के कृत्य का खुलासा करेगा। अंग्रेजों ने तुझे यह वादा किया है और अब तुझे साबित करना होगा कि तू अपना वादा निभाएगा। अगर तू ऐसा करता है, तो अच्छा; अगर नहीं, तो भले ही अंग्रेज तेरे रक्षक हों, मैं तुझे कसम खिलाता हूँ कि तुझे पल भर में ही मेरे हाथियों द्वारा घसीटकर मार डाला जाएगा। हाथी को लाने का आदेश दे!' उसने एक सेवक से कहा; 'और देख ले कि जंजीरें तैयार हैं। गंगा की कसम! उसे जल्द ही काम मिलेगा। और अब,' उसने गवाह से आगे कहा, 'क्या तुझे इस कस्बे के जेसवंट मुल की मौत के बारे में कुछ पता है—जो मेरे निजी मामलों का प्रबंधन करता था, या क्या वह सचमुच मर गया है? बोल, और याद रख कि केवल सच ही तुझे बचा सकता है।'

वहाँ सन्नाटा पसरा हुआ था; मेरे पिता मुखबिर को गहरी चिंता से देख रहे थे; मुझे स्पष्ट रूप से समझ आ रहा था कि उन्हें लग रहा था कि उसका एक शब्द ही उनका भाग्य तय कर देगा, या फिर अगर वह अपने किए से मुकर जाए तो बच जाएगा। उन्होंने बड़ी गंभीरता और विनती से मुखबिर को देखा, और मुखबिर लगभग हार मान चुका था; उसका शरीर काँप रहा था, उसके चेहरे पर पसीने की बड़ी-बड़ी बूँदें उभरी हुई थीं, और माथे की नसें लगभग फूल गई थीं।

'बोलो, बोधी!' मेरे पिता ने खोखली आवाज में कहा, - फिर भी वे मुस्कुरा रहे थे, - 'बोलो, और राजा को बताओ कि उनका बेचारा सेवक इस्माइल इस कृत्य का दोषी नहीं है।'

'चुप रहो!' राजा ने गरजते हुए कहा; 'अगर वह मुखबिर को प्रभावित करने के लिए एक भी शब्द बोलने की कोशिश करे तो उसका मुंह बंद कर दो; हम इस मामले में न्याय करेंगे; और आप, मीर साहब, (अपने पास बैठे एक सम्मानित दिखने वाले व्यक्ति की ओर मुड़ते हुए,) आप साहिब-भाषण में बता सकते हैं कि झालोन के दरबार में न्याय हो सकता है। हाथी को लाओ,' उन्होंने सेवकों से कहा; 'और तुम, बोधी, धरती और आकाश को अपनी आखिरी निगाहों से देखो, क्योंकि गंगा की कसम, मैं कसम खाता हूँ, अगर तुमने मुझे धोखा दिया तो तुम मौत के करीब हो। मैंने तुम्हारे चेहरे से पढ़ लिया है कि यह मामला तुम्हें पता है।'

लेकिन बोधी फिर भी हिचकिचा रहा था: उसके भीतर स्पष्ट रूप से एक संघर्ष चल रहा था कि क्या वह अपने पुराने रक्षक की रक्षा में मर जाए, या अपनी जान बचाने के लिए उसे धोखा दे दे। एक क्षण के लिए पहला भाव प्रबल हुआ; वह राजा की ओर मुड़ा और स्पष्ट और दृढ़ता से बोला, 'हे महाराज, मैं आपकी बलि बनूँ! मुझे इस मामले की कोई जानकारी नहीं है: अन्य हत्याओं के बारे में मैं आपको बता सकता हूँ, लेकिन इसके बारे में मुझे कुछ नहीं पता।'

'वह झूठ बोल रहा है!' दूसरे गवाह ने कहा; 'वह इस्माइल जमादार के साथ था; वह बोलने से डरता है, और उसने आपसे झूठ बोला है, हे राजकुमार।'

'तुम उसकी बात सुन रहे हो,' राजा ने बोधी से कहा; 'तुम अपने साथी ठग की बात सुन रहे हो; फिर भी, यद्यपि तुम मृत्यु के पात्र हो, मैं तुम्हें कुछ और क्षण देता हूँ: बरामदे की छाया अब मेरे मुसनुद के बिल्कुल करीब है, - जब तक वह उस तक पहुँचती है, तुम जीवित रहोगे - उससे आगे, एक उंगली की चौड़ाई, और तुम मर जाओगे!'

भीड़ में शायद ही किसी की नज़र उस बढ़ती हुई परछाई पर न टिकी हो; बस एक हाथ भर की रोशनी बची थी, और वह बदमाश उसे ऐसे घूर रहा था मानो किसी बाघ की आँख से मोहित हो गया हो। मेरे पिता! ओह, उन्हें देखना कितना भयानक था; उनकी आँखें बेजान थीं— उनके होंठ दाँतों पर कसे हुए थे— उनके चेहरे पर डर और पीड़ा इतनी स्पष्ट रूप से झलक रही थी जितनी मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। मैं उन्हें देख नहीं पा रहा था— उनका चेहरा बदल गया था, और उनके सामान्य सौम्य भाव की जगह वह भाव आ गया था जिसका मैंने वर्णन किया है। मुझे उल्टी जैसा महसूस हुआ, मुझे लगा जैसे मैं मर ही जाऊँ; और काश मैं मर ही गया होता, ताकि जो आगे आने वाला है उससे बच जाता।

'मूर्ख!' दूसरे गवाह ने चिल्लाकर कहा, 'क्या तुम उन लोगों के लिए अपनी जान कुर्बान करोगे जिन्हें तुरंत मौत के घाट उतार दिया जाएगा?' उसने रामासी भाषा में बात की।
उन शब्दों ने उस व्यक्ति को प्रेरित किया जिनसे उन्होंने ये शब्द कहे थे, और उन्होंने उसकी जान बचा ली।
'क्षमा करो, क्षमा करो!' वह चिल्लाया; 'हे शक्तिशाली राजकुमार, मैंने झूठ बोला है। जेसवंट मुल वास्तव में मर चुका है; इन्हीं हाथों ने उसकी कब्र खोदी और उसके अभी भी गर्म शरीर को वहाँ तक पहुँचाया।'
'ऐ भुगवान! ऐ सीताराम!' राजा ने पुकार कर कहा, 'क्या सच में ऐसा ही है? मेरे प्यारे मित्र, क्या तुम मर गए?' और कुछ पल के लिए वह रो पड़ा। 'यह स्त्रीत्वपूर्ण है,' उसने खुद को संभालते हुए कहा, 'बताओ, ऐ कुंभुख्त! मुझे सब कुछ बताओ, और इसमें उसका क्या हिस्सा था।'
ठग ने कहा, 'हम साहूकार से —— पर मिले। इस्माइल अच्छी तरह जानता था कि अगर वह हम सबको देख लेता तो उसे शक हो जाता, इसलिए उसने अपने गिरोह के ज़्यादातर लोगों को गाँव से बाहर भेज दिया और जेसवंट मुल को मना लिया कि वह जहाँ था वहाँ रहने के बजाय हमारे शिविर में आकर सोए; वह खुद गाँव गया और उसे ले आया, वरना वह आता ही नहीं। उसके आने से बहुत पहले ही कब्र खोद दी गई थी और सूरज डूबने के एक घंटे के अंदर ही जमादार की मौजूदगी में दो भुट्टोतों ने उसका गला घोंट दिया और उसके दो नौकरों का भी वही हाल हुआ। मैंने उन सबको दफना दिया। साहूकार का टट्टू हमने अगले दिन पच्चीस रुपये में बेच दिया; और हमें ज़्यादा कुछ नहीं मिला, क्योंकि उसके पास हुंडी के अलावा कोई पैसा नहीं था, जिसे हमने जला दिया।'
'बस करो, बस करो,' राजा ने कहा; 'यह पर्याप्त सबूत है।'
'नहीं, अगर आपकी महानता को और सबूत चाहिए, तो मैं अभी आपको कुछ सबूत दे सकता हूँ,' गवाह ने आगे कहा: 'जमादार के हाथ को देखिए; उसने अपने हाथ में एक अंगूठी पहनी हुई है जो उसने खुद शरीर से निकाली है, और महाराज, आप भी इसे पहचान सकते हैं।'
भाग्य के इस नए और निराशाजनक झटके से मेरा दिल बैठ गया। मैंने अपने पिता की उंगली से अंगूठी उतरते देखी; सभी ने उसकी जांच की: सभा में मौजूद एक साहूकार ने घोषणा की कि यह जेस्वंट मुल की थी, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि अंगूठी की भीतरी सतह पर उसका नाम खुदा हुआ था।
'बस करो!' राजा फिर चिल्लाया, 'मैं खुद जानता हूँ; मैं हज़ार हीरों में से उस हीरे की कसम खा सकता हूँ। इसे ले जाओ! इसे हाथी से बाँध दो, इसे पूरे शहर में घसीटो, और ऐलान करो कि यह एक ठग है।'
'रुको,' उस स्यूद ने, जो अभी तक कुछ बोला नहीं था, कहा, 'हो सकता है उसके पास अपने बचाव में कुछ कहने को हो; उससे पूछो और उसकी बात सुनो।'
'बोलो!' राजा ने मेरे बेचारे पिता से कहा; 'बोलो, हे कुम्बुख्त!'
और फिर मेरे पिता का गर्वित भाव जागृत हुआ। मृत्यु की निश्चितता को देखते हुए भी वे विचलित नहीं हुए। जब तक जीवन की आशा शेष थी, उन्होंने उसे हर मनुष्य की तरह थामे रखा; और जब मैंने उनके पहले के

व्यवहार को देखते हुए उनसे जीवनदान की भीख मांगने की अपेक्षा की थी, तो उन्होंने ऐसा नहीं किया, बल्कि उस उद्देश्य पर गर्व किया जिसके लिए उन्होंने प्राण त्यागे।

'जी हां,' उसने उठते हुए कहा, उसकी आंखें गर्व से चमक रही थीं, 'मैं झूठ बोलते हुए मरना नहीं चाहता। मैंने जेस्वंट मुल को इसलिए मारा क्योंकि वह दुष्ट था, जैसा कि आप हैं, राजा! क्योंकि उसने गुंडों को काम पर रखा था और उन्हें इनाम नहीं देता था, बल्कि उनसे हर संभव रुपया निचोड़ लेता था, जैसा कि आप करते हैं। मैंने सैकड़ों लोगों की हत्या की है क्योंकि उन्हें आलिया ने मेरे हवाले कर दिया था, लेकिन मैंने किसी को भी उस संतुष्टि के साथ नहीं मारा जैसा मैंने आपके दोस्त को मारा। हां, आप अपराध में दोस्त और भाई थे, और आप यह जानते हैं। मेरी जिंदगी! मुझे इसकी परवाह नहीं है। एक बूढ़े आदमी का जीवन से क्या लेना-देना? उसके सुख-सुविधाएं खत्म हो चुकी हैं, उसका अस्तित्व उसके लिए बोझ है। थोड़े समय में प्रकृति मुझे अपने कब्जे में ले लेती; आपने समय से पहले ही समय का अनुमान लगा लिया है। फिर भी, हे राजा, भवानी इस कृत्य के लिए आपसे सवाल करेगी—अपने भक्त के विनाश के लिए। मेरा खून आपके सिर पर हो, और मरते हुए आदमी का श्राप आप पर हो!' तुमने मुझे धोखा दिया, मुझे लूटा, मेरी संपत्ति आपस में बाँटी, हत्या का माल लिया—नहीं, अधीर मत हो, तुम जानती हो कि यह सच है, और आलिया, जो सबकी न्यायकर्ता है, वह भी यह जानती है। वह तुम्हारा हिस्सा जहन्नम में काफ़िरों की तरह डालेगा; और भवानी इस बात पर प्रसन्न होगी कि उसके उपासक का नाश करने वाला नरक की यातनाओं में तड़प रहा है।

'उसका मुंह बंद करो! उस काफ़िर के मुंह पर जूता मारो!' राजा क्रोध से दहाड़ा, उसका क्रोध मनुष्य से अधिक किसी जानवर जैसा था, उसके मुंह से झाग निकल रहा था; 'उसे यहाँ से ले जाओ! और उसके बेटे को उसकी मरणासन्न पीड़ा देखने दो।'

और वे हम दोनों को घसीटते हुए बाहर ले आए; मैं अपने पिता का नाम नहीं लूँगा, क्योंकि उनके कदम स्थिर थे। मैंने अपने उत्पीड़कों से संघर्ष किया, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। जब हम एक-दूसरे के करीब लाए गए, तो मैंने उनसे कहा, 'एक शब्द, मेरे पिता! क्या आप अपने बेटे से बात नहीं करेंगे?'

उन्होंने अपना सिर घुमाया और उनकी आँखों में एक आँसू आ गया। 'मैं तुम्हें छोड़कर जा रहा हूँ, अमीर अली; लेकिन तुम जानते हो कि एक मोमिन का स्वर्ग क्या होता है, और वहाँ उसे मिलने वाले सुखों को—सत्तर कुंवारी कन्याओं और शाश्वत यौवन को। तुम मेरे पुत्र नहीं हो, लेकिन मैंने तुम्हें पुत्र के समान प्रेम किया है, और आलिया तुम्हारी रक्षा करे!'

'बस बहुत हो गया!' उन निर्दयी सैनिकों ने चिल्लाते हुए उसके मुंह पर एक थप्पड़ मारा और उसे घसीटते हुए आगे ले गए।

'मेरा बदला लो!' मेरे पिता ने रामासी में कहा; 'उस राक्षस के आचरण के बारे में अंग्रेजों को बताओ, और जब उसे उसके अभिमान के सिंहासन से उतार दिया जाएगा, तो मेरी आत्मा स्वर्ग में प्रसन्न होगी।'

उन्होंने कुछ नहीं कहा; मुझे जबरदस्ती पकड़ लिया गया, जिससे मैंने उस कत्लेआम का अंत देखा। उन्होंने उसे कमर में जंजीर बांधकर हाथी के अगले पैर से बांध दिया और उसके हाथ पीछे बांध दिए, ताकि वह खुद

को बचाने के लिए हाथी से चिपक न सके। वह अभी भी कुलमा का जाप कर रहा था; लेकिन अब सब कुछ तैयार था—महावत ने अपना अंकुश उस विशाल जानवर के सिर में घुसा दिया, जो ज़ोर से चीखते हुए आगे की ओर झपटा। कुछ ही कदम, और मेरे पिता की आत्मा स्वर्ग में पहुँच जाती!

नोट: झालोन के राजा की मृत्यु एक गंभीर कुष्ठ रोग से हुई थी, जिसके बारे में सभी ठगों का कहना है कि वर्णित तरीके से ठग की मृत्यु के तुरंत बाद यह रोग फैल गया था, और यह भवानी द्वारा उन पर भेजा गया दंड था।

अध्याय 166

राजा रिचर्ड। मेरी अंतरात्मा की हज़ार अलग-अलग भाषाएँ हैं।
और हर जुबान से अलग-अलग कहानियां निकलती हैं।
और हर कहानी मुझे खलनायक के रूप में चित्रित करती है।
मुझे उन सभी की आत्माओं का ख्याल आया जिनकी मैंने हत्या की थी।
मेरे तम्बू में आया।
रिचर्ड तृतीय, अंक V, दृश्य iii

साहब, क्या मैं आपको बता सकती हूँ कि उस समय मेरे दिल में कितनी तीव्र भावनाएँ जल रही थीं? मैं नहीं बता सकती। मेरे दिमाग में हज़ारों विचार उमड़ रहे थे, यहाँ तक कि मुझे लगा जैसे मैं पागल हो गई हूँ; शायद मैं थी भी। मेरे पिता का बदला मेरे लिए सर्वोपरि था; और काश मैं खुद को छुड़ा पाती: आलिया की कसम! निहत्थी होते हुए भी, मुझे लगता है कि मैं राजा पर झपट पड़ती और उनका गला घोंट देती। लेकिन प्रतिरोध व्यर्थ था; जितना मैं संघर्ष करती, मेरे हाथ उतने ही कसकर बाँधे जाते, यहाँ तक कि वे इतने सूज गए कि दर्द असहनीय हो गया, और मैं लगभग गिर ही पड़ी। मैंने अपने पहरेदारों को मुझे दरबार से दूर ले जाने दिया: मुझे एक गंदी जगह पर धकेल दिया गया, और अंत में मेरे हाथ खोल दिए गए।

वो दिन—आलिया, कैसे गुज़रा! लोग मुझे पिंजरे में ऐसे घूर रहे थे मानो मैं कोई बाघिन हूँ, और मेरा मज़ाक उड़ा रहे थे। कस्बे के लड़के मुझे चिढ़ा रहे थे और लोहे की जाली से मुझ पर डंडे मार रहे थे। सब मुझे गालियाँ दे रहे थे—मुझे! उस इज़्ज़तदार, बल्कि अमीर औरत को, जिसके सामने वे झुकते थे, जब मैं राजा की कृपा से तरोताज़ा थी—लेकिन अब मैं गिरी हुई थी। हाय! मेरे सपने, मेरी आशंकाएँ सच हो गईं—वे तो बस धुंधली परछाइयाँ थीं—यही हकीकत थी। आलिया! आलिया! मैं बड़बड़ा रही थी, मैं अज़ीमा का नाम पुकार रही थी, मैं उन लोगों से जो अभी भी मेरे पिंजरे के आसपास थे, विनती कर रही थी कि वे दौड़कर आएँ और मुझे अज़ीमा की खबर दें और उसे दिलासा दें; और जब वे मेरा मज़ाक उड़ा रहे थे और मेरी चीखों का उपहास कर रहे थे, तो मैं उन्हें कोस रही थी। अज़ीमा, वह नाम जिसे मेरे ज़नाना की सीमा के बाहर किसी इंसान द्वारा शायद ही बोला जाता, भीड़ के मुंह में गूंजने लगा, वे उस पर मज़ाक उड़ाते, उसे गंदी गालियों से भर देते, और मैंने यह सब सुना। मैंने अपने कान बंद करने की व्यर्थ कोशिश की, लेकिन इससे वे और भड़क उठे; वे लोहे की सलाखों के पास चिल्लाए और मुझ पर थूके। रात हो गई, और मैं अपने अकेलेपन में रह गया। मुझे उसकी स्नेह भरी बाहों में होना चाहिए था—अब मैं चूहे, छिपकली और बिच्छू की संगति में था। मैंने नींद को पाने की व्यर्थ कोशिश की, अपनी इंद्रियों को उनकी पीड़ा से अस्थायी रूप से विरक्ति में डुबोने की; मेरा शरीर इतना मजबूत था, और मेरी पीड़ा इतनी तीव्र थी, कि मुझे नींद नहीं आई। मैंने अपनी पीड़ा से संघर्ष किया, लेकिन मैं उस पर विजय नहीं पा सका, और मुझे कड़वा घूंट अंत तक पीना पड़ा। अंततः सुबह हो गई; मैंने नमाज़ पढ़ी: वज़ू के लिए रेत या पानी की जगह ज़मीन की धूल ही काम आई। पानी तो था ही नहीं; मैंने

भीख माँगी थी, क्योंकि चिंता से मेरा मुँह सूख गया था, फिर भी किसी ने नहीं दिया। दरबार फिर से भर गया था; बूढ़े-जवान, औरतें और बच्चे, सब उस सय्यद को देखने आए थे—उस अमीर अली ठग को देखने—उसका मज़ाक उड़ाने और उसे सताने के लिए! लेकिन अब मैं उदास था; जैसे कोई बाघ फँसने के बाद अपना पहला गुस्सा शांत होने पर शांत हो जाता है, मैं अपनी कोठरी के कोने में दुबक गया और अपने चेहरे को अपनी कमरबंद से ढक लिया, न तो उनकी बेरहम, निर्मम हँसी पर ध्यान दिया और न ही उनके द्वारा मुझ पर बरसाए गए कड़वे शब्दों पर। व्यर्थ ही मैंने बीच-बीच में इधर-उधर देखा कि कहीं कोई दया भरी नज़र मुझ पर तो नहीं पड़ी। अफ़सोस! एक भी नहीं; हर चेहरा मेरे लिए जाना-पहचाना था, लेकिन आँखें या तो मेरे कष्टों पर क्रूर संतुष्टि जता रही थीं, या फिर उदासीनता की ठंडी, बेजान निगाहों से मुझे घूर रही थीं। मैंने कई बार बोलने की कोशिश की, लेकिन मेरे सामने मौजूद भीड़ ने मेरी हर फुसफुसाहट को चीख-पुकार से दबा दिया, और मेरा गला सूख गया था और मेरी जीभ भयंकर प्यास से सूज गई थी।

पूरा दिन बीत गया—मुझे न खाना मिला, न पानी। भीषण गर्मी का मौसम था, और मैं, जो ऐशो-आराम में पली-बढ़ी थी, जिसे अपने घर में अज़ीमा के बनाए ताज़गी भरे शरबत पीने चाहिए थे, मुझे अपने जलते गले को ठंडा करने के लिए एक बूँद पानी भी नहीं दिया गया। मैंने अपने आस-पास के लोगों से, पत्थर दिलों को छोड़कर किसी को भी पिघला देने वाली आवाज़ में, व्यर्थ ही विनती की कि वे मेरे कारागार की रखवाली करने वाले जमादार से मुझे एक घूँट पानी पिलाने की विनती करें। ऐसा लग रहा था मानो मैं उस झुलसा देने वाली हवा से बात कर रही हूँ जो मेरे पिंजरे में सीटी बजाती हुई आ रही थी—अपने साथ धूल के बादल ला रही थी, जिन्हें उन निर्दयी लड़कों ने और बढ़ा दिया जब उन्होंने देखा कि मैं उनसे दूर हट रही हूँ। इस तरह दिन बीत गया: शाम हो गई, और फिर भी न पानी, न राहत, न मेरी हालत के बारे में कोई पूछताछ। क्या मुझे वहाँ मरने के लिए रखा गया था? और जैसे ही यह विचार मेरे मन में आया, मैं उस पर सोचने लगी। हाँ, मुझे मरना था! प्यास और भूख से मरना था; और फिर, ओह, मुझे अपने पिता के भाग्य से कितनी ईर्ष्या हुई! एक छोटे से घंटे के दौरान उन्होंने जो दुख और पीड़ा झेली थी, उससे स्वर्ग और हूरों के पास उनका जाना कितना क्षणिक था। और शाम से रात हो गई। मैंने ढलते सूरज को तब तक देखा, जब तक उसकी आखिरी जलती और झुलसा देने वाली किरणें मेरी कैदखाने की ज़मीन पर पड़ना बंद नहीं हो गईं—मैंने लाल होते पश्चिम को तब तक देखा जब तक उसकी चमक गायब नहीं हो गई, और एक-एक करके तारे घनी और गर्म हवा में धुंधले चमकने लगे—और मुझे लगा कि मैं अब वह शुभ दिन नहीं देख पाऊँगा, क्योंकि मैं इतना बीमार और थका हुआ था कि मौत के कगार पर था। मैं लेट गया और अपने मन और शरीर की पीड़ा में कराहने लगा, और अंत में नींद ने मुझे राहत दी। कुछ पल के लिए सब कुछ विस्मृति में था; लेकिन भयानक सपने मेरी कैदखाने को बदसूरत आकृतियों और दिल दहला देने वाले दृश्यों से भरने लगे; मेरा जीवन मानो मेरे सामने समीक्षा के रूप में चल रहा था, और जिन लोगों का मैंने गला घोंटा था, उनके चेहरे मेरे खिलाफ भयंकर उपहास करते हुए उठ खड़े हुए—बाहर निकली हुई जीभों और आँखों वाले चेहरे, ठीक वैसे ही जैसे मैंने उन्हें गला घोंटकर छोड़ा था।

साहब, मैं आपको उनका वर्णन क्यों करूँ? उन भयावह दृश्यों का वर्णन करके आपको क्यों रोकूँ जो मेरी विक्षिप्त कल्पना में उभरे और अंततः मुझे जगा दिया, मानो मेरे भीतर आग लगी हो और बुझने का नाम ही न ले रही हो? लेकिन अंततः सुबह हो गई और ठंडी हवा एक बार फिर मेरे तपते और बुखार से व्याकुल शरीर पर बह गई और मुझे तरोताज़ा कर दिया। फिर भी मैं पीड़ा में था; प्यास की पीड़ा का वर्णन कौन कर सकता है? मुझे भूख नहीं लग रही थी: प्यास ने मुझे जकड़ लिया था और मेरे पेट को सुखा दिया था। मैं कितनी बेसब्री से उस पहले व्यक्ति का इंतज़ार कर रहा था जो उस प्रांगण में प्रवेश करेगा जहाँ मेरी कैद थी! एक आया, वह चला गया और मेरी दयनीय पुकारों पर ध्यान नहीं दिया: एक और, फिर एक और; किसी ने मेरी ओर नहीं देखा, और फिर मुझे लगा कि मैं मरने वाला हूँ। एक और आया; मैंने पुकारा, और वह मेरी ओर मुड़ा। वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसे मैं जानता था, जिसने मेरी रोटी और नमक खाया था, और मेरे घर के कामों में लगा हुआ था, और उसे मुझ पर दया आई; उसे याद था कि मैंने उसके लिए क्या किया था: वह आया, और उसने मेरी ओर देखा। मैंने उससे बात की, और वह चौंक गया, क्योंकि मेरी आवाज़ खोखली, पतली और कर्कश थी।
'पानी!' मैं चिल्लाया, 'पवित्र पैगंबर के नाम पर, तुम्हारी माँ के नाम पर, पानी की एक बूँद! जब से मुझे कैद किया गया है, मैंने पानी का एक घूँट भी नहीं चखा है।'
'अफ़सोस!' उसने धीमी आवाज़ में कहा, 'यह कैसे हो सकता है, मीर साहब? राजा ने धमकी दी है कि जो भी आपसे बात करेगा या आपके लिए खाना लाएगा, उसे मौत की सज़ा दी जाएगी।'
मैंने फिर से विनती की; और मैं, जो उसका स्वामी था, ज़मीन पर लेट गया और अपना माथा धूल में रगड़ा। वह पिघल गया— उसे दया आई और वह कुछ लाने गया; सौभाग्य से किसी ने उसे नहीं देखा, और वह एक छोटा सा मिट्टी का घड़ा भरकर लाया, जिसे मैंने ऐसे पिया मानो वह स्वर्ग के कुएँ का पानी हो। उसने बार-बार घड़ा उठाया और उसे भरता रहा; और अंत में वह मुझे छोड़कर चला गया, लेकिन जाने से पहले उसने मुझसे वादा किया कि वह रात में मुझसे मिलने आएगा, अगर हो सके तो मेरे लिए एक रोटी लाएगा, और सबसे बढ़कर, अज़ीमा और मेरे घर की खबर देगा।
अगला दिन बीत गया, और मेरे पास खाने को कुछ नहीं था। मेरे पास जो पानी बचा था, उसे मैंने बचा-बचाकर थोड़ा-थोड़ा करके पिया; लेकिन शाम होते-होते मैं फिर से तड़पने लगा। फिर भी मुझे उम्मीद थी, क्योंकि मैं जानता था कि वह युवक मुझे धोखा नहीं देगा; उसने अपनी माँ की कसम खाकर मुझे खाना लाने का वादा किया था, और वह अपना वादा नहीं तोड़ सकता था।
और वह आ गया। मैं बैठी देख रही थी, उस बेचैनी के साथ जो केवल वही लोग समझ सकते हैं जो मेरी जैसी स्थिति में रहे हों, दूर से आती हर पदचाप, हर आवाज़ को सुन रही थी, मानो उसी के कदमों की आहट सुन रही हो जिसका मैं इंतज़ार कर रही थी। मैंने कहा कि वह आया; वह कंबल में लिपटा हुआ था, और द्वार पर बैठे आलसी संतरी की नज़र से बचकर चुपके से अंदर आ गया था; वह मेरे लिए खाना लाया, कुछ मोटे-मोटे केक और दूध का एक मिट्टी का बर्तन। 'खाओ!' उसने धीमी आवाज़ में कहा; 'मैं यहीं बैठूंगा, और बाद में तुम्हें वह खबर बताऊंगा जिसके बारे में तुमने मुझे पूछने को कहा था।' मुझे बहुत भूख लगी थी, और मैंने खाया;

मोटा-मोटा ब्रेड, जिसे मैं तीन दिन पहले घृणा करती थी, अब एक विलासिता, मीठा और सुखद लग रहा था; मैंने उसे खाया, दूध पिया, और आभारी थी; और मैंने उसे पुकारा और उसके साहसी साहस और उस व्यक्ति के प्रति उसकी कृतज्ञता के लिए उसे धन्यवाद दिया जो अब उस पर कोई एहसान नहीं कर सकता था। 'और खबर, गुलाम नुब्बी? क्या आप मुझे उसके और मेरे बच्चे के बारे में कुछ बता सकती हैं?'

'मेरी खबर बुरी है, मीर साहब, और मैं अनिच्छा से यह समाचार पत्र लेकर आया हूँ जो आपकी आत्मा को दुखी करेगा और आपके दुख को बढ़ाएगा।'

मैंने कहा, 'बताओ, मुझे सबसे बुरी बात बताओ; मुझे बताओ कि वह मर चुकी है, और तुम वही कहोगे जिसके बारे में मेरी आत्मा ने मुझे पहले ही आगाह कर दिया है।'

वह कुछ देर रुका। 'मीर साहब, आपको यह बात देर-सवेर पता चल ही जाएगी—वह मर चुकी है।'

और मेरा बच्चा?

'वह उस नेक मूला के साथ है जिसने आपकी पत्नी की रक्षा की जब उसके पास रहने के लिए कोई घर नहीं बचा था, और जिसने उसकी मृत्यु के बाद हमारे धर्म के अनुसार उसका अंतिम संस्कार किया।'

'कोई घर नहीं!' मैं चिल्लाई; 'क्या उन्होंने उसे घर से नहीं निकाला?'

'हाँ, मीर साहब। राजा ने सैनिक भेजे, आपका घर पूरी तरह लूट लिया गया, और कहते हैं कि आपका सोना-चांदी एक ऐसा इनाम था जिसकी राजा को ज़रा भी उम्मीद नहीं थी; आपकी पत्नी और बच्चे को सड़क पर छोड़ दिया गया, उनके पास केवल वही कपड़े थे जो उन्होंने पहने हुए थे। लेकिन उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ा, क्योंकि मैंने सुना है कि जब से उन्हें आपके पिता के भाग्य और आपकी कैद का कारण पता चला, तब से उन्होंने एक शब्द भी नहीं बोला। कहते हैं कि वह एक साँस लेते हुए मुर्दे की तरह स्तब्ध बैठी रहीं, बिना एक शब्द बोले, यह जताए कि उनका दर्द कहाँ है।'

'बस करो!' मैंने कहा, 'जाओ; आलिया तुम्हें अपने पास रखे! मैं अब अकेला रहना चाहता हूँ, क्योंकि शोक मुझ पर भारी पड़ रहा है।'

फिर वो मर गई—मेरी अज़ीमा, मेरी प्रियतमा!—वो जिसके लिए मैं स्वयं मर सकता था,—वो जिसे मैंने उतना प्यार किया जितना कोई इंसान सिर्फ एक बार कर सकता है—वो मर गई; उसे पता चल गया था कि मैं एक ठग हूँ, और इसी ने उसकी जान ले ली। अच्छा ही हुआ—उसका मर जाना कहीं बेहतर था, बजाय इसके कि वो तड़पती रहती और एक दोषी हत्यारे की पत्नी के रूप में उपहास और अपमान सहती। अगर वो जीवित रहती तो मैं कभी उसके पास जाने की हिम्मत नहीं कर पाता, क्योंकि वो पवित्र थी, और मैं—!

साहब, मैं कह सकता हूँ कि मुझे उसकी मृत्यु पर लगभग खुशी हुई; मुझे उतना दुख नहीं हुआ जितना तब होता जब यह विपत्ति मेरे सुख-सुविधाओं में होती—तब तो सहना सचमुच मुश्किल होता; लेकिन अब मैं बदल चुका था, और वह मर चुकी थी, और मैं फिर कहता हूँ कि यह अच्छा ही हुआ। आलिया ने अपनी दया से उसे उसके कष्टों के स्थान से ले लिया, इससे पहले कि वह उस भयानक वास्तविकता को पूरी तरह समझ पाती। और मेरी बच्ची भी सुरक्षित थी; वह मित्रवत हाथों में थी, और मूला उसके पिता बनेंगे।

मेरे विनम्र मित्र के रात्रिकालीन आगमन के अगले दिन मुझे भोजन दिया गया; यह बेशक कम था, लेकिन फिर भी मैं जीवित रहा, हालांकि कष्टों से इतना क्षीण हो चुका था कि मैं अपनी पहले की स्थिति की परछाई मात्र रह गया था। इस प्रकार तीन महीने बीत गए, और जब मैंने पीछे मुड़कर देखा तो वे मुझे वर्षों के समान प्रतीत हुए।

इस समय के अंत में मुझे राजा के दरबार में ले जाया गया। उन्होंने मुझसे बहुत कम शब्द कहे, लेकिन वे बहुत कड़वे थे; क्योंकि उन्होंने मेरी संपत्ति में हिस्सा बाँटा था, मुझसे सुरक्षा के लिए कर वसूला था, और मेरे पिता की हत्या करने के बाद मेरे घर को लूट लिया था, और उनका सारा माल मेरी वर्षों की जमा पूंजी थी। मैं उन्हें अपना पिता कहती हूँ, फिर भी उन्होंने मुझसे कहा था कि वे मेरे माता-पिता नहीं हैं। लेकिन अब इससे क्या फर्क पड़ता था? वे मर चुके थे, और मेरे जन्म का रहस्य, यदि कभी था भी, तो उनके साथ ही समाप्त हो गया था। इससे भी क्या फर्क पड़ता था कि मेरे पिता कौन थे? मैं दुनिया में अकेली थी; एक को छोड़कर कोई बंधन मुझे अस्तित्व से नहीं बाँधता था। मेरी बेटी अजनबियों के साथ थी, और कुछ वर्षों में वह मुझे भूल जाएगी—सचमुच मैं कह सकती हूँ कि मैं अकेली थी।

मैं राजा के दरबार में था—मेरा कोई मित्र नहीं था; उनके चारों ओर मौजूद उन सभी लोगों में से, जिन्होंने पहले मुझसे प्रेम निवेदन किया था, मेरे साथ भोजन किया था और मुझे यह कहकर खुश किया था कि मैं उनके संरक्षण में महानता प्राप्त करूँगा—किसी ने भी मेरे लिए बात नहीं की, किसी ने भी मेरी बदनामी को टालने के लिए हस्तक्षेप नहीं किया। राजा ने मुझसे बात की।

'अमीर अली,' उसने कहा, 'मैंने तुझ पर भरोसा किया था, मैंने तुझे ईमानदार समझा था (कितना झूठ उसने बोला!), मैंने तुझे एक धनी और भाग्यशाली व्यापारी समझा था; लेकिन, हे मनुष्य! तूने मुझे धोखा दिया है, और केवल मुझे ही नहीं, बल्कि हज़ारों को, और तू एक ठग और हत्यारा है। फिर भी, क्योंकि मेरे मन में तेरे लिए थोड़ी दया बची है, इसलिए मैं तेरी मृत्यु नहीं चाहता; उस बूढ़े दुष्ट के विनाश से न्याय हो चुका है जिसने तुझे यह बनाया है, और जिसने एक ऐसे व्यक्ति को, जो दुनिया का गौरव हो सकता था, एक ऐसे अभागे में बदल दिया जिसके सिर पर सैकड़ों लोगों का खून है। हाँ, अमीर अली, मैं सच कह रहा हूँ, और तू इसे जानता है। और यद्यपि मैं तेरी मृत्यु नहीं चाहता, फिर भी तुझे तब तक नहीं छोड़ा जा सकता जब तक तेरे माथे पर एक ऐसा निशान न लगा दिया जाए जिससे लोग जान सकें और सावधान हो सकें। उसे नीचे फेंक दे,' उसने सेवकों से चिल्लाकर कहा, 'और उस पर दाग लगा दे!'

उन्होंने मुझे नीचे गिरा दिया। साहब, मेरा दुबला-पतला शरीर उन लोगों के सामने क्या कर सकता था जिन्होंने मेरे जैसी पीड़ा कभी नहीं झेली थी? मैंने संघर्ष किया, फिर भी व्यर्थ; उन्होंने मेरे हाथ, पैर और सिर पकड़ लिए, और मेरे माथे पर एक गर्म टुकड़ा रख दिया; वह तब तक वहीं रखा रहा जब तक कि वह हड्डी तक जल नहीं गया, ऐसा लगा जैसे मेरा दिमाग भी जलते हुए तांबे से झुलस गया हो। उन्होंने उसे हटाया और मुझे उठाया। आलिया! आलिया! मैंने जो पीड़ा सहन की—दर्द की पीड़ा, और उससे भी बढ़कर शर्म की पीड़ा—सार्वजनिक रूप से दाग दिया जाना ताकि दुनिया मुझे चोर समझे—मेरे माथे पर एक ऐसा निशान लगा दिया

जाना जिसे मुझे अपनी कब्र तक ले जाना होगा—एक ऐसा निशान जो केवल नीच और समाज से बहिष्कृत लोगों पर लगाया जाता है— साहब, यह एक कड़वा घूंट था जिसे पीना पड़ा!

'उसे ले जाओ!' राजा चिल्लाया, 'उसे ले जाओ! उसे मेरी सीमा पर छोड़ दो। और मेरी बात ध्यान से सुनो,' उसने मुझसे कहा, 'मैंने तुम्हें जीवनदान दिया है, अमीर अली; जाओ, और समझदार बनो; जो कुछ हुआ है उससे सीख लो कि भविष्य में एक ईमानदार आदमी कैसे बनना है; और सबसे बढ़कर, याद रखना कि अगर तुम फिर कभी झालोन में या मेरे किसी शहर या गाँव में दिखाई दिए, तो हाथी के पैरों तले कुचले जाने से तुम्हें कोई नहीं बचा पाएगा।'

वह उठा और दरबार से बाहर निकल गया; और दर्द और तकलीफ में, मुझे दो दिन बाद उसके देश की सीमा तक ले जाया गया और बंधन मुक्त कर दिया गया। मुझे दो रुपये दिए गए, और एक बार फिर विशाल और क्रूर दुनिया मेरे सामने थी। मैं अपने रखवालों से जल्दी से निकल गया। मैंने अपनी पगड़ी को अपने अभी भी जलते और दर्द करते माथे पर बांध लिया, ताकि कोई मेरी शर्मिंदगी न देख सके, और अपने सामने के रास्ते पर चल पड़ा। मैं लगभग बेहोश होकर भटकता रहा, सिवाय उस दर्द के जो मैं सह रहा था, जब तक कि मेरे चारों ओर रात नहीं हो गई, और मैंने अपने कदम एक गाँव की ओर बढ़ाए, जिसकी रोशनी मुझसे थोड़ी ही दूरी पर थी। अपने एक रुपये का आदान-प्रदान करके, मैं एक भुट्टेरा की दुकान पर बैठ गया और अपनी भूख मिटाई; वहीं मैं सो गया, और जब उठा तो तरोताजा था, और एक बार फिर खुद को अमीर अली समझ रहा था। सुबह की ठंडी हवा मेरे चेहरे पर लगी जब मैं शहर से बाहर निकला; रात के ताज़गी भरे आराम ने मुझे स्फूर्ति दी थी, और मैं हल्के दिल से आगे बढ़ा—हाँ, हल्के दिल से—क्योंकि मैं आज़ाद था! अब मेरे मन में अतीत का कोई विचार नहीं था। मेरा भाग्य पूरा हो चुका था: जो मेरे नसीब में लिखा था, वही हुआ। जैसे ही मैं आगे बढ़ा, मेरे दाहिनी ओर एक गधे ने रेंका, और मैंने उस शुभ संकेत का आनंद ऐसे लिया जिसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। हे महान भवानी, मनुष्यों की माता! मैंने गरजते हुए कहा, मैं तेरे संकेत का उत्तर देता हूँ; मैं तैयार हूँ, और फिर से तेरी सेवा में समर्पित हूँ। मैंने तेरे विरुद्ध पाप किया है; मैंने जानबूझकर तेरे चेतावनी भरे संकेतों को अनदेखा किया, एक अटल भाग्य और अहंकारी हृदय के बहकावे में आकर। मुझे दंड मिला है, और एक कीमती अनुभव प्राप्त हुआ है; लेकिन अब से तेरे प्राणों में रहने वाला कोई भी भक्त तेरे प्रति भक्ति में अमीर अली से आगे नहीं होगा; इसलिए, हे महान देवी, थिबाओ और पिलहाओ प्रदान कर। और वे प्रदान किए गए; दाहिनी ओर के संकेत के बाद बाईं ओर का संकेत भी आया, और मुझे लगा कि मुझे क्षमा कर दिया गया है, और फिर से ठग के रूप में स्वीकार कर लिया गया है।

तो क्या आप मानते हैं, अमीर अली, कि आपके द्वारा बताई गई घटनाओं में शकुनों को न देखने के कारण ही आपके पिता की मृत्यु हुई और आप पर विपत्तियाँ आईं? मैंने कहा।

निश्चित रूप से, साहब; जैसा कि मैंने आपको बताया है, मैं तब तक संशयवादी था, लेकिन अब मैं संशयवादी नहीं रहा; क्या मेरे पास शकुनों की सच्चाई पर विश्वास करने का कोई कारण नहीं था? और, यदि मैंने तब उनका पालन किया होता, तो क्या मेरे द्वारा किया गया वह गंभीर अपराध अब भी मेरे हृदय में बसा रहता?

नहीं, नहीं! शकुनों का उल्लंघन नहीं किया जा सकता, न ही किया जा सकता है; और मैंने कभी ऐसा कोई उदाहरण नहीं देखा जिसमें उनका उल्लंघन किया गया हो, या जहाँ किसी गिरोह ने भवानी की इच्छा के विरुद्ध किसी व्यक्ति को नष्ट करने का प्रयास किया हो, और उन सभी को भवानी के प्रतिशोध से दंडित न किया गया हो, चाहे वह घरेलू विपत्ति हो, कारावास हो या मृत्यु। आप अपने किसी भी परिचित ठग से पूछिए, वह आपको यही बताएगा। मैंने उसके बाद कभी शकुनों पर संदेह नहीं किया, और कुछ बहुमूल्य पुरस्कारों को अपने हाथ से जाने दिया, क्योंकि मुझे डर था कि वे पूरी तरह से शुभ नहीं थे।

खैर, साहब, चलिए आगे बढ़ते हैं। मैं आगे बढ़ा: मैंने अपना रूमाल फिर से खोला, क्योंकि वह मेरी कमर से कभी अलग नहीं हुआ था, और मैंने उसे ऐसे गले लगाया जैसे किसी पुराने और प्रिय मित्र के आलिंगन का। मैंने सोचा, ऐसे शगुन के साथ, मैं असफल नहीं हो सकता; और किसी भी अकेले यात्री पर, चाहे वह स्वयं रूस्तम ही क्यों न हो, मैं विजय प्राप्त कर सकता हूँ। मेरे पास केवल एक रुपया और कुछ पैसे थे; मेरे कपड़े फटे-पुराने थे, और ठगों के साथ जुड़ने और उनका नेतृत्व करने की उम्मीद करने से पहले मुझे और पैसे जुटाने होंगे।

लेकिन मैंने लंबा सफर तय किया और रास्ते में मुझे कोई अकेला व्यक्ति नहीं मिला; दोपहर होते-होते और सूरज की गर्मी से मैं बेहाल हो गया, तो मैं सड़क किनारे एक पेड़ के नीचे लेट गया, जिसके पास एक कुआँ था; और नहाने-धोने और नमाज़ पढ़ने के बाद, मैं इंतज़ार करने लगा कि किस्मत मुझे क्या दिखाएगी। मैं वहाँ काफी देर तक बैठा रहा, लेकिन कोई मेरे पास से नहीं गुजरा, और थकान से चूर होकर मैं सो गया। किसी के स्पर्श से मेरी नींद खुली, और ऊपर देखने पर मैंने एक अधेड़ उम्र के मुसलमान को अपनी ओर देखते हुए पाया। मैं झट से उठा और उनके सलाम का जवाब उसी विनम्रता से दिया जैसे उन्होंने दिया था। सौभाग्य से मेरा चेहरा अच्छी तरह से ढका हुआ था, और मेरे माथे पर लगा निशान दिखाई नहीं दे रहा था; उन्होंने मुझे अपने जैसा ही एक यात्री समझा, और क्योंकि वे थके हुए थे, वे बैठ गए और हम बातचीत करने लगे, जैसी आमतौर पर हम जैसे लोगों के बीच होती है। कुछ मिनट बैठने के बाद, उन्होंने अपने कंधे से एक छोटा बटुआ उतारा और उसे खोलकर कुछ केक और आम का अचार निकाला, जिसे वे बड़े चाव से खाना चाहते थे; लेकिन जब मैंने देखा कि मैं उन्हें लालसा से देख रहा हूँ, तो उन्होंने मुझे अपने भोजन में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया, जिसे मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया, क्योंकि मैंने सुबह से उपवास रखा था। भोजन समाप्त होने के बाद, उन्होंने मुझसे कहा, 'मीर साहब, आप कहते हैं कि जिस दिशा में मैं जा रहा हूँ, वहाँ किसी नाले में पानी नहीं है; इसलिए, यदि आप कृपा करके मेरे कपड़े और हथियार संभाल लेंगे, तो मैं इस कुएँ में स्नान करूँगा।'

'ज़रूर,' मैंने जवाब दिया; 'मुझे जाने की कोई जल्दी नहीं है, और आप मुझे रोकेंगे भी नहीं।' जैसे ही मैंने यह कहा, वह कपड़े उतारने लगा, और अपने साथ एक लोटा लेकर कुएँ की सीढ़ियों से नीचे उतर गया, और थोड़ी देर बाद मुझे उसके द्वारा अपने ऊपर पानी डालने की आवाज़ सुनाई दी।

मैंने सोचा, अब मेरा समय आ गया है; वह निहत्था होगा और आसानी से मेरा शिकार बन जाएगा; और मैंने काम के लिए अपना कमरा तैयार कर लिया।

वह जल्द ही लौट आया और कपड़े पहनने लगा। मैं उसके पास ही मंडराता रहा, जब तक कि मैंने उसे अपना वस्त्र उठाते और दोनों बाँहें आस्तीनों में डालकर उसे पहनते हुए नहीं देखा। यह एक सुनहरा अवसर था, और मैं उसकी सहायता करने के लिए उसके पीछे गया; वह मेरी ओर मुड़ा, और जैसे ही उसने अपना काम पूरा किया, मैंने भी अपना काम पूरा कर लिया था। रूमाल उसके गले में था, और कुछ ही क्षणों में वह मेरे पैरों के पास मृत पड़ा था! मेरे पास समय नहीं था; इसलिए मैंने जल्दी से उसकी कमर से पट्टा उतार दिया, जिसमें पैसे लग रहे थे, और शव को कुएँ के किनारे तक घसीट कर उसमें फेंक दिया। फिर मैंने उसके कपड़े सीढ़ियों के ऊपर इस तरह रखे जैसे उसने नहाने के लिए उतारे हों, और उन्हें वहीं छोड़ दिया; उसका लोटा भी मैंने वहीं छोड़ दिया; और उसकी तलवार और ढाल उठाकर, मैंने तलवार को अपनी कमर से और ढाल को अपनी पीठ से बाँध लिया, और जितनी तेज़ी से हो सकता था, अपने रास्ते पर चल पड़ा। मैंने सोचा, कोई नहीं सोचेगा कि उसकी हत्या हुई है; कुएँ के किनारे पड़े कपड़ों से यह अनुमान लगाया जा सकता था कि उसकी मृत्यु पानी में हुई है; और मैं अपनी सफलता पर मुस्कुराया और खुशी से आगे बढ़ गया। लेकिन, पकड़े जाने से बचने के लिए, मैं अपने रास्ते से हट गया, और कुछ दूरी पर एक गाँव के उपवन और सफेद मंदिर को देखकर मैं उसकी ओर मुड़ गया; वहाँ मैंने कुछ गोर खरीदा, और तुपुनी खाया, जैसा कि एक अच्छे ठग को करना चाहिए, और उसके बाद मैंने हुमेआना खोला यह देखने के लिए कि मेरे सौभाग्य ने मुझे क्या भेजा है।

और इस तरह तुमने उस पहले व्यक्ति की हत्या कर दी जिसने तुम्हारी मुसीबतों के बाद तुम्हारे प्रति दया दिखाई थी। हे अमीर अली, तुम सचमुच एक दुष्ट हो! तुमने उसकी रोटी-नमक खाया और उसकी हत्या कर दी! यह तो ठगों का ही दंड है।

लेकिन साहब, मैं क्या करता? अगर मैंने उसे न मारा होता तो शायद भूखा ही मर जाता। वैसे भी, उन शुभ संकेतों के बाद मुझे मिलने वाला वह पहला यात्री था; वह न तो अंधा था और न ही लंगड़ा; इसलिए वह निश्चित रूप से बुनीज था। मरना ही उसकी नियति थी, वरना मैं उस पेड़ के नीचे न सोता। अगर वह रास्ते में मिलता, तो मैं उस पर हमला करने में हिचकिचाता; वास्तव में, निहत्था होने के कारण मैं ऐसा करने की हिम्मत ही नहीं करता। लेकिन, जैसा कि मैं कह रहा था, मैंने हुमेआना की जाँच की; उसमें मुझे उन्नीस रुपये, एक सोने की नथनी और उंगलियों के लिए दो सोने की अंगूठियाँ मिलीं, जिनकी कीमत कम से कम चालीस रुपये थी। उल-हम्द-उल-इल्ला! मैं चिल्लाया, यह तो दुर्लभ भाग्य है; यहाँ तीन महीने तक मेरा गुजारा हो जाएगा और मुझे नए कपड़े भी मिल जाएँगे; और इस दौरान अपने कुछ भाइयों को ढूँढ़ना मुश्किल होगा।

मैंने गाँव के चारों ओर आम और इमली के बागों में ठगों के कुछ निशान खोजने का प्रयास किया; और यद्यपि मुझे कुछ चूल्हे मिले जिन पर मेरे साथियों के विशिष्ट निशान थे, फिर भी वे पुराने थे, बारिश ने उन्हें आधे से अधिक मिटा दिया था, और मुझसे कम अनुभवी ठग के लिए वे निशान पहचानना मुश्किल होता। हालाँकि मैं

कुछ देर तक उस दिशा में चलता रहा जहाँ वे निशान इशारा कर रहे थे, मुझे उनसे कोई और सुराग नहीं मिला।

अगले दिन घूमते-घूमते मैं यमुना नदी के किनारे स्थित कलपी पहुँचा। एक सुबह मैं एक पान विक्रेता की दुकान पर बैठा था, तभी कुछ लोग वहाँ रुके और आपस में बातें करने लगे। मुझे समझ आया कि वे चटरपुर जा रहे थे। चटरपुर, मैंने सोचा, मैं कितना अनजान रहा! वहाँ ज़रूर गुंडे होंगे, और मैं भूल गया था। इसलिए मैंने तुरंत तय किया कि अगर संभव हो तो मैं उनके साथ चलूँ। मैं उनका पीछा करते हुए एक खाली दुकान तक गया, जिसके सामने गली में चार चमचे और कुछ बैल बँधे हुए थे। मैंने बिना किसी औपचारिकता के उनसे कहा कि मैंने उनकी बातचीत सुन ली है, और मैं भी उसी कस्बे में जा रहा हूँ जहाँ वे जा रहे हैं। अगर वे मुझे अनुमति दें और मेरी दखलअंदाज़ी को माफ़ कर दें, तो मुझे उनके साथ यात्रा करने में खुशी होगी, क्योंकि मैं अकेला था, रास्ता नहीं जानता था और लुटेरों से डरता था।

'चूंकि आप अकेले हैं, तो आपका स्वागत है,' मैंने जिस व्यक्ति से बात की, उसने कहा। 'लेकिन हम बंदा के रास्ते जा रहे हैं, जो चटरपुर जाने वाले सीधे रास्ते पर नहीं पड़ता, और हमारे काम के चलते हमें वहां एक-दो दिन रुकना पड़ सकता है; इसलिए, अगर देरी से आपको कोई फर्क नहीं पड़ता, तो हमारे साथ आइए; आप एक सैनिक लगते हैं, और हम गरीब व्यापारी हैं जिन्हें आपकी सुरक्षा पाकर खुशी होगी।'

'मैं जैसा भी हूँ, महोदय,' मैंने कहा, 'मैं आपकी सेवा में तत्पर हूँ, और खुशी-खुशी आपके साथ बांदा तक चलूँगा।'

'अच्छा!' उस आदमी ने जवाब दिया; 'हम जल्दी निकलते हैं, इसलिए बेहतर होगा कि आप समय पर हमारे साथ हों; वरना आप अपना कालीन यहीं बिछा सकते हैं, जैसा आपको ठीक लगे।'

मैंने उत्तर दिया, 'मैं बाद वाला विकल्प चुनूंगा और शाम तक आपके पास पहुंच जाऊंगा।'

बंदा! मैंने सोचा; बदमाशों से भरी एक और जगह—कम से कम पहले तो ऐसा ही हुआ करता था। मैं किसी भी हालत में देखूंगा, और अगर मुझे कोई मिला, तो मैं अपना रास्ता बदल सकता हूं।

मैंने वादा किया था कि मैं शाम को उनसे मिलूंगा, और कुछ दिनों में लंबी पैदल यात्रा करके हम बांदा पहुँच गए। वहाँ उन्होंने कहा कि वे चार दिन रुकेंगे, इसलिए मेरे पास ठगों की तलाश करने के लिए पर्याप्त समय था, अगर वहाँ कोई ठग रहते हों तो। और उनसे मिलने की मेरी उम्मीद भी पूरी हुई। जिस दिन हम पहुँचे, उसी दिन शाम को मैं कस्बे में टहल रहा था, तभी मेरी मुलाकात गणेश के एक पुराने अनुयायी हूरमुत से हुई; जैसा कि आसानी से समझा जा सकता है, उन्होंने मुझे पहले तो पहचाना नहीं, और जब मैंने उन्हें अपनी पहचान का प्रतीक दिया, तो वे ऐसे घूरने लगे जैसे मैं कोई प्रेत हूँ; हालाँकि, जल्द ही उन्हें मेरी वास्तविकता का एहसास हो गया, और मैं उनके घर तक उनके साथ गया। मेरी रोमांचक घटनाओं और मुसीबतों का वृत्तांत सुनाने में काफी समय लग गया, और जब मैंने उन्हें सुनाया, तो स्वाभाविक रूप से मैंने अपने पुराने साथी गणेश के बारे में पूछा। जो मैंने सुना उससे मुझे संतोष हुआ: हूरमुट ने बताया कि वह बदकिस्मती में है, उसके अनुयायियों ने उसे छोड़ दिया है, और वह एक-दो आदमियों के साथ सागर के आसपास कहीं भटक रहा है,

खुले और भीड़भाड़ वाले इलाकों में जाने के बजाय सागर और नागपुर के बीच के जंगलों में लूटपाट की अनिश्चित संभावनाओं को प्राथमिकता दे रहा है। इसके बाद उसने मेरी वर्तमान योजनाओं के बारे में पूछा, और जब उसने सुना कि मैं अकेला व्यापारियों के साथ यात्रा कर रहा हूँ, तो स्वाभाविक रूप से उसने उनके विनाश की योजना बनाने का सोचा।

'देखिए, मीर साहब,' उसने कहा, 'मुझे लगता है कि मैं इस जगह और आसपास पंद्रह ठगों को इकट्ठा कर सकता हूँ। अभी तक मुझ पर शक नहीं किया गया है, लेकिन यह इलाका हमारे लिए बहुत खतरनाक होता जा रहा है, और हमें या तो इसे छोड़ना होगा या ठगी छोड़नी होगी, जो कोई भी आदमी, जैसा कि आप अच्छी तरह जानते हैं, सूअर का मांस खाने के बाद नहीं छोड़ सकता; बाकी लोग भी यही सोचते हैं, और हमने तय किया था कि बारिश के बाद हम इस जगह को हमेशा के लिए छोड़ देंगे, और जहाँ भी हमारा भाग्य हमें ले जाए, वहाँ चले जाएँगे।'

कुछ ही देर बाद हम कुछ समय के लिए अलग हो गए, हूरमुट ने अगले दिन शाम तक आदमियों को लेने का वादा किया।

निर्धारित समय पर मैं फिर से उनके पास पहुंचा और पाया कि सभी लोग एकत्रित थे। मेरा जोरदार स्वागत हुआ, क्योंकि वे एक ऐसे नेता की तलाश में थे जिस पर वे भरोसा कर सकें, और मेरा नाम, मेरी हाल की दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं के बावजूद, उनके लिए सम्मान का स्रोत था। मैं उनमें से किसी को नहीं जानता था, लेकिन उन्होंने कुल्हाड़ी पर हाथ रखकर मेरा अनुसरण करने की शपथ ली; हूरमुट ने उनकी क्षमताओं और निष्ठा की गारंटी दी, और मैं संतुष्ट हो गया।

हमारी योजना जल्द ही बन गई। उन्हें दो चरणों में एक ऐसे गाँव जाना था जिसे वे जानते थे; वहाँ वे व्यापारियों के साथ मेरे आने का इंतज़ार करेंगे। गाँव के आगे उनका एक पसंदीदा भील था, और उन्होंने हमारे आने की तैयारी में सारी व्यवस्था कर रखी थी।

यह सब तय हो जाने के बाद, हमने अगली सुबह (सोमवार होने के कारण शुभ दिन) शगुन देखने और विधिपूर्वक अभियान शुरू करने का निर्णय लिया। शगुन संतोषजनक घोषित किए गए, और दोपहर तक मेरे नए साथी अपने परिवारों के साथ सड़क पर अपने-अपने पड़ाव के लिए रवाना हो गए।

अध्याय 147

तो आशा को अलविदा, और आशा के साथ भय को भी अलविदा;
पश्चाताप को अलविदा; मेरे लिए जो कुछ भी अच्छा था, वह सब खो गया।
हे बुराई, तू मेरी भलाई बन जा!
मिल्टन

हमने तय की हुई जगह पर व्यापारियों और उनके बैलगाड़ी चालकों का गला घोंट दिया—कुल नौ लोग थे, जबकि हम सिर्फ सत्रह ठग थे; लेकिन हम हताश थे। अपने रास्ते में हम झालोन की ओर बढ़ गए थे, और मैं अब वहाँ जाने और अपने बच्चे की देखभाल करने वाले भले मूला को अपना छिपा हुआ खजाना सौंपने की अपनी योजना में और देरी नहीं कर सकता था।

हूरमुट ने मेरे साथ चलने की पेशकश की; और बाकी साथियों को कैल्पी तक पहुंचने और वहां हमारे आने का इंतजार करने के लिए कहते हुए, हम झालोन की ओर बढ़ गए।

जिस जोखिम का हम सामना कर रहे थे, उसे देखते हुए, उस जगह पर जाना जहाँ पकड़े जाने पर मेरी निश्चित मृत्यु होनी थी, हमने गोसाईं का वेश धारण करके अच्छा ही किया। हमने अपने शरीर को राख से ढक लिया, सिर के बालों को मिट्टी से गूंथा, कमर पर लौकी लटका ली, और इस घटिया और दयनीय वेश में हम कस्बे में दाखिल हुए—वह स्थान जहाँ मैंने इतने साल सुख-सुविधाओं में बिताए थे, जहाँ मेरे सुनहरे भविष्य पर पानी फिर गया था, और ठग्गी छोड़कर नया जीवन जीने के मेरे सारे संकल्प मेरे लिए अव्यवहारिक और अरुचिकर हो गए थे। कस्बे में प्रवेश करते ही, और उससे भी अधिक उस घर के पास से गुजरते ही जहाँ मैं रहता था, मेरी भावनाएँ उमड़ पड़ीं; लेकिन मैंने हिम्मत जुटाई; मैं कस्बे से गुजरा, और मैं और मेरा दोस्त दिन भर के लिए शहर के द्वार के बाहर एक कुएँ के पास रुके, जो उस जगह से ज्यादा दूर नहीं था जहाँ मैंने अपना खजाना दफनाया था। हमने अपने उद्देश्य के लिए सबसे अच्छा वेश चुना था; दिन के दौरान कुछ हिंदू हमसे मिलने आए, जिनमें से कुछ जिज्ञासावश और कुछ हमें भिक्षा देने आए थे; मेरे साथी ने उनके प्रश्नों का उत्तर दिया और बताया कि मैंने मौन व्रत धारण किया हुआ है, जिससे वे संतुष्ट हो गए और हमें अपनी योजनाओं को आगे बढ़ाने के लिए छोड़कर चले गए।

जैसे-जैसे शाम ढलने लगी, मैं उन पेड़ों की ओर चलने लगा जिनके नीचे मैंने वह धन छिपा रखा था जिसे मैंने ज़रूरत के समय काम आने के लिए बचाकर रखा था। वह एक सुनसान कब्रिस्तान था, जो सीताफल की झाड़ियों और अन्य कंटीली वनस्पतियों से घिरा हुआ था, और लगातार बारिश के कारण वहाँ घास उग आई थी। जैसे ही मैं उस जगह के पास पहुँचा, मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा; मेरा जमा किया हुआ धन कहीं खोज न लिया जाए, और अगर उसे हटा लिया गया तो मेरी बच्ची भिखारी बन जाएगी, अजनबियों की भीख पर निर्भर; यहाँ तक कि उसे सड़क पर भी धकेल दिया जाएगा, जहाँ वह नीच और निकम्मे लोगों के साथ चरने लगेगी, जब उसकी देखभाल करना उसके वर्तमान अभिभावकों के लिए बोझिल या खर्चीला हो जाएगा।

लेकिन मैंने सोचा, कुछ भी हो, इससे बेहतर है कि वह मेरे साथ रहे, जहाँ उसे कठिनाइयों भरा जीवन जीना होगा, और जहाँ वह अपराध और हत्या के दृश्यों से होने वाले प्रदूषण से कुछ ही समय में नहीं बच पाएगी, और जिससे मैं अकेला होने के कारण उसकी रक्षा नहीं कर पाऊँगा।

मैं उस मकबरे तक पहुँचा जहाँ मैंने एक पत्थर हटाकर धन से भरा पात्र रखा था। उस जानी-पहचानी जगह को देखने की हिम्मत तो मुझे बिल्कुल नहीं हुई, पत्थर हटाने की कोशिश करने की हिम्मत भी नहीं हुई; लेकिन मैंने उसे हटा ही दिया, और हे भगवान! मेरा खजाना वहाँ सुरक्षित था! मैंने जल्दी से मिट्टी का पात्र उठाया और उसे खोलकर देखने से पहले घनी झाड़ियों में रेंगता हुआ चला गया। मैं भूल गया था कि उसमें क्या था, और उसमें जो कुछ था वह मेरी उम्मीदों से कहीं अधिक था। मुझे तीस अशरुफी और सोने की चार छोटी छड़ें मिलीं, एक डिब्बा जिसमें कुछ कीमती मोतियों की दो मालाएँ और कुछ रत्न थे, और एक कपड़े में बंधे हुए कुछ कीमती पत्थर थे, जिनमें से एक बेहद चमकीला और सुंदर हीरा था। मैंने रत्नों को रखने का निश्चय किया, क्योंकि वे बाद में मेरे काम आ सकते थे, न केवल उनके मूल्य के कारण, बल्कि मुझे कीमती पत्थरों के व्यापारी का व्यवसाय शुरू करने में सक्षम बनाने के लिए भी, जो हमेशा एक सम्मानजनक पेशा होता है, और जिसके लिए मेरे सामने मौजूद रत्नों में व्यापार के लिए पर्याप्त भंडार था। मैंने बर्तन और उसमें रखी कीमती चीज़ें, जिनकी कीमत कम से कम एक हज़ार रुपये रही होगी, वापस रख दीं; और मेरा दिल हल्का हो गया, एक तरफ तो अपने खजाने को सुरक्षित देखकर, और दूसरी तरफ इस आश्वासन से कि इससे मेरी बेटी का भरण-पोषण ठीक से हो जाएगा। मैं अपने साथी के पास लौटा, जो उत्सुकता से मेरी गतिविधियों को देख रहा था, और वह भी मेरी इस खुशकिस्मती पर प्रसन्न हुआ।

मैं शाम ढलने तक कस्बे में नहीं गया: मुझे पता था कि द्वार देर रात तक खुले रहेंगे, और मैंने अकेले ही जाने का फैसला किया ताकि कोई मुझे देख न ले। मैं जल्दी ही मूला के घर पहुँच गया, और वहाँ मैंने एक भिखारी होने का ढोंग छोड़कर, हैदराबाद के मौला अली के नाम से ऊँची आवाज़ में भीख माँगी। सौभाग्य से, बूढ़ा मूला अपने बरामदे में अकेला बैठा था; मैंने खुले द्वार से उसे देखा और तेज़ी से आगे बढ़कर द्वार बंद कर दिया। वह कुरान पढ़ने में मग्न था और आगे-पीछे झूल रहा था, मानो किताब में पूरी तरह डूबा हुआ हो, इसलिए उसने मेरे आने पर ध्यान नहीं दिया; और जब तक मैंने उसके सामने सजदा नहीं किया, तब तक उसे मेरी उपस्थिति का एहसास भी नहीं हुआ।

'पुना-ए-खोदा!' उसने हैरानी से कहा; 'यह क्या है, कोई गोसाईं? तुम पागल हो गए हो, मेरे मित्र; या उस बूढ़े मूला से क्या चाहते हो? बोलो, तुमने मुझे लगभग डरा ही दिया है और पवित्र ग्रंथ पर मेरे ध्यान को भंग कर दिया है।'

'माफ़ कीजिए, मूलाजी!' मैंने पुकारा; 'आप अपने सामने एक ऐसे व्यक्ति को देख रहे हैं जिसने आपसे बात करने के लिए अपनी जान जोखिम में डाली है, और आपको कुछ क्षणों के लिए मेरी बात सुननी होगी। मैं आपको अच्छी तरह जानता हूँ, हालाँकि आप मुझे इस वेश में नहीं पहचान पा रहे हैं।'

'मैं तुम्हें नहीं जानता, मित्र,' उसने कहा; 'फिर भी, अगर मैं तुम्हारी किसी भी तरह से मदद कर सकता हूँ, तो बोलो; वैसे भी, हिंदू शायद ही कभी किसी मुस्लिम धर्म के पुजारी के घर जाना पसंद करते हैं; और मैं तुम्हारे पहनावे और व्यवहार को देखकर आश्चर्यचकित हूँ।'

'मूला!' मैंने कहा, 'मैं तुमसे पूरी गोपनीयता में बात करना चाहता हूँ; क्या यहाँ कोई बाधा नहीं डालेगा? मुझसे मत डरो; मैं नेक इरादे से आया हूँ, और मैं वैसा नहीं हूँ जैसा तुम मुझे समझते हो, बल्कि तुम्हारे ही धर्म का अनुयायी हूँ;' और मैंने अपना विश्वास दोहराया।

'यह तो बहुत अजीब बात है,' बूढ़ा आदमी उठते हुए बोला; 'मुझे तुम पर कोई शक नहीं है: कोई भी बूढ़े मूला को नुकसान नहीं पहुंचाएगा; और इसलिए, जैसा कि तुम गोपनीयता चाहते हो, मैं बाहरी द्वार बंद करके तुरंत तुम्हारे पास आ रहा हूँ।' उसने ऐसा ही किया और लौट आया।

जब वह दोबारा बैठ गया और जिज्ञासा और आश्चर्य से भरी निगाहों से मेरे चेहरे को घूरने लगा, तो मैंने कहा, 'मूला जी! हे वल्ली मोहम्मद! क्या आप मुझे पहचान नहीं रहे?'

'तुम्हारी आवाज मुझे जानी-पहचानी लगती है,' बूढ़े ने कहा, 'पर तुम्हारे चेहरे के हाव-भाव याद नहीं आ रहे। तुम कौन हो?'

मैंने जवाब दिया, 'मेरा नाम ऐसा है जिसे झालोन में शायद ही कोई बोलता हो; लेकिन हम अकेले हैं। क्या आप अमीर अली को भूल गए हैं?'

'पुनाह!' मूला ने मुझसे दूर हटते हुए अपने कालीन के किनारे पर सरकते हुए कहा; 'पुनाह ए खुदा! क्या मैं उस बुरे और लापरवाह आदमी को देख रहा हूँ?'

'मैं भले ही बुरी हूँ, मूला,' मैंने धीरे से कहा; 'और मैं निश्चित रूप से लापरवाह भी हूँ; फिर भी मैं तुम्हारा कोई बुरा नहीं चाहती। तुमने मेरे प्रियजन के प्रति दयालुता दिखाई—मेरा बच्चा तुम्हारे घर में है—मैं उनके बारे में बात करना चाहती हूँ, अपने बारे में नहीं। आलिया की खातिर मुझे बताओ कि मेरा बच्चा कैसा है—मुझे बताओ कि वह जीवित है या नहीं, और मैं तुम्हें आशीर्वाद दूँगी।' उसके जवाब देते समय मेरी साँस अटक गई, कहीं मुझे और कोई बुरी खबर न सुननी पड़े।

'यह पागलपन है, अमीर अली,' उसने कहा; 'क्या तुम नहीं जानते कि अगर तुम यहां पकड़े गए तो तुम्हारा भी वही हश्र होगा जो तुम्हारे पिता का हुआ?'

'मैं जानती हूँ, मैं सब जानती हूँ,' मैंने कहा; 'और मैंने हर मुश्किल का सामना किया है। मैंने खतरे के बावजूद तुम्हारी शरण में आने की कोशिश की—क्योंकि मेरा दिल मेरी बच्ची से बहुत प्यार करता है और मैं उससे बात करना चाहती हूँ। हे मूला, मेरी पिछली स्थिति को भूल जाओ और मुझ पर दया करो।'

'दुखी मनुष्य!' वह चिल्लाया; 'तेरे अपराधों का फल तुझे स्वयं मिला; परन्तु मैं अतीत की बात नहीं करूँगा। तो जान लो कि तेरी पुत्री ठीक है; परन्तु वह तेरे और अपनी माता के लिए अभी भी दुखी है, जिसे आलिया ने दयापूर्वक उसके अपमान से पहले ही उसके कष्टों से मुक्ति दिला दी।'

'शुक्र खोड़ा!' मैंने कहा: 'आह आलिया, तुम मुझ पर भी दया करती हो। और मेरा बच्चा ठीक है, और मुझे याद भी करता है?'
'हाँ, मीर साहब; वह अक्सर आपके बारे में बात करती है, लेकिन हमने उसे बता दिया है कि आप मर चुके हैं, और अब वह आपको ऐसे व्यक्ति के रूप में नहीं देखती जिससे वह कभी दोबारा मिल सके।'
'और तुम सही कह रही हो, मूला,' मैंने कहा; 'तुमने जो किया वह बुद्धिमानी है। आलिया एक परित्यक्त बच्चे के प्रति तुम्हारी दया का बदला चुकाए, क्योंकि मैं नहीं चुका सकती। मैं तुमसे एक उद्देश्य से मिली हूँ, जिसके लिए तुम्हें मेरे बोलने से पहले ही सहमत होने का वादा करना होगा—यह मेरे बच्चे के लिए मेरी एकमात्र विनती है, और अब से तुम मेरा चेहरा कभी नहीं देखोगी और न ही मेरा नाम सुनोगी।'
'बोलो,' मूला ने कहा; 'मैं कुछ भी वादा नहीं करता, अमीर अली; तुमने हजारों लोगों को धोखा दिया है, और छल में बूढ़ा मूला तुम्हारा मुकाबला नहीं कर सकता।'
मैंने कहा, 'संक्षेप में बताऊं तो, बहुत समय पहले मैंने यहाँ एक खेत में एक छोटा सा खजाना गाड़ दिया था: मैं वापस आया और उसे सुरक्षित पाया। यह मामूली सी चीज है, फिर भी मेरे किसी काम की नहीं है; और मैं इसे आपको देना चाहता हूँ, मेरी बेटी के विवाह के समय उसके हिस्से के रूप में और विवाह होने तक उसके भरण-पोषण के लिए।'
बूढ़े व्यक्ति ने गर्व से सटते हुए कहा, 'हत्यारे का माल मूला के घर में कभी नहीं आ सकता; यह अभिशाप लेकर आएगा, और मैं इसे बिल्कुल नहीं लूंगा। इसे अपने पास रखो, अमीर अली, और अल्लाह तुम्हें यह कृपा दे कि तुम इसका उपयोग अपनी खोई हुई ईमानदारी भरी प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने में कर सको।'
'नहीं, नहीं,' मैं चिल्लाया; 'यह पैसा मेरी पत्नी का था; उसने इसे हमारे बच्चे के लिए जमा किया था: वह इसे दुखुन से अपने साथ लाई थी, और यह उसी बर्तन में रखा हुआ है। मैं कसम खाकर कहता हूँ कि यह ईमानदारी का पैसा है; क्या मैं अपने बच्चे को हत्याओं की लूट से शाप दूँगा?'
'कुरान पर कसम खाकर कहो कि यह सच है, और मैं तुम पर विश्वास करूंगा, अमीर अली, अन्यथा नहीं;' और उन्होंने मुझे पवित्र पुस्तक सौंप दी।
मैंने उसे अपने होठों तक उठाया; मैंने उसे चूमा, और उससे अपने माथे और आँखों को छुआ। मैंने झूठी कसम खाई; लेकिन यह मेरे बच्चे के लिए थी। 'अब क्या तुम संतुष्ट हो?' मैंने पूछा; 'अब जब तुमने मुझे कसम खाने के लिए मजबूर करके मुझे अपमानित कर दिया है?'
'जी हां,' उसने उत्तर दिया; 'आपकी जिम्मेदारी का सावधानीपूर्वक और निष्ठापूर्वक ध्यान रखा जाएगा। क्या आपके पास पैसे हैं?'
'नहीं,' मैंने कहा; 'लेकिन मैं जाकर इसे तुरंत ले आऊंगा। मुझे अकेले अंदर आने दीजिए; मैं आपके द्वार पर पहुँचकर खांसूंगा।'

मैं जल्दी से उस स्थान पर पहुँचा जिसका मैंने पहले वर्णन किया था; मैंने जल्दी से अपना खजाना उठाया और मूला के पास लौट आया: वह अपने घर के द्वार पर मेरा इंतजार कर रहा था, और हम दोनों साथ में घर में प्रवेश कर गए।

मैंने बर्तन का सारा सामान कालीन पर उड़ेलते हुए कहा, 'मेरे पास बस इतना ही है; यह ज्यादा तो नहीं है, लेकिन मेरी संपत्ति का यही एकमात्र हिस्सा बचा है।'

'अतीत के बारे में मत सोचो, मीर साहब, जो हुआ वो पूर्वनियोजित था, और सर्वशक्तिमान की इच्छा थी!'

'मेरे पास समर्पण करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है, हे मूला। लेकिन मेरा समय कम है और रात ढल रही है; सुबह होने से पहले मुझे यहाँ से दूर जाना होगा, जहाँ मेरे साथी मेरा इंतज़ार कर रहे हैं। मैं आपसे एक ही विनती करना चाहता हूँ—वह है अपने बच्चे को देखना: उसकी एक झलक ही मेरी आत्मा के लिए आने वाले वर्षों में तरसने के लिए काफी होगी, क्योंकि मुझे यकीन है कि वह आखिरी बार होगी—क्या आप मुझे मना करेंगे?'

'मैं नहीं करूँगा, मीर साहब; वह अभी पड़ोस के बच्चे के साथ ज़नाना में खेल रही है, और अगर आप मेरे साथ आएँगे तो मैं आपको उसे दिखा दूँगा। एक नज़र ही आपके लिए काफ़ी होगी; उसके बाद वह मेरी हो जाएगी, और मैं उसका पिता बनूँगा। मेरे पीछे आइए।'

मैंने ऐसा ही किया; मैं उसके पीछे-पीछे एक आंगन से होते हुए दूसरे कमरे के दरवाजे तक गई, जो उसके ज़नाना का प्रवेश द्वार था। मैंने बच्चों की मधुर आवाज़ें सुनीं, जो हल्के-फुल्के और आनंदित मन से खेल रहे थे, और मैं अपनी प्यारी बच्ची की मधुर आवाज़ को पहचान सकी, जो उसकी माँ की आवाज़ से बिल्कुल मिलती-जुलती थी, जो अब हमेशा के लिए खामोश हो गई थी।

'हम उन्हें परेशान नहीं करेंगे, मीर साहब,' मूला ने फुसफुसाते हुए कहा और धीरे से दरवाजा खोला; 'अंदर देखिए, ताकि आपको कोई देख न सके; आप अपनी बेटी को आसानी से पहचान लेंगे।'

हाँ, वह वहीं थी, मेरी बच्ची, मेरी प्यारी बच्ची! पहले की तरह ही कोमल और नाजुक; लेकिन उसके चेहरे पर खुशी का भाव था, और वह अपने आसपास के लोगों की तरह ही प्रसन्न थी। बहुत देर तक मैं उसे निहारता रहा, और मेरा दिल तरसा रहा था कि उसे गले लगा लूँ, आखिरी बार उसे अपने सीने से लगा लूँ और उसे आशीर्वाद दूँ। लेकिन मैंने खुद को रोका; वह मुझे मेरे भेष में पहचान नहीं पाती, पहचान ही नहीं सकती थी, और मैं उसे बेवजह डरा देता। फिर भी मैंने आलिया से उसकी सुरक्षा और सुख के लिए दिल से प्रार्थना की, और मैं वहाँ से उठा—निराश, फिर भी संतुष्ट—कि वह अभी भी जीवित है और खुश है।

जब हम बाहरी कमरे में वापस आए तो मैंने मूला से कहा, 'बस करो! अब मैं तुम्हें छोड़ता हूँ; मेरी बच्ची के साथ नरमी से पेश आना, और आलिया तुम्हारी किसी भी चिंता या परेशानी का भरपूर बदला चुकाएगी। मैंने तुम्हें जो कुछ दिया है, वह आलिया के लिए दहेज के तौर पर काफी होगा, चाहे तुम किसी से भी शादी कर लो—कोई भी ऐसा व्यक्ति जो अपने पिता की बदनामी से अनजान हो।'

'मैं ऐसा करूंगा; और निश्चिंत रहें कि आप जहां भी हों, जीवन में आपका भविष्य कैसा भी हो, आपको मीरान के बारे में कभी भी चिंता करने की आवश्यकता नहीं होगी; क्योंकि मैं फिर से दोहराता हूं, मैं अब उसका अभिभावक हूं, और उसे भी एक नई मां मिल गई है।'
मैंने कहा, 'मैं आप पर विश्वास करता हूँ; और यदि कभी भाग्य मुझ पर फिर से कृपा करे और मुझे ऐसी स्थिति मिले कि मैं बिना शर्मिंदगी के उसके पास आपके पास आ सकूँ, तो आप मुझे उसके पास ले जाना और बच्चे को उसके पिता से मिलवाना: तब तक आप मेरे बारे में फिर कभी मत सुनना।'
मैंने उसे छोड़ दिया। जब तक मैं उसके साथ थी, मैंने अपनी भावनाओं को दबाया, उनसे संघर्ष किया और उन पर विजय प्राप्त की; लेकिन जैसे ही मैंने उसकी दहलीज पार की, एक माता-पिता का स्नेह दब नहीं सका: मैं गहरे दुःख से भर गई, और बैठ कर रोने लगी, क्योंकि मुझे लगा कि मैंने अपने बच्चे को आखिरी बार देखा है, और ऐसा ही हुआ; साहब, उसके बाद से मैंने उसे कभी नहीं देखा, और न ही उसके भाग्य के बारे में कोई सुराग मिल पाया। ईश्वर करे आलिया खुश रहे, और उसे मेरे भाग्य के बारे में पता न हो! लेकिन इसके बारे में आगे बात करेंगे।
मैं रोई! हाँ, मैं अपने घर की दहलीज पर बैठी रोई, पर चुपचाप। मेरी आँखें आँसुओं के झरने की तरह बह रही थीं, पलकों से छलकते हुए मेरे खुरदुरे चेहरे पर गिर रही थीं और गर्म-गर्म मेरे हाथों पर पड़ रही थीं। मेरी यादें अतीत में खोई हुई थीं, उस आनंदमय दौर में जब सारे सांसारिक सुख मेरे हिस्से में थे, धन और यश भी। सब कुछ चला गया—एक क्षणभंगुर सपने की तरह—एक उपहास, जो सोते हुए मन को मोहित करते समय कितना भी भव्य या आनंदमय क्यों न हो, वास्तविकता के जागने से टूट जाता है—यहाँ तक कि उसकी स्मृति भी खो जाती है। आलिया, मेरी मदद करो! मैंने उस क्षण अपने हृदय की कड़वाहट में कहा; मैं सचमुच अकेली पड़ गई हूँ, और मुझे जो भी हो, कोई फर्क नहीं पड़ता: मुझे कोई उम्मीद नहीं है।
मुझे नहीं पता कि मैं कितनी देर तक इस तरह बैठा रहा; लेकिन अचानक मुझे अपने ऊपर मंडरा रहे खतरे का ख्याल आया और मैं उठ खड़ा हुआ, उस जगह का एक लंबा, उदास जायजा लिया जो कभी मेरी थी, लेकिन अब वीरान पड़ी थी; और उस जगह से जल्दी से निकलकर मैं उस द्वार पर पहुंचा जब वह बंद होने ही वाला था, और थोड़ी देर बाद अपने साथी से मिल गया।
अंततः हम कल्पी पहुँचे, जहाँ हमें वह टोली और उनके परिवार मिले; और सभी की सभा में, आगे बढ़ने की कई योजनाओं पर चर्चा हुई और विभिन्न सदस्यों द्वारा हमारे अंतिम पड़ाव के लिए कई प्रस्ताव रखे गए। अंत में, मैंने उनके सामने अपनी एक योजना रखी, जो मेरे मन में लंबे समय से थी। वह यह थी कि आसानी से किराए पर मिलने वाली नाव से लखनऊ जाया जाए और वहीं बसा जाए, क्योंकि वह एक ठगों के लिए भरपूर फसल का वादा करने वाला शहर था; और वहाँ की सरकार का कठोर न होना, हमें अपने व्यवसाय को सुरक्षित रूप से जारी रखने में अन्य किसी भी शहर की तुलना में अधिक सक्षम बनाता था। योजना पर सहमति बन गई; और अगली सुबह मैं घाट गया, नावों के मालिकों से बात करने और अपने दल को ले जाने के लिए उनसे समझौता करने के लिए।

सब कुछ मेरे साथियों की संतुष्टि के अनुसार व्यवस्थित किया गया था; और नियत समय पर, जिसे नाविकों द्वारा नियुक्त किसी ज्योतिषी ने शुभ क्षण घोषित किया था, लंगर उठाया गया, और अनुकूल हवा हमें तेजी से शांत जल पर ले गई।

दिन-ब-दिन इसी तरह बीतते गए, और इस यात्रा में एक तरह का स्वप्निल आनंद था, जो मेरे लिए अवर्णनीय रूप से सुखद था। यहाँ मुझे कोई डर नहीं था, कोई थका देने वाली यात्रा नहीं थी, कोई चिंता नहीं थी; मेरा मन शांत और स्थिर हो गया, और मैं एक बार फिर से शांति में था।

लखनऊ में हमने कुछ समय तक अपनी पिछली लूट से प्राप्त धन पर गुजारा किया, और मैंने अपने साथ लाए कीमती पत्थरों का एक छोटा-मोटा व्यापार शुरू किया; लेकिन इससे मुझे मामूली मुनाफा हुआ, और मैंने कुछ ठोस योजनाएँ बनाने तक ही काम शुरू करने में देरी की। अपना देश छोड़कर आना मेरी बहुत बड़ी गलती थी; अगर मुझे देश छोड़ना ही था, तो मुझे दुखुनों के पास जाना चाहिए था: वहाँ मैं सफल होता; मैं तरक्की करता, क्योंकि दुखुन ठगों को नेताओं की ज़रूरत थी, और जैसा कि आपने सुना होगा, जब भी कोई हिंदुस्तानी जमादार उनका नेतृत्व करता था, वे अच्छा व्यवहार करते थे और पूरे देश में आतंक का केंद्र बन जाते थे। यहाँ, मैं एक ऐसी जगह पर था जिसके बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं थी, और सड़कों पर निकलने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। अंत में मैंने सोचा कि मैं वही तरीका अपनाऊँगा जो हमने हैदराबाद में इतनी सफलता से अपनाया था। यह विचार आते ही मैं इसे अमल में लाने के लिए बेताब हो गया; खासकर इसलिए क्योंकि मेरे साथियों ने इसे उत्साह से स्वीकार किया, और इसकी व्यावहारिकता के प्रति पूरी तरह आश्वस्त थे। हम उस भीड़भाड़ वाले और दुष्ट शहर में अनजान थे, एक सुनसान इलाके में रहते थे, और बाजारों में रोज़ाना घूमते हुए, बुनिज की तलाश में, हम पर कभी शक नहीं किया जा सकता था। और ऐसा ही हुआ; दो महीने तक हमारी किस्मत बहुत अच्छी रही, खूब पैसा हमारे पास आया, और हमने तीस से ज़्यादा लोगों को मार डाला, जिनमें से ज़्यादातर दूर-दराज के इलाकों के यात्री थे, जिन्हें हमने सराय से बहला-फुसलाकर अपने जाल में फंसाया था। जैसे-जैसे हम सफल होते गए, मेरे पास और पैसा आ गया और मैं कई सराय मालिकों को रिश्वत देने में सक्षम हो गया; और उन्हें अपनी कमाई में बड़ा हिस्सा देकर, मैंने सराय में प्रवेश पा लिया, और यात्रियों से बात करने की सुविधा प्राप्त कर ली, जो मुझे उनकी सद्भावना प्राप्त किए बिना कभी नहीं मिलती। लेकिन इस उत्साहवर्धक शुरुआत के बावजूद, भाग्य हमारे खिलाफ था, और हम अपने इस आसान और लाभदायक जीवन का आनंद ज़्यादा समय तक नहीं ले पाए।

एक दिन हम सोलह ठगों के एक दल को शहर से बाहर ले गए थे। मुझे अच्छी तरह याद है कि वह शुक्रवार का दिन था, जो वैसे भी अशुभ माना जाता है। ठगों में एक बूढ़ा आदमी भी था, जो पुराने मुर्नाई वंश का था, एक बड़ा भुट्टोता, जो कुछ समय पहले ही हमारे साथ शामिल हुआ था; वह मेरे पिता और मुझे बचपन से जानता था, और उसने मुझे लखनऊ की एक गली में पहचान लिया था, जिसके कारण वह हमारे साथ जुड़ गया। हम उन यात्रियों को अपने एक पसंदीदा भील में ले गए थे जो लगभग चार किलोमीटर दूर था, और उन्हें गला घोंटकर मारने ही वाले थे—कुछ तो जमीन पर मृत पड़े थे, और बाकी अपनी अंतिम पीड़ा में थे—तभी

संयोग से घोड़ों का एक झुंड, जो शहर से एक दूर के परगने की ओर जा रहा था, हमारे सामने आ गया। हम अपनी लगातार सफलताओं से बहुत अधिक आत्मविश्वास में आ गए थे—अभी सुबह होने में काफी समय था, और हमने जासूसों को तैनात करना भूल गए थे। घोड़ा अचानक और बिना दिखाई दिए हम पर आ गिरा, और जैसा कि मैंने आपको बताया है, उसने हमें रंगे हाथों पकड़ लिया। मामूली प्रतिरोध के बाद हममें से नौ लोगों को पकड़ लिया गया; बाकी, सौभाग्यशाली! बच निकले। हमारे हाथ पीछे बांध दिए गए और हमें शहर में घसीट कर ले जाया गया, हम वहां के निवासियों के लिए आश्चर्य और भय का विषय बन गए थे। हमारे बाद शव लाए गए: और दो यात्री, जिनका गला घोंटा गया था और जिन्हें घुड़सवारों ने होश में लाया था, ने हमारी पूरी घटना का इतना स्पष्ट विवरण दिया कि कैसे हमने उन्हें बहला-फुसलाकर अपने साथ यात्रा की और अचानक उन पर हमला कर दिया, जिससे हमारे अपराध के बारे में कोई संदेह नहीं रह गया; और काज़ी के समक्ष हमारी संक्षिप्त सुनवाई समाप्त होने के बाद, हमें अपने भाग्य की प्रतीक्षा में जेल में डाल दिया गया। बूढ़े ठग और मुझे एक साथ बांध दिया गया था, और हमें इसी अवस्था में जेल की एक संकरी कोठरी में डाल दिया गया। वहां हमें बताया गया कि हमें तब तक रहना होगा जब तक हमारे संबंध में राजा की इच्छा ज्ञात न हो जाए।

अध्याय 148

लंबी कैद की आह, कदम
उन पैरों की कराह जिन पर लोहे की खड़खड़ाहट हुई
मृत्यु, निराशा का अभिशाप।
बायरन
रानी। हे, मुझसे अब और बात मत करो!
तेरे शब्द छुरी की तरह मेरे कानों में चुभते हैं।
हैमलेट, अंक III, दृश्य 4

मैं फिर से जेल में था; और यद्यपि मेरी हालत झालोन जैसी दयनीय नहीं थी, क्योंकि कोठरी बड़ी और ठीक-ठाक साफ थी, फिर भी यह एक जेल ही थी—मेरे अंगों और आत्मा का बंधन; एक ऐसा विश्वास जो मेरे जीवन के लिए खतरा था, मुझ पर मंडरा रहा था; और चूंकि मुझे बचने की कोई उम्मीद नहीं दिख रही थी, मैंने मरने का निश्चय कर लिया था, और अपने भाग्य का सामना एक ऐसे व्यक्ति और ठग की तरह करने को तैयार था जो बचपन से ही मृत्यु से परिचित हो। हम चुपचाप बैठे रहे, और मेरा बेचारा साथी, बूढ़ा होने के बावजूद, जीवन के विचार से इस कदर जुड़ा हुआ था कि मुझे वैसी लालसा नहीं थी। धरती पर उसका कोई बंधन नहीं था, कभी था ही नहीं, फिर भी वह जीना चाहता था। मेरे पास वे सब थे—वे सब टूट चुके थे, और जीवन में मेरे लिए कोई आकर्षण नहीं था। मैं यह तो नहीं कह सकता था कि मैं मृत्यु चाहता था, लेकिन मैं अपने भाग्य के प्रति उदासीन था।

इस तरह एक सप्ताह बीत गया—एक लंबा, अंतहीन सप्ताह। मैंने अपने जेलरों से गुहार लगाई कि वे मुझे इस अनिश्चितता से मुक्ति दिलाएँ, मुझे बताएँ कि मैं जीवित रहूँगा या मरूँगा, लेकिन सब व्यर्थ था: या तो उन्हें पता नहीं था, या उनके हृदय मेरे प्रति कठोर हो गए थे; उन्होंने मुझे कुछ नहीं बताया।

लेकिन इस अवधि के बीत जाने के तुरंत बाद, हमें अपने फैसले के बारे में पता चल गया। हमें बताया गया कि हमारे सात साथियों को फांसी दे दी गई है, क्योंकि उन्हें यात्रियों का गला घोंटते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया था। लेकिन हमारे खिलाफ कोई पुख्ता सबूत नहीं था; जो व्यापारी अपने साथियों की तरह बच गए थे, वे यह शपथ नहीं ले सकते थे कि हमने मरने वालों में से किसी की हत्या की थी; और जिन घुड़सवारों ने हमें पकड़ा था, उन्हें बस इतना ही पता था कि हम उनके दल के सदस्य थे। अगर बस इतना ही होता, तो शायद हमें रिहा कर दिया जाता; लेकिन जिन बेचारे लोगों को फांसी दी गई थी, उनमें से एक ने अपनी जान बचाने की व्यर्थ कोशिश में अपना जुर्म कबूल कर लिया; और दुर्भाग्य के इस आखिरी झटके ने हमें दोषी ठहरा दिया, और फैसला सुनाया गया कि हमें आजीवन कारावास की सजा दी जाएगी।

इस कठोर फैसले की घोषणा होते ही निराशा ने मुझे जकड़ लिया। मैं तो इससे कहीं ज़्यादा भयानक मौत को सहर्ष गले लगा लेता। उस भयानक कोठरी में सालों-साल फँसे रहना, फिर कभी आज़ाद न होना! मुझे विश्वास

ही नहीं हो रहा था: मैंने इस भयावह वास्तविकता को अपने मन से निकालने की कोशिश की, पर व्यर्थ। मैंने विनती की कि मुझे तुरंत फाँसी दे दी जाए, मुझे सूली पर चढ़ा दिया जाए, या तोप से उड़ा दिया जाए, या फाँसी पर लटका दिया जाए— कुछ भी हो जाए, जेल के एकांत और पीड़ा में मेरा दयनीय जीवन लंबा खिंचने से बेहतर। लेकिन मेरी विनतियों का मज़ाक उड़ाया गया या उनका उपहास किया गया। मेरे पैरों में एक भारी जंजीर ठूँस दी गई, मेरे साथी के साथ भी ऐसा ही किया गया, और हमें हमारे भाग्य पर छोड़ दिया गया। फिर भी मेरी बेचैन आत्मा ने मुझे भागने की उम्मीदें जगाए रखीं— ये उम्मीदें केवल मेरा मज़ाक उड़ा रही थीं, क्योंकि मेरी हर योजना पूरी तरह से अव्यवहारिक साबित हो रही थी, और इससे मेरा दुख और बढ़ रहा था। एक दिन मुझे उस पैसे की याद आई जो मैंने पकड़े जाने से पहले इकट्ठा किया था। यह छिपा हुआ था, और यह असंभव नहीं था कि मेरा खजाना किसी को पता न चला हो। इससे मुझे बड़ी उम्मीद थी कि मैं अपने किसी जेलर को रिश्वत दे सकूंगा; और यह विचार कई दिनों तक मुझे सुकून देता रहा, जब तक कि मुझे इसे अमल में लाने का मौका नहीं मिला।

जेल के पहरेदारों में से एक युवक था, जो हमेशा हम सबके प्रति अन्य सभी से अधिक दयालु व्यवहार करता था। वह हमारे लिए बेहतर भोजन लाता था और पानी हमेशा शुद्ध और साफ बर्तन में देता था। वह कभी-कभी हमें यह आशा दिलाकर हमारा हौसला बढ़ाता था कि हमारी कैद उतनी लंबी नहीं चलेगी जितनी तय की गई थी; और वह कई ऐसे अपराधियों के उदाहरण देता था जिन्हें हमारी ही तरह सजा सुनाई गई थी, लेकिन जब जेल के प्रभारी अधिकारियों के मन से उनके अपराधों की याद मिट गई तो उन्हें रिहा कर दिया गया था। वह हमारे कपड़े धुलवाता था और हजारों दयालु कार्य करता था—शायद छोटी-छोटी बातें हों, लेकिन फिर भी उसके अन्य साथियों से हमें जो मिला उससे कहीं अधिक।

इसलिए मैंने अपने साथी कैदी से अपने लंबे समय से सोचे-समझे और पोषित मुक्ति के उपाय को आजमाने का प्रस्ताव रखा। अगली बार जब उसकी बारी आई, तो मैंने उससे विनती की कि वह रात या शाम को कोठरी में आए, जब वह किसी की नजरों से सुरक्षित रहेगा, क्योंकि मुझे उससे कुछ खास बात कहनी थी। वह उसी दिन शाम को आया और गहरे रंग के कंबल में लिपटा हुआ हमारी कोठरी की सलाखों के पास बैठ गया।

'मुझे लगता है कि आपको कुछ कहना है,' उसने धीमी आवाज़ में कहा, 'और मैंने आपका आदेश मान लिया है; मैं यहाँ हूँ।'

'जी, अच्छे मीत साहब,' मैंने कहा (क्योंकि वह भी एक सयुद थे); 'सुनिए, मैं आपको जो कुछ बताना चाहता हूँ, वह आपके लाभ के लिए होगा, यदि आप मेरी योजनाओं में शामिल होंगे।'

युवक ने उत्तर दिया, 'बोलते रहिए; आप मेरी पूरी कोशिशों का आदेश दे सकते हैं।'

'संक्षेप में कहें तो,' मैंने आगे कहा, 'आपको हमारे भागने की कोशिश करनी होगी।'

उन्होंने कहा, 'यह असंभव है।'

'ऐसा नहीं है,' मैंने कहा; 'इच्छुक हाथों और दृढ़ हृदयों के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। यदि आप मेरी बात सुनेंगे तो आप सब कुछ संभाल लेंगे। जब हमें गिरफ्तार किया गया था, तब हमने अच्छी खासी रकम बचा

रखी थी, जिसे मैंने एक ऐसी जगह छिपा रखा है जिसके बारे में मैं आपको बता सकता हूँ, बशर्ते आप हमारे प्रति वफादार रहें। यदि आप हमारी सहायता करेंगे तो उसका आधा हिस्सा आपका होगा।'
'इसकी कीमत कितनी है?' उसने पूछा।
मैंने कहा, 'पांच सौ रुपये से अधिक; यह सुरक्षित रूप से छिपा हुआ था, और किसी ने इसे खोजा नहीं होगा। मैं दोहराता हूं, यदि आप हमारी सहायता करेंगे तो इसका आधा हिस्सा आपका होगा।'
'मैं कैसे कर सकता हूँ?' उसने हैरानी भरे स्वर में कहा; 'यह कैसे संभव है कि आप इन दरवाजों और दीवारों को पार कर सकें, भले ही आप इस समय मेरी तरह स्वतंत्र हों?'
मैंने कहा, 'यह मुझ पर छोड़ दो; क्या तुम प्रस्ताव स्वीकार करते हो?'
'मैं इस मामले पर विचार करूंगा और कल इसी समय यहां उपस्थित होकर आपको अंतिम उत्तर दूंगा।'
'आलिया की ओर से आप सभी को संकट में फंसे लोगों के लिए शुभकामनाएं! हम आपके फैसले का बेसब्री से इंतजार करेंगे।'
अगली शाम वह ठीक उसी समय आया और पहले की तरह बैठ गया।
'मीर साहब, आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?' उसने पूछा; 'यदि आपके आदेश व्यावहारिक हों तो मैं उनका पालन करने के लिए तैयार हूँ। लेकिन पहले मुझे आपके द्वारा बताए गए धन की सुरक्षा सुनिश्चित करनी होगी; मुझे वह धन प्राप्त करना होगा, इससे पहले कि मैं अपनी स्थिति और उससे भी बढ़कर, आपके लिए अपना जीवन खतरे में डालूँ।'
'तो सुनिए, मीर साहब,' मैंने कहा; 'मुझे आप पर भरोसा है, आप भी एक सईद हैं और मैं भी; आप मुझे धोखा देने की हिम्मत न करें, वरना आलिया का क्रोध आप पर आएगा।'
उन्होंने कहा, 'मैं ऐसा नहीं करूंगा, पैगंबर की कसम, जिनका मैं वंशज हूं; अगर इस समय कुरान मेरे हाथों में होती, तो मैं उस पर कसम खाता।'
'नहीं, नहीं,' मैंने कहा, 'कसम मत खाओ; एक ईमानदार आदमी का वचन कसम से कहीं अधिक बाध्यकारी होता है। मुझे विश्वास है कि तुम सच्चे हो, और इसीलिए मैं तुम पर भरोसा करता हूँ। तो, पहले पैसे के बारे में; क्या तुम्हें दो पुरानी कब्रें याद हैं, जिनमें से एक बहुत टूटी हुई है, जो शहर के उत्तरी किनारे पर नदी के तट के पास, दीवार से लगभग एक तोप की गोली की दूरी पर स्थित हैं?'
'जी हां, बिल्कुल।'
'फिर,' मैंने आगे कहा, 'उस टूटे हुए में एक मिट्टी का पात्र है, जिसमें धन है; वह तहखाना, जिसमें पुराने समय में उस व्यक्ति का शव रखा गया था जिसके ऊपर यह मकबरा बनाया गया था, उसके पूर्वी हिस्से से चार ढीले पत्थरों को हटाकर खोला जा सकता है; वे न तो बड़े हैं और न ही भारी, और आप अकेले ही यह काम कर सकते हैं। उस खोखले भाग में आपको पात्र मिलेगा, और धन उसी में है। मुझे अपने खर्चों के लिए आधा धन चाहिए। फिलहाल मैं आपसे केवल इतना ही चाहता हूँ कि आप हमारे लिए दो छोटी और तेज धार वाली

फाइलें और कुछ घी ला दें; और जब हम अपनी जंजीरें और इन सलाखों में से एक को काट लेंगे, तो मैं आपको बताऊंगा कि आप आगे हमारी कैसे मदद कर सकते हैं।'
युवक ने कहा, 'मैं आपकी सभी इच्छाएँ पूरी करूँगा; और इंशाल्लाह! यदि धन के बारे में आपका बयान सच पाया गया, तो कल रात तक आपको फाइलें मिल जाएँगी।'
फिर वह हमें छोड़कर चला गया, और हम अगले दिन उसके आने का बेसब्री से इंतजार करने लगे। और उसने हमें निराश नहीं किया।
'जैसा कि आप देख रहे हैं, मीर साहब, मैं आ गया हूँ,' उसने कहा; 'और देखिए, ये आपके लिए फाइलें हैं—ये अंग्रेजी में हैं, नई और तेज हैं; यहाँ घी भी है। मैंने अपना वादा पूरा कर दिया है।'
'और पैसे का क्या?' मैंने पूछा।
'इसके बिना आप मुझे आज रात नहीं देख पाते, मैं आपको बता सकता हूँ, मीर साहब। मुझे रकम मिल गई है; पाँच सौ पचास रुपये हैं, और जब आप इस मुसीबत से बाहर निकल जाएँगे तो आप अपना हिस्सा ले सकते हैं। और आप अपनी इस योजना के इस हिस्से को कैसे पूरा करने का इरादा रखते हैं?'
मैंने पूछा, 'क्या जेल के द्वार रात में बंद कर दिए जाते हैं?'
'नहीं,' उसने जवाब दिया; 'कहने का मतलब है कि गेट बंद है, लेकिन विकेट हमेशा खुला रहता है।'
और कितने आदमी इसकी रखवाली करते हैं?
'केवल एक, मीर साहब; बाकी सब आधी रात के बाद गहरी नींद में सो रहे हैं।'
मैंने कहा, 'यह ठीक है; हम इस प्रयास में मर ही जाएंगे, और मैं तो यहाँ एक दयनीय जीवन बिताने के बजाय खुशी-खुशी मरना पसंद करूंगा।'
'और मैं भी,' मेरे साथी ने कहा।
उस आदमी ने कहा, 'मुझे खेद है कि मैं आपकी सहायता नहीं कर सकता। फिर भी, यहीं रुकिए। मान लीजिए कि आप मेरे पहरे पर होने के दौरान भागने का प्रयास करते हैं। कल रात आखिरी पहरा मेरा होगा।'
मैंने कहा, 'आलिया का आशीर्वाद तुम पर बना रहे! तुमने मेरे मन की बात जान ली है। तो चलो, हम कोशिश करते हैं, और पैगंबर हमारी मदद करें। हम पूरी रात अपनी बेड़ियों और इन सलाखों में से एक पर काम करेंगे, और कल रात हम आज़ाद हो जाएंगे। जाओ, मेरे प्यारे दोस्त, यहाँ देखे जाने पर पकड़े जाने का खतरा है।'
वह हमें छोड़कर चला गया, और हम पूरे मन से अपने पैरों में लगी बेड़ियों और लोहे की छड़ को काटने में जुट गए। हमने पूरी रात काम किया, और सुबह होते-होते लोहे की छड़ ऊपर और नीचे से लगभग कट चुकी थी; ऊपर से काटने के लिए, हममें से एक बारी-बारी से बैठता था, जबकि दूसरा उसके कंधों पर खड़ा होकर तब तक घिसता रहा जब तक उसकी बांह थक नहीं गई। घी लगाने के बावजूद, घिसने की आवाज़ आ रही थी; हमने धीरे-धीरे घिसकर इसे रोकने की कोशिश की, लेकिन उस पल की उमंग में हम कभी-कभी यह भूल जाते थे, क्योंकि हम अपनी आज़ादी के लिए जी-तोड़ मेहनत कर रहे थे।

सुबह हुई और हमने अपने परिश्रम से विश्राम किया; एक ज़ोरदार झटके से ही छड़ टूट सकती थी, और हमारे टखने और कमर पर लोहे की बेड़ियाँ इतनी बुरी तरह कटी हुई थीं कि एक हल्के से झटके से ही वे अलग हो सकती थीं। हम जानते थे कि हमारा मित्र वफादार था, क्योंकि उसने स्वयं को ऐसा साबित कर दिया था, और हम अपनी अंतिम विजय की मौन प्रतीक्षा कर रहे थे।

मैंने उत्साह से कहा, 'कल इसी समय तक हम मुक्त हो चुके होंगे, लखनऊ से बहुत दूर, और हमारे सामने फिर से एक पूरी दुनिया होगी, जिसमें हम अपना निवास स्थान चुन सकेंगे!'

मेरा साथी भी मेरी ही तरह आशा से भरा हुआ था, और हमने सुबह का अधिकांश समय इस बात पर चर्चा करते हुए बिताया कि हमें कहाँ जाना चाहिए, और अपने उन पुराने साथियों के नाम याद करते रहे जो हमारा स्वागत करेंगे और नए रोमांच की तलाश में हमारे साथ शामिल होंगे। मुझे लगता है कि दोपहर के करीब, दारोगा के नेतृत्व में जेल के सैनिकों का एक दल हमारी कोठरी की ओर बढ़ा। उन्हें आते देख मेरा दिल बैठ गया, और जिस तेज़ी से वे हमारी ओर बढ़े, उससे मेरी घबराहट और डर और बढ़ गया। 'हम तो गए काम से!' मैंने अपने साथी से कहा; 'उन्होंने हमारी योजना का पता लगा लिया है।' उसने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन उसके चेहरे पर निराशा साफ झलक रही थी।

दारोगा ने ताले पर अपनी चाबी लगाई; ताला खुल गया, और पूरा दल अंदर घुस आया और हमें पकड़ लिया। 'यह कैसी नई तानाशाही है?' मैंने हैरानी से कहा; 'हमने ऐसा कौन सा नया अपराध किया है कि हमारे साथ फिर से दुर्व्यवहार किया जा रहा है?'

'उनके बेड़ियों को देखो!' दारोगा ने अपने आदमियों से चिल्लाकर कहा।

जब उन्होंने उन्हें उस हालत में पाया जिसका मैंने वर्णन किया है, तो उन्होंने हमसे कहा, 'लगता है तुम लोग काफी व्यस्त रहे हो। मैं तुम्हें एक सलाह देता हूँ; अगली बार जब तुम लोहे के औजारों को घिसो, तो या तो ज़्यादा घी का इस्तेमाल करो या कम शोर करो। लेकिन मुझे लगता है कि तुम्हें दोबारा ऐसा मौका नहीं मिलेगा। इनकी अच्छी तरह तलाशी लो,' उन्होंने उन आदमियों से आगे कहा; 'देखो ये औजार कहाँ हैं जिनका उन्होंने इतनी चालाकी से इस्तेमाल किया है।'

उन्होंने हमें पूरी तरह नंगा कर दिया, और फाइलें हमारी पतलून की पट्टियों में मिलीं, जिनमें से होकर उन्हें बांधने वाली डोरी गुजरती है। दारोगा ने उनकी सावधानीपूर्वक जांच की।

'ये नए हैं, मीर साहब, और अंग्रेजी में हैं। इंशाल्लाह! हम पता लगा लेंगे कि ये आपको किसने मुहैया कराए हैं। जिसने भी ये किया है, वो जरूर कीचड़ चाटेगा।'

मैंने दृढ़ता से कहा, 'हम उन्हें अपने साथ यहाँ लाए थे। तुम मूर्ख हो कि तुमने अपने अत्याचार के अड्डे में प्रवेश करते समय हमारी तलाशी नहीं ली।'

'हम मूर्ख तो हो सकते हैं,' उसने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, 'पर हम इतने भोले नहीं हैं कि तुम्हारी बात मान लें, हे बुद्धिमान और चालाक स्यूद; तुम चाहे जितने भी बदमाश हो, हम तुम्हारे हाथों से धूल नहीं चाटेंगे। मेरे आदमियों में तुम्हारा कोई खास दोस्त रहा है; एक पर शक है; और अगर ये फाइलें हमें उसका पता लगाने में

मदद कर सकती हैं—और इसकी काफी संभावना है—तो बेहतर होगा कि वह कुलमा को सलाम करे, क्योंकि उसका सिर और कंधे ज्यादा देर तक एक साथ नहीं रहेंगे। लेकिन आओ,' उसने अपने आदमियों से कहा, 'तुम्हारा काम अभी आधा ही हुआ है; इन सलाखों के हर एक इंच की जांच करो; क्योंकि मेरे यहां मौजूद मेरे नेक दोस्तों ने, यकीन मानो, अपना काम आधा भी नहीं किया है।'

उन्होंने उसकी बात मानी और, जैसा कि आप अनुमान लगा सकते हैं, जल्द ही उन्हें वह छड़ मिल गई जिसे काटा गया था।

'बस करो!' दारोगा ने कहा। 'हे मीर साहब, इस नादानी भरे प्रयास के लिए आप मूर्ख थे। यदि आप अपनी सज़ा भुगतने के लिए तैयार होते, तो शायद समय आने पर आप पर दया दिखाई जाती; लेकिन अब सारी आशा छोड़ दीजिए; आपने अपनी नासमझी से वह दया खो दी है, और आपको इसका पछतावा लंबे समय तक रहेगा।' उन्होंने अपने आदमियों से कहा, 'इन्हें साथ ले आओ; हमें इन्हें तंग और सुरक्षित जगहों पर रखना होगा।'

या आलिया साहब, हमें कैसी जगह ले गए! दो ऊँची दीवारों के बीच एक संकरा रास्ता था, जिसमें से एक आदमी मुश्किल से ही गुजर सकता था। लगभग आधे रास्ते में दो कोठरियाँ थीं, जो जंगली जानवरों के मांद जैसी लग रही थीं। ये पिछली कोठरी से कहीं ज़्यादा मज़बूती से बनी थीं, और आकार में आधी भी नहीं थीं। एक लोहार ने हमारे पैरों में पहले से कहीं ज़्यादा भारी लोहे की बेड़ियाँ बाँध दीं, और हमें उन भयानक कोठरियों में धकेल दिया गया।

दारोगा ने कहा, 'अब, अगर आप निकल सकते हैं तो निकल जाइए, मीर साहब। अगर दीवारें और लोहे की सलाखें आपको रोक सकती हैं, तो मुझे लगता है कि आप यहां काफी सुरक्षित हैं।'

वे हमें छोड़कर चले गए, और एक बार फिर हम निराशा के अथाह गड्ढे में गिर पड़े; हमारे उदास और दुखी विचारों को सहारा देने के लिए आशा की एक किरण भी नहीं बची थी। यहाँ जीना है, यहाँ मरना है, मैंने उस तंग कमरे को देखते हुए सोचा, —मैं जो वर्षों से दुनिया भर में भटकती रही हूँ, मैं जिसने कभी संयम नहीं जाना। आलिया! आलिया! मैंने ऐसा क्या किया है कि यह सब हो रहा है? हे भवानी, क्या तुमने अमीर अली को पूरी तरह से त्याग दिया है? मैं खुरदुरे फर्श पर गिर पड़ी और दर्द से कराह उठी। मैं रो नहीं सकी, आँसू मुझे नहीं आ रहे थे; वे मेरी बोझिल आत्मा को शांत कर देते। मेरे सामने दुख का प्याला था, और मुझे उसे अंत तक पीना था। आशा भाग गई थी, और निराशा ने मेरे दिमाग की हर शक्ति को जकड़कर सुन्न कर दिया था।

महीने बीतते गए। हालाँकि लोहे की सलाखों की एक मजबूत जाली ही मुझे मेरे पुराने साथी से अलग करती थी, फिर भी हम शायद ही कभी एक-दूसरे से बात करते थे; ज़्यादा से ज़्यादा एक शब्द, एक हल्की-फुल्की टिप्पणी जो एक कह देता था और दूसरा उस पर मुश्किल से ही ध्यान देता था, क्योंकि हम दोनों अपनी तकलीफों में इतने डूबे हुए थे। मैं बेमन से खाता-पीता था, मुझे खाने की कोई इच्छा नहीं होती थी; और जो कुछ हमें खाने को दिया जाता था वह बहुत ही घटिया किस्म का होता था। हमारी कोठरियों में जमा गंदगी को

हफ्ते में सिर्फ एक बार साफ किया जाता था, और उसमें कीड़े-मकोड़े पनपते थे जो हमें बुरी तरह सताते थे। काश मैं मर जाता! मैं दिन में हज़ार बार यही रोता था। अफसोस! मेरी प्रार्थना पूरी नहीं हुई।

हमारी कैद का दूसरा साल भी बीत गया—दुख का वही एक ही चक्र चलता रहा—हमारी हालत में कोई बदलाव नहीं आया, कोई सुधार नहीं हुआ। हम बस जी रहे थे, और कुछ नहीं; हमारे अंदर जीवन की ऊर्जा खत्म हो चुकी थी। मैं सोचता था कि अगर कभी रिहा हुआ तो दुनिया की भागदौड़ बर्दाश्त नहीं कर पाऊंगा; बल्कि कैद को ही उसकी चिंताओं और परेशानियों से बेहतर समझूंगा। यह एक मूर्खतापूर्ण सोच थी, क्योंकि मैं अक्सर आजादी के लिए तरसता था और भविष्य की योजनाओं और विचारों में खोया रहता था, अगर किस्मत से मुझे आजादी मिल जाए तो; लेकिन मेरी कैद की इस दुख भरी जिंदगी में आशा की कोई किरण नहीं दिखी।

मेरा यह कहने का कोई इरादा नहीं है कि मेरे साथी, बूढ़े ठग, और मैंने कभी बातचीत नहीं की; हम कभी-कभार बातचीत करते थे; हम बार-बार अपने कारनामों को दोहराते थे, और इस तरह अपने जीवन की शुरुआत से लेकर अब तक की घटनाओं को याद करते हुए, मैंने अपने मन में उन रोमांचों और उतार-चढ़ावों को संजो लिया है जो मैंने आपको बताए हैं। एक दिन हम मेरे पिता के बारे में बात कर रहे थे, और उनके अंतिम शब्द, 'मैं तुम्हारा पिता नहीं हूँ,' मेरे विचारों में कौंध गए। मैंने बूढ़े ठग को इस बारे में बताया, और उनसे विनम्रतापूर्वक अनुरोध किया कि वे मुझे इस्माइल और मेरे शुरुआती जीवन के बारे में जो कुछ भी जानते हों, वह बताएं।

'क्या!' उसने पूछा, 'तो आपको इसके बारे में पता नहीं है, मीर साहब? इस्माइल ने आपको सब कुछ जरूर बताया होगा? और फिर भी,' उसने कुछ देर रुककर कहा, 'वह ऐसा नहीं करता—उसकी हिम्मत नहीं होती।'

'तुम्हारा क्या मतलब है,' मैं चिल्लाया, 'यह कहकर कि उसमें हिम्मत नहीं थी? क्या मैं उसका बेटा था, या उसने सच कहा था जब उसने कहा कि मैं उसका बेटा नहीं था?'

'उन्होंने सच कहा, मीर साहब। मैं आपकी उत्पत्ति जानता हूँ, और यह संभव है कि एक-दो अन्य लोग भी हों जो जानते हों और अभी जीवित हों: इनमें से एक गणेश हैं।'

'गणेश!' मैंने विस्मय से कहा; 'आलिया की कसम! मेरी आत्मा हमेशा से कहती आई है कि वह मेरे बारे में कुछ जानते थे। मैंने उनके साथ मेरे किसी भी संबंध को याद करने की व्यर्थ कोशिश की है, और हमेशा असफल रही हूँ। आपकी आत्मा की कसम! मुझे बताइए कि मैं कौन थी और क्या थी।'

"यह एक लंबी कहानी है, अमीर अली," बूढ़े व्यक्ति ने कहा, "लेकिन मैं इसमें से जितना हो सकेगा उतना याद रखने की कोशिश करूंगा; यह एक ऐसी कहानी है जो, अगर तुम जैसे हो वैसे न होते, तो तुम्हें भयभीत कर देती।"

'तो क्या मेरे माता-पिता की हत्या कर दी गई थी?' मैंने कहा, मेरा दिल बैठ गया। 'मैंने कभी-कभी ऐसा सोचा था, लेकिन मेरे अनुमान अस्पष्ट और असंतोषजनक थे।'

'आपने बिल्कुल सही अनुमान लगाया है, मीर साहब। लेकिन सुनिए, मेरी याददाश्त अभी भी ताज़ा है, और आपको सब कुछ पता चल जाएगा।'

'इस्माइल, तुम्हारे पिता, जैसा कि वह तुम्हें अपना नाम पुकारते थे, हुसैन जमादार के गिरोह में ठग बन गए थे, जिन्हें तुम शायद याद करते होगे। मुझे वह दिन अच्छी तरह याद है जब वह दिल्ली से कुछ ही दूर एक गाँव में हमारे गिरोह में शामिल हुए थे; मैं तब एक युवक था, और उस गिरोह का सदस्य था जिसमें हुसैन सबसे अच्छे भुट्टोटों में से एक थे।'

मैंने कहा, 'मैं इस्माइल का इतिहास जानता हूं; उसने ही मुझे बताया था।'

'तो मुझे इसे दोहराने की ज़रूरत नहीं है,' उन्होंने आगे कहा। 'समय के साथ, इस्माइल अपनी बहादुरी और बुद्धिमत्ता से हुसैन से कहीं ऊपर उठ खड़ा हुआ और तीस ठगों के एक गिरोह का जमादार बन गया। मैं इसी समय की बात कर रहा हूँ। एक दिन हम मालवा के एकलेरा नामक गाँव में थे, गाँव के बाहर एक कुएँ के पास पेड़ों के झुरमुट में डेरा डाले हुए थे। कुछ समय से हम बदकिस्मत थे, क्योंकि यह बरसात का मौसम था, जब बहुत कम यात्री बाहर होते हैं, और हम बेसब्री से बुनिज की तलाश कर रहे थे।'

'इस्माइल और गणेश बाज़ार गए थे और खुशखबरी लेकर लौटे कि एक दल इंडोर की ओर रवाना होने वाला है, और हमें उनके आगे-आगे चलना है और जहाँ भी हमें लगे कि वे हमारे लिए सुरक्षित हैं, वहीं रुक जाना है। मुझे और एक अन्य ठग को उनके आने-जाने पर नज़र रखने का निर्देश दिया गया, जबकि मुख्य दल आगे बढ़ गया। सूचना सही निकली, और हम तीसरे या चौथे मार्च तक उनका पीछा करते रहे, जब एक गाँव में, जिसका नाम मुझे याद नहीं है, हमने उस दल को रुका हुआ पाया और उनसे दोबारा मिल गए। उस दल में एक सम्मानित व्यक्ति, उसकी पत्नी और बच्चा, एक बूढ़ी औरत और गाँव के कुछ युवक थे जो उनके साथ थे। वह व्यक्ति एक अच्छे घोड़े पर सवार था, और उसकी पत्नी पालकी में सफ़र कर रही थी। वे आपके माता-पिता थे, मीर साहब।'

मैंने कर्कश स्वर में कहा, 'जारी रखिए; मेरी स्मृति आपके वर्णन का अनुसरण करती प्रतीत होती है।' हे साहब! मैं अत्यंत उत्सुक और उत्साहित था।

“खैर,” उन्होंने आगे कहा, “उनके आने के कुछ ही समय बाद, इस्माइल और गणेश अपने सबसे अच्छे कपड़े पहनकर बाज़ार गए, ताकि आपके पिता से जान-पहचान कर सकें। जैसा कि इस्माइल ने हमें बाद में बताया, यह सब आपके माध्यम से ही संभव हो पाया। उन्होंने आपको गलियों में खेलते देखा, आपको कुछ मिठाइयाँ दीं, और बाद में गाँव के कुछ लड़कों की हिंसा से आपको बचाया जो आपसे मिठाइयाँ छीनना चाहते थे। इसी से उनकी आपकी माँ से बात हुई, और अंततः आपके पिता से भी उनकी जान-पहचान हो गई। अंत में, वे हमारे साथ चलने के लिए राज़ी हो गए, और अपने साथ आए युवकों को विदा कर दिया। क्या अब आपको याद है, मीर साहब, या मैं कहानी पूरी करूँ?”

मैंने कहा, 'हाँ, जैसे-जैसे आप आगे बढ़ते हैं, यह और भी स्पष्ट होता जाता है। लेकिन जारी रखिए; आपकी सहायता के बिना, मैं अपनी दुखद कहानी का सिलसिला खो देता हूँ।' उन्होंने बोलना फिर शुरू किया।

उन दिनों इस्माइल और गणेश दोनों ही अच्छे घोड़े पर सवार होते थे। उन्हें तुमसे लगाव हो गया था और तुम्हें भी उनसे। वे तुम्हें अपने आगे बिठाकर लगभग पूरे सफर में या थकने तक ले जाते थे। यह सिलसिला कुछ दिनों तक चला, लेकिन हम इंडोर पहुँचने वाले थे और इस मामले को जल्द खत्म करना जरूरी था; इसके अलावा, इस्माइल से तुम्हारे पिता की संपत्ति के बारे में सुनकर हमारी लालच भी बढ़ गई थी, क्योंकि उसने बताया था कि उनके पास काफी नकदी है। आखिरकार भील का पता चल गया। मैं तुम्हें अभी दिखा सकता हूँ; यह एक नदी के पास था और दल के नदी पार करने से पहले ही झिरनी दे दी गई। हमने उन सबको गला घोंटकर मार डाला। गणेश ने तुम्हारी माँ को मारा, बूढ़ी औरत का हिस्सा मुझे दिया गया; इस्माइल को भी उसका हिस्सा मिला और मुझे लगता है कि वह तुम्हारे पिता थे। बारिश रुकने के बाद से तुम सुबह से इस्माइल के घोड़े पर सवार थे और जब झिरनी दी गई, तब तुम नदी के आधे पार पहुँच चुके थे। मैंने तुम्हें गिरते देखा, और उसके बाद तुम हिले-डुले नहीं, तो मुझे लगा कि तुम मर गए। लेकिन तुम हिले-डुले, और गणेश तुम्हारी ओर दौड़े; उन्होंने रूमाल तुम्हारे गले में डाल दिया, और तुम्हारा गला घोंटने ही वाले थे कि इस्माइल, जो गणेश की इस हरकत को देखकर निराशा से चीख उठा था, ठीक समय पर पहुँच गया और उनके इस घातक इरादे को नाकाम कर दिया। तुम्हारे लिए उन दोनों के बीच ज़बरदस्त झगड़ा हुआ, और यहाँ तक कि उन्होंने अपनी तलवारें भी निकाल लीं; लेकिन इस्माइल विजयी हुआ, और तुम्हें वहाँ ले गया जहाँ लुघाई लोग शवों को नोच रहे थे। अपनी माँ को देखकर तुम व्याकुल हो गए; तुम उनके शरीर से लिपट गए और बड़ी मुश्किल से अलग हुए; तुम बड़बड़ाए और हम सबको कोसने लगे, लेकिन अंत में डर और शायद दर्द ने तुम्हें जकड़ लिया, क्योंकि तुम बेहोश हो गए। जब शवों का अंतिम संस्कार हो गया, और लूटा हुआ माल इकट्ठा कर लिया गया, तो इस्माइल अपने घोड़े पर सवार हुआ और तुम्हें अपने सामने ले गया; और सड़क से हटकर हम दूसरी दिशा में चल पड़े।

मुझे नहीं पता कि तुमने वह यात्रा कैसे सहन की; तुम दुबली-पतली और नाज़ुक बच्ची थी, और हम सबने कहा था कि तुम मर जाओगी; लेकिन तुमने उसे अच्छे से सहन किया, और जब हम जंगल में एक जगह पहुँचे, तो मुझे दूध लाने के लिए एक गाँव भेजा गया, और तुमने थोड़ा दूध पिया। यहाँ फिर इस्माइल और गणेश के बीच तुम्हारे बारे में दूसरी बार झगड़ा हुआ; गणेश ने कहा कि तुम गोद लेने के लिए बहुत बड़ी हो गई हो, कि तुम्हें सब कुछ याद रहेगा जो हुआ था, और वह तुम्हारा गला घोंट देगा: और तुमने उसे जो गालियाँ दीं, उससे वह और भी हिंसक हो गया। उन्होंने फिर अपनी तलवारें निकालीं, और तुम्हारे लिए लड़ने वाले थे, लेकिन हमने उन्हें रोक दिया।

'मैं तुम्हें दूर ले गया; मैंने तुम्हारी सूजी हुई गर्दन को सहलाया, और इस्माइल ने तुम्हें अफीम की एक तेज़ खुराक दी, जिससे तुम सो गए, और हमने फिर से अपनी भागदौड़ शुरू कर दी।'

'उस दिन के बाद गणेश और वह कभी भी सौहार्दपूर्ण मित्र नहीं रहे; उन्होंने फिर कभी एक साथ काम नहीं किया, जैसा कि मैंने सुना है, आपके अंतिम अभियान में; और यद्यपि उन्होंने एक-दूसरे के प्रति शिष्टाचार का बाहरी दिखावा बनाए रखा, लेकिन उनकी घृणा पहले की तरह ही प्रबल थी।'

'इस्माइल तुम्हें अपने घर ले गया। वह विवाहित था, लेकिन उसकी कोई संतान नहीं थी; और जैसे-जैसे तुम उसके दयालु और पिता तुल्य व्यवहार में बड़े होते गए और सुधरते गए, उसे तुम पर गर्व होने लगा, और वह अक्सर हमसे कहता था कि उसे इस बात का अफसोस है कि तुम्हारे पिता ने इंडोर की अपनी घातक यात्रा पर जाते समय तुम्हारी बहन को पीछे छोड़ दिया था।'

'मेरी बहन!' मैं भय और आशंका से व्याकुल होकर चिल्लाई।

जी हां, मीर साहब, आपकी बहन। मैंने तो आपके पिता को कहते सुना है कि उन्होंने उसे यहीं छोड़ दिया, क्योंकि वह बहुत छोटी थी और उसे कहीं ले जाना संभव नहीं था। अगर आप कभी इस मनहूस गड्ढे से बाहर निकल पाए तो आपको एकलेरा में उसके बारे में खबर मिल सकती है।

लेकिन अब वह एक ऐसे व्यक्ति से बात कर रहा था जो होश में नहीं था—जिसके पास घुटन भरी, मुरझाती हुई, विनाशकारी पीड़ा के सिवा कोई भावना नहीं थी। उस क्षण मेरा दिल क्यों नहीं पिघला? मैं अपने साथ पश्चाताप का बोझ कब्र तक क्यों ढो रहा हूँ?

फिर भी ऐसा ही हुआ है। मैं जीवित हूँ, और मैंने अपनी पीड़ा को यथासंभव सहन किया है; अधिकांश लोगों को मैं शांत और प्रसन्न दिखाई देता हूँ, पर मेरे हृदय में घाव कुंठित है; और यदि आप मेरे कष्टों को जान पाते, साहब, तो शायद आप मुझ पर दया करते। दिन में मेरा मन अतीत के विचारों से विचलित नहीं होता; यह रात में होता है, जब मेरे चारों ओर सब कुछ शांत होता है, और मेरी थकी हुई पलकों पर नींद नहीं आती, तब मुझे अपनी अभागी बहन का रूप फिर से दिखाई देता है: फिर से मैं कल्पना करता हूँ कि मेरे हाथ उसकी सुंदर गर्दन को छू रहे हैं, और वह तुच्छ सिक्का जिसके लिए मैंने उसे मारा था, फिर से मेरी मुट्ठी में है जैसे मैंने उसे उसके गर्म सीने से छीना था। साहब, इन भयानक विचारों से कोई राहत नहीं मिलती; यदि मैं अफीम खाता हूँ —जो मैं बड़ी मात्रा में खाता हूँ, ताकि कुछ समय के लिए सब कुछ भूल जाऊँ—तो मुझे वही दृश्य सपनों में दिखाई देता है, और वह औषधि के प्रभाव से विकृत और अतिरंजित हो जाता है। नहीं, यह उस सरल वास्तविकता से भी बदतर है जिसे मैं कभी-कभी सहन करने का आदी हो जाता हूँ, जब तक कि एक ऐसा दृश्य जो अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में अधिक जीवंत होता है, मुझे फिर से इस निराशा में डुबो देता है कि यह मुझे कभी नहीं छोड़ेगा।

साहब, उस भयानक घटना के बाद, मुझे नहीं पता कि मैंने कई दिनों तक क्या किया। मुझे लगता है कि मैं बड़बड़ा रहा था, और लोग मुझे पागल समझ रहे थे, लेकिन मेरा मन दृढ़ था और उसे वश में नहीं किया जा सकता था। मैं धीरे-धीरे ही सही, संभला और बार-बार अपने जीवन के उस पूरे घटनाक्रम को याद करता रहा, जिस दिन मैंने अपनी बहन की हत्या की थी! इसके अलावा और कुछ हो ही नहीं सकता था।

मैंने व्यर्थ ही खुद को यह यकीन दिलाने की कोशिश की कि वह कोई और थी, पर मेरे सारे प्रयासों से यह विश्वास नहीं डिगा कि वह वही थी। एकलेरा की मेरी अकारण स्मृति—वहाँ मौजूद बूढ़े व्यक्ति द्वारा मेरे पिता की मृत्यु का वर्णन—उसका मुझे लगभग पहचान लेना—और सबसे बढ़कर, वह पुराना और बेकार सिक्का जिसके लिए मैंने उसे नष्ट किया था, और जिसे अब मुझे पूरी तरह याद था—ये सब मेरे अपराध के अकाट्य

प्रमाण थे; और यह दृढ़ विश्वास, हालांकि मैंने इसे दबाने की कोशिश की, मेरी आत्मा में समा गया और वहीं बस गया। हे अल्लाह, मेरी मदद करो, मैं कितना दयनीय प्राणी था! मेरे बाल सफेद हो गए थे, मेरा शरीर और ताकत क्षीण हो गई थी, और जिसने भी मुझे उस बूढ़े ठग की कहानी सुनने से पहले देखा होता, वह दो महीने बाद मुझे पहचान नहीं पाता। मुझे एक तरह का भयंकर बुखार सता रहा था; मेरी नसों में दौड़ता खून गर्म महसूस होता था; और रात, ओह, मुझे उससे कितना डर लगता था! मैं दिन के अलावा कभी नहीं सोता था, जब थकी हुई प्रकृति अंततः कुछ आराम मांगती थी। कई महीनों तक, रात-दर-रात, मैं या तो अपनी दयनीय चटाई पर करवटें बदलती रहती थी, या उठकर खुद को झुलाती रहती थी, और पश्चाताप और पीड़ा से कराहती रहती थी। मेरे जीवन का कोई और कृत्य मुझे दंड नहीं देता था—सिर्फ वही एक; मैंने दूसरों के बारे में सोचने की भी कोशिश की, लेकिन वे जितनी जल्दी मेरे दिमाग में आए उतनी ही जल्दी निकल गए, और मेरी बहन हमेशा मेरे सामने रहती थी।

आप सबसे बुरी बात जानते हैं, साहब—आप मेरे बारे में जो चाहें सोचें, मैं उसी का पात्र हूँ। मैं अपने इस कर्म को न तो स्वयं के लिए और न ही आपके लिए उचित ठहरा सकता हूँ; और मुझे जो एकमात्र सांत्वना मिलती है —कि यह भाग्य का खेल था, अटल नियति का—वह भी बहुत कमजोर है, जो मेरे अपने अपराध बोध के आगे फीकी पड़ जाती है। मुझे अपना अभिशाप सहना होगा, मुझे इसके बोझ तले मुरझाना होगा। मैं मृत्यु की प्रार्थना करता हूँ, और उतनी ही बार यह भी प्रार्थना करता हूँ कि मैं जीवित रहूँ, और मुझे यहीं पर मेरे कर्मों का दंड मिले, ताकि मेरी आत्मा जहन्नम में न जले। अब बेहतर होगा कि मैं अपने इतिहास को समाप्त कर दूँ, उस समय तक जब आपके जीवनदान को स्वीकार करके मैं संसार के लिए मृत हो गया।

मेरे पुराने साथी की मृत्यु हमारी कैद के चौथे वर्ष में हुई। मैं चाहता था कि वह मेरे पिता की हत्या की जो कहानी मुझे बताई थी, उसे नकार दे, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया; जब मैंने उससे ऐसा करने का आग्रह किया, तब वह मरणासन्न अवस्था में था, और उसने फिर अत्यंत गंभीरता से कहा कि उसने जो कुछ भी बताया था वह अक्षरशः सत्य था; और उसने फिर से मुझे मेरी माता के हत्यारे गणेश का हवाला दिया, ताकि वह इस बात की पुष्टि कर सके।

उनकी मृत्यु हो गई, और मैं एकांत में रह गया, घोर एकांत में, जो केवल मेरे जेलर के दैनिक आगमन से टूटता था। वह मेरे लिए भोजन लाता था और गलियारे में थोड़ी देर टहलने के लिए मेरे साथ रहता था। वर्षों के कष्टों के बाद, मुझे बस यही कृपा मिली थी, और अपने जकड़े हुए अंगों को फैलाना और अपने मुरझाए हुए चेहरे पर स्वर्ग की शुद्ध हवा का स्पर्श फिर से महसूस करना मेरे लिए सुकून देने वाला था।

सातवां वर्ष आधा बीत चुका था; जेल का दारोगा मर चुका था या उसे हटा दिया गया था; उसकी जगह दूसरे को नियुक्त किया गया, और मेरी हालत में कुछ सुधार हुआ। मुझे एकांत कोठरी से निकालकर उस कोठरी के पास वाली कोठरी में रखा गया जहाँ मुझे पहले रखा गया था; वह अधिक विशाल और हवादार थी, और उसके सामने लोग आते-जाते रहते थे। मैं उनकी गतिविधियों को रुचि से देखता था, और इससे मेरा मन अतीत के बारे में सोचने से कुछ हद तक हट जाता था।

मेरी कैद के बारहवें वर्ष में पुराने राजा का देहांत हो गया, और उनके उत्तराधिकारी, दिवंगत सम्राट, सिंहासन पर आसीन हुए। कई हृदय तेज़ी से धड़कने लगे और नई आशा से भर उठे—वह आशा जो उन अभागों के हृदयों में लगभग मर चुकी थी जो जेल की दीवारों के भीतर कैद थे—और उनमें मेरा हृदय भी शामिल था। हमने सुना था कि आजीवन कारावास की सजा पाए सभी लोगों को रिहा करना प्रथा थी; और आप कल्पना भी नहीं कर सकते, साहब, कि मैं उस समय की कितनी तीव्र चिंता से प्रतीक्षा कर रहा था जब हमारी रिहाई का आदेश जारी होगा, या जब मैं आशा करने की हिम्मत खो दूँगा।

अंततः वह आ ही गया; कई दिनों की लंबी प्रतीक्षा के बाद, दारोगा में आदेश पहुंचा और मुझे तुरंत सूचित किया गया। मुझे बाहर लाया गया, मेरे पैरों से जंजीरें हटा दी गईं और मैं मुक्त हो गया। मुझे पाँच रुपये दिए गए और मेरे फटे-पुराने कपड़ों के स्थान पर एक मोटा-मोटा सूट दिया गया। बारह से अधिक थका देने वाले वर्षों के बाद मैं उन कारागार की दीवारों से बाहर निकला और एक बार फिर दुनिया में अपनी किस्मत आजमाने के लिए निकल पड़ा।

दारोगा ने मुझे पैसे देते हुए कहा, 'सावधान रहें, मीर साहब, अपने पुराने पेशे को न अपनाएं; आप बूढ़े हो चुके हैं, आपका खून अब पहले जैसा नहीं बहता, और जो कुछ भी आप थे उसे भूल जाएं। जाइए! कोई शांतिपूर्ण काम अपनाइए, शायद किस्मत आप पर मेहरबान हो जाए।'

मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और वहां से चला गया। मैं सूर्यास्त तक शहर में भटकता रहा, और एक भुट्टेरा की दुकान पर भूख मिटाने के बाद, मैंने उससे रात के लिए आश्रय मांगा। उसने तुरंत मुझे आश्रय दे दिया, और मैं लेट गया और वर्षों बाद पहली बार इतनी शांति और ताजगी भरी नींद का आनंद लिया। मैं भोर होते ही उठा और निकल पड़ा—मुझे परवाह नहीं थी कि मैं कहाँ जाऊँ—विशाल दुनिया के सभी स्थान मुझे एक जैसे लग रहे थे। मैं किसी को नहीं जानता था, उस बड़े शहर में मुझे कोई ऐसा नहीं मिला जो मुझे जानता हो, और मेरी स्थिति की निराशा मुझ पर हावी हो रही थी। क्या करूँ, कहाँ जाऊँ, मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था; लेकिन बुंदेलखंड पहुँचने पर अपने कुछ पुराने साथियों से मिलने की एक धुंधली सी उम्मीद ने मुझे वहाँ जाने के लिए प्रेरित किया।

मैंने जल्द ही अपने पहनावे में बदलाव किया। कलुंदुर के एक फ़कीर से मैंने थोड़ी सी रकम देकर एक ऊँची फेल्ट की टोपी और एक चेकदार वस्त्र खरीदा; और इस तरह सुसज्जित होकर, हाथ में लाठी लेकर, मैं उत्तरी द्वार से शहर से बाहर निकल गया और आगे बढ़ गया।

जैसा मैंने सोचा था, वैसा ही हुआ; मुझे कभी भी भोजन की कमी नहीं हुई, चाहे वह कितना भी साधारण भोजन क्यों न हो; और जब मैं झालोन पहुँचा, तो मेरे पास लगभग उतना ही पैसा था जितना लखनऊ छोड़ते समय था। मैं सीधे मूला के घर गया, क्योंकि मेरे विचार हमेशा मेरी बेटी के साथ थे, और मेरा मन उसके भाग्य को जानने के लिए तड़प रहा था। अफसोस! मुझे निराशा हाथ लगी। उनके घर में कोई और रहता था, जिसे मैं नहीं जानता था, और वह मुझे बस इतना ही बता सका कि बूढ़ा आदमी कुछ साल पहले दिल्ली चला गया था, और उसके बाद से उसने उसके बारे में कोई खबर नहीं सुनी थी। मैंने उसकी बेटियों के बारे में पूछा, लेकिन

उस आदमी को उनके बारे में कुछ भी नहीं पता था, सिवाय इसके कि उसकी गोद ली हुई एक बेटी की शादी झालोन में एक ऐसे व्यक्ति से हुई थी जो गाँव में रहता था, लेकिन उसका नाम या पता उसे नहीं पता था।
मैं दरवाजे से मुँह मोड़कर निकल गया—मैं अपने दरवाजे से आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था, और कस्बे के एक सुनसान हिस्से में चला गया जहाँ एक छोटा सा बगीचा था जिसमें अक्सर एक फकीर रहता था। मैं उसे बहुत पहले से जानता था, उसने मेरी रोटी खाई थी और मेरा दान ग्रहण किया था, और अब मैं उसके बराबर था। मैंने सोचा, इस वेश में वह मुझे पहचान नहीं पाएगा, और बदले हुए रूप में मुझे कोई नहीं जानता; फिर भी मैं उसे ढूंढूंगा, और अगर वह पहले जैसा ही रहा तो शायद मुझे अपने पुराने दोस्तों के बारे में कुछ खबर मिल जाए।
मुझे वह फकीर मिल गया जिसकी मुझे तलाश थी; मैंने उसे बूढ़ा छोड़ दिया था, अब वह बहुत बूढ़ा और कमजोर हो चुका था; उसका बगीचा, जिसे वह हमेशा बड़ी सावधानी से रखता था, खरपतवारों से भरा और उपेक्षित था, और उसके पास इतनी ताकत भी नहीं बची थी कि वह शहर में रेंगकर थोड़ा-बहुत आटा या अनाज ला सके जिससे उसकी दिनभर की ज़रूरतें पूरी हो सकें। उसे इस हालत में देखकर मुझे बहुत दुख हुआ, और मैंने खुद को झालोन में रहने की इच्छा रखने वाला एक घुमंतू कलुंदुर बताते हुए उससे विनती की कि मुझे उसके साथ रहने और जो कुछ भी मिले उसे बाँटने की अनुमति दी जाए। मेरा प्रस्ताव तुरंत स्वीकार कर लिया गया, और मैं वहीं बस गया, इस उम्मीद में कि ठगों का कोई घुमंतू दल झालोन से गुजरे, जिन्हें मैं अपने बारे में बता सकूँ।
धीरे-धीरे मैंने उस बूढ़े व्यक्ति के सामने अपनी पहचान उजागर कर दी; मैंने इशारों-इशारों में उससे पुराने समय और उन लोगों के बारे में बात करना शुरू किया, जिनसे वह जान गया होगा कि मैं एक ठग था। उसने उनके बारे में, और विशेष रूप से मेरे बारे में, बात करने में कोई संकोच नहीं किया, जिसके भाग्य पर वह इतने गहरे शोक में डूबा हुआ था कि मैं खुद को संभाल नहीं पाया; और उसके आश्चर्य से भरे कानों में मैंने राजा द्वारा रिहा किए जाने से लेकर उसके साथ रहने तक के अपने सारे कारनामों को सुनाया। और बदले में मुझे उससे बहुत कुछ सुनना पड़ा, बहुत कुछ जिसने मुझे दुखी और आहत किया; मेरे कई पुराने साथी मर चुके थे, अन्य को पकड़कर मार डाला गया था, और बुंदेलखुंद के पुराने नेताओं में से शायद ही कोई देश में था या अपने पेशे का पालन कर रहा था: नए नेता उभर आए थे, और उसने फेरिंगिया नाम के एक युवक के बारे में बड़े उत्साह से बात की, जिसे मैंने आखिरी बार देखा था तब वह एक लड़का ही था।
इस तरह चार महीने बीत गए। बूढ़े फकीर और अपना भरण-पोषण करने के लिए मुझे प्रतिदिन शहर में घूमना पड़ता था, और मैं भीख मांगता और लेता था, जो बहुत कम मात्रा में दी जाती थी, उसी जगह पर जहाँ मेरा हाथ हमेशा गरीबों के लिए खुला रहता था। साहब, मेरी किस्मत में कितना बड़ा बदलाव आया! फिर भी मैंने इसे धैर्य से सहा, भले ही दृढ़ता से नहीं, बेहतर दिनों और नए रोमांच की उम्मीद में।
नए कारनामे, अमीर अली! मैंने कहा; क्या तुम्हें मिली सजाओं ने तुम्हारा दिल ठगी से नहीं मोड़ दिया था?

नहीं, साहब! ठग ने जोश से कहा; वे ऐसा क्यों करेंगे? क्या अत्याचार और दुख ने मेरे हृदय को कठोर नहीं कर दिया था? उन्होंने मेरे भीतर समस्त मानव जाति के विरुद्ध प्रतिशोध की भावना जगा दी थी; मैं अपने इस घिनौने वेश को उतार फेंककर फिर से राह पर निकलने के लिए बेताब था—चाहे नेता के रूप में हो या अधीनस्थ के रूप में, बस एक बार फिर ठग बनना चाहता था। मैं बूढ़ा भी नहीं था; हाँ, मेरी दाढ़ी सफ़ेद और भूरी हो गई थी, और चिंता ने मेरे चेहरे पर झुर्रियाँ डाल दी थीं; लेकिन मैं अब भी बलवान और शक्तिशाली था, और मेरे हाथ अपनी कुशलता नहीं भूले थे। मैंने कहा था कि चार महीने बीत चुके थे, और कोई भी ठग झालोन के पास नहीं आया, इसलिए मैं अपनी दैनिक भिक्षा से बचाए हुए कुछ रुपयों के साथ तेरी के लिए निकल पड़ा, जहाँ मुझे उस ब्राह्मण ज्योतिषी से मिलने की आशा थी जिसने मोती व्यापारी के मामले में मेरी बहुत मदद की थी। झालोन पहुंचने पर लूट के माल में से उसका हिस्सा उसे तुरंत भेज दिया गया था, और हालांकि उसके बाद मैंने उससे कभी कोई खबर नहीं सुनी, फिर भी मुझे पूरा यकीन था कि पत्र गुम नहीं हुआ होगा।

कई दिनों बाद मैं टीरी पहुँचा। मुझे पता था कि ठगों के गिरोह सक्रिय हैं, क्योंकि मैंने कई गाँवों और सड़कों पर उनके चूल्हे और निशान देखे थे; लेकिन मेरी निराशा यह थी कि मुझे उनमें से कोई नहीं मिला। पहुँचते ही मैं तुरंत मंदिर गया जहाँ मुझे ब्राह्मण मिला; और मेरी बदकिस्मती के बावजूद, मेरा बहुत ही सौहार्दपूर्ण, बल्कि गर्मजोशी से स्वागत किया गया। ब्राह्मण का ठगों से अभी भी संपर्क बना हुआ था, और उससे मुझे यह जानकर खुशी हुई कि रामदीन नाम के एक जमादार के नेतृत्व में लगभग बीस लोगों का एक गिरोह एक दिन पहले ही कस्बे से गुजरा था और नर्मदा की ओर जा रहा था।

'मीर साहब, आप आसानी से उन्हें पीछे छोड़ सकते हैं,' उन्होंने कहा; 'और अगर नेता के रूप में आपकी पुरानी ख्याति आपको स्वागत दिलाने में नाकाम रहती है, तो मेरी कुछ पंक्तियाँ आपके काम आ सकती हैं।' और उन्होंने जमादार को एक पत्र लिखकर बताया कि मैं कौन हूँ और पुराने समय से उनसे कैसे जुड़ा हुआ हूँ। पत्र मिलते ही मैंने ज़रा भी देर नहीं की और अपने भावी साथियों की तलाश में निकल पड़ा। दूसरे दिन मैं उनसे मिला और मेरा ज़बरदस्त स्वागत हुआ; मुझे देखकर सब हैरान रह गए, क्योंकि सब मुझे मरा हुआ समझ रहे थे। उन्होंने मुझे अच्छे वस्त्र पहनाए, अपने दल में शामिल किया और भाई की तरह बर्ताव किया। सचमुच उनकी दयालुता ने मेरे लगभग मुरझाए हुए दिल को ताज़गी दी। रामदीन ने ज़ोर दिया कि मुझे दल में उनके बराबर का दर्जा दिया जाए; और ज़रूरी रस्मों के बाद मैं अपने कमरे में लौट आया और कुछ ही दिनों में तुपुनी का गोर फिर से खाया।

साहब, अब तक आप यात्रियों के साथ मेरे कारनामों से ऊब चुके होंगे, और रामदीन के दल के साथ रहते हुए मुझे कोई भी ऐसा यात्री नहीं मिला जिसके बारे में बताने लायक हो। हमने कंपनी के इलाकों से बचते हुए सिंधिया के इलाकों में ही यात्रा की; बूरहनपुर तक गए और लौटते समय नर्मदा नदी के किनारे स्थित ऊंकर मंदुत्ती के दरगाह पर दर्शन किए। इस दरगाह से हमें सौभाग्य से तीर्थयात्रियों का एक दल मिला और जाम घाट के तल पर हमें एक बड़ा खजाना मिला, जहाँ हम उन्हें ऊंजेन वापस ले गए। इसमें से मेरा हिस्सा चार सौ रुपये से अधिक था: इस प्रकार आप फिर से मुझे स्वतंत्र और भाग्य को मेहरबान देख रहे हैं। लेकिन रामदीन

मुझसे और मेरी श्रेष्ठ कुशलता और बुद्धिमत्ता से ईर्ष्या करने लगा। हमारे बीच कई झगड़े हुए और अंत में मैंने उसे छोड़ दिया और अपने पास जो कुछ था, उससे दुखुन जाने और निज़ाम के देश में अपना भाग्य आजमाने का निश्चय किया, जहाँ मुझे पता था कि ठगी अभी भी बेरोकटोक फल-फूल रही है।

लेकिन ऐसा होना तय नहीं था। रामदीन से निकलने के बाद मेरा रास्ता सागर से होकर गुजरता था, और वहाँ मेरी मुलाकात अपने पुराने परिचित गणेश से हुई, जो एक छोटे से दल का मुखिया था और देखने में दयनीय हालत में था। उससे मिलकर मुझे जो घृणा हुई, उसे मैं मुश्किल से छिपा सका; मेरी अपनी विपत्तियाँ, मेरा अतीत और मेरे साथी की जेल की कहानी मेरी यादों में ताज़ा थी; फिर भी मैंने अपनी नापसंदगी को छुपा लिया, हालाँकि मेरे दिल में बदले की भावना अभी भी सुलग रही थी, और मैं उसे पूरा करने का कोई भी मौका नहीं छोड़ता। उसके दल में एक ठग था जिसे मैं पहले जानता था; वह गणेश से तंग आ चुका था, जिसका स्वभाव उम्र के साथ नहीं सुधरा था, और उसने मुझे सलाह दी कि मैं कुछ वफादार लोगों का नेतृत्व करूँ, जो उसके अनुसार एक बड़े दल का आधार बनेंगे; क्योंकि पुराने ठगों को मेरा नाम अभी भी याद था, और जब उन्हें पता चलेगा कि मैं दूसरों से संबंध रखे बिना अपना काम शुरू करने के लिए दृढ़ संकल्पित हूँ, तो वे खुशी-खुशी मेरे पास आ जाएँगे। और वह सही था; कुछ ही महीनों में मैं चालीस आदमियों के दल का नेतृत्व कर रहा था; और हम सौभाग्यशाली थे। एक नई दिशा लेते हुए हम रेवा राजा के क्षेत्रों से गुज़रे और अपने घर लौट आए, जिसे हमने हिंदिया से कुछ ही दूरी पर स्थित एक सुनसान और निर्जन इलाके में बसाया था, जहाँ हम छल-कपट और सागर से ठगों के विरुद्ध चल रहे अभियानों से सुरक्षित थे।

इस तरह दो साल बीत गए और मैं संतुष्ट था, क्योंकि मैं जैसा चाहता था वैसा ही शक्तिशाली और सक्रिय रूप से कार्यरत था। दो मौसम हम बाहर गए और लूट का माल लादकर लौटे, और अमीर अली का नाम फिर से जाना-माना और खौफनाक हो गया। मैंने सोचा, एक और मौसम और यह मेरा आखिरी होगा; मुझे अपनी बेटी का कुछ सुराग मिल गया था, और मैंने सोचा (व्यर्थ विचार!) कि अगर मैं कुछ हज़ार रुपये इकट्ठा कर लूँ, तो मैं हिम्मत करके उससे मिलने जा सकता हूँ, उसके पास रह सकता हूँ और ठग्गी को हमेशा के लिए छोड़ सकता हूँ। मैं इतना मोहित क्यों था? इसके अलावा और क्या कारण हो सकता था कि अटल भाग्य ने मुझे ऐसा करने से रोक दिया था? आलिया द्वारा मेरे लिए निर्धारित भाग्य को मुझे पूरा करना था, और मैं अंधाधुंध उसके खिलाफ संघर्ष कर रहा था। मनुष्य के व्यर्थ उद्देश्य उसे अपनी कल्पना के किसी भ्रम का पीछा करने के लिए प्रेरित करते हैं, जो कभी पूरा नहीं होता, बल्कि अक्सर उसे सुगम रास्तों पर ले जाता है और आशा से प्रेरित करता है, जब तक कि वह अचानक विनाश की ओर नहीं बढ़ जाता।

मैंने कलकत्ता की ओर पहले से कहीं अधिक बड़े पैमाने पर एक अभियान की योजना बनाई थी, और हमने भवानी की कसम खाई थी कि हम बिंदाचुल और कलकत्ता के उनके तीर्थस्थलों पर अपनी श्रद्धा अर्पित करेंगे; शगुन अनुकूल थे, और हम हर्षोल्लास और उत्साह से अपने घर से निकल पड़े। और तब मुझे क्या परवाह थी, जबकि मैं जानता था कि अंग्रेजों ने मुझ पर पाँच सौ रुपये का इनाम रखा था? यह इस बात का प्रमाण था कि मुझसे डरा जाता था और मेरा भय माना जाता था, और मैं इस बात से प्रसन्न था कि अमीर अली, जो कुछ समय

के लिए उत्पीड़ित और तिरस्कृत था, एक बार फिर गुमनामी से बाहर आ गया था, और मैंने अपने ऊपर मंडरा रहे खतरे का सामना किया। इस मामले में मैं मूर्ख था, फिर भी यह मेरा भाग्य था जिसने मुझे प्रेरित किया: और अगर मैंने कोई सावधानी बरती भी होती, तो उसका क्या लाभ होता? मैं जानता था कि जहाँ मैं था वहाँ मुझ तक विश्वासघात नहीं पहुँच सकता था, और मैंने अपने प्रतीत होने वाले नए सौभाग्य और उन शगुनों पर भरोसा किया जिनके साथ हमारे अभियान की शुरुआत हुई थी, कि मैं कंपनी के क्षेत्रों में गिरफ्तारी से बच जाऊँगा, जहाँ ठगों के खिलाफ अभियान बड़ी सफलता के साथ चलाए जा रहे थे।
सागर ठीक उसी रास्ते में पड़ता था जिस पर हम जाने का प्रस्ताव कर रहे थे, और यहीं सबसे बड़ा खतरा मंडरा रहा था। शायद मैं इससे बच सकता था, लेकिन मैंने कुछ दिनों तक अपनी गतिविधियों की तेज़ी और गोपनीयता पर भरोसा किया, जब तक कि हम इसे पार न कर लें; और चूंकि मेरे दल ने शुभ संकेतों द्वारा मार्ग तय और स्वीकृत होने के बाद उसे बदलने से सर्वसम्मति से इनकार कर दिया था, इसलिए मैंने हर हाल में उनका नेतृत्व करने का जिम्मा उठाया। इसलिए हमने रात में यात्रा की और सभी बड़े गांवों से बचते हुए, या तो सुनसान जगहों पर या फिर छोटे-छोटे कस्बों के पास विश्राम किया। हमने बुनीज की तलाश भी नहीं की, - खतरा इतना करीब था कि एक पल भी गंवाना उचित नहीं था; और यद्यपि हमारे हाथों एक-दो लोग मारे गए, फिर भी यह हमें तुपुनी का गोर खाने और अपनी संरक्षिका को प्रसन्न करने के लिए आवश्यक अनुष्ठान करने और परिणामस्वरूप हमारी सफलता के लिए ही संभव हो पाया।
निष्कर्ष
पिस्तौल। किसी पर भरोसा मत करो;
क्योंकि शपथें तिनकों के समान हैं, मनुष्यों के विश्वास पतले केक के समान हैं।
और होल्ड-फास्ट ही इकलौता कुत्ता है, मेरी बत्तख:
इसलिए कैवेटो को अपना सलाहकार बनाएं!
हेनरी पंचम, द्वितीय अंक, तीसरा दृश्य - सागर, जैसा कि मैंने कहा, सीधे हमारे मार्ग में था, और एक कठिन यात्रा के बाद शाम को हम उसके निकट एक गाँव में पहुँचे। हम पहले से ही थके हुए थे, लेकिन अब गाँव इतना नज़दीक था कि हमने आगे बढ़ने में कोई संकोच नहीं किया, और अंधेरा होने के कुछ ही समय बाद हम उस प्रसिद्ध स्थान पर पहुँच गए। गाँव के जितना संभव हो सके सुनसान हिस्से में एक खाली झोपड़ी चुनकर, हमने जल्दी से खाना पकाया और लेट गए, यह निश्चय करते हुए कि भोर से पहले उठकर अपनी यात्रा फिर से शुरू करेंगे। हमारे एक साथी को आराम करने से पहले पहरा देने के लिए नियुक्त किया गया था, और हमने उस पर भरोसा किया कि यदि कोई संदिग्ध व्यक्ति दिखाई दे तो वह हमें सूचित करेगा।
रात बीत गई, मैं उठा, अपने साथियों को जगाया, और भोर होने से बहुत पहले ही हम शहर के द्वार से बाहर निकल चुके थे। मैंने अपने मित्र से कहा, 'देखो, हमारा वह भयानक खतरा टल गया है; हम फिर से अपने रास्ते पर हैं, और दोपहर से पहले हम इस जगह को कम से कम दस किलोमीटर पीछे छोड़ देंगे; उसके आगे डरने की कोई बात नहीं है, और हम निश्चिंत होकर यात्रा करेंगे।' अफसोस! मैंने अपनी आशावादी आशा के

अनुसार ही बोल दिया था; लेकिन भाग्य में हमारी सोच नहीं थी। एक बार फिर विश्वासघात हुआ था, और जब मैंने सोचा कि मेरे साथ एक ऐसा दल है जिस पर कोई संदेह नहीं किया जा सकता, तो जैसा कि मैंने बाद में सुना, दो गद्दारों ने मुझे पकड़ने की गहरी योजना बना ली थी। हालाँकि, इसके बारे में मैं तुम्हें बाद में बताऊंगा; तुम अब मेरे साथ रास्ते में हो, और तुम हमें पूरी गति से आगे बढ़ते हुए देख रहे हो।

हम पहले ही कस्बे को नज़र से ओझल कर चुके थे, और हमारे सामने एक चौड़ी, अच्छी तरह से बनी हुई सड़क थी, जिसे मैं अच्छी तरह से याद रखता था; फिर भी मुझे इतने सार्वजनिक रास्ते से डर लग रहा था, और मैंने ठान लिया कि जैसे ही मुझे कोई ऐसी गली दिखेगी जो हमारी दिशा में मुड़ती हो, मैं उसमें मुड़ जाऊँगा। हम शायद एक-दो कदम ही आगे बढ़े होंगे, और अब सुबह होने लगी थी; थोड़ी ही दूरी पर हमारे सामने एक नाला था, और चूंकि हममें से किसी ने भी कस्बे से निकलने से पहले स्नान नहीं किया था, इसलिए मैंने प्रस्ताव रखा कि हम वहीं स्नान कर लें, ताकि आगे की यात्रा की थकान सहन कर सकें; मेरा प्रस्ताव मान लिया गया, और जब हम बहते हुए नाले के पास पहुँचे, तो हम सबने अपनी कमर खोली और पानी के किनारे बैठ गए; हम कुछ ही मिनटों तक ऐसे बैठे रहे होंगे कि अचानक कई घुड़सवार और पैदल सैनिकों ने हम पर हमला कर दिया, जो शायद उस रास्ते पर हमारा इंतज़ार कर रहे थे जिस पर हमें जाना था।

मैंने अपने हथियार पानी से कुछ दूरी पर छोड़ दिए थे, और मेरी पहली इच्छा उन्हें वापस लेने की थी; लेकिन इसमें मैं नाकाम रहा। मेरे ही दो आदमियों ने मुझ पर झपट्टा मारा और मुझे पकड़ लिया, और जब मैंने खुद को छुड़ाने की व्यर्थ कोशिश की तो कुछ पैदल सैनिकों ने मुझे पकड़ लिया। मुझे नीचे गिराकर बांध दिया गया। हमला एकदम अचानक हुआ था। मेरे कुछ साथियों ने अपनी तलवारें निकाल लीं, और उनके और हम पर हमला करने वाले दल के बीच कुछ वार-पलटवार हुए, जिसमें मेरे कुछ गुंडे घायल हो गए; लेकिन हम सब पर काबू पा लिया गया, और यह सब इतनी जल्दी खत्म हो गया कि इसे बयान करने में जितना समय लगेगा उतना कम समय लगेगा; मेरे कुछ ही आदमी बच निकले।

मैंने उन लोगों को जमकर फटकारा जिन्होंने मुझे मेरे हथियार लेने से रोका था। अगर मेरे पास हथियार होते तो अमीर अली कभी जिंदा नहीं पकड़ा जाता; साहब, मैं अपनी जान की कोई कीमत नहीं देता, और पकड़े जाने से पहले ही मैं अपनी तलवार अपने दिल में गाड़ देता, और उस जीवन का अंत कर देता जिसमें मुझे कोई आकर्षण नहीं था, और जिसे मैं केवल इसलिए लंबा खींचना चाहता था ताकि मानवता से बदला ले सकूँ, जो मेरे सभी दुखों का स्रोत है।

जब मैंने उन्हें बुरा-भला कहा, तो उन्होंने मेरा उपहास और ताना मारा। एक ने कहा, 'अब आपकी कलकत्ता यात्रा कहाँ जा रही है, ऐ मीर साहब?' 'देखिए, आपकी लंबी यात्रा बच गई है और आप सागर लौट रहे हैं, एक सुंदर घर में रहने और उसमें मौजूद कई पुराने मित्रों के साथ समय बिताने के लिए।' दूसरे ने कहा, 'जीमदार का समय बीत चुका है और जब उसे शेर की मांद के पास जाना ही था, तब उसकी बुद्धि ने उसका साथ छोड़ दिया, मानो वह पहचान में न आना चाहता हो! ऐ जमादार, तुम सागर क्यों आए थे? क्या तुम अपनी गिरफ्तारी

के बदले दिए गए इनाम और क्षमादान के वादे को भूल गए थे? हमने सचमुच अच्छा काम किया है,' उसने दूसरे से कहा, 'और साहिब-लोग हमसे प्रसन्न होंगे।'
लेकिन उनकी व्यर्थ की बातों को दल के नेता ने चुप करा दिया, जिसने उन्हें सावधान रहने और घमंड न करने की चेतावनी दी, कहीं ऐसा न हो कि उनकी उम्मीदें पूरी न हों; और वे पीछे हट गए, क्योंकि वे सभी की तिरस्कार और घृणा भरी निगाहों को सहन नहीं कर पा रहे थे; मैं कहता हूँ, सभी की, क्योंकि जिन सैनिकों ने हमें पकड़ा था, उन्होंने भी अपनी सफलता के साधनों को विश्वासघाती और उस नमक के प्रति बेवफा बताकर कोसा था जिसे उन्होंने खाया था।
और इस प्रकार, आत्मा की घोर पीड़ा में, और सागर जाने की अपनी नासमझी पर व्यर्थ ही पछताते हुए, वे मुझे बांधकर और पहरे में उसी रास्ते से ले गए, जिस रास्ते से मैं अभी-अभी आया था, उस समय मैं सुबह की उस ठंडी हवा की तरह आज़ाद था जो मुझ पर बह रही थी। तीसरी बार मैं कैदी था, और अब मुझे कोई उम्मीद नहीं दिख रही थी: पिछली बार मैंने कुछ उम्मीद रखी थी, लेकिन अब वह सब खत्म हो गई थी। तब मैं जवान था, और एक जवान दिल हमेशा उत्साहित और खुद को दिलासा देने वाला होता है; लेकिन मेरे मन की आग बहुत पहले बुझ चुकी थी, और यह केवल निरंतर रोमांच और बेरोकटोक आज़ादी से भरे जीवन के उफान में ही फिर से जल उठी, जब मैं अपने पुराने रूप में वापस आया। मौत भी अब मेरे सामने थी; क्योंकि मैं यूरोपियों के कठोर कानूनों को जानता था, और यह भी कि किसी भी दर्जे के ठगों पर कोई दया नहीं दिखाई जाती थी, तो मुझ पर तो बिल्कुल भी नहीं, जिसके लिए इनाम की घोषणा की गई थी! यह एक घिनौना विचार था: मुझे फांसी दी जाएगी, कुत्ते की तरह फांसी दी जाएगी, मैं जिसे युद्ध के मैदान में मरना चाहिए था! वहाँ मृत्यु सुखद होती, और उसके बाद शाश्वत स्वर्ग मिलता। हाय! अब तो यह आशा भी मुझसे दूर हो गई थी, और मुझे महसूस हो रहा था कि मेरे मन पर मंडरा रहा अपराध का बोझ मुझे नरक में धकेल देगा।
ऐसे क्षण में हृदय में उमड़ने वाले असंख्य विचारों का वर्णन कौन कर सकता है? एक-एक करके वे अंदर आते हैं, प्रत्येक पिछले विचार को विस्थापित करने का प्रयास करता है—कोई भी क्षण भर के लिए नहीं ठहरता—जब तक कि मस्तिष्क भ्रम से चकरा न जाए। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। मैं सैनिकों से घिरा हुआ यंत्रवत चल रहा था, अपने भटकते हुए मन को आने वाले दृश्य, मृत्यु के दृश्य में स्थिर रखने का व्यर्थ प्रयास कर रहा था, क्योंकि मुझे पूरा विश्वास था कि मुझे तुरंत फांसी दे दी जाएगी: मुझ जैसे अपराध में डूबे व्यक्ति को इस दिखावटी मुकदमे का सामना क्यों कराया जाए?
शहर पहुँचने के कुछ ही समय बाद, मुझे कड़ी सुरक्षा में उस अधिकारी के पास ले जाया गया जिसे अंग्रेज़ सरकार ने ठगों को पकड़ने के लिए नियुक्त किया था। वह लंबा-चौड़ा और प्रभावशाली व्यक्ति था, और उसकी कठोर दृष्टि देखकर मुझे लगा कि मेरा समय आ गया है, और रात होने से पहले ही मेरा अंत हो जाएगा। हालाँकि, मैंने सबसे बुरे के लिए खुद को तैयार कर लिया था; मुझे उसके कठोर चेहरे पर कोई दया नहीं दिखी, और मैं स्वीकार करता हूँ कि जब उसने मुझसे बात की तो मैं काँप उठा।

'तो, तुम हो अमीर अली, जमादार,' उसने कहा, 'और आखिरकार तुम मेरी गिरफ्त में हो; क्या तुम्हें अपने ऊपर लगे आरोपों के बारे में कुछ पता है, और तुम यहाँ क्यों हो? इन्हें पढ़ो,' उसने एक सेवक मूनशी से कहा, 'तैयार की गई सूची पढ़ो; वह दुष्ट तो मानो इन आरोपों को नकार रहा हो।'

उस आदमी ने फ़ारसी में लिखे कागज़ों का एक बंडल खोला और उस पर लिखे अपराधों और हत्याओं की सूची पढ़ी, जिनमें से हर एक बात मुझे सच लगती थी; यह मेरे बीते जीवन का एक सटीक विवरण था, जिसमें कुछ ही बातें छूटी थीं। आलिया, मेरी रक्षा करो! मैंने सोचा, कोई उम्मीद नहीं है; फिर भी मैंने हिम्मत दिखाते हुए इस मामले को संभाला।

'सबूत, साहिब बहादुर,' मैंने कहा; 'आप अंग्रेज अपने न्याय के लिए प्रशंसित हैं, और भले ही उस सूची में ऐसे अपराध हों जिनके बारे में मैंने पहले कभी नहीं सुना हो, आप मुझे निष्पक्ष सुनवाई और वह न्याय देने से इनकार नहीं करेंगे जो आप हजारों लोगों को देते हैं।'

'बिल्कुल नहीं; तुम्हारे अपराध चाहे जो भी हों, इस बात से मत डरो कि तुम्हारे मामले की जांच की जाएगी। गवाहों को बुलाओ,' उसने एक सेवक से कहा; 'उन्हें एक-एक करके लाओ, और जमादार सुनेगा कि उन्होंने उसके बारे में मुझे क्या बताया है।'

सबसे पहले जो व्यक्ति अंदर आया, वह मेरे पुराने दिनों का एक साथी था, मेरे दुर्भाग्य शुरू होने से पहले का। वह मेरे साथ उस अभियान में था, ठीक उससे पहले जब मेरे पिता को झालोन के राजा ने मौत के घाट उतार दिया था, जिसका मैंने आपको विस्तार से वर्णन किया है। उसने मूनशी और उसके बच्चे की हत्या से लेकर मोती व्यापारी के विनाश तक की पूरी घटना का ब्योरा दिया। उसकी कहानी सुनाने में काफी समय लगा; और सारी बातें मेरी याद में इतनी ताज़ा थीं, और उसने अपने विवरण में इतनी सटीकता और सच्चाई बताई थी, कि मैं एक शब्द का भी उत्तर नहीं दे सका, और न ही उसके बयान को गलत साबित करने के लिए कोई सवाल पूछ सका। अंत में उसने अधिकारी को झालोन के राजा के पास पूरी बात की पुष्टि के लिए भेजा, और मुझसे पूछा कि क्या उसने जो कुछ कहा है, उसमें कुछ झूठ है। उसने कहा, 'मीर साहब, आप न केवल यह जानते हैं कि यह सब सच है, बल्कि मेरे अलावा और भी लोग हैं जो इन तथ्यों की गवाही दे सकते हैं; और यह भी जान लें कि कई कब्रें खोली गई हैं, और आपके पीड़ितों के अवशेष निकाले गए हैं।'

'मेरी बात भी बताओ,' मैंने जवाब दिया, आखिरकार मैं पूरी तरह से बेखबर हो गया था और 'तुम्हारे शिकार' शब्दों पर उसके द्वारा दिए गए जोर से चिढ़ गया था। 'उनमें तुम्हारा भी उतना ही हाथ था जितना मेरा; इसके अलावा, क्या तुमने उस दुष्ट गणेश की मदद नहीं की थी जब मैं मूनशी के बच्चे को बचाना चाहता था?'

'उसने अपना जुर्म कबूल कर लिया है!' कई आवाजों ने एक साथ कहा।

'चुप रहो!' अधिकारी ने कहा, 'कोई बोलने की हिम्मत न करे। अमीर अली, क्या तुम्हें पता है तुमने क्या कहा है? क्या तुम्हें इस बात का एहसास है कि तुमने खुद कबूल कर लिया है कि तुम एक गुंडे हो?'

मैंने दृढ़ता से कहा, 'अब अपने शब्दों को याद करने का प्रयास करना व्यर्थ है; इनका भरपूर लाभ उठाओ, क्योंकि इसके बाद तुम मुझसे कुछ भी नहीं निकलवा पाओगे; नहीं, चाहे तुम मुझे कितनी भी भयानक यातनाएँ क्यों न दो।'

हालांकि, पूछताछ जारी रही। कुछ अन्य लोगों को भी पेश किया गया जो मुझे जानते थे या ठगी में मेरे साथ जुड़े हुए थे, और अंत में उन लोगों को भी जिन्होंने मुझे धोखा देकर सरकार से इनाम प्राप्त किया था। वे पिछले दो वर्षों से मेरे साथ थे, और उन्होंने बताया कि मैंने क्या किया था और मारे गए लोगों के शव कहाँ पड़े थे। पूछताछ पूरी होने और सभी बयान दर्ज होने के बाद, मुझे जेल भेज दिया गया; और मेरी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, मुझे न केवल बेड़ियों में जकड़ा गया, बल्कि एक कोठरी में अकेले ही बंद कर दिया गया। कई दिन बीत जाने के बाद, जब मुझे बुलाने के लिए कोई सूचना नहीं भेजी गई, और जब मैंने यह निष्कर्ष निकाल लिया कि मेरा भाग्य तय हो चुका है, तो वह मूनशी, जिसे मैंने दरबार में देखा था, नुजीब के एक जमादार और दो गवाहों के साथ मेरे पास आया।

पहले व्यक्ति ने कहा, 'अमीर अली, हमें साहिब बहादुर ने आपके भाग्य के बारे में बताने के लिए भेजा है।'

मैंने कहा, 'मैं समझ गया था—मुझे भी बाकियों के साथ ही भुगतना पड़ेगा। खैर! मुझसे पहले भी कई अच्छे ठग इसी तरह मर चुके हैं, और तुम देखोगे कि अमीर अली को मौत से डर नहीं लगता।'

'तुमने बिल्कुल सही अनुमान लगाया है,' मूनशी ने कहा, 'तुम्हारे बचने की कोई उम्मीद नहीं है: तुम्हारा अंतिम मुकदमा एक-दो दिन में शुरू हो जाएगा, और तुम्हारे खिलाफ इतने सारे सबूत हैं, और झालोन के राजा के बयान सभी गवाहों के बयानों से पूरी तरह मेल खाते हैं, कि तुम्हारे लिए मौत से बचना नामुमकिन है: या, अगर तुम बच भी गए, तो काला पानी से तुम्हें कोई नहीं बचा सकता।'

'मृत्यु!' मैं चिल्लाया, 'तुरंत मृत्यु! आह, मूनशी! मेरे न्यायाधीशों पर आपका प्रभाव है, आप मुझे उस दूर समुद्र के पार भेजे जाने से रोक सकती हैं, जहाँ से मैं कभी अपने देश को न देख पाऊँ और अपने शेष दिन एक परदेस में बेड़ियों में जकड़े काम करते हुए बिताऊँ। ये हाथ कभी श्रम करने के आदी नहीं रहे; मैं इसे कैसे सहन करूँगा? काला पानी की तुलना में मृत्यु वास्तव में सुखद है।'

'लेकिन ऐसा क्यों होना चाहिए, मीर साहब?' जमादार ने पूछा; 'आपका जीवन या मृत्यु आपके अपने हाथों में है: ये लोग आपको बताएंगे कि उनके स्वामी उनके साथ कैसा व्यवहार करते हैं, और यदि आप बुद्धिमान हैं तो आप भी उन्हीं की तरह बन सकते हैं।'

'कभी नहीं!' मैं चिल्लाया; 'अमीर अली के बारे में कभी यह नहीं कहा जाएगा कि उसने किसी साथी के साथ विश्वासघात किया।'

'सुनो, कुंबुख्त!' मूनशी ने कहा; 'हम यहाँ उस व्यक्ति से विनती करने नहीं आए हैं जो हज़ार बार मरने का हकदार है, जिसका नाम पूरे देश में दहशत फैलाता है; तुम हमारे वश में हो, और तुम्हारा भाग्य बदला नहीं जा सकता: एक विकल्प दिया जा रहा है, जिसे तुम चाहो स्वीकार करो या न करो; न कोई बल प्रयोग किया जाएगा, न ही तुम पर कोई तर्क-वितर्क व्यर्थ किया जाएगा। तुरंत कहो, क्या तुम जीना चाहोगे और बाकियों

की तरह मुखबिर बनना चाहोगे, अच्छे कपड़े और भोजन पाओगे, और सम्मान के साथ व्यवहार किया जाएगा, या कुत्ते की मौत मरोगे? बोलो, मेरा समय कीमती है, और मुझे तुमसे शब्दों का बवाल करने का कोई आदेश नहीं है।'

'अमीर अली, शर्तें मान लो,' दोनों गवाहों ने कहा; 'मूर्ख मत बनो, और जीवन का अपना आखिरी मौका मत गंवाओ!'

मैंने एक पल के लिए सोचा: मेरे लिए जीवन का क्या अर्थ है? क्या कभी यह कहा जाना चाहिए कि अमीर अली गद्दार बन गया था, और रोज़ाना मिलने वाले थोड़े से भोजन और जीवन के वरदान के लिए उसने अपना पेशा छोड़ दिया और उसे दबाने में मदद की? नहीं, मैं पहले मरना पसंद करूँगा, और मैंने उनसे यही कहा। 'चले जाओ!' मैंने कहा; 'अपने मालिक को यह संदेश पहुँचा दो, कि अमीर अली की आत्मा इतनी अभिमानी है कि वह उसका प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर सकती, और वह इसे ठुकरा देता है। मृत्यु से उसे कोई भय नहीं है, पर शर्म, शाश्वत शर्म है!'

वे मुझे छोड़कर चले गए, और मैं अपने भाग्य पर विचार करने लगा। मेरी मृत्यु निश्चित थी। क्या मुझे मृत्यु से भय था? शुरू में तो नहीं; मैंने इस परिवर्तन को शाश्वत आनंदों की ओर ले जाने वाले मार्ग के रूप में देखा—स्वर्ग की ओर—मेरे पिता और अज़ीमा के पास। लेकिन जैसे-जैसे मैं बार-बार सोचता रहा, अन्य विचार मेरे मन में उमड़ते गए: मेरी मृत्यु तो होनी थी, पर कैसे? किसी पुरुष या सैनिक की तरह नहीं, बल्कि एक दयनीय चोर की तरह, हजारों लोगों की घृणा का पात्र जो मेरी मृत्यु के संघर्षों पर प्रसन्न होंगे; और फिर मुझे उस अभागे की याद आई जिसे भूद्रिनाथ के साथ रहते हुए मेरी आँखों के सामने फाँसी दी गई थी, और मैंने कल्पना की कि जीवन समाप्त होने से पहले उसने कितनी पीड़ा सहन की होगी—मृत्यु की शर्म—वह अपमान जो मेरी स्मृति से कभी नहीं मिटेगा। ये सब बातें मुझ पर भारी पड़ रही थीं। दूसरी ओर जीवन था—यह सच था कि यह दासता का जीवन था, लेकिन फिर भी यह जीवन था; मेरी रक्षा की जाएगी, और शायद मैं एक बार फिर स्वतंत्र हो सकूँ, यदि यूरोपीय लोग मेरे प्रति दयालु हो जाएँ, और मैं उनकी निष्ठापूर्वक सेवा करूँ।

इस प्रकार मैं कई दिनों तक अपने आप से मंथन करता रहा; अंततः मुझे चेतावनी मिली कि अगले दिन मेरी परीक्षा होगी; यह स्पष्ट रूप से मेरे भाग्य का संकट था, और मुझे यह स्वीकार करना होगा कि फांसी की भयानक मृत्यु का भय, काला पानी का खौफ और मूणशी की सलाह ने मुझे बाकी लोगों के साथ मरने के संकल्प को जीवन की इच्छा में बदलने पर मजबूर कर दिया। गणेश जी का भी मेरे मन में आह्वारा हुआ: मैंने सोचा, मैं अब बदला ले सकता हूँ, और उसकी मृत्यु का दोष मुझ पर नहीं आएगा। मैं यह भी जानता था कि उसे पकड़ने की कितनी तीव्र इच्छा थी, और केवल मैं ही बता सकता था कि वह कहाँ मिलेगा, और अगर वह कभी हमसे बच निकला तो उसके छिपने के संभावित स्थान क्या होंगे। मैंने अपना निश्चय कर लिया था, और मैंने अनुरोध किया कि उस मूणशी को बुलाया जाए जिसने पहले मुझसे इस विषय पर बात की थी। वह आया, और मैंने उसे तुरंत बता दिया कि मैं उसके द्वारा प्रस्तावित विकल्प को स्वीकार करने के लिए तैयार हूँ।

'अहा! अब तो आप एक बुद्धिमान व्यक्ति की तरह बात कर रहे हैं,' उसने कहा, 'और यदि आप अपने चुने हुए कार्य में मेहनत करते हैं और स्वयं को वफादार और भरोसेमंद साबित करते हैं, तो आप भरोसा कर सकते हैं कि भविष्य में आपको आपकी स्थिति के अनुसार जितनी भी रियायतें दी जा सकती हैं, वे दी जाएंगी; लेकिन इसके लिए आपको पहले उन्हें अर्जित करना होगा, क्योंकि यूरोपियों के यहाँ कुछ भी कृपा से नहीं मिलता।'
मैंने जवाब दिया, 'मैं तैयार हूं, मुझे बता दीजिए कि मुझे क्या करना है, और आप पाएंगे कि अमीर अली अपने कर्मों का फल भोग सकते हैं।'
'तो आइए, अभी भी समय है, मैं आपको तुरंत अदालत ले चलूंगा, वहां आपको निर्देश प्राप्त होंगे।'
मेरी बेड़ियाँ खोल दी गईं, और मेरे दाहिने पैर में एक छल्ला लगी हुई हल्की स्टील की छड़ बाँध दी गई, जिससे मुझे चलने की पूरी आज़ादी थी, लेकिन दौड़ने की नहीं। मुझे विधिवत गवाह के रूप में स्वीकार कर लिया गया, इस चेतावनी के साथ कि यदि मैंने कभी भी अपने कर्तव्य की उपेक्षा की, जहाँ मेरे पास वास्तव में जानकारी थी वहाँ जानकारी देने में विफल रहा, या मुझ पर रखे गए विश्वास का किसी भी तरह से दुरुपयोग किया, तो मुझे तत्काल मृत्युदंड दिया जाएगा।
'क्या तुम गणेश जी के बारे में कुछ जानते हो?' अधिकारी ने मुझसे कहा।
'जी हां, साहिब बहादुर,' मैंने उत्तर दिया, 'मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूं; आपने उनके लिए भी वैसे ही इनाम की घोषणा की है जैसे मेरे लिए की थी, और फिर भी आप यह नहीं जानते कि इस समय भी वे सागर से कुछ ही कदम की दूरी पर हैं।'
'क्या आप मेरे लोगों को उनके पास ले जा सकते हैं?' उन्होंने पूछा। 'याद रखें, यह पहला मामला है जो आपको सौंपा गया है, और मुझे यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि मैं आपसे इसमें अपनी पूरी बुद्धि का उपयोग करने की अपेक्षा करता हूं। गणेश सतर्क हैं, और अब तक उन्हें पकड़ने के हर प्रयास से बचते रहे हैं।'
मैंने कहा, 'मैं यह काम करूंगा। हो सकता है उसे मेरे पकड़े जाने की जानकारी न हो; और यदि आप मुझे अपने छह आदमी देंगे, तो मैं उन्हें भेस बदलकर आपके पास लाऊंगा; और न केवल उसे, बल्कि हिममुत को भी, जिसके बारे में मुझे पता है कि वह उसके साथ है।'
'हा!' अधिकारी चिल्लाया, 'हिम्मट भी! वह भी बाकी दोनों की तरह ही बुरा है।'
मैंने जवाब दिया, 'वह एक बेहतरीन गुंडा है, इससे ज्यादा कुछ नहीं कहा जा सकता। लेकिन समय बीत रहा है; अपने आदमियों को चुनिए, उनमें से सबसे बहादुर और फुर्तीले को चुनिए— उनके हथियारों की जरूरत पड़ सकती है। मैं भी आपसे एक तलवार मांगूंगा।'
'असंभव,' उसने कहा; 'तुम्हें वैसे ही जाना होगा जैसे तुम हो: अगर तुम मेरे आदमियों को विनाश की ओर ले गए तो क्या होगा?'

मैंने गर्व से खुद को संभाला। 'आप मुझ पर भरोसा करें या न करें, अमीर अली झूठा नहीं है, न ही वह अपने उद्देश्य के प्रति कोई कपटी खलनायक है। मुझ पर भरोसा करो, और मैं तुम्हारे हितों के प्रति दुगना वफादार हो जाऊंगा; मुझ पर संदेह करो, और मैं भी तुम पर संदेह कर सकता हूं।'
'तुमने निडरता से बात की है,' उसने कहा, 'और मैं तुम पर भरोसा करूंगा। उसे अपना हथियार रखने दो,' उसने एक सेवक से कहा। 'और अब तुम्हें जल्दी जाना होगा, अमीर अली; तुम्हारे लोग बाहर इंतजार कर रहे हैं।'
'इस क्षण, जब तक मैं गणेश जी का सेवन न कर लूं, तब तक मेरे होठों पर भोजन नहीं लगेगा।'
मैंने उसे वहीं छोड़ दिया। मुझे वे छह दृढ़ निश्चयी दिखने वाले, पूरी तरह से हथियारों से लैस लोग मिले; मैंने उनके पदचिह्न उतार लिए और उनसे अपने कपड़ों पर धूल झाड़ने को कहा ताकि लगे कि उन्होंने लंबी यात्रा की है। मैंने अपने पैर में लगी लोहे की पट्टी को इस तरह बांध दिया कि वह आवाज न करे और मेरी पतलून के नीचे दिखाई न दे; और मैंने दल को आगे बढ़ने का आदेश दिया।
शाम होने ही वाली थी, और कस्बे से बचते हुए मैं तुरंत खुले मैदान में निकल पड़ा। मैंने अपने साथियों से कहा, 'अगर हमारी यात्रा सुचारू रूप से चलती रही, तो हम आधी रात तक उसके पास पहुँच सकते हैं।'
पार्टी के नेता ने पूछा, 'वह कहाँ है?'
'वह वहां पोटैल लोगों के साथ रहता है और खुद को हिंदू फकीर बताता है।'
'गंगा की कसम! मैंने उसे देखा है,' उस साथी ने जवाब दिया; 'वह लंबा है और उसकी आंखें तिरछी हैं, है ना?'
मैंने कहा, 'यही वह आदमी है; आपने शायद ही सोचा होगा कि आप उसे अपने इतने करीब ढूंढेंगे?'
'जी नहीं! अगर हमें पता होता तो हम उसे एक हफ्ते पहले ही पकड़ लेते।'
मैंने कहा, 'अब आपको उस पर पूरा भरोसा है, लेकिन हमें सावधान रहना होगा; क्या आप मुझ पर भरोसा करेंगे?'
'मैं ऐसा करूंगा, लेकिन सावधान रहना कि तुम मुझसे कैसे बचने या मुझे गुमराह करने की कोशिश करोगे।'
'मुझे गणेश जी से एक बड़ा हिसाब चुकाना है—उन्होंने मेरी माँ की हत्या की!' यही मेरा एकमात्र जवाब था।
हम रात के सन्नाटे में गाँव पहुँचे; चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था और घना अंधेरा था, जिससे मुझे मदद मिली, क्योंकि मेरे साथी का चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था और पोटैल के घर की ओर मेरे आने की आहट किसी को पता नहीं चलती। मैंने नुजीब से कहा, 'अब तुम अकेले मेरे साथ चलो; बाकी सब यहीं रुकें: मैं गणेश को यहाँ लाऊँगा और फिर तुम्हें उन्हें बाँधना होगा। क्या तुम मुझसे डरते हो?' (क्योंकि वह अनिश्चित लग रहा था;) 'नहीं, तो मैं अकेला जाऊँगा और तुम्हारे मालिक को बताऊँगा कि तुम कायर हो।'
'यह भी नहीं चलेगा,' उस आदमी ने चिल्लाकर कहा, 'मैं तुम्हें अपनी नज़रों से ओझल नहीं होने दे सकता; मेरे आदेश स्पष्ट हैं; इसलिए मुझे जाना ही होगा; और अगर मैं वापस नहीं लौटा,' उसने अपने साथियों से कहा, 'तो तुम अकेले ही सागर तक अपना सबसे तेज़ रास्ता तय करके जाना और कहना कि मेरी हत्या कर दी गई है।'

मैं हँस पड़ा। मैंने कहा, 'डरने की कोई बात नहीं है; आधे घंटे या उससे भी कम समय में हम लौट आएंगे: क्या आप तैयार हैं?'
'मैं हूँ, मीर साहब; आगे बढ़ो, और याद रखो कि मेरी तलवार म्यान में खुली पड़ी है। मैं मर सकता हूँ, लेकिन तुम भी मरोगे।'
'मूर्ख!' मैंने कहा, 'क्या तुम मुझ पर भरोसा नहीं कर सकते?'
'अभी नहीं,' उसने उत्तर दिया; 'मैं भविष्य में ऐसा कर सकता हूँ।'
मैंने आगे कहा, 'याद रखना, अगर दूसरा यहाँ हो तो तुम्हें न तो गणेश से बात करनी है और न ही उससे। मैं उन्हें घर से बाहर निकाल दूँगा; उसके बाद अपने हथियार का ध्यान रखना। अगर वे भागने की कोशिश करें या हमारे असली मकसद पर शक करें, तो जब मैं तुमसे सागर की दूरी पूछूँ, तो हिममुत पर हमला कर देना: गणेश से निपटने का काम मुझ पर छोड़ देना; हम दो-दो की लड़ाई लड़ रहे हैं, और गणेश दूसरे से बेहतर तलवारबाज़ है। यह बात याद रखना।'
'मैं करूंगा,' उसने उत्तर दिया; 'मैं तुम्हारा साथ दूंगा, अब मुझे डर नहीं है, क्योंकि मैं देखता हूं कि तुम वफादार हो।'
कुछ और कदम चलने पर हम पोटैल के घर पहुँचे, और मैंने उसका नाम लेकर पुकारा। 'जेसवंट! जेसवंट! उठो और बाहर आओ, यार। तुम जानते हो मैं कौन हूँ।' मैंने रामासी भाषा में बात की, जो मुझे पता था कि वह समझता है। उसने अंदर से जवाब दिया, और थोड़ी देर बाद मैंने उसके दरवाजे की कुंडी और कुंडी खुलने की आवाज़ सुनी, और वह चादर ओढ़े बाहर आया। 'मुझे कौन बुला रहा है?' उसने पूछा।
मैंने उत्तर दिया, 'मैं, आपका मित्र अमीर अली, गणेश कहाँ हैं?'
'अंदर ही अंदर सोया हुआ; तुम क्यों पूछ रहे हो?'
'और हिममुत?'
'आप भी सो रहे हैं; आपको इन दोनों से क्या चाहिए? और आप यहाँ क्यों आए हैं, मीर साहब, इतनी देर से या इतनी जल्दी, जो आपको ठीक लगे? हमने सोचा था कि आप कलकत्ता के आधे रास्ते में हैं।'
'अरे,' मैंने कहा, 'वह मामला तो छोड़ दिया गया; नुजीब बाहर थे, और खतरा था। लेकिन जाओ और गणेश जी को जगाओ, मुझे उनके लिए कुछ काम करना है, और मेरे पास समय नहीं है; इसे सुबह होने से पहले पूरा करना होगा।'
'मैं समझ गया,' पोटेल ने कहा, 'कुछ बनिज, है ना?'
'वहाँ खड़े होकर बकबक मत करो, वरना तुम्हारा हिस्सा भुला दिया जाएगा, पोटैलजी; गणेश जी को मेरे पास लाओ, या उन्हें बता दो कि मैं यहाँ हूँ, वे जल्दी आ जाएँगे।'
वह अंदर चला गया। मैंने नुजीब से कहा, 'अब तैयार हो जाओ; जैसा मैं कर रहा हूँ वैसा ही करो, और संकेत याद रखना।'

मैंने पोटैल को गणेश जी को जगाते हुए सुना; मैंने उनकी गुर्राती हुई आवाज़ सुनी, पहले तो उन्होंने उसे जगाने के लिए बुरा-भला कहा, और फिर उत्सुकता से पूछा, 'अमीर अली यहाँ! ऐ भवानी, वह मुझसे क्या माँग सकता है?' अंत में उनका दुबला-पतला शरीर द्वार पर प्रकट हुआ। या आलिया! मेरा दिल कितनी ज़ोर से धड़का, और फिर कितना बेचैन हो गया, उन्हें देखकर मेरी उत्तेजना इतनी तीव्र थी।

'अमीर अली, तुम कहाँ हो?' उसने कहा; 'इस शापित अंधेरे में मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है।'

मैंने कहा, 'यहाँ, जब तुम्हारी आँखें अभ्यस्त हो जाएँगी तो तुम्हें अच्छी तरह दिखाई देने लगेगा; मुझे अपना हाथ दो; अब सीढ़ी से नीचे उतरो; यही सही है।' हमने एक-दूसरे को गले लगाया।

मैंने पूछा, 'क्या आप काम के लिए तैयार हैं?' 'मेरे साथ केवल दो आदमी हैं, और हमने कुछ बुनीज (एक प्रकार का जंगली पौधा) इकट्ठा किया है; अगर आप हमारे साथ शामिल हो जाएं तो अच्छा खासा माल भी मिलेगा, - अकेले हम कुछ नहीं कर सकते - वे चार लोग हैं।'

'कहाँ?' उसने पूछा।

'वहाँ, गली में; मैंने आग लेने का बहाना किया है।'

'तुम्हारे साथ वह कौन है?'

'वह एक मित्र है; उससे डरने की कोई बात नहीं, वह हममें से ही एक है।'

'क्या वह रामासी भाषा बोलता है?'

मैंने कहा, 'अभी नहीं, वह नया है, लेकिन होनहार है: लेकिन हिममुत कहाँ है?'

'अंदर, खर्राटे लेते हुए, शायद तुम उसकी आवाज़ सुन पाओ; एक पल रुको, मैं अपनी तलवार और जूते लेने जाता हूँ और उसे जगाता हूँ। तुमने चार आदमियों की बात कही थी, और हम पाँच हैं; बस करो, भवानी की कसम! हम लूट का माल आपस में बाँट लेंगे।'

'दो घंटे और बड़े होने से पहले ही जल्दी करो, वरना उन्हें मुझ पर शक हो सकता है।'

वह अंदर गया और थोड़ी देर में पूरी तरह से सुसज्जित होकर लौट आया; हिममुत उसके साथ गया और हमने एक-दूसरे का अभिवादन किया।

मैंने कहा, 'अब चलो, समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं है।'

'सुनो!' गणेश ने कहा, 'उस गली में एक कुआँ है, क्या वह भील के लिए ठीक रहेगा?'

'ज़रूर,' मैंने जवाब दिया, 'आप उन आदमियों को सीधे देख लेंगे।' मेरे बोलने के तुरंत बाद हम अपने दल के पास पहुँच गए।

उनमें से एक ने चिल्लाकर पूछा, 'वहाँ कौन जाता है?'

'एक दोस्त—अमीर अली!'

'तो फिर सब ठीक है,' यह जवाब मिला, और अगले ही पल हम उनके साथ शामिल हो गए।

'ये रहे तुम्हारे आदमी, इन्हें पकड़ो!' मैं चिल्लाया और इतनी ज़ोर से गणेश पर झपटा कि हम दोनों एक साथ ज़मीन पर गिर पड़े और जानलेवा नफरत से जूझने लगे; लेकिन दो नुजीब मेरी मदद के लिए आ गए, ठीक

उसी समय जब गणेश ने अपनी कमरबंद में रखी एक छोटी सी कटार निकाल ली थी और मैंने सौभाग्य से उनका हाथ पकड़ लिया था।
मैंने उससे अपना हाथ छुड़ाते हुए कहा, 'उसके हाथ-पैर बांध दो और उसका मुंह भी बंद कर दो, वरना उसकी चीखों से गांव में दहशत फैल सकती है।' ऐसा ही किया गया और उसे निहत्था कर दिया गया; उसके मुंह पर कपड़ा बांध दिया गया ताकि वह बोल न सके, और हम अपने कैदियों को अंधेरे और ऊबड़-खाबड़ सड़क के बावजूद जितनी तेज़ी से हो सके, ले गए।
हममें से कोई नहीं बोला, और जब तक पूरा दिन नहीं निकल आया, तब तक मैंने गणेश जी को नहीं देखा; फिर हमारी नज़रें मिलीं, और उनके चेहरे पर जो क्रोध का भाव था, उसे मैं कभी नहीं भूल पाऊंगा। मैंने नुजीबों में से एक से कहा, 'उनके मुंह से कपड़ा हटा दो; अगर वो बोलना चाहें तो बोल सकते हैं।' और ऐसा ही किया गया।
'अंततः तुम्हारा बदला पूरा हो गया, अमीर अली,' उसने कहा; 'मेरी लानत तुम पर सदा बनी रहे, और भवानी की लानत तुम पर पड़े, क्योंकि तुमने उसके भक्त का नाश किया! जो नमक तुम खाओ, वह तुम्हारे मुँह में कड़वा लगे, और तुम्हारा भोजन तुम्हारे लिए विष बन जाए!'
'आमीन!' मैंने कहा। 'आपने गणेश जी की तरह बोल दिया। मैंने सचमुच बदला ले लिया है, लेकिन अभी तक कर्ज चुकाया नहीं गया है—मेरी माँ की जान के बदले में आपका कर्ज। हे राक्षस! आपने ही उनकी हत्या की है।'
'हाँ, और जब तुम एक कमजोर, रोते हुए बच्चे थे, तब उस मूर्ख इस्माइल की वजह से ही तो मैं तुम्हें मार डालूँगा; हालाँकि उसे तो अपने अंजाम तक पहुँचना ही था, और तुम्हारा अंजाम अभी आना बाकी है।'
मैंने कहा, 'तुम इसे नहीं देख पाओगे; और जब मैं तुम्हें कुत्ते की तरह लटका हुआ देखूंगा तो मुझे खुशी होगी।'
नुजीबों के नेता ने कहा, 'शांति! अमीर अली, तुम उस पर शब्दों का समय क्यों बर्बाद कर रहे हो?'
मैंने उत्तर दिया, 'क्योंकि मैं उसके कष्टों से अपनी आत्मा को तृप्त कर रहा हूँ; और यदि मेरा बस चलता, तो मैं उसकी मृत्यु तक चुपचाप खड़ा रहकर उसका उपहास करता रहता। क्या उसने मेरी माँ की हत्या नहीं की? और यदि उसने नहीं की, तो क्या मुझे अपनी बहन की हत्या करनी चाहिए थी? क्या मेरे पास उससे गहरी और घातक घृणा करने का कोई कारण नहीं है? फिर भी, मैं अब चुप रहूँगा।'
हम सागर पहुँच गए, और अधिकारी ने मेरे हाथों से गणेश जी की मूर्ति को जिस प्रसन्नता से ग्रहण किया, वह छिपी नहीं रह सकी। उन्होंने कहा, 'इस बदमाश को पकड़ने से ठग्गी को करारा प्रहार हुआ है, और तुमने अपना कर्तव्य बखूबी निभाया है, अमीर अली।'
उस क्षण से मेरा विश्वास और सम्मान उनके दिलों में बढ़ गया, और मैंने इसे कभी नहीं खोया।
गणेश का मुकदमा चला और मैं उसके खिलाफ मुख्य गवाह था। मैंने उसके द्वारा किए गए हत्याओं के बारे में जो कुछ भी जानता था, सब कुछ बताया और अन्य लोगों ने भी मेरे बयानों की पूरी तरह से पुष्टि की। उसे मृत्युदंड दिया गया।

फांसी से पहले उनसे मिलने की मेरी विनती व्यर्थ ही गई; मैं उनके भाग्य पर उन्हें ताना मारना चाहता था और उनके अंतिम क्षणों को और भी कड़वा बनाना चाहता था, अगर मेरे कहे किसी शब्द से ऐसा हो सकता था। मुझे इसकी अनुमति नहीं दी गई; अधिकारी मेरे इरादे को जानता था और इतना दयालु था कि उसने मुझे ऐसा करने नहीं दिया। लेकिन मैंने उन्हें मरते हुए देखा—उन्हें और बीस अन्य लोगों को—सभी को एक ही क्षण में। उन्होंने भी मुझे देखा और मुझे शाप दिया, लेकिन उनके शाप बेअसर रहे। वे सभी एक साथ मृत्यु के फंदे पर चढ़ गए—जल्लाद के अपवित्र स्पर्श को अस्वीकार करते हुए—अपनी गर्दन के चारों ओर रस्सियों को ठीक किया—और 'भवानी की जय!' चिल्लाते हुए एक-दूसरे का हाथ पकड़कर मंच से अनंत काल में छलांग लगा दी। मैंने गणेश को देखा और यह देखकर प्रसन्न हुआ कि उनका संघर्ष दूसरों की तुलना में अधिक लंबा चला। मैं संतुष्ट था—उन्होंने मेरा कर्ज चुका दिया था।

और अब, साहब, इस घटना के बाद मेरा जीवन नीरस दिनचर्या और निष्क्रियता से भर गया। मैंने अपने पुराने साथियों को एक-एक करके खोजा और पकड़ा, जब तक कि उनमें से कोई भी फरार नहीं रह गया। आपके लिए मेरे जीवन का कोई महत्व नहीं रह गया है, और मैं बस कभी-कभार उन घटनाओं का ब्यौरा दे सकता हूँ जिन्हें मैंने या तो देखा है या दूसरों से सुना है। मैं क्यों जीऊँ? यह सवाल मैं अक्सर खुद से पूछता हूँ; मैं ऐसा जीवन क्यों जीऊँ जिसमें मुझे न सुख है, न आनंद, न चिंता, न दुःख। मुझे केवल एक ही कर्म का पश्चाताप है, और वह पश्चाताप मुझे कभी नहीं छोड़ेगा। फिर भी मुझे इसे तब तक सहन करना होगा जब तक आलिया कृपा करके उस देवदूत को न भेज दे जो मेरे जीवन को इस मिट्टी से बाँधे रखता है।

मैं अक्सर अपनी बेटी के बारे में सोचता था, लेकिन अब मैं उसे भी लगभग भूल चुका हूँ; फिर भी मैं यह नहीं कहूँगा कि मैं उसे भूल गया हूँ, क्योंकि मैं उससे एक माता-पिता की तरह प्यार करता हूँ, जो मेरे जीवन के अंतिम क्षण तक बना रहेगा। लेकिन वह खुश है, और उसे मेरे बारे में क्यों पता होना चाहिए?

मुझे डर है कि मैंने अपनी कहानी का विस्तृत वर्णन करके आपको अक्सर थका दिया होगा; लेकिन मैंने सब कुछ बता दिया है, आपसे एक भी विचार, एक भी भावना, और यहाँ तक कि कोई भी घटना नहीं छिपाई है जो इतने समय बाद भी मुझे याद है। संभवतः आपने कुछ ऐसा लिख लिया होगा जो आपके मित्रों के लिए बेहद दिलचस्प साबित हो। यदि ऐसा है, तो आपका उद्देश्य पूरा हो गया है; आपने एक ठग के जीवन, उसकी रस्मों और उसके कृत्यों का सटीक चित्रण किया है; और मुझे गर्व है कि दुनिया अमीर अली, ठग के कारनामों और रोमांच के बारे में जानेगी।

******* समाप्त *******

sjeet